



॥ ओः ॥

# खानखाना नामा ।

---

दो भागोंमें ।

जोधपुर निवासी

मुन्शी देवीप्रसाद लिखित ।

---

अमृतलाल चक्रवर्ती द्वारा भारतमित्र प्रेसमें

मुद्रित और प्रकाशित ।

नं० ८७, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,

कलकत्ता ।

---

संवत् १८६६ ।

कई वर्ष हुए मैंने खानखानानामाके नामसे एक उर्दू किताब छपायी थी जिसमें अकबर बादशाहके वजीर और सिपहसालार (सेनापति) नवाब अबदुलरहीमखां खानखानाकी जिन्दगीका कुछ हाल था। उसकी हिन्दीमें लिखकर छापनेके लिये जवलपुरकी नामी साहित्यप्रचारिणी मभाके मंत्री पंडित सूर्यनारायणजीने मुझसे इजाजत मांगी तो मैंनेही उसकी हिन्दीमें लिखकर उनके पास भेज दिया। उन्होंने देखकर लिखा—“खानखाना बड़े नामी और विद्वान सरदार हो गये हैं जिनका नाम आज तक मशहूर है और हमने उनके बनाये हुए दोहोंका संग्रह रहीमशतकके नामसे छपवाया है। इसलिये इनका जीवनचरित्र जितना कुछ हो सके विस्तार पूर्वक लिखना चाहिये।” तब फिर तवारीखीकी देखकर जहातक मिल सका पूरा हाल मैंने भाषामें लिखा और अपने मित्र उदयपुरके वारहट कृष्णसिंहजी और पंडित गौरीशंकरजी “लाइ-ने रियन, विकटोरिया हाल, उदयपुरमें” शुद्ध कराकर पंडित सूर्यनारायणजीके पास भेज दिया। उन्होंने फिरसे उसके शुद्ध करनेमें बहुत धरना लगा दिया और फिर भी पूरा शुद्ध (१) न हुआ था कि हुमराव राज्यके प्रसिद्ध कवि पंडित नवाब्देदीजी तिवारीने उन्हीं खानखानाकी जीवन चरित्र तैयार करनेकी मुझे लिखा तब मैंने जवलपुरसे वहाँ गये मगकर फिर उसकी गौरसे देखा और कुछ हाल और बढ़ाकर तिवारीजीकी सेवामें भेज दिया। तिवारीजीने इसके दृष्टि निकाल देने और दृष्टिगर्त, जगद भूषण भरनेके लिये

(१) यह शुद्ध करना क्या था तिवारीजी ने कहा—

बहुतसे सवाल निगुकर भेजे और उनके जवाब सुनने लगा। इन जवाबोंमें उन्होंने उन सब बादशाहों, शाहगद्दों, अमीरों, सरदारों, तथा दूसरे लोगों के पूरे पूरे पते और परिचय मांगे जिनके नाम इस ग्रंथमें आये थे। इसलिये मुझको पढ़नेसे जरादा तबारीख देखनी पड़ीं जो इसी दिनके वास्ते जमा की गयी थी और इस तीसरी बारके निचोड़में उसका खूब निगार हो गया। तिवारीजी जो बातें चाहते थे वे सब प्रायः इसमें आ गयी है।

हम यहां यह भी कह देते हैं कि किन किन तबारिखोंमें कौन कौन अंग प्रत्यंग जोड़ कर खानखाना जीवनीकी यह नूर्ति खड़ी की गयी है।

खानखाना अब्दुल रहीमखान अकबर बादशाहके समयमें जन्मे और जहांगीर बादशाहके राज्यकालमें मरे थे इनके बाप खानखाना (१) बैरमखान हुमायूं बादशाहके राज्यमें उदय और अकबर बादशाहके समयमें अस्त हुए थे। इन तीनों बादशाहोंकी तवारीख—“अकबर नामा” “तुलुक् जहांगीरी” वगैरहमें जो कुछ हाल उन दोनों बाप बेटोंका लिखा था वह सब हमने अपने इस ग्रंथमें से च लिया है पर यह हाल जियादातर बादशाही खिदमतोंसे इलाका रखता है। उनके घर, घराने और पीढ़ियों वगैरहका पता इन तवारीखोंमें कुछ नहीं है। किसी किसीका कुछ है भी तो बहुत थोड़ा, मगर इसके वास्ते भी खास खाम तवारीखे “मुआसिर-उल-उमरा” “तजकरेखशानीन” वगैरह हैं जिनमें अजीब कितान मुआसिरउलउमरा ३ जिल्दोंमें है जो बाबरसे लेकर मुहम्मद शाह तक १० पीढ़ियोंके बादशाही अमीरोंका पूरा-पूरा हाल बताती या उसका पता देती है। इसीसे दूढ़ने वाला आगे पता लगा सकता है। खानखानाके खानदाम और उनके दादा परदादाके नामोंका पता हमको इसी मुआसिरउलउमरासे लगा है और इसीकी मद्दत हम इस लायक हुए हैं कि उनका वह पुराना

(१) बैरामके माने तुर्कों बीलोंमें उसबके हैं।



हाल लिख सके जिसका कुछ बयान बादर, हुमायूँ, अकबर और जहांगीर जैसे शाहनशाहोंकी तवारीखोंमें नहीं है। खानखानाके दादे परदाटे तो दूर रहे उनके बाप बैरामखाका नाम भी अकबरनामे जैसी बड़ी तवारीखमें सन ८४१ स० १५८१—८२ से पहले नहीं मिलता।

अकबरनामेके पहले खंडमें जो तवारीख हुमायूँ बादशाहकी है उसमें बैरामखाका नाम पहले पहल चांपानेरकी चढाईमें आया है। इसके पेश्वर उनका कुछ हाल नहीं लिखा है।

हम खानखानाके खानदान और उनके पुराने शासकी तवारीख "गिजेतुनवका" और "हबीबउलसियर"से शुरू करेंगे, उनके बाप दादोंके नाम और हतांत "तुजकज वरी" और "मुआमिरउलउमरा"से लिखेंगे, फिर अकबरनामे और तुजकजहांगीरीसे कुल हाल इन दोनों बाप वेटोंका खींचकर इस मांचमें ढालेंगे तब कहीं सांगो-पांग सूर्ति इनके जीवन चरित्रकी तय्यार होगी।

---

# खानखानानामा ।

## पहला भाग ।

### खानखानां बैरासखां ।

नब्बाव अबदुनरहीमखां खानखानांका जीवन चरित्र शुरू करनेसे पहले उनके बाप बैरासखां खानखानांका हाल लिखना जरूरी है और यह भी मानो इस पुस्तककी पूर्व पीठिका है ।

तवारीख लिखनेके कायदोंमेंसे पहला यह है कि जिस किसीकी तवारीख लिखी जाय पहिले उसके खानदान (वंश) खिताब कुरमीनामें और समयका पता दिया जाय । फिर जन्मसे लेकर मरने तकका हाल जितना कुछ सही सही मिल सके पुरानी तवारीखों या दूसरे दस्तीलोंकी सनद और प्रमाणसे लिखा जाय जिसमें पढ़नेवालोंकी कोई शक न रहे । इसलिये हम पहले खानखानाके खानदानका कुछ हाल लिखते हैं, फिर खानखानांके लफ्ज (शब्द) पर कुछ लिखेंगे पीछे उनका हाल शुरू करेंगे ।

### खानदान ।

मथामिर-उल-उमरामें खानखानाकी जाति तुर्कमान और खानदानका नाम कराकूयलू लिखा है । इससे जाना जाता है कि खानखाना घमलमें तुर्कमान जातिके थे और तुर्कमानोंके बहुतसे खानदानोंमेंसे उनका घराना कराकूयलू था । तुर्कमानके मानें हैं तुर्कोंकी मानिन्द ; क्योंकि मानके माने फारसी जवानमें मानिन्द है जैसे इस जमानेमें हिन्दूस्थानमें जहाँ हुए योरोपियनको योरेशियन कहते हैं वैसेही ईरानमें

# खानखानानामा ।

## पहला भाग ।

### खानखानां वैरामखां ।

नवाब अबदुलरहीमखां खानखानांका जीवन चरित्र शुरू करनेसे पहिले उनके बाप वैरामखां खानखानांका हाल लिखना जरूरी है और यह भी मानो इस पुस्तककी पूर्व पीठिका है ।

तवारीख लिखनेके कायदोंमेंसे पहला यह है कि जिस किसीकी तवारीख लिखी जाय पहिले उसके खानदान (वंश) खिताब कुरसीनामे और मसयका पता दिया जाय । फिर जन्मसे लेकर मरने तकका हाल जितना कुछ सही सही मिल सके पुरानी तवारीखों या दूसरे वसीलोंकी सनद और प्रमाणसे लिखा जाय जिससे पढ़नेवालोंको कोई शक न रहे । इसलिये हम पहिले खानखानाके खानदानका कुछ हाल लिखते हैं ; फिर खानखानाके लफ्ज (शब्द) पर कुछ लिखेंगे पीछे उनका हाल शुरू करेंगे ।

### खानदान ।

मघामिर-उल-उमरामें खानखानाकी जाति तुर्कमान और खानदानका नाम कराक्यूलू लिखा है । इससे जाना जाता है कि खानखाना घमनमें तुर्कमान जातिके थे और तुर्कमानोंके बहुतसे खानदानोंमेंसे उनका घराना कराक्यूलू था । तुर्कमानके माने हैं तुर्कोंकी मानिन्द ; क्योंकि मानके माने फारसी जवानमें मानिन्द है जैसे इस जमानेमें हिन्दुस्थानमें जर्म हुए योरोपियनको योरेशियन कहते हैं वैसेही ईरानमें

जम्मे हुए तुर्की को तुर्कमान कहते थे अर्थात् जो तुर्क(१) अपने देग तुर्किस्तान(२)से आकर कवीलों सहित ईरानमें बस गये थे और वहां उनकी जो औलाद हुई थी वह तुर्कमान कहलायी ।

फिर तुर्कमानोंकी नस्ल ( सतति ) बढ़नेमें उनमें कई आनदान हो गये, जिनके नाम लिखनेकी जरूरत नहीं, क्योंकि यह तुर्कमानोंकी तबखेबख नही है, केवल उनकी १ शाखा कराकूयलूके २ नामों आदमियोंकी कुछ हकीकत है ।

“कराकूयलू”के माने काली बकरीवालेके है । ये लोग पहने काली बकरिया रमना करते थे और इनके भाई जो सफेद बकरिया रखते थे वे आन्कूयलू कहलाते थे । तुर्की बोलीमें कराके स ने क ले और आकके सफेद तथा कूयके बकरी और लूके वाले है ।

ये लोग आजगवायजानमें रहते थे जो ईरानका १ सूबा रूम और रूमकी सरहदसे मिला हुआ है जिसको अब आरमीनिया कहते हैं । जब वहां ईलकानी जातिके बादशाहोंका राज्य हुआ तो गुलतान हुसैन ईलकानीने सन् ७७७ स० १४३२ में तुर्कमानों पर चढ़ाई करके वे किर्ने और शहर छोड़ा लिये जो उनके सरदारों बैगमख्वाजा और करामुहम्मदने दबा लिये थे और हर साल

(१) तुर्क बहुत पुरानी जाति है । मुसलमान तुर्कों के मूल पुरुष तुर्कको नूत पैगम्बरका पोता बताया जाता है और सस्वत रूप तुर्क मन्दका तुरुष्क है । हिन्दू ग्रन्थोंमें तुर्क चन्द्रवंशी राजा ययातिके बेटे तुरुके वंशज माने जाते हैं—तुर्ककी कठी पीढ़ीमें मुगलखा हुआ जिसकी सल्तान मुगल कहलायी । मुगलखाकी बहुतसी पीढ़ियोंके पीछे तैमूरगान हुआ । उसकी १२वीं पीढ़ीमें बरतान बहादुर और काचूर्ली बहादुर दोभाई हुए । बरतानका पोता चगीजखा था और काचूर्लीकी नवीं पीढ़ीमें अमीर तैमूर हुआ । इन दोनोंकी फौजोंमें बड़े बड़े बादशाह ईरान, तूरान और हिन्दुस्थानमें हुए हैं ।

नन्द पैगम्बर—तूरान ।

२०००० वक्तव्यां देनेका कर भी उनसे ठहरा लिया था। सुलतान हुनेनके बेटे सुलतान अहमद जलायरने करामुहम्मदके ५००० तुर्कमानोंकी मददसे अपने भाई शेखअलीको भगाकर बगदाद राजधानीमें अमल कर लिया।

फिर अमीरतैसूरने सन् ७८५ के शब्दाल महीने भादों-कुआर सवत १४५० में बगदाद पर चढ़ाई करके सुलतान अहमदको भगा दिया जिनने सन् ७८७ यानी सवत १४५१—५२में अमीरतैसूरका तुगानमें होना सुनकर बगदाद फिर ले लिया, मगर जब सन ८०२ यानी सवत १४५६—५७ में अमीर तैसूर फिर ईरान आया तब सुलतान अहमद करायूसफ तुर्कमानको अपनी मदद पर लाया, तब भी फिर वे दोनोंही तैसूरके डरसे रूसको भाग गये और जब तैसूरने रूस भी फतह कर लिया तब वे सिन्धदेशमें चले गये और सन ८०७ यानी सवत १४६१ में तैसूरके मरनेकी खबर सुनकर ईरानको लौटे। मिश्रमें यह बात ठहरी थी कि बगदाद(१)को तो सुलतान अहमद ले ले और तवरेज(२)मेंजो आजरवायजाक्षी राजधानी है उस पर करायूसफ अमल करे। सो इसके मुवाफिक दोनोंने दोनों मुल्क तैसूरके हाकिमोंमें क्खीन लिये, मगर सन ८१३ यानी सवत १४६७में सुलतान अहमदने अपने बखनसे फिरकर तवरेज पर चढ़ाई की तब करायूसफ ने लडाईमें उनकी मारकर बगदाद भी ले लिया। इस वक्तमें करायूसफ तुर्कमानोंमें बाढ़याहो आयी और करायूसफ इस घराबेका पाला बादशाह हुआ।

तैमूरके बेटे पोते उसमें और उसके जानगीनोंसे बराबर लड़ते रहे तोभी तुर्कमानोंकी सत्ततनत ६५ वर्ष तक बढ़ती चली गयी और सन ८७३ यानी सवत १५२५में “आककूयलू” घरानेके अमीर, हसन-वेगके हाथसे खतम हुई ।

कराकूयलूकी शाखाओंमेंसे १ शाखा बहारलू भी थी जिसके अमीर अलीशकरवेगकी करायूसफने हमदान, देनूर, और गुर्दिस्तानके इनाके जागोरमें दिये थे जो तुर्कमानोंका राज्य चले जानेके पीछे तक भी अलीशकरकी विलायत कहलाते(१) रहे ।

यह अलीशकरवेगही खानखानाका मूल पुरुष था । इसलिये इसकी, करायूसफकी और तैमूरकी पीढिया नीचे लिखते हैं जिससे पाठकोंको इन तीनों घरानोंके परस्पर संबंधका पूरा हाल मालूम हो जायगा ।

न० मुगल	२० करायूसलू	न० बहारलू
१ तैमूर	१ करायूसफ	१ अलीशकरवेग
२ मीरागाह	२ करामिकदर	२ पीरअली
३ मुहम्मद मिरजा	३ कैकुबाद	३ यारवेग
४ सुनतानअबूमईद	४ जहाशाहम०१काबेटा	४ सैफअली
५ उमरगेश्वर	५ हसनअली	५ बैरामखा
६ बाबर		६ अबदुनरहीमखा

७ हुमायू  
८ अकबर  
९ जहांगीर

मीरागाह अपने बाप तैमूरकी तरफसे ईरानका हाकिम था । वह सन ८२० यानी सवत १४६४ में करायूसफके मुकाबिलेमें मारा गया । जब करायूसफके बेटे जहाशाहकी सन ८७२ यानी सवत १५०४में हसनवेग आककूयलूने लडाईमें मारकर तबरेज लेना चाहा तब उसके बेटे हसनप्रचीने मीरागाहके पोते सुनतान अबूमईदकी मदद पर बुलाया । हसनवेगने उसको भी धोखा दिया और

जिसे अब ईरान राज्यमें है ।

उसने गफलतमें हमला करके १६ रज्जब सन ८७३ यानी फागुन वटी ३ सवत १५२५ में उसे पकड़ लिया और मरवा डाला । इसनअली इस तरह अपने दुश्मनोंका जोर देखकर आत्मघात करके मर गया और अलीशकरके बेटे जो तुर्कमानोंके चार पांच हजार घरीसे सुलतान अब्दुमहदके नौकर होगये थे वे उसकी पकड़े जानेके पीछे तूरानमें आ गये और सुलतान अब्दुमहदके बेटे महमूद मिरजा(१)-ने उनकी बहन यशा बेगमसे शादी की जिससे एक नन्हा बायसद्वार मिरजा और ३ लड़कियां पैदा हुईं । इस प्रसंगसे बहारल जातिका सुगल बादशाहोंसे पूरा संबंध हो गया और वे उनके निज अमीरोंमें मिलकर रहने लगे ।

### पीरअली ।

अलीशकरके बेटोंमेंसे पीरअली कुछ बहादुर और हिम्मत वाला था । वह पहले तो हिमारशादमां(२) में महमूद मिरजाके पास रहा फिर फारस(३) देशमें चला गया जहा समय पाकर अपना राज्य जमानेके लिये शीराजके हाकिमसे लड़ा, मगर हारकर खुरामानमें भाग आया जो उस वक्त सुलतानहुसेन(४) मिरजाके

(१) महमूद मिरजा उमरशेखका बड़ा भाई और तूरानका बादशाह था तथा उमरशेख फरगानका जो १ जिला तूरानका है वह अब रुसके अमलमें है ।

(२) हिमारशादमा १ किला तूरानका है जहा अब अमीर क.बुनका अमलदारी है ।

(३) फारस ईरानका १ जिला है और शीराज फारसका मदर सुकास है ।

(४) सुलतानहुसेन मिरजा मीराशाहके बड़े भाई उमरशेख मिरजाकी चौथी पत्नीमें था और सन ८७३ सवत १५२५ में खुरामानका बादशाह हुआ था । तथारीख रोजतुलसफा इनके राज्यमें दर्ज है ।

तैमूरके बेटे पोमे उसमे और उसके जानशीनोंसे बराबर लड़ते रहे तोभी तुर्कमानोंकी सलतनत ६५ वर्ष तक बढती चली गयी और सन ८७३ यानी सवत १५२५में “आककूयलू” घरानेके अमीर, हमन-वेगके हाथमे खतम हुई ।

कराकूयलूकी शाखाओंमेंसे १ शाखा बहारलू भी थी जिसके अमीर अलीशकरवेगकी करायूसुफने हमदान, देनूर, और गुर्दिस्तानके इनाके जागोरमें दिये थे जो तुर्कमानोंका राज्य चले जानेके पीछे तक भी अलीशकरकी विलायत कहलाते(१) रहे ।

यह अलीशकरवेगही खानखानाका मूल पुरुष था । हमलिये इसकी, करायूसुफकी और तैमूरकी पीढिया नीचे लिखते है जिससे पाठकोंको इन तीनों घरानोंके परस्पर संबंधका पूरा हाल मालूम हो जायगा ।

न०	भुगल	अ०	कराकूयलू	न०	बहारलू
१	तैमूर	१	करायूसुफ	१	अलीशकरवेग
२	मीरांशाह	२	करासिकदर	२	पीरअली
३	मुहम्मद मिरजा	३	कैकुबाद	३	यारवेग
४	सुलतानअबूमईद	४	जहाशाहन०१कावेटा	४	सैफअली
५	उमरशेख	५	हसनअली	५	बैरामखा
६	बाबर			६	अबदुलरहीमखा
७	हुमायू				
८	अकबर				
९	जहागीर				

मीरांशाह अपने बाप तैमूरकी तरफसे ईरानका हाकिम था । वह सन ८१० यानी सवत १४६४ में करायूसुफके मुकाबिलेमें मारा गया । जब करायूसुफके बेटे जहाशाहकी सन ८७२ यानी सवत १५२४में हमनवेग आककूयलूने लडाईमें मारकर तबरेज लेना चाहा तब उनकी बेटे हसनअलीने मीरांशाहके पोते सुलतान अबूमईदकी अपनी मदद पर बुलाया । हमनवेगने उसको भी धोखा दिया और

(१) ये जिले अब ईरान राज्यमें हैं ।



## पौरपत्नी ।

अलीशकरवेगके बेटोंमेंसे पौरपत्नी कुछ बड़ादुर और क्रिपत वाला था। वह पत्नी ने हिमारशादमा(२) में सम्मूह मिरजाके पास रहकर फिर फारस(३) देशमें चला गया जहाँ समय पाकर अपना राज्य जमानेके लिये शीराजके जाकिमसे लडा। मगर हारकर खुरामानमें भाग आया जो उस वक्ता सुलतानहुसेन(४) मिरजाके

(१) महम्मूद मिरजा उमरशेखका बडा भाई और तूरानका बादशाह था तथा उमरशेख फरगानका जो १ जिला तूरानका है वह अब रुसके अमलमें है।

(२) हिमारशादमा १ किला तूरानका है जहाँ अब पत्नीर काबुनका अमलदारी है।

(३) फारस ईरानका १ जिला है और शीराज फारसका सदर मुकाम है।

(४) सुलतानहुसेन मिरजा मीरांशाहके बडे भाई उमरशेख मिरजाकी चौथी पत्नीमें था और सन ८७३ सवत १५२५ में खुरामानका बादशाह हुआ था। तवारीख रोजतुलमफा इसके राज्यमें लगी है।

तैमूरके बेटे पोने उससे और उसके जानशीनोंसे बराबर लड़ते रहे तोभी तुर्कमानोंकी सलतनत ६५ वर्ष तक बढती चली गयी और सन ८७३ यानी सवत १५२५में “आककूयलू” घरानेके अमीर, हसन-वेगके हाथसे खतम हुई ।

कराकूयलूकी शाखाओंमेंसे १ शाखा बहारलू भी थी जिसके अमीर अलीशकरवेगकी करायूसुफने हमादन, देनूर, और गुर्दिस्तानके इनाके जागोरमें दिये थे जो तुर्कमानोंका राज्य चले जानेके पीछे तक भी अलीशकरकी विलायत कहलाते(१) रहे ।

यह अलीशकरवेगही खानखानांका मूल पुरुष था । इसलिये इसकी, करायूसुफकी और तैमूरकी पीढ़िया नीचे लिखते हैं जिससे पाठकोंको इन तीनों घरानोंके परस्पर संबंधका पूरा हाल मालूम हो जायगा ।

न० मुगल	अ० कराकूयलू	न० बहारलू
१ तैमूर	१ करायूसुफ	१ अलीशकरवेग
२ मीराशाह	२ करसिकदर	२ पीरअली
३ सुहभद मिरजा	३ कैकुबाद	३ यारवेग
४ सुलतानअबूमईद	४ जहाशाहन०१कावेटा	४ सैफअली
५ उमरशेख	५ हसनअली	५ बैरामखा
६ बाबर		६ अबदुनरहीमखा
७ हुमायू		
८ अकबर		
९ जहागीर		

मीराशाह अपने बाप तैमूरकी तरफसे ईरानका हाकिम था । वह सन ८१० यानी सवत १४६४ में करायूसुफके मुकाबिलेमें मारा गया । जब करायूसुफके बेटे जहांशाहकी सन ८७२ यानी सवत १५२४में हुमनवेग आककूयलूने लडाईमें मारकर तबरेज लेना चाहा तब उसके बेटे हसनअलीने मीरांशाहके पोते सुलतान अबूमईदकी अपनी मदद पर बुलाया । हसनवेगने उसको भी धोखा दिया और

१) ये जिले अब ईरान राज्यमें हैं ।

हाथी लूटमें आये। धन मानकी कुछ गिनती नहीं थी। ५००० ताद-  
मी खेत पड़े और बहुतसे भागते हुए भी मारे गये।

बादशाह उसी दिन करनालसे चन्द्रकर पानीपतसे ५ कोस पर  
ठहरेही थे कि वहाँ हेमूके आने और लड़ाई शुरू हो जानेकी  
खबर पहुची। उसी वक्त 'लखवर' सजाकर वे चल दिये। बैराम  
खा आगे होकर फौजीकी देखभाल करते और बहादुरीका दिन  
बढ़ाने जाते थे। जब पानीपतके पास पहुचे तब फतहकी खबरें  
आने लगी और शाह बुनी महरम हेमूको पकड़ कर हुजूरमें  
लाया।

बादशाहने हेमूसे बहुतसा जवाब पूछा। मगर वह तो कुछ  
नहीं बोला। तब बैरामखाने अर्जकी कि हजरत इस फसादीको (१)  
अपने हाथसे मारकर गजावा (२) 'सबाव' (काफ़रोंके मारने-  
पुण्य (३) हासिल करें।"

बादशाह छोटी उमरमें थे, तौभी बड़ी समझदारीसे कहने  
लगे कि एमारी हिम्मत एक बम्हे हुए कैदीको मारनेकी रखमत  
नहीं देती और खुदाकी दरगाहमें भी ऐसे कामोका कुछ स्वाद नहीं  
मिलता होगा। मैं तो इसको उसी दिन टुकाडे टुकाडे कर  
हुका हू कि जिस दिन बडे हजरतके किताबखानेमें एक ऐसे आ-  
दमीको सब अलग अलग करके तमबीर बनायी थी। बडे

(१) दूसरे तवारीख लिखने वालोने फसादीको जगह काफ़िर  
लिखा है, मगर हिन्दूके वास्ते काफ़िर शब्द अकबरनाममें कहीं  
नहीं आया है। यह सिहरवानी सुमनमान अत्यकारोंके खिलाफ  
न जाने कैसे श्रेष्ठ अनुपमजलसे बन आयी है। बादशाहकी मरजीसे  
या अपनी भलसमसीसे।

(२) काफ़रोंसे लड़ाई लड़नेको मुसलमान गजा कहते हैं।

(३) मुसलमानों मतमें काफ़रोंके मारने या उनके हाथसे  
मारे जानेका बहुत पुण्य लिखा है। जो मुसलमान न हो उसको  
मुसलमान लोग काफ़र कहते हैं।

नीचे आ गया था। मिरजाके अमीरोंने पीरभलीको वीर और  
उद्योगी देखकर मार डाला।

यारबेग ।

पीरभलीका बेटा यारबेग ईरानमें रहता था। जब वह सुन्त  
हसनबेग आककूयलू के पोतोंसे सन ८०६ यानी मवत १५५७ में  
शाहइसमाईल सफवी(५)ने छीनकर वहाँ अपना राज्य जमाया  
तब यारभली ईरान छोड़कर बदखशां(६)में चला आया और  
वहाँसे कुदुज(७)में जाकर अमीर खुसरो शाहके पास रहने  
लगा। जब मुहम्मदखांशिवानी(८) उजबक(९)ने तूरानका  
मुल्क अमीरतैमूरके पोतोंसे छीन लिया और बादशाह भी  
फरगाने(१०)में रहना मुश्किल देखकर सन ८१० यानी मवत

(५) शाह ईसामाई कौमका सैयद और शैख सफीकी औलादमें था।  
इसलिये सफवी कहलाता था। तवारिख हबीबुनसियर इसके  
राज्यमें सन ८२८ सवत १५७८।८० में बनी है।

(६) बदखशां १ जिला तूरानका है जो अब अमीर काबुलके  
कब्जेमें है।

(७) कुदुज बदखशांका १ शहर है।

(८) मुहम्मदखां शिवानी चगेजखाके पोते और जूजीखाके बड़े  
शवानकी औलादमें था। इसलिये शिवानी कहलाता था।

(९) उजबकखा जूजीखासे ७ वीं पीढ़ीमें मगूनिस्तान यानी मगो-  
लियाका बादशाह था। उसको औलादका नाम उजबक हुआ।  
उसके बहुत बड़े जानेसे जूजीखाकी बहुतसी औलाद भी उजबक  
कहलाने लगी थी। जैसे शिवानी वगैरह।

(१०) फरगाना भी १ जिला तूरानका काशगर समरकंद बदखशाके  
बीचमें था और १ हद उसकी मगोलियासे मिली हुई थी। अब  
मगोलिया और काशगर चीनके, समरकंद फरगाना और बुखारा  
इसके तथा बलख बदखशां अमीर काबुलके ताबेमें हैं। चगेजखां  
और अमीर तैमूरकी औलादके पास अब कोई सुल्त नहीं है।

१४६१ में बटखगामें प्राये तो खुमरोगाहने ( जो १ पार्सी घराने उनके दादा सुलतान अदमदंडका था और सुलतानके पोरने तंगनमें उनके बेटोंकी प्रापाधारीमे सैदान खानी पाकर बटखगामा मालिक बन बैठा था ) बटखगामा खुवा उनकी मौप दिया तब यार बंग भी अपने बेटे मेफअली नसेत वायर बादशाहका नौकर हो गया ।

मेफअली ।

यह वायर बादशाहका नौकर होकर बटखगामें रहा । वहां उसके घरमें एक लडका पैदा (१) हुआ जिसका नाम बैरमवेग रखा यही पीछे भाग्यवलसे बैरामखा खानखाना कहलाया ।

बैरमवेग तथा बैरामखा ।

बैरमवेगने बटखगामे बलखमें जाकर दिया पढ़ी और १६ वर्षकी अवस्थामें हुमायूँ(२) बादशाहकी खिदमतमें पहुँचकर नौकरी की जिसमें बढ़ते बढ़ते मुमालही और पसीरोंके दरजे तक तरकी पायी ।

यह सब अवधान यहां तक तवारीख रोजेतुलमफा, खीबुन मियर, तुलुवाद खर, और सुप्रामिरुलउमरासे लिखा है । अब अकबरनामेसे लिखे थे ।

अकबरनामेमें इनका नाम कहीं बैरामखा, कहीं बैरामवेग और कहीं खानखाना लिखा है । उससे यह भी नहीं मालूम होता कि इनकी खानखानाका खिताब कब मिला । खाला खिताब तो ईरानकी बादशाहने सवत १६०१ में दिया था जयकि ये

(१) पदा होनेका साल सवत किसी तवारीखमें नहीं मिला और न हुमायूँ बादशाहके पास आने और नौकर होनेका, पर आगे एक नोट उनकी अवस्था पर लिखा गया है । उससे कुछ अनुमान उनके जन्म कालका हो सकता है ।

(२) उस समय हुमायूँ तख्त पर नहीं बैठे थे, उनके बाप वावर बादशाह विद्यमान थे ऐसा जाना जाता है ।

हुमायू बादशाहके साथ वहां गये थे। खानखानाना खिताब हुमायू बादशाहने ईरानसे आकर कंधार काबुल या हिन्दुस्थान लेनेके पीछे सवत १६०२ से सवत १६१२ तक किसी वर्षमें दिया होगा; ऐसा जाना जाता है। अकबरनामा बैरामखाके बहुत पीछे बना है। बैरामखा तो सवत १६१७में ही मर गये थे अबुलफज्ज जो अकबरनामेका रचयिता है सवत १६३१के लगभग बादशाही नौकर हुआ था जिसके १८ वर्ष पीछे ७ उटी-बहिस्त सन ४१ इलाही, २७ शाबान सन १००४ बैशाख वशी १४ सवत १६५३ को उसने अकबरनामेका दूसरा टफ्तर खतम किया था। इस सबबसे उसने बैरामवैगको उन वर्षोंमें भी बैरामखा और खानखाना लिख दिया है कि जिनमें ये खिताब उनकी मिले भी नहीं थे, पर वे उस समयमें जब अकबरनामा लिखा गया है खानखानाके नामसे प्रसिद्ध हो चुके थे। इसलिये अबुलफज्जसे यथार्थ समयमें यथार्थ नाम लिखनेके यथार्थ प्रवन्ध न हो सका।

वेग, खान, और खानखानाका अर्थ।

तुर्की भाषामें वेगके माने सरदार और खानके माने बादशाहके हैं। तुर्क और मुगल बादशाह सब खान कहलाते थे। सरदारोंको वे और वेग कहते थे ऐसेही बादशाही और सरदारोंकी औरतें खानम और वेगम कहलाती थीं। बाबरने तो अपने परदादा तैमूरको भी तैमूर वेगही लिखा है।

तैमूर और उसके बाप दादे काचूनी बहादुर तक खान नहीं कहलाते थे क्योंकि वे चंगेजखाके बाप दादोंके सेनापति थे और चंगेजखाके पीछे तक उसके बेटे चंगताईखाकी औलादके भी रहे थे।

तैमूर अपने खानदानमें पहला बादशाह हुआ, पर उसके बेटे पोत बाबर तक बादशाह नहीं कहलाते थे, वे मिरजा(१) कहलाते

(१) मिरजा पसलमें प्रमीरजा शब्द है। इसका अर्थ है समीरका

है। वासनने अपनेको वादशाह कहलाने लग लिया। तबसे वादशाहका गिनाव उनका। औनाहमें भी जानी हुआ और नसी-रीको खानके खिताब मिलने लग। बड़े बड़े लोहवो खानखाना का खिताब मिलता था, जिसका अर्थ है सब गलतियाँ खान। सुननीवी वादशाहीमें पहला खानखाना दिलावरखा नीकी था। इसका वाप टोलतखा नीकी दिलाके इलतान मिकदर नीकीवी तरफसे पजाबका सुबेदार था। सगर मिकदरके मन्नेके पोछे इनने वावर वादशाहमें सब ये काबुलमें ये भेल करके उनका यमन पण्डित कना दिया था। इस खेखवाहीमें वावर वादशाहने उनके मन्ने पर उसके बेटे दिलावरखाको पजाबका सूबा और खानखानाका खिताब दिया था।

दूसरे खानखाना बेरामखा तीसरे, सुननमखा और चौथे ययदुल रहीमखा (२) हुए।

बैरामखा पकावरगामें।

हुमायू वादशाहका समय।

अजहरनामके पहले दफ्तरमें (खउमें) जो हुमायू वादशाहकी तवागीख लिखी है उसमें बैरामखाका नाम पहले पहल गुजरा-तकी बढाईमें आता है, इसके पूव नही आता जिससे ठीक समय उनके वादशाहके पास आने और नीकार एगेका मालूम हो।

बैटा। तैमूरका खिताब अमीर था जिससे उसके बेटे अमीरजा, सारजा और मिरजा कहलाते थे। नद वावरने वादशाहका खिताब अपने लिये तजवीज किया तब दो पीढ़ी पीछे पकावरके समयमें उनके बेटे शाहजार्द, शाह और सुलतान कहलाने लगे और मिरजाका खिताब बड़े बड़े अमीरोंके लिये छोड़ दिया गया। खानखाना ययदुल रहीमखा भी बहुत वर्षों तक मिरजा और मिरजाखा कहलाते थे।

(२) इनके पोछे पार्थिव खानखाना जहांगीर और शाहजहाँके राजमें मर्रावतखा हुए। इस तरह औरगर्जबके बेटे शाहशालस वहादुरशाह तक कई खानखाना हुए। आखिरी खानखानाका नाम सौ सुनअमखा था जो सन ११२३ खवत १७६६ में मरे थे।

और इसका यही कारण है कि वे पहले साधारण अवस्थामें थे और कोई बड़ा काम उनसे नहीं हुआ था कि जिससे उनका नाम लिखा जाता ।

बाबर बादशाहको तवारीखमें भी अलीशकरके पीछेका कुछ हाल नहीं है ।

बाबरका हाल हम सन ८१० यानी सवत १५६१ तक लिख आये हैं । फिर उन्होंने इसी सालमें काबुल, सन ८१३ सवत १५६४ में कंधार और सन ८३२ यानी सवत १५८२।८३में हिन्दुस्थान फतह किया । सन ८३७ सवत १५८७।८८में उनके गुजर जाने पर हुमायूँ बादशाह तख्त पर बैठे । सन ८४१ सवत १५८१।८२में गुजरात जीतनेकी गये । सन ८४२ सवत १५८२।८३में वहाँके बादशाह सुलतान बहादुरको(१) भगाकर किले चापानेरको ४ महीने तक घेरे रहे । निदान एक दिन किलेके आसपास फिरते फिरते एक जगह ६०।७० गज ऊँची भीत देखकर एका एक गजकी छंटीसे उसमें लोहेकी खूंटियां गड़वायीं और अपने सिपाहियोंको उन परसे ऊपर चढ़नेका हुक्म दिया । जब ३८ सवाग चढ़ चुके तब बादशाह चढ़ने लगे । बैरामखाने अर्ज की कि हजरत जरा ठहरें । जब वे लोग रास्तेसे चले जायें तब पधारें । बैरामखायह कहकर भागी हो गये, बादशाह पीछेचढ़े । इस तरहसे ३०० जवानोंने कोट पर चढ़कर वह मजबूत किला फतह कर लिया ।

जब बादशाह गुजरात फतह करके आगरामें आये तब बिहार और बंगालसे शेरशा पठानके उन दोनों सुबोंमें घमक कर लेनेकी

(१) गुजरातका सूबेदार सुलतान सुहभद तुगलकके समयमें जफरखा था । वह सुलतानके पीछे दिल्लीकी बादशाही कमजोर होने पर खुदसुख्तार हो गया था । यह सुलतान बहादुर उसीके उत्तराधिकारियोंमेंसे था । गुजरातके बादशाह सन ७८३से सन ८८० सवत १४४७ से १६२८ तक कायम थे । फिर अकबर बाद-  
।हने गुजरातकी दिल्लीमें मिला लिया ।



छवर प्राणी और कुछ दिनों पीछे दगानवा दादशाह नसीबशाह  
(१) भी शेरखा में शरकर शानर में आया ।

शेरखा अर्थात् शेरशाहवा जीवमचरिद हम हृषा  
बुके हैं । यद्यप्यश्वरनामसे कुछ हाल उसका लिखते  
हैं । शेरखा का प्रसन्नी नाम फरीद, बापका हमन और दादाका  
इब्राहीम था । इब्राहीम जिले मेवात परगने नारनोत गाव शिमले-  
में रहता था और घोड़ोंकी मौदागरी करता था । इसन सौदा-  
गरी छोड़कर सिपाही बना और बहुत मुहत तक रायसाह शेखा-  
यतका नौकर रहा जो आमेरके राज्यका एक बड़ा जागीरदार था ।  
फिर सहसराम जिले बिहारमें जाकर सुलतान मिक्टर जोटीके  
अमीर नसीबशाह सोहानीका नौकर हुआ । उस वक्त फरीद अपने  
बापसे छूटकर बाहर दादशाहके अमीर सुलतान जुनेदकी नौबरी  
करने लगा । एक दिन बावरने उसको देखकर जुनेदसे कहा कि इस  
पठानकी पांखोंमें बदमाशी पायी जाती है । इसको कैद रखना  
चाहिये । फरीद यह सुनकर भाग गया और बापके मरने पर  
उसके मासका मालिक होकर सहसराम और रहतासके बीचमें  
लूट मार करने लगा । सुलतान वहादुर गुजरातीने खर्च भेजकर उसे  
डुकाया । उसने खर्च तो ले लिया और कुछ बचाना करके उसके  
पास नहीं गया । इतनेहीमें बिहारका शाकिम सर गया और शेरखा  
मदान खाजी देखकर वहांका मालिक बन बैठा । फिर एक वर्ष तक  
बगालके दादशाह नसीबशाहसे बराबर लड़ता रहा । उन दिनों  
हुमायूं दादशाह मासवा(२) और गुजरात फतह करानेमें लगे हुए  
थे जिससे उसको खूब मौका मिला गया था ।

(१) बगाल सन ७१८ संवत १३८५से सुदख्मुतार हो गया  
था और नसीबशाह सन ८२७ संवत १५७७ में दादशाह हुआ  
था । बंगालकी दादशाही सन ८८३ संवत १६३२ तक दिल्लीसे  
अलग रही । फिर अकबर दादशाहने फतह कर ली ।

(२) मालवेमें भी अलग दादशाहत सन ८०४ संवत १४५८ से  
सन ८७० संवत १६१८ तक थी । फिर अकबर दादशाहने ८  
मिला ली । मालवेके दादशाह गोरी और खिलजी जाते

निदान बादशाह सन् ८४५ संवत् १५८५ई गालाजी रवाना हुए। वैरामखां भी साथ थे और इस समय इनका नाम अमीरीमें लिखा गया है जिससे जाना जाता है कि वह दरवा इनकी चांपानेरकी फतहके पीछे मिल गया था।

शेरखां उस समय बिहार देशके प्रसिद्ध गढ़ चिनारमें (१) था मगर बादशाहके पहुँचने पर वह गालकी चन दिया और अपने बेटे जलालखांकी गढ़ीमें (२) छोड़ गया जो उस समय व गालका दरवाजा माना जाता था।

बादशाहने बिहारमें पहुँचकर भागलपुरसे वैरमवेग वगैरह कई अमीरोंको ५१६ हजार आदमियोंके साथ गढ़ी फतह दरनेको भेजा मगर वहाँ हार हुई। वैरमखां कई बार पीछे फिर फिर कर जलालखांसे लड़े और उसकी सेनाका मुह भी फेर दिया परन्तु मदद न पहुँचनेसे कुछ वन न पडा।

फिर हुमायू बादशाह भी ८ सफर सन् ८४६ आगाठ सुदी ११ संवत् १५८६ को परगने भोजपुरके गाव भईयामें शेरखांसे लड़ाई करके आगरेमें आये। दूसरी सड़ाई १० मोहरम ८४७ शब्द सुदी १२ संवत् १५८७ को कसोजमें हुई। वहाँ भी शेरखा जीता और बादशाह शिकस्त खाकर दिल्लीकी चल दिये।

वैरामखां इस सड़ाईमें भी बहादुरी करके हार होनेके पीछे सभलकी तरफ चले गये और कसबे लखनोरमें जाकर राजा मिर्जसेनके आश्रित हुए जो उस जिलेके नामी जमींदारीमेंसे था। जब यह खबर शेरखांकी पहुँची तब उसने अपना आदमी

(१) सही नाम चुमार है। यह बहुत पुराना गढ़ है। इसका सविस्तर वृत्तात् इसी खानके रईस बाबू हनुमानप्रसादजीने सन् १८८० ई०में लिखकर छपवाया था। उसमें लिखा है कि यह किला सन् १५३० ई० संवत् १६८८में हुमायूँके और सन् १५३७ ईसवी संवत् १६८४ में शेरशाहके दखलमें आया था।

(२) गढ़ी वज्जानकी सीमा पर एक प्रसिद्ध जगह थी।

भेजकर बैरामखाना राजासे सागा । राजाने लाला दे दिया ।  
उसके पास भेज दिया । बैरामखाने सान्देके नामसे, बैरामखाने  
मिले । वह पहली सज्जनिमसे उठकर सिता और उल्लाखन  
सनालेके लिये चिकनी चुपड़ी बातें करने लगा जिनमें यह भी  
काय गया कि “जो इखलाम (भक्ति) रखता है वह खता नहीं  
करता ।” इस पर इन्होंने भी कहा कि हाँ जो इखलाम रखता  
वह खता नहीं करेगा । फिर दुरजानपुरके पाम्ने ग्वालियरके  
हाकिम अबुलकासिम(क१) याच गुजरातकी भांगे । राजासे बैरामखाना  
वकील गुजरातसे आता था उसने खबर पाकर बादमी देना और  
अबुलकासिमको जो चेहरे सुहरसे दीदार कवान था पकड़  
लिया । बैरामखाने नेकजातीसे (सज्जनतासे) उठ करके आया कि  
मैं बैरामखाना हूँ । मगर अबुलकासिमने भलमनसे मैं नहीं जानता  
यह तो मेरा नौकर है और चाहता है कि मेरे वास्तों को पकड़ो  
कुरवान करे । तुम इसकी जाने दो ।

इस तरह बैरामखाने बचकर गुजरातके सुलतान महमूदके  
पास पहुँचे और अबुलकासिमको जब शेरखाके पास ले गये तो  
उसने बैरामखानेसे ऐसे सज्जन पुरुषको मरवा डाला ।

शेरखा कहा करता था कि जब बैरामखाने उस सज्जनिमसे  
यह कहा था—“जो इखलाम रखता है । खता नहीं करता  
है ।” तो मैंने समझ लिया था कि यह हमसे मेल नहीं करेगा ।

गुजरातके सुलतान महमूदने २) भी बैरामखानेकी अपने  
पास रखनेके वास्तु बहुत कहा । मगर बैरामखाने कबूल नहीं  
किया और मक्के जानेकी कुट्टी लेकर सूरत बन्दरसे आये ।

(१) यह हुमायूँकी तर्फसे ग्वालियरका हाकिम था । जब शेरशाह  
हुमायूँ पर फतह पाकर ग्वालियर पर गया तब उसने कुछ दिनों  
तक लडकर किला सौंप दिया और आप उसकी साथ हो गया ।

(२) बहादुरके पीछे यह सुलतान महमूद सन् ८४४ सवत  
१५८४ में गुजरातका बादशाह हुआ था ।

वहाँसे मारवाड छोकर कमवे जूगमें ७ मोहर्रस सन् ८५० यानी इब्नेशाख सुदी ८ संवत १६००को अपने मालिक हुमायूँ बादशाहके पास जा पहुँचे ।

बादशाह दिल्लीसे पचाव और पचावसे सिंध २८ रमजान सन् ८४७ माघ बटी ३ संवत १६८१को पहुँच कर कमवे लहरा में उतरे थे । दूसरे वर्ष सन् ८४८ यानी संवत १६८८ में हमीदा बानू बेगमसे निकाह करके वहाम ठठे को गये । रास्ते में कुछ दिनों तक सेवान किलेसे लड़े, परन्तु लड़ाईसे लाभ न देखकर जोधपुरके राव मालदेवके बुलानेसे मारवाडको चले गये । वहाँसे भी निराश होकर जैसलमेर होते हुए १० जमादिउलअव्वल यानी भादों सुदी १२ संवत १५८८ को उमरकोटमें लौट आये और बेगमको वहीं छोड़कर फिर सिंधमें गये । १५ दिन पीछे पूरज्व रविवार कार्तिक सुदी ६ संवत १५८८ को रातको उमरकोटमें शाहजादेका जन्म हुआ । बादशाहने कसबे जूग इलाके भङ्गरमें यह वधाई सुनकर शाहजादेका नाम मिरजा अकबर रखा और सिंधियोंसे लड़ाई शुरू की जो भङ्गरके सुलतान महमूदकी तरफसे उनके सुकाविलेकी आये थी । यह सुलतान महमूद ठठेके शाह हुसेनबेगके अधीन था । शाहहुसेन मिरजाशाहबेग भरगूका बेटा था । जब वावर बादशाहने इसके भाई मुहम्मद सुकौमसे काबुल लिवा उसके दो तीन वर्ष पीछे इसको भी वाधारसे निकास दिया था तब यह सिंधमें आकर इस सुल्तानका मालिक बन गया । इसके पीछे हुसेनबेग ठठका सुलतान हुआ । इसीके आश्रित सुलतान महमूदसे यह लड़ाई हो रही थी ।

ब रामखा जिस वक्त वहाँ पहुँचे उस वक्त भी लड़ाई हो रही थी और वे सीधे रणस्थलमें जाकर शत्रुओंसे लड़ने लगे । बादशाहकी फौजको बड़ी हैरत हुई कि क्या यह कोई लश्करगेव (देव माया) है ? पर जब मालूम हुआ कि वे रामखा हैं तब सब बिस्मा छठे और बादशाहकी भी बहुत खुशी हुई ।

बादशाहके पाँच मिथमें भी नहीं जमे। निदान वे मल्लतान मरमूदसे सलाह करके ७ रवीउलअव्वल सन् ८५० हि० जेठ सुदी ८ मघत १६००को सेवक(१) रास्तेमें कंधारकी रवाने हुए, उनका इरादा ईरान जानेका था। मगर उनके छोटे भाई मिरजाअसकरीने जो कंधारका हाकिम था सभले भाई मिरजा कामरा अकिस काबुली सलाहसे उनके पकड़नेका इरादा किया। बादशाह यह खबर पाकर कंधारके पासमें मस्तगक(२) होट भये। मिरजा असकरी इनके ईरान जानेमें अपना बहुतमा नुकसान देखकर रास्ता रोकनेके लिये कंधारमें निकला जिसको खबर ली बहादुर(३) नाम एक भले आदमीने आकर वैरामखाको दौ। वैरामखा उसको बादशाहके पास ले गये बादशाहने बहासे निकल जानेके लिये तरद्दुदीवेग(४) दमैरुत अमीरीसे घाँटे मगाये और जब उन्होंने नहीं दिये तब वे उनको दंड देनेके लिये जानि लगे, वैरामखाने कहा कि वहाँ तग रंगया है पर इतनी फुरसत नहीं रही है। इन नमकहरामोंको गजबइलाहीके (इंश्वर कोपके) हवाले करके यहाँसे चला देना आगिये।

बादशाह उनका कहना मानकर तथा काबुल और कंधारका इरादा छोड़कर मस्के(५) जानेके विचारसे ईरानकी रवाने हुए

(१) सेवी बलूचिस्तानमें है जहाँ अब अगरेजी असलदारी है।

(२) मस्तग कंधारके पास है।

(३) जी बहादुर मिरजा असकरीका नौकर था पहले बादशाहके पास भी रह चुका था।

(४) तरद्दुदी वेग बादशाहके बड़े अमीरीमें खानखानासे दूसरे दरजे पर था।

(५) मस्का अरब देशमें मुसलमानोंका बड़ा पुरानी धाम है जो वहाँ हो जाता है उसको हाजी कहते हैं। हाजीके माने यात्रीके हैं मस्केकी यात्राका नाम हज है।

और खूबजा सुप्रजाम(१) वगैरहसे कह आये कि शाहजादे और बेगमको लेकर पीछेसे जल्दी आजायें। कुछ दूर गये होंगे कि रात हो गयी। तब बेगमखाने बादशाहसे अर्ज की कि हजरतको मालूम है कि मिरजा असकरी कितना नालची है और वह इस वक्त दो तीन मुशियोंके साथ बैठा हुआ हजरतके डेरके माल असबाबकी फर्द देखता होगा। इस वास्ते अभी अकस्मात् वहां पहुच कर उसका काम तमाम कर दें। जब मिरजा न रहेगा तब उसके नौकरोको जो सब आपके नमकसे पले है आपकी खिदमतमें आमाही पड़ेगा।

बादशाहने इस सलाहकी तारीफ तो बहुत की मगर वैसा करना सुनासिब न समझा और आगेको कूच कर दिया। तबहु-दीवेग वगैरह तमाम नौकर मिरजा असकरीके पास चले गये मगर बेरामखां बादशाहके साथ रहे।

बेरामखाने अपनी दानाइसे जैसा समझकर कहा था वैसाही हुआ। मिरजाअसकरी रातको मस्तगमें आकर अपने डेरमें बादशाहके माल असबाबकी याददाश्त (सूची) लिखने लगा। जो उसके पास लाया गया था और फिर शाहजादे अकबरको लेकर कंधारमें आया और शाहजादेकी मा हमीदा वानूबेगम बादशाहके पास चली आई।

बादशाहने विलायत गर्मसरमें(२) पहुच कर १ शव्वाल सन् ८५० मौज सुदी ३ सवत १६०० का ईरानके बादशाह तुह-मास सफवीके नाम खत भेजा जिसमें लिखा था कि तुम्हारेसे कुछ ऐसी बात बन आयी है कि आपका मिलाप जल्दी हो। पीछे अपनी ईरानकी अमलदारीके जिले सीसता(३) वगैरह

(१) मरयममकानी अर्थात् हमीदा वानूबेगमका भाई जो मोअज्जम सुलतान भी कहलाता था।

(२) कंधार और सीस्तानके बीचका मुल्क।

(३) सीस्तान अब ईरानके, और कंधार काबुलके नीचे है।

बादशाह जब इस तरहसे शाह ईरानके मेहमन हाज़र  
 राखेले ईरानी एमीने और शाहजादोंकी नज़रे और ग़ियाफ़त  
 लेते हुए हिरातसे (२) कज़वीनमें (३) पहुँचे तब वैसमख़ा का शहर  
 सुलतानियेमें (४) मेजदार शाहकी अपने आनेकी ख़बर भेजी।

वैसमख़ा शाह तुहमासपको बादशाहका सम्मान देकर लौट  
 आये और शाह तुहमासपने बड़ी धूम धामसे पेशवाई करके  
 जमादिउलसाती सन् ८५१ भादों सवत १६०१ में हुमायूँ बादशा-  
 हसे मुनाकात की तथा बड़े आदर सत्कारसे सुलतानियेमें ले  
 जाकर ठहराया। कई दिन तक राग रग होता रहा और शिकारकी  
 भी ऐसी भारी तैयारी हुई कि शाही फौज १० दिनके रास्तेसे  
 जानवरोंकी घेरकर लायी। दोनों बादशाह घोड़ेपर सवार होकर

---

(१) यह शाह इसमाईलका बेटा था और सन् ८३० स० १५८१ में  
 तख़्त पर बैठा था।

(२) हिरात अब अमीर काबुलकी क़ब्ज़ेमें है।

(३) कज़वीन ईरानका एक शहर है और उन दिनों वहाँ  
 राजधानी थी।

(४) कज़वीनके पास एक शहर है जहाँ ईरानकी सफ़वी बादशाह  
 गर्मियोंमें रुका करते थे।

गये और शिकार मारे। फिर शाहके भाई बहराममिरजा और साममिरजाने आज्ञा पाकर शिकार खेला। उनके पीछे बैराखा वगैरह बादशाहके अमीरोंको भी शिकार करनेका हुक्म हुआ।

इसके पीछे फिर एक और ऐसाही बड़ा शिकार हुआ जिसमें दोनों बादशाहोंने धोगानबाजी और कबलअटाजी की अर्थात् घोड़े दौड़ा कर गेंद खेले और निशाने उड़ाये। इसी दिन बैरामवेगको खानका(१) और हाजी मुहम्मद कूकीको(२) सुलतानका खिताब मिला। फिर शाहने १२००० सवार अपने बेटे मिरजा सुरादके साथ मरहदके वास्ते तैयार करके उनका तूमार (इफतर) बादशाहको दिखाया और सफरका सब सामान कर दिया। तीसरी बार फिर वैसाही शिकार होकर दोनों बादशाहोंकी सबारी तथा मुलाकात हुई और शाह बादशाहके छेरे पर आये और दोनों बादशाह एक दूसरेसे विदा हुए।

आते समय बादशाह तबरेज होकर कंधारको लौटे। इस रास्तेमें भी उनकी वैसीही पेशवाई और मेहमानदारी हुई।

जो लोग इस सफरमें बादशाहके साथ थे अकबरनामेमें उन सबका नाम और थोड़ा थोड़ा परिचय भी लिखा है जिनमें सबसे पहला नाम बैरामखांका है कि “सब साथ देने वालोंमें शिरोमणि, जो इस विषयमें हमेशा नेकनीयतीसे बादशाहके साथ रहा वह बैरामखां”।

बादशाहने ७ मुहर्रम सन् ८५२ चैत सुदी ८ सवत १६०२ की कंधार पहुँचकर मोरचे लगाये और मिरजाकामराके कोका

(१) बैरामवेग बैरामखां तो पहलेसे कह लाने लगे थे जैसा कि शाहके फरमानमें भी बैरामखा लिखा है परन्तु राज रीतिसे उनकी खानका खिताब अब मिला था।

(२) हाजी मुहम्मदखा भी इसका नाम था।



(घाभाई) “स्फीज” का जतीनटावरमें (१) मौजूद होना बदनकर व रामशाही उसके ऊपर भेजा यह गये और पतल नरके लोकाको पकड़ लाये ।

फिर बादशाहने मिरजा कामराके पास फरमान लिखकर बैरासखाके साथ काबुलमें भेजा । इस फरमानके साथ शाह तुलसी-स्यका भी फरमान था जिसमें उन्होंने मिरजाको आपसमें मेल रहनेका उपदेश सिखाया था ।

बैरासखा जब काबुल पफ के तब काबुल (२) वगैरह बहुतसे आदमी पेशवाई करके इतको ले गये । मिरजा कामराने चार-दागमें दरबार करके बैरासखाको बुलाया । इन्होंने सोचा कि वे दोनों फरमान मिरजाको बैठे हुए देगा तो ठीक नहीं है और मिरजा उठकर ले ऐसी उससे उम्मेद भी नहीं । इसलिये वे बैठ करने-के लिये एक झुरान साथ ले गये । जब मिरजा झुरानकी ताजी-मकी खड़ा हुआ तब वे दोनों फरमान भी उसको दे दिये । इस तरह दानाईसे उन दोनों फरमानोंकी ताजीम कराई । फिर दोनों बादशाहोंकी भेजी हुई सौगातें मिरजाको दीं और मिरजाके पास बैठकर मेला मिलापको बातें कीं । जब दरबार हो चुका तब मिरजासे इजाजत लेकर शाहजादे अकबर, मिरजा हिन्दू, मिरजा सुलेमान (३), मिरजा इब्राहीम, यादगार (४) नासिर मिरजा और उलग (५) मिरजा वगैरहसे अलग अलग मिले और सबको बादशाहके भेजे हुए खत और खिलखत दिये तथा मीहर-

(१) कंधारके पास एक कसबा ।

(२) मिरजा कामराका एक भतीर ।

(३) मिरजा सुलेमान और इब्राहीम दोनों वाप बैठे बादशाहके फुट भाईयोंमेंसे थे । बाबर बादशाहने मिरजा सुलेमानको बदख-शाका मुल्क दे रखा था ।

(४) यह बादशाहका चाचा था ।

(५) उलग मिरजा भी बादशाहका फुट भाई था ।

ताजीके सदेशे कहे। मिरजा कासनाने बैरानग्याकी पक्ष महीना ठहरा कर विदा किया और अपनी फूफ्फी राजसादा नेममकी मिरजा-असकरीके समझानेके बरानेसे कंधार भेजा जिनकी सिपागिरीसे बादशाहने मिरजाके पछूर सुघाफ कर दिये । गुरवार २४ जमादिउरसाली कातिक वटी १२ को दीवान स्थानमें बड़ा भागी दरबार किया जिसमें चगताई(१) और कजलबाग(२) प्रमौर अपने अपने दरजेसे परा बाधकर रुठे हुए और बैरानग्या हुक्मके मुदाफिक मिरजा असकरीको-गद्देमें तलवार छलकर लाये । बाद-शाहने मेहरबानीसे तलवार निकलवा दी और जब मिरजा आटाव बजा ला चुका तब उसको बैठनेका हुक्म दिया और कंधारकी देखल करके मुहम्मद सुरादमिरजाको सौंप दिया जो ग्राह तुलमाखका बेटा था और मददके लिये ईरानी फौजके साथ आया था । उसने अपनी तरफसे ग्राह बदामखाको(३) कंधारला हाकिम किया ।

शाहजादा सुराद मर गया तब बादशाहने कंधारका किला बेगमोंकी रखनेके वास्ते ग्राह बदामखासे माना । उसने देगमें छहर किया, तब मिरजा असकरीको(४) कैद रखनेके वास्ते छलके पास किलेमें अछनेदरा बहाना करके अपने अमीरोंको रातके वज्र किलेके पास पास बैठा दिया जो तुबल होतली अदर हुस

(१) मुगल ।

(२) ईरानी ताल टोपी बाखे, क्योंकि कजल बागके माने तुर्की कोलीमें ताल टोपीके हैं, जो सफदी बादशाहोंके नौकर दिया करते थे ।

(३) ग्राह बदामखा ग्राह ईरानका नौकर और शाहजादे सुरादका अतालीक था ।

(४) मिरजा असकरीको बादशाहने सवत १६०८ में मिरजा तुलमाने पास भेजकर कहला दिया कि दखलके राजसे इसकी मदद भेज दे । मिरजा तुलमाने ऐसाही किया और असकरी वहां पहुंचकर सवत १६१५ में मर गया ।

( गये । क्रजलनाग छनमे नडने नगे मगर बैराम खांने दूमेरे दरवासेने जाकर किना फतह कर लिया । शाह बदायखाने बादशाहके पास हाजिर होकर माफी मांगी । बादशाहने उसको राजी करके बिदा किया और वह किना बैरामखांको सौंपकर शाह ईरानको लिख दिया कि शाह बदायखाने हुद्दम नही माना था हमलिये हमने कंधार उससे लेकर बैरामखांको दे दिया है ।

फिर बादशाहने बैरामखांको कंधारमें छोड़कर काबुल पर चढ़ाई की । १२ रमजान सन् ८५२ अगहन सुदी १४ सवत १६०२ बुधकी रातको काबुल भी फतह होगया और मिरजा कामरा गजनीन होकर सिवको भाग गया । सन् ८५३ के लगतेही बादशाह काबुलमें बदायशां फतह करनेकी गये जो मिरजा कामराने मिरजा सुलेमानसे छीन लिया था । पीछेने मिरजा कामराने सिधने आकर गजनीनको घेर लिया । बादशाहने खबर पाकर बैरामखांको लिखा । बैरामखांने यादगारनासिर मिरजा और उलग(१) मिरजाको मिरजा कामराके ऊपर भेजा । मिरजा उस समय तो सिधको चला गया मगर फिर वहासे फौज लेकर आया और कंधार लेनेका इरादा किया । पर काबुल न पाकर काबुलको चला गया क्योंकि बैरामखांने कंधारको खूब मजबूत कर रखा था ।

मिरजा कामराने पहले गजनीन लिया, फिर काबुल फतह किया । मगर बादशाहने बदायशांसे आकर फिर मिरजाको निकल दिया । मिरजा भागकर बलखमें पीर मुहम्मदखां(२) उजबकके पास पहुँचा और उसकी साथ लेकर बदायशां पर गया ।

(१) उलग मिरजा इस समय जमीन दावरका हाकिम था ।

(२) पीर मुहम्मदखां तूरानका बादशाह मुहम्मदखां शेबानीकी औलादमें था । मुहम्मदखां सन् ८१६ स० १५६७ में ईरानके शाह इसमार्डिन सफवीके मुकाबिलेमें मारा गया था । उसकी पीछे इतने बादशाह समरकन्द और बुखाराके तख्त पर बैठे थे—  
१—कोजमखां सन् ८१६ (१५६७)में २—अबूसईदखां सन् ८३६

बादशाहने यह सुनकर सोमवार ५ जमादिउलनानी मन् ८५५, आपाठ सुदी ७ सवत १६०५ को फिर बदखशांकी कूच किया। वहा मिरजा कामरांसे मिलाप होगया और सब भाई मिलकर मन् ८५६ के लगतेही अपने बाप दादाका राज्य लेनेके लिये वलखके जपर गये; मगर आपसमें फूट पड जानेसे बादशाह काबुलको लौट आये। मिरजा कामरां बदखशांकी चला गया और वहासे फिर काबुल पर आया। बादशाह काबुलसे जाकर उससे लडे। मगर शिकस्त खाकर बदखशांकी चले गये और मिरजा कामरा फिर काबुलके तख्त पर आ बैठा। बादशाहने बदखशांसे आदर फिर मिरजाको लडाईमें जीता और काबुल फतह किया।

मिरजा भागकर अफगानिस्तानमें गया और अफगानोंको लेकर जलालाबाद पर आया। बादशाहने गजनीनके हाकिम हाजी मुहम्मदको बुलाया, मगर वह इधर तो न आया और मिरजा कामराका रस्ता देखने लगा, जिसको उसने गजनीन देनेका इक़रार कर लिया था।

इतनेमें बैरामखां बादशाहकी खिदमतमें हाजिर होनेके लिये काबुलको जाते हुए गजनीनमें आ निकले। हाजी मुहम्मदने पैशवाई करके मुलाकात की और जियाफतके बहानेसे कैद करनेके लिये किलेमें ले जाना चाहा, मगर १ आदमीने इशारेसे मना किया, जिससे बैरामखां दगा समझ कर किलेमें नही गये और हाजी मुहम्मदखांको लखो पत्तोसे राजी करके काबुलमें ले आये। लेकिन वहाके हाकिमने उसको शहरमें जाने नहीं दिया। क्योंकि बादशाह मिरजा कामरांके पीछे गये हुये थे और हाकिमसे कह गये थे कि कोई शहरमें न आने पावे। हाजी मुहम्मद दगा समझकर शिकारके

(१५८६।८७) ३—अबदुल्लाहखां ८३८ (१५८८) ४—अबदुल्लाहखां और ५—अबदुल्लातीफखां सन् ८४६। (१५८६) ६—बराकखां और ७—बुरहानखां ८४८ (१५८८) ८—पीरमुहम्मदखां ८५२ (१६०२) में।

दरबारीयों से गजनीनकी चर्चा गयी । फिर मिरजा जासरा भी ज्ञानखाना और हाजी सुहृमदका नाना सुनदार भाग निगलना । जब बादशाह काबुलकी लौटे तब बैरामखास मगमिपाऊमें(१) जाकर आदाब बजा लाये । बादशाहने उनको हाजी सुहृमदके ऊपर भेजा, पर वे जाकर फिर उसकी खना लाये और बादशाहने कन्नूर सुआफ करा दिये ।

बादशाह मिरजा कासरादे ऊपर फिर जलालाबादकी गये और मिरजा फिर पढ़ डीमें भागा । बादशाहने बैरामखासकी उमके पीछे सेजा । वे गये गोर जब मिरजा काबुलकी सरहदमें निकलकर नीलाव(२)की तरफ चला गया तब वे दफ्ते(३)में बादशाहके पास लौट आये ।

बादशाहने काबुलमें वापस आकर बैरामखासकी कंधार जानिके लिये विदा किया । वे वहा पहुचकर अपना काम करने लगे ।

मिरजा कासरां फिर अफगानोंको लेकर काबुलके इलाकेमें आया । बादशाह उसके रोकनेको सुरखांवमें(४) आये । २१ जीकाट खन् ८५८ इतवार मगसर वदी ८ संवत १६०८ की रातको मिरजाने गाव चरयारमें(५) बादशाही लश्कर पर छापा मारा, जिसमें बादशाहको फतह तो हुई मगर मिरजा हिदाल मारा गया ; जिसकी बादशाहने सुहृमदकी(६) जगह गजनीनकी हाकिम बनाया था और वह इस वक्त बागशाहके साथ था ।

(१) यह स्थान काबुलके पास है ।

(२) अटक अर्थात् सिन्धु नदी ।

(३) काबुल और जलालाबादके बीचमें एक गांव है ।

(४) नीलाव और काबुलके बीचमें एक नदी है ।

(५) यह गाव काबुलके परगने 'नेकनिहार'में था ।

(६) वही बाबाकशका जिसे सुलतानकी पदवी मिली थी ।

यद्यपि इसके अपराध, खानखानांने क्षमा करा दिये थे तो भी फिर बद-  
 धाही ( बुराचेतना ) करने लगा था । इसलिये बादशाहने इसकी  
 और इसके भाई शाह सुहृमदकी कैद करके हुकम दिया कि इन्हीं-

फिर बादशाहने अफगानोंके ऊपर चढ़ाई करके मिरजा कामरांकी हिन्दुस्तानकी तरफ भगा दिया ।

मिरजा कामरा पजाबमें जाकर शेरश्रांके वेटे सलीमखानसे मिला जो उस वक्त हिन्दुस्तानका बादशाह था । मगर फिर उसने मदद मिलनेकी उम्मेद न देखकर पजाबके पहाड़ी राज्योंमें फिन्ता फिन्ता आदम गकड(१) के पास पहुँचा । उसने मिरजाके आनेकी खबर देकर बादशाहकी बुलाया । बादशाह गकडोंके मुल्कमेंसे जो सिध और भट नदियोंके बीचमें था हिन्दुस्तानके ऊपर चढ़ाई करनेका मौका देखकर काबुलसे बगशमें(२) आये । फिर सन् ८६० सवत १६०८ । १० में आगे बढ़कर सिध नदीसे उतरे । सुलतान आदम मिरजा कामरांकी लेकर आया ।

बादशाहने उसकी जान तो बख्श दी मगर आंखोंमें सलाई फिराकर मक्केको भेज दिया, जहाँ वह ४ वर्ष पीछे ११ जिलहब्द ८६४ कुम्हार सुदी १२ सवत १६१४ को मर गया ।

फिर बादशाह पेशावरमें अमल करके सन् ८६१ स० १६१० के लग-  
तेही काबुलमें लौट आये । उनका विचार जाडेमें हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करनेका था । मगर कुछ चुगलखोरोंने खानखानाकी तरफसे ऐसी बातें बनायीं कि बादशाह हिन्दुस्तान जानेसे कधार

ने जो खिदमत खुशी या नाखुशीसे की हो उसकी तो ये लिखें और एक बादशाही मुशी इनके अपराधोंको लिखे वह इनसाफकी तराजूमें तुलकर दुनियाको इनका हाल मालूम हो जावे । उनके अच्छे काम तो कुछ भी नहीं निकले और बड़े बड़े जुर्म १८२ तक थे जिनकी सजामें वे मारे गये और गजनीको हुकूमत बहादुरखाको दी गयी । उसके पीछे मिरजा हिन्दाल हाकिम हुआ था ।

(१) गकड १ जातिका नाम है जो पहले हिन्दू थी फिर मुसलमान हो गयी वह भट और भेलम नदियोंके आसपास रहती है ।

(२) बगश एक पहाड़ी इलाका अफगानिस्तानमें है जहाँके रहने वाले पठान भी बगश कहलाते हैं ।

जाना जरूरी समझकर उधर ही गये। खानखाना तो नेकवस्त्र-  
तोका जासा पहने हुए है। बादशाहका आना सुनकर बहुत  
शक्तगुजार हुए और वडे अदबसे ३ कोस तक पेशवाईकी आये  
तथा जमीन चूमकर आटाव वजा लाये। जिससे बादशाहकी  
यकीन हो गया कि जो कुछ उनकी वावत कहा गया है सब  
मिथ्या है।

फिर बादशाह एक अच्छा मुहूर्त देखकर कंधार पधारे और  
जाडे भर वही मौज उडाते रहे। बैरामखाने खिदमतमें कुछ  
कसर नहीं रखी। बादशाही सरकारमें जिस चीजकी जरूरत हुई  
निहोरे करके दी और साथसे सब छोटे वडे बन्दीको अपने नौक-  
रीके घरोमें उतारा और उनको खातिर तवाज्ज करना भी उन्ही  
लोगोंके जिम्मे कर दिया।

वडे आदमियोंमेंसे गाह अबुलमुभाली, मुनअमखां, गिजर-  
ख्वाजा, मुहबअली और सौरखलीफा वगैरह थे।

जब बैरामखाकी नमकहलाली सावित हो गयी और सब  
लोगोंने जान लिया कि वह पूरा तावेदार है तब बादशाह कन्धार  
उन्होंने जिम्मे छोडकर हिन्दुखान जानिके वास्ते काबुलमें आ गये  
और बैरामखासे कह आये कि इस चढाईका सामान करके जल्दीसे  
लशकरमें आ जावे।

बैरामखा २ शवाल भादी सुदी ३ सवत १६११ को काबुल  
पहुचकर बादशाहकी खिदमतमें हाजिर हो गये। यह रोजा ईदका  
दूसरा दिन था तो भी बादशाहने अति आनन्द और मेहरबानीसे  
जो बैरामखाके ऊपर थी उस दिन भी ईदकीसी खुशी मनाकर  
ऐसी बड़ी सभा सजायी जो ईदकी सभासे जियादा सुन्दर और  
सुहावनी थी। उसी दिन पहले पहल शाहजादे अकबरने  
निशाना उडाया अर्थात् चांदीकी गेंदको तीरमें पिरो लिया। बैराम-  
खाने इस “कवकअदाजी”की तारीफमें एक उमदा कसीदा (काव्य)  
बनाया और भरे दरबारमें सुनाया।

इन्ही दिनों हिन्दुस्तानसे सलीमखाके मरनेकी खबर आयी और वहां जो बादशाहके चाहने वाले थे उन्हें नि बादशाहकी बुनानेके वास्ते अर्जिया भेजी ।

हिन्दुस्तानका कुछ हाल और हुमायू बादशाहका फिर आकर दिल्लीके तख्त पर बैठना ।

बादशाहकी हिन्दुस्तान छोड़े १५ वर्ष हो गये थे । इस मुहम्मद शेरखा (शेरशाह) ५ वर्ष २ महीने १३ दिन बादशाही करके ११ रबीउल-अव्वल सन् ८५२ यानी जेठ सुदी १३ सवत १६०२ को मर गया था—फिर उसका बेटा सलीमखा (सलीमशाह) तख्त पर बैठा । वह ८ वर्ष २ महीने ८ दिन अपना हुकम चलाकर २२ जीकाद सन् ८६० यानी मगसर वदी ८ सवत १६१० को फौत हुआ । उसने अपने बापके अधूरे छोड़े हुए रहतासके किलेको पूरा किया और सवालख पहाड़ीमें मानकोटका किला सुगलोकी रोकके लिये बनाया ।

सलीमखाके पीछे उसका बालक बेटा और सलीमखाका साला सुबारजखा उसको मारकर आप बादशाह होगया । उसने अपना नाम मुहम्मदशाह अदली रखा और हेमू दूसरको अपना वकील (बडा वजौर) बनगया । यह रेवाड़ीका (१) रहनेवाला था और लशकरमें नमक बेचते बेचते सलीमखाके मोदियोंमें दाखिल होकर बादशाही नौकर हो गया था तथा सलीमखाके मुह लगकर मुल्क और मालके कामीमें दखल देने लगा था । अब जो वकील हुआ तो सब राज काजका करता धरताही होगया । पहले वमन्तरायका खिताब पाया था परन्तु अब राजा विक्रमाजित कहलाने लगा । इस वक्त पंजाबमें अहमदखा, बङ्गालमें मुहम्मदखा, मालवेमें सजावलखा और बयानिमें गाजीखा सूर हाकिम थे । मगर फिरोजखाको मारकर तख्त छीन लेनेसे ये सब अदलीके

(१) रेवाड़ी अलवर और दिल्लीके बीचमें राजपूताना मालवा रेलवे लाइन पर दिल्लीकी कमिशनरीमें है ।



दुश्मन हो गये थे । अहमदशाह सूर अपना नाम मिकदर रखकर पजावसे, इब्राहीम सूवे बयानेसे आगरे पर आये, तब अदली तो हेमूको सलाहसे पुरवको चला दिया और आगरेके पास इब्राहीम और सिकन्दरकी ( जो अदलीके दोनों बहनोई थे ) लड़ाई हुई । इब्राहीम हारा और सिकन्दर जीता । जिससे मिन्ध और गद्दाके बीचका तमाम मुल्क उसके कब्जेमें आ गया । वह अदली और सुहम्मादशाहसे लड़नेके लिये पूर्वकी ओर जानेके विचारसे था, मगर हुमायूँ बादशाहका आना सुनकर ठहर गया और तातारखा तथा हवीयखा बगैरहको पजावको रक्षायाली पर भेज दिया ।

उधर सुहम्मादखाने बङ्गालमें अदली पर चढ़ाई दी जो चुनार-गढमें था और हेमूसे लड़ाईमें हारकर जानसे जाता रहा । शेरखा और सलीमखाके खजाने हेमूके हाथ आये । फिर हेमूने और इब्राहीमसे कई लड़ाइयाँ हुई जिनमें सब जगह हेमूकी जीत रही । हेमू अब सिकन्दरको निकालनेके लिये आगरेमें जाने वाला था पान्तु बङ्गालमें सुहम्मादशाहके बेटे खजरखाके बादशाह बन बैठनेकी खबर सुनकर उधर अदलीके पास चला गया ।

हुमायूँ बादशाह काबुलमें थे खबरें सुनकर सन् ८६१ के जिल्हज्ज यानी सन् १६११ के कातिक या मगसरेमें हिन्दुस्तानको रवाने हुए और शाहजादे अकबरकी भी कि जिसकी उमर १२ वर्ष ८ महीनेकी हो गयी थी साथ लेते आये । बैरामखा बाजे बादशाही कामों और अपनी जगी तैयारीके लिये कुट्टी लेकर काबुलमें रह गये ।

बादशाह ३० सुहर्रम सन् ८६२ फागुन सुदी २ की विक्राम ( पेशावर ) में पहुँचे और ५ सफरकी नीलाब ( सिध ) नदी उतरकर ३ दिन तक ठहरे । यहाँ बैरामखा भी आ मिले । तातारखा जो बहुतसी फौजसे रहतासके किलेमें था बादशाहका आना सुनकर भाग गया ।

बादशाहने कलानूरसे(१) बैरामखांको तो नसीबखां पचभइयेके ऊपर भेजा और आप लाहौरमें जा विराजे ।

बैरामखां जब परगने हरहानेके(२) पास पहुँचे तब नसीबखां थोड़ासा सुकाविला करके भाग गया । मुगलोंको बहुत लूट मिनी और पठानोंके जोरू बच्चे भी सब पकड़े गये ।

बैरामखाने बादशाहसे सुना था कि अब जो हिन्दुस्तान फतह होगा तो किसी खुदाके बन्देको बन्दी(३) नहीं बनायेगे इसलिये वे खुद सबारूहीकर गये और पठानोंके जोरू बच्चोंको डकड़े करके अपने भलेआदमियोंके साथ नसीबखांके पास भेजवा दिये तथा लूटका सब माल बादशाहके पास भेजकर आगे बढ़े । जब जालन्धरके पास पहुँचे तब पठान वहाँसे भी भाग निकले और बादशाही लश्करमें भगड़ा होता देखकर अपना सब माल असबाब भी ले गये ।

वह भगड़ा यह था कि तरुहीवेगखां तो भागे हुए पठानों पर जाना चाहता था और बैरामखा इस बातको ठीक न समझ कर इजाजत नहीं देता था । तरुहीवेगखांने बालतूखाको बैरामखाके पास भेजा कि जैसे हो सके इस बातको परवानगी ले आवे । जब बालतू आया तब ख्वाजा मुअज्जमसे और उससे बातों बातोंमें बिगाड हो गया और ख्वाजाने उसके हाथ पर तलवार मार दी । बादशाहको जब यह खबर पहुँची तब उन्होंने अफजखांको वहा भेजकर अमीरीमें सुलह करा दी ।

फिर बैरामखां खुद तो जालन्धरमें ठहर गये और अपने साथी अमीरीको अलग अलग आस पासके परगनोंमें भेजा । सिकन्दरखा माछीवाडे(१) पर बिदा हुआ था, जब वह आ पहुँचा तो मैदान खाली

(१) गुरदासपुर ( पञ्जाब )के जिलेमें है ।

(२) जिले हुशियारपुरमें है ।

(३) गुलाम, कैदी ।

(१) जलन्धर और सहरन्दके बीचमें सतलज नदी के पास ।

देखकर और आगे बढ़ गया तथा महरन्दकी (१) घण्टे के भीतर आया, जहाँ बहुतसी लूट उमके हाथ आयी। जब तातागुआ, हवी-बहा, नसीबखा, मुबारकखा और बहुतसे पठान मरदार द्वितीमें चढ़कर आये तब सिकन्दरखा महरन्दमें रहना मुनामिव न देखकर जालन्धरमें चला आया। बैरामखाने खफा होकर उससे कहा कि तू महरन्दमें जमा रहता और हमको खबर देता।

बैरामखा जालन्धरमें चलकर जब सांघीवाड़ेमें आये तब तस्ली-वेगखा वगैरः उनके साथके अमीर वरमातका ख्याल करके सत-लजसे उतरनेकी मनाह नहीं देते थे; मगर बैरामखां तो समय हथा खोना ठीक न समझ कर नदीसे उतरही गये। तब तो उन लोगोंको भी उतारना पड़ा।

पठान बहुतसी फौज लेकर लडनेकी आये। लडाई शामसे शुरू हुई और पिछली रात तक होती रही। आखिर पठान हारकर भाग गये। बैरामखांने इस फतहकी लूट भी हाथियों समित बादशाहके पास लाहौरमें भेजी।

सिकन्दरसूरने जब इस हारका हाल सुना तब ८०००० सवारोंसे सहित बैरामखांके मुकाबलेकी आया। बैरामखांने दानाईसे महरन्द जाकर किला मजाया और जल्द पधारनेके वास्ते बादशाहकी खिदमतमें अर्जिया भेजी। बादशाह पन्द्रहवें दिनही ७ रज्जव (ज्येष्ठ सुदी ८ संवत् १६१२)की रातको महरन्द आ पहुँचे और जश्नकी चार भाग करके, पहले भागमें तो आप रहे, दूसरेमें शाहजादेको, तीसरेमें शाह अब्दुलमुभालीको और चौथेमें बैरामखाको रखा।

चालीस दिन तक लडाई होती रही। २ शवान सन् ८६२ (अषाढ सुदी ३)को शाहजादेके लडनेकी बारी थी उस दिन बहुत घमासान लडाई होकर बादशाहकी फतह हो गयी। बहुतसे पठान मारे गये और सिकन्दर भागकर पञ्जाबके पच्छाईमें चला गया।

(२) जलन्धरसे आगे अम्बाले और जलन्धरके बीचमें एक पुराना शहर, पटियालीकी रियासतमें है जिसको सरहिन्द भी कहते हैं।

बादशाहने कलानूरसे(१) बैरामखांको तो नसीबखां पचभइयेके ऊपर भेजा और आप लाहौरमें जा विगजे ।

बैरामखां जब परगने हरहानेके(२) पास पहुंचे तब नसीबखा योडासा सुकाविला करके भाग गया । सुगलोंको बहुत नूट मिली और पठानोंके जोरू बच्चे भी सब पकड़े गये ।

बैरामखांने बादशाहसे सुना था कि अब जो हिन्दुस्तान फतह होगी तो किमी खुदाके बन्देको बन्दी(३) नहीं बनावे गे इसलिये वे खुद सवार, होकर गये और पठानोंके जोरू बच्चोंको डकड़े करके अपने भलेआदमियोंके साथ नसीबखांके पास भेजवा दिये तथा लूटका सब माल बादशाहके पास भेजकर आगे बढ़े । जब जालन्धरके पास पहुंचे तब पठान वहांसे भी भाग निकले और बादशाही लश्करमें भगडा होता देखकर अपना सब माल ग्रसवाव भी ले गये ।

वह भगडा यह था कि तरुहीवेगखां तो भागे हुए पठानों पर जाना चाहता था और बैरामखा इस बातको ठीक न समझ कर इजाजत नहीं देता था । तरुहीवेगखांने बालतूखाको बैरामखाके पास भेजा कि जैसे हो सके इस बातको परवानगी ले आवे । जब बालतू आया तब ख्वाजा सुअज्जमसे और उससे बातों बातोंमें बिगाड हो गया और ख्वाजाने उसके हाथ पर तलवार मार दी । बादशाहको जब यह खबर पहुंची तब उन्होंने अफजलखांको वहा भेजकर अमीरीमें सुलह करा दी ।

फिर बैरामखां खुद तो जालन्धरमें ठहर गये और अपने साथी अमीरीको अलग अलग आस पासके परगनोंमें भेजा । सिकन्दरखां माछीवाडे(१) पर बिदा हुआ था, जब वह आ पहुंचा तो मैदान खाली

(१) गुरदासपुर ( पञ्जाब )के जिलेमें है ।

(२) जिले हुशियारपुरमें है ।

(३) गुलाम, कैदी ।

(१) जलन्धर और सहरन्दके बीचमें सतलज नदी के पास ।

देखकर और आगे बढ़ गया तथा महरन्दको (२) अपने कर्जमें ले आया, जहाँ बहुतसी लूट उसके हाथ आयी। जब तातारगन्ना, हवी-बन्ना, नमीबन्ना, सुवारकन्ना और बहुतसे पठान मरदार दिव्रीसे चढ़कर आये तब सिकन्दरगन्ना महरन्दमें रहना मुनामिव न देखकर जालन्धरमें चला आया। बैरामगन्नाने खफा होकर उससे कहा कि तू महरन्दमें जमा रहता और हमको खबर देता।

बैरामगन्ना जालन्धरसे चलकर जब माझीवाड़ेमें आये तब तरुटी-वेगन्ना वगैरः उनके साथके अमीर वरमातका ख्याल करके सत-खजसे उतरनेकी सलाह नहीं देते थे, मगर बैरामगन्ना तो समय वृथा खोना ठीक न समझ कर नदीसे उतरही गये। तब तो उन लोगोंको भी उतारना पडा।

पठान बहुतसी फौज लेकर लडनेको आये। लडाईं शामसे शुरू हुई और पिछली रात तक होती रही। आखिर पठान हारकर भाग गये। बैरामगन्ना इस फतहकी लूट भी हाथियों समेत बादशाहके पास लाहौरमें भेजी।

सिकन्दरसूरने जब इस हारका हाल सुना तब ८०००० सवारोंसे सहित बैरामगन्नाके मुकाबलेको आया। बैरामगन्ना दानाईसे महरन्द जाकर किला मजाया और जल्द पधारनेके वास्ते बादशाहकी खिदमतमें अर्जियां भेजीं। बादशाह पन्द्रहवें दिनही ७ रज्जब (ज्येष्ठ सुदी ८ संवत् १६१२) की रातको महरन्द आ पहुँचे और जश्नको चार भाग करके, पहले भागमें तो आप रहे, दूसरेमें शाहजादेको, तीसरेमें शाह अबुलसुभालीको और चौथेमें बैरामगन्नाको रखा।

चालीस दिन तक लडाईं होती रही। २ शव्बान सन् ८६२ (अषाढ सुदी ३) को शाहजादेके लडनेकी बारी थी उस दिन बहुत घमासान लडाईं होकर बादशाहकी फतह हो गयी। बहुतसे पठान मारे गये और सिकन्दर भागकर पञ्जाबके पहाड़ोंमें चला गया।

(२) जलन्धरसे आगे अम्बाली और जलन्धरके बीचमें एक पुराना शहर, पटियालेकी रियासतमें है जिसको सरहिन्द भी कहते हैं।

फतहकी पीछे बड़ी ग्रान्धी आई और मेह भी बहुत बरसा जिमसे भागनेवालोंको निहायत तकलीफ हुई और बहुत लोग उनमेंसे मर भी गये ।

बादशाहने खुशीका दरबार करके सुसाहिबोंसे पूछा कि यह फतह किसकी नाम लिखी जावे ? अबुलमुआल्लो अपने नाम और बैरामखां अपने नाम लिखाया चाहते थे ; मगर बादशाहने शाहजादेके नाम लिखवायी ।

फिर बादशाह सहरन्दका बन्दोवस्त करके समानिकी राहमें दिल्लीकी रवाना हुए और १(१) रमजान सावन सुदी ३ जुमेरातकी सलीमगढमें जो दिल्लीसे उत्तरको जमुना किनारे है, पहुँचे और ४ ( सावन सुदी ५ सवत् १६१२ )को दिल्लीमें दाखिल हुए ।

बादशाहने दुबारा तख्त पर बैठकर नौकरीको जागीरें बख्शी। शाहजादे अकबरको हिसारकी सरकार दी। सहरन्द और दूसरे फुटकर पगरने बैरामखांको दिये । तरुहीवेगकी मेवातमें भेजा । सिकन्दरखांको आगरे, अलीकुलीखांको सम्भल और हैदर मुहम्मद खांको बयानेकी तरफ बिदा किया । इतनीही दूरमें सिकन्दरका अमल रह गया था, आगे अदलीका था ।

बादशाह लाहौरमें शाह अबुलमुआल्लोको छोड़ आये थे । वह लोगों पर जुल्म करने लगा और सिकन्दर सूर पहाडसे बाहर निकल आया था । बादशाहने यह खबरें सुनकर शाहजादे अकबरको सन्

(१) १ रमजानकी जुमेरात नहीं रविवार था । जुमेरात अकबरनाममें भूलसे लिखी है क्योंकि आगे २५ रमजान बुधकी शाहजादेके अमीरोंका उनको जागीर “हिसार”में पहुँचना लिखा है । जो रमजानकी १ तारीख गुरुवार ( जुमेरात )को हुई होती तो २५ कभी बुधकी नहीं होती । बुधकी २१वीं होती । बुधकी २५वीं होनेसे साफ जाना जाता जाता है कि रमजानकी १ ता० जुमेरातकी नहीं किन्तु रविवारकीही हुई थी । जैसा कि हमने ७५६ पञ्चाङ्गमें देखकर लिखा है ।

८६३ के शुरूमें पञ्जाबकी भेजा और वैरासखांकी उबड़ा अतालिका (उस्ताद) बनाया । सहरन्दमें शाहजादेके नौकर चाकर भी हिमाल पिराजेसे आकर लश्कारमें शामिल हो गये और सिकन्दर पहलीमें चला गया ।

बादशाह १ (१) रबीउल अब्बल मन् ८६३ में जुमेके दिन (साह सुबही १३ सवत् १६१२) पिछले दिनसे शुक्रके तारेकी (२) देगनेके लिये किताबखानेकी छत पर चढे जिसके ऊगनेका भरस शामकी ही था । मगर बैठते वक्त पाव फिसल जानेसे नीचे गिर पडे और मर गये । वजीरोने इस बातको १७ दिन तक छुपाकर आसपासके प्रसी-रोको बुलाया, जब वे सब दिल्लीमें आ गये तब, २८ रबीउन अब्बल (फाल्गुण वदी १४ चन्द्रवार) को शाहजादेके नामका खुतवा (३) पढवाया और तरुद्दीवेगने बादशाहीका सब सामान शाहजादेके पास भेज दिया ।

शाहजादे और वैरासखां सिकन्दर खरका मानकोटमें होना सुनकर उसके ऊपर जा रहे थे । वामूवे हरहानिसे एक कामिद दौडा हुआ आया और उसने वैरासखांकी बादशाहके मरनेकी खबर दी । वैरासखा आगे जाना सुनासिव न समझ कर शाहजादेको वाला-

(१) कलकत्तेके छपे हुए अकबरनामिके पहली दफतरकी पृष्ठ १६३में तारीख नहीं लिखी है परन्तु पच्चाहसे ११ होती है वही हमने ऊपर लिख दी है ।

(२) हुमायूँ बादशाह बडे ज्योतिषी थे वह सारे काम बूझर्त्तसे करते थे । उन्होने बहुतसी बातें अर्दीके अनुसार अपने राज्य और दरबारमें चलायी थी । जिनका पूरा विवरण हुमायूँनामसे लिखा है और कुछ अकबरनामसे भी है । उन्होने कई काम शुक्रके उदय होने पर रख छोडे थे । इसी लिये उसके देखनेकी छतपर चढे थे ।

(३) यह एक सुसलमानी मतकी बात है कि जुमेकी एक नमाज पढनेके पीछे बादशाहके वास्ते दुआ मागी जाती है । इसको खुतवा कहते हैं । नये बादशाहके नामका खुतवा सब सुसल-

नूरमें ली आये। और वहां उनको यह खबर सुनाई और रबीउल-सानी सन् ८६३ ( फाल्गुन सुदी ४ )को दरवार करके उन्हें तख्त पर बैठाया।

अकबर बादशाहका समय।

अकबर बादशाहकी अवस्था उस समय केवल १२ वर्षकी थी। और बैरामखां पहलेसे राजाके करता धरता थे। इसलिये वे ही सब काम बादशाहकी करने लगे और बादशाहको कलानूरसे फिर सवालक पहाड़ीकी तरफ चढ़ा ले गये। मगर बरसात आ जानेसे जालन्धरमें लौट आये।

इधर हैमू जी अवतक २२ लडाइयां जीत चुका था इमायू बादशाहका मरना सुनकर चुनारगढसे दिल्लीको रवाना हुआ और १ जिलहज्ज कातिक सुदी ३ संवत् १६१३ मङ्गलवारको वहा पहुचा। तरुहीवेग वगैरह अभीर दूसरे दिन उससे लडे और हारकर पजावकी भागे। हैमूने दिल्लीमें अमल कर लिया।

८ जिलहजाकातिक सुदी १० को जालन्धरमें यह खबर बादशाहके पास पहुची तो वे १८ शुक्रवार मगसर बदी ५ को सहरदमे आये। वहा तरुहीवेग भी आ गया था। बैरामखाने उसको डेर पर बुलाकर दगासे मरवा डाला क्योंकि वह भी उसको बराबरीका था आपसमें इर्षा थी।

बादशाह उस वक्त सहरन्दके जङ्गलमें शिकार खेल रहे थे। वही यह बात उन्होंने सुनी। बुरी तो बहुत लगी मगर अखतियार (१) न होनेसे चुप हो रहे। शामको जब दोस्तखानेमें आये तो बैरामखाने मौलाना पीर मुहम्मद (२) शिरवानोंको भेजकर आरजू कराई कि तरुदुर्दी वेग लडाईमें जान बूझकर कपटसे भाग मानोंको हाजरीमें पठा जाता है। मानो यह उसक राज्याभिषेकका पहला विधान है।

(१) कुल बातें बैरामखाकी अखतियारमें थीं।

(२) यह खानखानाका मन्दी था।



गाया था और उसकी नटप्रशस्ति गादिये पता तक सब लोग लायते रहे । पत्तर ऐसे कसूरीमें गानाजानी की जाती तो बड़े बड़े काम की जरूरत किया चाहते थे नहीं तो मुसलमानों ने बादशाहकी शिराज़ाहीसे यह काम दिया पूरे किया है । इसने बहुत गुरमिन्दा छ गौर नती पुरनेका यह काम पता कि जरूरत मोमान्, द्यामिन्नु और गानागिधान है, उनसे पारनेसे राजी नहीं होते, सारा कर देने पर इन कामके करनेमें हमने किया दानेन्दरी रोती गौर हता माननेसे मुस्क गौर मनमाने बहुत खनन और फनाद पडता । इनतिसे साक्षात् हो जाये गां यं जात सजूर कर ही जाये जिससे सब गस्तर दापटी लीगाको डर हो जाये ।

बादशाहने सीलानाके ऊपर मेहरबानी करके नानखानाका उजर मान लिया और उसको तस्ली देकर हैसूके फसाद मिटा-टका विचार किया ।

फिर बादशाहने सरायकरोटेमें (१) छेरा करके १०००० सवार अनी कुनो से गानाको चपामरीमें प्राग रवाने किये । बैरामखान भी अपने नौकरोंमेंसे बड़ी बेगने बेटे हुसैनकुलीबेग, शाह कुली महरम, और मुहम्मद क़ासिम नेयापुरी, खैयद महमूद वारई और मौजान बहादुर बगैरह काम किये हुए बहादुरोंको उनके साथ किया ।

इन दिनों हिन्दुस्थानमें बड़ा भारी अकाल पड रहा था । दि-गाँवों तो यह हाल था कि रुपया मिल जाता था, रागर एनाज नहीं मिलता था । आदमी आदमीको खाने लगा था । कई लोग मिलकर अनेके दुकाने आदमीको से भागने और मार कर ता ज ने थे, उसपर यह आफत लडाईकी थी ।

हैसूने बादशाही लखनऊका आना सुनकर अपना भारी तोप-खाना सुमारकसा और बहादुरखाने (२) साथ पानीपतको भेज दिया

(१) यह स्थान सरहन्द और करनालके बीचमें है ।

(२) ये दोनों पठान हैसूके बड़े अमीरोंमेंसे थे ।

जो दिश्रीसे ३० कोस है, मगर अलीकुलीखां वगैरह बटगाही अकसरने पनेपनसे आगे बढ़कर वह तोपखाना उनसे छोन लिया।

हेमू इस खबरके सुनतेही दिश्रीसे चढा। उसके साथ ५०० जगी हाथी और ३०००० लडाके पठान और राजपूत सवार थे जो बहुतसी लडाईयोंमें जीत पा चुके थे। हाथी भी हाथियारोंसे सज्ज दए थे। इन सवारों और हाथियोंकी ३ फौजे थीं। बीचकी फौजमें तो हेमू आप था। दहिने हाथकी फौजमें शाहीखा काकाड और और बाये हाथकी फौजमें हेमूका भानजारमिया(१) था जो बडा बहादुर और वीर था।

२ सुहरस सन् ८६४ मगसर सुदी ३को हेमू पानीपत पहुचा। अली कुलीखा वगैरह बादशाहके पास खबर भेजकर उससे लडनेको तैयार हुए। हेमू बादशाहको दूर देखकर इन लोगो पर टूट पडा कि जलदोसे हराकर आगे बढे।

बादशाही फौजकी दाहिनी और बायीं अनी तो हेमूसे शिकस्ता खाकर भाग निकली जिसके अफसर सिकन्दरखां और अबुल्लाखां थे। मगर खानखानाके अमीर मुहम्मद कासिम नेशापुरी, हुसेन कुली, शाह कुली महरम और लालखा बदखशी जो बीचकी फौजमें अली कुलीखांके पास थे घोडोंसे उतरे और तलवारें निकालकर पैदलही दुश्मनोपर दौड पडे। हेमू हवाई नामक हाथी पर सवार था। कहींसे एक तीर आकर उसको आखमें लगा और सिरदे पार निकल गया। यह देखकर उसकी फौज भागने लगी। उस वक्त शाह कुलीखा महरम कई आदमियोंके साथ हेमूके हाथीके पास आ निकला और हाथी लेनेके वास्ते सहावतको मारने लगा। उसने जान बचानेको अपने मालिकका पता बता दिया। शाहकुली खुश होकर उसी दम उस हाथीको अलग ले गया।

यस फतह बादशाहके भाग्यबलसे सहजमें हो गयी। डिट हजार

(१) किसी किसी प्रतिमें इसको रसिया भी लिखा है।

हाथी लूटमें आये । धन सानकी कुछ गिनती नहीं थी । ५००० ताद-  
मी खेत पड़े और बहुतसे भागते हुए भी मारे गये ।

बादशाह उसी दिन करनालसे चन्द्रकर पानीपतसे ५ कोस पर  
ठहरेही थे कि वहा हेमूके आने और लड़ाई शुरू हो जानकी  
खबर पहुंची । उसी वक्त 'लगकर' सजाकर वे चल दिये । बैराम  
खा आगे होकर फौजीकी देख भाल करते और बहादुरीका दिन  
बढ़ाते जाते थे । जब पानीपतके पास पहुँचे तब फतहकी खबरें  
आने लगी और शाह बुली महरम हेमूको पकड़ कर हुजूरमें  
लाया ।

बादशाहने हेमूसे बहुतसा जवाब पूछा । मगर वह तो कुछ  
नहीं बोला । तब बैरामखाने अर्जकी कि हजरत इस फसादीको (१)  
अपने हाथसे मारकर गजावा (२) 'सबाब' (काफ़रोंके मारने-  
पुण्य (३) हासिल करें ।"

बादशाह छोटी उमरमें थे, तोभी बड़ी समझदारीसे कहने  
लग कि एसारी हिम्मत एक बन्धे हुए कैदीको मारनेकी रखमत  
नहीं देती और खुदाकी दरगाहमें भी ऐसे कामोफा कुछ स्वाब नहीं  
मिलता होगा । मैं तो इसको उसी दिन टुकड़े टुकड़े कर  
चुका हूँ कि जिस दिन बड़े हजरतके किताबखानेमें एक ऐसे आ-  
दमीको सब अहम अलग अलग करके तमबीर बनायी थी । वडे

(१) दूसरे तवारीख लिखने वालोंने फसादीकी जगह काफ़िर  
लिखा है, मगर हिन्दूके वाक्य काफ़िर शब्द अबवरनाममें कहीं  
नहीं आया है । यह सिहरवानी मुसलमान अन्धकारोंके शिलाफ  
न जाने कैसे शेर अदुनफजलसे बन आयी है । बादशाहकी मरजीसे  
या अपनी भलसनसीसे ।

(२) काफ़रोंसे लड़ाई लड़नेको मुसलमान गजा कहते हैं ।

(३) मुसलमानी मतमें काफ़रोंके मारने या उनके हाथसे  
मारे जानेका बहुत पुण्य लिखा है । जो मुसलमान न हो उसको  
मुसलमान लोग काफ़र कहते हैं ।

हजरतके पाम रक्तने वालीमिसे एक शस्त्रके पृष्ठने पर गैरी जवानसे यह भी निकल गया था कि यत् तमवीर(१) हैमूकी है ।

निदान बादशाहके राजी न होने पर बैरागसर्ग आनन्दनामा नेही वह फरजी खवाब कामानेके लिये हैमूकी तजशरमे मार डाला । उसका मित्र कानुनकी ओर धड़ टिज़ाकी सैन्यदार नौगीकी डरानेकी लिये खूनीपर चढ़ाया गया ।

अगर बादशाह खुलकर काम करते होते या कोई होमिने वाला अमीर उस दरगाहमें होता और हैमूकी दौड़ बन्दकर बादशाहकी बदगीमें लगाता तो वैशक वह बहुत अच्छा नौकर होता । हिम्मत वाला तो थाही और फिर जब ऐसे बादशाहकी तालीम पाता तो कौन बड़े काम होते जो उससे बन नहीं पड़ते ।

हैमू बड़ा भाग्य शाली था २२ लडाइया जीत चुका था । उसके इतने अधिक सिपाही थे जितने भी किसीके नहीं थे, ऐसा बड़ा तोप खाना था, कि जिसके बराबर हमके सिवाय और कहीं नहीं रहा होगा और इतने अधिक हाथी थे जो उस वक्ताके किनी बादशाहकी भी मशस्सर नहीं थे । री नाना शरफुद्दीन (१) यज़दीने बड़ी शेखीसे जफरनामेमें लिखा है कि अमीर हैमूरकी हिन्दुस्तानकी बड़ी लडाईमें १२० हाथी हाथ लगे थे । इससे होशियार तवारोख जानने वाले जान सकते हैं कि उस जमानेमें जो हिन्दुस्तानका बादशाह था उससे यह हैमू कितना बड़ा हुआ था कि जिसके १५०० हाथी बादशाहों नौकरोंके हाथ आयें थे, दूसरे धन मानका तो क्या

(१) इसायाँ बादशाह जब सिकन्दरसूर पर फतह पाकर दिर्घामे आयें थे तब उनके हुक्मसे अकबर बादशाह तसवीर खानेमें जाकर उस्ताद मोर नयः अनो और ख्वाजा अबुलसमदसे तसवीर बनाना खीछा करते थे । उन्हीं दिनोंमें उन्होंने वह तसवीर बनायी थी ।

(२) यह ईरानके शहर यज़्दका रहने वाला था । इसने अमीर हैमूरकी तवारीख लिखी है जिसका नाम जफरनामा है ।

समार हो ।

बादशाहने इस एतद्दके इनाममें घकीकुनीयाको खानजमाका मिर्जाखानाको खान गालमका, अबुनाइया उजबकको गुजात्रत-खाका और मौलाना पीर मुहम्मदको नासिरुलमुल्कका खिताब दिया ।

उस वक्त शेरखांका युसाम हाजीरां फलवरमें था और हेसूकी औरत(१) हेसूका बाप और उसका सब माल असबाब भी उमी सरकारमें (जिलेमें) था । बादशाह और खानखानाने नासिरुलमुल्ककी हाजीरा पर भेजा । हाजीरा पहलेही डरकर भाग गया था । इससे बादशाही फौज अलवर और तमास मेवातमें असन्न करने देवती साचेडीको(२) गयी लछा हेसूका घर था ।

यह मजबूत जगह बहुत बड़ी लडाईंके पीछे हाथ गयो । हेसूका बाप पकडा जाकर नासिरुलमुल्कके पास लाया गया । उससे मुन-लमान होनेकी कहा गया तो उस बुद्धि ने जवाब दिया कि मैं ८० वर्षने इस धर्ममें हूं और अपने खुदाकी पूजता हूँ । तब कैसे अपना धर्म छोड़ दूं और सिर्फ जानके डरसे विना समझे तुम्हारे मतमें आ जाऊं । मौलाना पीर मुहम्मदने उसकी इस बातका जवाब तलवारकी जवानसे दिया अर्थात् उसको मार डाला । आगे बहुतसी लूट और ५० हाथी लेकर बादशाहके पास आया ।

बादशाह अदेली दगैरा पठानीके ऊपर पूर्वकी जाना चाहते थे कि यिकन्दर खाने झाडौर पर आनेकी खबर सुनकर ४ सफर सोमवार पौष सुदी ५को दिल्लीमें पञ्जाबकी तरफ रवाने हुए ।

(१) यह रानी कहलाती थी । लडाईंमें साथ थी । फिर अपने घर आ गयो । मुत्तखिवउलतवारीखमें लिखा है कि हेसूकी रानी खजानेके हाथी लेकर बीजवाड़े के पहाडमें चली गयी । वहा वर्षों तक सुमाफिरोको रास्तेमें मोहरें और सोनेकी ईंटें मिला करती थीं । बीजवाडा अलवरके राज्यमें है ।

(२) देवती साचेडी भी अलवरके राज्यमें दो गाव है ।

रास्तेसे लाहौरसे खबर आयो कि दे मर्हानका घटा और सफरकी १४ वी गुरुवार माघ बदी १ (१) सवत १६१३की खानखानाके घरमें जमालखा(२) मेवातीकी बेटीसे लडका जन्मा है। बादशाहने उसका नाम अबदुर्रहीम रखा और इन जुयीकी खबरसे अपनी फतहका शकुन लिया। दैराजस्थान बड़ी सज्जिस की और ज्योतिषियोंने जन्मपत्रीका शुभ फल लिखकर भेजा।

हुमायूँ बादशाह दिल्लीमें आनेके पीछे जमींदारोंकी तमचीके लिये उनकी लड़कियोंकी शादी अपने अमीरोंसे करते(३) थे। हमन-

(१) परन्तु अबदुल रहोमखा खानखानाकी जन्मपत्रीमें जो आगे लिखी जावेगी उनकी जन्म तिथि मगसर सुदी १४ सवत १६१३ सोमवार है। न जाने क्यों दोनोंमे २० दिनका अन्तर है। दोनों तिथियोंके साथ दिन भी हैं और पचाससे दोनोंही सही हैं। पर जन्म तो दो बेर नही हो सकता। इसलिये कौन तिथि सही है और कौन सही नही है इसकी व्यवस्था हम आगे करेंगे।

(२) जमालखा, हसनखां मेवातीके भाई अलावलखाका बेटा था। हसनखाका राज्य कई पौडियोंसे अलवरमें था। वह १०००० नवारीसे महाराना सांगाजीके साथ होकर बाबर बादशाहसे लड़ा था और उस लड़ाईमें काम आया था। ये लोग असलमें यादव राजपूत थे और मुसलमान होनेके पीछे खानजादे कहलाने लगे थे। अब भी बहुत लोग इस घरानेके अलवर राज्यमें है।

(३) मआसिरुलउमरामें लिखा है कि जब हुमायूँ बादशाह ईरानमें गये थे तब वहाँके शाह तहमास सफवीने उनसे कहा था कि आपने हिन्दुस्थानकी जमींदारोंसे रिशतेदारी नहीं की और अजनबीसे बने रहे हैं जिसमें पैर नहीं जमे। अब जो फिर वहाँकी बादशाही तुम्हारे हाथ आ जावे तो दो काम जरूर करना, एक तो पटानोंको जहातक बने हुकूमतसे अलग करके व्यापारमें लगाना और दूसरे वहाँके राजाओं और जमींदारोंसे रिशतेदारी करना कि जिससे तुम्हारा राज्य बनावे।

खां मेधातो हिन्दुस्थानके बडे जामींदारोंमेंसे था । उसके चचेरे भाई जमालखाकी २ लड़किया थीं । बडीसे तो बादशाहने निकाह ( वि-  
वाह ) किया था और छोटीसे बैरामखाका करा दिया था । बैराम-  
सखा जब बादशाहके साथ हैमूसे लडनेको आये थे तब बैरामखी  
लाहौरमें छोड आये थे ।

बादशाह जब जालन्धरमें पहुचे तब सिकन्दर फिर सवालक प-  
हाडमें चला गया । बादशाह भी उधर कुछ वारके कामसे धमरौमें (१)  
पहुचे और वहासे भी आगे बढ़कर सिकन्दरको मानकोट किलेमें (२)  
ला बैरा ।

कान्धारमें खानखानाकी तरफसे शाह मुहम्मद कधारी रहता था  
और जमीन दावर बहादुरखाकी सौंपा हुआ था । उसने कधारके  
लालचसे शाह मुहम्मद पर चढाई की । शाह मुहम्मदने किला स-  
जाया और हिन्दुस्थानको दूर देखकर शाह ईरानकी अर्जी लिखी  
कि हुमायू बादशाहने यह बात ठहरायी थी कि जब हिन्दुस्थान फ-  
तह हो जायगा तब कन्धार शाह ईरानकी नौकरीको सौंप दिया  
जायगा । अब आप कुछ फौज भेजें तो वह इस नमकहरामको  
भी सजा दे और कन्धार भी मुक्तसे ले ले । शाहने पूछजार तुर्कमान  
सीस्ता, फराह, और गर्मसरकी जागीरदारोंमेंसे भेजे । उन्होंने अचा-  
नके बहादुरखा पर हमला किया । बडी लढाई हुई और बहादुरखा  
जमीन दावरको छोड भागा, मगर शाह मुहम्मदने तुर्कमानोंकी  
कन्धार सौंपा और जियाकत दे दिलाकर बातोंझौ बातोंमें सूखा  
टाला दिया ।

बहादुरखा इस तरह जमीन दावर छोडकर बादशाहके पास

(१) धमरौका नाम पाल्ढसे जहागीर बादशाहने मुरपुर रख  
दिया था और यह जालन्धरके जिलेमें कागडेके पास है । जहांका  
राजा अब गगनसिंह है ।

(२) मानकोटका किला सवालक पहाडमें सलीम, शाहने बनाया  
था जब कि गकडोंके ऊपर चढकर वह गया था ।

आधा और बादशाहने मुलतानको उसकी जागीरमें देकर मानकोटके ऐन मोरचे पर रख दिया ।

इसी सन ८६४में बैरासखाने बादशाहकी शादी मिरजा 'अब-दुल्ल' सुगलकी बेटोसे की । पहले तो वे इस काममें राजी नहीं थे, क्योंकि मिरजा अबदुल्लाकी बहन मिरजाकामराके घरमें थी और इसलिये उसको कामराके तरफदारोंमेंसे समझते थे । मगर फिर नासिर-उलमुल्कके समझाने पर आगे होकर बड़ी धूमधामसे शादी करा दी ।

बङ्गालका हाकिम मुहम्मदखा पहले अदलीके हाथसे मारा गया था । अब उमके बेटे जलालउद्दीनने अदली पर चढ़ाई की । अदली ४ वर्षसे कुछ ऊपर हुकूमत करनेके पीछे उसके मुकाबिलेमें मारा गया । सिकन्दर खुरने जब यह बात सुनी तब उधर जानेके वास्ते बहुतसा रुपया और माल खानखानाके वकील नासिर-उलमुल्कसे भेजा । खानखानाने बादशाहसे उसकी सिफारिश की । बादशाहने खानखानाकी खातिरसे उसके कसूर माफ करके विहार जानेका रास्ता दे दिया । तब वह २७ रमजान शनिवार सन ८६४ सावन वदी १४ सम्बत् १६१४को मानकोटकी कुजिया और हाथियोंकी भेट बादशाहके पास भेजकर विहारको चला गया और बादशाह ६ महीने पीछे २ सव्वाल सावन सुदी ४की सवालक पहाडसे लाहौर खाने हुए ।

खानखाना मानकोटके घेरेमें बीमार हो गये थे और कुछ फोड़े भी निकल आये थे जिससे घोड़े पर सवार नहीं हो सकते थे और बादशाह उन दिनोंमें हाथी ज्यादा लड़ाया करते थे । एक दिन दो बादशाही हाथी लडते लडते खानखानाके डेरे तक चले आये । उनके पीछे तमाशाई लोगोंकी भीड़ और चीख पुकार हमेती आती थी । उस पर खानखानाके दिलमें यह वहम खड़ा हो गया कि यह बादशाहके हुक्मसे हुआ है और कुछ बदमाशोंने हमें हामी मिला दी । तब खानखानाने अपने भेद जानने वाले एक आदमीको



बादशाहकी धाय, साहस अगले पास भेजकर कहनाया कि मैं अपना कुछ कसूर तो नहीं जानता हूँ और खैरखवाहोने मित्र लाभ कोई काम भी नहीं करता हूँ । फिर कैसे चुगलखोरेने सुम्मे गुगलवार करके बादशाहकी इतनी बड़ी नासिद्धरवानी करा दी है कि सख्त हूँ घी मेरी चादर (कानात) पर छोड़े जाते हैं । साहस अगले तमझीजी याते कहलाकर खानखानाकी दिलजमई कर दी ।

जब बादशाह ११ मकान सावन सुदी १२को नाहोरमें पहुँचे तब खानखाना शमसुद्दीन मुहम्मदखा अतकासे(१) (जीजी(२) अगले ख़ावद ) गिशा करके कहने लगे कि मैं कभी कभी बादशाहको तुम्हारी चुगली और चाटीसे खिचा हुआ पाता हूँ । मैंने क्या किया है और तुम क्यों मेरे खूनके प्यासे होकर बादशाहका मिजाज मुझसे फिराते हो और मेरे प्राण लेना चाहते हो ।

अतका इसबातसे डरकर कई आदसियों और अपने भाई व दोँकी खानखानाके पास लेगया और कौल कसम करके उसकी तमझी कर आया ।

फिर वैरासखाने बादशाही हाथी अपने भरोसेके अलीरीको बाट दिये और बादशाहके कुछ खासा हाथी भी इसी तरह आदमियोंको मौपनेके वहानेसे अलग कर डाले । बादशाह चुपचाप देखते रहे ।

सजका(३) जमींदार तखतसल हुमायूँ बादशाहके सरने पर सिवाब्दर खूँसे ला मिला था । और जब मानकोटमें सिवाब्दरखा काम दिगडता देखा तब जमींदारनेकेने हीले बहाने करके बादशाहके लगकरसे आ गया था । वैरासखाने उसकी सारकर उसके भाई तखतसलको जो खैरखवाहीमें हाजिर था उसकी जगह बैठा

(१) (धाज) धात पति ।

(२) इसने भी अजवर बादशाहको दूध पिनाया था ।

(३) धसरीके पासका एक परगना क्रागडेकी तलहटीमें ।

दिया । यह बात भी बादशाहके दिलमें बुरी लगी, क्योंकि जब यह खुद आ गया था और चाहे कैसेही आया हो तब इस सजाके लायक नहीं था ।

बादशाह ४ सहीने १४ दिन लाहोरमें रहकर १५ मफर मङ्गल वार सन् ८६५ पौष वदी २ को दिल्लीकी तरफ रवाने हुए, जब जालन्धरमें पहुँचे तब खानखानाकी शादी सलीमा(१) सुलतानामे हुई । हुमायू बादशाहने यह अपनी भानजी बैरामखाको देने करके हिन्दुस्थान फतह होनेके पीछे निकाह कर देनेका इकरार किया था । सो अब बैरामखाने बादशाहसे अर्ज करायो । बेगमोंने भी सिफारिश की । आखिर माहम अगाको कोशिशसे विवाह और मौना एक सप्ताहमें हो गया ।

सलोमा सुलताना बेगमके बापका नाम मिरजा नूरुद्दीन था । उसका बाप अलाउद्दीन और दादा ख्वाजाहसन तूरान देशके पूज्य पुरुषोंमेंसे था । इसको तूरानके बादशाह सुलतान महमूद(२) मिरजाकी बेटी दी गयी थी जो बैरामखाके परदादा अली शकरबे-गकी लडकी यशा बेगमसे हुई थी । और इसी सबबसे बाबर बादशाहने भी अपनी बेटी गुलबर्ग बेगमकी शादी ख्वाजा हमनके पोते नूरुद्दीनसे की थी । सलोमा सुलताना गुलबर्ग बेगमकी बेटी थी । वह पुरानी रिश्तेदारों जो यशा बेगमके ब्याह जानेसे बैरामखाके और बादशाहके बुजुर्गोंमें हुई थी वह अब यहा सलीमा सुलतानके साथ विवाह होनेमें खानखानाके काम आयी ।

बादशाह लुधियानेसे हिसारमें आये । खानखानाभी साथ दे । यहाँ नाभिरउल्लुक् और शेखगदार्डमें कुछ झगडा हो गया । बैराम-

(१) सलीमा सुलताना बहुत सुन्दर सुघड और लिखी पढी थी । काव्य रचना भी खूब करती थी । बैरामखाके पीछे बादशाहने उससे निकाह कर लिया ।

(२) बाबर बादशाहका काका था ।

खाने शेखकी तरफ़दारी की ज़िम्मे नानसिरउलमुल्क बुरा मान कर कई दिनों तक दरबारमें नहीं आया । कुछ दिनों पीछे कई भले आदमियोंने बीचमें पड़कर मेल करा दिया(१) ।

५ उरदू बहिश २५ जमादिउस्सानी शुक्रवार सन ९६५ बैशाख बदी १२ खत १६१५को बादशाह दिल्लीमें दाखिल हुए ।

नानसिरउलमुल्क कुल सुखतार था । मुल्क और मालके सब काम उसके ऊपर छोड़े हुए थे । वह खैरखानासे काम करनेमें वैरासखाका भी मुलाहिजा नहीं रहता था । वैरासखा उससे दिलमें कुदतेते बहुत थे ; लेकिन भीकाँ देखते थे ।

वुर्जअली(२) और सुमाहिबवेग(३) दो बड़े बदमाश थे

(१) ये दोनों वैरासखाके सुमाहिब थे । नानसिरउलमुल्कको नाराज करना मानो वैरासखाकी बुद्धि विपरीत होनेका एक चिह्न था, क्योंकि उनकी तरफ़से सारा काम बादशाहीका वही करता था और अब वह बादशाहके पक्षमें हो गया । ( सुलतखिबउल तवारीख ) ।

(२) वुर्जअली अवधके हाकिम अलीकुलीखाका नौकर था । नानसिरउल मुल्क अलीकुलीखा पर फौज भेजा चाहता था, क्योंकि उसका चाल चलन ठीक नहीं था, वैरासखा अलीकुलीखाकी खातिरसे टालते थे । इसीलिये अलीकुलीखाने वुर्ज अलीको वैरासखाके पास भेजा था । वह एक दिन नानसिरउलमुल्कको बुरा भला कहने लगा जिसपर दिल्लीके किलेपरसे गिरावर मार दिया गया ।

(३) सुमाहिबवेग पहले तो हुमायूँ बादशाहकी सेवामें रहता था । फिर अनोखे नौ हफ़्ते पास रहने लगा । इस वक्त दिल्लीमें आ गया था । इसका भी चलन ठीक नहीं था, इसलिये वैरासखाने कैद करके मल्लेकी भेज दिया, मगर नानसिरउलमुल्कने खानखानाशे २ चिट्ठिया लिखाकर उलवायी एकमें मारने और दूसरेमें छोड़नेका हुक्म था । मारनेजी चिट्ठी निकली और नानसिरउलमुल्ककी आदमियोंने जाकर उसको दिल्लीमें कुछ दूर रास्तेमें मार डाला ।

जिनको नासिरउल्लमुल्काने बैरामशाहको मरजीके त्रिनाफा सरवा डाला था।

इधर बैरामखां और मुनश्म(१)खाने मिलकर बादशाहने शरचित्त जलानुद्दीन महबूदको(२) को इन लोगोंकी सुगन्ध नहीं करवा था कनल करा दिया। इससे भी बादशाहना दिल बहुत जला, मगर गुस्सेको पी गये।

१७ आधान सन ३ इलाही १७ मुहरर सन ८६६ इतबार मगसर बदी ४ सवत १६१५को बादशाह दिल्लीने आगरने अये। यहां शाह मुहम्मद जी बैरामखांकी तरफने कन्धारने हाकिस था कन्धारका किला शाह ईरानको सौंपकर बादशाहके पास हाजिर हुआ।

यह पहले लिखा जा चुका है कि शाह मुहम्मदने इकगार करके भी कन्धार शाह ईरानको नहीं सौंपा था। इसलिये शाहने अपने भतीजे सुलतान हुसेन मिरजाके(३) साथ कन्धार पर फौज भेजी। वह शाह मुहम्मदसे हारकर भाग गयी। तब दूसरी फौज आयी। शाह मुहम्मदने बादशाहको भर्जो भेजी। बादशाहने उसको हुक्म लिखा कि बडे हजरत फरमाया करते थे कि जब हिन्दुस्थान फतह हो जायगा तब कन्धार शाहको दे देंगे। यह अच्छी बात न हुई कि उसने उन लोगोंसे लडकर यहातक बात

(१) मुनश्मखा काबुलका हाकिस था।

(२) जलानुद्दीन महबूद गजनीनका हाकिस था। उनने मुनश्मखा और बैरामखा दोनो अदावत रखते थे। इस वास्ते वह अपने बचावकी निचे हिन्दुस्थानको आता था। मगर मुनश्म खान पकडवा मगाया। इधरसे बैरामखान भी उसकी मारनेला फरमान भेज दिया। इस तरह वह अपने भाई मसजद सैत काबुलमे मारा गया।

(३) सुलतान हुसेन मिरजा शाह तुहमासके भाई बहराम मिरजाका पिटा था।

बटायी ; पर सुनासिर ने कि वह मिला उनके नौकरोंको सौंप कर  
चोर भागो साग कर दरवाज़में आ जावे ।

एक हृदयके पहचते ही श्राद्ध सुहृद्मद सुनतान हुनैन सिरजाको  
जिना सौएकर चला गया ।

कुछ दिनों पीछे नासिरमुल्क बीमान हुआ और आन-  
खाना उसके देखनेको गये तो दरवानने बैराग़ीसे कहा  
कि मैं खबर करता हूँ । इसपर बैराग़ी खा बहुत झुंझाये ,  
नासिरमुल्क खबर पाकर दौड़ा आया और बहुत निजोरे  
करके खानखानाको पन्द्र ले गया तो भी उसके साथ घोंड से  
ही आदमी जाने पावे जिससे वे नाक भी पड़ाये हुए बाहर पाये,  
फिर शेख नदाई (१) वगैरहने और उनको भडकाया तो उन्होंने  
दो तीन दिन पीछे फ़ाजा अमीनुद्दीन दगरह अपने नौकरोंको  
नासिरमुल्क के पास भेजकर कहलाया कि तू जब कन्धारमें ह-  
मारे पास आया था तो एक गरीब विद्यार्थी था , हमने तुम्हको  
व्याज़र पड़े दरजेपर पहुँचाया । मुझसे प्रसीर बनाया, मगर तू  
छोछे पेटना आदमी था , जलदीसे अफ़र गया और इसे तुम्हने  
ऐसे ऐसे जवाब देनेका हर है कि जिनका इनाज हम सुनकितने  
कर सकेंगे । इसलिये यह बेहतर है कि तू कुछ दिनोंके लिये अपने  
कदमोंसे पाद लसेटकर बैठ जा और नक्कारा निशाअ वगैरः अपनी  
अर्मागी और घसख़के सामान सौंप दे तथा अपना सिजाज  
दुरस्त कर ले जिसमें तेरा और दुनियाका फायदा है । फिर  
जैसा हम तेरे वास्ते अच्छा समझेंगे करेंगे ।

१ । शेख नदाई शेख जमानोका बेटा दिल्लीका रहनेवाला था ।  
एक बैराग़ी खा बुजुर्गतमें गये थे तो यह बड़ा था और इसने बैराग़ी  
छाकी पाय अच्छा मद्दत किया था जिसके पलटेमें बैराग़ी खाने  
इसको खदर (दानाघ्य) का ओहदा सन् ८६१ संवत् १६१३ में  
दिया था ।

नासिरुलमुल्क खुशीसे सरदारीका नव सामान उनको मौफ-  
कार घरमें बैठ रहा तो भी खानखानाने चुगलखोरीके कानूनेसे कुछ  
आदमियोंके साथ उसको बयानेके (१) किलेमें भेज दिया जहांसे वह  
सके जानेकी इजाजत लेकर गुजरातको गया। जब राधनपुरमें (२)  
पहुंचा तो फतह खां बख्शीचने उसको बड़े आदर सत्कारसे कुछ  
दिनोंके लिये अपने पास रख लिया।

इतनेमें मिरजा शफुद्दीन (३) हुसैन और गढ़मन्नाकी  
चिट्ठिया नासिरुलमुल्कको पहुंचीं जिनमें लिखा था कि जहां  
पहुंचा हो वहीं ठहर जावे और देखता रहे कि क्या होता है।

नासिरुलमुल्क, राधनपुरसे लौटकर रणथम्भोरको (४) पान  
भायनके घाटेमें आ रहा।

१। बयाना जब भरतपुरके राज्यमें है।

२। राधनपुर गुजरातमें है। उस वक़्त तो गुजरातके बादशाहका  
वहा असल था फिर सवत १६२८में अकबर बादशाहका हुआ।  
सवत १७७३में नवाब मुहम्मद शेरकी जागीरमें सिता जबसे उसकी  
औलादके क़ाबजेमें है और पानपुरमें एजण्टीके नीचे है।

३। सन् ८६३ में जब बादशाह जालन्धरमें थे तब यह मि-  
रजा शफुद्दीन हुसैन काशगरके बादशाह अबदुरसीदखाका एत  
लेकर आया था। इसकी मा तूरानके बादशाह सुनतान अबूसईदकी  
नवासी थी जिससे बादशाहने उसको बहुत खातिर और इज्जतसे  
अपने पास रख लिया था।

४। रणथम्भोर वही किला है जहां हसीर चौहान हुआ है  
जिसका हसीरुठ मशहूर है। उससे सवत् १३५८ से अला  
उद्दीन खिलजीने लिया। फिर सवत् १५७२ तक मालवीके बाद-  
शाहोंके पास रहा। सुलतान मुहम्मद मालवीसे चित्तौड़के राणा  
सामाने सवत् १५७२में छीना। उनकी तरफसे दूँदीके राव

वैरासखाने यह सुनकर शाहकुलीखा महारम, गौर खुर्रम-  
खांको गार्हियामुल्कको पकड़नेके लिये भेजा । जब ये वहाँ  
पहुँचे तो वह दिन भर तो इनसे लड़ा और रातको धोड़े  
आदमियों सहित निकल गया ।

इस तरह वैरासखाने बेपरवाई और चुगुल खोरीके कहनेसे  
अपने ऐसे कामके आदमीको दूर करके अपने पाँव पर आप  
कुल्हाड़ा सागा ।

बादशाह वैरासखांके इस कामका बदला भी खुदाके ऊपर  
छोड़कर कुछ नहीं बोले क्योंकि वे सब कारखाना सलतनतका  
वैरासखांको सौंपकर तत्कालीनका तमाशा देखते थे ।

वैरासखाने अब हाजीमुहम्मदखां सीमतानीको अपना वकील  
बनाया, मगर अमलसे वकील श्रेष्ठ गढ़ाई था ; क्योंकि वैरासखां  
कोई काम बगैर उसकी मलाहसे नहीं करते थे ।

बादशाहकी दरिमें खानखानाको ये जबरदस्तियाँ पटकती  
ही बहुत थीं, लेकिन वे मुनाफ़िजके सारे कुछ नहीं बोलते थे ।  
क्योंकि हुमायूँ बादशाह उनकी अतालीक बाहकर अकसर खान  
दादाके नामसे पुकारते थे और वही लिहान बादशाहको भी  
था । वे और शिकारमें रुगे हुए चुपचाप सब बातोंको देखा  
करते थे । उधर बलीबेग, जुलकदर और श्रेष्ठगढ़ाई कामकी बगैरह  
वैरासखांको बहकाते थे और इधर साहस अफ़्गा अदहमखा (१)  
और मिरजा शर्फ़ुद्दीन, बादशाहको वैरासखां और उनके खुश-  
मदी मुनाफ़िजोंको सजा देनेकी सलाह देते थे ।

सुरजन हाडाके पास था । सुरजनसे अकबर बादशाहने सन्  
१६२६ में लिया । सन् १८१५ में दिल्लीकी बादशाही कमजोर  
होने पर किलेदारोंने जयपुरके महाराजा साधोसिंहको सौंप  
दिया जयसे अबतक जयपुरवालीकी कबजेमें है ।

१ । साहस अफ़्गाका बेटा ।

आखिर जब बादशाहने इतनी चप्पा काते काते और रान बाबा कहते कहते भी खानखानाकी रन्ती पर पाते न देखा तो शिकारके बहानेसे बयानेमें जाकर उनसे दबावते निगल जानेकी सलाह की माहमअझाने यह भेद दिल्लीके हाकिम चचा बउद्दीन खांकी लिख भेजा ।

बादशाह ८ फरवरदीन सन ४ तारीख २० जमादिउल अब्बल सोमवार सन् ९६६ ( चैत बटी ७ सवत् १६१६ ) को शिकारके वास्ते कौलकी तरफ जानेका नाम लेकर यमुनासे उतरे और मिरजा कासराके बेटे मिरजा अबुल कासिमको (१) भी इस शिकारमें शामिल रखनेके लिये बुलवा लिया जो बैरामखांके पास रहता था । यह सावधानी इस मतलबसे की गयी थी कि उस आखके अन्धे और गाठके पूरेके हाथमें यह लकड़ी भी न रहे ।

सिकन्दरेमें पहुच कर माहम अझाने यह भेद अपने बेटे अदहमखांकी सहर (२) सुहम्माद बाकीसे कहा । सहर वृद्ध बैरामखांकी डरसे खाय भी न हुआ और बैरामखांको इस हान्तकी खबर भी कर दी । बैरामखां ऐसी बातें पहली भी सुन चुके थे । इस लिये उन्होंने कुछ परवा न की ।

बादशाह शिकार खेलते हुए कोलमें (३) पहुँचे वहाँसे अपनी साकी कुशल पूछनेके लिये जो छन दिनों कुछ बीमार ली

१ । इस शाहजादेको बैरामखां हमेशा अपने पास रखते थे और बहुत लिहाज बरते थे ।

२ । यह मिरजा हिन्दालका परवानची [दूत] था और इसकी बटीसे बादशाहने पिछले साल ही अदहमखांकी शादी करा दी थी ।

३ । कोललो अब अलीगढ़ कहते हैं ।



टी, दिल्लीको चले दिये। खुरजेमें (१) शहाबुद्दीन अहमदका अपने सब भाई बन्नोंके साथ पेशवाईके लिये हाजिर था। बादशाह उस पर मेहरबान होकर १७ फरवरी २८ जमादि उस्मान्नी तज्जुलवार (चैत वदौ ३०) को दिल्लीमें दाखिल हुए और मगजगह परमान लिख भेजे कि बैरामखां उलटा चलने लगा है जिससे हम उसको अपनी नजरोसे गिराकर दिल्लीमें चले आये हैं। जो अपना भला चाहता हो वह यहां हाजिर हो जावे।

उस वक्त ममशुद्दीनरां “प्रताका” दहौरेमें (२) और मुनब्रम खां काबुलसे था। इन दोनोंके नाम भी हाजिर होनेके कुछ पहुंचे।

जब ममशुद्दीनहा आया तो बैरामखांका नकारा निशान और तुमन तीग उसको रूनायत हुआ और पजावकी सूबेदारी भी दी गयी।

शहाबुद्दीनहाने दिगीका किला सजाया और बादशाहकी सलाहसे शाहिल हुआ।

बैरामखांसे बादशाहका मिजाज बदल जानेकी खबर थोड़े दिनोंमें सब जगह फैल गयी चोर लोग बैरामखांको छोड़ छोड़ कर बादशाहके पास आने लगे। सबसे पहले कयाखां गग आया था जो बैरामखांके बड़े प्रसीदीसे था।

जो जाता था उसको साहस प्रंगा और शहाबुद्दीन अहमद खांकी सलाहसे जंगीर सनसुत्र और शिताव दिया जाता था।

बैरामखां पहले तो अपने जोर और दबावके घमण्डमें भूरा कर इस बातको खेल ही समझते रहे। पर जब बादशाहके फरमानोंके पहुँचने पर अपने निज आदमियोंको भी पाससे थिसकते

१। दिल्ली और अफीगढ़के बीचका एक शहर।

२। पजावका एक शहर जो लाहौरके परे है।

हुए देखा तो आंखें खुलीं और मिरजा अबुनकामिमको दृढ़ा तो नहीं पाया। तब तो बहुत घबराये और तरसून सुहम्मदखां चागी सुहम्मद खां और ख्वाजा अमोनुद्दीन महमूद [ खाजाजन्ना ] को ब दशाहको खिदमतमें लाफी मागनेके लिये भेजा, मगर बादशाहने उनको भी समझाकर रख लिया और पीछे नहीं जाने दिया।

वैरामखाने यह सुन कर कभी तो यह विचार किया कि अभी बादशाहके पास बहुत भीड़ नहीं हुई है, जल्दीसे पहुँच कर बन्दोबस्त कर लूँ और कभी इसको वैजदवी समझाकर माफ़ी सांगनेके वास्ते जाना सुनासिब समझा और आखिर इसी मनगाने जानेकी तयारी की; मगर बादशाहके सलाहकारों ( मन्त्रियों ) को उनका आना भी मजूर नहीं था। कुछ लोगोंने कहा कि अब वह दिल्लीमें आवे तो हजरत लाहोरका चले जावे और जन् लाहोरमें आवे तो कानुलको सवारें। उससे न मिलें।

बहुतेरेने कहा कि कसो नहीं जाना चाहिये। अगर वह लड़ना चाहे तो यही रह कर उससे लड़ें। बादशाहने भी इसी बातको पसन्द करके खड्गके लिये वही पाव जमाये और तरसून सुहम्मद खा और हबीबुल्लाहको यह कह कर भेजा कि वैरामखाको किसी तरह न जाने देना। हम अभी उसे नहीं देखेंगे।

वैरामखाने जब इस तरह दिल्ली जानेका रास्ता बन्द पाया और लडाईके विचारसे जागा उचित न देखा तो उनको बड़ा चिन्ता हुई कि अब क्या करना चाहिये। बलौबेग और शेख गदाई तो कहते थे कि अभी बादशाहके पास अधिक सेना नहीं है, जल्दीसे चढ़ कर अपना काम कर ले परन्तु खानखाना इस झुकनर्मीको अपना धर्म नहीं समझाकर कभी तो कहते थे कि मेरे बिना बादशाहका काम नहीं चलेगा, इसलिये नज़रतापूर्वक बादशाहकी मना लेनेका उपाय करना चाहिये। कभी यह विचार करते थे कि अभी तो वहादुर खा और उसके साथकरसे जा मिलूँ जो मालवे पर जा रहा है और मालवा फतह करके वहां रहजाऊ। फिर

जंसा अवसर देखूं बैठा करू । कभी यह सोचती थी कि प्रागर छोड़ कर संभलके [१] रास्तेसे अलीकुलीखांके पास छोड़कर पठानोंके देशमें चला जाऊं और कुछ दिन वहां रह कर अपने हितका साधन करू । कभी यह सूझती थी कि विरक्त होकर मछे जानिका छोड़ दिवार किया करता था सा अब उमका समय आ गया है क्यों-कि बादशाह अपना काम आप करने लगे हैं । इसलिये बादशहसे हज करनेको आज्ञा मागू । इसमें यह भी आशा थी कि दादाचरण बिदयालुतासे अपने पास बुला लेंगे ।

निदान यही विचार खिर करके बहादुरशाहको (२) सीपरीसे वापस बुला लिया और बादशाहको निदमनमें खाना कर दिया, इस तरहसे अपने आदमियोंके बहासे भोजनमें यह बात सोची थी कि जो मेरे हित ही तो ऐसे लंगीका बादशाही लश्करमें रहना अच्छा है और जो ये भी जाना चाहते हो तो इनको साथ रखनेमें फयदा नहीं, बिदा कर देनेमें नुकाना भी है ।

फिर सबेरे जानिका विचार प्रकट करके सिवाग्र पठानको बेटे और गार्जीखां तदरको बादशाही सुल्तानोंमें फसाद करनेके सिधे भेजा और इसी सतलवको पोशोदा लिखाबटे भी इधर उधर खाना करके अन्तर्वरको सूच किया कि जिससे बहासे बालबच्चोंको लेकर पंजावमें चले जावे ।

बादशाहको जब यह हाल मालूम हुआ तो दृष्टान्तानाको लिखा कि तुम उन लोगोंके बहकानेसे कि जो इस दाष्टके कारण हुए हैं परिणाम न सोचकर देशोंको धिध्वंस करनेको वास्ते

१ । बहेलखण्डका एक पुराना शहर जो सुरादाबादके पास है और जिसका नाम शास्त्रमें संभलपाम लिखा है । कहते हैं कि कल्की अवतार इसी जगहमें होगी ।

२ । सीपरी गवालियरके पास भागवेके रास्तेमें है ।

हुए देखा तो आखिं खुलीं और मिरजा अबुनकारिमको दूदा तो नहीं पाया । तब तो बहुत घबरावे और तरखून मुहम्मदशाह राजी सुहम्माद खा और ख्वाजा अमोनुद्दीन मजसूद [ राजाजन्म ] को ब दशाहको खिदमतमें साफी सांगनेके लिये सेजा, मगर बादशाहने उनको भी समझाकर रख लिया और पीछे नहीं जाने दिया ।

बैरामखाने यह सुन कर कभी तो यह विचार किया कि अभी बादशाहके पास बहुत भीड़ नहीं हुई है, जल्दीसे पहुँच कर बन्दोबस्त कर लूँ और कभी इसका वेष्टवो समझकर साफी सांगनेके वास्ते जाना सुनासिव समझा और त्राखुर इसी मनगाने जानिकी तय्यारी की; मगर बादशाहके सलाहकारी ( मन्त्रियों ) को उनका आना भी सजूर नहीं था । कुछ लोगोंने कहा कि जब वह दिल्लीमें आवे तो हजरत लाहोरका चले जावे और जब लाहोरमें आवे तो कानुनको सिवारे । उससे न मिले ।

बहुतोंने कहा कि काहो नहीं जाना चाहिये । अगर वह लडना चाहे तो यही रह कर उससे लड़े । बादशाहने भी इसी बातको पसन्द करके लड़नेके लिये वही पाव जमाये और तरखून मुहम्मद खा और हबीबुल्लाहको यह कह कर भेजा कि बैरामखाको किसी तरह न आने दना । हम अभी उसे नहीं देखे गे ।

बैरामखाने जब इस तरह दिला जानेका राजा बन्द पाया और लडाईके विचारसे जाना उचित न देखा तो उनको बड़ा चिन्ता हुई कि अब क्या करना चाहिये । बलौबेग और प्रिख गद्दई तो कहते थे कि अभी बादशाहके पास अधिक सेना नहीं है, जल्दीसे चश कर अपना काम कर ले परन्तु खानखाना इस जुकान्मेको अपना धर्म नहीं समझकर कभी तो कहते थे कि मेरे बिना बादशाहको काम नहीं चलेगा, इसलिये नज्जतापूर्वक बादशाहको मारा लेनेका उपाय करना चाहिये । कभी यह विचार करते थे कि अभी तो बहादुर खा और उसके साथकरसे जा मिलूँ जो मालवे पर जा रहा है और मालवा फतह करके वहां रहजाऊ । फिर

जंसा प्रवसर देखूं वैसा करूं । कभी यह सोचते थे कि आगरा छोड़ कर सभलके [१] रास्तेसे अलीकुलीखांके पास होकर पठानोंके देशमें चला जाऊ और कुछ दिन वहां रह कर अपने हितका साधन करूं । कभी यह सूझती थी कि विरह होकर मझे जानिका लो दिवार किया करता था सो अब उसका समय आ गया है क्योंकि बादशाह अपना काम आप करने लगे हैं । इसलिये बादशहसे हज करनेकी आज्ञा मागूं । इसमें यह भी आशा थी कि कदाचित् वे दयालुतासे अपने पास बुला लेंगे ।

निदान यही विचार हिर करके बहादुरखांको (२) सीपरीसे वापस बुला लिया और बादशाहकी खिदमतमें खाना कर दिया, इस तरहसे अपने आदमियोंकी बहासे भेजनेमें यह बात सोची थी कि जो मेरे हितू हो तो ऐसे लंगोका बादशाही लश्करमें रहना अच्छा है और जो ये भो जाना चाहते हो तो इनकी साथ रखनेमें फायदा नहीं, यदि कर देनेमें निकनामी भी है ।

फिर तह्को जानिका विचार प्रकट करके सिक्केश्वर पठानकी बेटे और गाजीखा तदरको बादशाही सुल्तानोंमें फसाद करनेके लिये भेजा और इनी सतलवकी पोशोदा लिखावटे भी इधर उधर खाना करके अलवरकी कूच किया कि जिससे बहासे वालवखोंकी लेकर पंजाबमें चले जावे ।

बादशाहकी जब यह खबर मालूम हुपा तो खानखानाकी लिखा कि तुम उन लोगोंके बहकानेसे जिन जो इस कष्टके कारण हुए हैं परिणाम न सोचकर देशोंको विध्वंस करनेके वास्ते

१ । रहैलखण्डका एक पुराना शहर जो सुरादाबादके पास है और जिसका नाम शास्त्रमें शंभलधाम लिखा है । कहते हैं कि कल्की अवतार इसी जगहमें होगी ।

२ । सीपरी गवालियरकी पास माधवकी रास्तेमें है ।

याह्नर निवाले हो और तुमने सिकन्दरके बेटे और गान्धीका छोटा भाई दी है कि जाकर राज्यमें उपद्रव करें। सन्तुष्टीकामिम खांको खत लिख कर उसके दीवान मुयारकके हाथमें भेजा है कि मैं लाहौरको आता हूँ ; किला किसी दूतके गेटे में देना। ताताख खा पचभइयेको भी ऐसा ही सन्देश भेजा है और शाप अलवरको चले हो कि वहाँसे लाहौरको कूच कर जाओ। हमारी यह भरोसा है कि तुमने अपनी समझसे तो इनमेंसे कोई भी नहीं किया है। लोगोंने बड़काकर यहातक बात गढ़ा दो है प-दन्तु तुम ही कहो कि क्या ४०(१) वर्षतक स्वामिभक्तिसे सेवा करने, प्रतिष्ठासे परमपदको पहुँचने, और जगत्में कीर्ति पानेकी पीछे भी इस शेषावस्थामें स्वामिद्रोही पनोगे और अपने निर्जनतासे भी लज्जा नहीं करते। तुमने हमको इतने काट दिये हैं तो भी हम तुम्हारा भला चाहते हैं और अभी तुम्हारा मिलना चाहते हैं। इस लिये जो तुमको कोई प्रदेश भी दे गइ कि तुम चले जाओ तो फिर स्वार्थी लोग बातें बना कर हमको तुमसे अपमान करेंगे। इससे तो यही ठीक है कि जैसा तुमने अर्जीमें लिखा है हज (०) करनेको चले जाओ और जो सामग्री भेटकी तुलने सहरन्द और लाहौरमें प्रस्तुत रखी है उसे लदवाकर वहाँसे मगवा लो।

१। इससे जाना जाता है कि खानखाना सन्वत् १५४६से बादशाही नौबत थे और यही एक आधार उनकी अवस्था जाननेका सारे अकबरनामोंमें है। और इसपरसे यह कहते हैं कि उस समय वे ५६ बरसके होंगे, क्योंकि सुभासिरउलउमराके कर्त्ताने उनका हुमायूँ बादशाहके पास आना १६ बरसकी उमरमें लिखा है यदि यह कल्पना सही है तो उनका जन्म भी सन्वत् १५६० के लगभग होना संभव है। हुमायूँ बादशाह सन्वत् १५६५ में जन्मे थे।

२। मक्के की यात्राकी सुसलमान हज कहते हैं।

जब हमसे बातचीत होकर आती है तो इस अतीशानि तुम्हें बिलकुल जो तुम कहोगे उसकी कारकीर्दी हमारा नहीं करेगी और पिछली सेवाएँ ध्यानमें रखेंगे। इस लीला के कर्म-रहित तुम्हारी प्रतिष्ठा संसारमें भग हो गयी है; परन्तु हम नहीं चाहते कि तुम बदनाम होओ और स्वार्थी लोगोंकी वतीमें आकर सीधे रस्तेसे बहको। जैसे तुम हमारे प्रतापसे इस लीलाकी परम कामगाओकी पहुँच हो वैसेही हमारे उपदेशसे उस लोककी पुण्यकी भी प्राप्त करो।

वैराग्याने इस शिष्यापक्ष पर कुछ ध्यान नहीं दिया। साहसभगाने बादशाहसे कहकर आनखानाका काम बहादुर-खाँकी दे दिया। आयाखाँ गगकी बहारायचमें (१) जागीर देकर उधर भेजा। सुलतान हुसैन दलायर और कुछ और लोग कैद किये गये। सुहस्रद समीन दीवान भाग गया। बहादुरखाँकी भी इटावेमें जागीर देकर भेज दिया। इस तरह साहस भगानी सलाहसे आन-खानाके आदमी जो दरगाहमें थे तितर बितर कर दिये गये।

१२ रजब मंगलवार (चैत सुदी १२ सवत् १६१७) को वैराग्या आगरासे अलवरकी तरफ रवाना हुए। बादशाहकी एवर दी गयी कि वे नागौरके रास्तेसे पंजाब जानके द्वारा-देमै है। इस पर बादशाहने भी उनका रास्ता रोकनेके लिये २२ रजब शुक्रवार (वैशाख वदी ८) को नागौरकी ओर कूच किया और मीर अबदुल लतीफकी वैराग्याके पास भेजकर फिर वे बातें कहलायी कि तेरी बम्हणी और खिदमतके हक जो इस बड़े घरानेमें हैं सब लोगोंकी मालूम है। हम जो काम उमर होनेसे सैर और शिकारमें मशगूल रहकर मुल्क और मालका काम नहीं करते थे तो सब बातें तेरे ऊपर छोड़ी गयी थी। अब हम अपनी बादशाहीका काम करने लगें हैं तो तू इसकी खुदाकी

बड़ी बख्शिर्शोंमेंसे समझकर शुद्ध गुजार ही और कुछ समझते वास्ते हज करनेको चना जा कि जिसकी वायत हयोगे दाया करता था हिन्दुस्थानमेंसे जो जागीर और जो कुछ तू जाते परी हम तेरे वास्ते मुक़र्रर कर देगे जिसका फ़ामिल तेरे आदमो फसलको फसल वर्षा वर्षी तेरी सरकारमें पद्यु चाया करेंगे।

२६ रजब मङ्गलवार (वैशाख वदी १७) को बादशाहने उरे जम्हरमें (१) छुए। वहा नासिनगमुल्क (सुभा पीर मुज्जद) भी गुजरातसे आकर हाजिर हो गया। बादशाहने उसको खांका छिताब, खिलमत, भण्डा और डहा देकर अचमदशां और मिरजा शफुद्दीन वगैरहके साथ नागोरको भेजा कि जो खानखाना मक्केको जाता हो तो उसको बादशाही सीमासे निकाल बाहर करें और जो प जाव जाना चाहे तो सजा दें।

नागोर (२) मिरजा शफुद्दीनकी जागीरमें दिया गया।

फिर बादशाह जम्हरसे लौटकर ११ शवान बुधवार (वैशाख सुदी १३/१४) को दिल्लीमें आ गये और अपना काम करने लगे।

बैरामखां अभी मेघातमें ही थे कि बादशाही फौजके आनेकी खबर उनकी खशकरमें फैली जिसके सुनते ही सब लोग उनकी छोड़कर बादशाहकी सेवामें चले गये। उनके पास मिवाय वलावेग या उसके दो बेटे हुसेन कुली और शाह कुलीके जो उनके सम्बन्धी थे, या शाहकुली महरम तथा हुसेनखा वगैरह कई आदमियोंके और कोई न रहा।

१। जम्हर एक कसबा दिल्लीसे आगे जिले रोहतकमें है।

२। नागोर अब जोधपुरके राज्यमें जोधपुरसे ४० कोस उत्तरमें है। उस समय भी जोधपुरके नीचे था, शफुद्दीनकी जागीरमें देनेका यह मतलब था कि वह फतह करके अपने दावजमें कर ले।



जब बादशाहकी फौज बूच करती हुई पास आ पहुँची और वैरासखाको निश्चय हो गया कि अब बचावकी जगह नहीं रही तो उन्होंने रियासतकी आस छोड़कर बादशाहको कस्बे की माफी और सके जानेकी कुट्टी मिलनेकी अरजी लिखी और कई हाथी, तुमन, तौग, भण्डा, नक्क़ारा और सब सामान सरदारीके हुमेन कुलौकी साथ दरगाहमें भेज दिये और उन अमीरोंको जो उनके पीछेमें लगाये गये थे मित्र भेजा कि आप लोग किस वास्ते तकलीफ़ उठाते हैं ? मैं आप ही दुनियासे उदास हो गया हूँ । वे लोग इस बातको सब समझकर हौट गये । फिर शेर गढ़ाई भी डरता डरता दरगाहमें आ गया । बादशाहने उस पर भी बहुत मेहरबानी फ़रमायी ।

खानखाना बादशाही सीमा छोड़कर बीकानेर गये । (१) वहाँके राव कल्याणसिंह और कुंवर रायसिंह सत्कार पूर्वक सामने आ कर मिले । वैरासखा कुछ दिनों तक उनके पाहुने रहे । वहाँ यह खबर उड़ी कि सुता पीर सुहम्नद गुजरातकी ओरसे चढ़ा चला आ रहा है । इस पर झुटिल बुद्धि वाले साधियोंने फिर उगको भड़काया तो उन्होंने सुहम्नदुल्ला वागी होकर बीकानेरसे पंजाबको बूच किया और कुछ सेना एकत्र करके उत्तर सीमाके अमीरोंको लिखा “ मैं तो हज़क़ी जाता था परन्तु साहसवाना आदि मेरे शत्रुओंके बादशाहका मन सुझाते फिर कर यह प्रसिद्ध कर रखा है कि हमने वैरासखाको निकलवा दिया है । इसलिसे मेरे जीमें यह आया पड़खी इन दुर्जनोंको दण्ड दूँ

१। बीकानेर जानेका यह कारण हुआ था कि जब खानखाना बादशाही अमलदारीसे सारवाड होकर गुजरातको जाने लगे तो जोधपुरके राव सातदेवने फौज भेजकर रस्ता रोक दिया जिससे वे उधर न जा सकें और नागौरसे बीकानेरको चले गये थे ।

फिर हज्जको जाऊ और मुन्ता पीर मुहम्मदसे भी समझूँ जिनने इन दिनोंमें नीबत और निगानका मान प्राप्त करके मेरे निता-लनेका बीडा उठाया है।”

बादशाहने समाचार सुनकर फिर बेरामखांकी एज फतवान लिखा जिसका यह आशय था—

“खानखाना जानें कि बहुत कम बड़े घरानेका पापा दुष्टा है। हमारे पिताने उसकी सेवा और भक्ति देवकर पूर्ण पावता की और हमारी शिक्षाका बड़ा काम उनको मँपा। उनको पता हमने उसकी पिछली बन्दगीका विचार करने लाने राजकाज उसीने भरोसे पर छोड़ दिये। उसने जो अच्छा काम करना चाहा वही किया यहा तक कि इन ५ वर्षोंमें कई हुज्जत ऐसे भी मिले कि जिनसे सब लोगोंको छुटा हो गयी जैसे मेल बदलनेको मारे मौजबियों और सैयदोंके ऊपर करके इतना बढाया कि उतनी भी (१) तरलूम करनेकी माफ़ी दे दी और वह बड़े दमनके दोड़ पर सवार होकर हमसे हाथ मिलाता था।

जा प्रथम सेवक अपने घे उनको तो खान और सुल्तानकी खिताब देकर भण्डे उहने और बड़ी उपजके देन दिये और मेरे बापके जमीनों, खानों और सुल्तानीकी जिनका कला हता हा रोटीका भी सुल्तान कर दिया और जो हथियार हाराते सेवन वर्षोंसे उमेदवारी करते थे उन्हें पानेकी भी न दिया और जो लोग हमारी सवारियों और प्रिकारोंमें दोड़ते थे उनको प्राणी तकाता लागू था। अपने नौकरोंकी तो जो भाति भातिकी अन्याय और अपराध करते थे कुछ नहीं कहा था कि हमारे नौकरोंसे जो जरा सी भी चूक हो जातो था कोर रूठ भी उनका नाम ले लेता तो उनके मारने और घर लूटनेमें देर नहीं करता था।

शाहजुनी नारजी मुहम्मद तहिर और लखसारवान जैसे धूर्तों और खुशामदियों को सत्यवादी समझ कर पालता था और उनका पक्ष करता था। शाहजुनीने आज्ञा भङ्ग की और यस्त्रील उत्तर दिया जिनसे वह जीभ काट लेने और वध करनेके योग्य था पर उसे कुछ न कहा और सुनकर चुप हो रहा ।

ऐसे ही लखसारवान, भी उसके और दूसरे लोगोंके समक्ष ऐसा कटु वाक्य बोला था कि उसे प्राण टण्ड दिया जाता और बनी बेगको वह आप जानता है कि कजलबागमें (१) उसकी क्या दर थी और क्या उसने सेवा की थी परन्तु अपना जमाई जानकर बड़े बड़े भ्रमीरोंसे भी उनका दरजा बढ़ा दिया । हुसेन तुनीको जियने अब तक एक लुंगेसे भी पजा नहीं लड़ाया था सिवाइरखा, अबदुल खा और बहादुरखाके बग़ावर उपजाज जा-कीरें दी और हमारे बड़े बड़े सरदारोंको जजड गादीपर टाला ।

पिार इन दिनोंमें तो उससे ऐसे ऐसे अनाचार होने लगे थे कि जिनसे हमको लेश ही लेश होता जाता था और तो क्या जो थोड़ेसे लोग हमारे पान रह गये थे उनसे भी वह अलग करके हमको अकेला ही रखा चाहता था । इसलिये हम आगरेसे दिल्ली चले आये और उसको लिखा कि कुछ पेंच ऐले पड़ गये हैं कि वह हमसे मिल नहीं सकता है और हम उससे इतना बहुत दुःख पाकर भी उसका वैसा ही रानटाना जानते हैं और उसकी चिन्तकी शान्तिके लिये प्रयत्न करते हैं कि उसके धन और प्राण हरनिका हमारा विचार कदापि नहीं है , परन्तु हम राजकी कास आप ही लिया चाहते हैं । इसके सिवा और जो मनो-रथ ही अरजोंमें लिखा भेजें सो जिस रीतिसे हम योग्य समझेंगे हुका देंगे ।”

वह बहुधा हमसे कहा भी करता था कि अब समय आ गया है कि आप अपनी बाढगाहोका काम किया करें । इसलिये हमने जाना था कि वह हमारा काम करना सुन कर प्रसन्न होगा, परन्तु सुना गया कि उसने राज्यदृष्ट्यासे ४० वर्षतक हमारे घरसे अपने लालन पालन और पोषण हानिका उपकार भूल कर दुर्जनोका कहना माना जो उसको स्वामिद्रोह और कृतघ्नताके पापोंका भागी बनाया चाहते हैं । इसको न समझ कर उसने मिकन्दरके बेटे और तातारखाको उपद्रव करने पर उठाया है और राज्यमें विघ्न डालनेके लिये पजाव जानेका विचार किया है ।

इसको इन बातोंपर विश्वास तो नहीं होता क्योंकि वह हमारे घरमें पला है और हमारा हुक्म मानना उसका धर्म है ।

“अब हमारा यही कहना है कि जो लोग उसको वहकाते हैं उन्हें पकड़ कर हमारे पास भेज दे । हमने इन ५ वर्षोंमें सदा उसका उचित और अनुचित कहना किया है सो अब वह भी हमारा यह वाजबी हुक्म न टाले । हम उसके अपराध क्षमा कर देंगे और जो वह सेवामें आना चाहेगा तो उचित समय देख कर बुला भी लेंगे, क्योंकि अभी तक उसको पिछली सेवा और भक्ति हमारे हृदयमें है । हम चाहते हैं कि उसका नाम जो देश देशान्तरमें सुविख्यात हो रहा है स्वामिद्रोहमें निन्दित न हो जावे ।

यह हमने उसको चेता दिया है सो वह कभी कुछ और विचार न करे । परन्तु जो अब भी घमण्डसे नहीं मानेगा तो हम सेना सज कर आते हैं । उसको नष्ट कर देंगे । हमारे उद्दयका समय है और उसकी अस्तका । हम जीतेंगे और वह हारेगा । पछतावेगा और पकड़ा जावेगा । क्या वह अपने विनाश कालका अनुभव इस प्रत्यक्ष प्रमाणसे नहीं करता है कि इन ५ वर्षोंमें उसने अपने मनुष्योंकी कैसी कुछ पालना इस आशासे की थी कि कि बुरे दिनोंमें काम आवेगी और जिनको भाई और बेटा कहता

घा अभी जिनके अनग होनेका तैयारी गुमान भी नहीं करता था वे जो सब अभीसे उसको छोड़ गये हैं और जो थोड़े रह गये हैं वे भी एक एक करके हमारे पास चले आये और उसको अकेला छोड़ देगे । इति ।

इन पत्रको पढ़ कर खानखाना फिर भडके और बीकानेरसे पंजाबको रवाना हुए । जब पत्रपढ़ देके ( भिट डेके ) जिलेके पास पहुँचे जो उनके निज सेवक शेर मुहम्मद दीवानकी जागीरमें था तो मिरजा अब्दुरहीमको स्त्रियों और धन सम्पत्ति सहित उसके पास ( जिसे बेटेके बराबर पाला था ) छोड़कर आगे बढ़े । पीछेसे शेर मुहम्मद उनकी सब सम्पत्तिको दबा बंठा और उनके पुत्र कनचादिको बादशाहके पास ले गया । इस दुस्सह दुःखकी चोट बैरामखाके कलेजे पर और भी बैठव लगी और वे जब धारि आसके पास पहुँचे तो मिरजा अब्दुल्लाह सुगल बहा उनसे लडनेकी तैयार हुआ । वलीवेग धारि पर गया और हार कर आया । बादशाहने जब खानखानाका बीकानेरसे पंजाबको जाना सुना तो यह इरादा किया कि एक अच्छा लश्कर भेज कर उनका रास्ता रोक दे जिससे लाहोरमें जाकर कुछ बखेडा न करे । तब माहम अगाने अपने बेटे अहमदखाको तो रख लिया और शमशुद्दीन खा अत्तगाको बहुतसे अमीरोंके साथ खानखानाके ऊपर भेजा । और पीछेसे बादशाह भी २० जीकाद मंगलवार ( भादों वदी ७ संवत् १६१७ ) को दिल्लीसे रवाना हुए और हुसेन कुली खाको अहमदखा कोकाके हवाले कर गये ।

बैरामखा जालधरकी जाते थे कि शमशुद्दीन खाने गाव गुनाचूरमें पहुँच कर उनका रास्ता रोक लिया । बैरामखाने अपनी सेनाके दो विभाग करके वलीवेग, शाह कुलीखां मरहम, वलीवेगके भाई इसमाइल कुलीखां, हुसेन खा और याकूब सुलतानको आगे भेजा और दूसरे विभागको ५० हाथियों सहित अपने पास रखा ।

जिलहजिके (१) लगते ही बडाड़े हुई। पत्नी भी छल्लेमे बादशाही लगकर खानखानानी पगनी फाजमे गार गार भाग निकला। शमशुद्दीन खांके पान घोंडेमे आदमी गए थे कि इतनेमें खानखाना पोछेमे पाये। पाने एक दलदल पडतो थो जिमसे उनके चाली फस गये और शम्मा लक गया। इसलिये खानखानाने बाये हाथकी मुड कर भाग दहगा चाना। इससे इधर तो इनके आदमी इनका भागना समझकर बिखाने लगे और उधरसे शमशुद्दीनखाने धावा किया और भागा हुआ बादशाही लश्कर भी सन्हनकर आ गया। बैराम राना लौट गये।

दो कोस तक उनका पौछा हुआ। इससाइन कुला खा, अनी-वेग, हुमेनखा, याकूब हमदानो, अहमद बेग और दूनरे सरदार उनके पकड़े गये। धन सब लुट गया। उसमें एक जडाऊ कडा भी था जो खानखानाने मशहदमें (२) भेजनेके लिये १ दरोड रुपये लगाकर बनवाया था।

बादशाहने सरहदमें पहुँच कर इस फतहकी खबर सुनी। यहा मुनअमखा भी बहुतसे अमीरी और लश्करके साथ आकर १८ जिलहज रोमवार आसीज वदी ५ को बादशाहकी खिदमतमें हाजिर हो गया। बादशाहने उसको खानखानाका खिताब और वकालतका [महामन्त्रीका] कास दिया। फिर शमशुद्दीन खा अत्तगा (३) भी आ गया तो उसको खानआजमकी

१। जिलहज सन् ८६७ भादी सुदी २ सवत १६१७को लगा था।

२। मशहद खुरासानमें एक नगर है जहा शीआ जातिके मुसलमानोंका बडा धाम है और आजकल शाह ईरानके अमलमें है।

३। यह जीजी अण्णाका (बादशाहकी धायका) पति और खान आजम मिरजा अजीज कोकाका पिता था। तुर्कीमें धायकी गंगा धाऊकी अत्तगा और धा साईकी कोका कहते है।

( पटवई प्रदान की । बलीबग जखमोसे कैदमें मर गया । उसका सिर पूर्वके देशोंमें लोगोंको डरानेके लिये भेजा गया । इसका भी एक गहरा घाव बैरासखाके हृदयमें लगा क्योंकि यह उनका वहनोई था ।

फिर बादशाह तो २६ जिलह्जिज आसोज वदी १२।१३ को लाहौर पहुँचे और खानखाना सवालक पहाडमें राजा गणेशके (१) पास चले गये । राजाले उनकी तलवाडे के (२) किलेमें रख दिया ( जो व्याला नदीके खपर था ।)

बादशाह १० सुहरम सन ८६८ मङ्गलवार आसोज सुदी ११ को लाहौरसे कूच करके माछीवाडेमें ठहरे और फौज पचाडमें गयी तो वहाके हिन्दुओं और राजाओंने उसको रोका । इसपर लडाई हुई और सुलतान हुसेनखा जलायर बादशाही फौजमेंसे मारा गया । लोग उसका सिर काटकर खानखानाके पास बधाईयें ले गये । वे उसको देखकर बहुत रोये और बोले कि धिक्कार है मेरे जीनेको कि जिसके वास्ते ऐसे दीदार जवान सुफ्तमें मारे जाते हैं । पहाडके हिन्दू जो शरणागतकी रक्षा करना परम धर्म समझते थे उनकी बहुत सी हिम्मत बंधाते थे तोभी उन्होंने मुसलमानोंके हितसे उसी समय अपने गुलाम जमालखाको बादशाहके पास चसा मागनेके लिये भेजा । बादशाहने मेहरवानीसे मौलाना अबदुल्लाह सुलमानपुरी वगैरह

१। ये नादोनके राजा थे । नादोन जालन्धरके जिलेमें कांगडेके पास है । और अब भी एक छोटासा राज्य है जहाँके राजा नरेन्द्रपन्द्र है ।

२। कई इतिहासोंमें नल बाडा भी लिखा है यह कांगडेके राजाओंका था । नादोन और कांगडेके राजा दोनों कटोच जातिके राजपूत हैं । कांगडेके राजा जयचन्द अबलवा ग्राममें रहते हैं ।

काई पासके रहनेवालोंको उनके साथ भेजकर चुक्क दिया कि लाक खानखानाको ले आवे ।

खानखानाने फिर अर्ज करायी कि हजरतकी तरफसे तो मुझे विश्वास है परन्तु (१) चगताई अभीरी और सब कर्म-चारियोंका भय लगता है । इसलिये मुनअमखा आकर मुझे ले जावे तो मे हजरतको सलाम करके मुझे चला जाऊ और जबतक जीऊ तबतक वहीं रहू ।

बादशाहने हाजीपुरमें जो पहाडके नीचे मतलज और व्यासा नदियोंके बीचमें था डेरा करके मुनअमखा, द्वाजाजहा अशरफखां, और हाजीमुहम्मदखा सीसतानीको उनके लानेके लिये भेजा । जब वे उन घाटियोंमें पहुँचे तो जमींदारोंकी बड़ी भीड देखी जो अपनी मर्यादाके अनुसार मरने मारनेको तुले खड़े थे ।

वैरामखा किलेमें थे । मुनअमखा उनके पास गये । वैरामखा मुनअमखाको देखकर रोये । मुनअमखा तबली देकर उनको बाहर लाये । तब बाबा जम्बूर और शाहजुलीखा महरम उनका पल्लू पकड कर रोने लगे कि दगा है मत जाओ । मुनअमखाने कहा कि तुम आज रात यही रहो, कल हुशल सुन कर आ जाना । यह सुनकर वे भी खानखानाको छोडकर वहीं रह गये ।

बादशाही लश्कर पहाडके नीचे जमा खडा था । ज्यो ही

१ । चङ्गेजखाका एक बेटा जगताईखा था । उसकी औलाद चगता और जगताईखा कहलायी और चङ्गेजखाने तैमूरके पर दादाके बाप “बाराचार नोया” को चगताईखाका अतालीक बनाया था जिससे उसकी औलादका नाम भी चगताई हो गया और यही कारण तैमूरिया बादशाहोंके भी चगताई कहलानेका है ।



वैरासखां आते हुए दिखे तो बड़ा कोनाहल मचा । वैरासखां गलेमें रुमाल बांधे हुए बादशाहके पैरोंमें आ पड़े (१) और फूट फूटकर रोने लगे (२) ।

बादशाहने वैरासखांका सिर उठाकर छातीमें लगा लिया रुमाल गलेसे खोला आसू पोछे और दाहने हाथकी मामूली जगह पर बिठाया सुनअसखांको उनके पास बैठनेका हुक्म

१ । अकबर नामेमें खानखानाके उपस्थित होनेकी तारीख नहीं लिखी । केवल आवान और मुहर्रमका महीना लिखा है और आवान मास ३३ मोहर्रमकी लगा था । इस लेखेसे खानखानाका आना २३ से २८ मोहर्रमके बीचमें किसी दिन हुआ होगा जो कातिक बदी १० और सुदी १ से आगे नहीं सरक सकता क्योंकि सुदी २ से तो सफरका महीना लग गया था । जोधपुर राज्यके पुस्तकालयमें एक पुरानी ख्यात है जिसमें लिखा है कि वैरासखा मगसर बदी ७ को अकबर बादशाहके कदमीसे लगा । उन्होंने कहा कि मक्के जाओ । वह रवाना हुआ । पाटनमें एक पढ़ानने उनको मार डाला । मगसर बदी ७ को आवानकी २८ तारीख थी और सफरकी २१ । न मालूम यह इतने दिनोंका अन्तर क्यों है ।

२ । जिन दिनों यह मसविदा डुमरांवमें पण्डित नकछेदी तिवारीजीके पास था उनदिनों भूतपूर्व भारतमित्र सम्पादक खर्गीय बाबू बालमुकुन्दजी गुप्तका कलकत्ते जाते हुए तिवारीजी मिले । उस समय तिवारीजी ऊपर लिखा हुआ वृत्तांत पढ़ रहे थे जब खानखानाके रोनेका हाल पढ़ा तो तिवारीजीको भी रौना आ गया था और यह बात गुप्तजीने कलकत्तेमें पहुँचकर सुन्न लिखी थी तभीसे उन्हें इस ग्रन्थकी भारतमित्रके उपहारमें देनेका ध्यान हो गया था । अफसोस है कि न अब तिवारीजी हैं और न गुप्तजी ।

दिया और ऐसी दया मवाकी बातें कीं जिनसे वैरामखाने मुखकी सख्तिता जो लज्जा और अनुतापसे थी जाती गयी। फिर निज वस्त्र जो पहरे हुए थे उनको बख्शे और प्रसन्नता पूर्वक मक्के जानेकी आज्ञा दी। तबखून मुहम्मदशाहको राज्य सीमा तक पहुँचा देनेके लिये साथ किया। (१)

फिर बादशाहने (२) भी प्रस्थान करके सैन्यको तो दिल्ली भेजा और आप छड़ी सवारीसे शिकार खेलनेके लिये हिसार पधारे। यह प्रायः वही मार्ग था जिधरसे होकर खानखाना निकले थे। मानो यह उनका अन्तिम अनुसरण था।

खानखाना नागौर होकर गुजरातकी गये। तबखून मुहम्मद खां और हाजी सुहम्मदखा जिनको बादशाहने देहभानके लिये साथ भेजा था नागौरकी (३) सीमा तक उनको पहुँचा कर लौट आये।

वैरामखाने एक तिरस्कार करके हाजी मुहम्मदसे कहा

१। मुअत्त खिबुल तवारीखमें लिखा है कि मुअत्तखाने खानखानाको अपने डेरे पर ले जाकर डेरे तबखू और दूसरे साथ साज वाज सफरके तय्यार कर दिये। बादशाहसे भी खर्च मिला और सब छाटे बड़े अमीरोंने भी अपनी चढ़ाके अनुसार रोकड़ धन और माल जिसको तुर्क लोग चन्दूग (चन्दा) कहते हैं खानखानाको दिया। खानखाना दो दिन पीछे वहाँसे कूच कर गये।

२। अकबरनाममें बादशाहके कूच करनेकी भी तारीख नहीं लिखी है।

३। बादशाहका राजपू इधर उस समय नागौर तक था। नागौरकी सीमा हिसारकी तरफ पजाबसे मिली हुई थी और नागौरका प्रदेश मारवाडके राव मालदेवके अधिकारमें था जो स्वतन्त्र राठोड राजाधिराज थे।

दिया था ।

राजी मुहम्मदखाने उत्तरमें कहा कि जब तुमने रतनी गमिस्त्रि जतनाने पर भी वादशाहकी और उनके पिताको पाननाको भूलकर उनके सामने तलवार खिंची तो मैंने जो तुम्हारा सङ्ग छोड़ दिया, तो इसमें क्या बुरा किया ?

‘यह सुनकर वैरामखा लज्जित हो गये और फिर कुछ न बोले ।

इतना लिखकर अबुलफजलने अकबरनाममें लिखा है कि मैंने विश्वास योग्य पुरुषोंसे सुना है कि इस विषयमें वैरामखा सदा यथार्थ बातसे छिसियाता हो जाता था ।

वादशाहने हिशारसे तारीख ४ (१) रविउलअव्वल शनिवारको दिल्लीमें और १२ (२) रविउस्सानो सोमवारको आगरामें प्रवेश किया । और वहाँ जो भवन वैरामखाके थे वे सुनअमखा खानखानाको दे दिये ।

खानखाना नागौरसे गुजरातको जा रही थे कि जङ्गलमें उनकी पगडो बबूलकी झाड़में उलझ कर धरती पर गिर पड़ी । वे इसको अपशुक्ल समझ कर बहुत घबराये तब उनके एक सखाने हाफिजका (३) और पढ़कर उनके चित्तको शान्त

१। मगसर सुदी ६ स० १६१७ इस दिन शनिवार ही था और आजर महीनेकी ११ तारीख थी ।

२। पौष सुदी १३ सवत् १६१७ सोमवार तारीख ८ मास दे” सन ५ डलही ।

३। हाफिज फारसी भाषाका एक सुकवि ईरान देशके प्रसिद्ध नगर गीराजमें हुआ है उसकी मृत्यु सवत् १४३८के लगभग हुई थी ।

कर दिया। उस गैरका भावाने यहाँ जा जितना न मर्गो चाहते जङ्गल पार धरे (नरना) पहुँचते पाँटे तेरी गान्ना करे तो तू कुछ रोच मत कर।

उन तरह चलते चलते जब जेगामखा पाटनसे पाँचे जी पहिला नगर गुजरातका है और जिसको पण्डित नगरपाला (१) कहते थे तो बियाम करनेके लिये कुछ दिन ठहरे उनका कुटुम्ब भी सब साथ था।

उन दिनों मूसाखा (२) फौलाटी बहाका हाकिम था। उसके पास पठानीकी बहुत सी भोड हो रही थी उनमें सुवार कक्षा लोहानी भी था जिसका बाप माछीवाडेकी लडाईमें मारा गया था जो बैरामखाकी अफसरीमें हुई थी। उस द्वेषमे उस बावले पठानको इस समय बैरामखासे बैर लेनीकी सूझी और एक बात यह भी थी कि शेरशाहके बेटे सलीमशाहकी कश्मीरी औरत उस काफले अर्थात् पथिकीके समूहमें थी जो बैरामखाके साथ मक्केको जाता था और उस कश्मीरनके साथ उसकी एक लडकी भी थी जो सलीमशाहसे हुई थी और यह बात ठहरायो गयी थी कि बैरामखा उस लडकीकी अपने बेटेके वास्ते लेले। यह सुनकर भी पठान बिगड़े हुए थे।

बैरामखां नित्य प्रति पट्टनके वागो और मकानोको देखने आया करते थे। एक दिन नावमें बैठकर सहस्रलिङ्ग (३) तालाबका जलमहल देखनेको गये। वहासे आते समय जब नावसे

१। पाटनका असली नाम अनहसपुर पट्टन था। मगर मुसलमान लोग नहरवाला कहते थे।

२। यह गुजरातके बादशाह मुजफ्फर दूसरेका नौकर था।

३। यह तालाब गुजरातके राजाधिराज विजाराज जयसिंह खोलकीजा बनाया हुआ है जो सवत् ८८८ से १०५३ तक राज सिंहासन पर बिराजमान रहे थे।

उतरकर सवार होने लगे तब सुवारकखा ३०,४० पठानों सहित ताशाबकी तट पर आया और ऐसा जाहिर किया कि मिलनेकी आया है । खानखानाने इन सबको बुला लिया सुवारकखाने जाते ही कुरा निकाल कर बैरामखाकी पीठमें ऐसा सारा कि छातीसे पार हो गया । फिर और एक पठानने मस्तक पर तलवार मारकर उनका काम पूरा कर दिया । उनके साथी इस हत्यासे घबराकर भाग गये और उनकी लोथ वैसी ही धूल और खोहमें लिपटी पड़ी रही । निदान कई फकीरोंने उठाकर शेख हिसानकी कबरके पास गाड़ दो जहासे सन ८८५ में (१) मशहदको भेजी गयी ।

खानखानाका वध १४ जमादिउलअव्वल भगुवार सन ८६८ साध सुदी १५ मवत् १६१७ को हुआ और जब यह खबर बादशाहको पहुची तो उन्होंने भी बहुत शोक और सन्ताप किया ।

इस स्थान पर अबुलफज्जने लिखा है— “मैं नहीं जानता हूँ कि यह सारा जाना उसके पिछले कर्मों का दण्ड था या अभी उसका चित्त कुविचारोंसे शुद्ध नहीं हुआ था या उसकी मनोकामना सिद्ध हुई [ जो शर्हीद होने अर्थात् तरवारसे मारे जानेकी थी ] या ईश्वर रूपाने उस सज्जन पुद्गलकी पश्चात्तापके बोझने हलका कर दिया ।

“सच तो यह है कि बैरामखा वास्तवमें साधु और सुशील था । परन्तु कुसंगसे जो मनुष्यके वास्ते बड़ा पाप है वह पहिले तो अपनेकी अच्छा समझने लगा फिर खुशामदोंसे उसका उन्माद बढ़ता गया क्योंकि जो कोई अपनेकी अच्छा समझता है उसके पास खुशामदियोंका जमघटा हो जाता है और जो अपनी झूठी भी प्रशंसा खुशामदमें सुनता है तो उसे सच मानकर

आत्मज्ञावी हो जाता है। इसीसे वैराग्यवांको यह तुरा दिन आगे आया। बादशाहका यथार्थ रूप जो वचपन और राजकाजमें प्रवृत्त न होनेकी श्रोटमें दिखा हुआ था उसको दृष्टिमें नहीं आया। वह दूसरीकी दोष दृढ़नेमें अपने अवगुण न देख सका। उसका घर खुशामदियोंसे उतना नहीं बिगड़ा कि जितना उसके बहिष्कीन मित्रों और सन्धियोंसे बिगड़ा, पर यह भी उसका मौभाग्य था कि उसका प्राणांत हातवृत्तामें न हुआ। जीते जी ही उसके कर्मोंका प्रायश्चित्त हो गया था। जब कि उसने दयालु बादशाहकी सेवामें उपस्थित होकर उनको राजी कर लिया था।”

अन्य इतिहास वेत्ताओंने वैराग्यवांको बहुत महिमा लिखी है सुल्ता अब्दुल कादिरके मतमें वे “बड़े बुद्धिमान सत्यवादी गुनीन और नम्र और सत्यरूपोंके भक्त थे। दूसरी बार हिन्दुस्थान उनीने पराक्रमसे फतह हुआ था।

वे मिरजा जहांगीरके वयज थे। पहिले बाबर बादशाहके पास रहे। फिर हुमायू बादशाहसे ज्ञानखानाका पद पाया। अकबर बादशाहने उनकी पदवीमें खानवावा और बढ़ा दिया था, परन्तु दुश्मनोंने बादशाहका मन उनसे बिगड़ दिया जिससे वह सब बखेडा हुआ।

वे आप भी विद्वान थे और विद्वानोंका आदर भी परा करते थे। उनकी दीर्घ सुन कर दूर दूरके विद्वान उनकी दरबारमें आते थे और उनकी उदारतासे निहाल होकर जाते थे।”

“ज्ञानखाना काव्यके रहस्यको भी प्रवृत्ति समझते थे। उन्होंने उस्तादोंकी कवितामें गहरे दोष निकाले हैं और “दरुलिया” नाम एक ग्रन्थमें सफर किये हैं। बात बनानेमें भी वे बहुत कुशल थे। एक रात हुमायू बादशाह उनसे कुछ सभाषण कर रहे थे कि उनको ज्वर आ गयी। बादशाहने श्लाकर कहा कि “हा वैरम मैं तुम्हारे कह रहा हूँ” उन्होंने भाट समूहकार कहा मेरे बादशाह। मैं हाजिर हूँ, परन्तु मैंने सुना है कि बादशाहोंकी सत्यरूप

पाखीजी, मत्पुरुषोंके समस्त मनको और पंडितोंके समस्त जित्ताको दण्डमें रखना चाहिये। सो इजरात तो बादशाह की है मत्पुरुष भी हैं और पण्डित भी हैं। इसलिये तो इस दुविधामें पड़ गया था कि अब मैं किस दिशकी दण्डमें रखूं, बादशाह यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए।

कंधारमें एक रात शाह “अबुल फत्ही” ने जो हुमायूँ बादशाहके छातापानीमेंसे था शराब पीकर “श्रीयामत” के (१) एक सुसलमानकी (२) सतबेपसे मार डाला। उसके घरवालोंने बादशाहसे पुकार की। बादशाहने शाहको बुलाया तो वह उगी सुपनम नका काला सलमान तो जामा पहिन कर और जिस छुरीसे मारा था उसको उस जेलमें छिपाकर लीले लूटता हुआ बड़ी ठसकसे प्राया और तारनेने सुद्धर गया। तब बैरमखाने एक और पट्टा जिसका आकार यह है,—

उसकी (नायकाकी) बिसरी हुई अलकावली निशाचरोखा (बोगेजा) पता देती है और इनका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि इनके अपने पट्टे नीचे दीपक छिपा रखा है।

बादशाहने इस शैर्की बहुत सराहा परन्तु उसके भावार्थके अनुसार कुछ निर्णय उन निरपराधोंपरि जानिका न किया।

बैरमखानाकी फारसी और तुर्की कविताका दीवान (संग्रह) प्रसृत है और ये हुमायूँ बादशाहको सगतासे जो बड़े ज्योतिषी थे ज्योतिष विद्याका भी ज्ञान मंथ थे।

१। सुसलमानोंमें दो बड़े पन्थ थीया और मुन्नी हैं जिनमें बड़ा सतसिद्ध है थीया ईराकमें अधिक है और सुन्ना सब सुलकोंमें भीठानोंसे अधिक है वे थीयाको रफ्तजी कहते हैं जिसके साने पतितक है।

२। अब्दररनामें इसका नाम शिरगनी लिखा है। यह ईरा नदी शाह तुहमासका नीजर था। यह हुमायूँ बादशाह कंधारमें

तवारीख "तबक़ात अकबरी" में (१) लिखा है कि बैरासखा खानखानाके नौकरीमें २५ आठमी पात्र हजारके मनसबको पहुँचकर नौबत और निशानके धनी हो गये थे ।

सुआम्बिलउमरामें लिखा है कि बैरासखा विद्या, भलाई, दान धर्म और कर्मसे युक्त, न निमि निपुण, शूरवीर, कार्यकुशल और दृढ हृदय थे । उन्होंने तैमूरके घरानेके बड़े बड़े उपकार किये थे । ऐसी झलचलके समयमें जब कि राज्य कुछ स्थिर न हुआ था बादशाह स्वर्गवारी हुए और शाहजादा अभी छाटे और नादान थे, पजाबके सिपाय सब देश हाथमें जाते रहे थे, पठान बड़े जोरशोरसे बादशाहोंका दावा करते थे । चंगतार्ई अमोर जो हिन्दुस्थानमें रहना पसन्द नहीं करते थे काबुलकी लूट जानकी मलाह देते थे और बादशाहोंके अधिपति मिरजा सुलेमानने अवसर पाकर काबुलमें अमल कर लिया था । परन्तु बैरासखाकी दृढता और उद्योगसे बिगडो हुई बात फिर बनी और राज्य भी स्थिर हुआ । इधर अकबर बादशाहने भी बड़े मान सम्मानके साथ पूरा अधिकार राजाके कानोंका उनकी दिया था और उनसे शपथ ले ली थी कि जो उचित और योग्य हों वही करे ; न किसीका

जाकर खानखानाके मेहमान हुए थे तो शेरशही शाहसे कुछी लिये बिना ही उनके पास चला आया था । अबुलमुआली जिसका भगज बादशाहके बहुत पास रहनेसे चल गया था । दरबारमें कहता था कि मैं इस राफजीको मार डालूँगा । बादशाह तो इस बातकी दिल्लगी ही समझते रहे और उसने एक रातकी बैगुनाहका खून ही कर डाला । बादशाहको यह बात दिलमें तो बहुत बुरी लगी मगर मोहब्बतसे कुछ न कह सके ।

१। यह ग्रन्थ बख्शी निजामुद्दीनने अकबरशाहके समयमें बनाया है । इसको तवारीख निजामी भी कहते हैं । मुल्तखि-हुष तवारीख इसीका सारांश है ।



पक्ष करें और न किमीसे डरे परन्तु ज्यों ज्यों खानखानाका ऐश्वर्य बढ़ा और वे अपने प्रतिष्ठा किमीको कुछ नहीं समझने लगे त्यों त्यों शत्रु भी बढ़ने लगे जिन्होंने बहुत कुछ झूठ सच लगा बुझाकर बादशाहका सिजाज बिगाड़ लिया । तो भी बादशाहका मनशा खानखानासे बिगाड़नेकी नहीं थी और न खानखाना प्रतिकूल होना चाहते थे परन्तु दोनों आग के चुगलखोरोने दोनों आग आग लगाकर इधर बादशाहकी भडकाया उधर खानखानाकी इस बात पर जमाया कि प्रतिष्ठ पूर्वक मर जाना अप्रतिष्ठित होकर जीनेसे उत्तम है और यही कारण उनके नष्ट हो जानेका हुआ क्योंकि अहंकार और राजदृष्टि मनुष्यका नाश करदेती है ।

इस प्रकार थोड़ा बहुत हताश वैरामणाकी जोबनका जो इतिहासकी पुस्तकोंमें मिला यहा लिखा गया अब केवल उनकी उदारताका वर्णनरह गया है सो भी इस यहा किये देते हैं और आगे चलते हैं ।

मुत्तखिवुल तवारीखके कर्ता मुहम्मद ल कादिरने जो उनका समकालीन था उनकी और अमसुद्दीनखाकी लडाईका हतांत लिख कर कहा है “अजब यह है कि इस वर्ष ( ८६७ स दत १६१६में ) खानखानाने हाशमी शाहरकी एक गजल पसन्द करके अपने नामसे प्रसिद्द की और उसके पुरस्कारमें उसको ६०००० टके (१) देनेका हुक्म देकर उससे पृच्छा कि क्यों इतने दाम

१। पहिले चलाना सिक्कीक' टके कहते थे चाहे चांदीके हों चाहे तांबेके उस समयका कच्चावतके अनुमान अब भी धनवान पुच्छको सारव डमें टकीवाला कहते हैं जैसा कि हिन्दुस्थानमें पसावाला और रुपया बना बोलते हैं । अकबरके समयमें दामका चलन हुआ ४० दामक १) हात या राजपूतानेक लुटेरे घापेंसकी समझौतोमें मानदारीकी दासोदर कहकार लुटनेकी

ठीक हैं ? उसने कहा कि ६० कम (१) । खानखानाने ४० हजार और दिनाकर पुर १ लाख कर दिये ।

इसमें तब १ लाख टके खानाना जानी होनेपर भी उसकी सभा में रामदास लखनवोका (२) दिये जो सन्नीस जान जादाहके कजावतोंमेंसे था और जिसमें गानविद्याके विषयमें हमरा तान सेन कह सकते हैं । क्या सभा में क्या एकान्तमें यह निरन्तर खानखाना के पास रहा करता था और उसने गानके प्रभावसे सदा खानकी आखोंमें आसू आ जाया करते थे ।

ऐसे हो १ लाख टके जुम्हारखा वटाऊनीको एक फारसी कवितावी, रौझमें दिये थे जो उसने उनके नाम पर बनायी थी । यह भी पहले तो मलीमशाहके अमीरोंमें नौकर था और इसको उससे अछड़ा डहा और तोग (३) भी मिला था मगर फिर मिपाहगरी छोड़कर घोड़ी सी जीविका पर सन्तोष कर बैठा था खान खानाने जुम्हारखाको यह इनाम नहीं दिया था किन्तु सरहिन्द हीके (पजावके) सारे जिलेका कलकटर भी बना दिया था ।

चेष्टा करते थे, और लोग तो यह जानते थे कि ये भगवतका भजन कर रहे हैं और वे टकोका भजन करते थे ।

१। कम शब्द यथा शेष है क्योंकि उसका अर्थ न्यून भी है और अक्षरोंके हिसाबसे ६० भी है । फारसीमें अक्षरोंकी गिस्ती भी अक्षरोंसे होती है । १० के वास्ते काफ (क) और ४० के लिये मोम (म) लिखते हैं । इन यत्नसे हाशमीने दानो बातें ही जता दी थी अर्थात् ६० भी और कम भी ।

२। यूसुफाजीके पिता थे । इन वि यमें हम विद्वान् पृथक् खुरदामजाकी जीवनीमें लिख चुके हैं ।

३। यन् एत नरदारी सूचक चिह्न माही सरातवके समान दगाहो जा दिया होता था और भण्डोंके ऊपर बाधा जाता था ।

खान-दानी पानकी नजरसे तिनकीने भी कुछ भी बर  
मिला। इन तिनकीने जो अब पानी पर नभर आये हैं। (१)

खानखानाके खासिदाहों निवर्तीका परिणाम।

खानखाना लुगा पीर सुहन्मटकी बाटगाहने रंना देकर सालवे  
पर भेजा था। उराने वह देश विजय करके वहा घोर हुकूम  
किये। और तो क्या केवल यह देखनेके लिये कि किसमें कितना  
रक्त निकलता है और किसके प्राण शीघ्रतासे और किसके कठि-  
नतासे छूटते हैं सैकड़ों सन्तुष्टोंके सम्मुख छेदन कराये और  
बड़ी निर्दयतासे उनके मरनेका तमाशा देख देखकर अपने कठोर  
चित्तको प्रसन्न किया। फिर मानवसे खानदेश जीतनेकी गया।

वहाने लडाईं हारकर भागा और नर्मदामें डूबकर २० मर गया।  
खानखाना के १ वर्ष पीछे ही अपने पापोंके फलको प्राप्त हुआ।

शिखासवातो और सुहन्मटकी बाटगाहने सुह नहीं क-  
गाया जिसने वह समानमें [पजावमें] जा रहा। जब बङ्गाल और  
विहारके असौर बाटगाहसे बदले तो उसने मसानिके नायब  
फौजदारको न्योता देकर भोजन करानेके सिमसे बुलाया। जब  
वह आया तो तोरको भाल विसने लगा और फिर वही तोर

१। इन अन्तिम लेखसे यह ग्रन्थकर्ता खानखानाके पीछेके  
अमीनों पर कटाक्ष करना है और उन्हें दातव्यतामें उनकी अपेक्षा  
बहुत कुछ बताना है। अर्थात् अबके असौर तिनकीने समान  
हलके हैं और जैसे तिनका छोडेले पानीमें भी ऊपर रहता है  
वैसे ही ये भी छोडो को सम्पत्ति पाकर भी अपना अलगापन  
प्रकट करते हैं।

२। यह घटना सन् १६६६में ( सन् १६१६में ) हुई उसकी  
साथ बहुतसे आदमी थे परन्तु किसीने उसके निकलनेकी का-  
शिश नहीं की। अकबरनामा दफातर २ पृ० १६५।

कामानमें खेचकर उसकी छातीमें मारा । उसके लगते ही वह  
ता सर गया और इसने उसका सब धन माल लेकर उस प्रातमें  
लूट मार मचा दी । निदान वह सन् ८६८में ( मृत्यु १६१८।१८में )  
खानानेके फौजदारके हाथसे मारा गया ।”

अभिसानी शैख गढ़ाईने भी कुछ उन्नति नहीं की । जो पद  
खानखानाने दिया था उसको भी खो बैठा और कोई अधिकार  
उसको न मिला । वह सन् ८७६में ( सन् १६२५में )  
मर गया ।”

# खानखानावाला ।

---

## दूसरा भाग ।

---

### पहला खण्ड ।

नवाब अबदुर्हीस खा खानखानाकी माता ।

खानखानाको मा (१) जमाल खा मेवातीकी बेटी थी । जब हुमायूँ बादशाह शेरशाह पठानसे लडाईमें हारकर ईरानको गये थे तो वहाके शाह तुहमास सफवीने उनसे कहा था कि आपने हिन्दु-स्थानके जमीन्दारीसे रिश्तेदारी नहीं की और अजनबीसे बने रहें, इसीसे आपके पैर नहीं जमे । अब जो फिर वहांकी बादशाही आपके हाथ आ जावे तो दो काम जरूर करना । एक तो पठानोंको जहा तक बने हुकूमतसे अलग करके व्यापारमें लगाना, दूसरे वहाके राजाओं और जमीन्दारीसे रिश्तेदारी करना, इससे आपका राज्य बना रहेगा ।

हुमायूँ बादशाहने जब दूसरी बार दिल्ली फतह की तो हुसैन खा मेवातीको दिल्ली सभलमें हिन्दुस्थानके सब जमीन्दारीसे विभिन्न धनवान बलवान और ऐश्वर्यवान देखकर उसके चचा जमाल खाकी बही बेटीले तो अपना विवाह किया और छोटीसे वैराम

---

(१) जमाल खा अलावल खाका बेटा और हसन खा मेवातीका भतीजा था । हुलगखाका कई पीढोसे अलवरमें राज्य था । वह १०००० सवारों सहित महाराना सागाजीके साथ होकर बाबर बादशाहसे लडा था और काम आया । ये लोग अललमें यादव राजपूत थे और मुसलमान होनेके पीछे खानजादे कहलाने लगे थे । अब भी बहुत लोग इस घरानेकी अलवर राज्यमें हैं ।

खाका करा दिया । फिर तुरत ही उनको शाहजादे प्रकाशके साथ पंजाबमें सूर पठान सिकन्दर शाहका उपद्रव मिटानेके लिये भेजा । वे वेगमको भी साथ ले गये थे । परन्तु जब हुमायूँ बादशाहके मरे पीछे अकबर बादशाहको लेकर हेमू टूमरसे लडनेको दिल्लीकी ओर गये तो वेगमको लाहौरमें भेज दिया था ।

### खानखानाका जन्म ।

वर्ष १४ सफर ८६४ (१) गुरुवार "दे" महीनेकी छठी तारीखको इनका जन्म हुआ । उस समय बादशाह दिल्लीसे पंजाबको आ रहे थे । रास्तेमें यह वधाई पहुँची जिसपर उन्होंने प्रसन्न होकर बालकका अबदुर्रहीम नाम रखा और अपनी दिग्विजयकी सिद्धिके लिये, जिसके वास्ते पंजाबको आते थे, इस सुखद समाचारको एक शुभ शकुन समझा ।

वैरासखाने बड़ा उत्सव किया और ज्योतिषियोंने जन्मपत्नी देखकर कहा कि यह बालक बादशाहसे शिचा पाकर उच्च पदको पहुँचेगा और स्वामिभक्त होकर बड़े बड़े कार्य करेगा । ऐसे ही सुसवाद शकुनियोंने भी कहे जिनका पहिला परिणाम यह नि-  
काला कि बादशाहके जालन्धरमें पहुँचते ही शिकन्दर शाह सूर जो पंजाबमें अडा हुआ था, हिमाचल पहाडमें भाग गया ।

बाल्यावस्थामें विपत्ति और बादशाहका प्रतिपाल ।

जब वैरास खां बादशाहसे विगडकर वीकानेर गये और वहाँसे पंजाब आये तो मिरजा अबदुर्रहीमको अपने अन्तपुर और

(१) माह बदी १ सवत् १६१३, परन्तु खानखानाकी जन्म-पत्नीमें जो आगे लिखी जावेगी उनकी जन्म तिथि मगसर सुदी १४ सवत् १६१३ सोमवार है । न जाने क्यों, दोनोंमें इतने दि-  
नोंका अन्तर है । दोनों तिथियोंके साथ दिन भी है और पचा-  
इसे दोनों ही सही है । परं जन्म तो २ बार नहीं हो सकता । इसलिये कौन तिथि सही है और कौन नहीं इसका निरूपण हम आगे करेंगे, जहाँ इनकी जन्मपत्तियां मिलेंगे ।

घनमाल सहित पतरहंदेके किलेमें शेर मुहम्मदके पास छोड़ गये थे। उसने उन सबको पकड़कर बादशाहके पास भेज दिया। पर जब वैरास खां बादशाहके पास आकर मक्केकी विदा हुए तो इनकी भी सकुटस्व साथ ले गये थे। गुजरात पहुँचकर जब वैरास खां सारे गये, तब वे केवल ४ वर्षके थे। मुहम्मद अमीन दीवाना, जो नामका तो दीवाना था और काम स्यानोंकीसे करता था, बाबा जम्बूर और खाजा मलिक (१) इनकी पाटणसे ले निकले और सारे रास्ते पठानोसे लड़ते भिड़ते अहमदाबादमें पहुँचे। वहाँ ४ महीने रहे। फिर दरगाहकी (२) रवाने हुए। जालोरमें (३) बादशाहका फरमान मिला जो इनके नाम था और जिसमें लिखा था कि यहाँ आजाओ हम पालन करेंगे। इससे वे लोग प्रसन्न होकर सन् ८६८के (४) लगते ही इनको बादशाहकी शरणमें आगरे ले आये। बादशाहने इन्हें होनहार और चेष्टावान् देखकर अपने पास रख लिया। उस समय दरवारमें इनके बहुतसे शत्रु भरे हुए थे। ती भी इनको पालने पोसने सिखाने पढ़ाने और सभ्यता सिखानेमें कमी नहीं हुई।

मिरजा खांकी पदवी और विवाह ।

बड़े होनेपर बादशाहने इन्हें मिरजा खांकी पदवी प्रदानकी और अपनी धाय जीजी (५) अंगाकौ वेटी माहबानूसे इनका

(१) वे तीनों खानखानाके नौकर थे।

(२) राजद्वार (३) जालोर अहमदाबाद गुजरातसे उत्तर दिशामें दिल्ली और आगरेके रास्तेपर एक पुराना शहर है जो अब तो जोधपुर दरवारके अधिकारमें है और उस समय एक नवाबके पास था जिससे फिर जोधपुर वालोंने ले लिया।

(४) सन् ८६८ आश्विन सुदी २ स० १६१८ की यानी ११ अगस्त १५६१ ईस्वीकी लगा था।

(५) जीजी अंगाने बादशाहको दूध पिलाया था।

विवाह कर दिया । इस सम्बन्धमें इनका भी बादशाहके बगनिने वही मेल जोल हो गया जो इनके पिताका था और एक बलवान् थोक था साइयीका इनका पक्षपाती बन गया ।

गुजरात जाना और पाटनको जागीरमें पाना ।

जब इनकी अवस्था १६ वर्षकी हुई और भाग्योदयका समय आया तो बादशाह गुजरात (१) फतह करनेको चढ़े और वे भी उनके साथ गये २६ आबान (२) सन् १७ ता० १ रजब सन् ८८० को बादशाहके डेरे पाटन जिले गुजरातमें हुए तो उनको बैराम खाकी याद आयी ये सेवामें उपस्थित ही थे । इनसे वृद्ध मन्न वृत्तान्त बैरामखाके बारे जानिका पूछा और छपा करके कहा कि हमने पट्टन मिरजाखाको दी । परन्तु अभी इसके पाम उसके सरक्षणका साधन नहीं है । इसलिये सय्यद अहमद खा (३) यहाका रक्तक रहे । पाटन गुजरातका पहिला परगना था जो बादशाहके कब्जेमें आया और यही इनकी पहिली जागीर भी थी जो बापके पोछे मिली । क्या ईश्वरकी माया है कि जिस धरती पर इनके बापका लहू गिरा था और जहा इनकी जानपर आ बनी थी, अब वहीसे इनके भाग्योदयका प्रारम्भ हुआ ।

वहा जो शोक इनके मनमें बापकी याद आने या उनकी कबरको देखनेसे उत्पन्न हुआ होगा उसका अधिकांश इस सौभाग्यमें शान्त हो गया होगा ।

फिर गुजरात जाना ।

बादशाहने पट्टनसे जाकर गुजरातकी राजधानी अहमदाबादको फतह किया और खान आज़म मिरजा अजीजको जो इनका साला

(१) गुजरातमें ग्यारो बादशाहत टाक जातिके सुसलमान राज-पूतोंकी थी । उस समय वहाका बादशाह मुजफ्फर सुलतान था ।

(२) अगस्तन सुदी ३ स० १६२८ शनिवार ।

(३) यह भी एक व दशाही अमीर था और उस चढ़ाईमें मिला था ।



था, २३ खरदाद (१) सन् १८ ता० २ सफा बुधवार सन् ८८१ को (२) राजधानीमें [ फतहपुर (३) सीकरीमें ] प्रवेश किया। ये भी साथ थे। फिर गुजरातियोंने अवसर पाकर अहमदाबादको आ घेरा। बादशाह अपने धार्माई खान आजमको वचानेके लिये १० शहरैवर (४) सन् २४ रवी-उल-आखर सन् ८८१ रविवारको सांडनियोपर सवार होकर फिर गुजरातको गये और मारामार ८ दिनमें वहां पहुँचे। ये भी उस दौड़में साथ थे। बादशाहने जब लड़नेके वास्ते सेनाके व्यूह रचे तो इनको बीचके व्यूहमें नियत किया।

इस लड़ाईमें भी बादशाहको जीत हुई। इनका भी अभ्यास सग्राम सख्त्यी कासीमें बढा; क्योंकि एक वर्षमें दो बार ऐसी बड़ी लड़ाईमें सम्मिलित रहनेका अवसर मिल गया था।

### गुजरातकी सूवेदारी।

पाटनकी जागीर ऐसी शुभ घड़ी और शुभ मुहूर्तमें इनको मिली थी कि उसके प्रतापसे दो वर्ष पीछे ही समग्र गुजरातमें इनका अधिकार हो गया। कारण उसका यह हुआ कि खान आजम बादशाहका हुक्म कम मानता था। इसलिये बादशाहने उसको गुजरातकी सूवेदारीसे दूर करके इनको सन् २१के (५) आरम्भमें अजमेरसे

१। प्रथम आषाढ़ सुदी सवत् १६३० बुधवार २३ खरदाद सन् १८ जून ३ सन् १५६३ ई०।

२। मशहर राजधानी तो हिन्दुस्थानकी दिल्ली है पर अकबरने फतहपुरको जो सीकरीके पाम है उन दिनोंमें राजधानी बना रखा था।

३। अहमदाबादसे ५०० मील पूर्य और उत्तरके कोनमें।

४। भारी बटौ ११ सवत् १६३० रविवार १० शहरैवर सन् १८।

५। सन् २१ इस्लाही चैत सुदी ११ सवत् १६३३ की लगा था।

वजीरखां मीर अलावुद्दौला, मीरट मुजफ्फर और प्यागटाम सहित गुजरातमें भेजा। खेदारी तो इनके नाम हुई, परन्तु अभी तक इनकी राजकाज करनेका काम नहीं पडा था; इसलिये काम वजीरखांको सौंपा गया। अलावुद्दौला अमीन, प्यागटान दीवान और मुजफ्फर वरुणी हुआ।

मेवाडमें २ वर्ष रहना।

कुछ महीने पीछे बादशाहने अजमेर आनेका विचार करके इनको भी बुलाया। हुकूम पहुंचते ही वजीरखांको चार्ज देकर गुजरातसे चल दिये और पहिले हां पडाव पर बादशाहके चरण कमलोंमें उपस्थित होकर साय साय अजमेर (१) आये और फिर साथ ही मेवाडके (२) दौरमें भी गये। उस समय महाराणा प्रतापसिंहसे लडाई हो रही थी। वासवाडे (३) पहुंच कर “दे” महीनेकी १५ तारीखको (४) बादशाहने इन्हें भी उस लडाई पर भेज दिया। ये दो वर्ष तक मेवाडके पहाड़ोंमें टोंड धूप करते रहे। परन्तु पूरी विजय न होनेसे बादशाहने शहजाजखांको (५) फौजका अफसर करके भेजा। ये उसके साथ कुम्भनमेर पर गये। २४ फरवरदीन (६) सन् २३ को वह दुर्गम दुर्ग फतह होगया। वहासे धावा करके इन लोगोंने गोगूदा और उदयपुरको भी ले लिया।

(१) बादशाह ५ महर सन् २१ को कूच करके १६ को अजमेर पहुंचे थे। ५ महर आसोज बदी ८। १० सवत् १६३३की थी और १६ महर आसोज सुदी ६ शुक्रको।

(२) बादशाह ३१ महरकी मेवाड रवाने हुए थे। उस दिन कातिक बदी ६ थी और वार शनि था। (३) वासवाडा एक जुदा राज्य गड़लोतीका मेवाडकी पूर्व और दक्षिण सीमा पर है।

(४) पौष सुदी ६ बुधवार (५) शहजाजखां कम्बोह जातिका सुसलमान और मीर वरुणी था।

(६) वैशाख बदी १२ वृहस्पतिवार सवत् १६३५।

जब इस तरह मेवाडमें बादशाही अधिकार जम गया तो फौज लौट आयी और उसके साथ वे भी बादशाहकी सेवामें आ गये (१)।

सीर अर्ज होना ।

सन् २५ के प्रारम्भमें [२] बादशाहने इन्हे सीर अर्जकी महत् पद पर नियत किया। सीर अर्जका यह काम था कि जो लोग बादशाहसे अपनी दौलत दशा कहने आवे उनका हतान्त बादशाहकी सेवामें अर्ज किया करे और जो उसका उत्तर मिले वह जाकर उनको कह दे। अब तक यह काम किसी एक मनुष्यके अधीन न था। प्रति दिन एक सच्चा और सुजान व्यक्ति नियत हो जाया करता था। परन्तु अब बादशाहने अधिक भीड़, काम बहुत लोभका, अति प्रचारका और दरबारमें पहुँचना कठिन देख कर यह विचार किया कि किसी कुलीन और मझे सेवकको, जो स्थायी न हो, यह बड़ा काम देवे जो अपने और परायीको समदृष्टिसे देख कर उनके मनोरथ निवेदन किया करे और अवसर पाकर उत्तर ले लिया करे। यदि ठीक उत्तर न मिले तो खिन्न न होकर फिर प्रार्थना करनेका साहस करे। ये सारे गुण इनकी चेष्टासे प्रकट थे, इसलिये बादशाहने इन्हींको

(१) शहजाजखा ५ तीर सन् २३ की मेवाडसे गाव थारा इलाके पजाबमें बादशाहके पास पहुँचा था उस दिन आषाढ सुदी १३ सवत १६३५ मङ्गलवार था।

(२) सन् २५ इलाही २४ मुहर्रम सन् ८८८ शुक्रवारको आरम्भ हुआ था, उस दिन चैत वदी ११ सवत १६३६ थी। अकबरनाममें यह नहीं लिखा है कि किस दिन इनको वह ग्राम मिला था; परन्तु पूर्वापर मिलानसे ऐसा जाना पड़ता है कि चैत वदी ११ के पोछे वैशाख सुदी ११ तक किसी तिथिको मिला होगा।

यह काम दिया जिससे इनके ऐश्वर्यमें और वृद्धि हुई और राजलक्ष्मीका प्रकाश बढ़ा ।

अजमेरकी सूबेदारी ।

८ महीने पीछे फिर इनके और बढ़तीके दिन आये तो अजमेरकी सूबेदारी इनको मिली जो दस्तमखाके मारे जानसे खाली हुई थी । बादशाहने नीति शिक्काकी बहुतसी बातें कर इनको अजमेर भेजा और रणथम्भौरका प्रमिउ जिला जागीरमें दिया जिससे अब ये देशपति और गढ़पति हो गये (१) ।

दरबारमें उच्च पद ।

सन् २६ में (२) ये अजमेरसे दरबारमें आये हुए ये कि २४ दे की (३) बादशाह शिकारके लिये नगर चैनको (४) गये । ३ बहसनको (५) तसलीसके (६) समय बखशियोने इनको शहजाज-खाकी ऊपर खड़ा किया । इस पर शहजाजखा बुरा मान कर जाने लगा तो बादशाहने शिक्का देनेके लिये उसकी राय साल दरवा-

( १ ) अजमेरमें नियत होनेकी मितो भी अकबरनाममें नहीं लिखी है ; परन्तु दस्तमखा १० आवान सन् २५ को कछवाहे राजपूतोंकी लड़ाईमें जखमी हो कर दूसरे दिन मरा था । इस-लिये कह सकते हैं कि अजमेरकी सूबेदारी इनको आवान या थाजरके महीनेमें मिलो होगी और १० आवान सन् २५ बगसर वदी ११ स वत् १६३७ को थी ।

(२) सन् २६ इलाही चैत सुदी ७ स वत् १६३८ को लगा था ।

( ३ ) पौष सुदी ११ व० स वत् १६३८ ।

( ४ ) मगर चैन फतहपुर सिकरीके पास एक 'शहर अक-बर बादशाहने बसाया था जो उनके जीते ही समय उजड़ गया ।

( ५ ) माघ वदी ३ व० संवत् १६३८ ।

( ६ ) दरबारमें सलाम करना ।

५ गीके (१) पहरमें रख दिया। इस बातसे इनका अधिक प्रताप बड़े बड़े असीरोंके मनमें खटक गया और उन्होंने जान लिया कि बादशाह इनको और भी बढ़ाना चाहते हैं।

राज सभामें छोटे छोटे जीवोंके न पकड़े जानेका प्रस्ताव ।

१ फरवरदीन (२) सन् २७ इलाहीकी बादशाहने नये दिनके उत्सव किये। महद्राजसभामें विराजमान हो कर यह भाषण किया कि प्रभुता वास्तवमें ईश्वरकी ही फबती है, दीन मनुष्यकी क्या सामर्थ्य है कि जो प्रभु बननेकी चेष्टा करे और अपने सजातियोंकी दास बनावे। यह कह कर गुलामोंकी जो कई हजार थे, दासत्वसे मुक्त कर दिया और कहा कि जबरदस्ती पकड़े हुएोंको गुलाम कहना और उनसे गुलासी कराना कहांकी सभ्यता है ? फिर सब सभासदोंको भी अपनी अपनी इच्छा निवेदन करनेकी आज्ञा दी। जब इनकी बारी आयी तो इन्होंने कहा कि छोटे छोटे जीव जन्तु ( चिड़िया मछलिया आदि ) न पकड़े जावे तो अच्छा ही, क्योंकि थोड़ेसे लाभकी सम्भावनामें बहुतसे जीव नष्ट होते हैं।

बादशाहने दूसरे सभासदोंकी प्रार्थनाके साथ इनकी आकांक्षा भी स्वीकार की। इससे इनकी प्रकृतिका पता लगता है कि ये कैसे दयालु और पुण्यात्मा थे।

बड़े शाहजादेका रक्षक होना ।

ऐसी ऐसी बुद्धिमानी और योग्यताकी बातोंसे इनकी जगह बादशाहके दिन्में बढ़तो जाती थी और वे इनकी कार्य, कुशलतामें सन्तुष्ट होकर जब कोई काम इनके योग्य देखते थे तो प्रसन्नता पूर्वक इनको उस पर नियुक्त कर देते थे और इनकी ऊपर

१। यह शिखावत कलवादीमें एक बड़ा सरदार और बादशाही दरबारका सभासद था।

२। चैत बदी २ रविदार संवत् १६३८ की तारीख १ फरवरदीन सन् २७ थी।

उनकी भरोसा भी पूरा था। इसीलिये सब जो बड़े शाहजादे सुलतान सलीमकी अतालकीकी [जगह खाली हुई तो उनके पास] भी बादशाहने इन्हींको उत्तम समझ कर शाहजादेका यतालूक (१) बनाया अर्थात् शाहजादेको इनकी रचामें रखा। इन्होंने इस महत्सीमाग्यका बड़ा उत्पन्न किया और बादशाहने उसमें पधारनेकी प्रार्थना की। दयालु बादशाह २७ शहरेश्वर (२) सन् २७ को इनके घर पधारें जिससे सब लोगोंको आनन्द हुआ।

घोड़ोंके प्रबन्धमें नियुक्ति।

इसी साल बादशाहने व्यापारियोंके सुगमके लिये क्रय विक्रयका कर नियत करके एक एक अमीरको एक एक वस्तुका अधिकार दिया। उसमें घोड़ोंकी देख भाल इनकी मिली।

ये दोनों काम भी इनकी विद्या और बुद्धिके योग्य थे।

सामाजिक कार्यमें शाहजादेका सहायक होना।

(१) सन् २८ में बादशाहने राजपू और राजकाजके बहुत घट जानेसे सुबीते और प्रबन्धके लिये शाहजादेकी पृथक् पृथक् काम बांटे और कोष, कृपा, विवाह और जन्म सम्बन्धी कार्यों का प्रबन्ध बड़े शाहजादे सुलतान सलीमके अधीन किया। ये उसके भी सहायकोंमें रखे गये।

गुजरातमें लडने जाना।

इसी साल जो इनका राज योग और प्रबल हुआ और एक बड़ी लड़ाईमें विजय प्राप्त करके पृथिवीमें प्रतिष्ठित होनेका समय आया तो बादशाहने इनको फिर गुजरात भेजा। परन्तु अब गुजरातमें पहिलेकीसी शान्ति नहीं थी। वहाके अगले सुलतान मुजफ्फरने जिसे बादशाह पकड़ लाये थे कैदसे भाग

१। पहले खुतबुद्दीनखां अतालूक था, पर वह इस समय किसी काम पर बाहर भेजा गया था।

२। आसोज बदी ८ रविवार संवत् १६३८।

३। सन् २८ चैत बदी १३ संवत् १६३८ की लगभग था।

कर उस देशका अधिकांश फिर जीत लिया था और अहमदा-  
वादमें बैठ कर फिर अपनी आन दुहाई फेरी थी । जो बादशाही  
अमीर गुजरातमें थे वे लडाईमें हार कर पठनमें चले आये और  
बादशाहको अर्जी पर अर्जी भेजते थे । बादशाहने ६ सहर (१) सन्  
२८ को एक बड़ा लश्कर इनके साथ विदा किया जिसमें इतने  
अमीरोंकी नौकरी बोलो गयी थी ;—

१ सैयद कासम ।

७ मियां बहादुर ।

२ सैयद हाशम ।

८ दरवेश खां ।

३ शेरबिया खां ।

९ रफीय सरमदौ ।

४ राव दुर्गा ।

१० शेख कबीर ।

५ राय लवण करण ।

११ नसीब तुर्कमान ।

६ मेदिनी राय ।

हुक्म दिया गया कि सब सीधे रास्तेसे गुजरातको जावे । कुली-  
चखा और नवरङ्ग खा इस आज्ञाकी साथ मालवे भेजे गये कि वहाके  
लश्करको लेकर इनसे जा मिलो ।

ये बादशाहसे विदा हुए । कुछ लोग तो सेनाके एकत्र होनेके  
लिये रास्तेमें ठहरे और कुछ बेसमझ लोगोके झूठी खबरें  
उडानेसे धीरे धीरे चले । जब ये मेड़तेके पास पहुँचे तो पट्टनसे  
ख्वाजा ताहिरने आकर कुतुबुद्दीन खाके सारे जाने और किले भडू-  
चमें भी सुजफ्फरके अमल हो जानेका वृत्तान्त कहा । ये बुद्धिमा-  
नीसे इन प्रशुभ समाचारोंको गुप्त रख कर आगे बढ़े और  
धीघ्रतासे २० दे को ( २ ) पाटन पहुँचे । वहाँ जो सेना थी वह  
एहर्ष अगवानोको आयी और यहाँ जो सब सरदारोंने मिलकर स-  
लाही की तो किसी किसीने कहा कि जब तकमालवेका लश्कर  
नहीं आवे तब तक यहीं ठहरे और किसी किसीने कहा कि वाद-

१ । कातिक वदी १ सवत १६४० ।

२ । साह वदी १४ बुधवार सवत १६४०—१ जनवरी  
सन् १६८४ ई० ।

शाहकी आने दें, यमो आगे बढ़ना उचित नहीं है। इस प्रमाण बहुत कम लोगोंने लड़नेकी मनाह दी। कारण इसका यह था कि सुजफ्फरके पास ४० हजार सवार और १ लाख पैदल सैन्य था। इधर सेना सिर्फ दस हजार थी। निदान दोलतखा मोदीने जो इनका मन्त्री और सेनापति था, कहा कि मानविके अमीरोंके पान पर तो जीतमें उनका साक्षात् पड़ जावेगा। जो तुम खानखाना बनना चाहते हो तो झुकते फतह करो, नहीं तो अज्ञात प्रशस्तिमें जीनेसे मर जाना अच्छा है।

सुजफ्फर पर चढ़ाई।

खानखानाने यह सुन कर अहमदाबादके अगले सूबेदार एन-सादखाकी जो भाग कर आया था पटन हीमें छोड़ा और वाकी लश्करके साथ खड़ाईकी इच्छासे कूच किया। युद्धके वान्ते जो ब्यूह रचा था उसके ७ अङ्ग थे। उनके एक एक अङ्गमें कई समीर, राजा, राव तथा ठाकुर नियुक्त किये गये थे जिनका ब्यौरा नीचे लिखा जाता है।

१। गर्भमें, खय थे, शहाबुद्दीन अहमदखा, जान दरवेगखा, सुरतान राठोड (१) और सुजफ्फर, अबुलफतह, मिरजा कुली खां, सुगल और शेख सुहन्मद सुगल।

२। दाहिनी भुजामें शेरबियाखा, सुजानद हमन, शेर अबुल-कासिम, बुनियाद वेश पीरीजा, और हाशम और मोर मानन।

बायी भुजामें मोटा राजा (२) राय दुर्गा, तुलसीदास जादी (३) बीजा देवडा और रायनारायण दास जमींदार ईडर।

१। सुरतान राठोड प्रसिद्ध राव जयमल राठोडके बेटे थे जो चित्तौड़गढ़में अकबर बादशाहसे लड़े थे।

२। मोटा राजा जोधपुरके महाराज थे इनका नाम उदयसिंह था। यह मोटे बहुत थे इससे अकबर बादशाह इनको मोटा राजा कहते थे।

३। वे करोलीके थे।



४। हिरावत अर्थात् आगेकी अनीमें—पायदा खां सुगल, सैयद कासिम, सैयद हाशम, राय लवण करन, राखचन्द, सैयद बहादुर, सैयद शाह अली सैयद नसरुल्लाह और सैयद कर-सुल्लाह ।

५। एलतमश अर्थात् गर्भ और हिरावतके बीचकी अनीमें मेदिनीराय, रामसाह, राजा मुकुट मणि, ख्वाजा रफ़ीउल, मुकम्मल बेग सरसदी, नसीब तुर्कमान, दीततखां लोदी, सैयदखा क-रणी, शेखवली, शेखजैन और खिजर आका ।

६। तरह सहायक सेनामें ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद ब-न्दगी, लीर अबुल मुजफ्फर, लीरमात्सूम मल्लरी, बेग मुहम्मद तोकशई, लीर हबीबुल्लाह, लीर शरफुद्दीन, और हाथी बल्खीच ।

७। हिरावत अर्थात् आगे चलने वालीमें मिया बहादुर उज-बक । जङ्गी हाथी हरक अनीमें थे ।

मुजफ्फर यह सुनकर बहुतसे लश्कर सहित अहमदाबादमें आया । ब्यूहमें वह तो गर्मस्थ था, शेरखां फौलादी, और लूभा काठी, दाहिनी तथा बायीं अनीमें थे और सालह बदख्शगी अगली अनीमें था । उसने मानपुरमें लड़नेकी सलाह की और वहाँ तोपखाना भी चुना था ।

इन्होंने ८ मोहर्रम (१) सन् ८८२ को सेनाकी उत्तेजनाके वाम्ने यह युक्ति की कि बादशाहकी ओरसे एक फरमान [ आज्ञा पत्र ] बनाया और दड़ी धूमसे अगवानी जाकर उसको लाये और सब फौजकी सुनाया । जिसका यह आशय था कि हम आते हैं इसारि पहुँचने तक लड़ाई मत करना ।

मुजफ्फरसे लड़ाई ।

यह फरमान सुनकर सारी सेना आह्वातके सारे चिल्ला उठी और मुजफ्फरकी जगह छुड़ानेके लिये गांव सरखेजकी ओर चली ।

६ बहमनको (१) वहां पहुंचवार अहमदाबाद पीर नदीके तीरे उरे किये । यह समाचार सुनकर मुजफ्फर भी उधरसे चला और यह खबर उड़ी कि वह पीछेसे आवेगा, इसलिये इन्होंने गाय दुर्गाको तरहमेंसे [सहायक प्रतीमेंसे] कुछ फौज देकर पीछे भेजा । बाकी फौजें आगे बढ़ी और दुश्मनसे मिलीं । लड़ाई छिड़ी । दोनों ओरके वीर लड़े, कटे और मरे । चिरावन और एलतमशके पैर टूट गये ; तो भी ये खानखाना होनहार वीर १०० योधार्थी और १०० हाथियों सहित जहां खड़े थे वहीं जमे रहे । मुजफ्फर इनके सामने ही ६।७ हजार सवारों सहित खड़ा था । इनके पास थोड़ीसी सेना देखकर लड़नेको आया । उस समय इनके कुछ शुभचिन्तकोंने इनके घोड़ेकी लगाम पर हाथ डाला कि रणागनसे निकाल ले जावे ; परन्तु इन्होंने लगाम छुड़ाकर हाथियोंको आगे बढ़ाया और दुश्मनोंको सामनेसे हटाकर मैदान जीत लिया ।

जीत और उसका उद्वाह ।

यह फातह ७ बहमन ( २ ) सन् २८ तथा १३ सुहर्रम ८८२को हुई, जिसके उद्वाहमें इन्होंने अपना सब धन माल साधियोंको दे डाला । अन्तमें एक मनुष्यने आकर कहा कि मुझे कुछ भी नहीं मिला । तब एक कलमदान जो बाकी रह गया था उसको लेकर प्रसन्न किया ।

मुजफ्फर पर और फातह ।

मुजफ्फर राजमहन्दीकी ओर भागा था ; इन्होंने भागे हुआका पीछा नहीं किया ; उस दिन तो वहीं रहे । दूसरे दिन तडकी ही अहमदाबादमें जाकर सुशोभित हुए । यहा मालवेके अमीर भी आ मिले ।

बादशाहने गुजरात आनेके विचारसे १० बहमनको (१) इलाहाबादसे कूष किया था कि २५ बहमनको (२) कोडा घाटसपुरमें इस फतहकी बधाई पहुँची और वे खुश होकर राजधानीको लौट गये ।

मुजफ्फरने खभातके सेठोंसे रुपये लेकर फिर १०।१२ हजार सवार इकट्ठे कर लिये । यह खबर सुनकर इन्होंने सैयद कासिम वगैरह कई अमीरोंको तो अहमदाबादमें छोड़ा और बाकीको मालवेके लश्कर सहित साथ लेकर खभातके ऊपर धावा किया । मुजफ्फर सैयद दौलतको कुछ फौज सहित धोखेमें भेजकर अचला परमारके गांव “सबद” में चला गया ।

इन्होंने बड़ीदेमें पहुँचकर तोलकखांको तो सैयद दौलतपर भेजा और आप मुजफ्फरके पीछे गये । १८ असफन्दारको (१) मुजफ्फरसे खड़ाई हुई । वह फिर भागकर नर्वदा पार चापा पहाडमें चला गया जिसके दक्षिणमें तापती नदी बहती है और तीन ओर पहाड ही पहाड हैं ।

जब यह नादोदमें पहुँचे तो सैयद दौलतपर तोलकखांके फतह पानेकी बधाई आयी जिससे लश्करवालोंका दिल और बढा और ब्यूह रचकर उस पहाडपर धावा किया गया । मुजफ्फर फिर लड़ाई हार कर भागा । बादशाही फौजने पीछा करके उसकी २ हजार सेनाको मारा और ५०० को पकड़ा ।

खानखानांका खिताब और ५ हजारी मनसब ।

जब बादशाहको इस दूसरी फतहकी खबर पहुँची तो उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक इनको खानखानांका खिताब, एक भारी खिलअत और पाँच हजारी मनसब बख्शा और दूसरे अमीरोंको भी मनसब बढाये ।

१ । फागुन वदी ३ ।

२ । फागुन सुदी ३ ता० १ सफर सन् ८८२ ।

३ । चैत वदी १२ संवत् १६४० ।

## गुजरातियोंका भागना ।

सैयद दोलत खंभातमें चला गया था । इसलिये इन्हींने मोटा राजा, मेदनीराय, राजा मुकटमणि, रामनाथ, उदयजिठ, रामचन्द्र, बाघ राठोड, तुलसीदान जादी बहादुर, अनपनगफड, पतंग फतह सुगल, करावहरी, और दोलतखाको उसपर भेजा । इन सरदारोंने वहां जाकर उसको भगा दिया ।

फिर खानखानाने महेन्दीसे ख्वाजा, निजामुद्दीन अहमद, मीर साखूम, और सुरतान राठोडको आविड और मौरक युसूफ वगैरह पर भेजा जो राजपूतलेके पहाड़में निकनकर लूट मार करते थे । ये जब धोनकेमें पहुँचे तो वे लोग भाग गये ।

## देशका प्रबन्ध और फतहवाग ।

खानखाना १५ उर्दी (१) विहिशत सन् २८ को अहमदाबाद पहुँचकर देशके प्रबन्धमें प्रवृत्त हुए और जहाँ मुजफ्फरके ऊपर फतह पायी थी वहाँ एक वाग लगाया । उसका नाम फतह वाग (२) रखा ।

## भडूँचकी फतह ।

मुजफ्फर राजपूतलेसे पटनको आया । इन्हींने शारदावेगको उधर भेजा तो वह ईंडर होकर काठियावाडमें चला गया । वहासे बन्दर घोघेमें जाकर छिप रहा । खानखानाने भडूँचके ऊपर मौज भेजकर वह किछा भी १० मिहरकी (३) मुजफ्फरकी किलेदारसे खाली करा लिया ।

## मुजफ्फरका पीछा करना ।

इस वर्ष लडाईं दफ्ता रहनेसे खेतीकी उपज कम हुई जिस्से सरदारों और सिपाहियोंका बल घट गया । गुजराती यह

१ । जेठ बदी १० स वत १६४१ ता० २३ रबीउस्सन्ही सन् ८८२ ।

२ । अब इसेफतहवाड़ी कहते हैं ।

३ । आसोज बदी में स० १६४१ ।

भेद पाकर उपद्रव करने लगे । सुजफ्फर गोंडलमें आया जो जूना-  
गढसे १५ कोस है । अमीनखां गोरी और जाम (१) भी उससे मिल  
गये । खानखानाने हुलीचखाको अहमदाबादमें छोड़ा और फौ-  
जके २ विभाग करके मेदिनीराय, बेगमुहम्मद, कामरांवेग, राम-  
चन्द, उदैचन्द आदिको धधूका से ७ कोसपर गांव हड्डालीमें भेजा ।  
और अहमदाबादसे ७ कोस गांव वेराईमें बयान बहादुर तथा  
भूपतराय प्रभृतिको नियत किया । सैयद कामरामको पटनमें  
छोड़ा और आप (२) आजर १२ सन् २६ को सुजफ्फरसे लडनेको  
गये । उस समय वह मोरवीमें था जहांसे इनका घाना सुनकर  
खरडी और राजकोटको चल दिया जो काठियावाडमें है । बीरम  
गावसे खरडी तक ६० कोसमें बस्ती न थी । तो भी ये भोजनकी  
कामग्री लेकर छडी सवारीसे वहा पहुंचे तो वह पहाडमें जो  
हारकासे २० कोस समुद्र तट पर है चला गया । इन्होंने भी  
वहा जाकर छावनी डाल दी । अमीनखाने अपने बेटेको भेज  
दिया । जामके वकीलोंने आकर कहा कि सुजफ्फर यहांसे ४०  
कोस पर है । ये उधर गये ; परन्तु वह नहीं मिला । तब इन्होंने  
अपनी सेनाके ४ खण्ड करके उस प्रदेशमें भेजे । वहांके राजपूत  
वीरतासे लडकर काम अ.ये और वह सुन्दर देश लुट गया ।

जामका अधीन होना ।

इस अवसरमें सुजफ्फर अपने बेटेको जामके पास छोड  
कर अहमदाबाद गया । इन्होंने उसकी कुछ परवाह न करके  
जामकी दण्ड देना चाहा । वह भी पहले तो सेना सजवार  
लडनेको आया और फिर ४ कोस दूर रहकर अधीनता स्वीकार  
करने लगा । राय दुर्गा और कल्याण रायके बीचमें पडनेसे उसकी  
प्रार्थना स्वीकृत हुई । तब उसने अपने बेटे जस्साको लाल रङ्गके  
हाथी और भेंटकी दूमरी वस्तुओं सहित भेजा ।

१ । जाम नगरका राजा ।

२ । सगसर सुदी २ सं० १६४१ ।

### सुजफ्फरकी फिरहराना ।

नवा नगर इनसे १० कोस रह गया था कि ये जामके अलीन हो जानेसे अहमदाबादकी लौटे । मोरवीके पास पहुच कर सुना कि सुजफ्फर अहमदाबादकी आता है । हड्डाले और परातीकी सेना मिलकर लडनेकी गयी । वह परातीमें पाकर लडा । मदन चौहान, रामचन्द, उदैसिह, सेयद नाद, सेयद बहादुर, सेयद ग्राह अली, ओपत देखनी, केशवदास, बाघ रावोड आदि जा पहिली सेनामें ये खूब लडे । ख्वाजम वरदी लडता हुआ सुजफ्फरके पास तक जा पहुचा । वह फिर भाग गया और उसके कई सन्दाद मारे गये ।

### खानखाना दरबारमें ।

ये इस बधाईसे प्रसन्न होकर अहमदाबादमें आये । बादशाहका हुक्म पहुचा था कि जब गुजरातकी प्रबन्धसे निश्चित हो जाओ तो दरगाहमें आओ । इसलिये ६ अमरदाद (१) सन् ३० को अहमदाबादसे चलकर २४ को (२) बादशाहकी सेवामें पहुचे । बादशाहने बहुत कृपा की और जब लाहौरकी जाने लगे तो २२ अहरवर (३) सन् ३० को राजा टोडरमलके तालाबसे जो फतहपुर सिकरीके पास था इनको गुजरात जानेकी आज्ञा दी । इनकी अनुपस्थितिमें अवसर पाकर सुजफ्फर फिर अहमदाबाद पर आया था, परन्तु कुतुबुद्दीनखां आदि अमीरोंने ३० कोस तक सामने जाकर उसको रणकी (४) तरफ भगा दिया ।

१ । सावन सुदी ३ सवत १६४२ ।

२ । भादी बदी ६ सं० १६४२ ।

३ । आसोज बदी ५ सवत १६४२ ।

४ । एक बडी भील खारे पानीकी जो कच्छ देशमें है ।

सिरोही और जालौरके अधिपतियोंको प्रधीन करना ।

इन्होंने गुजरातको आते हुए सिरोही और जालौरके जमीन्दारोंको जो उस समय गुजरातके प्रधीन थे रास्तेमें अपने पास बुलाया । सिरोहीका राव तो कुछ दिनोंमें आकर मिल गया । और जालौरपति गजनौखाने पहिँची तो हुका नही माना और जब फिर इनको दृढ़प्रतिज्ञ देख कर आया तो उसको अपने साथ ले गये और जालौर उससे छीन कर दूसरेको दे दी ।

शिकारमें बेतरह फँस जाना ।

इस यात्रामें ईश्वरने एक बड़ी जान जोखिमसे इनकी रक्षा की थी । सिरोहीके पास पहुँच कर इनके मनमें यह भासना उपजी कि ज़ियों सद्दित ज कर शिकारका आनन्द ले और यौवन मदसे इस धुनमें सेनासे दूर निकल गये । फिर थकावट और धूपसे व्याकुल होकर एक वृक्षकी छायामें जा बैठे । इतनेमें एक अहेरीने प्रनीतिसे एक गाय पकड़ ली । इस पर उसीप्रान्तके राजपूत राउनेको आवे । यह उठ कर उनपर गये । कुछ इनकी साथी भी पड़ गये । बड़ी लड़ाई हुई । इनकी जान पर आ गयी । दबनेकी आशा न थी कि जीत हो गयी और उन लोगोंको पूरा दण्ड दिया गया ।

सन् ३१ में ( १ ) बादशाहने इनके साले खान आलम मिरजा अजीज कोकाको बराड़ फतह करनेका हुक्म दिया था । वह मालवेसे गया ; परन्तु जो असीर उनके साथ थे उससे नहीं बना इसलिये उस कालमें सफलता न पाकर सहायता माँग करनेके लिये वह इनके पास आया । ये बड़ी धूमधामसे अगवानों । जाकर उसको लार्थ और सहायताके वास्ते सेना भी मजायी , परन्तु उसके शत्रुओंने इनकी भी बड़का दिया ।

१। सन् ३१ इस्लामी चैत सुदी १ संवत् १६४३ की लगाना अर्थात् ये दोनों वर्ष एक ही दिन आरम्भ हुए थे ।

ये छुप हो रहे और खान आजम जैसा छाया था वैसा ही चला गया ।

गुजरातमें नये कार्यकारी ।

एसी साल बादशाहने एक एक सूबेमें [मण्डलमें] दो दो कार्य कुशल माण्डलीक [सूबेदार] नियत किये कि जो एक दरबारमें आवे या एक बीमार हो जावे तो दूसरा उसका काम करे । ऐसे ही दीवान बख्शी भी पृथक् पृथक् स्थापित कर दिये । गुजरातके सूबेमें ये ती घे ही, दूसरा नाम हुतुहुडोनखावा लिखा जो इनकी अनुपस्थितिमें काम किया करता था । अबुल कासिमको दीवान और निजामुद्दीन अहमदको बख्शी बनाया ।

सुलतान मुरादके विवाहमें जाना ।

सन ३२ में ( १ ) शाहजादे मुरादका विवाह इनके साली खान आजम मिरजा अजीज कोकाकी बेटीसे ठहरा था । इसलिये बादशाहने इनको लिखा कि अगर उस देशमें शान्ति हो गयी हो तो दरबारमें उपस्थित हो जाओ । वहा उन दिनों कोई अशान्ति भी न थी । इस वास्ते ये साडनी पर सवार होकर १५ दिनमें १६ उर्दी ( २ ) बहिश्तको बादशाहके पास पहुँचे जो उस समय पजाबमें थे और २५ को ( ३ ) शाहजादेका विवाह हो गया ।

दरबारमें पञ्चायत ।

खान खाना बहुत दिनों तक दरबारमें रहे । बादशाह बड़े बड़े कामोंमें उनको भी पक्ष और मध्यस्थ बनाते थे जिसका एक दृष्टान्त यह है कि शहबाज खां और राजा टोडरमल वजीरका आपसमें हिसाबका झगड़ा था । उसकी सफाईके लिये बाद-

१ । सन ३२ चैत सुदी ३ सवत १६४४ को लगा था ।

२ । द्वितीय बैसाख वदी १४ सवत १६४४ ।

३ । द्वितीय बैसाख सुदी ८ सवत १६४४ ।



शाहने इनको अजबुद्दौला, हकीम अब्दुलफतह, और शिख अब्दुल फजल को पक्ष बनाया था जिन्होंने दोनोंकी स्वार्थकी अलग कारकी न्यायसे छुका दिया ।

खानखाना काशमीर और काबुलमें ।

सन् ३४ में ( १ ) बादशाह काशमीरकी गये । ये भी साथ थे । बादशाहने उस भूमिकी शोभा देख कर हीरापुरसे इनको बड़े शाहजादे और बेगमोंकी लानेकी लिये भेजा । शाहजादा तो चला आया और बेगमोंकी मार्गकी सङ्कीर्णतासे नौ शहरमें छोड़ आया । बादशाह जो बेगमोंकी प्रतीक्षामें थे शाहजादे पर बहुत क्रुद्ध हुए और खानखानाको भी लिखा कि जो शाहजादेकी मृत सारी गयी थी तो तुमने क्यों ऐसा किया ।

यह कार्रवाई करके आप प्रगवानी हो कर बेगमोंकी लानेकी लिये अकेले हीरापुर तक पीछे चले गये ; फिर मन्त्रियोंकी विनय पत्रिकाओंकी पहुचनेसे लौट आये और इन्हींको लिख भेजा कि बेगमोंकी अच्छी तरह ले आना ।

ये बड़े परिश्रमसे मार्ग साफ करके बाहरीकी सहायता देते हुए बेगमोंको ले आये जिससे बादशाह बहुत प्रसन्न हुए । ( २ ) ।

तुजक बावरीका अनुवाद ।

१ अक्षरदादकी ( १ ) बादशाह काशमीरसे चलकर काबुलकी गये और ८ अजरकी ( ४ ) काबुलसे हिन्दुस्थानकी लौटे । रास्ते में १३ अजरकी ( ५ ) योरत बादशाह नामक पडावमें छेरे हुए । वहा इन्होंने बाबर बादशाहके इतिहासका फारसी

१। सन् ३४ चैत सुदी ५ सं १६४६ को जगा था और बादशाह १६ उर्दा वहिश्त जेठ वदी ७ की रातको काशमीर गये थे ।

२। ८ तीर सावन वदी ४ को यह काम हुआ था ।

३। सावन सुदी १२ सं १६४६ । ४। मगसर वदी ४ सं १६४६

५। मगसर वदी १३ ।

अनुवाद जो इस अवकाशमें किया था बादशाहकी इटिमें लाकर रखा तो बादशाहने बहुत धन्यवाद दिया। यह इतिहास स्वयं बाबर बादशाहका लिखा हुआ तुर्की भाषामें था जिसको हिन्दुस्थानी लोग नहीं समझ सकते थे। इन्होंने उसको फारसीमें (१) करके उन लोगोंका बड़ा उपकार किया।

महा मन्त्री होना।

जब इस तरह इनकी कार्यदक्षता और निःस्वार्थता बादशाहको निश्चय हो गयी तो उन्होंने १३ दे (२) सन् ३४ को बारी कम्प्राय (३) नामक पड़ाव पर इनको वकालतका वृद्धत् अधिकार दिया जो राजा टोडरमलके मरजानेसे खाली हुआ था।

वकालतका ओहदा मुगलोंके राज्यमें सर्वोपरि था। वकील बादशाहका प्रतिनिधि समझा जाता था। इनके वाप भी इसी पद पर थे।

जीनपुर जागीरमें।

गुजरात इनसे उतरकर मिरजा अजीज कोकाकी मिली तो जीनपुर इनको जागीरमें मिला और नजनी खाको जिसे उन्होंने पकड़ा था और जो अब दरवारमें आकर निरन्तर सेवा किया करता था बादशाहने ८ उर्दी वहिश (४) सन ३५ को जालोर प्रदान किया जो इन्होंने उससे छीनकर दूसरेको दे दिया था।

कारनका जन्म।

१३ आजर (५) सन ३५ को इनका तीसरा बेटा कारन जन्मा। इनको सदा सन्तानकी वांछा रह्य करती थी। जब गुजरातमें थे तो

१। फारसी तुजक बाबरी छप गयी है उसमें तो इनका नाम नहीं है पर छापीवालेने ऊपर छापा है।

२। पौस बदी १२ सवत १६४६। ३। यह स्थान काबुल और सिन्धु नदीके बीचमें है। ४। वैसाख बदी १० सं० १६४७।

५। मगसर सुदी ८ सं० १६४७।

एक रात बादशाहने शेख अबुलफज्जसे कहा कि खानखानाको लिख दो कि ईश्वर भीषणही तीन पुत्र देगा । उनके ऐरच, दाराव, और कारन नाम रखना । सो वैसाही हुआ और इन्होंने इसका बड़ा उत्सव किया । उसमें बादशाहकी भी बुलैया । बादशाह गये और इनका मान बढ़ाया ।

कंधार जाना ।

२४ दे (१) सन ३५ को बादशाहने इन्हें कंधार जानेका हुक्म दिया । शाहबेग खां, रावक भीम दलपत जानशबहादुर, बलभद्र राठोड, शेरखां आदि ४५ असीरोंकी नौकरी इनके साथ बोली गयी ।

कंधार पहिले तो इनके वापकी जागीरमें था ; फिर बादशाहने ईरानकी बादशाहकी दे दिया था और उसकी तरफसे मुजफ्फर हुसेन मिरजा और खसम मिरजा कन्धारमें थे । अब ईरानका बल घट गया था और वे भी बदले हुए थे । उधर तूरानका बादशाह कन्धारकी ताकमें था ; इसलिये बादशाहने कन्धार लेनेका विचार करके इनसे कहा कि बलूचिस्तानके रास्तेसे जाओ । जो वे लोग हुक्म मान लें तो वह सरस देश उन्हींके पास छोड़ देना, नहीं तो पूरा दण्ड देना और ठहरेका जमींदार अबतक सेवामें नहीं आया है, इस वास्ते किसी सुपात्र पुरुषको उसने पास भेजना जो वह आजावे या सेना साथ कर दे तो ठीक, नहीं तो अभी कुछ न बोल कर लौटने वक्तव्य लेना ।

इन्होंने कुछ करके ताहीरसे एक कीसपर डिरा किया । पहिली बहसनकी (२) बादशाह वहां पधारे । बड़ी मभा जुड़ी । खूब नजर निछावर हुई ।

मुलतानमें पहुचना ।

मुलतान और मक्षर इनकी जागीरमें थे ; इसलिये इन्होंने पासका रास्ता जो गजनी और वगश होकर था, छोड़कर दूरका

राख्ता लिया और लोधी लोगोंने कहा कि कन्धार तो निर्धन देश है और ठूठा मालदार है जिसपर इन्होंने बाटगाहसे सिन्ध लेनेकी आज्ञा मांगी। बादशाहने इनकी आज्ञा देकर शाहजादे दानियालको कंधार पर भेज दिया।

सुलतानके पास बिलोची सरदार आकर मिले। भकरके समीप व्यूह रचा गया।

मिरजा जनीने दूत भेजकर कहलाया कि जो मेरे देशमें उपद्रव न होता तो मैं खुद कन्धारको चलता। अब अपनी सेना आपके साथ कर दूंगा।

सिंधपर चढ़ाई।

इन्होंने दूतोंको कैद करके लखे लखे जूच किये। इतनेमें यह खबर आयी कि सहवानके किलेमें खग लगी और धान चारा जल गया।

अब इन्होंने एक सेना जलमार्गसे और दूसरी रात मार्गसे भेजी। पहले जल सेनावे सहवानके नौचेसे जाकर लखेका ले लिया और किलेवालोंकी तोप और बन्दूकसे कुछ ठगिन डुई। यह नगर भी उसी भाति सिन्ध देशका द्वार है जैसा कि गढो बगालेका और बारहपूजा काश्मीरका है।

ये किलेके पास जाकर ठहरे। किला सिन्ध नदीके एक ऊँचे तटपर था। नदीकी तीग धारए उसके पश्चिम कर मिली थीं। किराबिन नावोंमें बैठकर गया और बहुतसा माल लूट लाया। मिरजा जानी यह बात सुनकर लड़नेको आया। नसीरपुरके पासकी जगहकी जिसके एक ओर नदी और दूसरी ओर नाले थे उमने किला बनाकर तोपों और जल्दी गावोंसे सज्ज किया।

इतनेमें रावल भीम और दसपत राठौर जैसलमेर और बीकानेरसे जमरकोट छोड़कर आये और नसीरपुरपर जल और दमकके मार्गसे पीज भेजी गयी कुछ लोग घाटीपर भी होठे गये।

## सिन्धियोंपर फतह ।

१८ आवान (१) सन् ३६ को शत्रुओंसे ६ कोस पर जा पहुँचे । २१को(२) कुछ फौज सिन्धियोंकी नावोंमें बैठकर लडनेकी आयी । परन्तु रात हो जानेसे छुड़ाई न हुई । बादशाही सेना रातके अंधेरसे नदीसे उतर गयी । तडके ही तोपें बहुत तेजीसे चमने लगी । ३, लोग पानीसे उतर गये थे, उन्होंने तीरोंकी वर्षा की ; फिर बरके और जमधरकी सार दी । निदान सिन्धी भाग गये । बड़ी फतह हुई । ४ नावें साज और मनुष्यसे भरी पकडी गयीं । एकमें हुस्नुज बन्दरका एलची भी था जो व्यापारियोंके प्रबन्धके लिये ठहरेमें रहता था और जानो वेग जो यह जतखानेके लिये कि देश देशान्तरके लोग सहायक बनकर आये हैं अपने कुछ आदमियोंको कई देशोंके लोगोंकी बरदी पहिना कर लाया था ।

मिरजा जानीके ऊपर दोनों तरफसे जानेका विचार होकर रह गया । नही तो पूरी फतह हो जाती । इस फतहकी वधाईमें जो साडनी सवार दौड़ाया गया था, वह १३ आजरको(३) लाहौरमें बादशाहके पास पहुँचा ।

## ठठेपर फौज ।

फिर सिन्धियोंने रास्ता रोक कर रसद बन्द कर दी जिससे इन्होंने २७ टेको (४) किलेका घेरा छोड दिया और जूनमें (५) जाकर छावनो डाली, बाकी फौजें ठठेपर गयी ।

१ । मयसर वटी १० स० १६४८ ।

२ । मयसर वटी १२ स० १६४८ ।

३ । पौष वटी ५ सवत १६४८ ।

४ । माघ सुदी ३ सवत १६४८ ।

५ । यह वही जगह थी जहा हुमायूँ बादशाह भी रहे थे और इनके वप गुजरात होकर पहुँचे थे ।

मिरजा जानीकी हार और मन्थि ।

मिरजा जानी किलेसे निकलकर सहवानको गया । इन्होंने ख्वाजा मुक़ीम और राजा टोडरमलके बेटे धारू वगैरहको उसपर भेजा ; इनसे और उससे बड़ी लड़ाई हुई । पहिले तो मिन्यो जीने और धारू वीरतापूर्वक मारा गया , परन्तु पीछे बादशाही फौज जीतो और मिरजा जानी हार कर अपने किलेकी भागा ज़िमती इन्होंने धावा मार कर उसके पहु चनेसे पहिले ही विध्वंस कर दिया । तब वह सहवानसे ४० कोस मिन्यु नदीके निकट एक और क़िला बनाकर रहा । इन्होंने २६ फरवरी (१) मन् २७ को जाकर उसे भी घेरा । दोनों तरफसे तीर और बन्दूककी लड़ाई होने लगी । नैनकोटके किलेमें जो थे, वे अपने किलेदारका मिरकाट लाये और इस भांति वह क़िला अनायाम ही हाथ आ गया जिसके हर्षमें मोरचे आगे बढ़ाये गये । सिधियोंमें बीमारी फैली बादशाही लश्करमें रसद बन्द हुई तो बादशाहने बहुतसा नाज और रुपये भेज दिये । उसके पहु चनेसे सेनाका साहस बढ़ गया और वह यहाँतक बढ़ती हुई चली गयी कि बाहरवाले अन्दरवालोंके हाथसे बरके छीन लेते थे । निदान मिरजा जानीने सेविस्खानका ज़िला, सहवानका क़िला, २० जङ्गी नाव और अपनी बेटी मिरजा एरचको देना स्वीकार करके सधि करनी और दरसातके पीछे बादशाहकी सेवामें उपस्थित होनेका भी वचन दे दिया । तब इन्होंने १६ खुरदादको (२) मोरचे उठा लिये । मिरजाने बेटी व्याह दो और सहवान सौप देनेको आदमी भेज दिये ।

मिरजा जानीका मिलाप और मुल्ला शक़ीबीको २००० मोहरोंका इनाम ।

फिर मिरजा जानी मिलनेको आया । उस दिन इन्होंने एक

१ । बैमाख सुदी ३ सवत १६४८ ।

२ । प्रथम आप ट बदी १० सवत १६४८ ।

बड़ी सभा सजायी थी । इनके नौकर मुल्ला शकेबीने इस फतहके विषयकी एक कविता बनायी थी , वह उसने इस सभामें पढी जिसकी रीतमें इन्होंने १००० अश्वरफिया उनको दी और इतनी ही मिरजा जानीने भी सिर्फ एक पदके पारितोषिकमें प्रदान की जिसका यह आशय था ,—

“जो हुमा ( पक्षी ) आकाशमें उड़ा करता था, उसको तूने पकड़ा और जालसे छोड़ दिया ।”

मिरजाने मुल्लासे कहा,—“रहमत खुदा”की तुझपर कि तूने तुझको हुमा कहा । जो गौदड़ कहता तो तेरी जीभ कौन पकड़ता ?

फिर मिरजा जानीपर चढाई ।

फिर इन्होंने सेहवानसे २० कोस सन नामा ग्राममें छावनी डालकर दरघात व्यतीत की । मिरजाने कहलाया कि सावनू (१) साख लेकर दरगाहको चलूंगा और उसने सेहवानका पूरा प्रान्त भी नहीं सौंपा था । वरन गाव और हालाकडीको भी नहीं छोड़ा था । इसलिये इन्होंने उसके दूतको ठहराके कुछ फौज सिन्धु नदीसे उतार कर ठठ्ठेको भेजी । कुछ जह्नी नावों में बिठायी और कुछ नदोके निकटसे चलायी । विचार यह था कि तीनों फौजें शीघ्रतासे पहुच कर नसीरपुर ले ले जिससे मिरजा जानी दरगाह जानमें विलम्ब न करे ।

नसीरपुरकी फतह ।

फिर ये दूतको विदा करके पीछेसे आप भी आ गये और नसीरपुर ले कर उन तीनों फौजोंको उसी भाति आगे बढाया । मिरजा ठठ्ठे से तीन कोस चलकर नदीके तटको दृढ़ करनेके लिये वहा ठहरा था कि लोगोंने जाकर उसका बाजार लूट लिया । मिरजाने वकील भेजकर कहलाया कि प्रतिज्ञा भग क्यों की ? इन्होंने जवाब दिया कि प्रतिज्ञा तो हमारी टूटनेवाली नहीं है ,

परन्तु सुना था कि हुसमुज बन्दरके फरजी इस देगपर धावा करने चाहते हैं ; इसलिये बन्दर लाहरीको जाते हैं । यह कहकर नू लौटा दी ।

मिरजा जानीजा सब देग सोप देना ।

१० आबान (१) सन् ३७ को ये और मिरजा मिले और इन्हीं ठहरेको कूच किया । जब रास्तेमें मिरजाकी तरफसे कुछ लोगों न देखा तो कहा कि निवाडा क्यों नहीं टे टेते हो जिनमें कि कि कोई कुछ कह ही नुसके ? मिरजाने लाचारीसे सब देग सँ दिया और दरगाहमें जानेको तय्यारी की ।

ठहरे और लाहरी बन्दरमें जाना ।

ये ठहरेको देखकर बन्दर लाहरीमें गये और 'शाह बेग आ' कई पुरुषोंसे कहा कि तुम मिरजाको लेकर आगे चलो । तब कु लोगोंको ठहरेमें छोड़ कर रयलके मार्गसे लौटे और फतह बाग पास मिरजासे आ मिले ।

मिरजा जानीकी दरबारमें लाना ।

ये २६ बहमन (२) सन् ३७ को सैयद वहाउद्दीन आदि व अमीरोंको सिन्धमें छोड़कर मिरजा जानीके साथ दरगाहमें पहुँचे । फरवरदीन (३) सन् ३८ को लाहौरके दौलतखानेमें दोनों सुजरा हुआ ।

दक्षिण जीतनेको जाना ।

२५ महर (४) सन् ३८ को बादशाहने सुलतान दनियाल दक्खिन फतह करनेकी भेजा । इनको भी साथ किया ; पर

१ । कार्तिक बदी १२ सवत १६४८ ।

२ । फागुन बदी २ सवत १६४८ ।

३ । चैत बदी ११ सवत १६४८ ।

४ । कार्तिक बदी ८ सवत १६५० ।



इसी कासपर सुलतान मुराद पहले जा चुका था । वह अब दनियालके जानेसे अप्रसन्न होगा, यह सोचकर बादशाहने दनियालको बुला लिया और सुलतानपुरमें आकर १५ दे (१) सन् ३८ को इन्हें हुक्म दिया कि आगरमें जाकर सेना एकत्र करे और सुलतान मुरादको लिखा कि खानखाना सिपहसालारके आते तक गुजरातमें ठहरा रहे । इसपर वह भड़ोचमें ठहर गया ।

शाहजादे मुरादकी नाराजी ।

ये आगरे आये और जब सेना इकट्ठी हो गयी तो मेलसेमें जाकर कुछ दिनोंतक रहे जो इनकी जागीरमें था । ८ अमरदाद (२) सन् ४० को उज्जैनमें पहुँचे । सुलतान मुराद गुजरातमें इनका रास्ता देख रहा था । अब जो इनका मालवे होकर जाना मुना तो कुपित होकर इनसे जवाब पूछा । इन्होंने अरजी भेजी कि खानदेशका जमींदार राजा कलीखा भी बादशाही फौजके साथ हो जावेगा । उसको लेकर आता हूँ । तब तक आप गुजरातमें शिकार खेलें ।

शाहजादा इस जवाबको सुनकर फिर भड़का और गुजरातसे दक्षिणकी चल दिया । तब तो ये लाव लश्कर तोपखाना और फौलखाना मिरजा शाहरुखको सौंपकर दौड़े और १८ आजर (३) सन् ४० को चादोरके पास जो अहमदनगरसे ३० कोस इधर है शाहजादेकी सेवामें पहुँचे ; परन्तु शाहजादेने अपने अतालीक सादिकखाके बहकानेसे इनको दरवारमें नहीं बुलाया और जो दूसरे दिन बहुतसी कहा मुनीसे बुलाया भी तो बहुत रुखाईसे सलाम लिया । इससे ये और दूसरे अमीर जो इनके साथ थे दिलमें नाराज हुए और काससे हाथ खेंच बैठे । शाहबाज खां भी इनके साथ गया था । सादिक खाँको उससे भी शत्रुता थी । इसलिये वह भी मारे हरके दरवारमें कम जाता था ।

१ । पोस वदी १३।१४ स'वत १६५० ।

२ । सावन वदी ११ स'वत १६५२ ।

३ । मगसर सुदी ८ स'वत १६५२ ।

अहमदनगर पहुँचना ।

७दे (१) सन् ४०को शाहजादा अहमदनगरसे आधकोस पहुँचकर ठहरा । वहाँ बहुत लोगोंनि आकर रचापत लिये फिर ये ओर शह-बाज खा शहरसे गये । परन्तु इनकी बेपरवाईसे मिपाणी प्रजाको लूटने लगे उनको बहुत परिश्रमसे रोका तो मही, परन्तु शहर वालोंका दिल फिर गया । चादवीवीने जो अहमदनगरके बादशाह बुरहान निजामुल्मुल्ककी बहन थी दरवाजे बन्द करके लडाईकी ठानी ।

दूसरे दिन शाहजादेने अहमदनगरको घेरा । तीसरे दिन शाहअली और अभंगर खा उधरसे इनके मोरचेपर आये और लडाईमें हार खाकर गये, परन्तु आपसकी फूटसे उनका पीछा नहीं किया गया ।

आपसकी फूट और अहमद नगरवालोंसे सन्धि ।

सेनामें जो स्थाने आदमी थे उन्हींने कहा कि यहा ३ बड़ी फौजे है । तीनों तीन काम करें अर्थात् किलेकी तरफ देशका दवाना और राखीकी रचामेंसे एक एक काम लेले परन्तु कुछ स्थिर न हुआ ;

११ असफन्दारमजकी (२) किलेको कुछ दीवार बारूदसे उड़ायी गयी, मगर अन्दर जानमें इतनी ढील हुई कि किलेवालोंने उसकी मरम्मत कर ली और बराड देना करके सन्धिकी बात चलायी शाहजादेने स्वीकार करके १० फरवरदीन (३) सन् ४१ को अहमद नगरसे कूच किया और १४ उर्दी बहिश्तकी (४) महकरमें (५) पहुँचकर जगह जगह थाने बिठा दिये । एक थानेपर खानखानाको

१ । पौष बदी १३ सवत १६५२ ।

२ । फागुन सुदी २ सवत १६५२ ।

३ । चैत सुदी १ सवत १६५३ ।

४ । बैसाख सुदी ६ सवत १६५३ ।

५ । बराड़ देशका एक स्थान ।

भी रख दिया, क्योंकि सादिकाखाने उससे यह जड दी थी कि मैं तो आपका गुलास हूँ और चाहता हूँ कि यह फतह आपके नामसे हो और खानेखाने चाहता है कि अपना नाम करे और सेनापति भी आपही अकेला बना रहे ।

दक्षिणें दलेंको उभड़ना ।

शाहजादेके आनेसे दक्षिणमें बड़ी खलबली पड़ी । अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुण्डाके बादशाहोंने मिलकर लडने पर कसर बाधो । ६०००० सवारोंकी एक सजी हुई सेना तरल तोपखाने सहित प्रस्तुत की । बीजापुरका (१) नाजिर सुहेलखां हबशी सेनापति बना और लडनेको आया ।

दक्षिणियोंसे लडने जाना ।

शाहजादेने अपने वहनोंई सिरजों शोहेरुखको उसपर जानेके लिये उद्यत किया और इनको सेना सज्जित करनेका हुक्म दिया । तब ये १५००० सवारोंका एक सुदृढ़ ब्यूह रचकर कि जिसके १० अम प्रत्यग थे शाहपुरकी छावनीसे आगे बढ़े और पायडीसे १२ कोस असनी गांवके पास लडाईकी जगह देखकर ठहर गये । ब्यूहके अङ्ग प्रत्यङ्ग निम्न लिखित रूपके थे ;—

१ । कल्व अर्थात् बीचके अङ्गमें ये आप और मिरजा शह-रुख आदि २४ अमीर थे ।

२ । दाहने अङ्गमें सैयद कासम और दोशोदास आदि १७ वीर थे ।

३ । बाये अङ्गमें खान देशका स्वामी राजा अली खा था ।

४ । हिरावल अर्थात् सबसे आगेके अंगमें जंगनाथ और दुर्गादि २० राजपूत सरदार थे ।

५ । अलतमूश अर्थात् हिरावल और कल्वके बीचमें अली सरदान बहादुर आदि १० अमीर थे ।

६ । दाहने हाथकी सहायक सेनामें गजनोखानादि ८ सरदार थे

(१) क्लीव ।

७। बाये हाथकी सहायक सेनामें हसनशाह नजरवेग और बहुतसे-तुरकमान थे ।

८। दहिने हाथके प्रत्य गमें शेर ख्वाजा आदि १४ अमीर और अहदी थे ।

९। बाये हाथके प्रत्य गमें मीर अबुलमुजफ्फर आदि १८ अमीर थे।

१०। चन्दावल- अर्थात् पिछले अङ्गमें मलिक रुस्तम आदि ६ सरदार थे ।

उधरसे सहेली भी अपनी सेनाको सजाकर आया । अहमद नगरवाली, अर्थात् निजामुल्लुल्ककी सेना तो बीचमें थी । बीजापुरके आदिलखांकी दहने और गोलकुण्डके कुतुबशाहकी बाये हाथ पर थी ।

- एक-विशाल विजय ।

ये २८ बहमन (१) ४१ को-पहर दिन चढ़े गोदावरीसे उतर कर युद्धमें प्रवृत्त हुए- जिसका प्रारम्भ दाहिने प्रत्य गसे हुआ । शेर-ख्वाजा खूब लड़ा । पिछले-दिनकी घोर-संग्राम मचा । दखनी बहुत थे और उनके-पास तोपे भी बहुत थी । इससे बादशाही फौज चल विचल हो गयी ; परन्तु जगन्नाथ-राय दुर्गा राजसिंह और दूसरे राजपूत सरदार-जो अलग-अलग घोड़े-थामे खड़े थे, बीजापुरवाले राजा अलीखाके ऊपर जा पड़े । वह वीरतासे लड़कर वहीं मर गया । उसके, अमीर और ५०० नौकर भी काम आये । दखनी राजा अली-खाको, मिरजा, शाह-रुख और खानखाना जानकर अपनी जीत होनेकी भरोसेसे उस अम्बेरी, रातमें कमर बांधे खड़े रहे । इधर बादशाही फौजकी अपनी विजयका निश्चय था और राजा अली-खाके वास्ते यह कल्पना की जाती थी कि वह दुश्मनोंसे मिल गया या निलल भागा भी तो उसका डेरा लुट गया है ।

१। फागुन बदी ३० संवत् १६५३ । तवारीख फरिस्तामें १८ जमादिउस्मानी है [ फागुन बदी ४ ] इस विषयकी आलोचना आगे की जावेगी ।

झारकाटास हिरावलमें और सैयद जलाल शहनी अनीमें काम आये। रामचन्द जो बडे बडे धावे करता था राजा अली-खांकी फौजमें २० घाव खाकर गिरा और रात भर सुर्दी में पड़ा रहा। तडके उसको उठाकर डेरे पर लाये और कई दिनोंमें वृद्ध मर गया।

प्रातःकाल बादशाही सेना जो रात भरकी प्यासी थी पानी पीनेकी नदीकी ओर चली। यह अब ७००० थी। देखनी जो २५००० थे लडनेको आये और घोड़ीसी लड़ाई लडकर भाग गये। तीनों बादशाहोंके कई अमीर और बहुतमे सिपाही खेत रहे।

इस बड़ी फतहसे सबको अचम्भा हुआ। ४० हाथी और बहुत सी तोपें हाथ आयी।

दूसरे दिन राजा अलीखांकी लोथ मिली। शङ्का करने वाले लज्जित हुए।

कुछ विशेष वृत्तांत मुआसिर-उल उमरासे।

मुआसिर उल उमरामें कुछ विशेष वृत्तान्त इस युद्धका लिखा है। वह भी हम यहां लिखे देते हैं,—

पहर भर दिन चढ़ा था कि लड़ाई शुरू हुई, दुश्मनकी तोपोंके दनादन चलनेसे सेनाओंके दिल दहलने लगे। उस समय अलीवेग रूमी जो उस तोपखानेका अप्सर था खानखानाकी प्रारब्धके प्रभाव तथा ईश्वरकी प्रेरणासे दौडता हुआ इनके पास आया और यह कह गया कि सारी आतशबाजी तुम्हारे बराबर चुनी हुई है और अभी उसमें आग दी जाती है। इस वास्ते जो आप दाहिनी तरफकी मुड जावे तो ठीक होगा।

खानखानाने ऐसा ही किया और राजा अलीखांसे भी इधर धाकेंको कहलाया। वह खानखानाकी जगह तक पहुँचा था कि गर्नीमका तोपखाना एकदमसे चला। सूरज धुँप से छिप गया। शत्रुकी फौज राजा अलीखांको खानखाना समक्ष दार बंदी। छधरसे राजपूत जो हरोलमें थे दौडे और राजा अलीखांका वहीं

कम तमाम ही गया और उसके अमीर सब उसके पान पाम कट मरे।

उधरसे खानखानाने धावा किया और दुश्मनोंकी फौजकी वहासे भगाया। परन्तु उसी अवसरमे रात हो गयी और दोनों फौज अपनी अपनी जीत समझ कर सारी रात रणमे जसी मगड़ी रही। कोई भी घोड़की पीठसे नहीं उतरा। दुश्मनों तो यह समझते थे कि हमने खानखानाको मार डाला और उसकी विचली सेनाका नाश कर दिया है। खानखाना यह जानते थे कि बादशाही लश्करकी फतह हुई है।

दूसरे दिन ज्योंही प्रातःकालका उजाला हुआ, बादशाही लश्कर जो रात भरका प्यासा था और जिसमें ७००से ज्यादा आदमी न थे पानी पीनेके वास्ते नदीको जाने लगे। सुईल यह देखकर २५००० हजार सवारों सहित चढ आया। बड़ी लड़ाई हुई। दक्खनकी तीनों फौजोंमे बहुतसे आदमी मारे गये।

उस समय दोलतखा लोदीने जो छिरावलमें था इनसे कहा कि हम कुल ६०० सवार हैं। यदि सुईलखाके या उसके तोपखाने और हाथियोंके सामने जाकर लड़ें तो आधे रास्तेमे ही खेत रहे। इसलिये उसको पीठ पर जाकर धावा करते हैं।

खानखानाने कहा-अरे। यह क्या करता है। दिल्लीका नाम डबोता है। दोस्तखाने कहा। जो जीते रहेंगे तो १०० नयी दिल्ली बसा लेंगे, और जो मारे गये तो खुदासे काम है।

निदान जब दोलतखाने चाहा कि घोड़ा बढावे तो सैयद कासमने जो बारहके (१) सैयदोंके साथ उसको अरदलोंमें था कहा कि हम तुम हिन्दुखानों हैं, मरनेके सिवाय और उपाय नहीं है, परन्तु खानखानाका इरादा तो जानना चाहिये कि क्या है।

(१) बारह एक बस्तीका नाम है। वहाँके सैयद बीरतामें सिंह थे।

तब दौलतखां लौटा और खानखानासे बोला कि इतनी बड़ी दलवादल जैसी सेनासे सामना है और जीत दुबिधेमें है। यदि हार हो जावे तो आप वह जगह बता दीजिये कि जहां आकर आपको ढूंढ लेवे। खानखानाने कहा कि “लोथोंके नीचे।”

यह सुनते ही दौलतखां (१) सैयदोंकी साथ लेकर गया। उसने पीछेकी ओरसे धावा करके शत्रुओंको ऐसा गडबडाया कि सुहेलखा उतने बड़े लाव लश्करका धनी होकर भी भाग निकला।

कहते हैं कि उसी दिन ७५ लाख रुपये रोकड और माल खानखानाके पास था। वह सब उन्होंने लुटा दिया और सिन्धाय ऊटोंके बोझके और कुछ अपने पास नहीं रखा।

दखनियोंके ४० हाथी तोपखाने समेत लूटमें आये, परन्तु जब राजा अलीखाके मारे जानेका हाल खानखानाको मालूम हुआ तो उतनी बड़ी फतहका आनन्द शोक और सन्तापसे बदल गया।

यह फतह सन् १००५के जमादिउस्सानी महीनेके (२) घन्तेमें हुई और यह ऐसी बड़ी फतह थी कि जिससे सारा दक्षिण देश कांप उठा था। परन्तु यहा शाहजादेके अति सद्यप होने और सेनापतियोंमें फूट पड जानेसे इतना भी न

१। दौलतखा लोदीका बाप सलीम शाह खुरके अमीरोंमेंसे था जब बाबर बादशाहने लोदियोंका राज्य ले लिया तो उसरखां गुजरात चला गया था। वह तो वहीं मरा और दौलतखा खानखानाका नौकर हुआ, परन्तु खानखाना उसको भाईके घरावर रखते थे। बहुतसी लडाइयां उन्होने दौलतखाकी वीरतामें ही जीती थी। फिर शाह दानियालने उसको खानखानासे मांग लिया और वह उसीकी नौकरीमें मर गया।

२। फागुन वदी बु० स० १६५३।

हो सका कि १०५५ कोस तो शत्रुको भागी हुई सेनाका पीछा करते जिसमें बादशाही लश्करकी धाक और भी टकियनियोंति दिल्लीमें बैठ जाती।

खानखानाका शाहजादेमे रूठ जाना।

फिर ये शहजादेका साथ छोड़कर अपनी जागीरमें (१) जा बैठे और वहांसे बादशाहके पास गये।

हम इस हालको तो यहीं छोड़ते हैं और तवारीख फरिस्तां परीक्षासे कुछ विशेष वृत्तान्त इस विषयका उद्धृत करते हैं। इस इतिहासका कर्ता मुहम्मद कसम फरिस्ता बीजापुरका रहने वाला था। इस प्रसङ्गसे उसने दक्षिणकी बादशाहतोंका वर्णन विस्तार पूर्वक किया है।

अहमद नगरका हाल तवारीख फरिस्तामे।

फरिस्तासे जाना जाता है कि अहमदनगरका राज्य उस समय सरदारोंकी आपा धापीसे पतला पड़ा हुआ था। बुरहान निजामशाहका बेटा इबराहीम जिसको तख्त पर बैठे हुए ४ महीने ही हुए थे, बीजापुरके बादशाह आदिलशाहके मुकाबलेमें मारा गया था। अहमदनगरमें दो बड़े थोक टखनियो और हथियोंके थे। टखनियोका सरदार मिथा मन्हु या। उसने रणागनसे अहमदनगरमें आकर इबराहीम निजामशाहके बेटे बहादुरशाहको तो जो १॥ वर्षका था उसकी फूफो चादबीबीसे छीनकर जुनेरके किलेमें भेज दिया और अहमद शाहको जो दौलताबदमें कैद था, बुलाकर तख्त पर बिठाया। उस समय तो हवशौ भी सशक्त थे। परन्तु पीछेसे उनके सरदार इखलास खाने यह जानकर कि अहमद शाह राजवशसे नही है। मिथामन्हुसे भगडा किया। इस पर हथियों ने अहमदन

१। जागीरका नाम नहीं लिखा है शायद भेलसेमें चले गये हों।



नगरको घेर कर जुने के किलेदारसे बहादुर शाहको मांगा । परन्तु उसने बिना हुका मियां मझूके नही दिया । हवशियोने अहमदनगरके बाजारमेंसे एक लडकेको पकडकर कहा कि यह निजामके घरानेसे है और उसको बादशाह बनाकर दस बारह हजार सवार पकड़े कर लिये । तब मिया मझूने अर्जी भेजकर शाहजादे सुरादको गुजरातसे बुलाया । यह अर्जी अभी रास्तेमें हो थी कि हवशियोंमें जागीरों और कासोंके बाटनेपर झगडा होकर तत्तवार पली । देखते सरदार जो उनसे आमिले थे उनका साथ छोडकर मियां मझूसे मिल गये । तब तो मियां बाहर निकलकर २४ सुहरम(१) शनिवार सन् १००४ को हवशियोसे लडा और उनको जेतकर शाहजादे सुरादके बुलानेसे पछताया । इतने हीमें सुना कि खानखाना और राजा अनीखा शाहजादेसे आमिले है और शाहजादा ३०००० हजार सवार मुगल पठान और राजपूतों सहित कूचकरके अहमद नगरकी सीमामें आपडू चा । तब तो मियां मझूको बडी हिम्मत हुई और वह आप तो सेना एकत्र करने और आदिलशाह तथा कुतुबशाहकी सहायता लेनेकी अडसेकी तरफ चला गया और अनसार खाकी चादवीवीकी और खजानोकी चौकसीपर किलेमें छोड गया । चादवीवी मिया मझूसे नाराज थी और उसको अनसारखाका भी भरोसा न था इसलिये उसने सुरतिजा निजामशाहके धा भाई सुहस्रदखाने डकके सारनेको कहा जिसने बडी वीरतासे अनसारखाको सार डाला और किलेमें बहादुर निजाम शाहकी पान दुहाई फेर दी ।

२३ रबीउल्तागा (२) १००४ को शाहजादा सुराद बडेबडे अमीरों सहित उत्तर दिशासे आकर अहमद नगरके बाहर ईदगाहके पास खड़ा रहा और उसके कुछ दिश चले सिपाही काले

१ । आसोज बदी ११ सवत १६५२

२ । पौष बदी ८ सवत १६५२

घवूतरेकी सैदान तक आगे बढ़ते हुए चले गये परन्तु चादवीवोंने तोपोंके कई फौर उनपर किये जिनमे वे पट गये और शाहजादा हशवहिश नामक बागमें जाकर रात भर जागता रहा ।

शाहजादेने अहमद नगर और बुरहानाबादकी रक्षाके लिये कुछ आदमी भेज दिये थे और प्रजा तथा व्यापारियोंकी प्रत्यक्ष दान दे-दिया था, इससे लोग मुगलोंका विग्राम करने अपनी अपनी जगह बैठ रहे थे ।

दूसरे दिन शाहजादा, मिरजा शाहसुय, नज्ब खानखाना, शहवाजखा कखो, सादिक मुहम्मद खां, सुरतिजा खा, राजा नलीखा और राजा जगन्नाथने किलेके नीचे आकर मोर्चे लगाये ।

२७ को (१) शहवाजखा कंवा जो दुष्टतामें प्रसिद्ध था, शाहजादेकी आज्ञाकी बिना ही शहर देखनेका मिस करके सेना सहित आया और प्रजाकी लूटने लगा । शाहजादे और खान खानाने जब यह सुना तो उसको बहुत झिडका और बहुतसे लुटेरोंकी भांति भांतिका दण्ड दिया । तो भी अहमदनगरकी ब्लोग तो रातको ही बाहर निकल गये ।

उस समय निजामशाही अमीरोंके तीन स्वतन्त्र थे । एक मियां मझूका जो अहमदशाहको बादशाह जानकर आदिल खाकी सीमापर जा बैठा था, दूसरा इस्लाम खाका जो मोतीशाह नामक एक लड़केको बादशाह बनाये हुए दौलताबादके प्रांतमें मडला रहा था, तीसरा अमग खाका वह भी आदिल खाके राज्यमें पडा था और बड़े बुरहान निजामशाहके बेटे शाह अलीको जो ७० वर्षका बूढ़ा था, बीजापुरसे बुलाकर बादशाह बना चुका था । इसको चादवीवोंने अहमदनगरकी रक्षाके लिये शीघ्रतासे आनेका परवाना भेजा था, परन्तु इसकी अनेसे पहले इस्लाम खां अहमदनगरके घेरेकी खबर सुनकर दौलताबादकी तरफसे आया । उसके साथ

१०००० सवार थे। खानखानाने अपनी सेनामेंसे ६००० सवार छाट कर दौलत खां लोदीके साथ उसके रोकनेको भेजे। गङ्गाके तटपर दोनोंको मुठभेड हुई। इखलास खां हारा, दौलतखाने पीछा किया और पटनको जा लूटा।

फिर अभग खां शाहअलीको लेकर बीजापुरकी तरफसे आया। उसके दूत पहलेसे आकर किलेमें जानेका मार्ग जान गये थे सो वह उसकी सोधमें चला आ रहा था। परन्तु तडके ही उसको पहुचनेसे पहले सुलतान सुरादने, जो सोरचोंकी देखने चढा था, वहा खाली जगह देखकर खानखानाको भेज दिया।

अभग खां ३००० हजार चुने हुए सवार और १००० बन्दूकची लेकर रातके अंधेरेमें वहा पहुचा और इन लोगोंको सोया हुआ देखकर लडनेको चढ आया।

खानखाना २५० सवारोंसहित जो पहरे पर थे छतके ऊपर जाकर तीर मारने लगे और उनका नौकर दौलत खां भी ४०० पठान सहित आ गया और दौलत खांका बेटा ६०० सवारों सहित चढा। तब अभग खां तो शाहअलीके बेटे और ४०० वीरों सहित खानखानाके डेरेमें होंकर किलेमें घुस गया और शाहअली वाकी लश्करको लेकर जिधर आया था उधर हीको भागा। दौलतखाने पीछा करके ८०० दखिनीयोको तलवारके घाट उतार दिया।

चांदबीबीने बीजापुरके बादशाहसे मदद मागी। आदिल खाने सुहेलखांको २५००० सवारों सहित भेजा। मियां सभू और अहमद निजामशाह वगैरः भी उसमें जा मिले। ५१६ हजार सवार और बहुतसे पैदल गोलकुण्डके बादशाह सुहमदअली कुतुबशाहके भेजे हुए महदी कुलीको अफमरीमें आये।

सुलतान सुरादने ये खबरें सुनकर इन लोगोंके आनेसे पहिले ही अहमदनगर फतहकर लेनेका विचार करके ५ सुरंगों अपने डेरेके किलेमें लगायी और रज्जवकी चांद (१) रातको उनमें दारूद

भरकर दवादी । दूसरे दिन जुमेकी नमाज पढ़नेके पीछे गान लगा नेशा घरादा था कि रात हीको मुहम्मदशाह नौगाजीने तिनमें जाकर उन सुरगोंका पता बता दिया । चाट मूनतानाने सुरगकी बाखुद तो शक्रवारके दो पहरतक निशानवा ली । बाकी मरगकी खोज हो रही थी कि शाहजादे और मादिक मुहम्मदशाने जो नहीं चाहते थे कि अहमद नगरकी फतह गानग्यानाके नामसे हो, उनको सूचित किये बिना ही सुरगोंमें भाग देटी जिनमें किलेकी ५० गज दीवार उड़ गयी, किलेवाने जो तीसरी मरगकी खोद रहे थे कुछ तो वही मर गये और बाकी भाग निकले । चादसुलताना फौरन महलमें निकलो और तलवार लेकर यहा आ खड़ी हुई । उसे देखकर और लोग भी आगये । शाहजादे और उसके अमीर तो बाकी सुरगोंके उड़नेकी बात देखते रहे और इन्होंने तोपे बान और बन्दूके चुनकर रास्ता बन्दकर दिया और जब शाहजादेकी फौज धावा करके आयी तो उसपर ऐसे वान और गोले मारे कि घबराकर लौट गयो । किला फतह न हुआ । सबने चांदबीबीकी तारीफकी और उमने भी वही खडौ रहकर रातीरात वह गिरी हुई दीवार फिर उठवाली ।

शाहजादेने किला फतह न होने, नाज चारेके कम हो जाने और दक्षिणके बादशाहोंका कटक निकट पहुचनेसे खानखानाको सलाह पूछी कि अब क्या करना चाहिये । ये सादिकखासे नाराज थे इसलिये पहिले तो इन्होंने यही कहा कि जो सब मरदारोकी सलाह हो वही ठीक है । परन्तु जब बहुत कहा गया और सबने अपने विरुदाचरणपर पछतावा किया तो इन्होंने कहा कि उधरसे तो दक्षिणके बादशाहोंका कटक चला आरहा है और इधर अनाज भी घास और दूसरी आवश्यक वस्तुओंके न होनेसे घोडो और आदमियोंका बल घट गया है इसलिये यह समय लड़नेका नहीं है । अभी तो यही उत्तम बात है कि यहासे बूच करके बराडमें चले और उस देशको फतह करे । जब अपना राज्य जस जावे और

यहांकी आदमी अपनेसे हिलमिल जावें तो फिर झुधर आकर अहमद नगरको फतह करलें। शाहजादेने और सब लोगोंने जो खुराक न मिलनेसे घबरा गये थे इनका कहना स्वीकार करके इन्हींको पूर्ण अधिकार इस कामका दे दिया। तब इन्हींने सुरतिजा खांकी अहमद नगरमें भेजकर ऐसा उपाय किया कि चांदबीबीने दक्षिणके बादशाहों और अपने अमीरोंसे गुप्त सन्धि करली जिसमें यह ठहरा कि बराडका उतना प्रदेश जो तफावल खांकी (१) पास था शाहजादा लेले और बाकी राज्य माहोरके किलेसे चोल बन्दरतक और परेंडेसे दौलताबादके किले और गुजरातकी सीमातक अहमद नगरके अधिकारमें रहे। जब इस सन्धि पत्रपर दोनों तरफके बड़े बड़े अमीरोंकी मोहरें हो गयीं तो खानखाना शाहजादेको लेकर चित्तोरके घाटसे दौलताबादकी तरफ चले गये। उस समय सुहेलखां अहमद नगरसे ६ कोस पर था। इस सन्धिकी खबर सुनकर देखनी और हवशी अमीर उसको, मियां मंभूको और अहमद शाहको छोडकर अहमदनगरमें चले आये और चांदबीबीके हुक्मसे बालक बहादुर शाहको जुनेरसे लाकर बादशाह बना सुहेलखा, मिया मंभू और अहमदशाह बीजापुरकी चले गये।

बहादुर निजाम शाहने अपने धा भाई मुहम्मदखांको पेशवा (२) किया उसने अभ गखांकी कैदकर दिया जिससे फिर अहमद नगरके राज्यमें उपद्रव होनेकी चेष्टा हुई। चांदबीबीने फिर बीजा-

१। तफावल खा बराडका अन्तिम बादशाह था जिससे सुरतिजा निजामशाहने यह मुल्क सन् ८८२ सवत १६३१ में छीन लिया था।

२। दक्षिणी बादशाहोंमें पेशवाका खिताब मुख्य मन्त्रीको दिया जाता था। वही खिताब पूनाके पेशवाओंने भी सितारेके राजाओंसे लेकर ग्रहण किया था।

पुरके बादशाहकी लिखा । उसने फिर सुहेलको मन् १००५में (१) भेजा । मुहम्मदकाने कहना नहीं माना तो सुहेलखाने चादवीत्रीकी सलाहसे अहमद नगरको घेरा । मुहम्मदकाने खानखानाको पत्र लिखकर बुलाया । इसपर दखनी सरदारोंने उसको पत्रादा और अभद्रताकी छोडा । अभद्रतां पर चांदसुलतानाकी भरोसा था इस लिये इसीको पेशवा बनाया और सुहेलतांको मान सम्मान देकर विदा किया । उसने जाते हुए राजापुरमें सुना कि दिल्लीके अमीरोंने सन्धिके विरुद्ध बराडसे आगे बढ़कर पाटडोमें अभिलकर लिया है इसलिये वही ठहरकर आदलतकी अर्जा लिखी ।

इधरसे चांदसुलतानाका भी पत्र पहुंचा कि मुगलोंने सन्धि तोड़ दी है । आदिलखाने सुहेलखाको लडनेका हुक्म लिखा और कुतुबशाहने भी अपनी सेना भेजी । अहमद नगरसे भी ६०००० सवार बराडको विदा हुए ।

खानखाना जालनमें थे । उन्होंने दखनियोंको यह हलचल सुनकर सेना एकत्रकी और शाहपुरमें शाहजादेके पास जाकर तब हल कहा । फिर उसको वही छोडकर २०००० सवारीं सहित सुहेलखाके जपर गये । क्योंकि वे यह चाहते थे कि यह फतह मेरे नामसे हो ।

१८ जमादिउस्सानीकी (२) तीसरे पहरसे लड़ाई शुरू हुई । सुहेलखाने मारे तोपोंके राजा अलीखा और राजा जगन्नाथकी जो

१ । स० १६५३-५४ ।

२ । फागुन वदी ४ सवत १६५३ । अकबर नामेमें इस लड़ाईकी ता० २८ बहमन लिखी है जो पहिले लिख आय है । उस दिन फागुन वदी ३० थी और जमादि उस्सानीकी २८ थी न मालूम यह १० दिनका अंतर कैसे है और किसकी भूल है । हमारी समझमें यह लिखकका दोष है क्योंकि १८ जमादिउस्सानीकी १८ बहमन थी जिसकी २८ नवाल करनेमें हो गयी होगी ।

सामने आये थे ४००० सिपाहियों सहित मार डाला और शाय होते होते धावा करके मुगलोंकी फौजको ऐसा दबाया कि वह भागकर शाहजादेके पास जाकर ही ठहरी । सादिकखाने भी शाहजादेको लेकर दक्खिनसे निकल जानेकी तय्यारी की । परन्तु खानखाना इतनी भागड़ पड़ जानेपर भी थोड़ेसे आदमियोंसहित अपनी जगह पर जमे खड़े रहे वल्कि दख्नियोंको सामनेसे हटाकर वहां आ रुड़े हुए जहा सुहेलखांका तोपखाना चना था । सुहेल भी सामने ही था । परन्तु पहर रात गये तब दोनों एक दूसरेके हाथसे अज्ञात रहे । फिर कुछ मशालें सुहेलखांके आगे जलायी गयी, खानखानाने बादमी भेजा तो मालूम हुआ कि सुहेलखां है, तब उसीके तोपखानेमेंसे कई तोपें उसकी तरफ छोड़ीं, सुहेलखां मशालें बुझाकर वहांसे हट गया ।

खानखानाने अपना नझारा बजाया और नरसिंगाफूंकाले जिसकी छनकर कुछ बादशाही लाग जो अम्बरेमें छिपे थे उनके पास आ गये । सुहेलने भी जहां तक होसका १०।१२ हजार दख्नियोंको इकट्ठा कर लिया । दिन निकलते ही खानखानासे लड़नेको आया । खानखानाले पास ३।४ हजारसे जियादा सवार न थे । ती भी उन्होंने उसको हराकर नलदुर्गकी तरफ भगा दिया । अहमदनगर और गोलकुण्डेवाले पहिले ही भाग गये थे ।

फिर खानखाना परनाला और गावीसके किलों पर फौज भेजकर जालनाको छीट गये ।

शाहजादेने सादिक खांके कहनेसे खानखानाको कहलाया कि अब अवसर है, चरकर अहमदनगरको ले लें । खानखानाने जवाब दिया कि अभी तो यही उचित है कि इस वर्ष बराडमें रह कर यहाके किलोंको फतह करे और जब यह देश पूर्णरूपसे दब जावे तो दूसरे देशों पर जावे । इस जवाबसे शाहजादेने बुरा माना और बादशाहको शिकायतकी अर्जियां भेजीं जिस पर बादशाहने खानखानाको बुलाकर शेख अहुमफजलको दक्षिणका सेनापति करके भेजा ।

## खानखाना दरबारमें ।

जब बादशाहको खानखानाके चले आनेका समाचार लगा तो २५ फरवरदीन (१) सन् ४३ को अपने निज सेवक शालिवाहनको दक्षिणमें भेजा कि जाकर शाहजादे मुग़दको ले आये, उसको सुशिक्षा देकर फिर वहाँ भेजेगे और रूप ख़ुवामकी हुक़्म दिया कि खानखानाको भिडक कर दक्षिणमें लौटा देये। सो शाहजादेके पक़े पहुँचने तक वहाँको सेनाओंका और देशोंका प्रबन्ध रग़्ने।

शाहजादा तो आता था, परन्तु उसके साथके स्वार्थी अमीरोंने अपने स्वार्थसे उसको नहीं आने दिया और इन्होंने अर्ज करायी कि जब शाहजादे आ जावेंगे तो मैं चला जाऊँगा। बादशाहको यह बात नहीं भायी। तब ये अपनी ज़मीरसे चलकर १२ आबानको (२) लाहौरमें बादशाहके पास पहुँचे। बादशाहने इनके अपराध क्षमा करके दरबारमें बुलाया।

## बादशाहकी खफ़ागी।

मअसिर उल उमरामें लिखा है कि बादशाहने कई दिनों तक इनकी छोटी बन्द रखी। ये निरन्तर शाहजादेकी अप्रसन्नता सादिक़ खाकी शत्रुता और और अपनी बेगुनाही तरह तरहसे अर्ज कराते रहे। निदान बादशाहने क्षमा करके इनको दरबारमें बुलाया और दक्षिण फतह करनेकी सलाह पूछी तो इन्होंने शाहजादेको बुला लेने और उस लड़ाईका पूर्ण अधिकार अपनेको मिलनेकी प्रार्थना की। यह बात बादशाहकी बुरी लगी और फिर इनको मनसे उतार दिया।

## साहबानू बेगमका देहान्त।

२६ आबान (३) सन् १००७को बादशाह लाहौरसे आगे

१। चैत सुदी ८ संवत् १६५५।

१। कातिक सुदी ६ संवत् १६५५।

३। मगसर वदी ५ संवत् १६५५।



चले। अस्त्रालीमें पहुँचनेपर इनकी वेगम माइवानूँ जो खान आजमकी बहन थी, बीमार हो गयी। बादशाहने उसकी बही छोड़ा और इन दोनों अमीरोंकी भी कुछ दिन उसके पास रहनेकी आज्ञा दी। वह ७ टे (१) सन् १००७ को मर गयी जिससे इनकी तो जो दुःख हुआ सो हुआ पर बादशाहने भी बहुत शोक किया, क्योंकि दूध शरीर बहन थी।

फिर दक्षिणमें जाना ।

बादशाह १६ बहमन (२) सन् १००७ को आगरे पहुँचे और शिख अवुलफज्जको शाहजादे मुरादके पास भेजा। यह २५ बहमनकी (३) चलकर १८ उर्दीबहिश्त (४) सन् ४४ को यहां पहुँचा। २२ को (५) शाहजादा मुराद मिरगीसे मर गया। बादशाहने यह प्रशुभ समाचार सुनकर शाहजादे दानियालकी मुरादकी जगह नियत किया। वह २ तीर (६) सनको विदा हुआ, पौछेसे ६ महर (७) सन् ४४ को बादशाहने भी बूच किया। १८ महरकी (८) इन्हें भी शाहजादे दानियालके पास जानेका हुक्म दिया। विदा करते समय डेरे पर पधार कर मान बढ़ाया और यह भी फरमाया कि जब यह बड़ा पहुँच तो शिख अवुलफज्ज दरबारमें आ जावे।

अहमदनगरके शाहको पकड़ कर बुरहानपुरमें ले जाना ।

जब ये शाहजादेके पास पहुँचे तो शाहजादेने २ उर्दीबहिश्त (९) सन् ४५ को अहमदनगर पहुँच कर मोरचे लगाये और चार महीने पौछे ६ शहरवरको (१०) बह किला फतह कर लिया।

१। पौष वदी ३० सवत १६५५। २। माघ सुदी १० सवत १६५५। ३। फागुन वदी ३ सवत १६५५। ४। वैशाख सुदी १४ सवत १६५६। ५। जेठ वदी २ सवत १६५६। ६। आश्विन सुदी २ सवत १६५६। ७। आश्विन सुदी १० सवत १६५६। ८। कार्तिक वदी ८ सवत १६५६। ९। वैशाख सुदी ८ सवत १६५७। १०। भाद्रपद वदी ४।५ सवत १६५७।

खानखाना बहादुर निजामको पकड़ कर बादशाहके पास जो उस समय बुरहानपुरमें आये थे ले गये, तो ८ प्राजरको (१) उनका मुजरा हुआ।

### फिरिश्ताका लेख।

तवारिख फिरिश्तामें लिखा है कि अकबर बादशाहने गाँवरको घेरकर दानियाल सुलतान और खानखानाको अहमदनगरपर भेजा अभग खा हवशी जो १५००० सवारोंसे उन्हें रोकनेको गया था, तित्तारके घाटेसे हो वना लड़े डेर जलाकर जुनेरको भाग गया। शाहजादेने जाकर अहमद नगरको घेरा, जब किला टूटनेपर आया तो चादसुलतानाने धोखेखा हवशीसे जा किलेमें था कहा कि अब किला शाहजादेका सौंप दे और बहादुरशाहको धन और राज्य सामग्री सहित जुनेरमें ले चल। उसने यह सुनते ही सब लोगोंसे कह दिया कि चादबोबो ता सुगलासे मिलगया है और किला सौंपती है। इसपर दक्षिनियोने अन्दर जा कर, उस मरदानों बैगमको मार डाला। इधर शाहजादेने सुरगसे दौवार उडाकर किला ले लिया और बहादुरशाहके सिवाय सब लोगोंको मार डाला।

राजू और अम्बरसे लडाइया।

खानखानाके बुरहानपुर जानेके पछे राजू दखनी और अम्बर चम्पू हवशीने शाहअलोंके बेटे सुतजा निजामशाहको अपना स्वामी स्थापित करके बादशाहों धानोंपर आक्रमण किया। बादशाहने आसिरमें यह समाचार सुनकर २३ बहमनको (२) इन्हे अहमदनगर और शेष अबुलफज्जूको नासिक भेजा। इनके पहुँचते पहुँचते मुर्तिजाके पास बहुत सेना एकत्र हो गयी थी जिससे बादशाहने शेरको भी पास जानेका हुक्म लिखा, वह नासिकके रास्तेसे लौटकर वरण गावमें इनसे आ मिला।

१। मगस्र बदी १० सवत १६५७।

२। मगस्र सुदी ८ सवत २६५३

१० असफन्दारको (१) शाहजादा दानियाल भी बादशाहके पास गया । बादशाहने उसको सेवासे प्रसन्न होकर खानदेश उसको दिया और खानदेशका नाम भी दानदेश रख दिया और उसका विवाह खानखानाकी बेटी जानावेगमसे किया ।

बादशाहका कूच आसेरसे ।

११ उर्दी बहिश्त (२) सन् ४६ को बादशाह आसेरसे आगराको कूचकर गये । २८ को (३) शाहजादे दानियालको नर्मदासे बुरहानपुर आनेकी आज्ञा हुई ।

अस्वरसे सन्धि ।

खानखानाके और शेरके पहुँचते पहुँचते राजू और अस्वर-चम्पू बहुत बल पागये थे । शेरने राजूको कई बार हराया तभी उसने न सिक और जालनाके किले लेलिथे और अस्वरने तिलहाने पर चढ़ाई करके कई बादशाही अमीरोंको पकड़ लिया । तब ये अहमद नगरसे उम पर गये , शेरको भी बुलाया और लड़कर उसे भगा दिया तभी भी देघकाल देकर सन्धि करली और अली सरदान वगैरोंको छोड़कर कुछ प्रदेश भी छोड़ दिया और अस्वरसे यह स्वीकार करा दिया कि वह आज्ञामें रहेगा और अपनी सीमासे आगे न बढ़ेगा ।

शेरकी सन्धति इस सन्धिमें नहीं थी इसलिये वह नाराज हो कर बुरहानपुरमें शाहजादेके पास चला गया और ये साजरा नदीसे सेनाको लौटा लाये ।

बादशाहने अस्वरका तिलहाना लेना सुनकर और सुर्तिजाकी । तिलहानेपर भेजा और लिखा कि खानखाना तो पाठडी और तिलहानेकी बीहमें रहे और शेर अबुलफज्ज राजूके रूपर जावे ।

१ । फागुन वदी १० स वत १६५७ ।

२ । वैशाख वदी १३ स वत १६५८ ।

३ । वैशाख सुदी १५ स वत १६५८ ।

मिरजा वस्त्रम, राजा सूरजसिंह, और राजा धिक्तादित्य जे  
खकी रुहायतापर नियत हुए ।

अम्बरका सन्धिसे फिरना ।

अम्बरचम्पू इधरसे सन्धि करके वराडके अधिपति मलिन बुरी  
ढके ऊपर गया और उसको जीतकर गोलकुण्डके हुतुतुलमुल्कमें  
लडा । दोनोंसे ४३ हाथी और बहुतसा धन माल लेकर तिलगानेपर  
गया । मीर मुर्तिजा तो किलेमें ही बैठा और अम्बरने वह देश  
ढबाकर और भी आगेको पाव फैलाया ।

बादशाहने शाहजादेकी अजीसे यह सब समाचार जानकर  
हुक्म लिखा कि श्रेष्ठ तो जालनापुरकी जावें । अहमद नगरका सर-  
च्चण और राजूका निकन्दन उसके आधीन रहें । वराड पाठडी  
तिलङ्गानेका प्रबन्ध और अम्बरपर आक्रमण खानखाना करे ।

ऐरच अम्बरकी हराना ।

अब एक हवशी और उठा । उसने पाठडी और पाटसमें आकर  
ह्वद मचाया । तब इन्होंने राजा सूरज सिंह और गजनी खा  
जालोरीको भेज कर उसे भगा दिया । फिर अपने बेटे ऐरचको  
एक भारी फौज देकर अम्बर चपूके ऊपर भेजा । लडाईमें राजा  
सूरजसिंह आदि राजपूत सरदार अग्रगामी थे । बीचमें इतनी सेना  
ऐरचके साथ थी । इन्ही दोनों फौजोंने अम्बरको भगा कर खेत  
जीता, २० हाथी छीने और बहुतसा द्रव्य लूटा ।

अबुल फज्लका मारा जाना ।

श्रेष्ठ अबुलफज्लको बादशाहने अपने पास बुलाया । वह  
आगरेकी जाता था कि बडे शाहजादे सुलतान सलीमके हुक्म देने  
पर बुन्देला राजा बरमिह देवके हाथसे वह ता० १ (१) रबीउल  
अव्वल सन् १०११को मारा गया और दक्षिणकी लडाइयोंका सारा  
भार इनपर आ पडा ।

एरचका फिर अश्वरकी हराना ।

इन्होंने फिर तिरजा एरचको सखर पर भेजा । इस बार एरचने फिर बड़े घडकीसे अश्वरकी हरायी । उसके सारे हाथियों और नडाईके सामानकी कीम लीया । बादशाहने प्रसन्न होकर उसकी बहादुरका खिताब दिया और राय बिहारीचन्दके भतीजे जादो दासके हाथ इनकी, शाहजादेकी और एरच बहादुरकी प्रशंसा पत्र भेजी ।

बादशाहका दानियालकी बुझाना और उसका खानखानाके पास जाना ।

शाहजादा दानियाल भी टारू बहुत पीने लगा था । पहिले पहिल तो बादशाह उसके छोड़ देनेकी शिक्षा लिखते रहे और अब अपने कई पास रहनेवालोंकी शाहजादेकी लेनेकी लिये भेजा । परन्तु शाहजादा बुझानपुरसे खानखानाके पास चला गया और बादशाहकी निख भेजा कि खानखानाकी अपने पास बुझाना उचित न समझकर मैं आप उसके पास इसलिये जाता हूँ कि समझाकर अपनी जगह छोड़ आऊँ ।

बादशाहने इसका यह जवाब लिखा कि ये सब तुम्हारे बहाने हैं खानखाना ऐसा चाकर नहीं है कि तुम्हारे बिना उस सूबेमें नहीं रह सके या उसको तुमसे कुछ समझने और उपदेश लेनेकी

अब फज़लने अकबर नामा सन् ४६ के अखीर तक लिखा है, फिर बाकी इतिहास अकबर बादशाहका सन् ४७ से सन् ५० के आदान तर्हीले तक मुहिब अली खाने यज्ञिस रीतिसे लिखकर उसमें लगाया है । परन्तु यह पिछला लिखा हुआ हाल किसी प्रतिमें है और किसीमें नहीं । खखनजले की अकबर नामा छपा है । उतमें नहीं है, दलगतमें जो छपा है, उतमें है ।

आवश्यकता हो या यह बात तो कि वह भी तुम्हारी भाति मध्य हो गया हो। अब जो तुम शराब नहीं छोड़ोगे और नारायण हुक्म नहीं मानोगे तो हम भी तुमको सुद्ध नहीं लिखेंगे।

खानखाना और दानियालका सिलाप।

खानखानाने गाव होनयखेमें अगवानों जाकर शाहजादेको बीजापुरके बादशाह आदिन खाके अमीरोंकी चिट्ठियाँ दिगलार्थों जो उसके वास्ते आदिन खाकी बेटोंका डेला लेकर जाते थे।

दानियालका व्याह आदिनखाकी बेटोंमें।

शाहजादेने मिरजा एरच बहादुरको ५००० सवारोंनहितोंडोगा लानेके लिये भेजा। वह "भीमडा" नदीके तटपर आदिन खाके सरदारीसे मिला। फिर शाहजादा भी आदिन खाका मान बढ़ानेके लिये खानखाना समेत अहमदनगर तक गया और वहाँ आदिन खाकी बेटोंसे व्याह करके बुरहानपुरमें लौट आया।

तूरान जीतनेकी सत्सति।

बड़े शाहजादे सुलतान सलीमके और बादशाहके बीचमें कई वर्षों से बिगाड चला आता था। वह सन् १०१३में (मृत्यु १६६१में) शाहजादे सलीमके इलाहाबादसे आगरामें बादशाहके पास हाजिर हो जानेपर दूर हो गया और बादशाहने अपने व पोतीके मुल्क बलख, बुखारा और समरकन्द उज्ज्वल जानिके अमीरोंसे पीछे लेने और अमीर तैमूरकी समाधिके दर्शन करनेका इरादा करके राजा मानसिंहकी बह्मालसे और खानखानाको दक्षिणमें हम बड़े दिग्विजयकी सलाह करनेके वास्ते बुलाया। राजा बादशाहके पास आगये और खानखानाने बुरहानपुरसे अरजी लिखी कि खुदाके फजलसे कोई रोकनेवाला नहीं है। जिधर कूच होगा, विजय लक्ष्मी हाथ बाधकर उपस्थित हो जावेगी। (१)

१। यह तो इकबाल नामे जहागीरीमें लिखा है और अफ़्क़ार नामेके अंशमें जो सुद्ध अलीशका लिखा हुआ है, यह बात

## दानियालकी दारूसे दुर्गति ।

इस बीचमें बादशाहने फिर कई सभ्य शाहजादे दानियालके लाने और शराब छुड़ानेके वास्ते भेजे तो उसने अब यह कहना निकाला कि “जब तक बड़े शाहजादे हजरतकी सेवामें हैं, मैं हाजिर नहीं हो सकता” । और शराब छोड़ना तो कहां दिन दिन उसकी मात्रा बढ़ती जाती थी, जिससे शाहजादेकी तन्दुरुस्ती बिगड़ गयी थी और मरनेकी नौबत आपहु ची थी ।

बादशाहकी ताकीदसे दारूकी रोक और दानियालकी मृत्यु ।

बादशाहने यह सलाचार पाकर खानखानाके ऊपर बहुत कोप किया और पूरे पूरे बन्दोबस्त करनेकी ताकीद लिखी । तब तो खानखानाने शाहजादेकी शराब बन्द करनेकी पहरे बिठा दिये और लोगोंका आना जाना बन्दकर दिया ।- तोभी बाजे खिदमतगार बन्दूकीकी नालियोंमें तेज शराबें ला लाकर पिलाते थे । जिनका परिणाम यह हुआ कि २८ शव्वाल (१) सन् १०१३ को शाहजादेका प्राणान्त हो गया । परन्तु खानखानाके उपस्थित होनेसे सेनाके प्रबन्धमें किसी प्रकारकी गड़बड़ सड़बड़ नहीं होने पायी । उन्होंने कई आदमियोंको जो निषेध करदेपर भी छिपे छिपे

यों लिखी है कि बादशाहने यह सुनकर कि तूरानका बादशाह बाकी, मुहम्मद खां प्रजाकी पीड़ा देता है, उस विलायतके फतह करनेका इरादा किया, जो उनकी वापोती थी । खानखानाकी दक्षिणसे, कुलीच खांको लाहौरसे और राजा मानसिंहको बङ्गालसे बुलाया । खानखानाने तो जो लाश छल और कपटका घड़ा चुआ था, दक्षिणकी मुहिमको बहुत भारी बताकर अपना रहना वही आवश्यक समझा । राजा मान सिंह और कुलीच खां हाजिर हो गये । परन्तु वह विचार पूरा न हुआ ।

१ । चैत बदी ३० सवत १६६१

टारू लाकर पिलाते थे जानसे सरवा डाला । उनकी पुी जाना वेगमने शाहजादेके साथ प्राण देनेका बहुत मायन किया प्राण बड़ी सुशकिलीसे खानखानाने उसकी रोका , तो भी वेप उनसे अपनी अवस्था बडे शोक और मन्तापसे मैले हुवेले जपडोमे काटी ।

दक्षिणमें पूर्ण अधिकार ।

शाहजादे के पीछे दक्षिणका पूर्ण अधिकार खानखानाकी मिल गया और वे बहुत बरसीतक उस बडे सूवेमें सन्धि बिगड़ करनेकी समर्थ रहे ।

तवारीख फरिश्तासे अहमदनगर और खानखानाका कुछ ज्ञान ।

तवारीख फरिश्तामें जो वृत्तान्त अहमद नगरके टूटनेसे अकबर बादशाहके देहान्त तकका लिखा है वह यहा उद्धृत किया जाता है । इसके दो अभिप्राय है , पहला तो यह कि वह खानखानाकी जीवनीसे सम्बन्ध रखता है ; दूसरा यह कि जो फेरफार और अन्तर इतिहासोंमें रहता है वह भी इस ग्रन्थके पाठकोंको विदित हो जावे और वे समझ लें कि जब एक ही मनुष्यके थोड़ेसे वर्षोंके वृत्तान्तमें इतिहास वेत्ताओंका लेख परस्पर मेल नहीं खाता है तो सैकड़ो हजारों वर्षोंके बने हुए पुराणोंकी कथाओंमें भेद पाया जाना कुछ विचित्र नहीं है ।

तवारीख फरिश्तामें लिखा है कि अहमद नगर छूट जानेके पीछे निजमशाही अमीरोंने शाह अलीके बेटे सुरतिजाको अपना बादशाह बनाकर परेडेके किलेमें राजधानी की । उनसे अख्बर हवशी और राजू दणनी जो कुछ बडे सरदार नहीं थे अपने पराक्रमसे थोड़ेही दिनों में इतने बढ गये कि अख्बर अहमद नगरके दक्षिणमें तिलङ्गानेकी सीमातक और राजू उत्तरमें गुजरातके सि-  
याने तक धरती दबा बैठा । पर दोनों रों एका न था , एक दूसरेकी गिदाला चाहता था । खानखानाने यह बात समझकर अपनी कुछ सेना भेजी जिसने अख्बरकी भूसिका थोडासा भाग जो तिलङ्गानेकी तरफ था जीत लिया । यह सुनकर अख्बर ७८ हजार



सवारों सहित सन् १०१० में (१) वहां गया और खानखाना की थाने उठा दिये । तब खानखानाने मिरजा एरचको ५००० सवारों सहित भेजा । नांदेरी के पास अम्बरसे मुकाबिला हुआ । एरचको अपना नाम कारनेवी धुन थी और अम्बरको अपनी जमीन बचाने की । इसलिये दोनों बड़ी झूठतासे लड़े । अम्बर घायल होकर रणांगनमें गिरा । उसके अनुचर उसी क्षण उसको उठाकर ले गये और मिरजा एरचकी जीत हुई ।

अम्बर हथोड़ी था और जानता था कि साहस दिखाये बिना देशकी रक्षा न होगी । इसलिये फिर लड़नेका उद्यम करने लगा । खानखानाने उसको वीर पुरुष देखकर सन्धि कर लेनेका विचार प्रजट किया । वह भी इसमें अपना लाभ समझकर राजी हो गया । प्रदे की राजूना उसको खटका लगा हुआ था वल्कि खानखानाको १८ ईस्वीको वह उसीकी साजिश समझता था ।

जब सन्धि ठहर गयी तो अम्बर खानखानासे आकर मिला और अपनी सीसा हिर कर गया ।

खानखानाने अम्बरसे सन्धि करके बीजापुरके बादशाह आदिल-शाह पर जोर डाला । उसने बहुतसा नजराना देना करके अपनी बेटीका पीला सुल्तान दानियादके वास्ते भेजा । खानखानाने बुरहा-नपुर जाकर यह बधाई शाहजादेकी दी तो वह सुहृद सन् १०१३ में (२) नासिक और दौलताबादके वास्ते से अहमद नगरको गया । यह प्रदेश राजूकी अधिकारमें था इसलिये उससे कहलाया कि वह भी अम्बरकी तरह अधीन होकर सेवामें आवे और अपनी भूमिका पटा करादे । परन्तु राजूने इस बातपर विश्वास न किया तब शाहजादेने क्रुद्ध होकर उसको दण्ड देना चाहा । राजू भी

१। सवत् १६५८-५९

२। छठ सुदी ३ सवत् १६६१ से असाढ़ सुदी २ सवत् १६६१ तक

८००० खवारों सहित नडनेको पाया। परन्तु मन्सुन नही होता था और इधर उधर रहकर नूट मार करता था। शाहजादेने जालनापुरमें आदमी भेजकर खानखानाको बुलाया। वे जीध ही ५।६ हजार सवार लेकर गये। राजू उनकी पट्ट चते ही शाहजादेका पीछा छोड़कर दूर चला गया। तब शाहजादा और खानखाना अहमद नगर जाकर डोलेकी पट्टनमें जाये। वहाँसे शाहजादा तो विवाह करके बुरहानपुरको लौट गया और वे जालनापुरमें चले आये।

फिर मुरतजा निजामशाहने अश्वरकी कठोरतासे व्याकुल हो कर राजूको बुलाया। वह परेडेमें जाकर उससे मिना और अश्वरने उससे कई लडाइयोंमें पराजित होकर खानखानासे सहायता माँगी। इन्हीने बीयरदे हाकिम मिरजा हुमेन वेगको २१ हजार खवारों सहित भेजा। अश्वरने इस सेनाके वनसे राजूको हर कर दौलताबादकी तरफ भगा दिया।

फिर खानखाना तो जालनापुरसे बुरहानपुरमें चले गये जहाँ शाहजादे दानियालके मरजानेसे उनकी रहना पडा और अश्वरने दौलताबादपर चढाई की। राजूने कायरतासे खानखानाकी शरण ली। वे बुरहानपुरसे दौलताबादको आये और ६ महीनेतक दोनोंके बीचमें पड़े रहे जिससे दोनोंमेंसे किसीको भी अपने विपक्षीसे लड़नेका साहस न हुआ। विद्वान अश्वर खानखानाको राजूके पक्षमें देखकर उनकी कहनेसे राजूके साथ सन्धि करके परेडेको पला गया, तब यह भी जालनापुरमें आगये।

जहागीर बादशाहका समय।

सन् १०१४ में (१) अकबर बादशाहका देहान्त होनेपर शाह-

१। अकबर बादशाहका देहान्त संवत् १६६२ में कार्तिक सुदी १४ की रातको हुआ था। उस दिन ४ आबान सन ९० और १३ जमादिउस्मानी १०१४ थी। दूसरे दिन दफन किये गये।

जादे सरीस आगरेमें तख्तपर बैठकर जहांगीर बादशाहके नामसे राज्य करने लगे । उन्होंने भी खानखानाको उसी अधिकार पर रहने दिया । परन्तु मुकर्रबखांको भेजकर शाहजादे दानियालके बेटोंको उनके पाससे सगवा लिया ।

खानखाना दरबारमें ।

अकबर बादशाहके मरनेसे दक्षिणमें शत्रुओंका जोर बढ़ गया था जिससे खानखाना २३ वर्षतक जहांगीर बादशाहके पास न आसके । सन १०१७में (संवत् १६६५में) कुछ अवकाश मिला तो आगरे पहुचकर रबीउल्लानी मझीनेकी २४ तारीखको (१) बादशाहके चरणोंमें उपस्थित हुए । बादशाहने जैसा कुछ उनका आदर सत्कार किया वह बादशाहने ही अपने हाथसे तुलुक जहांगीरमें इस भांति लिखा है:—

एक पहर दिन चढ़ा था कि खानखाना जो मेरी अतालकीके सहित अधिकारसे सम्मानित है, बुरहानपुरसे आकर सेवामें उपस्थित हुना । उसको इतने आनन्द और उछ हका आवेश हो रहा था कि वह नहीं जानता था कि पावले आया है या सिरसे । उसने बड़ी व्याकुलतासे अपनेको मेरे पांवोंमें डाल दिया और मैंने भी हाथानुहाथ और दयानुहाथ उसको उठाकर छातीसे लगाया और उसका मूँह चूमा । उसने दो हार मोतियोंके कई हीरे और कई साणिक भेंट किये जिनका मोल ३ लाख रुपये हुआ । उनके सिवाय बहुतसी चीजें और सौगाते भेंट कीं ।

जहांगीर बादशाह ८ जमादिउल्लानी गुरुवारको अपना राज सिंहासनपर बैठना लिखते हैं । सो सालूस नहीं यह क्या बात है । तारीखके साठ दिन भी लिखा है जिससे भूल हो जानेका भ्रम नहीं हो सकता । उस तारीखको गुरुवार ही था वापके मरनेके पीछे बेटा तख्तपर बैठता है, ये ६ दिन पहिले ही कैसे बैठ गये होंगे यह विचारनेकी बात है ।

१ । मार्चो वदी १२ संवत् १६६५ ।

जसादि उम्मावी महीनेकी २१ तारीखकी (१) खानखानाने निजामुल्मुल्कको बादशाहीका श्रेष्ठ भग विजय कर देनेकी प्रतिज्ञा की और यह बात लिख दी कि जो दो वर्षमें यह कार्य न कर दू तो अपराधी होऊँ। परन्तु जो सेना उस प्रान्तमें नियत है उसमें अधिक १२००० सवार और १० लाख रुपये और मुक्तकी मिन जावें।

बादशाहने मन्त्रियोंको आज्ञा की कि शीघ्र ही सब सामग्री सज्ज करके खानखानाको दे दो।

रज्जबके (२) महीनेमें बादशाहने ससन्द घोड़ा जो ईरानके शाहका भेजा हुआ था और तबले भरमें श्रेष्ठ था, खानखानाको दिया। बादशाह लिखते हैं कि खानखाना इतना प्रसन्न हुआ कि जिसका कुछ वर्णन नहीं हो सकता। सच तो यह है कि ऐसा बड़ा और अच्छा घोड़ा अभीतक हिन्दुस्थानमें नहीं आया था और फतूह नाम एक हाथी भी जो लडनेमें अद्वितीय था बीस और हाथियों सहित दिया।

खानखानाकी विदा दक्षिणकी।

खानखाना तारीख १४ शवान (३) रविवारको बादशाहसे विदा हुए। बादशाहने जडाऊ तख्तवार, पेटी और शिरोपाव खासा हाथी समेत प्रदान किया।

शाहजादे पश्वेजकी चढ़ाई।

दक्षिणमें जब ये समाचार पहुँचे कि खानखानाने अहमदनगरके श्रेष्ठ भागको जीत देनेकी प्रतिज्ञा बादशाहसे की है तो अख्बर और राजू भी सन्धि तोड़ बैठे और उन्होंने बीजापुर और गोलकुंडेके बादशाहीकी भी अपनी सहायता पर खज्जित कर लिया। इसने

१। आसोज बदी ८ सवत १६६५।

२। यह रज्जबका महीना आसोज सदी २ को लगा था।

३। मगसर बदी २ सवत १६६५।

खानखाना बुरहानपुरमें पहुँचे और उन्होंने दक्षिणका वह राग देखा तो नीति निपुणत से बात ठेड़ी डाल दी और उन लीशरीको अपनी ओरसे अशान्त न किया । इधर बादशाहसे झूठे न पड़नेकी अर्जियोसे ऐसी बातें जतयी कि बादशाहने किसी एक शाहजादेके भेजनेकी आवश्यकता देकर बार सुलतान परवेजको तैयार किया । ५ लाख रुपये उसको और बीस लाख उसके साथके लश्करको सजानेके लिये दिये । १ जमादिउस्सानी (१) सन् १०१८ को अमीर-उल्-उमरा और जगन्नाथके बेटे करमचन्दकी, और ८ रज्जबको (२) राय जयसिंहकी नौसरी शाहजादेके साथ बोली गयी १४ रज्जबको (३) मङ्गलके दिन शाहजादा बिदा हुआ । उसको और उसके साथी अमीरोंको भारी भारी शिरोपाव हाथी घोड़े और जड़ाऊ हथियार दिये गये और १००० अहदी भी साथ गये परन्तु इन बातोंके करनेसे पहले बादशाहने सुल्ता हयातीकी खानखानाके पास भेज कर बहुत सी बातें कण अनुग्रहकी कहलायीं । २ रमजानको (४) बादशाहने फिर बड़ा एक कटक जिसमें १८३ मनसबदार और १४६ अहदी थे शाहजादेके पास भेजा ।

सुल्ता हयाती खानखानासे मिल कर १ जीवादको (५) अजमेरमें बादशाहके पास आया । १ लाख और २ मोती खानखानाकी भेंट लाया जो २००००० रुपयोंके आंके मये ।

बानजहा लोदी दक्खनकी सुद्धिस पर ।

शाहजादेका और इन फौजोंका आना सुनकर दक्खनी लड़नेका इत्तेफाक नही करे । अभी शाहजादा पहुँचा भी नहीं था कि

१ । भादी एदी २ सं० १६६६ ।

२ । असीन-एदी ८ ।

३ । असीन एदी १५ मंगलवार ।

४ । मंगसर एदी ४ सवत १६६ ।

खानखानाने दक्कनियोकी यह दगा देना कर वादशाहको विनयपूर्वक लिखा कि सब दक्षिणी एकता दीकर उपद्रव किया चाहते हैं । वादशाहने परवेज और उसके साथी सेनाको भेजने पर भी यह जान कर कि यहां अभी और सहायताकी आवश्यकता है स्वयं जानेका विचार किया । अमीरनउल्लाह आसिफखाने भी लिखा कि श्रीमानोंका पधारना उचित है और बीजापुरने अजी पतुनी कि कोई सभासद यहां आ जावे तो मैं अपने अभिप्रायको उसके द्वारा प्रज करालू । इस पर वादशाहने सभासदोंसे कहा कि इस विषयमें जो जिसके जो जीमें आवे सो कहें । खानजहां लोदीने प्रार्थना की कि जब इतने बड़े बड़े अमीर जा चुके हैं तो फिर हजरतके पधारनेकी जरूरत नहीं , यदि आ जाओ तो मैं भी शाहजादेकी सेवामें जाऊ और लड़ाईको समाप्त करूं । इस बातको मराहना और लोगोंने भी की । तब वादशाहने १७ जीकाद को (१) उसे भी बहू-मूल्य वस्त्र जहाज हथियार हाथी और घोडा देकर दक्षिणको बिटा दिया और फिटार्ईखांको आदिशहाकी पास भेजनेके लिये साथ दिया ।

राजा बरमिहदेव, विक्रमाजीत, और गुजाअतखा वगैरह भी ४१५ हजार सवारों सहित खानजहाकी सहायतामें नियुक्त हुए परवेजके वास्ते खासा घोडा और खानखानाके लिये सिरो पाव भेजा गया ।

### वादशाही लश्करकी फूट और हार ।

जब सब लश्कर, सरदार और शाहजादे दक्षिणमें एकत्र हुए तो फिर वही ईर्ष्या और खेचा तान होने लगी, जो शाहजादे मुरादके समयमें थी और जब शाहजादे परवेजने वाला-घाट पर लड़ाई की तो सरदारोंकी फूटसे यहां तक काम बिगडा कि शत्रुओंने बल पाकर रसद रोक दी । हाथी बहुतसे घोडे जट

और दूसरे उपयोगी पशु सर गये। निदान दीनता दिखाकर शत्रुओंसे सिलाप करना पडा तब कहीं पीछे आनेकी रास्ता मिला और उधर अहमदनगरका किला कब्जेसे निकल गया।

खानखाना पर टोप लगाना ।

अब सब सरदारोंने मिलकर बादशाहको अर्जी लिखी कि ये सारे काम खानखानाकी ईर्ष्या और बेबन्दोबस्तीसे बिगडे हैं। परन्तु बादशाहको विश्वास न आया। तब खानजहा लोदीने (१) जिसका बादशाहको बडा भरोसा था, लिखा कि बास्तवमें यह सारी बुराई और बदनामी खानखान की झुटिलत से हुई है। अब यातो इन सूत्रोंमें उल्टीकी स्थिर रहने देना चाहिये या उसे दरबारमें बुलाकर यह कार्य सुझे मिल जाना चाहिये और ३०००० सवारोंकी सहायता भी मिलनी चाहिये। सै २ वर्षमें बीजापुर तक सारे दक्षिण देश पर बादशाही राज्यकी जड जमा दूना और जो इस अवधिमें यह काम सुझसे पूरा न हो सका तो सै सुझ नहीं दिखाऊगा।

खानखानाका दरबारमें आना और खानजहाका

स्थानापन्न होना ।

इस पर बादशाहने महाबतखानकी वहाकी सही समाचार भुगताने और खानखानाका दरबारमें लानेके लिये भेजा। वह जब

१। खानजहा लोदी दौलतखानाके बेटा था, बाणदे सर पीछे जहागीर बादशाहका नीवर हो गया था, उसका नाम पीरखा था। बादशाहने सलाजतखा रखा और खानजहाको पदवी दी। वह बादशाहके बहुत सुझ लग गया था। बादशाह उसको बेटोंके बराबर समझते थे। उसने बादशाहके पीछे बाताघाटका मुक्त अहमदनगर वालोंको दे दिया जहाका वह उस समय सुवेदार था। फिर शाहजहाने वागी हो कर दक्षिणकी भागा लडाईमें सारा गया।

बुरहान पुरमें पहुँचा तो ये उसके साथ गी लिथे। जब पुरवा कुछ दूर रह गया तो वह इनको छोड़कर वादशाहके पास पहुँचे गया। पीछेसे ये भी १२ आवान (१) मन ५ को पहुँचे। वदशाहका मन इनसे खिच गया था। इसलिये उन्होने वैसी छपा और अनुग्रह नहीं दिखाया जैसी पहले दिखाते थे या अपने पिताको करते देखते थे। बल्कि यह कहा कि तुम तो सब बातोंका जिम्मा लेकर गये थे। फिर वक्तके ऊपर दाने चारे नाज और दूसरी जरूरी चीजोंका बन्दोबस्त न हुआ।

खानजहाने खानापन्न होकर मिरजा परबको वादशाहके कहकर दरबारमें भेज दिया। दाराबख्त पहिले ही बापके साथ चला आया था।

लोगोंने बादशाहको खानखानाकी ओरसे बहकाया तो बहुत था परन्तु बादशाह उनसे उतने नहीं बिगड़े थे जितनी कि उन महापुरुषोंको आशा थी। और बादशाहने भी यही लिखा है कि “जब सरदारीसे और खानखानासे नही मनी तो मैंने उसका बड़ा रहना उचित न समझ कर खानजहानाको तो सेनापति कर दिया और उसको दरबारमें बुला लिया। अभी तो यही कारण अज्ञात है, चाहे जैसा प्रजाट होगी उसके अनुसार छपा अछपा होगी।

बादशाहकी छपा खानखानाके बेटे पर।

अब जो इसके आगे तुजुक जहागीरीमें देखते हैं तो बादशाहका अनुग्रह ही इनके और इनके बेटोंके विषयमें पाया जाता है, जैसे दाराबख्तको अन्नतक मनसब नहीं मिला था और इस लिये न उसकी तनखाह थी और न जागीर। बादशाहने खानखानाके आगेसे २।३ दिन पीछे ही उसको हजारी जात और ५०० सवारोंके मंसबसे सम्मानित करके गाजीपुरका जिला उसकी



जागीरमें दिया । और जब एरच आया तो पहिले ८ फरवर-  
दीन (१) सन् ६ को जडाऊ कसरपेटी दी और कई दिन पीछे  
शाहनवाजखाकी पदवी प्रदान की ।

खानखानाकी जागीर कन्नौज और कालपीमें ।

उन्हीं दिनोंमें काबुलसे अहमद पठानके उपद्रव करने और  
वहाके सूबेदार खानदीरासे प्रबन्ध न हो सकनेसे समाचार  
प्राये तो बादशाहने खानखानाकी जो बिना काम बैठे थे वहा  
भेजनेका विचार किया । इतनेमें पञ्जाबका सूबेदार कुलीचखा  
आ गया जो पहिले बुलाया गया था । उसने खानखानाकी  
भेजे जनेसे अपसन्न होकर बादशाहसे उस कामके कर देनेकी  
प्रतिज्ञा की । इसलिये बादशाहने उसे ६ हजारी मनसब देकर  
काबुलमें भेजा और पञ्जाबकी सूबेदारो पर मुर्तिज खाकी नियत  
किया और इनकी जागीरकी तनखाह अगरके सूबेमें सरकार  
कन्नौज और कालपी पर इस अभिप्रायसे रना दी कि उन  
प्रान्तोंके दुष्टोंको दण्ड देकर नष्ट करें ।

चलते समय तीनों बेटे खासे खिदमत और हाथी घोड़े  
पाकर विदा हुए । ४ बहमन (२) सन् ६ को बादशाहने अपने  
बाधनेकी तलवार जिसका नाम शाय बच्चा था, शाह नवाजकी दी ।

दक्षिणमें फिर एक और हार ।

खानखानाको दुलानेकी पीछे बादशाहने इनके साले खान  
प्राजम्को बहुत सा कटक देकर भेजा था और सैयद अबदुल्लाह-  
खाको भी जिये फीरोज जङ्गकी (रणजीत दौ) पदवी मिली थी  
गुजरातकी तरफने नासिक होकर जानेका हुक्म लिखा था परन्तु  
न कुछ खानजहाने बना न रान प्राजम्से और फीरोज  
जङ्ग तो लडाईं हार कर ही गुजरातमें भाग आया ।

१ । वैशाख वदी १ स० १६६८ ।

२ । साव्र वदी ६ सवत् १६६८ ।

वात यह ठहरी थी कि उधरसे यह जावे और उधर बराडने राजा मानसिंह, खानजहा, और अमीरुल उमरा, नाटि रवाने हो और दोनों कटका एक दूसरेकी कूच मुकामकी खबर रखकर एक ही दिन शत्रुके ऊपर पहुँचे और उसको एक साथ दोनों ओरसे घेरकर जेर करे, परन्तु अबदुल्लाहखाने जिसने साथ १००० सजे हुए सवार पे घसगुड और अकेले फतह करनेकी धुनसे जल्दी करके धावा कर दिया। राजा रामदास जल्दबाजीने बहुत कहा कि धीरजसे कूच करना चाहिये, पर उसने नही माना।

अब रने जब यह सुना तो बहुतसे सरदार और वरगी भेज दिये जिन्होंने रात दिन लडगर अबदुल्लाहखाको भगा दिया। अली सरदानखा बहादुरको पकड लिया। बगलानेतक पीछा किया। यह सुनकर बराडका लश्कर भी रादोसे ही बुरहानपुरमें परवेजके पास लौट आया।

### खानखाना फिर दक्षिणसे।

ब दशाह अपनी तुजुकमें (प्रबन्धको पुस्तकमें) लिखते हैं कि जब ये समाचार आगरेमें मुक्तको पहुँचे तो मैंने अपने मनमें बहुत क्रोध किया और चाहा कि आप जाकर इन साहिबोंके सारे हुए नौकरोंको जड उखाड़ डालू। परन्तु अमीर और शुभचिन्तक लोग इस बातपर बिल्कुल राजी न हुए और खाना अबुल इसनने अर्ज की कि उधरके कामोंको जैसा कि खानखानाने समझा है दूसरे किसीने नही समझा। उसीको भेजना चाहिये जा इस विगडो हुई बाजीको सुधारे और समय देखकर (अभी तो) थोड़े सन्धि करले। फिर ठीक उपाय कर लिया जावे। दूसरे हितैषी भी इस बातमें सहमत हुए। सबकी सलाह यही ठहरी कि खानखानाको भेजना चाहिये और खाना अबुल इसन भी साथ जावे। इस ठहराव पर दीवानोंने (१) खानखाना और उसके साथियोंको तय्यार

करदी और वे सन ७ के उर्दी बहिस्त महीनेकी १७ वीं तारीखको (१) इतवारके दिन विदा हुए ।

इस अवसरपर बादशाहने खानखानाका मनसब ६ हजारी शाहनवाज खाका ३ हजारी दाराबखाका ३ हजारी कुल और बढ़ाकर कर दिया और उनके छोटे बेटे रहमान दादको भी मनसबसे विमुख नहीं रखा । इसके सिवाय खानखानाको भारी सिर पाव, जडाऊ तलवार, खासा हाथी और इराकी घोडा दिया । उनके बेटों और साधियोंको भी खिलअत और घोडे बख्शे ।

खानखानाने बुरहानपुर पहुँचकर फरेन्दूखां बरलास, राय मनोहर और राजा बरसिहदेव, बुन्देलीकी पददृष्टिकी प्रार्थना की । बादशाहने स्वीकार करके तीनोंके मनसब बढ़ाकर इस भांति कर दिये ।

१ । फरेन्दूखां बरलास—ढाई हजारी जात—१५०० सवार ।

२ । रायमनोहर—एक हजारी जात—८०० सवार ।

३ । राजा बरसिहदेव—चार हजारी जात—२२०० सवार ।

दखनियोसे सन्धि ।

खानखानाने दखनियोसे फिर वही युक्ति सन्धिकी बरती और बीजापुरके बादशाह आदिनखाको भी इस बातपर राजी किया कि जो दखिणकी लडाईमें उनकी शायिस्त किया जावे तो ऐसा प्रबन्ध करे कि जो परगने बादशाही अधिकारसे निकल गये है वे फिर कब्जेमें आजावे ।

इन बातोंकी बादशाहसे अर्ज करनेके लिये खानखानाने शाहनवाजखाको भेजा । उसने ६ वहमन (२) सन् ७ की दरद्वारमें आकर १०० सोहर और एक हजार रुपये नजर किये । बादशाहने सन्धि स्वीकार करके खान आजमको सालवेमें आने और बहाले

१ । बैसाख सुदी ६ सवत १६६४ ।

२ । साँझ सुदी ४ सवत १६६८

मेवाडपर जानिका हुका लिखा और शाहनवाज खांको अपने पास रख लिया । ८ सहोंने पीछे खानखानाके बुलानेमें ४ असरदाद (१) सन् ८ की घोडा और सिरपाव देकर विदा किया । खानखानाने अदरसे खन्धि करके बराड और खानदेशका प्रबन्ध बहुत कुछ सुधार लिया और बादशाहका अजमेरमें आना सुनकर बहुत मो भेट भेजी जो १८ तीर (२) सन् १० की बादशाहकी सेवामें पहुँचो । बादशाहने उसका यों वर्णन लिखा है ।

१ माणिक—३

२ मोती—१०३

३ याकूत—१००

४ जडाऊ फरसे २

५ मोतियों और याकूतोको जडो हुई किलड़ी १

६ झरझरी जडाऊ १

७ तलवार जडाऊ २

८ तरकश सखमलकी १

९ भुजबन्ध जड ऊ १

१० हीरेकी अगूठो १

इन सबका मोल १ लाख रुपये हुआ ।

११ दक्षिण और कर्णाटकके कपडे सादे और सुनहरी तारोंके

१२ हाथी १५

१३ घोडा जिसकी गुद्दीके बाल धरती तक लटकते थे १

इसके साथ शाह नवाजखाको भी भेट थी जिसमें ५ हाथी और ३०० कपडे नाना प्रकारके थे ।

खानजहा लोटी फिर दक्षिणसे ।

खानजहां लोदीने जो प्रतिज्ञा की थी वह पार न पड़ी थी

१। सावग सुदी १० संवत् १६७०

२। असाढ सुदी १५ संवत् १६७२

और उल्टी हानि ही हानि हुई थी जिससे वह बादशाहको सुह नही दिया सकता था । परन्तु बादशाहको उससे बहुत प्रेम था । इसलिये बड़े सेहसे उसको बुलाया । वह बुरहानपुरसे चलकर ८ अमरदाद (१) भोसवार सन् १० को अजमेर पहुचकर सेवामें उपस्थित हुआ । बादशाहने अच्छा सुहर्त निकलवाकर फिर उसे ८ महर (२) सन् १० को दक्षिण भेजा और एक बडौऔर चञ्चल चतुरङ्गिणी सेना जिसमें ३३० मनसबदार ३००० अहदी ७०० तुर्क सवार और ३०० पठान दिलोजाक (३) थे उसके साथ दी । ३० लाख रुपये खर्चके वास्ते दिये और कई अमीरोंकी मनसब भी उसके कहनेसे ज्यादा किये । जोधपुरके राजा सूरजसिंहको भी ३०० सवार मनसबपर बढाकर दक्षिणको विदा किया और जो अमीर दक्षिणमें थे उनके वास्ते भी सिरोपाव राजा सारङ्गदेवके हथ भेजे और दारावशाके वास्ते १ जडाऊ तलवार भेजी ।

दक्षिणमें फिर अशान्ति और युद्ध ।

खानजहाके जानेसे फिर दखनियोंमें कोलाहल मचा । अब खानखाना बुरहानपुरमें रहते थे और शाहनवाजखाकी बालापुरकी छावनीमें रखा था । अहमदनगरके सरदार आदमखां, याकूतखा, जादूराय और बापू कार्ठिया वगैरह शाहनवाजखाके पास आये, उसने सबको हथी, घोडे, हिलअत और रुपये देकर बादशाही चाकरीमें रख लिया और उनको साथ लेकर, बालापुरसे अम्बरके ऊपर उधरसे दखनियोंकी फौज आयी, तो उससे लड़ाई की । वह भागकर अम्बरके पास गयो । अम्बर अपनी, आदि लखाकी और कुतुबशाहकी बहुतसी सेना एकत्र करके लड-

१ । सावन सुदी ६ सवत १६७२

२ । आसीज सुदी १० स० १६७२ ।

३ । पठानोंकी एक जाति ।

नेको आया। २५ बहमन (१) रविवारको तीसरे पहरके समय दोनों सेनाकी मुठभेड हुई। टारावखां जो अगनी फौजमें था, राजा बरसिह देव, रामचन्द्र गौर प्रलोखा आदि सरदारों सहित तलवार खेचकर दखनियोंकी हिरावत फौज पर दौड़ा और उसकी तितर बितर करके मीठा बीचकी सेना पर गया। वहा ऐसी लड़ाई हुई कि देखने वालोंकी आंखें पथरा गयी। घड़ी तलवार चली। लोथोंसे खेत पट गया। अखर भागा। दो तीन कोस तक उसका पीछा हुआ। परन्तु रात हो जानते वर वचकर निकल गया। उसका तयाम तोपखाना, ३०० ऊट, चूर्नीभि भरे हुए जङ्गी हाथी, अरवी घांड़े और बहुतसे हथियार लूटमें आये और कुछ सरदार भी पकड़े गये। फिर शाहनवाजगा आगे बढकर “करकी”में गया जहा अस्वरकी छावनी थी मगर वहां किसीको नहीं पाया। क्योंकि वहा वाली पहिले ही निकल गये थे। इसलिये उनके मकानोंकी गिराकर रोहन गढ़के घाटेसे उतर आया।

बादशाहको जब इस फतहकी बधाई बहुत ची तो उन्होने प्रसन्न होकर सब सरदारोंके मनसब बढ़ाये—

परवेजकी बदली और खुर्रम दक्षिणमें।

दक्षिणकी फौजोंका प्रबन्ध जैसा कि बादशह चाहते थे सुलतान परवेजसे नहीं हुआ था। इसलिये बादशाहने उसको दरबारमें आनेका हुक्म लिखा।

वह २० तीर (२) सन् ११ को बुरहानसे खाने हुआ। २८ को (३) यह खबर बादशाहको बिहारीदास वाकिआगवीसको अजीसे मालूम हुई।

१। फागुन बदी १२ रविवार सवत् १६७२।

२। सावन बदी १३ सवत् १६७३

३। यह मामूली चाल डाककी थी कि ८ दिनमें बुरहानपुरसे अजमेरको कागज पहुचते थे। बुरहानपुर अजमेरसे २५० कोस है।

मेव.६ फतह होजानेसे बादशाहको अजमेरमें कोई काम नहीं रहा था और दक्षिण फतह करनेकी उनकी बहुत आकांक्षा थी । उसलिये १८ शव्वाल (१) सन् १०२को ( रविवार ८ आबानको ) उन्होंने सुलतान खुर्रमका पेशरीसा अजमेरसे दक्षिणको चलाया और २० आबान (२) शुक्रवारको सुलतान खुर्रमको शाहकी पदवी देकर बड़े ठाठसे विदा किया । और दूसरे दिन २१ आबान (३) १ जीकाद शनिवारको आप भी ४ घोड़ों के फरशी रथ अर्थात् बगीसे बैठकर सालवेको गये । २३ असफन्दारको (४) सोमवारके दिन साडूके (५) किलेमें पहुँचे । इसी दिन सुलतान शाह खुर्रमने भी दुरहानपुरमें प्रवेश किया । अफजलखा और रायराया तो बीजापुरमें गये थे । आदिलखां ७ कोस अगवानी आकार इनके पाससे बादशाहके फरमानको ले गया और इन लोगोका सत्कार करके कहा कि अस्वरने जो बादशाही इलाके ले लिये हैं वे उनसे बड़ा दूगा और उसी दिन अस्वरके पास अपने दूत भेजकर यहाँ सन्देश उतवा भी कहलाया ।

अबने इधर तो शाह खुर्रमके पहुँचनेसे और उधर आदिलखांको जहलानेसे डरकर अहमद नगर और दूसरे किलोंको क्षुजियां जो उदने ले ली थीं शाहजादेके पास नजराने समेत राज दी । आदिलखां और कुतुबुल्लेखाने भी अधीनता अङ्गीकार करके विनय पत्र भेजे । शाहजादेने बादशाहको लिखार आदिलखांको फरजन्द (बेटे)का खिताब दिलाया । खानखानाको खानदेश और दुरहानपुरकी सूबेदारोंपर स्थिर रखा । जो नये इलाके

१ । कातिक वदी ६ रवि स० १६७३ ।

२ । कातिक सुदी २ स० १६७३ ।

३ । कातिक सुदी ३ स० १६७३ ।

४ । फागुन सुदी ७ स० १६७३ ।

५ । अजमेरसे साडू १५८ कोस है ।

फतह हुए थे उनके शासनपर शाह नवाजखाकी १२०० सवारोंमें भेजा । जगह जगह अपने योग्य पुरुषोंकी नियत करके मारा प्रवन्ध ठीक कर दिया । साथमें जो लश्कर था उसमेंसे ३०००० मय ३ और ७००० प्यादे बरकन्दाज तो वहा छोडे और बाकी जो २५००० सवार और २०० तोपघी थे, उनको साथ लेकर बुरहानपुरमें कूच किया । सो २० महर(१) मन् १२ गुरुवारको माडूमें बादशाहके पास पहुँचा । अहमद नगरके अमीरों, बीजापुरके वकीलों, बगलानेके राजा और दारावशाको भी साथ लाया ।

खुर्शम दरबारमें ।

बादशाहने खुश होकर सोतो जवाहर खुर्शमपर निहावर किये और शाहजहांका खिताब ३० हजारी मनसब और दरबारमें कुरसीपर बैठेनेका मान दिया और जो सरदार उनके साथ मये थे और दक्षिणसे आये थे उन सबका सत्कार भी हाथो घोडे गहने और सिरोपाव देकर किया ।

ऊदाराम दखनी ।

दक्षिणी सरदारोंमें ऊदाराम ब्राह्मण भी था जो पहिले अवरका साथ छोडकर शाह नवाजखाकी पास चला आया था और फिर अवरके धोखेमें पडकर उसके पास लौट गया था । परन्तु अवरने फौज भेजकर उनको नष्ट करना चाहा जिससे वह लडकर बादशाही सीमामें आगया और शाहजहांसे मिलकर उनके साथ बादशाहकी सेवामें आया । बादशाहने उनको तीन हजारी जात और १५०० सवारका मनसब देकर नौकर रख लिया ।

बादशाह गुजरातमें ।

फिर बादशाह मालवेसे गुजरातको गये और वहासे मालवे होकर आगराको लौटे ।



## हीरेकी दान ।

खानदेशमें पनजू नामक एक जमींदार था ; उसके पास गोंड वानेमें एक हीरेकी खान थी । खानखानाने उसका हाल सुनकर अपने बेटे अमरल्लहको कुछ पौजके साथ भेजा । पनजूने अपनेमें लडनेकी सामर्थ्य न देखकर वह दान सौंप दी और उसपर बादशाही दारोगा बैठ गया । यह सब १० अमरदाद (१) सन् १३ को गुजरातमें बादशह के पास पहुँची ।

## आदिलशाहका मश्वर ।

५ महर गुरुवार (२) सन् १३ को बादशाहने शाहजहाँकी प्रार्थना पर मुहम्मदाबादसे (गुजरात) अपना चित १ लाल और एक स्यामा हाथो इत्राहीम आदिल शाहको भेजकर लिखा कि निजामुल्मुल्क और कुतुबुल्मुल्कके राज्यका जितना जीत लेगा वह उसके इनामेंमें गिना जावेगा और शाहनवाज खाँको हुक्म भेजा कि जब आदिलखाँ चाहे एक सजी हुई सेना उसकी सहायताको भेज दो ।

पहिले निजामुल्मुल्क दक्षिणके अधिराजोंमें बड़ा गिना जाता था । अब बादशाहने आदिलखाँका तमाम दक्षिणका अग्र गण्य बना दिया ।

## दारावखाँदरबारमें ।

दारावखाँ गुजरातमें बादशाहके साथ था । इत्राहीमखाँको बादशाहने दक्षिणके सूबका बख्श नियत करके भेजा था । खानखानाने उसके कामोंसे प्रसन्न होकर उसकी सिफारिश लिखी तो बादशाहने २१ महर (३) रविवारको उसे हजारौजात और २०० सवारोंका मनमन्न प्रदान किया ।

१ । सावन सुदी ११ नवत् १६७५ ।

२ । अमोज सुदी ८ सवत् १६७५ ।

३ । क्रांति वदी ११ म ० १६७५ ।

२३ भावान (१) गुरुवारको बादशाहने गाँव मदनपुरके डेगोंमें दाराशुखांकी नादरीका खिलअत दिया। नादरी बिना बाहोंकी कमरी होती थी जो जामेके ऊपर पढ़नी जाती थी, परन्तु हर कोई बिना दिये बादशाहके नहीं पढ़न सकता था।

### खानखाना दरबारमें।

(२) २१ शहरेवर मन १३ गुरुवार २२ रमजान मन् १०७७ की बादशाह गुजरातसे (जहां मालवे होते हुए गये थे) आगराकी मालवेके रास्तेसे ही लौटे। राजपत्य खानदेग और बुरहानपुरकी सीम में होश्या निकलता था। इसजिये खानखानाने बादशाहकी सेवामें 'उपस्थित होनेकी आज्ञा मांगी बादशाहने हुक्म भेजा कि जो सर्व प्रकारसे सुवीता हो तो अकेला आकर जल्दीसे लौट जाना।

ये इस आज्ञाके पाते ही (३) १८ आजर सोमवारको छड़ी सवारोंसे घाटोचादामें बादशाहके पास पहुंचे। १००० मोहरे और १००० रुपये नजर किये। बादशाहने भी वैसी ही मेहरबानी की जैसी कि किया करते थे। २१ आजरको (४) खामा घोडा जिसका नाम सुमेरु था दिया और २७ की (६) खासा पोस्तीन (५) जो पहने हुए थे और सात घोड़े अपनी सवारीके प्रदान किये।

२६ (७) रविवारको बादशाह रणथंभोर पहुंच कर तीन दिन वहा रहे; परन्तु खानखानाको भेट करनेका अवसर नहीं मिला

१। मगसर बदी १३।

२। आमोज बदी १३ सवत १६७५।

३। पौष बदी ८।

४। पौष बदी १२।

५। पौष सुदी २।

६। चमडेका कोट रूपंदार।

७। पौष सुदी ६।

जिससे उन्होंने ६ देकी (१) रणथंभोरसे आगे पडाव पर अपनी बहुसूत्र्य भेट बादशाहकी सेवामें उपस्थित की जिसमेंसे बादशाहने डेढ़ लाख रुपयेके रत्न, जडाऊ गहने, कपडे और हाथी पसन्द करके रख लिये । शेष पदार्थ फेर दिये ।

७ हजारों मनसब और दरबारसे विदा ।

८ दे रविवारकी (२) बादशाहने खानखानाको ७ हजारों जात ७००० सवारका मनसब और खासा खिलअत खासा हाथी, जडाऊ तलवार और कमर पहा देके और दोनों खूबों अर्थात् खानदेश तथा दक्षिणकी सूबेदारोंपर स्थिर रखकर विदा किया और फरमाया कि हमने सुना है कि शाहनवाज खाशराव बहुत ज्यादा पीने लगा है । यदि यह बात सही हो तो उसको हर तरहसे रोक दो, जान माने तो हमको स्पष्ट लिखो, हम अपने पास बुलाकर उसका इलाज करेंगे । ऐसा न हो कि वह इस युवावस्थामें अपनेको नष्ट कर देवे ।

शाहनवाज खांकी मृत्यु ।

खानखाना जब बुरहानपुरमें पहुँचे तो उन्होंने शाहनवाज खांकी अति रुग्ण (३) और निर्वल पाया । उसकी दवा दारु भी बहुत की । परन्तु रोगकी शान्ति न हुई और वह ३३ वर्षकी अल्पायुमें अपने बूढ़े बापका विलखता छोड़कर इस असार ससारसे चला धरा ।

उसके मरनेमें खानखानाको तो जो दुख हुआ सो हुआ ; परन्तु बादशाहको भी बहुत उदासी हुई । वे खुद ५ (४) उर्दों व-हिष्ट शुक्रवार सन् १४के हत्तान्तमें लिखते हैं “इस अशुभ

१ । पौष सुदी १० ह० ।

२ । पौष सुदी १४ स० १६७५ ।

३ । बीमार ।

४ । वैशाख सुदी १२ सवत् १६७६ ।

समाचारके सुननेसे मैंने बहुत चफमोम किया । मन यह है कि खूब खानाजाद था । (१) चाहिये तो था कि इस राज्यमें अच्छी चाकरिया देता और बड़ी बड़ी कीर्तिया होउकर सरता । यद्यपि सबको इसी रास्तेपर चलना है और मोतमें कोई नहीं बच सकता है मगर इस तरहसे उठ जाना बुरा लगता है । उमेद है कि उसके गुनाह बन्ने जावे । राजा मारगदेवको जो पास रहनेवाले सेवकी और मिजाज जानने वाली चाकरोंमेंसे है मैंने अपने उम अतानीकके पाम भेजकर बहुत सी मेहरबानियों और बख्शिगीसे उसको महानुभूति को और शाहनवाजखाका जो ५ हजारों मनसब था वह उसके भाइयों और बेटोंके मनसबों पर बढा दिया । उसके छोटे भाई दाराबखाका मनसब असल और इजाफेसे पाच हजारों जात और ५००० सवारका करके खिलअतको घोडा और जडाज तनवार बख्शी और उसको बापके पास भेज दिया सो वह शाह नवाजखाकी जगह सूबे बराह और अहमद नगरका सरदार बना । उसका भाई रहमान दाद २ हजारों जात और ७१० सवारके मनसबसे सम्मानित हुआ । शाहनवाजखाके बेटे मनुचहरको २ हजारों जात हजार सवारका और दुसरे बेटे तुगरलको हजारों जात और ५०० कवारका मनसब मिला ।

बादशाह काश्गारमें ।

बादशाहने मालवेसे आगे पहुचकर १ अहरिवर सन १४ को (२) वारानी अर्थात् बरसाता खिलअत खानखाना और दूसरे अमीरोंके वास्ते जा दक्षिणमें नियत थे भेजे ।

१ । घरजाम गुलाम बादशाह अपने नौकरोंको खानाजाद कहते थे । उसी पथासे दरबार जोधपुरके सरदार और सुतसही अतक भी अर्जीमें अपनेको खानजाद लिखते हैं ।

२ । द्वितीय सावन सुदी १४ स० १६७६ ।

२४ महर गुरुवार सन् १४की(१) ब दशाहने दशहरेका उत्सव करके सांभ नमय काश्मीरको कूच किया ।

८ आवान (२) शुक्रवारको सधुरासे ६ लाख रुपये आसिरगढकी सामग्रीके लिये खानखानाके पास भेजे ।

दक्षिणमें उपद्रव ।

अ वरने बादशाहका काश्मीर जाना सुन कर अहमदनगर पर चढ़ाई की । खानखानाने बादशाहको जो अरजी लिखी वह २५ फरवरदीन (३) सन् १५ के लगभग पहुची जिसकी बाबतमें वे इस भांति तुजुक जहांगीरीमें लिखते हैं,—

“इन दिनोंमें सिपहसालार खानखाना और दूसरे शुभचिन्त-  
दोंके प्रार्थनापत्रोंसे प्रकट हुआ कि अ वरने अपने स्वभावकी दुष्ट-  
तासे फिर उपद्रव करनेको पाव बढ़ाया है । उसने बादशाही  
सवारीके अति दूर होनेसे अवसर पाकर वे सब वचन तोड़ दिये  
जो अमीरोंसे किये थे और बादशाही राज्यमें हस्तक्षेप किया है  
सो जल्दी अपने कियेका दण्ड पावेगा । सिपहसालारने खजाना  
गग या था । सो हुदा दिया गया कि राजधानी आगराके कर्मचारी  
२० लाख रुपये सिपहसालारके पास भेज देंगे ।”

“फिर खबर पहुची कि अमीर अपने अपने स्थानों को छोड़  
बर दरारवाकी पास चले आये हैं और बरगी लोग (४) सशस्त्रकी

१ । फार्गज सुदी ८ स० १६७६ । बादशाही पञ्चाङ्गमें दसहरा  
८वीं दिन था । अङ्क पञ्चाङ्गमें दूसरे दिन लिखा है । यदि इस  
पञ्चाङ्गमें फार्गज सुदी ७ हो न होती तो १० गुरुवारकी ही होती ।  
बादशाही गङ्गादमें ७ एक ही है ।

२ । कार्तिक वदी १० संवत् १६७६ ।

३ । चैत सुदी ११ स० १६७७ ।

४ । पिडारि मुठेरे ।

आसपास सजे हुए फिरते हैं। खजरगवां अहमदनगरमें बिर गया है। दो तीन बार बादशाही बन्दों ने शत्रुग्रीसे युद्ध किया। हर बार वे हार कर भागे; आखिरकी दाराबखां अच्छे सधारीको लेकर उनकी छावनी पर गया। बड़ी लड़ाई हुई। शत्रु हार कर जङ्गलमें भाग गये। उनकी छावनी लुट गयी। बादशाही सेना कुशलपूर्वक अपने डेरोंमें आयी, परन्तु नाज चारा बहुत महंगा हो गया था; इस लिये सरदार मलाह करके रहनगढ़के घाटेसे उतर आये। शत्रु ठिठाई करके वहां भी दिखाई दिये। राजा बरसि इदेवने आगे बढ़ कर बहुतोंको मारा और मनशूर हबशीको जीता पकड़ा। उसको हाथीके पावोंमें डालना चाहा, परन्तु वह उस पर राजी न हुआ तो राजाने, उसका मस्तक छेदन करा दिया।”

यह लड़ाई कई महीनों तक होती रही। एक लड़ाईमें खानखानाके छोटे बेटे रहमानदादकी जान गयी जो अपने भाई दाराबखाके पास बालापुरमें था।

रहमानदादकी मृत्यु।

बादशाह लिखते हैं कि इन दिनोंमें शुक्रवारकी (१) खानखानाके बेटे रहमानदादकी विषयमें यह खबर पहुंची कि वह बालापुरमें मौतसे मर गया। कुछ दिनोंसे तप हो गयी थी जिसकी निर्बलताके दिनोंमें एक दिन दखनो ब्यूह रचकर आते हैं। उसका बड़ा भाई दाराबखा लड़नेकी सवार होता है। जब यह खबर रहमानदादकी लगती है तो वह अति पौरुष और पराक्रमसे उसी

१। महर महीनेकी १३वीं चन्द्रवार और १६वीं गुरुवारके बीचमें शुक्रवारकी रहमानदादकी खबर आना तुजुक जहागीरीमें लिखा है, परन्तु शुक्रवार १३ पहले १० को था या १६ के पीछे १७ के बीचमें तो नहीं था।

कमजोरी और घकावटमें सवार होकर भाईके पास पहुँचता है और जब कि शत्रुको हराकर लौटता है तो शरीरकी कुछ रक्षा नहीं करता। उसी क्षण वायुका कोप हो जाता है नसें खिंचने लग जाती हैं। जीभवन्द हो जाती है। दो तीन दिन इसी दशामें रह कर प्राण छोड़ देना पड़ता है। जवान खूब लायक था। तलवार मारने और काम करनेमें बहुत साहसी था। तमास जगह उमका यही मनोरथ रहता था कि अपनी तलवारका चमत्कार दिखावे; आग सूँघे और गोलेको बराबर जलाती है। जब कि सुके ही बहुत कष्ट हुआ है तो उसके बूढ़े बापके दिल पर तो क्या गुजरा होगा। अभी शाह नशाजखाँका जख्म ही नहीं भरा था, कि यह दूसरा घाव लगा। आशा है कि परमेश्वर उसको शांति और सन्तोष देवे।” (१)

दखनियोंकी चढाई ।

खानखाना इन दुःखोंके मारे गनीमका पूरा पूरा बन्दोबस्त न कर सके जो अब हर तरफसे गावोंको लुटता, खेतोंको जलाता धला आता था। शाहजहाँसे जो इकरार हुए थे वे सब तोड़ डाले गये थे; बादशाहने काश्मीरमें यह समाचार सुनकर फिर शाहजहाँकी भेजनेका विचार किया था। परन्तु वह उस समय कोट कागडेकी फतहके उद्यममें लगा हुआ था। उसके बड़े बड़े सरदार बहा गये हुए थे जिससे उसके दक्षिण 'जानेमें विलम्ब हुआ। दखनियोंने शिथिलतासे और भी बल पाकर ६०००० सवार भेजे, बहुत सा विभाग बादशाही राज्यका दबा लिया, जरेक स्थानसे थाने उठा दिये और सड़करमें बादशाही लश्करको घा घेरा। वहा तीन महीने तक लड़ाई होती रही। ३ युद्ध बड़े

(१) भूतकालकी वर्तमान काल करके लिखनेकी प्रथा अकबर नाम और तुजुक जहागीरीमें बहुधा देखी जाती है। यह उसीका यथावत उल्था है।

हुए, जिनमें बादशाही बन्दे जीते तो मर्ही परन्तु, नसदने मारने न खोस सके जो वर्गियों अर्थात् दलितोंके लुटेरीने बन्द कर रखे थे। जब नाज नही मिलने लगा तो बागाघाटने उतर कर बालापुरमें आ गये जैसा कि पहले लिख गया है। दुर्गमन भी साथ साथ ही पीछा करते आये और बालापुरके आस पास भी लूट मार करने लगे। बादशाही बन्देमिसे ६।७ हजार चुने मगार उनकी छावनीपर गये। वे ६०००० थे तो भी एक बड़ा लडाई लडकर और उनके डेरे लूट कर लीटे। परन्तु वे फिर इकट्ठा होकर लडते हुए लश्कर तक आये। दोनों तरफसे १००० मनुष्य खेत रहे।

इस तरह ४ महीने तक बालापुरमें रहे। जब नाज और चारिकी तगौ बहुत ही हुई और लोग भाग भागकर शत्रुओंके पास जाने लगे तो वहा ठहरना भला न देखकर बुरहानपुरमें आ गये। वे भी पीछे लगे चले आये। ६ महीने तक बुरहानपुरका घेरे रहे। बराड और खानदेशकी अनेक वास्तियोंको दबा बैठे। खानखाना उनके हटानेका बहुत उद्यम करते थे। परन्तु सिपाही भूखीके मारे अधमरे हो रहे थे, घाडे थक रहे थे, बादशाहकी ओरसे मदद नही पहुचती थी, इस कारणसे लाचार थे। कुछ बन नही पडता था। बादशाहकी लगातार अजिया भेजते थे। अन्तमें यहातक लिख चुके थे कि मेरे ऊपर घोर कष्ट आ पड़ा है और मैने जोहर करके सर जानेकी ठान ली है।

शाहजहा फिर दक्षिणमें।

२७ सहर सोमवार (१) सन् १५ को बादशाह काश्मीरसे लीटे।  
सोमवार ८ आजर (२) ५ सुहरस सन् १०३० को लाहार पडु चे।

१। कातिक वदी ८ स० १६७७।

२। मगसर सुदी ६ स० १६७७।



इसी दिन कागडेके फतह होनेकी खबर आयी जो १ मोहरमकी शाहजहाके मन्त्री सुन्दर ब्राह्मणके (१) परिश्रमसे २ वर्षमें हाथ आया था । बादशाहने इस बधाईसे प्रसन्न होकर ४ दे भृगुवारकी (२) शाहजहाको एक भारी शिरोपा और हाथी घोडे देकर दक्षिणकी ओर विदा किया और चलते समय फरमाया कि बाबा जैसे तुम्हारे दादाने धावा करके खान आजमकी गुजरातियोंके घेरेसे छुड़ाया था, वैसे ही तुम भी जाकर खान-खानाकी दखनियोंसे बचाओ और दक्षिण जीतनेके पीछे २ करोड दामका मुल्क अपनी जागीरमें ले लेना । ६५० मनसबदार १००० अइदी १००० बर्कन्दज रूमि १००० पैदल तोपची १ बडा तोपखाना १ करोड रुपयेका खजाना और बहुतसे हाथी साथ किये । यह लयकर उन ३०००० सवारोंकी सिवाय था जो पहिलेसे खानखानाको दिये हुए थे । परन्तु इससे पहिले कोकाखा को खानखानाके पास भेजकर बहुतसे सन्देशों और कृपायुक्त बचन कहला दिये थे ।

फिर बादशाह भी पजाबसे पयान करके १४ अस्फदार (३) सन १५ को आगरामें आगये ।

१ । सुन्दर शाहजहाका प्रतिष्ठित पारिषद था । बादशाहने उसकी कार्यकुशलतासे प्रसन्न होकर पहिले तो रायरायाकी पदवी प्रदान की थी और अब कागडा विजय करनेसे विक्रमजीतकी उपाधि दो । अजीब बात है कि कागडाको अकबरके समयमें तो राजा बौरवलसे बडा धक्का लगा था जिसका वर्णन हम उसके चरित्रमें छाप चुके हैं और अब इन दूसरे ब्राह्मण देवतासे उसका सर्वथा नाम हुआ ।

२ । पोष सुदी २ स० १६७७ ।

३ । फागण सुदी १२ ।

## दख्नियीकी पाजथ ।

जय श हजहा उज्जीनमे पडुं चा तो सागदूके किलेमे कर्माचा-  
रियोकी अर्जी प्रायी कि दखनी नमदासे उतर पाये रे और  
उन्होंने कई गांव यहाके लूट लिये है । शाहजादेने गुाजा अनुल  
खनकी ५००० सवारीसे सहित भेजा । उरने उन लोगोकी नमदासे  
उतरते हुए जा दवाया और सडकर बुरहानपुरकी तरफ  
भगा दिया । फिर शाहजहा भी बुरहानपुर पडुं चा । दखनी अभी  
तक शहरको घेरे हुए थे और ब दशाही बन्दे जो २ वर्षसे उनके  
साथ लडते लडते थग गये थे शहरके अन्दर बंडे मड्डटमें थे ।  
शाहजादेने ८ दिनमें उनका ३० लाख रुपये और बहुतसे जिरह-  
बख्तर देकर शहरसे बाहर निकाला और लडकर दख्नियोंकी भगा  
दिया । खिडकी तक फौज उनके पोछे गयी जहासे अम्बर और  
निजामुल्मुल्क एक दिन पहिले निकलकर दौलताबादकी चले  
गये थे ।

## अम्बरका फिर सन्धि करना ।

बादशाही बन्देने खिडकी शहरको जो २० वर्षसे बसा था  
ऐसा ऊजाडा कि फिर २० वर्षमें भी न बसे । बहासे फौजका  
कूच अहमदनगरकी दख्नियोंका घेरा उठानेके वास्ते हुआ ।  
पट्टनतक पडुं चे थे कि अम्बरने दूत भेजकर फिर दीनता दिखायी  
और कहलाया कि जितना हुक्म हागा उतना ही नजराना और जु-  
माना भेज दूंगा । इसके साथ ही यह भी शवर पडुं ची कि दखनी  
अहमदनगरसे भी छठ गये है । तब कुछ फौज खजरखाकी सहा-  
यताके लिये खर्च सहित भेजकर अमीर लोग बुरहानपुरमें चले  
अये और अम्बरसे यह बात ठहरी कि जो मुल्क बादशाही  
अधिकारमें पहिलेसे था उसके सिवाय १४ कोसतक और धरती  
उन परगनों को छोडदे जो बादशाही राज्यसे मिले हुए हैं और  
५० लाख रुपये नजराने और जुमानेके दे ।

शाहजादेने यह सब हाल बादशाहसे अर्ज करनेके लिये अफ-

जलश्याको भेजा । वह ४ खुरदाद (१) सन् १६ को बादशाहके पास पहुँचा । बादशाहने खुश होकर उसके हाथ तालकी जड़ी हुई कलश्री जो शाह ईरानने भेजी थी, शाहजहाँकी वास्ते भेजी और अहमदनगरके हाकिम खजरखांका मनसब ४ हजारी कर दिया ।

बादशाह काश्मीरमें ।

१३ भावान (२) सोमवार सन् १६ को बादशाहने आगरासे काश्मीरकी हवा खानेको पयान किया । क्योंकि कई वर्षोंसे आगराकी गरमी उनमें सहो नहीं जाती थी ।

खानखानाकी मारक दशा ।

खानखानाकी सुख सम्पत्ति भोगते हुए बहुत वर्ष हो गये थे अब दुःखकी भी वारी आयी । पहिले तो उनके जवान बेटे मरे फिर दखनियोंने आकर बुरहानपुर घेरा जिसके मारे उन्होंने जोहर करके सरनेकी ठानी और निःसन्देह उस वौर पुरुषके लिये कि जिसने सैदानकी लडाइयोंमें बड़ी बड़ी दल बादल सेनाओंको विजय किया हो, इस तरह बेवस होकर शत्रुओंसे घिर जाना सरनेसे क्या काम था ? निदान शाहजहाँके पहुँचनेपर उस सङ्कटमें तो छुटकारा मिला परन्तु दुःखने पीछा न छोड़ा वल्कि वह अब शाहजहाँके दुर्भाग्यसे मिलकर और भी भयङ्कर हो गया ।

बाप बेटों अर्थात् बादशाह और शाहजहाँका विगाड ।

शाहजहाँ दखनियोंके दारुण घेरेकी बुरहानपुरसे उठ कर अपने पोरुषपर फूला न समाता था कि देवने उसको अशान्ति के विषद दरवारमें और ही अद्भुत गुल खिलाया जिससे उसको

१। जेठ सुदी ४-६ सवत् १६७८

२। मगहर वदी ७ सवत् १६७८ परन्तु इसदिन सोमवार नहीं था शनिवार था ।

सौतेली मां नूरजहाँ बेगम जो अबतक उसके काम सुधारती रहो थी उसका पक्ष छोड़कर प्रतिकूल हो गयी ।

नूरजहाँ बेगमका कुछ हान ।

जहाँगीर बादशाहको नूरजहाँसे बहुत प्रेम था । यह मिरजा गयास ईरानीकी बेटो थी और शेर अफगनखा ईरानीको ब्याही थी । मिरजा गयास अकबर बादशाहके समयसे कारवानाका दोबान था और शेर अफगनखा कई वर्ष तो खानखानाकी सेवामें रहा था फिर जहाँगीर बादशाहका नौकर हुआ । बादशाहने उसकी बर्दवानमें जागौर दी थी । फिर उसके अनाचारके समाचार सुनकर अपने कोका (धा भाई) कुतुबुद्दीनखाका जो बज़ाल और छडीसेका सूबेदार था लिखा कि शेर अफगनको दरगाहमें भेज दो और जो न आवे तो सजा दो । कोकाने बर्दवान जाकर शेरअफगनको पकड़ना चाहा तो उसने कोकाको मार डाला और आप भी मारा गया । नूरजहाँ बेगम पकड़ी आयी तो बादशाहने अपनी सौतेली मा रकैया सुलतान बेगमको बख्श दी । वह बहुत दिनोंतक उनके पास रही । फिर बादशाहके चित्त चटो तो थोड़े दिनोंमें सब बेगमोंसे बढ गयी । अपने बापको मुख्य मन्त्री बनाया , भाईको आसिफखाकी पदवी दिलाकर सब अमीरोंसे बढाया । बादशाही सारा काम आप करने लगी । बादशाहका नाम मात्र रह गया । वे कहा भी करते थे कि मैंने तो राज्य नूरजहाँको दे डाला है । अब मुझे १ सेर शराब और आधासेर कबाबके सिवाय और कुछ नहीं चाहिये ।

बादशाहके ५ बेटे खुसरो, परवेज खुर्रम, जहाँदार, और शहरयार थे । खुसरो राजा मानसिंहका भानजा और खान आजम मिरजा कोकाका जमाई था । इस प्रसंगमें वे दोनों सरदार अकबर बादशाहके पीछे उसीको तख्तपर बठानेके विचारमें थे परन्तु उनकी यह कामना पूरी न हुई और जहाँगीर ही पिताकी जगह बैठे तो भी खुसरो अपनेको बादशाहीके योग्य समझकर

पज बली भागा था और पकड़ा जाकर अन्तमें खुर्रमको सौपा गया था तो उसीकी कैदमें मर गया ।

परवेज बादशाहका प्यारा बेटा था । परन्तु नूरजहाने उसको नहीं बढने दिया और खुर्रमको बढाया क्योंकि उसके भाई आसिफहाकी बेटो ताजवीत्री खुर्रमको व्याही थी और इस सम्बन्धसे नूरजहान खुर्रमके पक्षमें हो गयी थी । परन्तु अब जो अपने पेटको (१) बेटोका विवाह शहरियारसे करना चाहता तो शहजहाका बल घटाने लगे कि जिसमें शहरियारको बापके पीछे बादशाह बननेका अवसर मिले । बादशाह उसके कहनेमें थे जो वह कहती वही करते थे ।

शहरियार सब भाइयोंमें छोटा था तोभी बादशाहने नूरजहानकी कहनेसे २७ रबौल आधिर (२) सोमवार सन् १०३० को ८ हजारो जात और ४ हजारका मनसब देकर फाजो अफसर बनाया और ४ उर्दो बहिश्त (३) सन् १६ को नूरजहानकी बेटोसे उसका विवाह कर दिया ।

इतने हीमें ईरानके शाह अब्बास सफवीके कन्धारपर आनेके समचार लगे । बादशाह उस समय कागडे होकर काश्मीरकी हवा खानका जा रहे थे और कुछ स्वास्थ्य भी उनका बिगड़ा हुआ था इसीसे जेतुल आवदान बख्शका शाहजहाके खानेके खिय भेजकर काश्मीरका चल दिहे ।

जेतुल आवदान जब शाहजहाके पास पहुँचा तो वह खानखानका साथ लेकर खामाहा गया । जब माडोमें आया ता सुना कि उसका जा अच्छो अच्छी जागौरे दिल्ली आगरे और पनाबके खदामे थी । वे सब शहरियारको दे दो गयी है । तब

१ । यह लडकी नूरजहानकी भृतपूर्व पति और अफगनसे थी ।

२ । चेत उर्दो १४ सवत् १६७७

३ । चेलाउ उर्दो ४ सवत् १६७८ ।

तो वह वहाँ ठहर गया और वरमातके पीछे हाजिर होनेको अर्जी लिखकर वख्तगीको बिदा किया। जो (१) २ तीर सन् १७ को काशमीरमें बादशाहके पास पहुँचा। बादशाहने आत्मजहाने बुरा मानकर उसके साथके राजाओं और यमीरोंको तो दानदारमें चले आनेका हुक्म भेजा और शाहजहानाकी लिखा कि पत्र यहाँ न आवे। उधर ही गुजरात मानवे दक्कन और आगरेमें सन्धीमें जो उसको इनायत किये जाते हैं। जहाँ चाहें वहाँ रहें और इधरकी जागीरोंकी बदले जागीरें भी अपनी उबर हीके किसी सूबेमें ले लें।

इस भेलेमें कम्बारको फौज न जा सकी और शाह अज्बासने आकर उसको घर लिया। बादशाहने यह खबर सुनकर २३ अमर-दाद सन् १७ को काशमीरसे लाहोरकी तरफ कूच किया। रास्तेमें १ शहरेवरको (२) शहरेयारने कम्बार जानकी प्रार्थना की। बादशाहने स्वीकार करके १२ हजार जीत और ५००० सवरका मनसब उसको दिया और कम्बारके वास्ते जो लश्कर तय्यार हो रहा था उसका अफसर भी उसीको नियत किया। परन्तु यह अभी कम्बारको बिदा भी न होने पाया था कि शाह इरानने कम्बार ले लिया और चमा मागनेके लिये दूत और पत्र भेजा। बादशाह भी उत्तरमें उलहनेका पत्र भेजकर लाहोरमें आ गये और आसिफ खाकी आगरेमें भेजा कि वहाँ जितना कुछ खजाना मोहरों और रुपयोंका अकबर बादशाहके राज्य शासनसे अवतक संग्रह हुआ है उस सबको लाहोरमें ले आवे और परवेजके वकीलको हुक्म दिया कि जल्दीसे जाकर परवेजको बिहारकी सेना सहित यहाँ लावे।

१। द्वितीय असाढ़ बदी २ सवत् १६७८।

२। सावन सुदी १० स० १६७८।

३। भादी बदी ४ स० १६७७।

शाहजहाका बापके मुकाबले पर जाना और खानखानाका शाह-  
जहांके साथ रहना ।

शाहजहां जिसे वेदीलतकी पदवी मिली थी, ये बातें सुनकर  
माझूसे फतहपुरमें आया और उसके मन्त्री सुन्दर ब्राह्मणने जि-  
सको विक्रमाजीतकी उपाधि उपलब्ध हुई थी, आगरामें जाकर  
कई अमीरों के घर लूटे । बादशाहने यह समाचार सुनते ही १७  
वहमनको (१) लाहौरसे आगराकी ओर प्रस्थान किया और यमु-  
नाके किनारेका रास्ता लिया ; शाहजहां मथुरामें आगया था । यहा-  
से वह भी यमुनाके किनारे किनारे चला । खानखाना दाराबखा  
और कई अमीर जो गुजरात और दक्षिणके सूबोंमें नियत थे उसके  
साथ थे परन्तु खानखानाका सम्बन्ध शाहजहासे सबके अपेक्षा  
अधिक था । प्रथम तो दक्षिण और बराडके सूबे जिनके वे शा-  
सक थे शाहजहाका मिल चुके थे, दूसरे शाहजहासे उनको आते  
भी फसी हुई थी क्योंकि उनको पोती जो शाहनवाजशाही बेटी  
थी उनकी व्याही हुई थी ।

बादशाहका खानखानाकी नमकहराम शिष्टना ।

बादशाहने इस समय खानखानाको नमकहराम लिया है  
और उसका वगन इन अक्षरोंमें किया है ।

“जब कि खानखाना जैसा अमीर जो अतालीकीके ऊंचे पदको  
पहुंचा हुआ था, ७० वर्षकी अवस्थामें अपना मुंह नमकहरामीसे  
बाला वार ले तो दूसरीसे क्या गिरा है । मानो शरीर ही नमक-  
हरामीसे बना था । उसके बापने भी अन्तिम अवस्थामें मेरे  
व पसे ऐसा ही बरताव किया था । सो यह भी उस उमरमें बापका  
अनुगामी होकर हमेशाके लिये कलड़ी हुआ । मेडियेका बच्चा  
आदमियामें बड़ा होकर भी अन्तको मेडिया ही होता है ।”

नूरजहाँका बाप बेटोमें सन्धि न होने देना और सुन्दर ब्राह्मणका

लडार्इमें काम आना।

शाहजहाँने कई बार विनय पत्र और दूत पिताके पास भेजे और क्षमा मांगी परन्तु नूरजहाँने बादशाहको उमकी प्रीति ऐसा कठोर कर दिया था कि वे किसी तौर पर भी उमकी प्रीति पर गौर नहीं करते थे। वल्कि उमके वकीलोंको कैद कर देते थे। शाहजहाँको देख देनेका पक्का विचार कर लिया था परन्तु शाहजहाँ और खानखाना बादशाहके पासने होनेका मान्य न करने दिखीके पाससे बायें हाथको मुड। गये सुन्दर ब्राह्मण, दाराबख्त और राजा भीमको लडनेके लिये छोड गये। ८ फरवरी (१) बुधवार सन् १८ को बादशाहने २५००० हजार तवार अमिफ-खाकी अफसरोंमें भेजे। बल्लोचपुरमें लडार्इ हुई, सुन्दर गोलीने मारा गया, बाकी लोग भागकर शाहजहाँके पास गये और वह साटुका लौटा।

बादशाह भी उसके पीछे, जले। १ उर्दी बहिस्त (२) सन १८ को फतहपुर पहुँचे। १० को (३) परवेज भी छिण्डोननें उनमें आ मिला। २५ को (४) बादशाहने उसे ४०००० सवारों सहित महाव-तखाकी अतालीकीमें शाहजहाँके ऊपर भेजा।

बादशाह अजमेरमें, परवेज मालवेमें और शाहजहाँ दक्षिणमें।

खुरदाद (५) शनिवार सन १८ ता० १८ रज्जव सन १०३२ को बादशाह अजमेरमें पहुँचे। सनूचकार जो शाहनवाजगाका बेटा और खानखानाका पोता था शाहजहाँका साथ छोडकर परवेजके

१। चैत बदी १४ स० १६७८।

२। बैसाख बदी ७ स० १६८०।

३। बैसाख सुदी १ स० १६६०।

४। जेठ बदी १ स० १६८०।

५। जेठ सुदी १ स० १६८० को शनि नहीं मङ्गल था और वही १८ नहीं ३० थी।



पास आ गया । खानखाना भी इसी जोड़ तौड़में थे कि परवेज चाद के घाटेसे उतर कर मालवेमें पहुँचा । शाहजहाँ २०००० सवारों और ३०० जङ्गी हाथियों सहित लड़नेको आया । खानखानाको भी साथ आना पड़ा , परन्तु ये और शाहजहाँ रणागनमें एक कोस पीछे रहे । दारावखान और राजा भौसकी आगे भेजा । सहावतखाने इधरके बहुतसे अफसरों और अमीरोंको मिला लिया था । इसलिये सामना होते ही वे लोग बादशाही लश्करमें जा मिले । शाहजहाँने यह खबर पाकर बाकी आदमियोंको बुला लिया और राती रात खानखाना सहित नर्मदाकी पार उतर गया ।

खानखानाकी सहावतखासे सटपट ।

नर्मदा पार खानखानाका एक कासिद जो सहावतखाके नामका पत्र लिखे जाता था शाहजहाँकी पकड़में आगया । उस पत्रके सिरे पर यह लिखा था कि जो १०० आदमी नजरोमें भेजी देह भाल नहीं रखते होते तो वेचैनीसे कभीको उड़कर वहाँ पहुँच जाता ।”

खानखाना शाहजहाँको कैदमें ।

शाहजहाँने खानखानाको वेटो समेत बुलाकर वह पत्र दिखाया । फरीने बहाने तो बहुत किये , परन्तु कोई ठीक न था । इसलिये शाहजहाँने उनकी दारावखा आदिके सहित अपने डेरके पास पैदल कर दिया । बादशाह इस विषयमें यह फव्वारा हुआ “बुट-कदा” लिखते हैं कि “उलने जो १०० आदमियोंकी नजरोंमें रह-नेका पहिले प्रशुक्न लिखा था वह उसके आगे आया ।”

सन्दिगा सदेसा और खानखानाका कैदसे छुटकारा ।

शाहजहाँकी मनशा पहिले तो खानखाना और उनके वेटोको आसरेके किलेमें कैद रखनेकी थी, परन्तु फिर अपने साथ दुरहानपुरकी ले गया । अब नर्मदा नदी बीचमें थी और उसके दोनों किनारों पर दोनों ओरके लश्कर जमे हुए थे । अबदुल्लाखा फीरोज खान जिसे अब “सानतुल्ला”की उपाधि मिली थी और

जो शाहजहांसे जा मिला था राव रतन हाडाके हाग सुनह करना चाहा ; परन्तु महावत खाने कहा कि जब तक खानखाना न आवे सन्धि स्वीकार नहीं है। उसपर शाहजहाने खानखानाको कैदसे छोड़कर उनके बहुत गिटाचार किया और कुतानकी कसम लेकर वचन पढ़ा करनेके लिये उनको अन्तःपुरमें ले गया तथा अपनी बेगमों और बेटियोंके सामने कहा कि अब वहां बहुत नाजुक आगया है। मैं अपनेको तुम्हारे हवाले करता हूं। मेरी इज्जत और आवरू तुम्हारे हाथमें है। ऐसा करो कि जिससे बात अधिक न बिगड़े और फिर भटकना न पड़े।

खानखाना सन्धि कराने जाते हैं और परदेजसे मिल जाते हैं।

खानखाना शाहजहांकी धीरज देकर सन्धि करनेके वास्ते चले ; बात यह ठहरी थी कि इधरसे खानखाना और उबरते महावतखा नदीके दोनों कराड़ीपर बैठकर सुनहकी तजवीज ठहरावे। अभी यह शर्त आरम्भ भी न हुआ था कि बादशाही लगकर शाहजहांकी फौजको गाफिल देखकर नदीसे उतरने लगा जिससे शाहजहांकी फौज गड़बड़ाकर भाग निकली और खानखाना समयजे पलट जानेसे अजीब भ्रुकुटमें पड़ गये कि न तो ठहरनेकी जगह थी और न जानेकी रास्ता। मिदान सब वचन कचन तोड़कर महावतखाकी मारफत शाहजादे परवेजसे जा मिले। उस समय उनके गुलाम फहीमने उनसे बहुत कहा कि मुझे महावतखाकी तरह देखते हुए यहाँ दगा मालूम होता है। कहीं कुछ अपमान न हो जावे। इससे तो उत्तम यह है कि हथियार पकड़कर बादशाहके हजूरमें चले चलें। परन्तु खानखानाने नहीं माना।

शाहजहां बापका राज्य छोड़ जाता है।

खानखानाके दगा देनेसे शाहजहांके दिलको बड़ा धक्का लगा और यह बादशाही राज्य छोड़कर कुतुबुल्लुकी सीमामें चला गया जो गोलकुण्डेका स्वतन्त्र बादशाह था।

खानखानाको राजा भीमका धिक्कार ।

खानखान ने राजा भीम सीसोदियाको (१) जो शाहजहाँका निज सखी और हितैषी था लिखा कि जो शाहजादे मेरे लडकोंको छोड़ देवे तो मैं बादशाही लश्करको किसी न किसी वहानेसे लौटा दूँ। नहीं तो बहुत सुशक्ति पड़ेगी। राजाने जबाब दिया कि अभी तो ५५ हजार जान भोकनेवाले और सिर देने हारे शाहजादेकी घरदलीमें हाजिर हैं। जब तू पास पहुँचेगा तो मैं तेरे बेटेको मारकर खबर लूँगा।

बादशाह काधमीरमें ।

सुलतान परवेज ४० कोसतक शाहजहाँके पीछे जाकर १ आगानकी (२) बुरहानपुरमें लौट आया और बादशाह भी गिदित्त होकर पाजर १ सफर (३) सन १०३३ की अजमेरसे काश्मीरको चल दिष्ट ।

शाहजहाँका बङ्गालपर चढ़ाई ।

आदिनखाने तो शाहजहाँकी कुछ सद्धानुभूति नहीं की। परन्तु कुतुबुल्लाहने अपनी अमलदारीमेंसे उडीसेकी तरफ उसको तार्ग दे दिया जिधरसे वह बङ्गालमें जा पहुँचा। बादशाहने सुलतान परवेज और महावतखाँकी लौट आनेका हुक्म लिखा और आगरेसे उडीसेतक अपने भरोसेके सरदारोंको जावहेके लिये भेज दिया।

परवेजका बुरहानपुरसे कूच ।

परवेजने ६ एरवरदीग (४) सन १६ की बुरहानपुरसे कूच

१। भीम सीसोदिया राजा अमरसिद्धका बेटा और करनसिद्धका भाई। था शाहजहाँने उसको महाराजकी पदवी दी थी।

२। कातिक सुदी १ सं० १६८०

३। मगसर सुदी २१३ सं० १६८०

४। चैत सुदी ६ सं० १६८१

किया और दक्षिणकी रक्षाके लिये जो धान बँटाये उनमेंसे खान पुरके धानपर मनुचहरको रखा ।

शाहजहाँका बङ्गाल जीतकर दाराबगको टेना ।

शाहजहाँने बङ्गालके सूबेदार इनाहीमको मारकर बङ्गाल जीत लिया । ४० लाख रुपये इनाहीमके खजानेके मूटमें पाये थे । वे अपने साथियोंको बांट दिये । उनमेंसे १ लाख रुपये दाराबगको दिया और उसकी कारागारमें निकालकर कुरानकी मर्यादा की और बङ्गालकी हुकूमत देकर उसकी सीकी १ लडकी और शाहनवाजगंवाकी एक लडकी सहित अपने पास रख लिया ।

शाहजहाँका बिहार जीतकर दलाहाबादपर चटना ।

फिर शाहजहाँने बिहार जीतनेकी प्रयाण किया और राजा भीमको पछिलेसे भेज दिया—बिहार परवेजकी जागौरमें था । उसके कर्मचारियोंसे कुछ प्रवन्ध न होसका । भीमने जाते ही पटनेमें प्रवेश किया । पीछेसे शाहजहाँ भी पहुँचा । वहाँ उसके पास बहुतसा कटक जुड़ गया । राजा भीम और अबदुल्लाहखा इलाहाबादपर आये ।

परवेजका खानखानाको कैद करना और फहीमका

स्वामि प्रेमधर्म साधनसे माराजाना ।

परवेज, शवरतन हाडाको बुरखानपुर सौंपकर बिहारको गया । उस समय उसने खानखानाको इस हेतुसे कि उनका बेटा दाराबग शाहजहाँके पास था नजर कैद कर लिया । उनका डेरा शाहजादेके छेरेके पास लगाया जाता था और बड़े बड़े आदमी उनकी छोड़ीका पहरा देते थे । जाना बेगमके सिवाय जो उनकी विधवा बेटो थी किसीको उनके पास नहीं छोड़ा था । फिर उनका धन माल भी हारक करना और उनके गुलाम फहीमको पकड़ना चाहा । वह बड़ा वीर और स्वामि प्रेमधर्मी था । अपने स्वामीके हितार्थशाहजादेके और भगवतखांके मनुष्योंसे लड़ा और जब वह मारा गया तो शत्रुओंका हाथ खानखानाके डेरेपर पड़ा ।

यह फहीम एक राजपूतका लडका था । इसीके वावत अब तक यह कहावत चली आती है कि “कसावे खानखाना उडावे मिया फहीम ।”

परवेज और शाहजहांका युद्ध, भीमका साराजाना और  
शाहजहांका भागना ।

अबदुल्लाहखां अभी इलाहाबादको घेरे हुए था कि परवेज और महावतखा आ पहुँचे । तब वह वहांसे उठकर जौनपुरमें शाहजहांके पास चला गया । शाहजहां बेगमों और वज्जोंको रोहतास गढमें छोड़कर बनारस पर आया जहाँ परवेज भी पहुँच गया था । उसके साथ ४०००० सवार थे और शाहजहांके पास ७०००० हो ; तो भी राजा भीम सीसोदियाने मैदानकी लड़ाई लड़नेकी उत्तेजना दी । अबदुल्लाहखां इसमें सहमत नहीं था । परन्तु शाहजहाने राजाकी राय मानी और कुछ पोके हटके मैदानमें ही ब्यूह रचकर लड़नेकी ठानी । उधरसे परवेज आया । भाई भाई तानस नदो पर लड़े । राठोड सीसोदियोसे भिड़े । खूब तलवार चली । लुहको नदी वही । भीम एक भीषण युद्ध करके वीर शय्यापर पोछा (१) शाहजहांकी हार हुई । वह चार कूचमें रोहतास आया और वहांसे पटनेकी चला गया ।

महावतखांका खानखाना होना ।

बादशाहने इस विजयसे सन्तुष्ट होकर ७ हजारों ७००० सवारका मनसब तुमन तौग और खानखानाका खिताब महावतखांके वास्ते मेजा और उसका पद खानखानाके बराबर कर दिया ।

दक्षिणमें अम्बरका फिर जोर पकड़ना ।

उधर दक्षिणमें अम्बरने वीजापुरके बादशाहपर चढ़ाई करके उसका मुल्क लूटा और बादशाही फौज जो उसकी सहायताको

---

१ । जोधपुरके इतिहासमें लिखा है कि भीम सीसोदिया महाराज गजसिंहके हाथसे मारा गया था ।

बुरहानपुरसे गयी थी उसकी भी हत्याकर मनुचन्द्र, नगकात्या और अकोदतखाको पकड़ लिया । फिर अहमद नगरको गाँ घेरा और याकूत हवशीको बुरहानपुरपर भेजा ।

दाराबखाका शाहजहाँके पास न जाना और शाहजहाँका उसके बेटेको मरवा डालना ।

शाहजहाँने रोहताससे दक्षिण जाते हुए दाराबखाको बङ्गालकी गढ़ीमें बुलाया । परन्तु वह जमीन्दारोंके बलबेजा बहाना करके नहीं गया । तब शाहजहाँ उनके जवान बेटेको जो ओलमें था अबदुल्लाह खाँके हवाले करके जिस मार्गसे आया था, उन्ही मार्गसे दक्षिणकी चला गया । अबदुल्लाह खाँने दाराबखाके बेटेको सार डाला । परवेजने बङ्गाल महावत खाँकी जागीरमें देकर पीछेकी कूच किया और बंगालके जमीन्दारोंने दाराबखाको परवेजके पास भेजा । वह आकर महावत खाँसे मिला ।

बादशाह लाहौरमें और दाराबखाका वध ।

बादशाह १५ शहरवारीको (१) काश्मीरसे कूच करके लाहौरमें आये और दाराबखाके समाचार सुनकर महावत खाँको लिखा कि इस कुपात्रकी जीते रखनेमें क्या लाभ है, शीघ्र इसका सिर हमारे पास भेज दो । महावत खाँने ऐसा ही किया ।

कहते हैं कि बादशाहके पास भेजनेसे पहिले महावत खाँने दाराबखाका मस्तक एक झालमें ढककर तरबूजके नामसे खानखानाके पास भेजा । खानखानाने देखकर कहा, हा तरबूज शहीदी (२) है ।

खानखानाका दरबारमें बुलाया जाना ।

फिर बादशाहसे “अरबदस्तगेब”को शाहजादे परवेजके पास

(१) आसोज सुदी ४ स० १६८१ ।

(२) शहीदीका अर्थ जारा हुआ—और शहीदी एक प्रकारका तरबूज भी होता है । यही शहीदीके दो अर्थ हैं ।

मेजवर खानखानाकी भी बुलाया । इनसे खानखानाकी पदवी छिन गयी थी । ती भी महावत खाने इनकी बड़ी इज्जतसे सेवा और विदा होते समय शिष्टाचार करके अपनी ससभमें सफाई कर ली ।

शाहजहाका अख्बरसे मिलकर बुरहानपुरपर आना ।

शाहजहाके दक्षिणमें पहुँचनेपर अख्बरचपू भी उससे मिल गया और उसने याकूत खां हबशीके १००० फौजसे उसकी सहायतामें बुरहानपुरके ऊपर सेवा । जब वह मलकापुरमें पहुँचा और राव रतन छाडाने बुरहानपुरसे निकलकर उसपर जाना चाहा तो बादशाहने यह खबर सुन उसको लिखा कि जबतक दूसरी फौज न पहुँचे, ऐसा साहस न करे और सुझलिस खाको परवेजके पास भेजदार दक्षिण जानेकी ताकीद की ।

बादशाहका काश्मीर जाना और शाहजहाका अहमद-

नगरको छोडना ।

बादशाह असफगढ़ार (१) सन् १६ में लाहौरसे फिर काश्मीर चले गये । शाहजहाने याकूत हबशीसे मिलकर बुरहानपुरको घेरा और ३ बार धावा करके बहुत जोर दिया । परन्तु राव रतन छाडाने हर बार उसको और दखनियोको हरा हराकर किलेके पाससे हटा दिया । इतनेमें परवेज और महावत खाके नर्मदा तट पर पहुँचनेकी खबर उठी तो शाहजहा और दक्षिणी बुरहानपुरका घेरा छोडकर दालाघाटकी चले गये ।

बुरहानपुरमें राव रतन छाडाका जमा रहना और दुश्मनोंको भगाकर ५ हजारों होना ।

बादशाह १८ उर्दी वदिश (२) सन् २०को काश्मीर पहुँचे ।

१ । यह असफगढ़ारका महीना फागुन सुदी ११ सवत् १६८१ को लगा था ।

२ । वैशाख सुदी १ सवत् १६८१ ।

दक्षिणके बखशी असद खाने रपोट भेजी कि शाहजहां देवन गावमें है और याकूत खानगी अम्बरको फोजमें बुरहानपुरकी घेरे हुए हैं। राव रतन शाहा किलेमें जमा हुआ है। बाहर जाकर भी लड़ता है। फिर खबर आयी कि अम्बरकी फोज उठ गयी है। बादशाहने प्रसन्न होकर ५ हजारों ५००० सवारका मनसब और रायराजका खिताब (१) जो दक्षिणमें बहुत बड़ा समझा जाता है राव रतनको दिया। इससे पहिले सर बुल्न्द रायका खिताब भी उसे मिल चुका था।

शाहजहाका वापसे अपराध क्षमा करा लेना।

शाहजहा जब बुरहानपुरका घेरा छोड़कर दक्षिणकी जाता था तो मार्गमें बहुत बीमार हो गया जिससे उसने पछताकर बादशाहकी अरजी अपराध क्षमा करनेकी भेजी। बादशाहने अपने हाथसे उत्तर लिखा कि जो अपने बेटे दाराशिकोह और औरङ्गजेबकी सेवामें भेजे तथा रोहतास और आसिरके किले छोड़ दे तो उसके अपराध क्षमा किये जावेंगे और बालघाटका देश भी दिया जावेगा।

शाहजहांने इस हुक्मकी सिरपर चढ़ाकर दोनों बेटोंकी भी १० लाख रुपयेकी नजराने सहित भेजा और रोहतास तथा आसिरके किलेदारोंकी भी दोनों किले बादशाही आदमियोंकी सौंप देनेका हुक्म लिख दिया।

खानखाना दरबारमें और उनके अपराधोंकी माफी।

खानखाना बादशाहके हजूरमें पहुँचे तो मारे लज्जाके बहुत देरतक उन्होंने अपना माथा धरती परसे नहीं उठाया। बादशाहने उनका दिल ठिकाने लानेके लिये कहा कि अबतक जो कुछ हुआ देव सयोगसे हुआ, न कुछ हमारे अशक्तियारकी बात थी न तुम्हारे

१। पाठान्तर राव राजा। बूढ़ीके रईस उस दिनसे राव राजा कहलाते हैं।



अख्तियारकी। तुम इसका जिधादा सोच सम्हाप न करो और वख्तियोकी हुक्म दिया कि इनकी उचित जगहपर लीजाकरें लडा करो।

महावतखानकी दरबारमें बुलाना और उसका परभार बङ्गाल जाना।

अब शहजहाँकी ओरमें शान्ति हुई तो नूरजहाँने शहजादे परवेजकी निर्वन्त करनेके लिये महावतखानको उसके पाससे अलग करना आवश्यक समझकर बादशाहसे यह हुक्म लिखाया कि महावतखान तो बङ्गालकी चला जावे और खानजहाँ लोदी गुजरातसे दक्षिण जाकर शहजादेकी अतालीकी करे। परन्तु जब परवेज और महावतखाने अलग होकर नहीं किया तो बेगमने महावतखानकी प्रेक्षा दरबारमें बुलाया। तब महावतखान यहाँ तो नहीं आया पर बगालकी चला गया।

खानखानाका फिर खानखाना होना।

१८ एप्रिल (१) सन् १०३५ को बादशाह काशीरसे लौटे। २० को लाहौर पहुँचे। खानखानाकी १ लाख रुपये इनायत करके २३ अक्टूबर (२) सन् २० को काबुलकी ओर रवाने हुए। उस समय उन्होंने खानखानाकी न पसिरे खानखानाकी पदवी और खिलअत देकर काशीजकी हुक्मतपर सेजा। इस जगहपर "सन्ना-लिखत उसरा"के कर्त्ताने लिखा है कि अब उस दुनियादार बूढ़े वृद्धने अपनी प्रगृहीमें हम भावता यह शेर (टोहा) खुदाया था,

“बहागीरकी महरदानीने खुदाकी मददसे  
सुखकी जिम्मेगी और खानखानी दुवार दी है।”

महावतखान पर कीप।

महावतखाने अपनी देटीका व्याह एक आदमीसे किया था। बादशाहने उसको दुगाया और यह कहकर कि क्यों तूने ऐसे बड़े

सरदारकी बेटी बिना हुक्मके लेली अपने रूखर पिटवाया और कैद कर दिया ।

महावतखांका दरबारमें आना और बादशाहको अपने कानूमें कर लेना ।

महावतखांका इन बातोंमें नूरजहाँ बेगम और उसकी भाई आसिफखांकी जो तनाम काम बादशाहको करती थी अपने बिगाड़नेके विचारमें देखकर ४५ हजार जल्ती राजपूतोंके साथ पंजाबमें बादशाहके पास आया तो उससे हिमाचल मसभने वगैरहमें और झुरताकी गयी । तब तो उसने एक दिन आसिफखांकी गफलतसे बादशाहको थोड़े से आदमियोंके साथ भटनदीके उस तरफ देखकर जा घेरा और हाथीपर सवार कराकर अपने डेरेपर ले गया । परन्तु इतनी भूख रह गयी कि नूरजहाँ बेगमको साथ न लेता गया जिससे उसकी यह भीसान मिल गया कि नदीसे छतरकर लश्करमें चली गयी और दूसरे दिन ८ फरवरदीन शनिवार (१) मन् २१ ता० २८ जमादिउल्सागी स० १०३५ को अपने भाई आसिफखां वगैरह अमीरोंके साथ लड़नेके वास्ते आये । परन्तु महावतखांके राजपूतोंसे हारकर बड़ी मुश्किलसे नदीमें गोते दाती हुई पीछे गई और आसिफखां अटकके किलेमें जाकर पकड़ा गया ।

महावतखांका खानखानाकी कन्नौजके रास्ते से लौटाकर लाहौरमें बुलाना ।

महावतखां बादशाहको उसी हालतमें काबुल दी गया और दिल्लीके हाकिमको लिखकर खानखानाकी कन्नौजके रास्ते से लौटाया और लाहौरमें बुलाया । इसी तरह आगरेके हाकिमको लिखा कि दाराशिकोह और औरंगजेबको नजर बन्द करके लावे ।

शाहजहाँका अजमेरमें आकर सिन्धको जाना ।

शाहजहाँ यह खबर सुनकर (२) २३ रमजानको नासिकसे

१। चैत सुदी १ सवत् १६८३

२। भाषाढ़ बदी ८ सवत् १६८३

चलकर अजमेर पहुँचा। १००० सवार साथ थे। परन्तु महाराज भी-  
मके बेटे किशन सिंहके अकस्मात् मर जानेसे ५०० सवार जो उसके  
पास थे बिखर गये। इस बिस्मसे वह महावतखांकी ऊपर जानेमें कुछ  
लाभ न देखकर जोधपुर और जैसलमेरके रास्तेसे ठठ्ठेको चल गया।

महावतखांकी स्थिति और उसका चला जाना।

काबुलमें महावतखांकी हजार डेढ़ हजार राजपूत बादशाही  
अहदियोंसे लड़कर मारे गये और बादशाही आदमी दिन दिन  
बढ़ने लगे। बादशाहने (१) १ महरवर सन् २१ को काबुलसे कूच  
किया। रास्तेमें एक दिन महावतखासे कहलाया कि कल नूरजहा  
बेगमके सिपाहियोंकी छाजरी होगी। तुम तडकी सलाम करनेको  
मत जाना, कहीं कुछ बोलचाल होकर भगडा ग हो जावे।  
महावतखा उस दिन दरबारमें नहीं आया। बस इस एक दिनकी  
गेरह जिलेमें बादशाह उसके काबूसे निकल गये और उससे  
बाहला दिया कि अब आगे आगे चला करो। उसका आगे चलना  
था कि बादशाह उसके पीछे ऐसे वेगसे चलने लगे कि सभ-  
रनेका अवकाश नहीं मिला। हतोत्साह होकर वह घबरा गया।  
तब बादशाहने हुक्म भेजा कि आसफखांको दौड़से छोड़कर ग्राह-  
जहाके पीछे जावे जो ठठ्ठेको गया है। महावतखा हुक्म न  
माननेमें अपना विनाश देखकर भटनदीकी तट पर जहा उसने  
पिछले जाल बादशाहको घेरा था ठठ्ठेको चन दिया।

बादशाहका लाहौर पहुँचकर खानखानाको

महावतखा पर भेजना।

बादशाहने (२) ७ आवागकी लाहौरमें पहुँच कर आशि-  
फादाको मुख्य मन्त्री बनाया और यह एनवार कि महावतखा  
ठठ्ठेका रस्ता छोड़कर हिन्दुस्तानकी गया है कुछ पूछ उसको

पीछे भेजी और और खानखानाको जो पहिलेसे लाहोरमें पहुँच गये थे ७ हजारोजात ७००० सवार दो पप्पेमद अपनेका असस्त्र, खिलअत, तख्तार, घोड़ा जडाऊ जीनका और सामा हाथी देकर सहायतखाने पीछे भेजा और अजमेरका सूना उनकी जागीरमें लिख दिया। इसी तरह नूरजहाने भी हाथी घाड़े ऊट और १२ लाख रुपये उनकी अपनी सत्कारने दिये। खानखाना आप सहायतखानेसे जले भुने थे। उनकी पोती दारा-बख्शकी बेटी जो "आसिफखानेके बेटे शायस्ताखानेकी व्याही थी कहा करती थी कि मैं जब सहायतखानेकी देगूगी बन्दूकसे मार दूँगी" क्योंकि उसके बाप और भाईको सहायतखाने मारा था। इन्ही कारणोंसे खानखाना बड़े क्रोधसे सहायतखानेसे दूर लेनेको बादशाहसे विदा हुए।

खानखानाकी मृत्यु ।

अब इस तरह खानखानाके दिन फिर तो और भी कष्ट घटनाएँ ऐसी हुई कि जिनसे उनकी लाभ पहुँचे। अन्तर दक्षिणमें मर गया था और दक्षिणियोंने लड़ना छोड़ दिया था। (१) ७ सफर सन् १०३६को परवेजकी भी मृत्यु हो गयी थी। शाहजहाँ जो ईरान जानेकी विचारसे सिन्धकी गया था परवेजका मरना सुनकर काठियावाड़ और और गुजरातके राज्योंसे दक्षिणकी लौट आया था। यह तो सब कुछ हुआ; परन्तु इनकी आयुषने साथ नहीं दिया। बीमार तो लाहोर हीमें हो गये थे। दिल्ली पहुँचे तो इतने अशक्त हो गये कि लाचार वही ठहरना पड़ा और यह ठहरना मौतका बहाना था। कई दिन पीछे सन् १०३६के विचले महीनोंमें शान्त हो गये और अपनी बोबीके मकबरेमें जो उन्हीका बनाया हुआ था दफन हुए। उस समय उनकी आयु ७२ वर्षकी थी।

हरक सन् हिजरीके विचले महीने जमादि उलसानी या-रजब माने जा सकते है । इस लेखसे खानखानाका देहान्त फागुन सवत् १६८३ या चैत सवत् १६८४में हुआ होगा । अफसोस है कि तुजुक जहांगीरीमें खान खानाके मरनेकी मितो नहीं लिखी है । पिछले वर्षों में जहांगीर बादशाहने रोग ग्रस्त और दुखी हो जानेसे खय लिखना छोड़ दिया था । कुछ वर्षों तक तो मोतमिदखां लिखा करता था । उसका लेख ठीक है , परन्तु मोहम्मद हादीने जो ३ वर्षका हाल लिखा है वह बहुत ही थोडा है । और दिन मितो भी विशेष करके नहीं है । इस कोता कलमीसे खानखाना जैसे नामी अमीरकी मृत्यु तिथि अन्ये खतमें मारी गयी ; मोतमिदखाने भी अपने ग्रन्थ इकबाल नामे जहांगीरीमें नहीं लिखी है ।

खानखानाके ६७ महीने पीछे ही बादशाह भी मर गये और राज्यकी रचना कुछ और की और हो गयी । इस वास्ते थोडासा वर्णन उसका भी किये देते है ।

खानखानाके पीछेका कुछ हाल ।

महावतखान बादशाही फौजसे पीछा कूटता न देखकर राज पीपले और वगमानेके रास्तेसे जुनेरमें शाहजहाके पास चला गया । बादशाह (१) २१वहसन सन २१को काशमीर गये , क्योंकि गरमियोंमें उनको हिन्दुखानकी हवा हानि करती थो । परन्तु इस बेर वहा भी चैन नहीं मिला, बीमारी बढ गयी, भूख जाती रहा, पीछे राजौरमें (२) २८ सफर सन १०३७ रविवार १५ भावान सन् २२ को शान्त हो गये । शहरयार तो पहिले ही अपनी बीमारीका इलाज करानेको लाहोर चला गया था और खुसरोके बेटे दावरबख्शकी जो उसके पास कैद था इरादतखाके पास रखा गया था । ग्रामिफखाने उसीको बादशाह

१ । फागण बदी ८ स० १६८३

२ । कातिब बदी ३० स० १६८४

बनाकर कूच किया। नूरजहाँने उसकी बहुत बुनाया, पर वहनके पास जाकर फटका भी नहीं, दुःख पड़ना तो दूर रहा। तब वह भी बादशाहकी लोथकी लेकर उमके पीछे हो ली। दूसरे दिन वस्त्रमें पहुँच कर बादशाहकी कफान पहिनाया और लाहौरकी भेजकर बागमें (१) दफन कराया।

आसिफखाने बनारसी नामक एक हिन्दूकी डाक चौकीमें शाह-जहाके पास भेजा और उसके बेटोंकी भी नूरजहाँके पाससे ले लिया तथा नजरबन्द करके उसके पास लोगोंका आना जाना बन्द कर दिया, क्योंकि वह अपने जमाई शहरियारकी वाद-शह बनानेके उपायमें थी और आसिफखा अपने जमाई शाह-जहाँको बादशाह बनाया चाहता था। उधर शाहरियार लाहौरमें बादशाह बन ही बैठा था। जब आसिफखां दावरबख्शकी लेकर लाहौर आया तो शहरियार सडनेकी निकला, परन्तु हारा, पकड़ा गया और कैद हुआ।

उधर शाहजहाँ बनारसीके पहुँचते ही (२) २३ रबीअउल-अव्वाल शुबवार सन् १०३७की जुनेरसे रवाने हुआ और उधर आसिफखाने (३) २२ जमादिउल्-अव्वल रविवार सन् १०३७की लाहौरमें उसके नामकी आन दुहाई फेर कर दावरबख्शकी उसके भाई क़यास और दानियालके बेटों वायशनकर, तहसुर्ब और होशङ्ग सहित मार डाला। शाहजहा आगरे पहुँच कर (४) ८ जमादि उलसानी सोमवारकी तख्त पर बैठा। महा-वतख़ां खानखाना हुआ और आसिफखां वकील—उलसलतनत

१। यह स्थान अब शाहदके नामसे प्रसिद्ध है लाहौरसे ५ मील है।

२। मगसर बदी १० सं० १६८४

३। माह बदी १० सं० १६८४

४। माह सुदी १० सं० १६८४

बना। नूरजहा १ कीनेमें बैठा दी गयी। सब उपद्रव शान्त हो गया। भाई भतीजेमेंसे दावेदार कोई नहीं (१) रहा।

खानखानाकी सन्तान विशेष तो शाहजहांके भगडोंमें खप गयी और जो रही थी वह ऐसी नहीं थी कि जिससे शाहजहां और उसके अमीरोंके चित्तमें कुछ शङ्का या चिन्ता उत्पन्न हो।

## दूसरा खण्ड ।

—\*0\*—

समालोचना और ग्रन्थकारोंके मत ।

यद प्रच्छा दुरा जीवन परिच खानखानाका हमने उस समयकी तवारीखोंसे लिखा है। इससे ज्ञात होगा कि आदमीको अपनी जिन्दगीमें जो क्षण भङ्गुर कहलाती है क्या क्या ऊँच नीच वर्ताव इस असार ससारके वरतने पड़ते हैं और कालकी विचित्र गति उसके चित्तको कैसा कैसा चल विचल कर देती है। देखो एक समय तो खानखानाको कैसी हवा बध गयी थी कि हर तरफसे भट्ठाई ही भट्ठाई उनके पल्ले पड़ती थी और एक समय ऐसा आया कि उनकी दनी बनायी बात भी बिगड गयी। राज दरवारके उत्तट फेर भी बड़े ही वेदव होते हैं जो बड़े बड़े धीर धुरन्धर पुरुषोंको भी डिगमगाकर काभी कुछ और जामी कुछ कर देते हैं और उनके प्रपञ्चोंमें पड़कर मनुष्योंको

। इस विषयमें एक मारवाड़ी कविने कहा है,—

दोहा ।

मकान सगाई ना गिने, नां सबसां में सीर ।

सुरम पटारे नारिया, कौका काकौ बीर ॥

संभलना बहुत कठिन हो जाता है । खानखानाकी जहाँगीर और शाहजहाँके आपसके विगाडमें फस जानेसे जान मानकी हानि, लौकिकमें अपकीर्ति और दोनों ओरकी बेपेतागरीके सिवाय और कुछ प्राप्ति न हुई, पत भी खोई और पतयारा भी गया जिससे उनकी अन्तिम अवस्था बहुत बुरी तरहसे बीती । एक फारसी कविने कहा है कि "जगतरूपी वागके रत्न और रूपकी स्थिरता नहीं है ; क्योंकि दाखोके हर भरे होनेका परिणाम काला मुंह हो जाना है ।"

अब हम कुछ इतिहास वेत्ताओंके मत और लेख जो खानखानाके विषयमें है लिखते हैं—

तुर्क जहांगीरीमें (१) लिखा है कि खानखाना दरबारके बड़े अमीरोंमेंसे था एकवर बादशाहके राज्यमें बड़े बड़े काम किये जिनमें ये तीन तो बहुत ही बड़े थे ।

१। गुजरातकी फतह और मुजफ्फरका भगाना जिससे गया हुआ देश गुजरातका फिर हाथ आया ।

२। सुहेलकी लड़ाई जिसमें ७०००० जङ्गी सवारों और मद मत्त हथियोंको २०००० सवारोंसे मारा ।

३। सिन्ध और ठट्टेकी फतह ।

ऐसी ही एक फतह उसके बेटे शाहनवाजखाने भी जहांगीर बादशाहके समयमें अम्बर चम्पूके ऊपर पायी थी ।

खानखाना विद्या और योग्यतामें अपने समयका पक्का था ।

(१) यह जहांगीर बादशाहकी दिनचर्याका ग्रन्थ है । १६॥ वर्ष तक तो बादशाहने इसे लिखा है, फिर १८ वे वर्षके प्रारम्भ तक मोतमदखाने मसोदे बनाकर बादशाहसे सच्ची कराये हैं, शेष ३ वर्षों का हस्तान्त मिरजा मोहम्मद हादीने पूरा किया है और भूमिका भी लिखकर सगायी है जिसमें जहांगीरके सुवराज रहते समयका हस्तान्त है ।



अरबी, तुर्की, फारसी और हिन्दी भाषाओं को खूब जानता था । नकली और अकली इत्तम ( आगम, निगम और षष्ठ दर्शनमें ) उसकी पूरी गति थी । यहां तक कि हिन्दी शास्त्रोंमें भी पूरा अभ्यास था । बहादुरी और सरदारीमें तो अद्वितीय ही था । हिन्दी और फारसीमें कविता अच्छी बनाता था । उसने “वाकेश्वर तवावरी” का उल्था अकबर बादशाहके हुक्मसे फारसीमें कराया गया ।

मवासिरुलउमरामें (१) लिखा है कि “खानखाना विद्याकी निपुणतामें एक ही था । अरबी, फारसी, तुर्की और हिन्दीमें धारा प्रवाह जैसा था, कविता खूब समझता था और आप भी कविता करता था । उसमें रहीमकी छाप धरता था । कहते हैं कि जो भाषा पृथ्वी पर प्रचलित हैं उनमेंसे बहतेरी भाषाओंमें बात चीत कर लेता था । हिम्मत और सखावत (उदारता) तो उसकी हिन्दुस्थानमें प्रसिद्ध है ही, बल्कि बाजी बातोंको लोग मुश्किलसे मानते हैं ; कहते हैं कि एक दिन बरातों ( चिकी ) पर दस्तखत करता था ; एक प्यादेकी बरात पर १००) टकेकी जगह १०००) रुपये लिख दिये और वहीं रहने दिये । कवियोंको उसने बहुधा अशर्फिया उन-के बराबर तोल दी हैं । एक दिन मुझा नजीरौने कहा कि १ लाख रुपयेका कितना ढेर होता है, मैंने नहीं देखा है । खानखानाने हुक्म दिया कि खजानेसे लावे । जब लाये तो मुझाने कहा “खुदाका शक है कि मैंने नवाबकी बदौलत इतना रुपया देखा ।” खानखानाने फरमाया “सब मुझाओ देदो कि फिर खुदाका शक करे ।”

१ । यह प्रति ही उत्तम ग्रन्थ फारसी भाषाका ३ वडे बडे खण्डोंमें है । इसमें उन बडे बडे राजाओं और सुसलमान अमीरोंके जीवन चरित्र लिखे हैं जो बादर बादशाहके समयमें लेकर मोहम्मद शाहके राज्य तक हिन्दु खानोंमें हुए हैं ।

खानखाना हमेशा बहुतसे रुपये फकीरोंको और मोल बियोंको चीडे और छुपे देता था और दूर रहने वालोंको (१) बरसोदे भेजा करता था । हर एक विद्याके विद्वानोंका समूह उसके खसखस सुलतान हुसेन (२) मिरजा और नसीर (३) अलीगिरकी ससयके ससान था । ;

बुद्धि, बहादुरी और राज क्रियामें भी खानखाना बहुत बड़ा चढ़ा था परन्तु वैर भाव तथा कपट देख कर और समय समझ कर अपनेको वैसा ही बना लेता था । यह उसमें जियादा था वह कछा करता था कि शत्रुसे मित्रताकी लपेटमें शत्रुता करनी चाहिये । यह शेर उसके वास्ते कह गया है ।

बैतभर शरीर और १०० गांठें घटमें

सुडीभर हड्डिया और १०० वरा ।”

३० वर्षके लगभग कई कई बेर वह दक्षिणमें रहा । उस समय शाहजादों और अमीरोंमेंसे जो कोई उसकी मददकी गया उसीने उसकी मिलावट और लाग लपेट वहांके बादशाहोंसे देख कर उसकी कपटी और अन्तर दोही बताया और शेख अबुल फजल तो उसे बागी ही कह चुका था । जहांगीरके राज्यमें अस्वर-चम्पूकी मित्रतासे कलङ्कित हुआ । उसके विश्वासी मन्त्री मह-मद मासूमने नमकहरामी करके बादशाहसे अरज करायी थी

१ । वर्ष भरका नियत किया हुआ रुपया ।

२ । यह हिरातका बादशाह अकबरसे कुछ पहिले था और बड़ा गुणज्ञ था । इसके दरबारमें जितने विद्वान एकत्र थे तवारीख वाले उतनेका किसी बादशाहके दरबारमें रहना नहीं बताते है । तवारीख रोज तुलसफामें उसकी सभाके सब विद्वानोंके हत्तान्त लिखे है ।

३ । अमीर अली शेर उस बादशाहका वजीर था और वह भी वैसाही विद्वान और पालक था ।

कि अन्वरकी चिट्ठियां खानखानाके नौकर शेख "अबदुल सलाम लखनवीके पास हैं ।" बादशाहने सहावत खांको उसकी तलाश लेने और कष्ट देनेका हुक्म दिया । उस विचारने जान खी दी, परन्तु भेद न खोला ।

खानखानाका नाम जगतमें चिरायु हो गया है । अकबरके राज्यमें तो उससे बड़े बड़े काम हुए, पर जहांगीरके राज्यसे कुछ न हुआ । वल्कि पूरी दुष्टि और अच्छी समझ होनेपर भी बहुतसे अपमान सहें । परन्तु राजलक्ष्णा नहीं छोड़ी ।

"कहते हैं कि दरबारकी खबरोका उसको बड़ा चसका पडा हुआ था । दो तीन आदमी नित्यप्रति डाक चौकीमें रोजनामचा भेजा करते थे । तो भी उसके दूत अदालतों, कवहरियों, चबूतरों, गली कूचों और बाजारोंमें लगे रहते थे और जो कुछ झूठे सच्चे समाचार सुनते थे, लिख देते थे । खानखाना सन्ध्या होते ही उन सबको पढ़कर आगमें जला देता था ।"

"कहते हैं, कि बहुधा चीजे उस समय उसके घरानेमें ही थी; जैसा हुआ पक्षीका पर जिसको शाहजादोंके सिवाय और कोई मस्तक पर नहीं लगा सकता था ।"

इ तजकरहुसेनीमें (१) लिखा है कि किसी मनुष्यने एक पुरुषको व्याकुल सा पिरता देखकर कारण पूछा तो उसने कहा कि मैं एक स्त्री पर मोहित हूं ; परन्तु वह तो १ लाख रुपये लिये विना बात ही नही करती इसका कोई उपाय जानते हो तो बताओ । उसने कहा कि इसका उपाय तो बहुत सुगम है ; जो तू काव्य रचना जानता हो तो अपना हत्तान्त कहकर खानखानाके पास ले जा । वह तुरन्त एक हन्द दनाकर ले गया जिसका यह आशय था ;

१। यह अन्य फारसी कवियोंके जीवन चरित्रका है जिसकी मौलुमिन दोस्त सभलीने सन् ११६३ हिजरी सन् १८०७ में बनाया था ।

हे उदार खानखाना ।

एक चन्द्रमुखी मेरी प्यारी है ।

वह जान मागे तो कुछ सोच नहीं है

रुपया मागती है यही मुश्किल है ।

“खानखानाने मुसकुरा कर पूछा कि कितना रुपया मांगती है उसने अरज की कि १ लाख । खानखानाने (१०६०००) रुपये उसकी दिलाकर फरमाया कि १ लाख रुपये तो उसकी मागनेके है और ६०००) रुपये तेरे भोग विस्वासके वास्ते है ।”

कहते हैं कि खानखाना वर्षा काल लगते ही अपने सिपाहियोंको ४ महीनेका वेतन देकर घर जानेकी आज्ञा दे दिया करते थे कि वरसात भर आरामसे अपने जोरू बच्चोंमें रहें और जाडेके लगते ही नौकरी पर आ जावे । एक साल कोई लड़ाई होने वाली थी । इस कारण घर जानेकी आज्ञा तो न दे सके , पर प्रति मनुष्य एक एक मोहर देकर कहा कि लोंडियां मोल लेकर यहीं उनके साथ मौज उड़ावे । उस समय एक सिपाहीने कहा कि मैं दो मोहरें लूंगा आपने उसको बुलाकर पूछा कि सबको एक एक मोहर मिली है ; तू २ क्यों मागता है ? उसने कहा कि १ से तो यहा मैं लोडो खरीद कर मौज करूंगा और दूसरी घर भेज दूंगा जिससे एक गुलाम मोल लेकर वहा भी गुल करें उड़ावे । इस पर आप बहुत हसे और सब सिपाहियोंको घर जानेकी कुट्टी दे दी ।

४। तारीख चगत्तामें (१) लिखा है कि एक दिन एक कज़ास ब्राह्मणने खानखानाको खौटी पर जाकर कहा कि नवाबसे कहो तुम्हारा साढू आया है । नवाबने उसको बुलाकर बडे मान

१। यह ग्रन्थ खड़ी भाषामें जयपुरके महाराजा सवाई माधो-सिंहजीकी आज्ञासे बनाया गया है । इसमें कई प्रकारके विषय हैं । कुछ अथ इतिहासका भी है ।

सम्मानसे पास बैठाया । किसीने पूछा कि यह सगता कहांसे आपका साढ़ू हो गया ? नवाबने कहा कि सम्पत्ति और विपत्ति दो बहनें हैं । एक हमारे घरमें है और दूसरी इसके अंदरमें । इस सम्बन्धसे यह हमारा साढ़ू है ।

किसीने खानखानाको पालकीमें लोहेकी पनसेरी फेंकी । खानखानाने उसे ५ सेर सोना दिला दिया । किसीने कहा कि इसने तो गर्दन सारनेका काम किया था और आपने ५ सेर सोना दिया यह भी खूब हुआ । खानखानाने कहा कि इसने हमको पारस समझ कर ऐसा किया था ।

५। बूढ़ी राज्यके इद्रिहास बग भास्करमें (१) लिखा है कि जब बूढ़ीके महाराव राजा भोज प्रकबर बादशाहके दरबारमें रहतेथे तब बादशाहका वजीर नवाब खानखाना था । वह बड़ा गुणवान था । संस्कृत आदि भाषाओंकी जानता था । बड़ा पण्डित और पण्डितोंका कदरदान था । अवगुण किसीके नहीं देखता था ; सबके दुःखोंमें पड़ जाता था । एक दिन एक दुर्बल ब्राह्मण भूखा प्यासा पड़ा हुआ सुसलमानोंको कोस रहा था । खानखानाने इसकी दीन दशा पर तरस खाकर कहा कि तुमको खाना पीना बहुत मिल जावेगा तुम हम लोगोपर दया रखो । ब्राह्मणने प्रसन्न होकर अपनी पागड़ी नवाबके पास फेंक दी और कहा कि मैं तुम्हारी बातोंसे रुन्तुष्ट हुआ हूँ ; परन्तु इस पागड़ीसे अधिक देनेकी मेरे पास कुछ नहीं है , क्योंकि हमारे शास्त्रका हुक्म है कि आदमी जिसकी बातोंसे प्रसन्न होवे उसको कुछ देवे ।

१। यह पट भाषाका महत् काव्य बूढ़ीके महाराव राजा औरामसिहजीकी आज्ञासे उनके आश्रित मिश्रण गीतके चारण कवि सूर्यमल्लका बनाया हुआ है जो बारहट किशनसिहजीकी टीका सहित छप चुका है ।

वह पगडी सारी छेद छेद हो रहो थी और रसके बटने उसके ऊपर सैल हो सैन चढा हुआ था। तो भी नवाबने अपने शिरसे बांध ली और उसको बहुत सा रुपया आपने भी दिया और अपने अमीरोंसे भी दिनाया ।

जैसा अच्छा वाटसाह अकबर था वैसा ही अच्छा उसका यह वजीर भी था। इसके बराबर धर्मात्मा हिन्दू मुसलमानोंमें कोई न था। बहुत ही सुशील और लज्जावान था। एक माह कारकी स्त्री इसको देखकर मोहित हो गयी थी। एक दिन उसने बुलाया तो यह गया और पूछा कि क्यों नेकवर्त्त ! मुझे क्यों याद किया। स्त्रीने शरमाकर कहा कि मैं तुमसे तुम्हारे जैसा बेटा मांगती हूँ। नवाबने कहा कि नेकवर्त्त सुन। बेटा देना मेरे अग्रतियारमें नहीं है और जो ऐसा हो भी तो क्या मालूम कि वह मुझसा हो या न हो और तेरी टहल करे या न करे और तुम्हकी मुझ जैसा बेटा चाहिये सो मैंही तेरा बेटा होता हूँ। आजसे तू मेरी माँ और मैं तेरा बेटा हूँ। जो तू कहेगी सो ही करूँगा। यह कहकर उसकी गोदमें धिर रत्न दिया जिससे उसकी भी रुज्जा आगयी और वह अपने खोटे मन्तव्यसे बहुत पछतायी।

एसी बात न किसी योगीसे हो सकती है न यतिसे जो नवाब खानखानाने उस स्त्रीसे कौं थी ;—

इस नवाबने कवि गगके कबित्तोंसे प्रसन्न होकर ३००००००) तीस लाख रुपये (१) उसको दिये थे।

६। मन्नासिर उलउमरामें जो यह बात लिखी है कि खान खाना हरेक भाषामें भाषण कर सकते थे इसका कुछ पता मेवाड और मारवाडमें भी मिलता है। वहा महडू शाखाका

१। खूब चन्द कविने खानखानाका गगको एक छप्पयके ऊपर २७ लाख देना इस कबित्तमें कहा है

मान दससाख दये दोहा जरनाथके पै ।

साथ जरनाथ दे कलह कवि प्रैहैं को ॥

चारण जाड़ा नामक हुआ । उसने एक बेर ये ४ चार दोहे खान-  
खानाकी प्रशंसाके बनाकर सुनाये थे ;—

१ । खानखाना नवाब री । मोहि अचभी एह ॥

साथी किस गिरि मेरु मन । साठ तिहसी देह ॥१॥

२ । खानखाना नवाब री । खांडै आग लिखन्त ॥

जल बान्ता नर प्राजलै । लग्न वाला जीवन्त ॥२॥

३ । खानखाना नवाब री । अदसगीरी धन ॥

सह ठहुराई तेर गिर । मनी न राई मन्न ॥३॥

४ । खानखाना नवादरा । अहिया भुज ब्रह्मण्ड ॥

पूठे तो है चण्डिपुर । धार तले नव खण्ड ॥४॥ १

वीरवल दे ए लीर केशवके कवित पर ।

खिवा हाथी वाहन दे भूपन दिन लेहै को ॥

छप्पे पै सताई लाख गग खानखानो दिये ।

यातें धन दाग दूनूई छरमें चैहै को ॥

श्री गम्भीर सिंह छन्द एव चन्दके ये रीति ।

बदासैं दगा दई दई न पोर देहै को ॥१॥

१ । इन चार दोहोंका अर्थ यह है ।

१ । सुभते यही अचम्भा है कि खानखानाका मेरु पर्वत जैसा  
सम ॥ हाथकी देखिमें कैसा समा गया है ॥ १ ॥

२ । खानखाना नवाबकी तख्तवारसे आग भडती है । परन्तु  
उसमें जलवाले नर पर्याप्त पराक्रमवाले तो जल मरते हैं और  
को तिकके मुहमें ले लेते हैं वे जी जाते हैं ॥ २ ॥

३ । खानखाना नवाबकी भद्रमनसी धन्य है कि सिंग गिरि  
जैसी वही ठहुराईके बराबर भी उन्होंने अपने मनमें नहीं  
सामी ॥ ३ ॥

४ । खानखाना नवादके भुज ब्रह्माण्डमें पड़े हुए हैं । चण्डीपुर  
पर्याप्त दिखी तो उसकी पीठपर है और ८ खण्ड तख्तवारकी  
धारके नीचे है ॥ ४ ॥

इस कविका नाम तो आसकरन था , परन्तु मोटा बड़त था । इस लिये लोग जाड़ा जाड़ा कहते थे । मो खानखानाने मो उमको देखकर यह दोहा कहा :—

घर जड्डो अम्बर जडा । जड्डा महडू कोय ॥

जड्डा नाम अलाहदा । और न जड्डा कोय ॥ १ ॥

और प्रति दोहा १ लाख रुपया देना चाहता । परन्तु जाड़ा महडूने रुपये तो नहीं लिये । महाराणा उदयसिंह जीके कुवर और महाराणा प्रताप सिंहके भाई सीमोटिया जगमालजीको बाट-शाहसे जंगौर दिलानेके लिये कहा जो अपने भाईसे रुठकर चले आये थे और जाड़ा जिनका वकील बनकर खानखानामे मिला था ।

खानखानाने बादशाहसे अर्ज करके जगमालजीको जहाजपुरका परगना दिला दिया जो मेवाडका ही था , परन्तु बादशाहने ले लिया था ।

“सुभासिर रहीमी ।”

सुना है कि खानखानाके चरित्रांका एक ग्रन्थफारसीमें बना हुआ है जिसका नाम सुभासिर रह भी है । परन्तु वह अवतक हमारे देखनेमें नहीं आया है । यह जो जीवनचरित्र उनका हमने लिखा है वह उन पुस्तकोंसे लिखा है जो हमारे पुस्तकालयमें हैं ।

खानखानाकी संस्कृत कविता

हम ऊपर यह लिख आये हैं कि खानखाना हिन्दी और संस्कृत भाषामें भी काव्य रचना करते थे सो इस बातको दोनों भाषाओंके पण्डित लोग भी स्वीकार करते हैं और उनके बनावे हुए बहुतसे श्लोक और कवित्त हिन्दुओंमें प्रसिद्ध है मुसलमानोंसे ज्यादा हिन्दुओंकी सुसभ्य सभाओंमें उनका नाम लिया जाता है । रहीम काव्य नामक एक संस्कृत ग्रन्थ भी उनका बनाया हुआ सुना गया है ।



हम यहा पहिले उनकी कुछ सस्कृत कविता लिखते है फिर भाषाकी लिखेंगे ।

श्लोक ।

आनीता नटवन्तया तव पुर' श्रीकृष्णया भूमिका ।  
व्योमाकाश खखां वराधि वसुपत्न्यव्योतये व्यावधि ॥  
प्रीतन्त्व यदिचेन्निरीक्ष भगवत् त्व प्रार्थितं, देहि मे ।  
नोचेद्ब्रूहि कदापि मानय पुनस्त्वेता दृशी भूमिका ॥

॥ अर्थ—कवित छप्पय ॥

रिभवन हित श्रीकृष्ण, खाग मै बहुविधि लायी ॥  
पुर तुम्हार है अवन भवनि, अहबह रूप कहायी ॥  
गगन बेत खख व्योम, वेद वसु खाग दिखाये ।  
अन्त रूप यह सनुष, रीभके हित वनाये ॥  
जो रीभे तो दीजिये, ललित रीभ जो चाय ।  
नाराज भये तो एकाम कर, रे खाग फेर मति लाय ॥१॥

श्लोक ।

रक्षा करोस्ति सदन गृहिणीच पदमा ।  
कि देय मस्ति भवते जगदीश्वराय ॥  
राधा गृहीत मनसे ऽमनसे चतुर्थ ।  
दत्त सया निज मनसादिद गृहाण ॥२॥

अर्थ ।

रक्षाकार समुद्र तो आपका घर ही है और जो लक्ष्मी है वह आपका पत्नी है । फिर है जगदीश्वर । मै क्या आपकी दूं ।  
रा आप मनन है आपका मन राधाने ले लिया है । इसलिये  
मैं अपना मन आपकी देता हूँ उसे ग्रहण कीजिये—

श्लोक ।

प्रक्षया पापाण' प्रहति पशुराभीष्टपि चमू ।  
गुह्य भूषाडान् खितय मपि नात निज पदम् ॥

अहं चिन्नेनाश्मः पशुरपि तवार्चादि करणे ।

क्रिया भिद्यागडालो रघुवर ! नमा मुहरमिकि ॥३॥

इसका अर्थ यथा सवेया ।

गौतम नारि पापाण रही, पशु जाति रक्षो कपि पु ज विचारो ॥

पापी बडोहि निपाद हुतो, परताप प्रभो तिन हनको तारो ॥

मैं ह सबै विधि चित्तमें पत्यर, पूजनमें पशु कर्म हत्यारो ॥

होय निकामनके सुख धाम ह्वै, रामजी । काहेन मोहि उदारो ॥१॥

श्लोक ।

यद्या त्रया व्यापकता हताते ।

भिदैकता वाक्परता चस्तुत्या ॥

ध्यानेन बुद्धेः परता परेश ।

जात्या जताच्चन्तु मिहार्हसित्त्व ॥४॥

अर्थ ।

मैंने जात्रासे तेरी व्यापकता मिटायी है । मेद करनेसे तेरी ऐकता और अस्तुति करनेसे तेरी वाक्परता हरी है ध्यान करनेसे तेरी बुद्धिके परे होना मिटाया है । तो भी मैंने तेरी जाति ठहराकर अजाति पना दूर किया है सो तू मेरे इन अपराधोंको क्षमाकर ॥ ४ ॥ पण्डित जगन्नाथ विश्वलीने एक दिन यह श्लोक खानखानाकी सुनाया ।

श्लोक ।

प्राप्यचला नधिकारान् शत्रुषु मित्रेषु बन्धुवर्गेषु ।

नापकृत नोपकृत न सत्कृत कि कृत तेन ॥५॥

जिसने राजाका अधिकार पाकर शत्रुओंका अपकार मित्री और बन्धुओंका उपकार नहीं किया तो उसने क्या किया ।

खानखानाने हसकर इसके उत्तरमें यह श्लोक कहा ।

श्लोक ।

प्राप्यचला नधिकारान् ।

शत्रुषु मित्रेषु बन्धुवर्गेषु ॥

नोपकृतं नोपकृतं ।

नोपकृत किंकृत तेन ॥

जिसने राज्यका अधिकार पाकर शत्रुओं मितों और वंधुओंका उपकार नहीं किया तो उसने क्या किया ।

श्लोक ।

दृष्टान्तत्र विचित्रतां तरुलतां, मैथा गया वागमें ।  
काचित्तत्र कुरङ्ग घाय नयना, गुल् तोड़ती थी खड़ी ॥  
उन्मद्गू धनुषा कटाक्ष विशिष्टे, घायल किया था मुझे ।  
तत्सीदामि सदैवमोह जलधौ, हेदिल गुजारी शूकर ॥६॥

अर्थ ।

विचित्र तरु लता देखनेको वागमें मैं गया । कोई वहां बाल कुरङ्ग जैसी आखीवाली खड़ी गुल तोड़ती थी—

उसने भवोंकी कमान उठाकर कटाक्षके वानोंसे मुझे घायल किया—

तबसे मैं मोहके समुद्रमें सदाके लिये डूब गया । हे दिल । गुजारी शूकर ॥७॥

पुनः श्लोक ।

एक क्षिब्धिवसे वसान ससये, मैं था गया वागमें ।  
काचित्तत्र कुरङ्गवाल नयना, गुल् तोड़ती थी खड़ी ॥  
तादृष्ट्वा नवयौवनां शशि मुखो, मैं मोहमें जा पडा ।  
नो जीवामि त्वया विना मृणुमहे, तू थार कैसे मिले ॥८॥

अर्थ ।

एक दिन मर्या कालमें, मैं वागमें गया था वहा कोई हरनके वहां बीबी नेत्रोंवाली खड़ी गुल तोड़ती थी—

उस नवयौवनवती चन्द्रमुखीको देखकर मैं मोहमें जापडा मैं तेरे बिना नहीं जियूंगा हे ० कृपी तू थार कैसे मिले ॥८॥

श्रीक गङ्गाजीसे प्रार्थना ।

पच्युत चरण तरङ्गिणी । शशिगेखर मौलिमालती माले ?  
रामतनु वितरण समये हरता देय न मेहरिता ॥८॥

भावार्थ ।

विष्णु बनाओगी तो मुझे क्षतघ्नताका टोप होगा । क्योंकि  
तुम उनके चरणसे निकली हो अतएव शिव बनाना जिसमें तुम्हें  
सिरपर धारण करूँ ॥८॥

खानखानाकी भाषा कविता ।

खानखानाकी भाषा कविता कि जिसमें भी रहीमकी का प है  
बहुत रसीली और चटकीली है । हमको अपने पुस्तकालयमें इनके  
२७ दोहे नांना साहिब हकीम शहरलालजीके लिखे मिले सो  
यहाँ लिखे जाते हैं ।

दोहा ।

तैं रहीम मन आपनों कीनों चन्द चकोर ।  
निसवासुर लागो रहै कृष्ण चन्द्रकी ओर ॥१॥  
मुकता कररु कपूर कर चावकदप हर होय ।  
ये तो बड़ी रहीम जल (१) कुथल परै बिष होय ॥२॥  
सर सूखे पंक्की उडे जिन सर जल अधिकाय ।  
मौन दीन बिन पङ्क के कह रहीम कित जाय ॥३॥  
बडे पेटके भरन कू कह रहीम दुख वाढ ।  
तातै छायाँ हहरकै रह्यो दांत दीय काढ ॥४॥  
थोरे करे बडे नकू बडे बड़ाई होय ।  
त्यो रहीम हनवन्त सो गिरधर कहै न कोय ॥५॥  
ससिके सुख दजु चादनी सुन्दर सभी सुहात ।  
लगे चौर चित चौगुनी कसत रहीमन धात ॥६॥

(१) पाठान्तर ब्याल बदन बिष होय ।

ज्यौ रहींस सुख हीत है बढे आपनै गोत ।  
 त्यों विडरी अरिया लखै आंखनही सुख हीत ॥७॥  
 बडन जो कोऊ घट कहै तिन रहींस घट जान ।  
 गिरधर सुरदीधर कहत सन दुख कछू न मान ॥८॥  
 इसी भावका यह दोहा चूरदासजीका भी है ।  
 सपि गयो मुकता भयो कदली भयो कपूर ।  
 जहि फल गयो तो बिष भयो सङ्गतको फल खूर ॥९॥  
 ससि चुकेस साहस सलिल नाज सनेह रहींस ।  
 बढे बढे दढ जात है घटे घटे तिहसीस ॥१०॥  
 यह रहींस सत सङ्गतै जनमत नाही कोय ।  
 बैर प्रीत अभ्यास जस हीत होत ही होय ॥१०॥  
 भज कर क्रिया रहींस सुख मिद्धि भावके हाय ।  
 पासै अपने हाथ है दाव न अपने हाथ ॥११॥  
 जे रहींस बढ बढ गये घटको डारत काढ ।  
 चन्द दूबरी खूबरी तऊ नखत तैं बाढ ॥१२॥  
 दीनन पै जे हित करें धन रहींस ते लोग ।  
 कहा सुदामा बापरो कृष्ण सिद्धता जोग ॥१३॥  
 प्रीतस कृवि नैनन बमो पर कृवि द्रग न समाय ।  
 भरी सराय रहींस लखि ज्यौ पथी फिर जाय ॥१४॥  
 नेह लगाय रहींस प्रभु कर देखो जो कोय ।  
 नरको दस कारवो कहा नारायन बस होय ॥१५॥  
 दुर दिन परै रहींस प्रभु सभी लिये पहचान ।  
 भीच नही धन हान को हीत बडन हित हान ॥१६॥  
 यह न रहींस सराहिपे देन लेनकी प्रीत ।  
 प्रानन पाई राखिये हार होयकै जीत ॥१७॥  
 रहसन कहत जो पेट सो कशे न भयो नृ पीठ ।  
 भूखे मान घटाय दे भरे दिखावे दीठ ॥१८॥  
 मनसै नहीं रहींस प्रभु दिखसै नाहि दिवान ।

देख द्रगन जे आदरे मन तिह हाग बिकान ॥१६॥  
 जिन रहीम तन सन जियो जियो जिये बिच भौन ।  
 ताकीं दुख सुखकी कथा रही दानकी कीन ॥२०॥  
 धूरजु डारत सीम पर कह रहीम किन काज ।  
 जिन रज रिप पतनी तरी सो दृढ़न गजराज ॥२१॥  
 जो रहीम भावी कह होती अपने डाय ।  
 राम न जाते हिरन मग सीता रावण साथ ॥२२॥  
 सम्पत सम्पतवान कू सब कोई सब देय ।  
 दीनवन्धु विन दीनकी को रहीम सुध लेय ॥२३॥  
 हित अनहित सब कोउ लहे कै मनाम कै राम ।  
 हित रहीम तब जानिये जादिन आवे काम ॥२४॥  
 कह रहीम या जगत तें प्रीत गयी दे टेर ।  
 कह रहीम नर नीचमें स्वारय स्वारय हर ॥२५॥  
 क्यों रहीम लघु दीप तें प्रकट सबै निध होय ।  
 मन सनेह कैसे दुरै द्रग दीपक जहा दीय ॥२६॥  
 रहमन अ सुवा बाहुरे बिधा जनावत येह ।  
 जाकी घरते काढिये क्यों न भेद कह देह ॥२७॥

कवित्त ।

सुनिये विटप प्रभु दुशप है तिहारै हम । राखिहो हमेंतो  
 सोभा रावरी बढाये है, त्याग हो हमें तो यामे हर्षना विषाद कहु ।  
 जहा जहा जायें तहा दूनी कवि छाये है, सुरन चढेगे नरनाथ न  
 चढ़ेंगे सीस । सुकवि रहीम हाथ हाथ न विकाय है देसमें रहेंगे  
 परदेशमें रहेंगे काहु भेसमें रहेंगे तऊ रावरे कहाय है । १।

रहीम सतक ।

खानखानाके भापा ग्रन्थोंमेंसे अभीतक यहो रहीमसतक प्रसिद्ध  
 हुआ है । इसकी २ प्रतियां हमारे देखनेमें आई है। पहला एक तो  
 हमारे मित्र पण्डित सूर्यनारायण शर्माजी जो नागरी साहित्य

प्रचारणी सभा (सदरबाजार) जवलपुरकी मन्त्री है। वस्त्रोंकी सुवि-  
ख्यात प्रेस श्रीविहटेश्वरमें कपाई है इससे १२५ दोहे हैं।

दूसरी प्रति जोधपुरमें रामदेही साधु आरत रामजीकी पास है  
इसमें १०५ ही दोहे हैं।

खानखानाका उत्तर राना अमरसिंहकी।

खानखाना जैसे पण्डितोंकी श्लोकोंका उत्तर श्लोकोंमें देते थे  
वैसाही नियम उनका भाषा कवितामें भी था। उदयपुरके महाराणा  
अमरसिंहजी जब जहांगीर बादशाहकी फौजके दबावसे  
जङ्गलीमें फिरते फिरते थक गये थे। तब उन्होंने यह दो दोहे  
बाहरकर खानाखानाकी भेजे थे:—

हाडा बूरम राव वड गोखां जोख करन्त ।

बाहियो एगानाएगाने वनचर दुआ फिरन्त ॥१॥

तुवराखू दिह्यी गई राठीडां कनवज्ज ।

राण (१) पयपै खानने बह दिन दीसे अज्ज ॥२॥

खानखानाने इसकी उत्तरमें यह सन्तोषदायक दोहा रानाजीकी  
लिखा था।

(२) धर रहसी रहसी धरम खपजासी खुरमाण ।

अमर विशम्भर ऊपरे राखो नहचो राण । १॥

१। पयपे—कहे—

२। इस दोहेकी भविष्यवाणी पर उस दिन तो शायद कि-  
सीको ही विश्वास हुआ ही तो हुआ ही। परन्तु उसका फल  
आज तो प्रत्यक्ष ही देखनेमें आता है। क्योंकि उदयपुरके राना-  
घोषा देव और धर्म जो उस समय था। आज भी बना हुआ है  
और खुरमाण अर्थात् मुगल जो उनकी दुहा देते थे वहाँके खप  
गये हैं। हिन्दी और विशेष करके राजपूतानेकी भाषा कवितामें  
खुरमाण शब्द मुसलमानोंके वास्ते आता है। जैसे मस्तकमें

रहीमके कुछ और दोहे (१) भडौशा संग्रहके

चौथे खण्डमें उद्धृत—

जो रहीम छोटे बढे बढत करत उतपात ।  
 प्याटेमों फरजी भयो तिरछों तिरछी जात ।१।  
 धनद रा अरु सुतनमें रहत लगाये चित्त ।  
 क्यों रहीम खोजत नही गाढे दिनको मित ।२।  
 गहि सरगागत रामकी भवसागरकी नाव ।  
 रहि मन जगत उद्धारकी औरन फछु उपाव ।३।  
 छमा बडनको उचित है छोटनको उतपात ।  
 कहु रहीम प्रभुका घयो जो भृगुमारी लात ।४।  
 कहि रहीम नहि लेत है रह्यो विषय लपटाय ।  
 घास चरै पसु आपने गुरली लाये खाय ।५।  
 गति रहीम बड नरन की क्यों तुरङ्ग व्यवहार ।  
 दाग दिआवत आपने सही होत असवार ।६।  
 अब रहीम चुप ह्वै रह्यो समझि दिननको फेर ।  
 जब दिन नीके आय है वनतन लागे देर ।७।  
 यों रहीम तन हाटमें मनुआ गयो विकाय ।  
 क्यों जलमें काया परे काया भीतर नाय ।८।

यवन, सबसे पहले यूनानी भारतमें आये थे तो यहा उनको य-  
 मन कहते थे फिर अरब लोग भी उधरसे ही अर्थात् पश्चिम समुद्रके  
 तटसे आये तो वे भी यमन ही समझे गये । फिर तुर्क महमूद-  
 गजनवी वगैरा खुरसानकी तरफसे आये तो उस समय सुसलमा-  
 नों का नाम खुरसान और खुरसानो हो गया । तुर्क और मुगल  
 शब्द पौछे चला है परन्तु कविलोग तीनों शब्दोंमें जो कवितामें  
 आजावे वही ले आते हैं ।

१। यह ग्रन्थ हमारे मित्र डुमरांव निवासी नकछेदी तिवारी  
 जीका बनाया हुआ है ।



जगत जाही किरण सीं अघवत ताही कांति ।  
 ल्यो रहीम दुख सुख सबै बढत एकही भांति ८।  
 छोटे काम बडे करै तो न बडाई होय ।  
 ल्यो रहीम हनुमन्तको गिरधर कहै न कोय ॥१०॥  
 अनुचित उचित रहीम लघु करहि बडनके जोर ।  
 ल्यो नसिके संजोग तैं पचवत आगि चकोर ॥११॥  
 मांगी घटत रहीम पद कितो करो बढि काम ।  
 तीन पैर बसुधा करी तऊ बावनै नाम ॥१२॥  
 रहिमन अद वे बिरछ कहं जिनकी छांह गम्भीर ।  
 बामन विच विच देखियत सेहुड कुठज करीर ॥१३॥  
 होय न जाकी छांह टिग फल रहीम अति दूर ।  
 बाव्यो सो दिन काज हीं जैसे तार खजूर ॥१४॥  
 नाद रीझ तन देत सृग नर धन हित समित ।  
 ते रहीम पसुतें अधिक रीझि कछु न देत ॥१५॥  
 जाल परे जल जात बहि तज मीननको मोह ।  
 रहिमन मकरो नीरको तऊ न छाडति कोह ॥१६॥  
 रहि मन पानी राखिये विन पानी सब सूख ।  
 पानी नथै न ऊबरे मोती मानुष चून ॥१७॥  
 बडे बडाई ना तजै लघु रहीम इत राइ ।  
 राइ करो दा होत है कटहर होत न रह ॥१८॥  
 करत निपुनई गुन विना रहिमन निपुन खजूर ।  
 मानो टेरत बिटप रहि इहि प्रकार दम कूर ॥१९॥

खानखानाकी इमारतें ।

भारवाडी कहावत है कि "गीतडा नाम जै भीतडा नाम"  
 अर्थात् मनुष्यका नाम यातो गीती ( कविता ) में रहता है या  
 भीती ( इमारती ) में रहता है सो खानखानाका नाम दोनोंमें ही  
 रहा है । खानखानाकी बनाई कविता तो हम कुछ लिखि ही  
 चुके हैं और कुछ दूसरे कवियोंकी आगे लिखिने निम्नसे खान-

खान का नाम शमर हो गया है यहा तो उनकी बनाई हुई इमारतोंका हाल लिखते है ।

खानखाना जहा २ रूहे बहा उन्होंने बड़ी २ हवेलिया बनायी थी, बाग लगाये थे, महल भुकाये थे, परन्तु बहुत वर्ष व्यतीत हो जानेसे अब उन सबका पूरा २ पता नहीं लगता ।

हमने इस विषयकी भी बहुत खोजना की है और जो थोडा सा हाल सुना है या तबारीखकी पुस्तकोंमें लिखा मिला है वह यहा लिखे देते है ।

### खानखानाकी हवेली ।

खानखानाने अपने रहनेके वास्ते १ बड़ी हवेली-आगरमें बनायी थी । जिसमें एक सुन्दर और-सुडौल सिंहासन भी निर्माण कराया था उस पर चादी और सोनेकी चोबों पर जरीका सामाना, खिचा रहता था जिसमें मोतियोंकी झालरें झिल-मिलायी करती थीं । उसके नीचे बढ़िया, गलीचे और कालीन बिछे रहते थे । किसीने चुगली खायी कि खानखाना तो बादशाहोंकी भांति तख्त पर बैठता है और चवर कराता है, बादशाहने पूछा कि यह सच है ? उसने अर्ज की कि उसकी हवेलीमें तख्त चवर और कब मीजुद ही है इसके सिवाय और क्या प्रत्यक्ष प्रमाण होगा ।

एक दिन बादशाह खानखानाकी हवेली पधारे देखते २ वहां भी पहुंचे कि जहा यह राज्य चिह्न धरे थे । बादशाहने चुगलखोरका यह कहना सच मान कर पूछा कि मिरजा ये चीजें यहा क्या है ? उन्होंने अर्ज की कि जहांपनाहके लिये है विराजिये जो यह न होतीं तो आज मुझे लज्जित होना पड़ता ।

बादशाह प्रसन्न होगये और खानखानाकी बुद्धिकी बहुत प्रशंसा की । चुगलखोर अपना सा मुंह लेकर रह गया ।

फतह बाग ।

अहमदाबादसे ३ कोस सरखेच गांवकी सीमामें सावरमतीके तटपर जहां खानखानाने सुलतान मुजफ्फर गुजरातीकी जीता था वहां एक सुरम्य बाग लगाया जो गुजरातमें उस समयके सब बागोंसे अच्छा था । और पीछे भी बहुत वर्षों तक उसकी घोभा वैसी ही बनी रही थी २५ वर्ष पश्चात् सन् १६१७ में जहांगीर बादशाहने इस बागकी देखा था । और जो हाल उसका अपनी तुलुकमें लिखा वह हमल यहां उद्धृत करते हैं ।

गुरुवार ६ बहमनकी मैं फतह बाग देखने गया जो एक सुन्दर स्थानमें लगा है (१५०००) रुपये रस्तेमें लुटाये ।

यह बाग जिस जगह है वहां सिपहसालार खानखाना अत्तलीकने मुजफ्फरकी लडाईमें शराकर फतह पायी थी । इस लिये इसका नाम फतह बाग रक्खा । गुजरातके लोग इसे फतह बाड़ी कहते हैं ।

मेरे बापने इस फतहके पारितोषिकमें पांच हजारों मनसब खानखानाका खिताब और गुजरातका सूबा मिरजाखानकी (१) दिया था ।

खानखानाने जो बाग लडाईकी जगह बनाया वह सावरमतीके किनारे पर है और उसके योग्य एक विशाल भवन भी बहुतरे सहित जो नदीके ऊपर है निर्माण किया है । बागका घोट चूने और पत्थरीका बहुत मजदूत बना है । यह बाग १२० जर्गवमें अच्छी सुशुद्धनी जगह पर है । २ लाख रुपये इसमें लगे होंगे मेरा तो बहुत दिल रगा । यह कह सकते हैं कि सारी गुजरातमें इस जैसा दूसरा बाग न होगा । मैंने गुरुवारका हस्तव दही करके निज सेवकीकी प्याले दिये और रात बहारह

कर शुक्रवार की पिछले दिनसे शहरमें आया १०००) रुपये रस्ते में  
निष्कावर किये।

इस समय बागवानने पुकार की कि चम्पाके काँटे हटाने जो  
चतूरे पर ये सुकरबख्ताके नौकरने काट लिये हैं यह सुनकर  
मेरा चित्त उदास हो गया और खुद निर्णय किया। जब निर्णय हो  
गया कि यह कुकर्म उसने किया है तो हुक्म दिया कि उसके दोनों  
अंगूठे काट डाले जावे। जिससे दूसरी को भय हो जावे (१) मुकु-  
रबखानों इस बातकी खबर न हुई नहीं तो वह तुरन्त डण्ड  
दे देता।

दूसरे गुरुवारको बादशाह फिर इस बागमें आये जिसका हजर  
यों लिखते हैं कि गुरुवार २२ की फतह बागमें जाकर गुलाब  
वाड़ी देखी गयी। एक क्यारी तो बहुत ही खूब खिली हुई थी।  
इस देशमें गुलाब बहुत कम होता है। एक जगह इतना हीना  
गनीम तथा गुल खाला भी बुरा न था। अजीर पके हुए भी ये  
काँड़े अजीर मैंने अपने हाथसे तोड़े जो सबसे बड़े थे उनमेंसे एकको  
तोला तो ७॥ तोलिका हुआ। ४ दिन भोग विलासमें व्यतीत  
करके सोमवार २३ वी की रातको इस बागसे शहरमें आया।  
तीसरे गुरुवार २४ वी अमरदादकी फिर बादशाह फत-  
हबागमें गये २ दिन तक वहाँ मौज उड़ाते रहे शनिवारको

पिछले दिनसे दोलतखानेमें पधारे।  
उस समयसे १५० वर्ष पीछे गुजरातकी तवारीख (२) मिरआत  
प्रहमदी बनी है उसमें फतहबागका यह हाल लिखा है। कि  
अब कुछ मकान और कोट तो बना हुआ है खेती होती है बाग-  
पना जाता रहा। इति।

१। सुकरबखा उस समय गुजरातका सूबेदार था—

२। यह गुजरातकी बहुत अच्छी तवारीख सन् ११७०  
में बनी है।

अब फतेवाड़ीका यह ज्ञास है कि सानन्द नाम एक छोटेसे रजवाड़ेकी सीमामें आयी हुई है। सानन्द अहमदाबादसे ७८ कोस है फतेवाड़ी अहमदाबादसे ४ कोस और सरखेजसे ३ कोस दक्कन पञ्चमके कोनेमें है। बाग और बगीचेका तो कुछ पता नहीं है कोट कुछ दाकी रह गया है जो आदमीके बराबर ऊँचा है। इसमें कोलीभौल और रेवारियोंके घर हैं। और वही लोग यहाँ रहते हैं। नदीके ऊपर जो मइल घे वे भी गिरा दिये गये हैं क्योंकि कोलीभौल और रेवारी चोरी धाडा करके उन मइलोंमें छिप जाते थे और चोरी धाड़ेका माल दुन्ना-सोंमें छिपा देते थे। दुन्नाम मात घे उनके भीतर भी मइल और मज्जान घने हुए थे जिनमें अब चमचेडें बहुत भरी रहती हैं।

कोलीभौल और रेवारी जो फतेवाड़ीमें रहते हैं किलीकी अन्दर नहीं आते देते हैं, क्योंकि उनको यह भय बना रहता है कि कोई उनके चोरी धाड़ेका सेद लगानेको न आया हो।

फतेवाड़ीमें अब कोई चीज देखनेके लायक नहीं है। नाम साफ रह गयो है। कहते हैं कि फतेवाड़ीके दुन्नासोंमें अहमदाबादके दिने तक जिसको भद्र कहते हैं जमीनके अन्दर ही अन्दर रखा था पर अब उसका भी कुछ पता नहीं है।

साहवाड़ी ।

फतेवाड़ीसे १ कोस साहवाड़ी की वहा भी अच्छे २ म-एन दने थे जिनका अब कुछ निशान रह गया है। साहवाड़ी अहमदाबादकी ७ त्रेती अमनदारीमें अहमदाबादसे ३ कोस पर है उसमें अबरेवान्, कसिगर रहता (१) है।

अनवरसे तिरपोनीया ।

सानखानाने कुछ इमारतें अनवरसे भी बनाई थीं लहा

(१) फतेवाड़ीकी वर्तमान दगावा हाल जो ऊपर आया है अहमदाबादसे पुरोहित पृथमचन्द्रजीने कृपा करके इस पुस्तकमें इसमें लिख भेजा था।

उनका नाना जमानखा मेवाती रहता था, अब उन इमारतीमें से तिरपोलिया बहुत मजहर है यह एक आलीशान मकबरा (कब्र-स्थान) था। इसके इतरफ ३ बड़ी बड़ी खुली हुई घांने थीं। चौथी तरफको पोस वन्द थी इसीसे तिरपोलिया कहलाता है। ऊपर सदावका बड़ा गुम्बद है। कहते हैं कि इतना बड़ा गुम्बद लदावका कहीं देखनेमें नहीं आता। शायद यह खानखानाकी माकी कबर पर बनाया गया हो। अब तो इसमें कोई कबर नहीं है। चारो दरवाजे खुले हुए हैं और चारों तरफ चोपडका बाजार बना हुआ है। जिसमें रात दिन सैकड़ों हाथी घोड़े बगी रथ तिरपोलियेमें होकर आते जाते (१) हैं।

यह तिरपोलीया अब भी खानखानाका कहलाता है। इसके बाबत एक राजीनामेका फोटू तीवारी नकछेदीजीने मेरे पास भेजा है। उससे मालूम होता है कि २०० वर्ष पहिले औरङ्ग जेब बादशाहके राजमें यह तिरपोलीया खानखानाकी जायदादकी मालकनी नजीबुलनिसा वेगमके कबजेमें था और उसकी एक पोस और पोलके आगेकी जमीन यारमोहम्मद नामके एक सख्-दने दवा ली थी। उसीके बाबत यह राजीनामा हुआ था। हम इस राजीनामेका कुछ सारांश यहां इस अभिप्रायसे लिखते हैं कि जिजसेपाठकोंको उस समयको अदालती काररवाईका हिसा भी मालूम हो जावे।

#### राजीनामेका सारांश ।

हम रफीक और आलम जो खानखानाका (२) सरहमके विर-सेकी (३) मालकिनौ नबीबुल निसा वेगमकी सरकारके वकील हैं। इस बातका सही इकरार करते हैं कि खानखानाका सरहमका तिरपोलीया जो कसबेअलवरके बाजारमें चोरस्ते पर बना है उसका

१। यह हत्तान्त अलवर निवासी मित्तर सु० रघुवरदयालजी इन्स्पेक्टरके पतसे लिया गया है जो उन्होने मेरे पूछने पर कृपा करके लिखा था। २। मरे हुए। ३। सम्पत्ति।

एक बन्द दरवाजा सैय्यद कमाल मोहम्मदके पोते सैयद सुजफरके डेटे सैयद यार मोहम्मद (१) मिल्कीकी हवेलीके पास था । उस दरवाजे और उसके आगेकी जमीन पर सैयद यार मोहम्मदने कबजा कर लिया था । हमने इस प्रसङ्गसे कि तिरपोलीया खानखाना मरहमकी इमारतोंमेंसे है । खानखानाकी (२) वारिसानी नजीबुल-निमा बेगमकी तरफसे (३) वकालतन दरवाजे और आगेकी जमीनकी दावत खानवाला शान सैयद वजीउद्दीनखां फौजदार चकले मेवातके नायब सैयद शाह मोहम्मदके हज़ूरमें दावा किया तो सैयद यार मोहम्मदने वह दरवाजा और ३६ गज जमीन जो दरवाजेके पास थी अपने कबजेमें निकाल कर छोड़ दी । अब फिर हमकी सैयदयार मोहम्मदकी हवेलीमें कुछ दावा नहीं रहा है । हम उससे राजी हैं । इस दाम्ते यह राजीनामा लिख दिया है सो काम पडने पर सनद होवे । १० मद्यल सन् (४) ४७ जलून मेसन तमानूस मुताबिक सन् १११४ हिजरी नीचे ऊपर और हाशिये पर मोहर और दसखत गवाहोंके हैं । (५) दसखत हिन्दीमें भी हैं । मगर हिन्दी हर्फ ऐसे अशुद्ध बिना लागूताके लिखे हैं कि कुछ समझनेमें नहीं आता है कि इनका क्या मतलब है ।

रपोक और खानखानाके रायत्री कटारी दनी हुई है । इससे मालूम होता है कि वे लिखे पडे नहीं थे ।

खानखानाका भी मकबरा चणवरमें है । मगर चणुरा कवर अच्छर मीजुद हैं उनकी मांके बनाये हुए तास्ताद और मकबरे भी वहाँ हैं ।

खानखानाका मकबरा दिल्लीमें ।

खानखानाका मकबरा (समाधि स्थान) कि जहा उनको

- १ । जमीरदार । २ । मालिकनी । ३ । चकोलकी तीर पर ।
- ४ । यह वर्ष औरुज्जेद बादशाहके जलूसके है ।
- ५ । सुदर रफाई मिला हुआ ।

गाडा था पुरानी टिकीमें खगड़हर पडा है । जिमके देखनेसे बहुत अफमोस होता है कि जो मनुष्य उम्भर लोगोमें भलाई करता रहा था । लोग उसकी कबरके पत्थर नज़र खोदने गये किमाने सच कहा है कि “सब दातारके हीलागू होते हैं” ।

किताब (१) असाए उलमन दीदमें जो मन् १८६३ सवत् १८७३ में बनी है । इस मकबरेका यह हाल लिखा है ।

यह मकबरा शाह जहानाबादसे ४ मौन निजामुद्दीन ओलियाकी दरगाह और बारीपुलेके पास है । इसको खानखानाने अपने बीबीके वास्ते बनाया था पर उसको तो यहा दफन होना नबीव न हुआ आप दफन हुए ।

यह मकबरा भी किभी जमानेमें बहुत तोफा बना हुआ था इसके बुर्ज तमाम सज़मरमरके थे जगह जगह लाल पत्थरसे सफेद पत्थरकी धारियां लगी हुई थीं और बेल्बूटे बने थे । पर अफमोस है कि यह बिल कुल उजड गया है । इसका तमाम सज़मरमर उखाडकर बेच डाला और ऐसे उमदा मकबरेको ढहा डाला । कहते है कि आसिफुद्दौलाकी वक्तमें इसका तमाम पत्थर उखाडकर लखनजमें गया है । यह मकबरा बिना कुल लुण्डा रह गया है इस मकबरेका (२) ताबीज भी उखाडकर ले गये हैं । अब इसमें गाय भैंसे बन्धती हैं और गोबरकी बदबूसे अन्दर जाना सुमकिल होता है ।

देखो क्या (३) अजमत औरशान (४) घी खानखानाकी, और अब क्या हाल है । खानखानाके नाम निशानके लिये यह मकबरा

१ । सर सैयद अहमदखाने इसमें दिक्कीकी इमारतीका हाल लिखा है ।

२ । कबरखा चिह्न

३ । महत्व

४ । पातझ



था । सो यह भी न रहा—जिसके दिवानखानेमें सैकड़ों मन गुलाब छिड़का जाता था अब उनके सक्करेमें हजारों जानवरोंका भूख पड़ा है ।”

### जीनपुरका पुल ।

जीनपुरके प्रसिद्ध पुशको भी बहुत लोग इन्हींका बनाया समझते हैं । परन्तु इनका बनाया गद्दी है । खानखाना सुनअमखाका बनाया है जो इनके बापके पीछे खानखाना हुआ था ।

उस पुलके लेखमें सुनअमखाका नाम खुदा है तो भी जीनपुरके (१) भूगोलमें भूलसे यादन्तकथा सुनकर इनके गुलाम फहीमकी सुनअमखाका गुलाम और उस पुलका बनानेवाला लिख दिया है सो गल्त है । वह पुल तो सुनअमखा खानखानाने ही बनाया है जो सन् ८७२ से ८७५ तक बनकर तैयार हुआ था ।

फिर जीनपुर हमारे खानखानाकी जागीरमें भी सन् ८८८ से लेकर कई वर्ष पीछे तक रहा था । उस समय फहीम भी वहाँ रहा होगा जिससे दहाके साधारण लोगोंको उसका नाम याद रह गया ।

### खानखानाकी जन्मपत्नी ।

जन्म पत्नी भी इतिहासमें कामकी चीज होती है कि उसमें यथार्थ समय विदित होजाता है । मुसलमानोंमें हिन्दुओंके समान तो जन्म पत्नीकी प्रथा नहीं है तो भी कोई कोई बड़े आदमी जन्म पत्नी बनवाते हैं । इसी विचारसे हमने खानखानाकी जन्मपत्नीकी भी खोजनाकी तो एक कुण्डली दीकानेरकी ख्यातमें मिली । दूसरी एक ज्योतिषीकी पीछेमें पाई और तीसरी एक मित्रके पुस्तकालयमें पायी । परन्तु पहिली पिछली दोनोंसे नहीं मिलती इसमें १ पहरका अन्तर रहता है ।

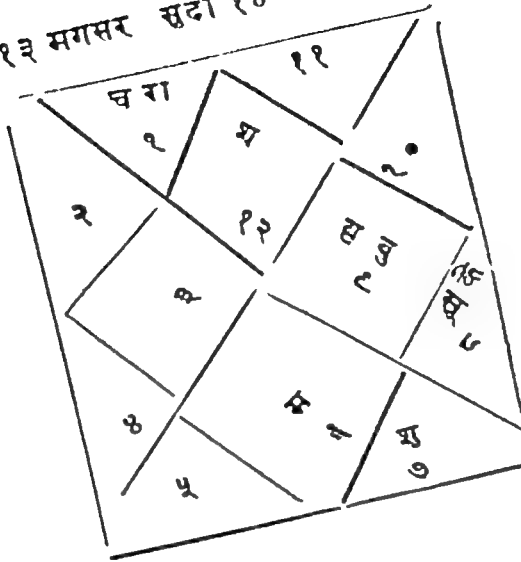
१ । इस भूगोलकी जिले जीनपुरकी पाठशालाकी डिपटी इन्स्पेक्टर मोनकी दुरूपचार अर्लाने सन् १८७४ सवत् १८३१ में बनाया था ।

ग्रानखानाकासा ।

१२६

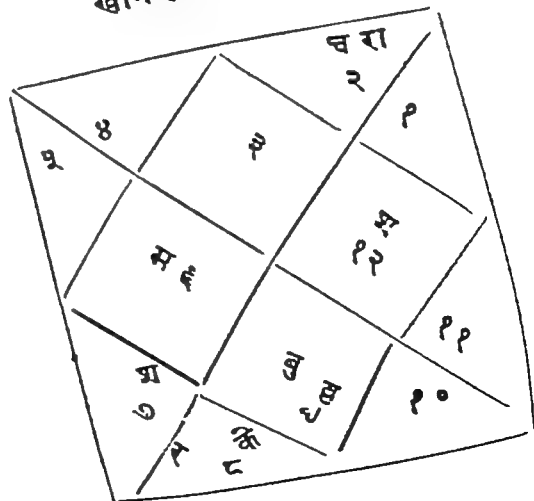
नं १

संवत् १६१३ मगसर सुदी १४ खानखानाका जग



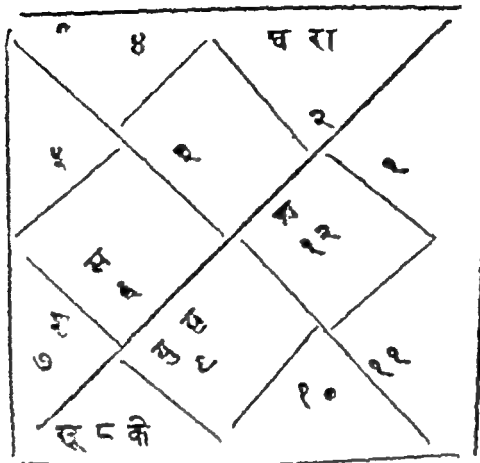
न २

संवत् १६१३ मगसर सुदी १४ सोम उ० घटी ३७१७  
खानखानाका जग



नम्बर ३

संवत् १६१३ मंगसर सुदी १४ सोमे उ० घ० ३ खानखानाका जन्म ।  
अस्त विष्वा ८ अथ ग्रहा ।

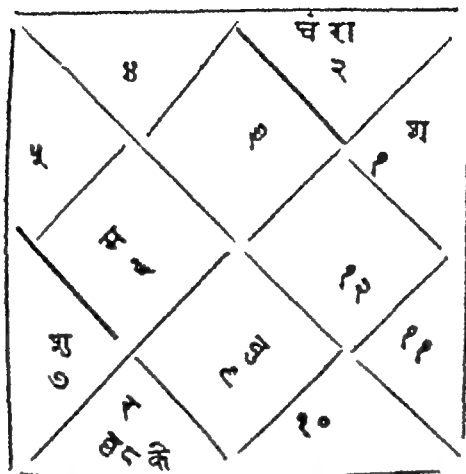


ग्रहा समाधानके लिये संवत् १६१३ का (१) चण्डूपजांग देखा गया तो संवत् १४ सुदी १४ का यह दिवस निकला ।

मार्ग सितात् संवत् १६१३ शके १४७८ तिथि १४ चन्द्र १६४ का २५।१५ शि २२।५६ हस्तेम १३।४७ म० ४।३४ उ० चन्द्रण ४८५ रस्तो

सू च म बु व श्रु ग रा के इसके अनुसार कुण्डली सिधुन  
८ २ ६ ८ ८ ७ १ २ ८

लग्नकी यह होती है।

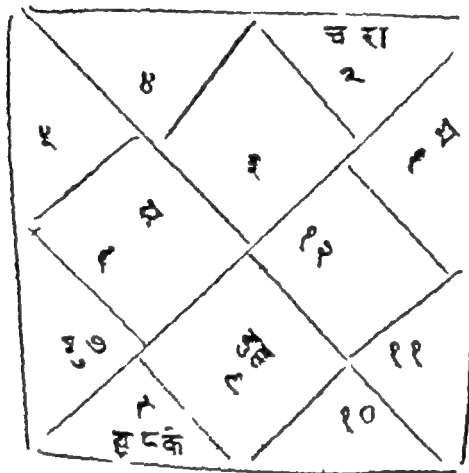


इस कुण्डलीसे ऊपरकी दोनों मिथुनलग्नकी कुण्डलियोंके शनि और गुरु नहीं मिलते। शनि उनमें तो मीनका है। और पञ्चागमें मेघका और उन दिनोंमें शनि अश्ली भी नहीं था जो मीन पर आया समझा जावे इसलिये उन दोनों कुण्डलियोंमें मीनका शनी क्यों लिखा है इसका कुछ कारण सिवाय इसके कि भूलसे ऐसा हो गया होगा और कुछ समझमें नहीं आया। और गुरु उस दिन तो वृषकका हो था। फिर पोष वदी १२ को धनका आया। उस पञ्चागमें कि जिससे वह जन्मपत्री बनी है मगसर सुदी १४ से पहिले धनका आ गया हो तो कुछ आश्चर्य नहीं है क्योंकि इतना अन्तर तो मारवाड और दिल्लीके पचागमें उदयारक्तके विपर्ययसे रहा ही करता है तो भी इस अन्तरका पता लगानेके लिये पुनः खोजनाकी गयी तो (१) औपतिकी टीकामें फिर एक जन्मपत्री खानखानाकी मिली जिसको औपतिके टीकाकार औवज्जालदेवात्मज (२) कृष्ण देवअने जो खानखानाका आम्मित सालूम होता है श्रु और स्पष्ट करके उदाहरणमें लिखी है नकल उसकी यह है।

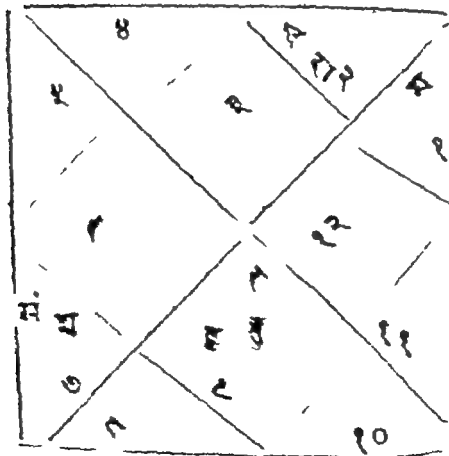
१। अन्य औपति शाके ८६१ में बना था। चन्द्रागतम्बोनशकी इति वचनात्। २। एक कृष्णपण्डितका नाम आर्धन अक्षरीमें भी लिखा है जो बादशाहों पण्डितोंमें नोकर था।

स वत् १६१३ शा० १८७८ मार्गं शीर्षं शुक्ल १४ चन्द्र घ० १५  
पल ३० परते पूर्णिमा कृतिका नक्षत्रे घ० २६।४६ शिव योगे  
घ० २४।२० इह दिवसे सूर्योदयात् गत घटी २८।१६ रात्रि गत  
घ० २।४५ मिथुन लग्ने लाभ पुरे श्रीमत् छान्दोग्य महाप्रया ना  
मल निर भूत् (१)

पथ लग्न कुण्डली ।

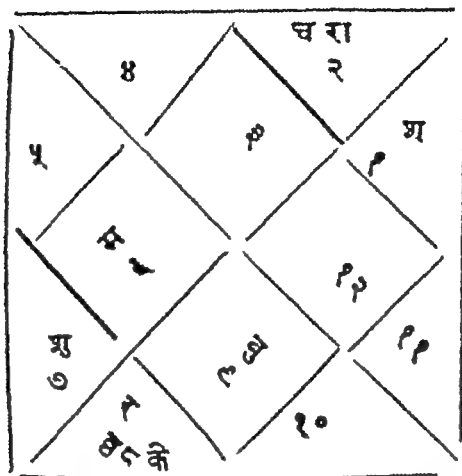


पथ भावकुण्डली ।



स्व च म बु ह शु ग रा के इसके अनुसार कुण्डली मिथुन  
८२६८८७१२८

लग्नकी यह होती है।

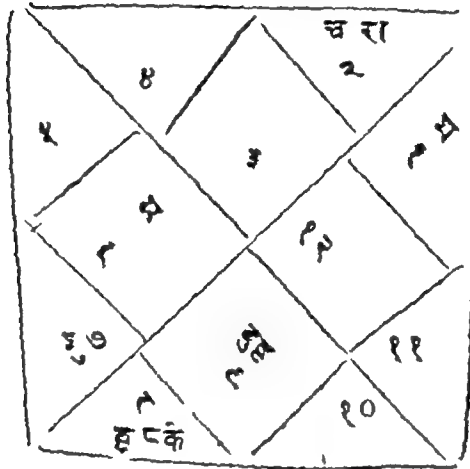


इस कुण्डलीसे ऊपरकी दोनों मिथुनलग्नकी कुण्डलियोंके शनि और गुरु नहीं मिलते। शनि उनमें तो मीनका है। और पञ्चांगमें सेवका और उन दिनोंमें शनि ज़की भी नहीं था जो मीन पर आया समझा जावे इसलिये उन दोनों कुण्डलियोंमें मीनका शनी क्यों लिखा है इसका कुछ कारण सिवाय इसके कि भूलसे ऐसा हो गया होगा और कुछ समझमें नहीं आया। और गुरु उस दिन तो वृश्चिकका हो था। फिर पोष वदी १२ को धनका आया। उस पञ्चांगमें कि जिससे वह जन्मपत्नी बनी है मगसर सुदी १४ से पहिले धनका आ गया हो तो कुछ आश्चर्य नहीं है क्योंकि इतना अन्तर तो मारवाड और दिल्लीके पचागमें उदयारक्तके विपर्ययसे रहा ही करता है तो भी इस अन्तरका पता लगानेके लिये पुनः खोजनाकी गयी तो (१) औपतिकी टीकामें फिर एक जन्मपत्नी खानखानाकी मिली जिसको औपतिके टीकाकार औबल्लाहदेवात्मज (२) कृष्ण देवघने जो खानखानाका आश्रित सालूम होता है शत्रु और स्पष्ट करके उदाहरणमें लिखी है नकल उसकी यह है।

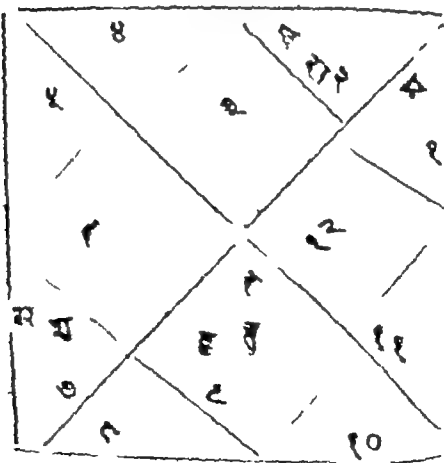
१। ग्रन्थ औपति शाके ८६१ में बसा था। चन्द्रागनन्दोलषको इति वचनात्। २। एक कृष्णपण्डितका नाम आर्देन अकधरीमें भी लिखा है जो बादशाहों पण्डितोंमें नोकर था।

स वत् १६१३ भा० १६७८ मार्ग शीर्ष शक्र १४ चन्द्र व० १५  
पक्ष ३० परते पूर्णिमा कृतिका नक्षत्रे व० २६।४६ शिव योगे  
व० २४।२० इह दिवसे सूर्योदयात् गत घटी २८।१६ रात्रि गत  
व० २।४४ मिथुन लन्धे लाभ पुरे श्रीमत् ज्ञानदाना महाशया ना  
मस्त निरभूत् (१)

पथ लग्न कुण्डली ।



पथ भावकुण्डली ।



इसमें सब यह चण्डपञ्चांगमें मिल जाते हैं वृद्धगणितका भी अन्तर नहीं रहता। सो इसका यह कारण है कि इन दोनोंकी गणितका आधार एकही करण चन्द्र अर्थात् ब्रह्मा तुल्यके ऊपर था।

- १ यीश्वेत वाराह कल्प प्रवृत्ते गताब्द वृद्ध १८७२८४८६५७
- २ सृष्टि तो गताब्दगण ... .. १८५५८८४५७
- ३ गत कलि. . . . . ४६५७
- ४ विक्रमस्य राज्याद्वताब्दगण ..... १६१३
- ५ शालि बाह्वन शकाब्दा १४७८
- ६ ब्रह्म तुल्य गताब्दा ३७३
- ७ कल्पाऽहर्गण ७२०६३६१४३८५६
- ८ सृष्टेरहर्गण ७१४४०३८२७८६८
- ९ कल्लेरहर्गण १७०१२४२
- १० ब्रह्मतुल्यऽहर्गण १३५६०४

अब यहां यह शङ्का होती है कि घड़ी पल क्यों नहीं मिलते सो इसका यह उत्तर है कि चण्डपञ्चांगमें ब्रह्म तुल्यसे अधिक चण्डजी ज्योतिषीकी गणितके बीज भी मिलाये जाते हैं। जिससे ब्रह्मतुल्यकी गणितमें और चण्डपञ्चांगकी गणितमें घड़ी पलका अन्तर रह जाता है।

यों इतना परिश्रम करनेपर खानखानाकी शुद्ध जन्म पत्रीका पता मिला है। परन्तु जो एक महीनेका अन्तर खानखानाकी जन्म तिथिमें फारसी तवारीखके हिसाब और इस जन्मपत्रीके लेखसे आता है और जिसका व्योरा ४२ वीं पृष्ठके नीचे दिया गया है अभी बाकी है।

इस जन्मपत्रीकी शोधमें जो सफलता हुई तो उससे और जन्म पत्रियोंके ढूँढनेका भी साहस हुआ। और थोड़ेही दिनोंमें कई सौ जन्मपत्रियां उन राजाओं बादशाहों और समीरोंकी हस्तगत हो गयीं कि जिनके नाम इतिहासमें देखे जाते हैं।

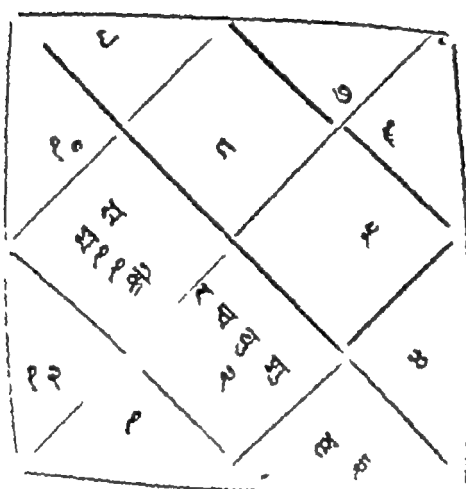


खानखानाके बेटोंकी जन्मपत्निया ।

१ मिरजा एरचकी जन्मपत्नी

सन्त १६४३ ज्येष्ठ सुजी १ सामे उदयाहृत तघटी ३१ ।

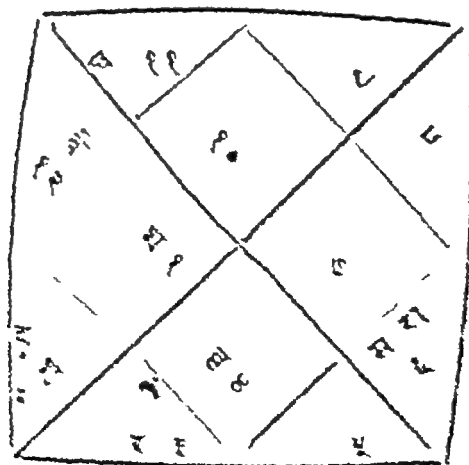
मिरजाएरच जन्म



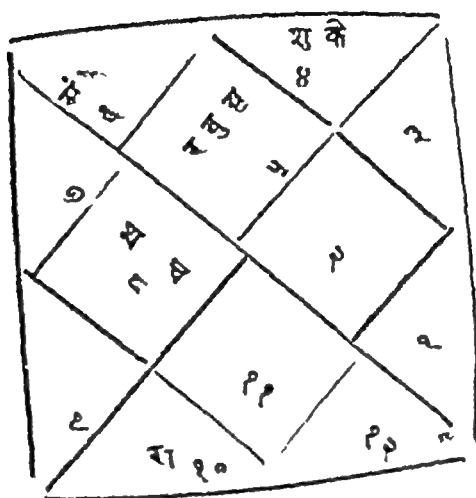
२ मिरजा दारावक जन्मपत्नी

सन्त १६४४ असाढ वदी ४ बुधे उदयाहृत तघटी २१२५ ।

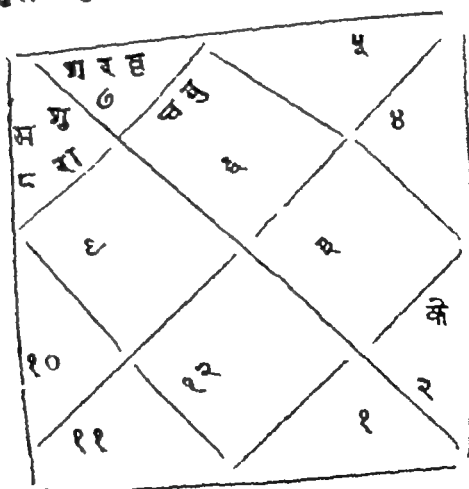
मिरजा दाराव जन्म



३ मिरजा रहमानदादजी जन्म पत्नी  
 सवत १६५७ आषण एदी ७ बुधे उदया तघटी रा० ।  
 मिरजारहमानदाद जन्म ।



४ मनुचहरकी जन्मपत्नी  
 सवत १६५८ घातिक बदी १२ शनी राखी गत घटी  
 २६ १ एसाव एत मनुचहर जन्म: अक्षभा ४३।३०



एक रात बादशाहने शेख अबुलफज्जसे कहा कि खानखानाको लिख दो कि ईश्वर शीघ्रही तीन पुत्र देगा । उनके ऐरच, दाराव, और कारन नाम रखना । सो वैसाही हुआ और इन्होंने इसका बड़ा उत्सव किया । उसमें बादशाहकी भी बुलाया । बादशाह गये और इनका मान बढ़ाया ।

कंधार जाना ।

२४ दे (१) सन ३५ को बादशाहने इन्हें कंधार जानेका हुक्म दिया । शाहबेग खां, रावन्त भीम दलपत जानशबहादुर, बलभद्र राठोड, शेरखां आदि ४५ असीरोंकी नौकरी इनके साथ बोली गयी ।

कंधार पहिले तो इनके बापकी जागीरमें था ; फिर बादशाहने ईरानकी बादशाहकी दे दिया था और उसकी तरफसे सुजफ्फर हुसेन मिरजा और रस्तम मिरजा कन्धारमें थे । अब ईरानका बल घट गया था और वे भी बढ़ते हुए थे । उधर तूरानका बादशाह कन्धारकी ताकमें था ; इसलिये बादशाहने कन्धार लेनेका विचार करके इनसे कहा कि बलूचिस्तानकी रास्तेसे जाओ । जो वे लोग हुक्म मान लें तो बड़ सरस देश उन्हींके पास छोड़ देना, नहीं तो पूरा दण्ड देना और ठहरेका जमींदार घबतक सेवामें नहीं आया है, इस रास्ते किसी सुपात्र पुरुषको उसने पास भेजना जो वह आजावे या सेना साथ कर दे तो ठीक, नहीं तो अभी कुछ न बोल कर लौटते बहाउद्दक लेना ।

इन्होंने कृच करके ताहीरसे एक कीसपर डिरा किया । पहिली बहमनकी (२) बादशाह वहां पधारे । बड़ी मभा जुडी । खूब नजर निछावर हुई ।

सुलतानमें पहुचना ।

सुलतान और महर इनकी जागीरमें थे ; इसलिये इन्होंने पासका रास्ता जो गजनी और वगश होकर था, छोड़कर दूरका

थी जो खानदेशकी जमींदार पंजूने पास थी। उस दिन उसकी प्रजों पहुंची कि पंजूने बादशाहों नश्वरसे नष्टनेकी अपनेमें गमगीन न देखकर खान देदी और बादशाहों दारोगा उन पर बैठ गया। वहांका हीरा सब प्रकारके हीरोसे सुवरा और लज्ज तोता है।

खानखानाकी बेटियां।

१ जागावेगस जो शाहजादे दानियानको व्याही थी। उसमें एक लडका हुआ था परन्तु जिया नहीं।

२ खेरउन्निसा वेगस बड़ी चतुर थी। जब जहांगीर बादशाह गुजरातको गये थे तो यह भी साथ थी और यही बादशाहकी फतह बागमें ले गयी थी। "तवारोख सिरघात अहमदी"में लिखा है कि खानखानाकी बेटो खेरउन्निसा वेगसने बादशाहसे प्रार्थना की कि गाव फतहपुरमें खानखानाका बाग है, मैं चाहती हूँ कि उस बागमें हजरतकी जियाफत करके प्रतिष्ठा प्राप्त करूँ। बादशाहने स्वीकार किया परन्तु वह समय पतझड़का था कुछ डुंडे हो गये थे, बागकी शोभा जाती रहो थी, तो भी उस सुघर वेगसने जैसे फल फूस और पत्ते जिस हलके थे वैसे ही रंगोश कागज और मोमके कारोगरोंसे वनवाकर उन छत्तीमें ऐसी युक्तिसे लगवा दिये कि जब बादशाह आये तो बागकी छटाकी देखते ही मोहित होकर उन कृत्रिम पुष्पों और फलोंकी तोड़नेकी शुरू की। उस समय उस अद्भुत कारीगरकी कलाका खानकार प्रति प्रसन्न हुवे। वेगसकी बुद्धिकी बहुत तारीफ करके प्रतिष्ठा और जीविका बढ़ाई।

सिरजाखा सन्धुघर।

खानखानाकी पीछे उनके घरानेमें सन्धुघर ही ऐसा हुआ कि जिसने बाप दादेकी नासकों फिरसे जस पाया। यशप्रभावके अनुसार इसमें भी पौरुष पारभास और दूसरे सदगुण थे।

लडाइयोंमें घायल होनेसे सादक पदार्थोंका सेवक यह भी करता था, परन्तु विशेष करके नहीं। इसकी बीकरी दादाकी समयसे दक्षिण दाखी हुई थी। जब जहांगीरके १६ वें वर्षमें

(१) बादलने अहमदनगरके पाम युद्ध करके लखकरवांकी बहुतसे दादनाही चमीरोंके साथ पकड़ लिया था तो यह उस लडाईमें मृत गया। जख्मोंमें घूर होकर दुग्धसर्पोंके चाय पडा और बहुत दिनोंतक दौलताबादमें कैद रहा। जब छूटकर आया तो जहांगीर दादनाहने उस दहादुरोंके बदलेमें हमको मिरजाणांका खिताब ६ हजार ६० हजार सवारका मगसद और गहारा निशान दिया।

गारजहाकी हमपर हफाहटि रहीं। उनके ८ वें वर्षमें निजाव-तनाकी जगह जो श्रीनगरपर धडाई करके लडाईमें हार गया था हमको वागडेवे पछाहकी फौजदारी और जागीर मिली।

८ वें (२) बालके पतमें यह दावला होकर कुछ समय तक संग्रा-होन रहा, किन्तु अच्छे होनेपर प्रवधसी सूवेदारी पर भेजा गया। फिर उसे माडूकी फौजदारी और जागीर मिली।

२५ वें वर्षमें एलिचरपुरका दामिन हुआ।

२८ वें वर्षमें गारजादे और जेने बापके दुष्मसे हमको देव-गढके जसीदार दोरतसिंहके ऊपर भेजा जिसने दस वर्षसे कार-दारी भेजा था।

श्री काशमसे जयका काम पौन मनार उतर गया जिगसे गन नाल  
वर्षातक घर बेठा रहा । निदान पौराजोके १० वे वर्षमें (१)  
शेख प्रदुलनसीक बुरहानपुरी ग शक्तिसे निष्ठा भाव तादरा  
हकी भी था, ३ हजारो ३ हजार सवानके सनगा पर क्रि गि  
युक्त हुआ और ऐरचकी फौजदारीपर (२) मेजा गया ।

१६ वे वर्ष सन् १०८३ में (३) जालदग हुआ । इसने गन  
बहुत अच्छा बाग बुरहानपुरमें लगाया था ।

### सुहृन्मद सुनत्रम ।

सनूचहरका बेटा सुहृन्मद सुनत्रम भी सुयोग्य पुरुष था । और  
वह और फ़जिबके साथ दक्षिणसे हिन्दुस्थानमें आया । डेढ़ हजारो  
मनसब और खानका खिताब पाकर यादशाहकी बन्दगीमें रहा ।

दूसरे सालमें दारावकी जनह अहमदनगरका किलेदार  
हुआ ।

यहा तक हाथ इन दोनों बाप बेटोंका सम्पत्ति उमरामें  
खिखा था सो इस ग्रन्थमें दिया गया । नजीबुननिसा बेगम  
शायद इसीकी बेटौ हो ।

### खानखानाकी प्रशसाके कवित्त ।

खानखानाकी प्रशसामें जैसे फारसी भाषाके अनेक कवियोंने  
कविता की है वैसे ही हिन्दी भाषाके कवियोंने भी की थी।  
हमने उसको भी खोज लगायी तो १४ कवित्त मिले जिनमें ३ कवि  
गङ्गके हैं १ मखनका है, १ अनो कुलीदा, १ हरनायका, और १  
तारा कविता । बाकी कवित्तोंमें कवियोंके नाम नहीं हैं हम उनको  
यहा क्रमसे लिखते हैं ।

१। सन् १०७७

२। सुन्दरखण्डमे

३। सन् १७२९।३०

कवि गङ्गके कवित्त ।

हृदरे हलैवी सुनि सटक समर कन्दो,

धीर न धरत धुन सुनत निसाना की ।

सबनको ठाट ठक्यो प्रलेखो पलक्यो गङ्ग,

सुरामान अख्यान खनत एक आना की ।

बीवन उबीठे बीठे नीठे नीठे सहवृव,

दिये भर न हेरियत लवट बदना की ।

तोमे छाने फीजखाने खजाने दूरमखाने ।

खाने खाने खबर नवाब खानखाना की ॥१॥

नबल नवाद खानखाना जू तिहारि डर,

परी है खलक खैन भैस जह तह जू ।

राजनकी रजधानी डोरी फिरे वन वन,

नेठनकी दैठे बैठे भरि बेटी वह जू ।

एह गिरि राई परी समुद्र प्रथारि भव ।

कहै कवि गङ्ग दल दलो प्रौर चह जू ॥

भूमि चली सैस घर सैस चली दण्ड घर ।

कच्छ चली कौल घर कौल चली वह जू ॥२॥

देरसही खानखाना बिरथी बिराने देश,

दक्षिण फीजे नारी खग मुख जो परी ॥

माते माते दायिनके हटका हनाप हारि,

तंस मानसर तप्यो घात चली न गिलो पति ।  
 बड चुन्दरि पददमगि पुरुष न चरे न करे गति ॥  
 खग मलित सेन कवि गद भनि रमित तेज रवि रघ मन्मो ।  
 दानाखान बैरम सुवन जिदिग मोध कर तज कप्यो ॥४

दोहा

गग गौछ मीछे जसुन, अधरग सरसुतो राग ।  
 प्रकट दानखाना भयो, कामद बटग प्रयाग ॥१॥

मण्डनदा कवित्त ।

तेरे गुन खानखाना परे ते दुर्नीके काल,  
 एह तेरे काम गुन आपनो धरत है ।  
 तू तो खग घोस खोल खलन पै कर लेत,  
 एह ता सो कर लेत नेक न डरत है ।  
 मखन सुकवि तू चढत नवखण्ड पर,  
 यह तेरे भुज दण्ड चढी न परत है ।  
 आहुटी अटक्त खान साहसी तुरकमान,  
 तेरी एक मान तोसीं तोज सो करत है ॥५॥  
 अलाहुलीका कवित्त ।

घाटा लायो लूट किधों सिंहसको कूट कूट ।  
 हाथी घोडे छांट एते पाए ते खजीने हैं ।  
 अला हुलो कविकी कुवेर ते मितार्ई कौनो,  
 अमनुसे अन माये गग जो नगीने हैं ।  
 पार्ई है तैं खान लख भई पछवान भूल,  
 रह्यो है जहा नथे समान कहाँकीने हैं ॥  
 पारसते पायो किधों पारसते कमायो किधों ।  
 समुद्रघुते, लायो किधों खानखाना दीने है ॥ ६ ॥  
 तारा कविका कवित्त ।  
 जोर बर शत्रु जोर रविरथ कैसे जोर बने,  
 बने जोर देखे दीठ जोर रहियतु है ।



ऐग कोयि देया ऐसी ते नको दिवैया ऐसी,

दान खानखानाको रही ते सहितु है ।

तग नग डारे बाजी ऐतन सत्तारे जात,

और अधिकाई कही मासी कदियतु है ।

पौनकी बजाई दरगत नद तारा कयि,

पूरो न परत लाते पौन कदियतु है ॥ ७ ॥

प्रसिद्ध कदिका कवित्त ।

सात दीप सात सिद्ध घरक घरक करै,

जाके डर नूटत पछूट गढ रागा कै ।

इ पत हुदर देर मेर सरजाद छोड,

एक एक रोस भर पडे इनुमागादे ।

धरनि धसवा धस सुमदा धसदा नई,

भगत प्रसिद्ध खग छीले खुरसानादे ।

ऐस पान पाट टूट चूर एकादूर भये,

चरो पेसखानाजु नदाव खानखानादे ॥ ८ ॥

हरनाथ कविका कवित्त ।

ग्यानगानानावा।

देखना विगान मत जागना भित्तारीमे ॥  
 सेवा खानखानाकी उमेदवानी दानकीते ।  
 मरर सदानको चू होत धनवारीमे ॥

अब घरपन साक्ष पहर है पहर साक्ष ।  
 आज काल के हरे उजारी दे से ॥ १० ॥

छप्पय ।

मदनरूप तगत वल, वीरग्रासन गल गण्डा ।  
 बहु सनाह पाखरी, द्वार दुन्दुभी बहु यक्षा ।  
 बहु साहस उत्थपन, फेर घप्पन समर्थवर ।  
 सहनसाह सिर छत्र, ताह खडग समर्थवर ॥  
 खानान खान वेरम सुतन चित्त :सहरस वक्तयो ।  
 धनमद जीवन राज मद एकाहि मदन मत्तयो ॥  
 कवित्त ।

सबल नवाब खानखाना जू तिहारे उर,  
 बैरी विडराने धुनि चुनियो निशानकी ।

तिहुनकी रानी फिरै यकी बिलखानी सय,  
 कूटी रजधानी सुध दानकी न पानकी ।

काह मिली हाथिन छिरन वानरन,  
 तिनही तै रक्षा भई उनहीके प्रानकी ।

सची जानी गजन भवानी जानी केहरन,  
 सुगन मयक रानी जानी कपि जानकी ॥ १२ ॥

दच्छनको जुगुम्भ (१) खानखाना जू तिहारो चुनि,  
 होत है अचम्भौ राजा राना उमरायकै ।

एक दिन एक रात औ द्यौस अघियै उगे,  
 आयै जे मुकाम न ले गये निरवायकै ।  
 वारसके समर रमीरहै के परतैवै,

भिंदे रबिमंडनकी सारे जिनरायकै ।  
 रजनीके जूझै छर छरजझो पैडों चाहे,  
 रात राहगीर दरवाजै ज्यों सरायकै ॥१२॥

नगर ठठाकी रजधानी धूरधानी कीनी  
 धरक्यौ छधारी खानपानी गा छहदमें  
 छाडि है तुष्टार औ दुष्टार न उठार भरे,  
 उजदक उजरकै गयो है पस्तकमें ।  
 पौर पौर परे रौर ठौर ठौर पौर दरे,  
 दानखाना ध्याये ते प्रयाज है खस्तकमें ।  
 प्रिय भाजै तिय छाडि तिया दारे पीव पीव,  
 दावो दावो दलजात दानक दस्तकमें ॥१४॥

दिके हुकम प्रागे दीये ररे जामनीकै,  
 देरके करि ते राख्यो, देरकी चहत है ।  
 दहतके नाम नाम राखत जिरान साहि,  
 धनके मदद धग धगजे दाहत है ।  
 खानखानाजूकी प्रव ऐसी बखसीस भई,  
 बाई दखसीस पौर दखसीस हत है ।

देखना विद्या मत जानना भिगारीसे ॥  
सेवा खानखानाकी उमेदवारी टानजोते ।

महर महानको सू द्योत धनधारीमे ॥  
अब घरपन माफ पहर है पहर माफ ।

आज काल के हरे जगारी हो मे ॥ १० ॥

दृश्य ।

मदनरूप तनत वल, वीरवाहन गन गज्जत ।  
बहु सनाह पाखरी, द्वार दुन्दुभी यदु यज्जत  
बहु साहस उत्थपन, खेर घष्यन समर्थवर ।  
सहनसाह सिर छत्र, ताह रक्खन समर्थवर ॥

खानान खान वेरम सुतन चित्त :सहरस रत्तयो ।

धनमद खोवन राज मद एकाहि मदन मत्तयो ॥

कवित्त ।

नवल नवाव खानखाना जू तिहारि डर,  
बैरी विछराने धुनि सुनिधै निमानकी ।  
तिहुनकी रानी फिरै थकी बिनदानी सम,  
छूटी रजधानी सुध खानकी न पानकी ।  
काह मिली छाथिन छिरन वानरन,  
तिनही तै रघा भई उनहीके प्रानकी ।  
सची जानी गजन भवानी जानी दोहरन,  
मृगन मयक रानी जानी दापि जानकी ॥१२॥  
दच्छनको जुगुभ (१) खानखाना जू तिहारो सुनि,  
होत है अचभ्यौ राजा राना उमरायके ।  
एक दिन एक रात औ द्यौस अथिय उगे,  
आये जे मुकाम न ले गये निरवायके ।  
वारसेके समर रभीरहै के परेतैवै,

भिदै रबिसंढलको सारे जेहरायकै ।  
 रजनीके जूझै सूर सूरजनी पैडों चाहे,  
 रात राइगीर दरवाजै ज्यों सरायकै ॥१३॥

नगर ठठाकी रजधानी धुरधानी कीनी  
 धरक्यौ खधारी खानपानी गा छलकमै,  
 छांडि है तुफार औ बुखार न उफार भरे,  
 उजवक उजरकै गयो है पलकमै ।  
 पौर पौर परे रौर ठौर ठौर पौर दूरे,  
 खानखाना ध्याये तैं भवान है खलकमै ।  
 पिय भाजै तिय छांडि तिया करै पौव पौव,  
 बाढी बाढी बिलछात बालक बलकमै ॥१४॥

दिशेके छुकम भागी दीये रहै जामनीकै,  
 देहके कहैते राख्यो, देहको चहत है ।  
 बखतके नाम नाम राखत जिहान भाइ,  
 धनके सबद धन धनजे कहत हैं ।  
 खानखानाजूको भव ऐसी बखसीस भई,  
 बाजी बखसीस और बखसीस इत है ।  
 हाथिनके नाम हाथी रहत तवेखनमें,  
 घोरा दिये घोरा सतरजमें रहत है ॥१५॥

काहकी सिकार स्याल सोमनकी खेज होत,  
 काहकी सिकार सगमार सुखसानो है ।  
 काहकी सिकार साथ सिकार मिचान बाज,  
 दाहकी निकार देली बादण बदासी है ।  
 रानझागाकी निमार सिधु पैके वारपार  
 छर पण्ड फण्ड खट वननकी ठानी है ।  
 छदही सुनोसे साम देय तीन चार साद  
 जौनह दिमादो पतसाह बाध जानो ते ॥१६॥

दोहा । ( मारवाड़ी भ पामें )

खानखान न जाचियो, जहा टालद न जाय ।

कूप नीर नद्रे चिना, नीलो घरा न पय ॥१॥

खानाखान न वावते, बाड़ी मग उगाल ।

मुटफर पडे न ऊठियो, जेने भावा पाल ॥२॥

खानाखान न वावते, इन रागाये येम ।

मुटफर पडे न ऊठियो, गये जेयमो जेम ॥३॥

खानाखान न वाव दो, तुम धुर मे चन हार ।

मेरां सेती गहि लिचे, इस दरगहजा भार ॥४॥

अकबरके फरमान खानखानाके नाम ।

अकबर और खानखानामें जो सम्बन्ध सेवक और स्वामि हस्तिका था उसका पता जहातका इतिहासो से लगा, यह ती पहिले लिखा जा चुका है । अब यहा उल्लेख स्वामी और सेवकके उस सप्रेम वार्तालापका भी कुछ नमूना दिखाया जाता है जो पत्र व्यवहारके द्वारा होता था ।

अकबरकी ओरसे जो नामे और फरमान चयाँत् पत्र और परवाने समकालीन बादशाहों तथा हिन्दुस्थानी अमीरोंको लिखे जाते थे उनको विशेष करके श्रेष्ठ अबुलफजल लिखा करता था जो बड़ा जबरदस्त सुशी था और जिसकी लेखन शक्तिकी प्रशंसामें इतना कहना ही बहुत होगा कि ईरान नरेश शाह अब्बास कहा करता था कि जितना मुझको अबुलफजलकी "कलम"का शगता है उतना अकबरको तख्तारका नहीं लगता ।

अबुलफजल एक मरौथी श्रेष्ठ नागौरका रहनेवाला था । परन्तु भाग्यवशसे पहिले सन ९८२में (१) अकबरका मीर सुशी हुआ । फिर अपनी योग्यता और बादशाहकी गुणग्राहकतासे बढ़ते बढ़ते मुख्य मन्त्रीके महत्व पदकी पहुँच गया था अकबर

नामा जो एक विशाल और गम्भीर इतिहास उक्त सुनझाटका है । इसी अवुलफजलका बनाया हुआ है और आधुनिक कालका भी यही कर्ता है जिसमें उस नीतिवान और विचारशील राजराजे-श्वरके सुप्रबन्धका वर्णन भारतवर्षका भूगोल और शास्त्रोंका साराश है ।

अवुलफजल खरा आदमी था । शाहजादोंकी भी खुशामद नहीं करता था । इसलिये शाहजादे सुलतान सलीमने सन् १०११ में (१) उसको सरदा डारा और सन् १०१५ में (२) उसके भागजे अदुल ससदने उसके लेखोंको बड़े परिश्रमसे इकट्ठा करके एक पुस्तकमें एकत्र किया जिसका नाम "सुनझियात अवुलफजल" है । इसकी ३ खण्ड है ।

पहिले खण्डमें बादशाहकी ओरसे लिखे हुए पत्र और फरमान हैं ।

दूसरे खण्डमें वे पत्र हैं जो खान अवुलफजलने अपनी ओरसे लिखे थे ।

तीसरे खण्डमें फुटकर लेख और घरकी फारसी ग्रन्थोंकी हसालोचन है ।

खानखानाने नामके केवल २ फरमान प्रथम खण्डमें हैं । पहिला दूसरेके कुछ बड़ा है और दोनोंका पूरा अन्वयार्थ न तो हिन्दी लेखमें सदा सदाता है और न इस पुस्तकके बाकी कुछ उपयोगी है । इसलिये आशङ्क्य भावार्थ लिखना ही उचित समझा ।

पहिला फरमान ।

पहिला फरमान हस्तलिखित प्रतिके पूरे ८ प्रष्टोंमें है । बादशाहने बहुत लम्बी चौड़ी उपमासे खानखानाका नाम लिखकर वही ही लम्बी चौड़ी उपमा राजा औरवरके वास्ते भी दी है और पठानोंकी लड़ाईमें उनके काम आजानेका हार्दिक शोक सभी मेदी

तुम्हारी अर्जी पटु थी। उससे तुम्हारी सामिभक्ति विद्रित होकर प्रसन्नता प्रसन्न हुई। दक्षिण विजय करनेके विषयमें जो तुमने अपनी विचार लिखे थे उससे हम भी सहमत हैं। तुम्हारी इन्तिज़ाम और तीर ताका हमको ऐसा ही भरोसा है कि तुम शीघ्रही गुजरात मालाके प्रत्यक्षरी खचित होकर दक्षिणको जाओ और वहाँके राजा की भी और पदार्थ हमारे भेंट करो।

खज्जारके अपराध क्षमा करने, जगन्नाथ और ब्रह्ममन्त्र गण्डिके न स हापाकर भेजनेकी जो तुमने प्रार्थनाकी थी सो ज्योंही होकर हापापत भेजे जाते हैं। खज्जारको जो धरती दो दण्ड सेवा और समयके अनुसार होनी चाहिये।

जमीनखादी बेटोंके वास्ते जाम वेग और खज्जारके लिये जो तुम उचित समझो सो करो।

भरोसेके महावतोंको भेजनेकी जो अर्जीकी थी सो सफ़र हुई और जेठ इन्द्राहीमको बुनाया सो जब हम आगराकी आते थे और जब पधरकी जमींदारोंके काम उसको सौंपे हुए है तो उसको भेजनेमें इतना लाभ नहीं जान पड़ता है कि जिसके वास्ते इन कामोंको योंही छोड़ दिया जावे।



और जो तुमने अपने बेटों की बायत लिखा कि जब दक्षिण की जाऊ तो इन्हें कहां छोड़ जाऊ या हजूरमें भेज दूं, सो तुम्हारा और तुम्हारी सत्ता का सब्ब इस घरमें ऐसा नहीं है कि जब किसी कामपर न होवे तो क्षणभर भी आखी से दूर रहे। तुम हमारे पधारने के समाचारों पर क न लगाये रहो। यदि हमारा आना पारसमें जल्दी हो जावे तब तो उत्तम बात यही है कि लडकों को हजूरमें भेज दो और जो यह निश्चय हो जावे कि हम अभी पंजाबमें ही विचार करेंगे जो गुजरातसे बहुत दूर है तो तुम वहीं किसी भरोसे की जगहमें उनको रखकर दक्षिण की चले जाना।

### दूसरा फरमान ।

दूसरा फरमान ७ पृष्ठोंमें है। इसके प्रारम्भमें बहुत दूर तक तो वसन्त ऋतु की शोभा का वर्णन है। फिर लडाइयों में विजय प्राप्त होने की प्रसन्नता और तूरान के बादशाह अबदुल्लाह उजबक के भेजे हुए कबूतरों के रङ्ग रूप और उड़ान की प्रशंसा है। हबीब कबूतर राज जो कबूतरों के साथ पाया था, उसकी तुलना बादशाह ने अपने अद्वितीय इतिहासवेत्ता नकीब खासे करके लिखा है कि जैसे नकीब खा मनुष्यों के वश जानता है वैसे ही हबीब कबूतरों की कुली पहचानता है। उनके शरीर की दशा जानने में जाली नूस हकीम के समान है तो उनके गुणों के पहचानने में अफलातून हकीम की सदृश है।

इसके पानी कबूतरों के उड़ने की विचित्रता का बखान करके लिखा है कि हम सदा ही और विशेष करके हर्ष और आनन्द के समयमें तुमकी अधिक याद किया करते हैं। इसलिये जिस दिन ये कबूतर हमारे दृष्टिसे निकलते थे और हम इनको देख देखकर प्रसन्न होते थे उस समय हमको तुम्हारी इस काम सस्यम्हो बातों की बहुत याद आती थी जिसमें इन “परीजादों” के मनमें एक भ्रम उपजा और इन्होंने अपनी बोलीमें अपना मनोरथ

कहा जिसका साराश यह है कि परमेश्वर ने हमारा मनशा पूर्ण करके हमको इस दरबार में पहुँचाया है, तो यहाँ के सब सेवकों और विशेष करके खानखाना में जो बादशाह का निज मित्र है यह चाहते हैं कि हममें से किसीको भी बादशाह से मागकर हमारा कुटुम्ब भङ्ग न करे । क्योंकि हम सब बादशाह को छत्र छाया में ही रहने की आशा करते हैं सा जब इनकी यह इच्छा है तो हम भी अपने हितेषियों और विशेषकर के तुमसे वह कि तुम सबसे अधिकतर मागने वाले हो, यहाँ चाहते हैं कि इनके मागने का आग्रह न करेंगे जिससे हमारे आनन्द और उच्छाह में विघ्न न पड़े और इनके वियोग को सहन करके इन्हें एक दूसरे से बिकटने का दुःख न दोगे । इनके वस्त्र भी तुम्हारी न्यायशालता से यह आशा करते हैं कि जब तक हम बड़े हाँकर बादशाह को अपने उडने का कौतुक न दिखा लेंगे तब तक हमका हमारे माँवापसे अलग न करें ।

और तुम्हारा एक गया पहुँचा (१) भी रास्ता चल रहा है उसके पहुँचने तक ठहरो । हम तुमको अच्छे अच्छे कवूतर प्रदत्त करेंगे और उस मिश्रमान का भी इनके वस्त्रों में से भाग मिलेगा । वादाचित् बिलम्ब हुआ तो जो कुछ तुमने अपने वास्ते सोचा होगा उससे काम मिलेगा ।

शेख अबुलफजल के पत्र खानखाना को ।

सुनश्रियत अबुलफजल के दूसरे खण्ड में भी कई पत्र अबुल-

१ । यह एक संकेत इस बात का है कि उस समय खानखाना नाकी देगम के गर्भ था । इसलिये बादशाह लिखते हैं कि नये मिश्रमान के आने पर अर्थात् बालक जन्मने पर हम तुमको कवूतर देंगे और तुम्हारे लडके को भी कवूतरों के वस्त्र इनायत करेंगे और जो बालक के होने में देर हुई तो तुमने अपने वास्ते जितने कवूतर मिलने की आशा की होगी उससे कम मिलेगा । यह एक दिसगी बादशाह की खानखाना से थी ।

फज्जन्को तरफने खानखानाके नाम लिखे मिलते है। उनमेंका भी वह सग जो इतिहास और राजनीतिसे सम्बन्ध रखता है यह लिखा जाता है।

### पहिला पत्र।

पहिला पत्र जो २० पृष्ठोंमें है अरबीके एक पदसे प्रारम्भ होता है। अबुलफज्जल खानखानाको लिखता है कि तुम्हारे मिलनेकी लालसा उतनी ही अधिक है जितनी कि तुम्हारी जय प्राप्तिकी प्रसन्नता है। मैं क्या कह कि इन दिनोंमें चित्तको कैसी कुछ चिन्ता रही। इधर तो वियागका दुःख उधर गुजरातसे बुरे समाचारोंके पहुचानेका उद्वेग और इनसे कष्टको यह बात कि बहुत दिनोंसे तुम्हारा न कोई दूत आता था और न पत्र पहुँचा था। इन सबसे बढकर शत्रुओंको दुष्टता थी जो निन्दा करके मित्रोंका दुःख बढ़ाते थे जिन्हाने ऐसा अवस्थामें जोनेसे मरना उत्तम समझ रखा था। परन्तु बादशाहके तेज प्रतापसे अब वह दुर्दशा व्यतीत हो गयी और शीघ्रही अच्छे दिन आगये।

इनसाफकी बात यह है कि तुमने बड़ी ही बोरताकी। यह कम तुमसे ही बन आया और पुरुषसिंह ऐसा ही किया करते है। तलवारों और कमानोंको याद बोलनेको शक्ति हो तो वे तुम्हारे भुजबलका हजार बार बखान करें।

शत्रु और मित्र मन्त्रियोंको बहुतसी सलाह और खेचतान होनेके पश्चात्, जिसका कुछ हत्तान्त आपका अपने वकीलोंकी लिखा पढीसे विदित हुआ जागा, १६ वहमन माहजलाली तदनुसार १७ सुहरमको बादशाहने इल्हाबाससे फतहपुरकी ओर पयान किय। विचार यह था कि शीघ्रतामे राजधानीमें पहुचकर विशेष कटक तो वही छोड देवे और छडी सवारीसे अहमद-बादके ऊपर धावा करें जिससे सेवकोंकी पुष्टि हो जावे और रिपु दल दब जावे।

इतनी बहुत गडबडसे बादशाहके शांत चित्तमें कुछ भी घबरा-

हट नहीं हुई और ऐसी बड़ी दूरको लम्बी यात्राको पण वांटका समझकर मन्द मन्द गतिसे गति प्रसन्नगन और प्रफुलित चित्त हो पधारते थे । परम स्वामिभक्त अनुनरी के साथमें से भी था ।

बहमन सहोनेकी अन्तिम भित्तियों जोकि प्रथम तिथि (१) सफरकी थी बादशाहों कटक कीडा घाटमपुरमें उतरा हो था कि किमना चौधरीके कामिट ( धायक ) बधारे लेकर पछ चे । श्रीमानो ने ईश्वरको प्रणाम करके दुन्दभी बजायेको अज्ञाको । इतना आनन्द और उछाड़ हुआ कि जिसकी यथार्थ अवस्था वर्णन करनेकी मैं समर्थ नहीं हूँ । तुम इसीसे अनुमान करलेगा कि इस प्रसन्नताने समभावसे शत्रुओं और मित्रों में एकता कर दी थी ।

इसके पीछे कल्याणराय, एतहादशा, निजामुद्दीन अहमद और शहाबुद्दीन अहमदशाही अर्जिया क्रमसे पहुँची जिनसे तुम्हारी पूरी बहादुरी बादशाहको विदित हुई । श्रीमानोने प्रसन्न होकर परम कृपासे बहुत श्रावणी और खानखानाकी वपौती पदवी तुमको दी ।

ईश्वरको धन्यवाद है कि उसने अपनी दयालुतासे तुमकी वह पदवी दिलायी जो पञ्चहजारी मनसबवालों की मन वाञ्छित कामनाओं की अन्तिम सीमा होती है ।

तुम्हारे पञ्चहजारी होनेको बहुत लोग असम्भव समझते थे और प्रत्यक्षमें कुछ उसका उद्योग भी नहीं था । दक्कीम अबुलफतह या कुछ दूसरे सन्मित्रों ने कदाचित कुछ अम किया होगा । वास्तवमें ईश्वरने तुम्हारा वह प्रभाव प्रगट किया है कि जो

१ । फतह १३ सुइरम सन् ८८२ को हुई थी और बधारे १८ दिनमें बादशाहके पास एक सफरको पहुँची । इधर बादशाह भी १४ दिनमें ४० तथा ५० कोस ही चले थे । उस समय डाक और सवारी इतनी धीमी चलती थी । अहमदाबादसे आगरा २५६ कोस था और आगरासे घाटमपुर ५० या ६० कोस होगा ।

बड बडे विद्वान पुरुषों की तीक्ष्ण दृष्टिसे छिपा हुआ था ।

समय अवकाश देनेमें बहुत कजूम है इसलिये इस विषयमें विशेष नहीं लिख सकता इतनेके वास्ते ही बड़ी भीख मागनेसे भवसर मिला है ।

निदान अति प्रतीक्षा करनेके पीछे ता० २५ सफर सन् १८८२ की फौलाद दीवानिका भला आदमी पहुचा और तुम्हारा कृपापत्र लाया जिसके पढनेसे असीम प्रसन्नता हुई और आश्चर्य भी बहुत हुआ । ऐसी बड़ी विजय प्राप्त करके वहां स्थिर हुए बिना इधर जानिका विचार करते हो और जिसकी प्रार्थना करनेके वास्ते मुझको शपथ भी लिखी थी । अन्तमें वह बात सन्मित्रोंके सन्धसे बादशाहके कानों तक पहुचायी गयी तो श्रीमान्को भी बड़ा अवस्था हुआ । इसीसे अवलोकितहने वाक्य पटुतासे वह प्रार्थना खोला भी करा ली । परन्तु मुझ जो आश्चर्य था वह अभी दूर न हुआ था कि दो तीन दिन पीछे फौलाद दीवानने तुम्हारी अर्जी श्रीमान्को हरण कमलोंमें अर्पित की जिसमें श्रीमान्को गुजरातमें पधारने और राजा टोडरमलके भेजनेकी प्रार्थना लिखी थी । इससे और भी मेरा चित्त विचित्र हुआ । पुराने समयके कर्मचारियोंकी सलाहसे तुमने ऐसा किया है । जब कि इस बृहत राज्यको परमेश्वरने अपने सरक्षणमें रख छोडा है तो इसके शुभचिन्तक भी सर्व प्रकारके सामाजिक शोकसन्तापसे बचे रहेंगे । इसपर भी ज्ञानका अनुभव न होने और मायामें लिप्त रहनेसे चिन्तातुर होना पडता है ।

मैंने जो कुछ ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया था, अफसोस है कि उसको तुम्हारे प्रेममें आसक्त होकर कुछ दिनोंके लिये छो बैठा, नहीं तो मैं कहा और तुम जैसीकी प्रीति कहा और ये उद्देश कहा ? निदान तुम्हारे आग्रहपूर्वक लिखनेसे मैंने अपनी सम्भका चलग रखकर सुहृद स्नेहियोंकी सम्मतिसे बहुतसी कहा सुनी करके, जिसका हत्तान्त आपको अपने मित्रोंसे 'वदित

हुआ होगा श्रीमानोंसे मेघ संक्रान्तिके उत्पन्न होने के पीछे मानवों के लाना, खजाना भेजना और उन सब कार्यों का सम्पादन करना स्वीकार कराया है जिनका प्योरा उस फरमानमें लिखा गया है जो अवतानिब और फौलाद दीवानोंके हाथ जा चुका है । आशा है कि सब अच्छा होगा ।

क्या करूँ यह मेरा स्वभाव है कि जो उत्तम विचार मनमें उत्पन्न होते हैं उनके लिखे बिना चिन्तकों शान्ति नहीं होता और इसी हेतु इतना बहुत लिखकर तुम्हें कष्ट दिया है । आशा है कि मन और शरीरके विचारों और कामोंकी भीड़ तुमको इसने पढ़नेसे न रोकेगी ।

मैं इस पत्रको तुम्हारी तन्त्रुस्त्रीकी "दुआपर" समाप्त करना ही चाहता था कि चौधरी किसना, गहावर्धन अहमदखा और नवाब कीर्त्ताकी अर्जिया जो ता० ५ रबीउलअव्वलको नादीतमें लिखी गयी थी ; रेवारियोंके हाथ पहुँचें उनमें शुभ समाचार नये फतहके मिले । यद्यपि इसके पहिले मुजफ्फरके खम्भातसे भागने और उसके पीछे फौजके जानेकी खबर कई मनुष्योंकी लिखावटसे जानी गयी थी परन्तु सबिस्तर अब मालूम होकर चिन्ता और व्याकुलता प्रसन्नतासे बदल गयी ।

परमेश्वर नित्य ही तुम्हारी ऐसी जय किया करे । श्रीमानोंको जो प्रसन्नता तुम्हारी इस लगातार जेतमें हुई है उसका कुछ वर्णन नहीं हो सकता । क्या दरबारमें और क्या एकान्तमें तुम्हारी प्रशंसा किया करते हैं जिससे शत्रु दुःखी और मित्र सब सुखी हैं ।

श्रीमान कई बार कह चुके हैं कि जो चाकर गुजरातमें भेजे गये हैं उनके मनसब अर्ज करो तो बढ़ाये जावे और उनको क्षमापत्र भी भेजें । परन्तु श्रीमान न्याय और राजनीतिको परिपाटोसे सब काम आप देखकर करते हैं । तुम्हारी खानखानीका फरमान, खासा खिलअत पेटी तलवार और घोड़े के क्वांटनेमें दिन लमजानेसे इतनी देरमें लिखा गया था तो दूसरा फरमान किस तरह लिख

जा सकता था जब कि नये दिनोंके आजानेसे उसका उत्सव राज-रोतिसे किया जाता है और मेघ सक्रान्तिके दिन तो सब छोटे बहोंको यथोचित न्याय पूर्वक मान और मन्मान दिया जाता है और अन्नके तो हरिकको उसको आशासे अधिक देना है । मेघ सक्रान्ति दूर नहीं है । ईश्वरने चाहा तो इन सब कामोंसे फुरसत हो जाने पर दूसर फरमान तुम्हारे पास पहुचेंगा ।

आपसे यह बात छिपी न होगी कि सच्चे सच्चा वेही है जा दिलने यह चाहते हों कि मित्रोंके छोटे और बड़े अवगुण जत कर उनसे त्याग करावे' न कि खुशामदियोंको भाति अवगुणोंको हो गुण बताकर अपनेको हितैषी बतावे' जैसाकि ससारमें हो रहा है और उनका यह कपट थोड़े ही दिनोंमें प्रकट होकर लोक और परलोक दिगाड देता है । सो बुद्धिमान लोग जानते ही है । जब आप यही थे तो मिलनेके समय इन बातोंकी कहा सुनी हो जाती थी । परन्तु अब आप दूर है इसलिये चाहता हूं कि चिट्ठियोंमें ऐसी मनोवृत्तियां लिखी जाया करे । आशा है कि आपकी भी ऐसी ही इच्छा होगी ।

मैं चाहता था कि इसी पत्रमें पहिले तो कुछ प्रकरण गूढ़ रहस्यका लिखू जो साराथ सब मतमतान्तरों और शाखांका है ।

दूसरे यह प्रार्थना करू कि आप न्यायदृष्टिसे खूब देखभाल कर निरूपण कर लें कि ये बातें निरन्तर सब विद्वानों की मानी हुई है तो भी आपके विशाल चित्तमें कैसी जचती है और जब कि यह निश्चय हो जावे कि अति उत्तम है तो जो इसकी विपरीत हैं वे सर्वथा हथ्या हैं ।

तीसरे यह चाहता हूं कि नित्य और जो नित्य न बने तो सप्ताहमें और जो सप्ताहमें न हो सके तो एक महीनेमें और जो महीनेमें भी बन न पड़े तो एक वर्षमें अपनी आयुभरका दफतर स्मृति जबसे सन्हाली हो देख लिया करें और बिना किसीकी सम्म-तिके अपने हृदयमें विचार करके देखें कि पिछले वर्षोंमें क्या

परमेश्वरने अपनी क्रिया कुशलतामे जैसे समग्र शरीरका प्रबन्ध एक जीवके अधीन किया है वैसे ही पृथिवीका प्रबन्ध भी नीति विशारद नरेशोंके अधिकारमें दिया है। जीवात्मा यदि शरीर और मनकी शक्तियोंका शासन, जो उनके कर्मचारी हैं न्याय और नीति पूर्वक करता है तो स्वास्थ्य बना रहता है नहीं तो उसमें विघ्न पड़कर नाशकी प्राप्ति होती है। ऐसे ही जो किसी देश या राज्यका स्वामी सावधानी और बुद्धिमानीसे कामोंको सन्हालता रहे तो सब प्रजाकी बशमें कर ले और किसी प्रकारकी हानि न पड़ने दे; नहीं तो राज शीघ्र ही भ्रष्ट हो जावे जिसकी स्थिति इन ५ बातोंके ऊपर निर्भर है—

१। सावधानी, यानी सब लोगोंका हाल भरोसेके मनुष्यों तथा कई ऐसे आदमियोंके द्वारा जानते रहना, जो एक दूसरेकी न जानते हों, राज्य, नगर और घरसे सावधान रहना, सच्ची झूठी खबरोंकी बुद्धिमें तौलकर जान लेना।

२। प्रजागणके अपराध क्षमा करना और उन अपराधोंकी उनकी अज्ञानतासे जानकर क्रूर न होना।

३। जिनपर अन्याय हुआ हो उनका न्याय करना और दुष्टोंका (जो अपने सम्बन्धी हों तो भी) पक्ष न करना।

४। ससार असार है, ऐसा सबको निश्चय कराना और बिना



कहे जो तीन दुःखी लोगोंको मगोरथ समझकर मित्र कर देना , प्रजाके धन हरनेकी आकाक्षा न करना , ऐश्वर्यकी अपने पुरुषार्थसे न समझना ।

५ । न्याय पथका अवलम्बन करना, हिंसा त्याग करना जो लोग अपने मतकी न ही उनसे वैरभाव न रखना हां जो समझ सके तो अपना मत तन्त्रता पूर्वक उनको समझावे । केवल मत विरोधसे उनपर अन्याय न करे और उनके धन धान्य धरा और धामका पूरा पूरा संरक्षण करता रहे ।

प्रियवर ! ये वाक्य प्राचीन बुद्धिमानोंके हैं जो उन्होने कृपा करके लोक हितार्थ कहे हैं ।

बुद्धिमानोंके उपदेश तो सर्वथा श्रेयस्कर ही होते हैं । परन्तु अहीभाग्य उनका है कि जो सुनते हैं और उनका साधन करते हैं । और निःसन्देह इसी बातोंका प्रतिपादन करना पुरुष सिंघोंका ही काम है जो इनके द्वारा काटोको फूल बनाकर मित्रों और शत्रुओंमें समभावसे रहते हैं, और हकीम अनवरीके इस वाक्य को, कि जो शत्रुओंमें निर्वाह कर सके और जो मित्रोंमें रह सक वही पुरुष सिह है, परलोकका साधन बना कर सन्तुष्ट होते हैं ।

मैं अब ऐसे प्रकारोंके कहनेसे कि जिनसे अपनेको तो सुधारा ही नहीं है चुप रहता हूँ और इसमें अधिक अपनेको और दूसरे लोगोंको कष्ट न दूंगा । क्योंकि ईश्वरका ऐसा नियम है कि - उपदेश जब तक किसी मत्पुरुषसे न दिया जावे कुछ फल नहीं देता है । परमात्मा हमको और तुमको सन्मार्गपर लगाकर परम पटको पहुँचावे ।

दूसरा पत्र ।

यह ८ पृष्ठोंमें है । आदि अन्तमें तो वेदात, राजनीति, धर्मनीति और ऐस प्रीतिके रहस्यका विषय है । बीचमें जा समाचार लिखे हैं उनका यह साराग है कि यहवाजखाने घोडावाट- (१) समुद्र

तब सब देश और टापू जीत लिये। अब नट जो गये ईमाफां नावमें वेठनर भागा सो पानोमें डूब गया।

ब औरंगा और मादित्त जाने टाटे और नदगानगे उनीमेतक टि-  
विजय करके उन देशोंपर अधिकार कर लिया। दुष्टोंको हटाकर  
सब जगह अमन चेतकर दिया। "कतलु मोहानी"ने जो पठानोंके  
उपद्रवका पछिछाता था सेवा स्वीकार उसके अपने मोमेकी मददगत  
दायियों और बढ़िया पदार्थ सहित चाटगाहके चरणमें भेजा।

उधर मुहम्मद हकीम (१) मिरजाकी मृत्यु हो गयी जो बड़े  
बड़े बनवाइयोंके माहमका हेतु था।

निजामुद्दीन कुलीबखाने जो अर्जो तुम्हारी दूसरी फतहके सवि-  
स्तर हतास्ती को दरबारमें भेजी था उसमें उसने अपना बहुत कुछ  
प्रस तुम्हारे प्रति प्रकट किया है।

उर्दीबहिश्त महीनेकी तीसरी और रबीउम्सानाकी ११ वी  
तारीखको जो उत्सवका दिन था और श्रीमान् बहुत प्रसन्न थे,  
तुम्हारी दूसरी अर्जो भी पहुची जिसमें दूसरी फतहके समाचार  
थे उनको सुनकर श्रीमानोंने बहुत प्रशंसा की। तुम्हारे और तुम्हारे  
स्वायके लोगोंके मनसब पद बढ़ानेको फिर आज्ञा दी। विनम्र  
हो जानेसे कर्मचारी धमकाये गये। अब शोषण हो सब कामों के  
पूर्ण हो जानेकी आशा है।

चौथी उर्दीबहिश्तको रातको तुम्हारा पत्र हकीम अबुलफतहके  
नाम पहुचा। ऐसा पाया जाता है कि दूसरी फतह होनेके  
पहिले लिखा गया होगा। क्योंकि कई बातें उसमें चिन्ता और  
व्याकुलताकी लिखी हुई थीं जिनसे चित्त बहुत विचित्र हुआ।  
तुम बहिमान हो सब कामों का पूर्वापर देखना चाहिये। यह  
अगत ईश्वरका बनाया बाग है काट। पर दृष्टि देनेसे पहिले इसने  
फलोंको देखना चाहिये और प्रसन्न होना चाहिये। भायु जो

श्री भ्रमासे बीतौ चली जाती है और जिसका कोई बदला नहीं मिल सकता है उसको इसी खुशीमें पूरी करनी चाहिये। साधारण मनुष्यो को भाति दर्प और शोक करना तुम्हारा काम नहीं है।

यद्यपि मैं जानता हूँ कि ऐसी बातें व्याकुलताकी दशामें किसीको नहीं सुहाती, वर्तमान कालके लोगो को तो बहुत ही कहवौ लगती हैं, परन्तु तुम विद्वान हो और सबे बचनो से मनुष्ट होते हो इसलिये मैंने ऐसा लिखा है।

तीसरा पत्र ।

इस पत्रका यह आशय है कि खानखानाने अबुलफज्जलसे ब्रह्म विद्याके विषयमें पृच्छा और उसने उत्तरमें अपना सिद्धान्त लिखा है।

चौथ पत्र ।

इस पत्रका सारांश यह है कि मैं वह नहीं हूँ कि ज जवानीसे कहूँ वह दिलमें न हो। तुम जानते होगे कि मैं ठेटसे विरक्त मन था और गृहस्थीमें आया जब भी वही हाल था। लोग मुझसे मित्रता किया चाहते थे। मैं दूर भागता था। निदान हकीम अबुलफतहने, जो मर चुका है, और तुमने मुझको अपनी दोस्तीके जाँके फासा। मैं कुछ समय तक तुमको उपदेश करता रहा तुम मानते रहे जो कभी कोई सच्ची बात कडवो भी लगी तो तुम अपने मनको दशमें रखकर सदुपदेशकी चाहना करते रहे। परन्तु अब थोड़े दिनों से वह इच्छा नहीं पायी जाती और मैंने भी लिखना छोड़ दिया तो भी यथाशक्ति दिलसे तुम्हारे सुधारनेके उद्योगमें बहकटि हूँ। पर हा इस कामका उस्ताद नहीं हूँ जिससे इसके कई साधन छूट भी जाते हैं। एक विशेष कारण यह भी था कि इन दिनों मेरे भाई शेख अबुलफज्जल पैजोका देहान्त हो गया और इस दुःखसे मुझको अवकाश नहीं मिला।

तीन महीने पीछे महमूदखा पहुँचा उसने बने बनाये सुगम कामको बहुत कठिन बताया। मैंने जैसा कि मेरा कर्तव्य प्रीति और हितकी परिपाटीसे था बहुत परिश्रम किया परन्तु बहाका

मगर हुनान्त श्रीरानीजी निश्चय हो चुका था। इसलिये बात बात में तुम्हारी ओरसे कहा और तुम्हारी सहायता भी बात की पर लज्जित हो होना पड़ा और कहां नहीं लज्जित होगा, जब कि तुमको अपना परम मित्र बतलाया था। ज़िन्दान यहाँ तक नीचा पहुँचो कि सुभ्रपर भी कोप हुआ जिसको मैंने सह लिया क्योंकि मैं ही उसका कारण हुआ था।

मैं ज़रूरता हूँ कि साधियोंने तुमसे दगा को। यदि शाहजादा जवानों और बडार्देके उन्मादमें नमस्ताने रास्ते पर न चला था तो हे विनचण विद्वान्। तेरी विनचण बुद्धि का क्या हुआ था ? तू क्यों डर गया और मागी हुए बडप्पनके बोझमें दबकर घमण्ड कर बैठा ? कितनासा काम था जो तेरे कदमसे नहीं होता ? तूने अपने स्वामीकी पसन्दताके लिये शाहजादेका मन क्यों नहीं मनाया ? इन ३ वर्षोंमें उन्नततासे तूने बात भी न सुनी, मोघ रास्ता छोड़ दिया और अब तक भी सचार्देके मार्गको ग्रहण नहीं करता है। मैं चाहता हूँ कि कोप करूँ और १००० गालियाँ दूँ परन्तु जोभ एक पुनीत पद्म है, उसकी गालियाँसे धिगाडना बड़ा अनर्थ करना है।

मैंने माना कि तू मूर्ख था पर बुद्धि नहीं थी तो भक्ति कहा चली गयी थी ? वह स्वामिधर्मपनेको बाते क्या हुई ? क्यों काममें बेपरवाई की जिससे ऐसा हुआ ? यदि सौगन्देख ना मेरी समझमें पाप न होता तो मैं १००० सौगन्देखाता जो इस बड़े कामका सौग था। दुश्मनोंके इस मनवान्छित काम करनेपर भी सुभे विश्वास था कि तू बाबला और मदोन्मत्त हो गया होगा। तो भी सुभे देखकर सचेत हो जावेगा और मेरा कहना काम कर जावेगा। इसलिये मैंने अनेकवार बादशाहसे प्रार्थना की कि मनुष्य प्रकृतिके स्वभावसे जो भूल हुई सो हुई मैं जाकर शीघ्र ही अपनी मित्रताका ऐसा दबाव डालूँ कि खानखाना शाहजादेके कहनेमें रहे और उनकी सेवा सच्चे मनसे करे। परन्तु कुछ लाभ न हुआ

और इस प्रार्थनासे मुझपर भी खफा हुए । परन्तु मेरे मनमें उसका कुछ विचार न हुआ और मैं उसी तरह दृढ़ सङ्कल्प हूँ ।

खैर जो हुआ सो हुआ, मुझ मन्त्रे हितैषीको सनाह यही है कि अपने वचनोंका पावन करके श्रीमानोंकी चित्तकी शान्त करो श्रीमान तो तुमसे वह आशा रखते हैं जो अपने किसी पुत्रसे भी न रखते हों । अब आप बुढ़ानेशो ता प्रार्थना न करें और बड़े पने (अर्थात् मूर्खता)से अलग होकर उसी सेवामें दिल लावे । श्रीमान् बुढ़ावे भी ता यही उचित है कि इसी सेवाको प्रार्थना करें क्योंकि श्रीमानोंका चित्त यही चाहता है कि यह काम तुम्हारे हा और जा वस्तुमें मेरे आनेका उचित समझे ता अर्जो भेजे सा फिर मेरे उद्योग करनेका आधार हो । मैं कदा और यह काम कहां ? परन्तु यह लालसा है कि श्रीमानोंकी कोमल हृदय पर जो भार है उसको दूर करें । ईश्वरको सपत्नी धन्यवाद है कि बराड रह गया । इसका मैं तुम्हारे परिश्रमका फल जागता हूँ । इससे वह भार कुछ हलका हुआ । आशा है कि बिलकुल शांति रहे । जो दुष्ट जन खुशी मना रहे थे वे अब शोकमें बैठे हैं । यदि मूलमन्त्र (१) जाननेमें एक दो बार मुझसे भूल ही जाती तो मुझे अपनी समझका विश्वास नहीं रहता । मैं जानता हूँ कि ये पाते साधारण हैं । सच तो यह है कि श्रीमानोंकी परम पवित्र हृदयमें क्षमा संगीनता पानी ही नहीं । (२)

प्रेसा दह नहीं है कि जो सयोगकी वांछासे अपना मन अर्पण करे । प्रेमी वही है कि जो निष्काम होकर सर्वस्व योही दे दे दोनों लोकाका पत्नीको २ डालिया जाने, उनकी छड़ी बनावे और मनुष्योंका वर्ण दे ।

१. यथायं अभिप्राय ।

२. यह अन्तमें शेर ने खानखानाकी तससी की है कि याद-राह वास्तवमें तुमसे अप्रसन्न नहीं है ।

वत बहुत है अवसर जोडा । समय बाधत पोर मन विरक्त ;  
दूसी पर समाप्त करता ह ।

तेरी भावि खुनो है पोर मा चेतन्य है तू सबसे अधिक  
अपनी लज्जा रक्त ।

### पाचवे पत्रका सारांश

परमेश्वर तुम्हारी सत्कामना सफल करे । राज देवयोगसे जित  
जित जा कारण प्रत्यक्ष मैं सबे हितेपिप्रयोको समाप्तिज्ञा निरोध  
या अथ बुद्धि मग्न हो का दुर्मन हो सकता है तुमने कन्यार  
जानिका विचार छोड़ दिया और ठहा फतह करनेका इरादा किया  
था किसी दूसरे तात्पर्यसे विशेष परिश्रम करने और बहुत  
समय तक कष्ट उठानेकी इच्छा हुई (क्योंकि कन्यार लेना सु-  
गम था और ठहा कठिन) और फिर मुझसे पिछले पत्रोंमें गिफ्त  
लिखनेकी टीका पूछते हो । सो मैंने जो कुछ लिखा वह प्रीति  
रीतिकी अधिकतासे लिखा था । वह गिफ्त ऐसा न था जो हमारे  
तुम्हारे स्नेह या रुज्जन पुरुषों के प्रेमके विरुद्ध हो । तुम्हारी  
वेपरवाई देखते हुए तो मैंने कुछ भी गिफ्त नहीं किया है और  
न परेखा । जब कि मेरी प्रीति तुम्हारे प्रति सिद्ध हो चुकी है  
फिर गिफ्तोंकी जगह काहा रहो ? तुम जितने रुज्जनतासे दबते जाते  
हो उतना ही मैं मूर्ख बनता और तुम्हारी मित्रतासे हृदि करता  
जाता ह । तुम्हारे पास तो इस समय आत्मज्ञाघो लोग भरे हुए हैं  
जो मुझे अपनेको उनमें गिनानेकी लज्जा न आती होती तो मैं भी  
अपने दिल जलाने, तुम्हारे काम निकासनेमें बादशाहसे भगडने,  
और अपनी हानिका सोच न करनेकी थोड़ी सी कथा लिखता ।

† यह पत्र उस समय लिखा गया था जब कि शाहजादे सुराद  
और खानखानाकी अनवनसे दक्षिणका देश फतह नहीं हुआ था  
वरन दक्षिणियों ने कुछ अश बादशाही राज्य का ले लिया था और  
बादशाह शाहजादेके लिखनेसे खानखाना पर कोपायमान हुए थे ।

मैं तो ठेठसे विरक्त मन था, मुझे प्रारब्धने पकड़ा और अमात्य पदमें जोत दिया । तो अब इसका धर्म भी निवाहना पड़ा । इसीलिये कुछ इस सम्बन्धके विषयकी भी कहता हूँ कि बादशाह तुमसे इतने प्रसन्न है कि जिसका वर्णन इन पत्रोंमें नहीं ममा सकता है । तुम्हारी सदा सेवाएँ शोकांत हो गयी हैं । सारे अमीरों और मनमवटारोंने तुम्हारे कामोंके यत्नान बहुत अच्छी तरहसे लिखे हैं जो अपने स्थान (१) पर स्थिर हो गये हैं और शीघ्र ही उनका फल तुमको मिलनेवाला है ।

जल्दी नावोंके वास्ते हुक्म हो गया है, तोपें और उनकी सामग्री पीछेसे पहुँचेंगी ।

दौलतखाकी वास्ते पूरी सिफारिश कर दी गयी है, वह अपनी सुरादकी पहुँच जावेगा ।

अमीर लोग राज्यके अनेक प्रान्तोंसे विजयके पत्र भेज रहे हैं आशा है । कि तुम भी शीघ्र ही इस बड़े कामकी सम्पादन करके बादशाहकी प्रसन्नता प्राप्त करोगे । मुझे इतनी भी फुरसत नहीं है कि परमेश्वरसे अपनी कुछ कछूँ विषयवासनाने घेर रखा है । सत्सङ्ग काम होता है । भाई हकीम हमामसे तो मिलता रहता हूँ वह भी कामोंमें डूबा हुआ है । कभी ज्ञान नाना चङ्गे जमाया और ग्राह्यता (२) पढा करो । बात थीत उनके

अनुसार किया करो। जकीनेमें मद्रा अपने कर्मों को गिनते रहो नीतिकी पुस्तकीमेंसे अहयाजे (१) उत्तर भागको पढ़ा करो। निष्कपट और निर्भीभी मनुष्योकी खोज रहो, जो सर्वे मन्द कहें। झूठे खुशामदियाँ वचि रहो ।

छठे पत्रका साराग ।

रूपापत्र पढ़ु चा । सज्जनता पायी गयी । मुझमें उपदेश चाहा मैं आप ही शिक्षाहीन हूँ फिर क्या शिक्षा करूँ ? परन्तु भाग्य अच्छे थे जिसने बादशाहकी सेवामें लाडाला जिनके दर्गनोंसे ज्ञान चक्षु खुले । आशा है कि शिक्षा देनेके योग्य हो जाऊँ । अब जो कुछ मैंने समझा है तुमको भी लिखता हूँ ।

इसके आगे नीति, न्याय और ज्ञान मार्गकी बातें लिखी हैं ।

समुच्चय ।

ऐसेही और भी कई पत्र हैं जिनमें खानखानाकी कम्हार, सिध और दक्षिण सम्बन्धी भूल चूकको अवलोकलने पकडा है और खानखानाने जो उसके उत्तर दिये हैं वे भी काटे हैं । बादशाहकी नाराजी जताकर भी यही छिपा है कि बादशाह दिलसे तुम पर अप्रसन्न नहीं है ।

एक पत्रमें खानखानाने बादशाहकी नाराजीके विषयमें लिखा तो यह उत्तर दिया कि यहा तो कुछ भी नहीं है । सदा तुम्हारे भाव और भक्तिकी चर्चा दरबारमें और एकान्तमें होती रहती है । कभी हुक्म न हुआ कि कोई फरमान चाहे वह खफगीक ही हो, थगैर यार वफादारकी उपाधिके न लिखा जावे और आज-मखाको तो तुम्हारी सहायताके वास्ते भेजा था इससे तुमको इतना भड़कना नहीं चाहिये था ।

फिर एक और पत्रमें जो ता० २ रमजान (२) सन् ८८२ को

१। अहयाउलउलूम मुसलमानोंकी धर्मनीतिका ग्रन्थ है ।

२। आदी सुदी ३ सवत् १६४१



बाह्यारसे लिखकर भेजा था, यह शिक्षा सिखी है कि बादशाहके फरमानके जबाबमें। जो खफगीका है अपराध स्वीकार करके अपनी हानिको सुधार लो। तुम्हारी अर्जीको पढनेसे बादशाहकी नाराजी १००० अशोंमें १ अश पर आरह्यी है परन्तु तुम एक को ही १००० जानकर उसके दूर करनेका प्रयत्न करो।

इसके आगे पत्रमें लिखा है कि ता० ६ जसादिउलखवलको तुम्हारा खत मिरजा अली बहादुर लया। पढकर शाक हुआ। आनका इरादा न फरमानके अनुसार है और न तुम्हारी समझके योग्य। जब कि तुमको उसी कामके करनेकी प्रेरणा की गयी थी तो उससे अपने बुलानेका तात्पर्य समझ लेनेको क्या कष्टा जावे ? अब इधर आनको इच्छा न करो। आगरेमें १ वर्ष तक ठहरनेकी सरजी बादशाहका न थी। तुम श्रीमानोके मनको बहुत करके दक्षिणकी फतहमें लगा हुआ जानकर आनकी बात छोड दो और उस देशके जीतनेमें जिसका उत्तम अवसर यही है विलम्ब मत करो जैसा कि पहले कई बार बार चुके हो।

सिंध और दक्षिण फतह करनेका धन्यवाद भी कई पत्रोंमें है। कंधार खुरासान और ईरानकी तरफ बढ़नेकी भी उतेजना है

इन सब पत्रोंमें सरकारो कामोंसे निज व्यवहारकी बातें अधिक हैं और उनमें विशेषतर अफ़्ग़ आत्म शिक्षाका है। अबुलफजल एक प्रकारका वेदान्ती था। उसने आत्मशिक्षा और वैराग्यकी बातें जैसी खानखानाको सिखी थी वैसी ही उस समय के दूसरे बड़े बड़े अमीर मिरजा, आजम, जिनखा कोका और राजा मानसिंहकी भी सिखी है। वह बादशाहका वजीर, मुंशी और सुसाहिब था इस वास्ते सब लोग उससे पक्ष व्यवहार रखते थे। और वह सबको यथार्थ बातें उनके हितकी, जिनसे इस लोक परलोकका कल्याण हो लिखा करता था परन्तु उसके लेख बहुत क्लिष्ट हैं और आशय भी गूढ़, जिससे उसका अभिप्राय समझनेमें बहुत सुश्रुक्ति पडती है। जो फारसी भाषाका पूरा व्याकरण, वेदान्ती, नीति

इतिहास वेत्ता और कवि तो यही उगते नैनीजा यद्यपि सारगर्भित आशय सम्झकर आनन्द प्राप्त कर सकता है ।

खानखाना और शेरकी मीट

सशामिरल उसरामें लिखा है कि जिस समय शेर अनुत्कृत प्रदान मन्त्रीके पूर्ण अधिकार में था मक दिन गानगाना और मिरजा जानी उससे मिलने गये थे । शेर पन म पन लीटा हुआ प्रकाशरनामके पत्र देख रहा था, इनका कुछ आगत नहीं किया केवल इतना ही कहा कि आपो मिरजा बैठो ।

मिरजा जानी वेगवो सिन्धली बादशहीका घमण्ड था उस लिये वह छठ गया ।

दूसरी बार फिर खानखाना मिरजाको मनाकर शेरके स्थान पर ले गये तो शेर पील तक लेनेको गया । बहुत प्रादर सत्कार किया और कहा कि इस लोग तो आपके सेवक और प्रजा हैं ।

मिरजाको बड़ा अचम्भा हुआ कि या तो वह घमण्ड था या यह विनय ।

खानखानाने कहा कि उस दिन तो मुख्य मन्त्रीपना इसकी दृष्टिमें था और आज भाई चारिका बर्ताव है ।

— 0 —

# पारशिष्ट ।

## सत्रासिर रहौमी ।

यह खानखानाके जीवनचरित्रका ग्रन्थ है जो उनके जीते जी ही ईरानके एक विद्वान अब्दुल बाकीने बनाया था। यह सेरे देखनेमें ता नहीं आया परन्तु मौलाना शबलीने बङ्गाल एशियाटिक सोसाइटीके पुस्तकालयमें इसकी एक पुरानी प्रति देख कर उस परसे कुछ आशय उर्दूके पत्र “नुदवामें” छपवाया था उसीका सारांश यहा लिखा जाता है।

यह ग्रन्थ २००० पृष्ठोंमें पूर्ण हुआ है। अर्धशमें तो खानखानाके पूर्वजोंका वृत्तांत है और शेषमें खानखानाका चरित्र है जिसमें मुख्य बातें इतनी है—

१ जन्म और शिक्षा ।

२ वादशाही दरबारकी सेवा बन्धन और दिग्विजय ।

३ खानखानाको अरबी, फारसी, और तुर्की भाषाओंमें निपुणता और प्रत्येकमें गद्य पद्य लेख और काव्य रचना ।

४ शील स्वभाव ।

५ शस्त्र विद्याके चमत्कार ।

६ लोकहित और सुखके काम ।

७ कृषिकार्यमें उन्नति ।

८ खानखानाके दरबारी शिल्पकारोंकी नयी नयी कारोगरियोंके आविष्कार ।

९ खानखानाका पुस्तकालय ।

१० यह खानखानाके दरबारके कवि ।

११ आनिम (विद्वान्) हकीम और सुशेखर ।

न० १ और २ को छोड़कर ( जिनका बहुत सा विषय हमारे इस ग्रन्थमें आ चुका है ) मौलाना शिप्लीने अपना लेख न० ३ अर्थात् खानखानाकी विद्वत्तामें आरम्भ किया है । वे लिखते हैं कि खानखाना कई भाषाओंको जानते थे, उनकी अरबी, फारसी, और तुर्की कविताका नमूना मूल ग्रन्थमें दिया है तुर्की और फारसी तो उनकी मातृभाषा थी लेकिन अरबी भाषाकी कविता भी कुछ काम नहीं है । शोक और महाशोक है कि ग्रन्थकर्त्ताने जो इरानी था, खानखानाकी हिन्दी भाषाकी कविताका एक भी नमूना नहीं दिया है, नहीं तो इस बातका पता लगता कि उर्दू का हिन्दी भाषा पर क्या प्रभाव पड़ने लगा था ।

खानखानाकी अरबी भाषामें यह अभ्यास था कि जो कहींसे कोई लिखावट आती थी तो मूल भाषाको पढ़े बिना ही उसका उल्था इस प्रकारसे करते चले जाते थे कि मानो वह उल्था ही लिखा हुआ उनके हाथमें है ।

एक बार मक्केके शरीफने ( महतने ) अकबरको पत्र भेजा था जिसमें अरबीके कठिन कठिन शब्द भर दिये थे । अकबरने अबुलफजल, फतहउल्ला शीराजी और खानखानाको हुक्म दिया कि फारसीमें अनुवाद करके लावे । अबुलफजल और फतहउल्ला तो कोषोंकी सहायता लेनेके लिये उस चिट्ठीको साथ ले जाने लगे, परन्तु खानखाना वहीं दीपकके पास जाकर पढ़ने लगे और साथ साथ तरजुमा भी करते गये ।

फारसी भाषामें आज भी उनकी बनायी हुई एक पुस्तक मौजूद है अर्थात् बाबर बादशाहने जो अपने वृत्तान्त तुर्की भाषामें लिखे थे उनका तरजुमा अकबरके कहनेसे खानखानाने फारसीमें किया है जो बहुत सरल और सरस है ।

खानखानाका फारसी दोषान अर्थात् फारसी भाषाकी कविताका संग्रह तैयार करना मूल ग्रन्थमें तो लिखा है परन्तु वह कभी

देखा नहीं गया। खानखानाके शेर जगह जगह बहुत पाये जाते हैं। बहुधा ऐसा होता था कि खानखाना कोई समस्या देते थे और सब दरवार उसकी पूर्ति करता था जिसमें नजीरी, नुरफी और शक्रेवी जैसे कवियोंके समाने सफलता न हो ; कठिन काम था तो भी हम देखते हैं कि ऐसे दशासमें खेत खानखाना हीके हाथ रहता था।

भूनग्रन्थमें तुर्की कविता भी लिखी है परन्तु हम उसकी नहीं समझ सकते।

ग्रन्थकर्ताने यह भी लिखा है कि खानखानाने जितनी कविता फारसी भाषामें की थी उससे कई गुनी अधिक हिन्दीमें की है। परन्तु उसकी खोज कौन लगावे ? और एक अचम्भेकी बात यह भी है कि खानखानाने युरोपको बोलिया भी सीख ली थी और इनकी आवश्यकता यों हुई थी कि अकबरका युरोपियन वादशाहसे पत्र व्यवहार रचा करता था इसीलिये उसने खानखानाको युरोपीय भाषा सीखनेकी आज्ञा दी थी। ग्रन्थकर्ता लिखता है कि बहुतेरे टापूर् ईसाइयोंके अधिकारमें है और अफरजाके (फ्रामके) वादशाहीका और हिन्दुस्थानके वादशाहीमें पत्रव्यवहार बहुत होता है इसलिये अकबर वादशाहने अपने इस सेनापतिकी (खानखानाकी) ईसाइयोंकी बोली सीखने और उनके अक्षर पढ़नेका हुक्म दिया। इन्होंने इस जातिके मुख्य मुख्य व्यक्तियोंसे जो वादशाही दरवारमें थे और व्यापारियों तथा मुसाफरोंके थोड़ासा मेल जोड़ करके उनके अक्षरों और भाषाओंमें ऐसा अभ्यास कर लिया कि अब उनसे बढ़कर जानने लगे हैं।

खानखानाका सप्तभाषा जानना इतिहास वैज्ञानिकोंने भी स्वीकार किया है। सन्नामिरुलउमरामें लिखा है कि वह पृथ्वीकी बहुतेरी प्रचलित भाषाओंमें बात चीत कर सकते थे।

पुस्तकालय।

खानखानाकी विद्या सम्बन्धी उदारताओंका प्रमाण स्वरूप

उनका पुस्तकालय था जिसमें विद्याके उतने बहुत भंडार रखे गये थे कि वह स्वयं एकाडिमी वा विंगविद्यालयका काम देता था। इसमें बड़े बड़े विद्वान बड़े बड़े सुनेप्रज्ञ और नए बड़े चित्रकार काम करते थे और खानखाना नाकी उदारतासे उदर पूर्ण करते थे।

मोल्लियरीमें बहुराष्ट्रका रहनेवाला शेर अष्टुलमनाम भी था जिसका बाप भापाका प्रसिद्ध कवि था और कवितामें अपना नाम ब्रह्मी धरता था। चित्रकारीमें माधव नाम एक हिन्दू बच्चा बड़े छो प्रद्वुत चित्र बनाता और चित्राम करता था। पुस्तकालयमें बहुधा पुस्तकें उसीके हाथकी बनाई हुई और संवारो हुई थीं।

कवि ।

अबुलफजलने जो बादशाही दरबारके कवि लिखे हैं उनमें बहुधा खानखानाके पाले हुए थे। अबुलफजलसे बढ कर उस समयके फारसी कवियोंके वृत्तान्त खानखानाकी जीवनीके ग्रन्थमें मिलते हैं उरफो नजीरी और शकवी वगैरा कवियोंने अकबर जहांगीर और शाहजहादे सुरादकी प्रशसामें भी कविता की है। परन्तु उससे बढी चढी कविता खानखानाकी प्रशसाकी इन्हीं कवियोंकी बनाई हुई देखो जातो है। जिसका कारण खानखानाको उच्च उदारता और काव्य रहस्यको समझना था। शेरफजी बादशाहका सभासद और कृपा पात्र होनेसे खानखानाके बराबर था और इसी कारण उसने उरफो वगैरा शाहरोकी भांति किसी बादशाही अमीरकी प्रशसा नहीं कही है तो भी उसे कहना पडा कि खानखानाकी उदारताने चित्तको प्रफुल्लित कर दिया क्योंकि उसको शाहरो पर भरोसा था इसलिये वह प्रशसा करनेसे पहिले ही इनाम दे देता था।

खानखानाकी उदारताके चरचे अरब और ईरान तक फैल गये थे शकवी अस्फहानी, जब हज करनेको मक्के जाता हुआ अदनमें पहुँचा तो उमने बच्चोंको गीत गाते हुए सुना कि

खानखाना साया जिमके प्रतापसे कारी कन्याओंने पति पाये  
व्यापारियोंने साल बेचे बादल बरसे जल धन भर गये ।

खरबूजा ।

ग्रन्थ कर्त्ताने लिखा है कि पहिले खरबूजा नही होता था ।  
सबसे पहिले खानखानाने ईरान और खुरासानसे बीज मंग-  
वाकर गुजरातके ग घ बलदावाडेमें दुप.ये २।२ वर्षमें ही ऐसे  
अच्छे खरबूजे निपजने लगे जो उलायतकी बराबरी करते थे ।

हमाम ।

हमाम भी सबसे पहिले गुजरातमें खानखानाने मुहम्मद  
अली बिलावटसे बनवाया और सब लोगोंके नहानेके लिये  
दे दिया उस समयसे हमाम सब जगह बनने लगे है ।

जहाज ।

खानखानाने ३ जहाज इस अभिप्रायसे बनाये थे कि एक  
दिनोंमें गरीब हाजी उनमें बैठकर सेंटमेंत हज कर सकें ।

अवरो और अवसका कागज ।

जिल्द बंधीके कामोंके लिये अवरोका कागज खानखानाके  
कारीगरोंने नया निकासया अवसका कागज तो पहिलेसे था  
परन्तु ७ रट्टोंके अवस लेनका कागज इन्हींके समयमें निकला था ।

वाणविद्या ।

वाणविद्यामें खानखाना इतने दक्ष थे कि जब गुजरातकी  
बादशाह सुजङ्गार पर जय प्राप्त की थी तो एक दिन चौगा-  
नमें गेद खेल रहे थे उस समय एक दाव्या उडा जाता था  
खानखानाने लगातार १२ तीर मारकर उसके आस पास ती-  
रोंका चक्र बांध दिया और १३वे तीरमें उसको मार  
गिराया ।

एक बेर एक सिङ्गे लनाटमें ऐसा तीर मारा जो इधरसे  
उधर तदा निहल गया ।

व्याघ्रास ।

व्याघ्रासमें भी जानखाना विधि का पत्र करना जानते थे । वह एक कपड़ा ४ फादसियोंकी पतला देते थे जो चारो कोनीको तानकर रोंच रुडे रखते थे और त्राप दूरसे दौड़ते दौड़ते उस खसाल पर पाव रखते हुए इस सफाईमें निकल जाते कि कपड़ेको जरा चाल नही पाती ।

सज्जनता

खानखाना इतना ऐज्वर्धता पाकर भी बहुत नम्र मभावसे सज्जन थे । जब उनको खानखानाती पदवी मिली थी तो कई सपदेश एक पत्रपर लिखकर नौकरोंको दे दिये थे वे जब उनको किसी बात वा किसी मनुष्य पर क्रोध करने देलत तो पत्र आगे कर देते जिसके देखते ही खानखाना ठरडे हो जाते थे ।

एक बार पांथमें घाव पड जानेसे बहुत दिनों तक कच्हरी नही कर सके थे एक दिन किसी कामके लिये बाहर निकले तो भीड हो जानेसे एक नौकरका पांव उनके पाव पर पड गया जिससे घाव फट गया दरबारी लोग नौकरको ताडना कारने लगे खानखानाने यह कहकर उनको रोका दिया कि इन्का पपराय है ? होनेवाली बात थी ।

सम्पूर्ण ।





कैलीराम बांठियाकी पुस्तके

न. ५२

---

---

वालेसका जीवनचरित ।

---

---

कंनरीराम बांठियाकी पुस्तके

॥ श्रीः ॥

स्काटलेण्डके इतिहासयुक्त

स्काटलेण्ड-रवि

# वालेसका जीवनचरित ।

---

अनुवादक—

महावीरप्रसाद ।

---

कलकत्ता ।

८७ मुक्तारामवावृल्लीट, भारतमित्र प्रेसमे

छिड़ित क्षणानन्द शर्मा द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित ।

---

संवत् १८६३ ।





सर विलियम वालिस ।





# विज्ञप्ति ।

२०—२२ वर्ष हुए बाबू योगेन्द्रनाथ विद्याभूषण एम० ए० ने बङ्गभाषामें सर विलियम वालेसकी जीवनी लिखी थी। यह पुस्तक उसीका अनुवाद है। बाबू योगेन्द्रनाथ बङ्गभाषाके एक तेजस्वी लेखक थे। उन्होंने बङ्गदर्शनके ढङ्ग पर आर्य्यदर्शन नामका एक मासिकपत्र निकालकर कई वर्ष तक बड़ी योग्यतासे चलाया था। आर्य्यदर्शनके लेख पाण्डित्यपूर्ण होते थे। योगेन्द्र बाबू स्वाधीन प्रकृति और सच्चे देशहितैषी थे। उनके बनाये गये और उक्त मासिकपत्र इस बातके साक्षी हैं। वह कई उत्तम पुस्तके लिख गये हैं जिनमें सर जान ह्यूआर्टमिलकी जीवनी, मेजिनीकी जीवनी (अपूर्ण), गेरीवाल्डीकी जीवनी, वालेसकी जीवनी, आत्मोत्सर्ग और हृदयोच्छ्वास मुख्य हैं। गेरीवाल्डीकी जीवनीका मराठी भाषामें अनुवाद हुआ है। मैं महावली वालेसकी जीवनीका अनुवाद करके हिन्दी पाठकोकी सेवामें अर्पण करता हूँ।

कलकत्ता

फाल्गुन शुक्ल ७ सवत् १८६३ वि०।

महावीरप्रसाद ।

## मुखबन्ध ।

आत्मोत्सर्गका फडकता हुआ दृष्टान्त वीर चूडामणि बालिस है । मेजिनी और गेरीवाल्डीने जिस तरह केवल स्वदेशोद्धारके व्रतमें जीवन आहुति दे दी बालिसने भी वैसही केवल एकही चिन्तामें और एकही काममें जीवन समर्पण कर दिया था । दुर्दमनोय गङ्गरेजीके अत्याचारसे जन्मभूमि स्काटलेण्डका उद्धार करनेमेंही उसका सब शारीरिक और मानसिकबल खर्च हुआ था । उसका शारीरिक और मानसिक बल भी अपरम्पार था । वह भीमके समान बली था । एक वस्तुमें दो गुण बहुधा नहीं पाये जाते । वह आलस्य और भयका नाम नहीं जानता था । उसने एकदिले जो जो काम किये हैं वह आज कलके लोगोको बड़े आश्चर्यमें डालनेवाले हैं । वह गेरीवाल्डीकी भांति निष्काम कर्म योगी था । जन्मभूमिका उद्धार करनेके सिवा उसने अपनी उस अलौकिक वीरता और बुद्धिमानीसे और किसी फलकी इच्छा नहीं की । वह चाहता तो स्काटलेण्डका शासनदण्ड चिरकालके लिये अपने हाथमें रख सकता किन्तु यह उसका इरादा नहीं था । वह स्वजातिका अवैतनिक और स्वेच्छा-प्रवृत्त सेवक बन कर उसके लिये प्राण देनेको बराबर तय्यार था । इसीलिये जब उसने देखा कि उसकी हुक्ूमत स्काटलेण्डके तालुके-दारीको अतृप्त हो गई तब अकारण देशमें भीतरी लड़ाईकी आग न भड़का कर वह जातीय उद्धारका कार्य उनकी सौंप कुछ दिनोंके लिये प्राप्त चला गया । किन्तु उसकी गैरहजिरीमें स्काटलेण्डका सौभाग्य सूर्य फिर अस्ताचल पर पहुँचनेको हुआ । उसने अङ्गरेजीको बार बार पराजित करके स्काटलेण्डसे भगाया था , यहाँ तक कि एक बार उसको दिग्विजयिनी सेना लन्दनके तोरण द्वारतक पहुँची और अङ्गलेण्डकी महारानीको आकर उससे शान्ति की भीख

भागनी पड़ी थी। गर्वित इङ्गलेण्डने इससे बढ कर अपमान और कभी सहा था कि नहीं इसमें सन्देह है। किन्तु साहसी एडवर्ड किसी तरह पीछे पाव देनेवाले नहीं थे। वह जितनी बार हारते थे उतनीही बार लड़नेको तय्यार होते थे। पराजयके गुरुत्वके अनुसार उनके आयोजनका गुरुत्व नियमित होता था। ऐसा अध्यवसाय ऐसी मुस्तैदीही अगरेजीकी सफलताकी जड है।

सर विलियम वालिस जब फ्रांस चला गया तब एडवर्डने स्काटलेण्डको फिर तबाह कर डाला। स्काटलेण्डके तालुकेदार एक एक करके उनकी अधीनता स्वीकार करने लगे। फिर ब्रिटिश सिक्की पताका स्काटिश किलों पर फराने लगी। स्काटिश जातीय दलने वालिसने स्वदेशमें लौट आनेकी प्रार्थना की। वालिसने पहले जातीय आह्वान पर कान नहीं किया। जातीय दूत उदास होकर लौट आया। किन्तु उसका वह मान स्वदेशानुरागकी आगमें शीघ्रही भस्म होगया। वह स्वदेशकी दुर्गतिकी खबर पाकर बहुत दिन निश्चिन्त न रह सका। बहुत जल्द स्काटिश ट्रेण के किनारे आपहुचा। इतनेमें वालिसके आनेका समाचार एडवर्डके कानों तक पहुँचा। एडवर्ड बार बार विफल मनोरथ हुएये इससे फिर उन्होने वालिससे सम्मुख मयाममें खडे होनेका साहस नहीं किया। बीरतासे जो बात न बनी विश्वासघातसे उसकी पूरा करने पर आभादा हुए।

एडवर्डने वालिसके नौकरको सोना देकर खरीद लिया। वालिस जब सोया हुआ था उस समय उसके नमकहराम नौकरने उसकी थकडवा दिया। वालिसके आनेकी खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैली भी न थी कि वह दृष्टित कार्य होगया। व्याध सीधे हुए सिक्की जैसे जगजमें फसाता है वैसीही अगरेज उसको सीधे हुएही घोंडेकी पीठमें बांध कर तावरतीड लन्दनकी तरफ ले भागे। सबेर जातीय दलने जब समाचार पाया तब तक वालिस बहुत दूर चला गया था। पाँच पाँच बान्ध कर वालिस लन्दन टावरके कारागारमें फँका गया।

शङ्करेज जजीके विलक्षण विचारसे वालेस राजद्रोही समझा गया। एडवर्डकी आज्ञासे उसकी देह टुकड़े टुकड़े करते चारोंपोर फेंकी गई। स्वाधीनता देवी खूनकी बड़ी प्यासी है। जो जाति उसके चरणोंमें आत्मबलि दे सकती है जो जाति उसके मन्दिरके सामने देशके अष्ट मनुष्योंको बलि दे सकती है वह उसी जाति पर प्रसन्न होती है। इसीसे आज वालेसने राजातिक उदारके लिये उस दुराराध्या स्वाधीनता देवीके मन्दिरके सामने आत्मबलि दी। उसकी वीरतासे जो काम नहीं हुआ वह उसकी आत्मबलिसे होगया। स्वाधीनता देवी स्काटलेण्डके प्राणके प्राण वालेसका खून पीकर बहुत सन्तुष्ट हुई। वैनक वरनजी रणभूमिमें इसने आसानीसे जय पाकर अनन्तकालके लिये स्काटलेण्डमें स्वाधीनता देवीको प्रतिष्ठित किया। उक्त ब्रूसकी पीढी दरपीढी स्काटलेण्डके सिंहासन पर बैठी थी। अन्तमें एलिजाबेथकी मृत्यु होने पर स्काटलेण्डके राजा छठे जेम्स प्रथम जेम्सके नामसे इंग्लेण्ड और स्काटलेण्डके संयुक्त सिंहासन पर बैठे। अतएव एक तरहसे इंग्लेण्डकोही स्काटिश राजवंशकी अधीनता स्वीकार करना पड़ी। वालेसकी वैसी निष्ठुर हत्याका इससे रूढ़ कर उत्तम प्रायश्चित और क्या हो सकता है ?

इसलिये जिस महापुरुषके रक्तसे अनन्तकालके लिये स्काटलेण्डमें स्वाधीनताकी प्रतिष्ठा हुई उस महापुरुषकी कीर्ति कहना सुनना या पढ़ना हमरे स्वदेशानुरागी व्यक्तिका कर्तव्य है। इसी विचारसे आज हमने उस महापुरुषकी कीर्ति यथाशक्ति वर्णनकी है, अब स्वदेशानुरागी व्यक्तिमात्र उसे सुनें और पढ़ें तो हम अपना परिश्रम सार्थक समझेंगे। जो महात्मा हैं उनकी जीवनी सब देशके लोगोंके लिये शिक्षाप्रद है। जातिगत विद्वेधके कारण जो लोग ऐसी अनमोल शिक्षाकी उपेक्षा करते हैं वह बहुत भूलते हैं।

श्रीयोगेन्द्रनाथ बद्योपाध्याय ।

# अवतरणिका ।



सन् १०६६ ईस्वीमें विजयी विलियम द्वारा इङ्ग्लैण्ड विजित होने पर, इंग्लैण्ड और स्काटलैण्डमें बड़ा भारी गदर मचा । जबर-दस्त सामन्त तालुकेदारोंने विलियमके असह्य प्रतापसे व्याकुल हो फौर्य पार होकर स्काटलैण्डकी उपत्यकामें शरणली । यहाँ तक कि विलियमके सहायात्री नार्मन जागीरदार भी उसकी मनमानी चालसे नाराज होकर सामन्त सामन्तीकी देखा देखी स्काटलैण्डके पहाड़ी प्रदेशोंमें जाबसे । इनके जानेसे स्काटलैण्डमें एक विशेष परिवर्तन होने लगा । इंग्लैण्डकी तरह स्काच अदालतोंमें भी फ्रांसीसी भाषा घुसी । इससे यद्यपि जातीय भाषाकी असक्षीयतमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ तथापि जातीय जीवनकी विशेष हानि हुई थी । क्योंकि जातीय भाषाका अनादर होनेसेही जातीय जीवन सजीर्ण हो जाता है । जिस समय स्काटलैण्डके भाग्यचक्रमें यह सब फेर बदल हो रहा था उस समय स्काच् सिंहासन पर माल-वान् क्लेनमोर, प्रथम अलकजेण्डर और प्रथम डेविड नामक तीन नृपति क्रमसे विराजमान थे ।

किन्तु विदेशी भाषाके घुसनेसे जातीय भाषाका अनादर और उससे जातीय जीवनसे सजीर्णता होने पर भी कुछ जबरदस्त नार्मन सामन्तीकी धारण्य देकर स्काच् राजाघोने उस समय मानो बड़े राजनीतिज्ञका काज किया । क्योंकि उस समय दो फायदे हुए थे एक तो प्रतापी नये राजाका बल घटा, दूसरे स्वराज्यका जोर बढ़ा । विशेष कर नार्मन सरदार, वीर भूमि युरोपके मैदानमें जो युद्ध कौशल और वीरधर्म सीख आये थे स्काटलैण्डमें उसका प्रचार करके उन्होंने वहाँकी भविष्यजीर्तकी नींव डाली ।

सन् ११५३ ईस्वीमें डेविडकी मृत्यु हुई । उस समयसे दूसरे अल-कजेण्डरके शासनकाल तक कुछ काम सौ साल स्काटलैण्डमें बराबर शान्ति रही । इतने दिन स्काटलैण्डके भाग्याकाशमें प्रचण्ड सौभाग्य

सूर्यका उदय रहा। तिनारत सौदागरी और खेतीकी खूब उन्नति होनेसे स्काटलेण्ड बड़ा धनवान् होगया। धनके साथ साथ उसका बल भी इतना बढ़ गया था कि सन् १२४४ ईस्वीमें दूसरा 'अलक-जिण्डर' एक लाख पैदल और तीन हजार सवार लेकर स्काटलेण्ड पर चढ़ आनेवाले तीसरे हेनरीका सामना करनेको इंग्लेण्ड तो सीमा पर जा पहुँचा। हेनरी इस सेना समुद्रमें बूढ़नेका साहस न कर सका और सन्धि करके धीरेसे राजधानीको लौट गया।

तीसरे अलकजिण्डरके समय स्काटलेण्डका सौभाग्यरवि सबसे ऊँचे स्थान पर पहुँच गया। इस राजाने खेतीकी और बहुत ध्यान दिया। इससे उसका खजाना धनधान्यसे परिपूर्ण होगया और उसकी प्रजा बहुत धनी होगई। उसकी एक बड़ी सेनाने सन् १२६३ ईस्वीमें विख्यात लार्ग्सकी लड़ाईमें गर्वित नार्मनोके छत्रे छुड़ाये। इस लड़ाईमें इसने ऐसी बहादुरी दिखाई थी कि शत्रुश्रेको भी उसकी प्रशंसा करनी पड़ी। गुणग्राही तीसरे हेनरीने तीसरे अलकजिण्डरकी वीरता पर प्रसन्न होकर अपनी बड़ी लड़की राजकुमारी मार्गरेट उसे ब्याह दी। कुछ दिन इंग्लेण्ड और स्काटलेण्ड अपनी पुरानी शत्रुता भूल गये। इंग्लेण्ड इस समय स्काटलेण्डका यन्त्र तन्त्र मुहताज था कि १२६४ ईस्वीमें जब रॉबर्ट ग्लास्टर और दूसरे बैरनोने लण्डन टावर घेर लिया तब हेनरी (तीसरे) और युवराज एडवर्ड (प्रथम) को अपनी जान बचानेके लिये अलकजिण्डर (तीसरे) को शरण लेनी पड़ी। अलकजिण्डरने ससुर और सालेकी मददमें तीस हजार सेना भेजी। हेनरीने उसीकी मददसे बागी बैरनोको दबा कर इंग्लेण्डमें शान्ति फैलाई।

हेनरीने दामादको इंग्लेण्डके जागीरदारोंमें शामिल करना चाहा था किन्तु किसी तरह कर न सका। उसने दामादको विवाहके दहेजमें इंग्लेण्डमें कुछ जमीन दी। इस जमीनके लिये अलकजिण्डरको आमदरबारमें कभी कभी ससुरके सामने कोर्निश करना और घुटना टेक कर बैठना पड़ता था। एक बार एक

उत्सवमें हेनरीने दामादको स्काटलेण्डके लिये भी सिर मवाले और घुटना टेकनेका खुल्लमखुल्ला हुक्म दिया। स्काटराज यह बात सुनतेही क्रोधसे काप उठा उसने बड़ी नफरतके साथ हेनरीका प्रस्ताव अस्वीकार किया। अलकजेण्डरके सौभाग्यसे उसके जागीरदार परस्पर मिल कर रहते थे और उसके बड़े अनुरक्त थे। इसलिये इंग्लैण्डका यह अनुचित प्रस्ताव घृणा सहित कुचल डालनेमें वह जरा भी न डरा।

किन्तु विधाताने स्काटलेण्डको यह सुख बहुत दिन तक नहीं दिया। १२८५ ईस्वीमें उसका सुषमसूर्य अस्त होगया। उस वर्ष तीसरे अलकजेण्डरकी और उसके थोड़ेही दिन बाद एक मात्र उत्तराधिकारिणी उसकी पोती नारवेकुमारीकी मृत्यु होजानेसे स्काटलेण्डका सिंहासन उत्तराधिकारी विना शून्य होगया। इस दुर्वटनाके समय आपसकी भयानक फूटसे स्काचोंकी छाती कूटी जान लगी।

स्काटराज प्रथम डेविडके छोटे पुत्र हर्न्रिण्डनके अर्ल डेविडकी तीन लड़कियोंके क्रमसे जान बेलियल्, राबर्ट ब्रूस् और जान हेन्स्ट्रिङ्ग नामक तीन उत्तराधिकारी थे। यह तीनों अब शून्य स्काच सिंहासनके दायीदार होकर रङ्गभूमिमें खड़े हुए।

इस भीतरी फसादके समय ६ प्रधान स्काच स्काटलेण्डके राज प्रतिनिधि बनाये गये। ग्लासकोके प्रधान पुरोहित राबर्ट, जान किउमिन, स्काटलेण्डके प्रधान खजांची जॉन्, फाइफके अर्ल मेकडफ बुकानके अर्ल जान किउमिन और मेन्ट एण्डरुजके प्रधान पुरोहित विलियम प्रिंजरके हाथमें स्काटलेण्डका शासन भार सौंपा गया। इसके बाद दो वर्ष तक स्काटलेण्ड घराऊ भगडोले कमजोर होता रहा। समस्त स्काटलेण्ड इस समय दो भागमें बंट गया तब बेलियन और ब्रूस् उसके हकदार खड़े हुए।

स्काटलेण्डके दुर्भाग्यसे पुरी माइतमें हकदार इस विषयके फैसलेके लिये हेनरीकी पुत्र इंग्लैण्ड नरेश प्रथम एडवर्डकी

शरणमें गये। एडवर्ड इस शर्त पर पश्चायत करनेकी राजी हुए कि इसके बाद स्काटराजकी इंग्लैण्ड नरेशकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ेगी। उन्होंने पुरानी ऐतिहासिक घटनासे अपना यह हक साबित किया।

स्काट राज विलियमने ११७४ ईस्वीमें जब इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया तब वह चारसौ सवारों सहित यार्क सायरके बैरनों द्वारा पकड़े गये। उन्हें और उनकी सेनाको छुड़ानेके लिये स्काच् बैरनोंने हेनरीसे यह सन्धि की कि विलियम कैदसे छूटने पर इंग्लैण्डके जागीरदार बन कर स्काटलेण्डमें राज्य करेंगे। विलियम अपने बैरनोंकी यह शर्त माननेकी लाचार हुए। पीछे ११८८ ईस्वीमें हेनरीके मरने पर सिंह छदय रिचार्ड इंग्लैण्डके सिंहासन पर बैठे। उन्होंने पवित्र तीर्थ स्थान जेरुजेलमकी यात्रा करते समय विलियम सिंहकी रक्तवरा और जारविकके किले (विलियमने सन्धिकी जमानतके तौर पर यह दोनों किले इंग्लैण्ड नरेशको देखे थे) लौटा दिये और उन्हें सब तरहकी अधीनतासे बरी कर दिया। इसके बदलेमें विलियम सिंहने १ लाख रुपये दिये। रिचार्ड और विलियमकी इसी सन्धिसेही इस विषयका प्राखिरी फैसला हो गया था। इसलिये उस पुराने टूटे हुए खत पर यह नया दावा खड़ा करना एडवर्डके लिये न्यायसे विलकुल रहित था इसमें सन्देह नहीं।

किन्तु ऐसा दावा अनुचित और न्याय-रहित जान कर भी सिंहासनके भिखारी वेलियल और ब्रूस एडवर्डके प्रस्ताव पर राजी हुए। अथ स्काटलेण्डका भाग्य फूटा।

वेलियल और ब्रूसने स्काटलेण्डके सिंहासनके लिये स्काटलेण्डकी स्वाधीनता एडवर्डके चरणोंमें डालदी परन्तु उन्होंने स्काटिश पार्लीमेंटकी राय लेकर यह काम नहीं किया। इससे वह दोनों एडवर्डकी जिस शर्तमें बांधेगये स्काच् जाति उसमें नहीं बन्धी। अतएव एडवर्डने जब वेलियलके पक्षमें अपनी राय जाहिर करके स्काट-



लेण्डको अपना करद राज्य बनाना चाहता तब स्काटिश पार्लियामेंट किसी तरह राजी नहीं हुई।

एडवर्डका फैसला सबके मानने योग्य न होने पर भी प्रचलित नियमानुसार ठीक हुआ था। क्योंकि वेलियल अर्ल डेविडकी बड़ी लडकीका परपोता और ब्रूस छोटी लडकीका पोता था। लोगोके ख्यालसे ब्रूस अधिक नजदीकी था इसलिये उसके मौजूद रहते दूरका उत्तराधिकारी वेलियल स्काटिश सिंहासनका अधिकारी नहीं हो सकता था। किन्तु प्रचलित ज्येष्ठाधिकारवाले नियमके अनुसार जेठी लडकीका उत्तराधिकारी मौजूद रहते छोटी लडकीका कोई उत्तराधिकारी हकदार नहीं समझा जा सकता। इससे एडवर्डका फैसला प्रचलित रिवाजके अनुसार था इसमें मन्देह नहीं।

किन्तु दूसरे अज़कजेण्डरके समयमें ब्रूस उत्तराधिकारी स्वीकृत होचुका था और वह स्काटलेण्डके अधिक लोगोके मन मुआफिक भी था इससे एडवर्डने पहले ब्रूसकोही स्काटिश सिंहासन देनेका प्रस्ताव किया। परन्तु ब्रूसने उनके सब नियम स्वीकार नहीं किये इससे वह प्रस्ताव खारिज हुआ। एडवर्डने अब लाचार होकर वेलियलका पक्ष लिया। १२८३ में वेलियल प्रथम एडवर्ड की अधीनतामें स्काट-सिंहासन पर बैठे। इधर मालकम केनमोर के समयसे स्काटिश-राजद्वन्द जिस राजनीति पर चले आते थे, जिस में इस समय स्काटलेण्डका भला हुआ था धीरे धीरे उसका परिणाम बुरा हुआ। उन लोगोंने जिन नार्मन बैरनोको भाय्य देकर बड़ी बड़ी जमींदारियां और राज्यके सब ऊंचे ऊंचे पद देखे थे वह अभीसे स्काट-सिंहासनकी तरफसे लापरवाही दिखाने लगे। उन विदेशी बैरनोंने अब देखा कि स्काटलेण्डसे इंगलेण्डकी भविष्य में मुठभेड अटल है उसमें स्काटलेण्डका सिंहासन इंगलेण्डके नरेशके हाथमें जाय चाहे स्काटराजके हाथमें रहे उनका कुछ नफा नुकसान नहीं है। जबतक उनकी जमीन पर कोई हानि न डालेगा तबतक उन्हें किसीसे उच्च नहीं है। वल्कि जबरदस्त इंगलेण्ड नरेशका पक्ष लेना उनके लिये और अच्छा है। फिर स्काटराज

इंग्लेण्ड के स्वर्णका यही न राजाही तो है। इस लिये जगदस्ता ता साथ देनेमें कामजोरकी तरफसे कुछ खटका नहीं बल्कि उसके विरुद्ध चलनेमें भारी डर है। स्काट लोगोके साथ उनका कुछ जातीय सम्बन्ध नहीं या इसलिये जातीय मर्यादा रखने की भी उल्ले कुछ परवा न थी। बल्कि इंग्लेण्ड नरेश गार इंग्लेण्डवासी नार्मनो से खूनका सम्बन्ध होनेसे सत्य उधर उनके हृदयका आकर्षण था। जब स्मरण होता है कि स्काटलेण्ड की मय पड़ो बड़ी जमीदारिया विदेशी नार्मनोके हाथमें थी, राज्यके मय ऊंचे ऊंचे पटो पर पड़ी थी तो हमारे मनमें यह विस्मय होता है कि क्योंकि स्काटिंग जातीय दल इस दुर्लभ घटनागोको लाभकर जातीय जीवनको विध्वंस करनेवाली इन विघ्न बाधाओको पारकर राष्ट्रमें छिपी हुई चिनगारीकी भांति स्वाधीनतामरम ग्राम्बडा हुआ।

स्काटलेण्डके नार्मनोने जैसा सोचा या वैसाही हुआ। बहुत जल्द एडवर्डसे वेलियलकी रगड गुरु होगई। इस रगडमें उक्त नार्मन बैरन एडवर्डकी और जातीयदल वेलियलकी तरफ खुडा हुआ। हम आज जिस प्रात स्मरणीयचरित महात्माकी जीवनी लिखना चाहते हैं वही इस जातीय दल सगठका, नायक और एक मात्र बल था। अगर कभी किसीने नि स्वार्थ भावसे जातीय उद्धारके व्रतमें जीवन उत्सर्ग किया है, अगर कभी किसीने स्वजाति के हितार्थ जातीय भाग्यदेवताकी दृष्टिके लिये शरीरका रक्त बूँद बूँद करके दिया है, अगर कभी किसीने स्वजाति और स्वदेशकी चिन्ता जन्मभर की है, अगर किसीने कभी सोते समय भी स्वजाति और स्वदेशका स्वप्न देखा है, अगर किसीने कभी स्वजातिके उद्धारके लिये शरीरके टुकडे टुकडे करके दसो दिशाओमें फिक्वाया है तो सर विलियम वालैस ने।

आज हम इस पूज्य नरदेवके आगे और जो स्काटलेण्ड उसकी जन्मभूमि है उसके आगे भी सिर नवाते हैं। कविवर वारनेमने मच कहा है कि ऐसा स्काटिंग हृदय नहीं कि जिसका गर्म खून वालैसकी नाम पर न उबल उठे। हम यह भी कहते हैं कि ऐसा स्वजाति प्रेमी मनुष्य नहीं, वालैसकी कछारोसे जिसका कलेजा न फटने लगे, वालैसके नामपर जिसका हृदय भक्तिरससे न उमड़ उठे।

“At Wallace's name what Scottish blood,  
But boils up in a spring-tide flood?”

॥ श्री. ॥

स्काटलेण्ड के इतिहासयुक्त

## वीरवर वालेसका जीवनचरित ।

---

### पहला अध्याय ।

---

स्काटलेण्ड और इंगलेण्ड की उस समयकी भीतरी अवस्था ।

यूरोपके दूसरे राज्योंकी तरह स्काटलेण्ड और इंगलेण्डमें भी उस समय सामन्त तान्त्रिक प्रथा जारी थी। सामन्त यानी जागीरदार लोग प्रायः सब विषयोंमें स्वतन्त्र थे, सिर्फ युद्धके समय उन्हें धन और सेनासे राजाकी सहायता करनी पड़ती थी उनको एक तरहसे छोटे छोटे राजा भी कह सकते थे। यह सामन्त तान्त्रिक प्रथा पहले भारतवर्षमें भी जारी थी। भारतवर्षमें एक एक समय एक एक प्रतापी राजा सम्राट् होता था किन्तु उसके अधीनस्थ राजा लोग उसको कुछ नजर देकर और बादशाह मान करकेही छुड़ी पाजाते थे। वह अपने राज्यके भीतर सब विषयोंमें स्वाधीन होते थे। विजयी सम्राट् अगर किसी पर चढ़ाई करता या शत्रु उस पर चढ़ाई करता तो जागीरदार रुपये और सेनासे प्रभुकी मदद करते थे, किन्तु प्रभुको विपदमें फंसा देखतेही वह अकाङ्क्षित और हर्षक अपनेकी स्वतन्त्र बनानेकी कोशिश करता। इस लिये जब जब जातीय एकताकी ज्यादा जरूरत पड़ती तबही तब जातीय भीतरी गहर खड़ा होजाता था। नतीजा यह होता कि जातीय पराजय और जातीय पतन होता था। इसी कारण

भारत-गौरव रवि पृथिवीराजका और उनके साथही भारतका भी पतन हुआ। उसी एक कारणसे स्काटलेण्डका पतन हुआ, उसी एक कारणसे हेनरी और उनके वीर पुत्र एडवर्डको कदम कदम पर अटकना और हारना पड़ा था। किसान और मजदूर और उनकी भूमि सामंतोंके अधीन होनेसे वह लोग जब चाहते तभी राजाको मुठ्ठीमें कर सकते थे। किन्तु इंग्लेण्डमें इस तकरारसे मेवा फला। वहां इस राजा और सामंतों के झगडेसेही प्रजातन्त्र शासनप्रणालीकी उत्पत्ति हुई। पर भारत और स्काटलेण्डमें इससे जातीय पतन हुआ।

सन् १०६६ ई० में विजयी विलियमके इंग्लेण्ड जीतनेके बाद करीब अठारह सदी तक साक्सन सामंत और पुरोहित लोग जमीन लेकर बराबर नार्मन राजाओंसे लड़ते रहे। वह राज्यकी पिकट लालसासे दो सदी तक वेल्स आयरलैण्ड और स्काटलेण्ड आदि पड़ोसी राज्योंको इंग्लेण्डमें मिलानेकी कोशिशमें लगे रहे। इससे उन्हें धन और सेनाकी बड़ी जरूरत पड़ी। तब आये हुए जागीरदारोंने धन और सेना देनेसे इनकार किया तो नार्मन राजा इनकी जमीन पर हाथ बढानेकी मुसौद हो गये।

किन्तु किसान और मजदूर जो उस समयकी जातीय सेनाजी अहिंसीय सामग्रीये, सामंतोंके अधिकार में थे इससे इंग्लेण्ड नरेश उनको काबूमें न करसके। अतमें उन्होंने अपनी भूल समझी। देखा कि घरमें झगडे लगे रहनेसे बाहर विजय नहीं पासकते यह सब सोचकर इंग्लेण्डेश्वर जानने १२१५ ईस्वीमें इंग्लेण्डकी प्रजाको महत स्वत्वपत्र यानी मेगनाचार्टा प्रदान किया। यह पत्रही इंग्लेण्डकी सर्वसाधारण प्रजाकी व्यक्तिगत स्वाधीनता की जड़ है। यह मेगनाचार्टा पाकर साक्सन सरदार खुशीसे राजाके अनुगामी हुए। किन्तु तीसरे हेनरीने जानके सिंहासन पर बैठकर पिताका दिया हुआ स्वत्व प्रजासे छीन लेना चाहा। इसका परिणाम हम पहलेही बता चुके हैं कि वह और उसके पुत्र प्रथम एडवर्ड

लन्दन टावरमें बौद किये गये । उस समय हेनरीके दामाद स्काट-  
नरेश तीसरे अज़ाज़ेख़र अग़र समुर और सालेको कुडानेके लिये  
तीस हजार सेना न भेजते तो इंग्लैण्डका इतिहास कौसा बनता  
कौन कह सकता है ? हेनरी कमजोर मिजाजके थे इससे फिर  
उन्होंने प्रजासे झगडनेका साहस नहीं किया । प्रजाकी सहायभूति  
और सहायता बिना उनकी राज्य-तालसा मनकी मनझोमें रह गई ।  
पीछे उनके पुत्र प्रबल प्रतापी एडवर्डने पिताकी गद्दीपर बैठतेही  
सबसे पहले वेल्सको अपने राज्यमें मिलाया और जल्दही आयरलैं-  
डने भी उनकी अधीनता मानली । अब उनके विजयपिपासू नेत्र  
स्काटलेण्ड पर पड़े । उनका खजाना भरा और विजयिनी सेना  
रघोन्नत थी इसलिये स्काटलेण्डकी जीत लेना उन्होंने बहुत सहज  
समझा किन्तु ऐसा नहीं हुआ । फ्रांसदेशकी गिनी की खाड़ीमें  
एडवर्डका एकुइटन नामक एक छोटासा राज्य था । उसके लिये  
फ्रांस-राजके सामने उन्हें जागीरदारकी हैसियतसे सिर नवाना  
पड़ता था । इस समय फिलिप फ्रांसके सिंहासन पर थे । उन्हीं  
दिनों अंगरेजों और नार्मन्दीके तिनारली जहाजोंमें फसाद उठने पर  
अंगरेज सैदागरोने दिनेसारीको सहायतासे नार्मन जहाजोंको  
बड़ा मुक़ामान पहुँचाया । इसपर फिलिपने विगड कर इसकी  
जवाबदेहीके लिये अपने सामन्त एडवर्डको फ्रांसीसी दरबारमें हा-  
जिर होनेका हुक्म दिया । एडवर्डने यह हुक्म नहीं माना । फिलिपने  
एकुइटन जब्त कर लिया । सानी एडवर्डसे यह सच्चा नहीं गया  
उन्होंने फ्रांस पर चढ़ाई करनेके लिये बहुत सेना इकट्ठी की । वह  
चढ़ाई करनाही चाहते थे कि इतनेमें वेल्सने सिर उठाया । एडवर्ड  
उनी सेना सहित वेल्सपर चढ़ दौड़े और विद्रोही वेल्सवासियोंको  
घरघरी तरह डरा कर कड़ा दण्ड दिया । स्काटलेण्ड, वेल्स और  
गिनीमें लड़ाई छिड जानेमें एडवर्डका भरा खजाना खाली होगया ।  
अब उन्होंने प्रजाका खत्व छीन कर उसकी भर्जीके खिलाफ भारी  
कर लगाया । पुरोहित, जागीरदार और सैदागर—सबने मिलकर

एडवर्डका मुकाबला किया। पीछे मन् १२६७ ईस्वीमें वह जब सेना सहित फ्रान्समें लड़नेके लिये जून जगने लगे तब गल हियर फोर्ड और नार्फोल्क नामक दो प्रधान जागीरदार इंग्लैण्डके बाहर जानेसे इनकार करने पेना सहित अपने अपने घर लौट गये। इसी तरह स्काटलेण्डको कूच करनेके समय भी उन्हें अपनी प्रजासे बार बार बचना पडा। यों उनका प्रान्ड दर्प चूर्ण करने इंग्लैण्डकी प्रजाने एक एकाकर अपने गये हुए राज सत्त्व फिर प्राप्त कर लिये। स्वत्व पाकर प्रजा अब गुथीसे उनका साथ देनेको तैयार हुई।

जब एडवर्डने फिलिपसे लड़नेका विचार किया तब उन्होंने सामन्त-स्वामीकी हेसियतसे स्काट नरेश वेलियलकी सेना सहित सहायताके लिये बुलाया। स्काट राज और उनकी प्रजाने तब अपनी दशा समझी। एडवर्डकी बादशाह खीकार करना उन्होंने पहले केवल जवानों इकट्ठा करना समझा था पर अब समझा कि एडवर्डकी दुर्दमनीय विद्वेष वृत्ति पूरी करनेके लिये उन्हें बीच बीचमें जातीय खून और जातीय धन खर्चना पडगा। तब उन्हें भय हुआ। भयसे वह लोग फिर गये। स्काट नरेशने इतने दिन पर अपनी भूल समझी और समझ कर एडवर्डकी अधीनता छोड दी। इसका परिणाम हुआ इंग्लैण्डसे भीषण सगाम। इस जातीय स्वाधीनताके समरमें वालेस आदिका जातीय दल वेलियलका सहायक हुआ। वह इस अदृश्य तेलसे इंग्लैण्डका आक्रमण रोकने लगा कि अतमें एडवर्डकी अपनी प्यारी जागीर एकुस्टनकी गाथा छोड फिलिपसे सन्धि करके समूची सेना सहित स्काटलेण्ड पर चढ़ाई करनी पडी। अगर डनबारके अर्लकासपेड्रिक जैसे स्काटलेण्डप्रवासी विश्वासघातक नार्मन जागीरदार धन और सेनासे एडवर्डकी सहायता न करते, अगर फालकलार्कके युद्धमें जातीय दलमें सेनापतित्वको लेकर परस्पर फूट न फैलती, अगर मानटीथ वीरवर वालेसको एडवर्डके चरणोंमें न वैच देता तो आजके इतिहासमें न जाने क्या होता, तब स्काट-

लेण्डका भी जातीय जीवन लोप न होता । विश्वासघातकर्ता । तेरी महिमा घवार है । तूने जयचन्द्र बन कर भारतका सिंहासन यवनोको सौंपा । विभीषण बनकर लड़ा रामके हाथमें दी । मान-टोय बन कर वालेसका शरीर एडवर्डके चरणोंमें बेचा । किउमिन्न और कामपैट्रिककी शकलमें स्वदेशकी स्वाधीनता विदेशियोंके चरणोंमें डाल दी । पिशाचि ! तेरे लिये असाध्य दुःख नहीं है । तेरे आनेसे मनुष्य भीषण राक्षस बन जाता है । तब वह अपनाही खून आप पीता है अपनाही मांस आप खाता है । पिशाचि ! इस जगतमें सब नाशवान हैं किन्तु क्या तेरा नाश नहीं ?

## दूसरा अध्याय ।

वालेसके लडकपन और जवानीके थड़त कार्य ।

वालेसने स्काटलेण्डके किसी पुराने जागीरदारके वंशमें जन्म लिया था । इतिहाससे इतना पता लगता है कि रिचार्ड वालेस या वालेस, वालेस वंशका आदि पुरुष था । आर्डिङ्ग नदीके किनारे किलमरनक नगरके निकट रिकार्टन नामका गावमें उसका किला था । वइ गाव रिचार्ड टौन या रिचार्ड नगरके नामसे प्रसिद्ध हुआ । रिकार्टन रिचार्ड टौनका अपभ्रंश है । १२५६ ईस्वीमें एडम वालेस नामका उस वंशका एक आदमी एडम और मलकम नामक दो पुत्र छोड़ कर मर गया । एडम पौत्रका जायदादका मालिक बन कर रिकार्टनके गढमें रहा । दूसरा पुत्र मलकम एलरस्ली किलेका मालिक हुआ । मलकमने थायर नगरके शेरिफ सर रोनाल्ड क्राफोर्डकी लडकी जेन क्राफोर्डसे विवाह किया । इसी विवाहका फल एलरस्लीका नाइट सुप्रतिष्ठ सर विलियम वालेस था ।

जीवनके गर्ति मनकमलते तीव्र पुन दुए—सर गणजम तातेम  
सर विलियम वालेस पोर जान वातेम । सभसे छोटै जानकी १२०७  
ईस्वीमें इंग्लैण्ड नरिगने फासी पर चढा दिया ।

हमारे ग्रन्थके नायक सर विलियम वालेसने मभयत १२७०  
ईस्वीमें स्काट राज तीमरे अन्कजगडके मरनेसे कुछ पहले जन्म  
लिया । इम हिसाबसे जब वह विमानघातका मानटीय द्वारा १२०५  
ईस्वीमें एडवर्डके हाथमें सौपा गया उन समय उन्का उमर ३१ वर्ष  
थी । इतिहास-वेतमे जब वह पहले पहल आया तब उसकी  
उमर २७ वर्ष थी । ६ सालके अन्दर उसने स्काटलैण्डमें एक नया  
युग वर्ता दिया ।

ऐसा कहते हैं कि वालेसने लडकपनमें अपने चाचा दुनिपेसके  
पुरोहितके पास रहकर ग्रीक लाटिन प्रभृति प्राचीन साहित्यसागर  
मन्यन करके रत्न चुन चुन कर अपने चित्त भाण्डारमें भरे थे ।  
सन् १२८१ ईस्वीकी ११ वी जूनकी ६ राज प्रतिनिधियोंके स्काट-  
लैण्डकी हुक्मत छोड़ देने पर एडवर्ड स्काटलैण्डके चक्रवर्ती राजा  
हुए और उसी समय उन्होंने सर्वत्र यह आज्ञा जारी की कि हर  
स्काटलैण्डवासीको मेरे सामने कोर्निश करके और घुटना टेक कर  
मेरी अधीनता स्वीकार करना होगी । वालेसके पिता एलरह्वीके  
अधोस्वर सर मलकम वालेससे यह आज्ञा सही न गई । वह एड-  
वर्डके सामने घुटना टेकनेके बदले दूसरी सजा अच्छी समझ कर  
बड़े बेटे सहित डम आर्टन शायरके लेनस्लोके किलेमें चला गया ।  
इधर उसकी सहधर्मिणी मभले बेटे वालेसको लेकर बूढ़े बाप  
क्राफोर्डके यज्ञा चली गई । छोटा लडका जान पहलेही वहाँ  
भेजा जा चुका था । क्राफोर्डने इन लोगोको बड़े दखसे अपने  
मकानमें रखा । जब वालेस माता सहित किल्स पिण्डी नगरमें था  
तब वह दण्डाके विद्यालयमें भेजा गया । उस समयके विद्यालय  
गिरजेके साथ होते थे । उच्चश्रेणीके बालक और पादरीपुत्रही उनमें  
हो पाते थे । इस समय उसकी उमर करीब १६ वर्ष थी । उसके



भविष्य दीक्षा गुरु और जीवनचरित लेखक जान डूयरसे उसका यहीं प्रथम परिचय हुआ ।

इस समय एडवर्डने स्काटलेण्ड पर बड़ी कड़ाई शुरू की । उनकी उन्नत सेना दुर्गरक्षित नगरों पर आक्रमण करके मयानक अत्याचार और मार काट करने लगी । उस नई जवानीमेंही वालेसका हृदय इस जातीय पीडासे बहुत व्यथित हुआ । वह गाल पर हाथ धर कर कभी कभी स्वदेशकी भविष्य चिन्तामें निमग्न हो जाता था । ऐसा कहते हैं कि उसने विद्यालयमें पढ़ते समय यथेच्छाचारी सैनिकोंका सामना करनेके लिये सहपाठियोंका एक छात्र-समाज बनायाथा । पूर्वोक्त जान डूयरकी तरह सरनील केम्बेल भी उसका सहपाठी था । वालेस तभीसे हमेशा तलवार और छुरा बाधता था । क्योंकि एडवर्डके सैनिकोंके साथ किशोरावस्थासेही उसकी छेड़ छान होने लगी थी इस बीचमें कितनेही वालेसकी तलवारके शिकार भी हो चुके थे ।

वालेस एक दिन कहीखे डडीको लौटरहा था कि डडीके गवर्नर सेलवार्डके पुत्रने उसपर आक्रमण किया । कस्वरलेण्ड निवासी सेलवार्ड एडवर्डकी अधीनता स्वीकार करके उनकी छापासे डडी और फोर फारके किलेका मालिक हुआ है । गवर्नर सेलवार्ड लालच और उसके पुत्र छुणा और अनुचित घमण्डके कारण प्रजाकी आखिमें काटेसे लगते थे । उस दिन गवर्नर-धुमार चार साथियों सहित खेलता था इतनेमें वालेस सुन्दर रंगी पोशाक पहने और हथियार बाधे उधरसे जानिकला । गवर्नर के पुत्रसे यह देखा न गया वह वालेसको कहने लगा—“अरे गर्वित स्काट । यह सज धज यह वीरोचित अस्त्र शस्त्र दासके योग्य नहीं हैं । सियारकी शेरकी छाल भोटना कभी शोभा नहीं देता ।” यह कहकर वह ज्योंही वालेसका छुरा छीननेको भपटा त्योंही वालेसने उनकी गर्दन पकड़कर तलवारसे काट डाली । लाश जमीन पर पड़ीरही और वालेस वहासे भागा । वह बचपनमें जिस चाचाके

घर रहता था भागा भागा वही पड़चा । चाचीने उसे जनाजा पोशाक पहना कर चरखा कातनेकी पिठा दिया । उसका पीछा करने वालीने गाकर उस घर तो अच्छी तरह ठूठा पर वालेस का कही पता न पाकर गफसोच और निराशाके साथ लौट गये । तब उसकी चाचीने रातको उसे डी नदी पार करा दिया । वालेस कुशल पूर्वज तिंग्सपिंग्जी नगरमें माताके पास चला गया ।

यहां उसकी माता और भाईवर उस पारदात की बात सुनकर बहुत डरे । वहां रहनेसे पहले जजिगा अन्देया जानकर भाईवन्देने उन लोगोंको वहांसे चले जानेकी सलाह दी । वालेसकी माता पुत सहित बैरागिनीके भेषमें तीर्थ यात्राके बहाने अनेक देशोंमें घूमती हुई दुनिपेसमें आपहुची । यहां वह लोग आदर पूर्वक रखे गये । जबतक उनका भाग्य न पलटे तबतक वही रहनेकी उन्हें सलाह दी गई । अभागिनी जेनने यही लाउउन पचाउका शोचनीय युद्ध समाचार सुना । इस युद्धमें उसका पति और बड़ा पुत्र अगरेजोंके हाथ मारेगये । पिता और बड़े भाईका मरना सुनकर वालेस बड़ाही शोकातुर हुआ । परगुरामने जैसे पिछ-घाती क्षत्रियके रक्तसे पिताका तर्पण किया था हमारे नये वीरने वैसेही पिछघाती अगरेजके लोहूसे पिताका शोकातल बुझानेकी प्रतिज्ञा की । चारों ओर देशमें शत्रुगोंका मत्वाचार सुनकर वह लोग दुनिपेसकी मेदभागदारी छोड़नेको लाचार हुए । आश्चर्य-दातासे वालेसने कहा—“मेरे पिता और भाताको अगरेजोंने मार डाला है आज मैं ईश्वरके सामने शपथ करता हूँ कि अगर मैं जीता रहा तो जरूर इसका बदला लूंगा ।”

दुनिपेस छोड़कर वह लोग अपने निवासस्थान एलरल्लीके किले में आये । वहां वालेससे उसके मामा सर रोनाल्डकी मुलाकात हुई । वह उस समय आयरके गवर्नर पसीकी निगरानीमें वहां रहते थे । बेचारी जेनने अपने लिये भी पसीसे शान्तिकी भीख मागनेके लिये भाईको कहा मगर वालेस इस बात पर राजी न

हुआ । उसने ऐसे समयमें शत्रुसे शान्ति सांगकर बदला लेनेका समय आलस्यमें खोना कायरका काम समझा । वह माताको एल-रक्षीके किलेमें छोड़कर मामाके साथ रिकर्टनमें बूढ़े चाचा सर रिचार्डके गढ़में गया । आर्विङ्ग नदीके किनारे एक ऊँचे स्थान पर रिकर्टनका किला था । वालेसके चाचाके पोते जान वालेसका, पासके क्लेगी दुर्गकी उत्तराधिकारिणीसे व्याह्र होगया था तभीसे वालेस वश रिकर्टन दुर्ग छोड़कर क्लेगीमें रहने लगा । तबसे रिकर्टनका किला बेमरम्मत पड़ा रहा फिर गिर गया । अब उसका निशान भी नहीं है ।

जो हो, वह वालेसकी एक यादगार था । १२८२ ईस्वीके फरवरी महीनेमें वह यहाँ आया और एक महीना भी नहीं बीता था कि एक अनपेक्षित घटनाके कारणसे उसे वहाँसे भागना पड़ा । एक दिन वह आर्विङ्ग नदीमें मछली मारने गया था । जाल ठोने के लिये सिर्फ एक लड़का उसके साथ था । वह बहुतसी मछलियाँ मार चुका था कि इतनेमें गवर्नर पक्षी उधरसे जानिकाले वह दल बल सहित आर्विङ्गके किनारे किनारे ग्लामगोका मेला देखने जाते थे । उनके शरीररक्षक पाँच सवार वालेसके पास आकर तमाशा देखने लगे । जालमें बहुतसी अच्छी अच्छी मछलियाँ फँसी देख कर उन लोगोंने गवर्नरके लिये मागी । वालेसने कुछ मछलियाँ दे देनेके लिये लड़केको कहा । उन्होंने सब मागी । कहा—“इस बार जालमें जितनी मछलियाँ पाई हैं सब गवर्नरको मिलनी चाहिये, फिर तुम चाहें जितनी मछली मारकर ले जाओ ।” इस पर वालेसने विगडनर कहा—“आज यह मछलियाँ एक बूढ़े निम्न-प्रति नाइटके भोजनमें जायगी, इस लिये अगर तुम लोग भलेमानस हो तो जितनी दी है उतनीही ले जाओ ।” गर्वित अद्वैतजीने यह बात न मानी । एक सवारने घोड़ेसे उतरकर वालेससे सब मछलियाँ लेनी ली । वालेस बोल उठा—“तुम्हारा यह बड़ा अन्याय है ।” अद्वैतजी बोला—“क्या ? मेरा अन्याय ? दृष्ट ! तो यह ले ।”

यह कहकर वह तलवार निकाल वालेस पर मार पड़ा। जालिमने हाथमें एक बर्छेके सिवा और कोई हथियार नहीं था। उसने उसी बर्छेसे उस अङ्गरेजको जमीन पर गिरा दिया। गिरनेके साथ उसकी तलवार अलग जागिरी। वालेसने उसी तलवारसे उसको काट डाला। बाकी चारोंने यह देखाकर वालेस पर ग्राह्मण किया। वालेसने उसी तलवारसे दोको जमीन पर मार डाला। बाकी दो ने भागकर, कुछ दूर गये हुए पर्वतोंसे सब हाल कहा। पांच हथियारबन्द सवार एक निरस्त आदमीसे डार गये—यह सुनकर पर्वतों ने उनसे नफरत दिखाई और हत्याकारीका पता लगानेकी आदमी भेजनेसे इनकार किया। उधर वालेसने घर आकर बड़े चाचासे सब हाल कहा। उन्होंने वालेसका सब वहाँ रहना बेमतर न समझकर उसे कहीं चले जानेकी सलाह दी। जाते समय बहुतसा धन दिया और कहा कि जब जो जरूरत पड़े मुझे खबर देना मैं भेज दूँगा। उन्होंने आदमी भी साथ कर देना चाहा परन्तु वालेसने यह मंजूर नहीं किया।

वालेस जवानीके तेज और अपने आदमियोंकी मृत्युके जोशमें पामलसा होकर घोड़े पर सवार हो आयर नदीके किनारे अचिन्नाव किलेकी तरफ रवाना हुआ। उस समय सर डनकन वालेस उस किलेके अध्यक्ष थे। वह वालेसहीके खान्दानके थे। उन्होंने अपने कुटुम्बीका स्वागत किया। कर्नल नदीके किनारे उनका सनड्रम नामका एक और किला था। इस किले और पासके लागलन नगरे वालेसकी कुछ दिन शत्रुओंके हाथसे जवाया।

एक दिन वालेसके जीमें आयर नगर देखनेकी आर्झ, वह लांगलन नगरेमें अपना घोड़ा बाधकर एक बालकको साथ ले पैदल उस नगरके बाजारमें आया। पर्वतों और उनके निष्ठुर सिपाही उस समय आयर किलेकी रखवाली करते थे। उनकी कड़ाईसे वहाँके थर थर कांपने थे। उस समय स्काट लोगोसे अपना शारीरबल अधिक साबित करनेकी गरजसे अङ्गरेज बड़ी बड़ी डींगें

मारा करते थे। उस दिन एक मुष्टण्ड दिहाती अदरेज बाजारमें बैठकर कह रहा था—“जो मुझे एक रुपया देगा वह इस गेंदसे—जो मेरे हाथमें है—मेरी पीठ पर अपनी शक्ति भर मार सकेगा और मैं हर किन्हीं स्टाटमें दूना बोझ उठा सकता हूँ।” वालिसने बड़े कौतूहलमें आकर उससे कहा—“तुम अगर अपनी पीठ पर मेरा एक घूसा सह लो तो मैं तुम्हें तीन रुपये दूंगा।” अदरेज सिपाहीने मजूर किया। वालिसकी वज्रमुष्टि ज्योंही उसकी पीठ पर पड़ी उसकी रीढ़ टूट गई। सब देखकर विस्मित हुए, सबकी आंखें वालिस पर पड़ीं। उन्हीं वक्त उसे अगणित अदरेज सवारोंने घेर लिया। मगर महावली वालिस पांच छःको मार कर भट लागलन दनमें निकल गया। वहा पेडके नीचे उसका घोड़ा बधा था। उस पर सवार होकर पीछा करनेवालोंकी निगाहसे निकलकर सकुशल अचिनक्रवके किलेमें जा पहुँचा।

किन्तु वालिसका दुर्दमनीय मन अधिक दिन एक जगह रहने वाला नहीं था। वह फिर कौतूहलमें आकर आयर नगर देखने निकला। राहमें आयरके शेरिफ उसके चाचाके नौकरसे भेट हुई। वह मालिकके वास्ते बाजारसे मछलिया खरीदकर लिये जाता था। गवर्नर पर्सीके भण्डारीने उससे मछलिया खीन लेनी चाही। नौकर बेचारा बनकर वालिसका मुंह देखने लगा। वालिसने भडारीसे कहा—“साहब। क्या करते हैं इसको जाने दीजिये।” यह वाक्य भडारीको बहुत बुरालगा। उसने अपनी छड़ी वालिसकी पीठपर चला दी। वालिसने गुस्सेमें अपनी कमरसे छुरा निकालकर भडारीको मार डाला। तुरत चारों ओरसे अगरेजसेनाने आकर उसे घेर लिया। इस तुमुल युद्धमें यद्यपि वालिसने मात अगरेजोंको जमीनपर गिराया तथापि इतने आदमी उसपर आगिर वे न्ति अबकी वह दुर्नेथ व्युहसे निकलकर भाग न सका। अन्तमें वह थककर एकटा घास आयरके पुराने कैदखानेमें कैद किया गया। यहा निर्भ पात पितावर वह रहता गया था, इस तरह सुर्दसा

होगया । काराध्यक्षने उसे मग समझ कर कैदखानेकी दीवार परसे पासके खेतमें फेंकवा दिया । वह जैमाही वहां पड़ा था कि इतनेमें उसकी धाय आयर निवापिनी निउटन खबर पाकर उसकी लाश देखने आई । उसने अपने घरमें कबर देनेके बराने वालेसकी देह लेजानेकी आज्ञा काराध्यक्षसे ली । वह लेजाकर उसने और उसकी लडकीने दिन रात सेवा करके वालेसको जिलाया ।

वालेसने अच्छीतरह आराम होनेपर छोड़े, रुपये और हथियार के लिये रिकर्टनमें बूढ़े चाचाके पास जानेका इरादा किया । इधर प्राण बचाने वाली धाय और उसकी लडकीको एलरस्ली दुर्गमें भाके पास भेज दिया । धायके घरमें एक पुरानी तलवार थी जिसे वह लेकर वह रिकर्टनकी तरफ चला । राइमे ग्लासगोके मेलेसे लौटते हुये स्क्वायर लागकासल और उसके दो नौकरोंने उसपर हमला किया । लागकासल उसे जबरदस्ती आयर लेजानेकी चेष्टा करने लगा । वालेसने लाचार होकर आत्मरक्षाके लिये लागकासल और उसके एक नौकरको पुरानी तलवारसेही काटडाला । दूसरा नौकर जान लेकर भाग गया ।

वालेसको रिकर्टनमें बूढ़े चाचा रिचार्ड और उनके दो पुत्रोंने आदरसे रखा । इधर उसका आना सुनकर करसबीसे उसके मामा रोनालड और एलरस्लीसे उसकी मा भी आगई । वालेसकी अद्भुत रिहाई सुनकर और उसके बाद आज उसे देखकर सबके आनन्दकी सीमा न रही । उस समय सबकी आंखोंसे आनन्दके आसू बहने लगे ।

## तीसरा अध्याय ।

स्काटलैंड के वेलियल का परिणाम—बारविक और डनवार का युद्ध  
स्काटलैंड की शोचनीय दशा ।

हम पहले कह आये हैं कि एडवर्ड ने वेलियल को स्काटलैंड का सिंहासन दिखाया । सन् १२८२ ईस्वी की २० वीं नवम्बर को वेलियल शपथ करके इंग्लैंड के राजा के जागीरदार बनकर स्काटिश राज्य के मालिक बने । उसी महीने की ३० वीं तारीख को उन्होंने स्त्रोन नामक शिलापट्ट पर बैठ कर स्काटलैंड का राजमुकुट पहना । २६ दिसम्बर को न्यूकैसल के किले में उन्हें भविष्य में अपनी बात कायम रखने के लिये एडवर्ड के सामने दुबारा शपथ करना पड़ा ।

किन्तु यह राजमुकुट उनके सिर पर कांटासा मानूस होने लगा । बात बात में एडवर्ड उनको मामूली वैरन की तरह इंग्लैंड के दरबार में बुलाने लगें । राजा सिंहासन वेलियल के कटका कारण होगया । अन्त में जब उन्हें एडवर्ड के साथ सेना लेकर यूरोप जाने को आज्ञा दी गई तब उनकी धीरता जाती रही । उक्त कार्य के जी में भी वीरता की आग भड़क उठी । उन्होंने स्काटिश पार्लियामेंट से सलाह करके १२८६ ईस्वी की ५ वीं अप्रैल को आस दरबार में एडवर्ड की अधीनता त्याग दी और फ्रांस नरेश फिलिप से एक बड़ी सन्धि करती । इस काम का नतीजा सोच कर स्काटलैंडवासियों ने एक तरफ इंग्लैंड पर धावा करने का मनसूबा बाधा । जातीय पिपद जान कर जातीय स्वाधीनता की रक्षा के लिये उन्होंने जी जान से प्रयत्न किया । इस युद्ध में कि कहीं एडवर्ड की अपार सेना आकर स्काटलैंड को तहस नहस न करने लगे, उन लोगों ने पहले-पहल इंग्लैंड पर हमला करके उसी को लड़ाई का मैदान बनाना चाहा । जो चाह वह बहुत जल्द कर दिखाया । उन्होंने कस्त्र-

लेण्ड लाव कर न्यूजेसनके मिले पर हमला किया और उसमें आग लगा कर ८ अप्रैलको नारदस्वरलेण्ड प्रदेशमें पहुँच कर लेगाके किनारे और ठेकसम नगरमें लूट पाट आरम्भ कर दी ।

एडवर्डने यह खबर पातेही क्रोधसे गयीर हो वारविक नगरके निकट बड़ी भारी फौज जमा की । स्काटलेण्ड मार्गमार्गी लडाईके बाद फिर रणभूमिमें नहीं उतरा था । इसलिये स्काटिंग सेना यद्यपि वीरता और साहस सामानमें एडवर्डकी सेनासे किर्मी प्रातमें कम न थी तथापि शासन और बहुदर्शितामें गुरोपके रणक्षेत्रमें वीर दर्पी एडवर्डकी सेनासे उसकी बराबरी नहीं हो सकती । तो भी वारविक नगरके घेरेके समय स्काट सेनाने घेरा डालनेवाले एडवर्डके १६ जङ्गी जहाज बरबाद कर दिये । एडवर्डसे और सहा नहीं गया उन्होंने बड़े वेगसे नगरमें घुसनेकी चेष्टा की किन्तु उनकी चेष्टा व्यर्थ हुई । अङ्गरेजी बल जो काम नहीं कर सकती प्रङ्गरेजी हिकमत उसे पूरा करती है । एडवर्डने बलसे वारविक लेनेमें असमर्थ होकर हिकमत लडाई । अबके वह जीत गया । इस नगरपर अधिकार करके उन्होंने नगर निवासियों पर जैसा निष्ठुर आचरण किया था, अपने यम सदृश सिपाहियोंको लोगों पर जिस निर्दयताका व्यवहार करनेकी आज्ञा दी वह पढ़ कर हम रा खून सूख जाता है, उसके पढ़नेसे निर्दय पामरकाभी हृदय पिघलता है । अङ्गरेजीने काली कोठरीकी हत्या लेकर सिराजुद्दौलाको नर पिशाच बनाया है किन्तु वह हत्या सिराजुद्दौलाकी इच्छासे नहीं हुई । वह उसकी अभावधानीसे हुई । किन्तु एडवर्डके हुक्मसे उस दिन वारविकमेंके बालक बूढ़े बनिता तक भी तलवारके हाथसे न बची । एडवर्डके हुक्मसे वारविकमें सत्तर हजार निरस्त्र निरीह मनुष्य कत्ल किये गये । २८ वी अप्रैलको सुप्रसिद्ध डनबरकी लडाईमें हीनो टलका घोर सगाम हुआ । इसमें वारेन और सरके दो अल इङ्गलेण्डकी बड़ी सेनाके नायकथे । उन्होंने अशिक्षित और बेतरतीब टिश सेनाका असामयिक आक्रमण व्यर्थ करके उसे अच्छी तरह



हराया । वालेसके जीवनी लेखक अन्य कवि हेनरीकी रायमें इन दोनों युद्धोंके पराजयका प्रधान कारण जातीय विश्वासघातकता है ।

स्काटिश सिंहासनका प्रधान ग्राहक मार्चका अर्ल एडवर्डसे न जा मिलता और उनवर किलेका गवर्नर सर रिचार्ड सिवर्ड अङ्ग-रेज सेनापति वारेनके हाथमें उनवरका किला न सौंप देता तो न जाने इस युद्धका परिणाम क्या होता । यह विश्वासघातक सिवर्ड स्काट नरेशोंका एक आश्रित नार्मन जागीरदार था । इसलिये स्काटलैण्डके जातीय मान और जातीय स्वाधीनताकी इसे जरा भी परवा न थी । और मार्चका अर्ल यद्यपि एक खान्दानी स्काट जागीरदार था तो भी उसने नीचा देखकर वेलियलके अधीन रहनेसे इङ्गलैण्डके बादशाहकी शरणमें जाना अधिका इज्जतका काम समझा । जो हो, इस जातीय विश्वासघातके कारण उनवरके मैदानमें दस हजार स्काट मारे गये । निर्लज्ज वेलियलने पिछले कार्मार्क लिये क्षमा माग कर प्राण बचाया किन्तु पुत्र महित लन्दन टावरके भगानक कैदखानेमें डाल दिया गया और अगणित स्काटिश जागीरदार जञ्जीरोमें बाध कर इङ्गलैण्ड भेजे गये ।

ऐसा कहा जाताहै कि एडवर्डने ब्रूमके पुत्रको वागी वेलियलकी गद्दी देनेका लोभ देकर ब्रूम और उसके साथियोंको अपनी तरफ कर लिया था । इसी लालचसे उनवरकी लडाईमें ब्रूम और उसकी सेना जातीय दलसे लड़ी थी । लडाईके बाद ब्रूमने एडवर्डको प्रतिज्ञाका रक्षण कराया तो विजयी एडवर्ड कह बैठे “क्या । मुझ और कोई काम नहीं था कि मैं तुम्हारे लिये जातीय धन और जातीय रुपिरसे राज्य जीतने जाता” ब्रूम अपनासा मुंह लेकर बहासे चलदिये तबसे वह अपनी इङ्गलैण्डकी जमीन्दारोंमें चुप चाप रहने लगे । फिर उन्होंने किसी राजनीतिक काममें हाथ नहीं डाला । उनके पुत्र राबर्ट ब्रूम इसी समय मातृके सन्तानसे कारिकके अर्ल कहलाये । इस समय उनकी उमर २३ से ज्यादा न थी । अब उन्होंने पिताके वंशपरसे सन्तुष्ट न होकर उनसे अलग स्वाधीनता पूर्वक काम करना शुरू किया ।

उनवर विजयके बाद वेल्स और ग्रायर्लेण्डसे १५ हजार सेना एडवर्डसे ग्रामिली । एडवर्ड उसे लेकर सवा पाच महीने समस्त स्काटलेण्डकी रौदते फिरे । सिर्फ लोगोंका जानो माल बरबाद करकेही बाज न आये । उन्होंने जातीयजीवनमें फिर प्राण डालने वाले जोशीले पत्रादि जला डाले और जातीय राजभक्तिमें उत्तेजना देनेवाली स्कून नगरकी सुप्रसिद्ध अभिषेक शिला वेस्टमिनिस्टरमें भेज दी ।

लौटते समय वह जान वारेन और सरजे अर्लको स्काटलेण्डके शासनकर्त्ता, क्रेसिहमको खजाची, अरमेसपार्डको प्रधान विचार-पति, वारेनके भानजे पर्सीको गालवे प्रदेशका रक्षक तथा आयरका शेरिफ और क्लिफोर्डको पूर्व स्काटलेण्डका निगहवान बना गये । मानो उन्होंने स्काटलेण्डकी सब तरहसे छान बाध लिया । मानो वह जञ्जीर तोड़ कर स्काटलेण्ड फिर न उठेगा । मानो फिर कभी इसके भाग्याकाशमें सौभाग्य-सूर्य उदय न होगा ।

## चौथा अध्याय ।

वाल्लेसकी साधना ।

लाउडनगिरिका युद्ध ।

जिस समय वारविक और उनवरमें तुमल सग्राम चलता था उस समय साधकवर वाल्लेस गहरी साधनामें निमग्ण था । वह पहचनेही समझ गया था कि एडवर्डकी सुशिक्षित और लडाकी सेनासे स्काटलेण्डकी अशिक्षित और नौसिख सेना सम्मुख समरमें कभी जीत न सकेगी । यह जान कर उसने दृढप्रतिज्ञ, कष्टसहिष्णु वीर जवानोंकी एक सेना बनानेका इरादा किया । इधर उसकी अलौकिक वीरता, अमानुषिक बल, अटल सहिष्णुता और सबसे

बढकर उसके अदम्य स्वजाति प्रेम और स्वदेशानुरागका यश सर्वत्र फैल गया था इससे भुण्डके भुण्ड वीरोने आकर उसे अपना नायक बनाया । सचमुच एडवर्डके अत्याचारी सिपाहियोंके जुलूम से और अपने पिता भ्राताके मारि जानेसे वालेसके हृदयमें स्वजाति प्रेम और स्वदेशानुरागका भाव इतना बढगया था कि जबतक शत्रु दवाये नहीं जाते हैं तबतक वह जिन्दगी उसे भारी मालूम होने लगी । वह अपने क्रोधकी आगसे आप जलने लगा, स्वजातिके चरणोंमें प्राणान्धोकावर करनेसेही, न्योकावर कियाप्राण स्वजातिके उदारमेंलगा देने की इच्छारखनेसेही वालेस अमर होगया था । इसीसे वह अकेले लाख आदमियोंकी ताकत रखता था । उस महाबली स्वदेशानुरागमें मस्त दैवशक्ति सम्पन्न वालेसके भाण्डोंके नीचे धीरे धीरे कुछ स्वजातिप्रेमी आ खडे हुए । उसी दलको लेकर नरदेव वालेसने विपक्षियोंके साथ गेरिला युद्ध आरम्भ किया ।

आयरकी दुर्घटनाके बाद वालेस रिकर्टनमें आकर माके साथ रहता था, वहीं उक्त वीर हृन्द आकर उससे मिले । उसमें सर रिचार्डके तीन पुत्र एडम, रिचार्ड और सायमन और रावर्ट वायड तथा नेलाण्ड मुख्य थे । वालेसने मातासे विदा लेकर इन कई साथियों सहित रिकर्टनसे सुविख्यात रणभूमि मकलिनमूरकी तरफ कूच किया ।

सन् १२८६ ईस्वीमें गर्मीका मौसिम आना चाहता है । प्रकृति मानो चारों ओर हास्य फैला रही है । एक ओर स्टाटलेण्डके बाग़िन्दे दुर्भिक्षकी ज्वालासे तडप रहे हैं, दूसरी ओर खान पानमें व्यस्त एडवर्डकी सेना ऐशमें मस्त है । यह दृश्य जातीय दलको बडाही दुःखदायी हुआ । क्रोधसे वालेसका हृदय फडक उठा । यह अवसर टूटने लगा । बहुत जल्द अवसर भी आगया ।

उनलोगोंके मकलिन मूरमें पहुचनेके कुछही दिन बाद उमाचार मिना कि फेनविक नामका एक अगरेज सैनिक आयरके प्रेरित

पक्षीके लिये कालाडिल नगरसे सेना सहित कई गाड़ी सामान लेजा-  
रहा है। इसी आदमीके हाथसे बालेसका पिता मरा था। इस  
लिये बालेस इस खबरसे बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसी वक्त उसपर  
हमला करनेका विचार किया। वह लाउडनगी प्रौर चला।  
सिर्फ पचाम उसके वीर साथ थे। शामको वह लोग पामके एक  
जंगलमें छिपरहे। रातभर वही रडार सुना कि उर सेना निकट  
आगई है।

इधर उपादेवी पूर्व दिगा नाल करके गगन पटपर आरही है  
उस पवित्र समयमें उस छोटेसे देशभक्त दलने घुटना टेककर भक्ति  
पूर्वक ईश्वरकी उपासना की और उसका पवित्र नाम लेकर प्रतीक्षा  
की कि यातो उस युद्धमें जय प्राप्त करेंगे या प्राणदेदेंगे। भारतमें  
भी स्वजाति प्रेमके ऐसे चमकते हुए दृष्टान्तका अभाव नहीं है।  
चिलियान बालेकी लडाईं शुरू होनेसे पहले वीर चूडामणि सिख  
अपना अपना आद्य तर्पण आप करके मैदानमें आये थे। उन्होंने  
भी उस युद्धमें जीतेगे या मरेगे—इनमेंसे पिछली बात स्थिर कर  
ली थी।

बालेसने फेनविकके हाथसे अपने पिताके मारे जानेकी घटना  
बयान करके साथियोंका जोश चौगुना करदिया। वह वीर दल  
बड़े आग्रहसे अंगरेजी सेनाकी बाट देखने लगा। फेनविक दो सौ  
अंगरेजी सवारोंके साथ आरहा था। वह सवेरेकी सुनहली  
किरणोंमें दूरसे बालेसको पहचानकर प्रसन्न हुआ। सोचा यही दुष्ट  
हमलोगोंके कैदखानेसे बच गया है, अबके मैं इसको कैद करके  
पक्षीके पास लेजाऊंगा। इसी आशासे फड़क कर फेनविकने  
लदीहुई गाड़ियोंको बीस सैनिकोंके जिम्मे रखकर बाकी १८०  
सवारों सहित उस चुद्र देशभक्त दलपर आक्रमण किया।

बालेसका सर्वाङ्ग वख्तरसे ढका है मस्तकपर लाल सिंह अङ्कित  
हेलमेट शोभायमान है, हाथमें एक तिकोना ढाल, दुहली तलवार,  
गदा और बर्छा और कमरमें तेज कुरा है। उसके सहचरोंके पास

भी ऐसेही अस्त्र शस्त्र हैं । वह सब अंगरेजों पर जोरसे टूट पड़े । फेनविकने सोचा था कि तेजीसे धोड़े दौड़ाकर उस वीर दलको दलमल डालेंगे किन्तु वात उलटी हुई देखकर वह बहुत विस्मित हुआ ।

स्कार्टोंका आक्रमण बड़ा भयानक हुआ । वह व्यूड तोड़कर बडेवेगसे सेनामें आ घुसे । तितर बितर अंगरेज सवारोंने भाट उन्हें घेर लिया । परन्तु वालिसके बर्के और तलवारसे अनगिनत सवार जमीन पर गिरने लगे । अन्तमें उसकी नजर सबसे ऊँचे धोड़े पर सवार फेनविक पर पड़ी । वह बीचके सैनिकोंको मारता काटता क्रुद्ध सिंहकी तरह गर्जता फेनविकके सामने आया । उसकी तलवारसे फेनविक धोड़ेसे नीचे गिरा और उसी वक्त बायडने पड़ुँच कर उसके शरीरमें तलवार घुसेड दी । फेनविककी यह दशा देखकर अंगरेजी सेना चारोंओरसे बायड पर टूट पड़ी । वालिसने आकर उसका उद्धार किया । दोनों वीर केसरी घेरनेवालोंको मारते काटते व्यूहसे बाहर होगये । अंगरेज सवार नायककी मृत्युसे उदास होकर भी दूसरे सेना नायक बोमण्डका उत्साह पाकर बड़ी तेजीसे लड़ने लगे । अन्तमें रिकर्टनके युवक वालिसके हाथमें बोमण्ड भी धरती पर आगिरा । अंगरेजी तेज इससे भी घटनेवाला नहीं । अंगरेज सवार धोड़ेसे उतर कर पैदल सिपाहीकी तरह घमासान युद्ध करने लगे । किन्तु वालिस और उसके वीरोंकी आशावारण वीरताके सामने सब हार गये । मैदानमें सौसे अधिक अंगरेजोंकी लाशें ढोडकर जाकी अंगरेज इधर उधर भाग गये । जातीय दलके केवल तीन आदमी काम आये थे ।

फेनविककी साथ जो कुछ माल मत्ता था सब उन स्कार्टोंके हाथ लगा । कई छ्वाडे, कोई सवासी सजे सजाये धोड़े, सोना शराब और खाने पीनेकी बहुतसी चीजें उन्हें मिली । यह सब चीजें उन्होंने ताड़डेसडेल वनमें छिपा रखी । जो शस्त्री अंगरेज सैनिक लड़ाईसे भाग गये थे वही सबसे पहले शायरके गवर्नर पर्सिके पास यह प्रोत्साहनाचार लेगये ।

अङ्गरेजोंसे वालेसका यही सपने पहला सम्मुख समर था। इसीमेंही वालेसने अपनेसे चौगुनी अङ्गरेज सेनासे लड़ कर उसे परास्त किया। लाउडन पहाड़ स्काटलेण्डका पानीपत है। यहाँ पर तीन बार स्काटलेण्डके भाग्यकी परीक्षा हुई। एक बार रोमवालोंसे और दूसरी बार अङ्गरेजोंसे स्काटलैंडका भीषण समर हुआ। तीसरी बार प्रथम चार्ल्सके समय धर्म और कानून मन्त्रालय व्यक्तिगत स्वाधीनताको लेकर राजदलसे प्रजातांत्रिकदलका घोर युद्ध हुआ।

पर्सि इस समाचारसे बहुत व्यथित हुए। रसदकी कमीसे आयर किलेकी सेना बहुत कष्ट पाने लगी। वह अपने कर्मचारियों को दूंसने लगे कि तुम लोगोंने वालेसको मुर्दा समझ कर आयर किलेकी दीवारसे बाहर फेंककर बड़ी बेवकूफी की और कहा कि आइन्डे कार्लाइलसे खुशकीके रास्ते रसद न भेजकर तरीके रास्ते भेजा करो।

इधर वालेस और उसके सहचर २१ दिन क्लार्ड्सडेल्के जंगल में छिपकर जातीय शत्रुओंको तग करनेके लिये नई नई तरकीब सोचते रहे। उन लोगोंके डरसे इस रास्तेसे अङ्गरेजोंने जाना आना छोड़ दिया। धीरेधीरे लाउडन पहाड़की लडाईकी खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैल गई और वालेसके नामसे एका तरफ अङ्गरेजी खून खूखने लगा दूसरी तरफ सताये हुये स्काटलेण्डवासियोंका हृदय उबालसे भरने लगे।

पर्सिने फौरन ग्लासगो नगरमें अङ्गरेज जागीरदारों और दूसरे कर्मचारियोंकी एक विराट सभा बुलाई। करीब दस हजार अङ्गरेज जमा हुए। सभाके विचारका प्रधान विषय था वालेस। वायवेल निवासी सर आमेर डि वालेस नामक एक स्वजाति विश्वासघाती स्काटने सलाह दी कि एडवर्ड की आज्ञा आने तक वालेससे एक सामयिक सन्धि की जाय। पर्सिने कहा कि वालेस सन्धि नहीं करेगा। वालेसने कहा कि वालेसके चाचा रिकर्टनके शेरिफ सर

रेनाल्डके जरिये यह काम होसकेगा और सन्धिको, जमानतमें उसकी जागीर जव्त रखनेसेही मतलब होजायगा। सर रेनाल्ड उसीवक्त बुलाये गये। वालेसको रोकना असम्भव बता कर उन्होंने पहले तो झुकीकार किया। किन्तु पर्सीके बारबार कहने पर लाचार हो स्वीकार किया। पर्सीने एडवर्डके प्रतिनिधि होकर यह सन्धिको कि जब तक यह सन्धि न टूटेगी तबतक कोई वालेसका बाल न कू सकेगा। सर रेनाल्ड यह सन्धिपत्र लेकर लार्डडेसडेलके जङ्गलमें गये। वालेस खानेके लिये बैठता था कि इतनेमें सर रेनाल्ड वहां जा पहुंचे। दोनों गले लगकर मिले। फिर दोनोंने खुशी खुशी खाना पीना किया। इसके बाद रेनाल्डने वालेससे सन्धिका प्रस्ताव करके उसे मान लेनेका अनुरोध किया और कहा कि इसमें तुम आगेके लिये अच्छी तरह तय्यार होसकोगे। वालेसने सन्धि का प्रस्ताव सुनकर इनकार किया, कहा—“धूर्त विश्वासघातकी चाचा पर आफत आनेके ख्यालसे अङ्गरेजोंसे चन्द रोजके लिये सन्धि की। स्थिर हुआ कि यह सन्धि सिर्फ १० महीने तक रहेगी। १२८६ ई० के अगस्तमें सन्धि कीगई। इसके भरोसे उस देशभक्त दलका इरेक आदमी अपने मकान चला गया। वालेस भी चाचाके साथ करस्वी शहरको चला गया।

किन्तु एक अङ्गरेजका पैर भी स्काटलेण्डकी धरती पर देखकर वालेसको बाल नहीं पडती थी। अङ्गरेज आयरमें क्या कर रहे हैं यह देखनेके लिये एक दिन वह मौजमें आकर उधर चल पडा। अपनेको प्रगट न करनेके डरादेसे सिरसे पैर तक बख्तर पहनकर आया था। उसने शहरमें जाकर देखा कि एक अङ्गरेज बकलर हाथमें लिये पटेवाजी खेल रहा है। उसने ताना मारकर वालेसको धाजम्माइशके लिये बुलाया और कहा—“अजी बख्तरवाले! तुम्हारी सब विद्या पहलेही मालूम होगई।” यह अङ्गरेज वालेसको असह्य हुआ। उसने अपनी तेज तलवार निकाल





## पाँचवां अध्याय ।

ग्लासगोमें सभा ।

पर्सोंके नौकरोकी हत्या—अर्ल मलकमसे वालेसकी मुलाकात—  
गार्गुनक और किल्केवेडन किले पर अधिकार—शार्टउडशा  
का युद्ध—सेन्टजानस्टनका शत्रुके हाथमें पडना ।

सन् १२८६ ईस्वीमें सितम्बरका महीना है। स्काटलेण्डके शासनके लिये कुछ कानून बनानेको ग्लासगो नगरमें अङ्गरेजीकी एक बड़ी भारी सभा जुड़ी। डरहमके पादरीने उसके सभापतिका आसन ग्रहण किया। सब प्रदेशोंके शेरिफ इस सभामें बुलाये गये थे। इस लिये आयरके खान्दानी शेरिफ सर रेनाल्डके पास भी बुलावा गया। वह वालेस और दो सहचरों सहित ग्लासगो जारहे हैं। एक लडका रेनाल्डका सुन्दर घोड़ा लेकर आगे रवाना हो चुका है, वालेसने दो साथियों सहित उस लडकेको आ लिया है, बूढ़े रेनाल्ड पीछे पीछे आते हैं। रास्तेमें पर्सोंके कुछ नौकरोंसे भेंट होगई। कीमती चीजोंसे लदे एक छकड़ेकी रखवालीमें पर्सोंके पाच प्यादे और तीन सवार ग्लासगोकी तरफ जाते थे। गाड़ीका घोड़ा बहुत थक गया था इससे उन्होंने रेनाल्डका घोड़ा उसमें जोत लेना चाहा। वालेसने मना किया। कहा सन्धिकी हालतमें ऐसी राहजनी चमाके योग्य नहीं है। मगर उन्होंने न माना घोड़ेको गाड़ीमें जोत दिया। वालेस गुस्सेसे खाल होकर ऐसे जुटेरेपनका बदला देनेके लिये रेनाल्डकी राय लेनेको पीछे लौटा। रेनाल्ड स्पूरसाड्ड तक आगये थे। उन्होंने वालेसको चुप रह जानेके लिये कहा। वालेसने इससे बहुत नाराज होकर उनकी अधानता छोड़ दी और बदला लेनेका इरादा करके घोड़ेपर चढ़ा बड़ा आपहुँचा। सर रेनाल्ड वालेसका बेतरद्द गुस्सा देखकर बहुत

सोचमें पड़े और इस डरसे कि पीछे पर्सी इस मामलेमें उन्हें भी न फंसावे स्थूरेसाइडमें एक कदम आगे न बढ़े । उन्होंने वहीं सारी रात वालेसका परिणाम सोचने सोचते बिताई ।

इधर वालेस अपने दोनों माधियोंको लेकर जहाँसे लौटा था वहाँ आया । इस बीचमें पर्सीके पादमा कैथार्टसे जरा आगे बढ़ गये थे । वालेसने खोजखाज कर उन्हें जा पाता । बिना कुछ कहे उन पर टूट पड़ा और कई नौकरोंको मार कर सब चीजों सहित दोनों घोड़े लेकर रातों रात पेड़ोंका पुन आधकर ह्वाइड नदी पार होगया । ग्लासगोके इतने पास रहना किसी तरह उचित न समझा वह साथियों सहित लेनाम्नकी ओर चला । अर्ल मिलक्रम उस समय उस किलेके अध्यक्ष थे उन्होंने अभी तक एडवर्डकी अजीनता स्वीकार नहीं कीये । इसलिये वालेसके साथियों सहित वहाँ जाने पर बड़ी खातिर होनेकी सम्भावना थी । किन्तु वह एक बारगी उससे मुलाकात न करके दो चार दिन वहाँ एक होटलमें ठहरा । इधर पर्सीने यह समाचार सुनकर समझा कि वालेसकाही यह काम है । यह ख्याल करके उन्होंने उसी वक्त सर रेनाल्डके पास दूत भेजा । दूतने आकर देखा कि सर रेनाल्ड मियार्नसमें ठहरे हैं । किन्तु पर्सीके नौकरोंके मारे जानेकी वारदात ग्लासगोसे कुछही दूर पर हुई थी । रेनाल्ड विचारालयमें हाजिर किये गये । परन्तु साबित हुआ कि वह इसमें बिल्कुल निर्दोष है और भतीजीकी उस काररवाईकी उन्हें खबर तक न थी ।

तीन चार दिन तक ग्लासगोमें सभाका अधिवेशन होता रहा । उस समय वालेस लेनक्समें ठहरा था । उसे खबर मिली कि सभा ने उसकी गिरफ्तारीके लिये कानून जारी किया है । राबर्ट बायड नेलान्ड वगैरह सभाकी बैठकके समय ग्लासगोमें थे । वह अपने सरदारकी इस विपदसे बहुत फिक्रमन्द हुए । वालेसकी खोजमें वहाँसे चुपचाप निकल आये । वालेसके दूसरे साथियोंमें

कौन कहा था इसका ठिकाना न था । ऐसे वक्त वालेसकी घबराहट बहुत बढ़ गई ।

वह होटल छोड़कर अर्ल मलकमके पास पहुँचा । मलकमने बड़ेही आदरसे उसे लिया । सैनिक उन दिनों रणवांछुरे वीरोंसे भरापुरा था वह आज भी एडवर्डके प्रतापकी उपेक्षा करताथा । अर्ल ने कहा—“अगर आप सैनिकमें रहना मंजूर करें तो मेरे सब वीर सहचर आपके हुक्म पर चलेंगे ।” किन्तु वालेसने नामजूर किया । जो महात्मा समूचे स्काटलैण्डको शत्रुके हाथसे उबारनेके लिये प्राण की बाजी लगा चुका है वह भला ऐसे छोटे प्रस्तावकी क्योंकर मंजूर करता ? वालेसने अपना दिली इरादा प्रगट न करके मलकमसे उत्तरकी ओर जानेकी इच्छा प्रगट की ।

उत्तर जानसे पहले उसने गेरिला युद्धके लिये एक छोटी सेना बनानेका विचार किया । रोमिउलसने रोमकी नींव डालते समय और शिवाजीने महाराष्ट्र-साम्राज्यकी प्रतिष्ठा करते समय अपना दल बनानेका जो उपाय किया था वालेसने भी ठीक वही उपाय किया । स्काटलैण्डकी स्वाधीनताके लिये जो प्राण देनेको सुस्तैद थे उन सबको उनके दोषोंका कुछ ख्याल न करके वह अपने दलमें मिलाने लगा । यद्वातक कि बहुतसे आयरलैण्डवासियोंको भी शामिल करनेसे न डिचका । जिनलोगोंने वालेसको अपना मन्त्रगुरु बनाया उन सबको उसके सामने शपथ करना पडा । यह छोटीसी सेना लेकर वालेस उत्तरकी ओर चलनेको तय्यार हुआ । अर्ल मलकमने बड़े सम्मान सहित उसको विदा किया । उसने उसको बहुतसा धन देना चाहा किन्तु वालेसने नहीं लिया । वह धनका लोभो न था । पत्नीका लूटा हुआ धन निवट नहीं गया था इसीसे उसने मलकमसे धन नहीं लिया बल्कि चलते वक्त गरीब दुखियोंको अपनी तरफसे कुछ कुछ दान कर गया ।

एडिंज सायरसे कुछ दूर अङ्गरेजोंने गार्गुनक नामका एक नया क़िला बनाया था । १२८६ ई० के दिसम्बर महीनेमें वालेसके साथ

६० जवान उस किलेकी तरफ आये । उस समय जमान भरवाल नामके एक फौजी आदमीने ऊपर इस किलेता भार था । किलेकी हालत देखनेके लिये दो जासूस रातको वहा भेजे गये । वह देख आये कि किलेकी खाई पर पुल पडा है , यद्यपि दरवाजा बन्द है तथापि प्रहरी बेखबर सो रहे हैं । वालिस उसी वक्त अपने दल सहित पुल पार होकर दरवाजे पर आपहुचा । दरवाजा मजबूत फाटकीसे बन्द था । फाटक तोडकर दरवाजा खोलनेकी बहुत कोशिश की गई परन्तु फन कुछ न हुआ । अन्तमें स्वयं वालिस उसके पास आया । उसने एकही पारके जोरमें दीवारके कुछ हिस्से सहित फाटक उखाडलिया । यह देखकर सब विस्मित हुए । वास्तव में शारीरिक बलमें हमारे देशके भीमोंके साथ सिर्फ वालिसकी ही तुलना होसकती थी । आवाजसे किलेके रखवालोंकी नीन्द टूटी । द्वाररचकने भाट उठकर वालिसके मुंह पर सोटा मारा । वालिसने उसके हाथके सोटा छीनकर उसीसे उसे यमलोक भेज दिया । फिर उसी सोटेसे कमानका भी काम तमाम किया । उसके वीर साथी उसकी मददको पहुंच गये और किलेके सब लोग मारे गये । वालिसके किसी आदमीने वालका या स्त्रीका शरीर नहीं छूआ । पुल उखाडकर वालिस चार दिन तक उसी किलेमें मौज करता रहा । इस किले पर आक्रमण और अधिकार ऐसी बेखबरीमें हुआ था कि कई दिन तक किलेके बाहर किसीको कुछ मालूम नही हुआ । वह लोग किलेदारकी स्त्री और लडकोंको बिदा करके वहाकी कीमती चीजे लूटकर किलेके सब घरोंमें आग लगा, रातको फोर्थ पार हो निकटके जङ्गलमें चले गये ।

यह मेथवेनका जङ्गल कहलाता था । यह सेन्ट और जानस्टन पार्क शहरसे थोड़ी दूरपर था । वालिस बडा शिकारी था । उसने यहा आकर एक तीरसे एक बडिया हरन मारा और उसका मांस अपने साथियोंको खूब खिलाया । रात वहा बिताकर वह सवेरे अकेले भेष बदलकर सेन्टजानस्टन नगरकी तरफ चला । नगरके निकट

पहुँचकर उसने एक आदमीसे कोतवालकी पास खबर भेजी । कोतवालकी आशा लेकर वह नगरके दरवाजे पर आया । कोतवाल ने स्वागत करके उसका नाम धाम पूछा । उसने नाम बदल कर कहा—“साहब । मेरा नाम विल मालकमसन और मेरे पिताका नाम मालकम है । मैं एद्रिक बनसे आता हूँ । रहने लायक जगह ढूँढनेके लिये उत्तर प्रदेशमें इधर आगया हूँ ।” कोतवालने कहा—“महाशय । मैं किसी और ख्यालसे आपसे नहीं पूछता हालमें पश्चिम प्रदेशसे वालेस नामके एक पापीने आकर इंग्लैण्डके महाराजके सब आदमी मार डाले । ऐसी बुरी खबर आई है इसीसे पूछना पड़ता है ।” वालेसने इस ढङ्गसे उत्तर दिया कि कोतवालको कुछ शक न रहा । उसने उसको खुशीमें शहरमें जान दिया ।

सेण्टजानष्टन कैसे कछे में आसकता है इसका ठीक करनेके लिये ही वह आया था । किन्तु उसने देखा कि किलेका द्वार बड़ाही मजबूत और दीवार बड़ी मोटी है । यह देखकर उसने फिलडालन उसपर अधिकार करनेका ख्याल छोड़ दिया । यहाँ सुना कि पर्य म यरमें अगरेजीका किल्ले वन नामका एक किला है । सर जेम्स बटलर नामका एक निर्दयी नाइट उन दिनों उसका अपसर था । वालेसने सुना कि उसी दिन सेण्टजानष्टनसे एक टुकड़ी अङ्गरेजसेना बहा जायगी । यह सुनतेही उसने उस पर रास्ते में हमला करने का विचार किया और मकान मालिकसे विदा होकर मैगबनकी तरफ चला गया । वह अतैवक्त किसीसे कुछ कहकर नहीं आया था इनमें उसके साथियोंकी बड़ी फिक्र हुई थी । दूरसे वालेसका विगुन भुनकर उनकी जानमें जान आई । वालेस विगुन बजाते बजाते वहाँही जगलमें घुसा वहाँ चारों ओरसे उनके साथी था पहुँचे ।



किलेकी सब कीमती चीजें लूटकर रातकी पासके सार्टउडसा नाम-  
क वनमें छिपा आया । लौटकर कैदियोंको रिहाई देकर किलेमें  
आग लगा दी और फिर उसी वनमें चला गया । जब किलेकी आग  
भभक उठी तब अडीस पडीसके लोगोंको असली भेद मालूम हुआ ।  
इधर कप्तान बटलरकी विधवा स्त्रीने रिहाई पाकर सेन्ट जानस्टन  
किलेके अफसर सर जिरार्ड हिरेनके पास जाकर सब हाल कहा ।  
हिरेन समझ गये कि दगाबाज वालेसकाही यह काम है, वह तुरन्त  
एक हजार सवार लेकर उसे दूंदने निकले ।

इधर वालेसने हमलेके खटकेसे जङ्गलमें एक सुन्दर लकडियोंका  
किला बनाया, कः गोलाकार लकडियोंकी दीवारोंसे किलेको घेरदिया  
हर दीवारमें दो गुप्त दरवाजे इस गरजसे रखे कि अगर एक दीवार  
शत्रुके हाथमें चली जायगी तो यह लोग गुप्तद्वारसे क्रमसे पीछे बढ़ते  
जायगे, सब दीवारोंपर शत्रुओंका अधिकार होजानेपर अन्तिमद्वार  
से सघन वनमें निकल जायंगे ।

किलेवन युद्धमें सरजैम्स बटलरके मारे जानसे उनके पुत्र सर  
जान बटलर पिताका बदला लेनेके लिये धावा करनेवाली सेनाके  
नायक हुए हैं । वह दो सौ सवार साथ लेकर वनमें घुसे । बाकी  
सेनासे सर जिरार्डने वन घेर रखा । बटलरके आनेतक वालेसका  
किला तय्यार नहीं हुआ था । वालेस बहुतसे साधियोंको किला  
बनाने पर तैनात करके थोड़ेसे आदमियों सहित बाहर  
आया । अङ्गरेजोंके साथ १४० तीरन्दाज और ८० बर्द्धेबरदार थे  
वालेसके साथ सिर्फ २० तीरन्दाज थे । उसके हाथमें एक बड़ा  
भारी धनुष था जिसे उसके सिवा दूसरा कोई नहीं चढा सकता था ।  
वह पेडोंकी डालियोंसे बने नकली किलेसे इस धनुष पर बाण चढा  
कर अङ्गरेजोंको मारने लगा । किन्तु अपने तीरन्दाजोंको अङ्ग-  
रेजी तीरन्दाजोंसे घायल होते देखकर उसनेउन्हें हुक्मदिया कि पेडों  
की डालियोंमें छिपकर बाण चलायों । बाणधैसही धनुष खेचनेलगा ।  
अन्तमें उसके गलेमें भी एक बाण आलगा किन्तु भाग्यसे उसने गलेमें

लोहेका वालर पड़न गया था उसने घात गहरा नहीं लगा । उसकी तेज निगाह उसी वक्त तीर चलानेवाले पर पड़ी । उसने भट किले से बाहर निकलकर उस भागते हुए पप्रगभीका गया तलवारमे काट डाला । वह स्वयं तो प्रसाधारण वीरता दिगाने लगा, उसके प्रमोघ वाणीसे पन्द्रह प्रहरेज मरे किन्तु उसके तीरन्दाज प्रहरेजी वाणीसे विकल हो गये । ऐसीही दृशासे चारोपोरसे प्रहरेजी सेनाने आकर उन लोगोको घेर लिया । 'या तो लडाईं जीतेगी या मरेगे' इस जोशीले वाक्यसे हतोत्साह स्काट सेनामें नया उत्साह आ गया । दोपहर होचली है । प्रहरेज गहरेजी सेनाका सामना करनेके लिये उसके पास सिर्फ १५ वार खड़े है इतनेमें सत बटलर के भानजे विलियम लोरेनने एक बरफ तीन सौ सेना सहित उनके एक किनारेसे आकर स्काटी पर हमला किया । बटलरका बैठा सर जान लोरेनसे आमिला । इधर सर जिरार्ड हिरनने इस तरह बन घेर लिया कि वालेस बाहर भी नहीं भाग सकता । वह लोग बड़ी चालाकीसे उस प्रहरेजी सेनासे लड़ने लगे । पर इस तरह रहना अब बेखतर न समझकर वालेस एक और गढमें चला गया । एक करके उसके अधिकांश साथो मारे गये । अन्तमें वह युद्धस्थलमें जीतेजी पकड़े जानेकी अपेक्षा युद्ध करते करते मर जाना अच्छा समझकर बचे खुचे साथियों सहित रणभूमिमें उतर आया । भयङ्कर शेरकी तरह एक क्षणमें बटलरके सामने आकर बड़े जोर से उस पर तलवार चलाई । उसका जोर एक डालीसे रुक जानेके कारण बार पूरा नहीं लगा पर बटलर घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा । फौरन बहुतसे प्रहरेज आकर अपने सेनापतिको वहासे उठा ले गये । यह देख लोरेनने बहुत दुःखित और क्रोधित होकर बड़े वेगसे आकर वालेस और उसके बहादुरोंको घेर लिया । वालेसको तीव्र दृष्टि लोरेन पर पड़ी । वह उछलकर उसके सामने आया । मदद पहुंचनेसे पहलेही वालेसकी तलवारने लोरेन का सिर धड़से अलग कर दिया । वालेसके १५ आदमियोंमेंसे



७ वीर मारे गये किन्तु अङ्गरेजोंकी तरफके कोई १२० आदमियोंने प्राणत्याग किये । अब वालेस उन आठ साधियों सहित जंगलसे बाहर निकलकर पासके किलेमें घुसकर अङ्गरेजोंका मुकाबला करने लगा । उधर लोरेनकी मृत्युसे अङ्गरेजी सेनामें खलबली पड गई । हिरेनने एक जङ्गी सभा की । उस सभामें उस दिन लडाई बन्द रखनेकी सलाह हुई । उन लोगोंने वनमें जगह जगह खोद कर गडे धनका पता लगानेकी चेष्टा की पर कुछ फल न हुआ । अन्तमें वह लोग दुःखित चित्तसे सेन्ट जानस्टन नगरकी लौट आये । युद्धके दूसरे दिन रातको स्काट लोग किलेसे निकलकर सार्टउडसा वनसे गडा धन खोदकर मेथवेन वनमें लेगये । वहा दो दिन रह कर एलको पार्ककी तरफ चल दिये । वहा कुछ दिन रहनेका विचार किया ।

ऐसी अफवाह थी कि सेन्टजानस्टनमें एक बड़ी सुन्दर स्त्री वालेस की प्रेमिका थी । उसको देखनेके लिये वालेस पादरीकी पीशाक पहनकर सेन्ट जानस्टनको आया । खीने बहुत दिनके वियोगके बाद बडे शादरसे नायकको ग्रहण किया । रात होने पर फिर तीसरे दिन आनेका वादा करके वालेस एलकोपार्ककी विदा होगया ।

वालेस सेप बदलनेसे विशेष चतुर और छोडा छिपानेमें बहुत सावधान था भी उतके एक शत्रुने उसे पहचान लिया और हिरेन और बटलरको धमकी खबर दी । उन्होने उस चीकी अपने यहा बुलवाया और कहा—“अगर सच बात न बताओगी तो तुम्हे जानकी जती नेता पर चटना होगी और अगर साफ साफ कह दो तो तुम्हें धन और खिताब दिया जायगा और एक अच्छे नाइट से तुम्हारा ब्याह करा दिया जायगा ।” भय और लालचसे वह स्त्री वालेससे पिशासघात करनेकी राजी हुई । उसने ठीक ठीक बता दिया कि वालेस फिर किस समय आवेगा । उस समय उसके घर के बाहर किसी गुप्त स्थानमें इपिपारबन्द आदमी आकर खिचे रहे । वालेसको देखनेके लिये उन लोगोंका मन प्रसन्न होगया ।

वालेसको इस साजिशकी कुछ खबर न थी वह वादेपर प्रेमिका के पास आपहुवा । विग्रासवातिनीने उनसे बड़ा प्यार दिखाया । वालेस कुछही देर ठहरकर चलने लगा । पिशाचीने रातभर रहने को कहा । वालेसने कहा—“साथियोंकी एकजोर देखे बिना नोट न आवेगी ।” पापिनीने देखा कि काम न करने पर मैं मारी जाऊगी इस लिये रो गाकर उसे रात भर ठहरनेके लिये जिद की । जब वालेस किसी तरह राजी न हुआ तो वह जोरसे रो उठी । अपनी मृत्यु स्थिर जानकर पछताने लगी कि “मैं मृत्युसे बचनेके लिये प्राणसे भी प्यारको मौतके हवाले करना चाहती थी अब कहा जान बचती है ? इस जन्ममें जो होना था वह तो हुआ अब पर-लोकमें मेरी क्या गति होगी ?” इस पश्चात्तापसे उसका हृदय जलने लगा । वह रुक न सकी, सब हाल कहकर उसने वालेससे चमा मागी । वालेसने उसका पश्चात्ताप हृदयसे समझकर उसे चमा किया और उसीकी पोशाक पहनकर स्त्रीके भेषमें दक्षिणी द्वारसे भूटपट बाहर आया । “मैं वालेसको भीतर बन्द कर आई हूँ तुम लोग जल्द मेरे घरमें जाकर उसे गिरफ्तार करो ।” यह कहकर वालेस हथियारबन्द जवानोंका शक सिटाकर और उनको दूसरे काममें लगाकर एलकोपार्ककी तरफ नौ दो ग्यारह हुआ । उसको दौड़ते देखकर किसी किसीकी सन्देह हुआ । उन्हेनि उसका पीछा किया । वालेसने शेरकी तरह भूटपटकर दो को मार डाला बाकी भाग गये । वह निर्विघ्न अपने स्थान पर आगया ।

## छठा अध्याय ।

वालेसका पीछा—उसके हाथसे फडनका सिर कटना ।

कार्लके हाथसे छिरेनका मरना—गास्ककिला—फडनकी प्रेममूर्ति—

वालेसकी तलवारसे बटलरकी मृत्यु—वालेसका टरउडमें विधवा

स्त्रीके घर टिकना—चाचासे मुलाकात—डनडफ

और गिलवकमें जाना ।

१२८६ ईस्वीके नवम्बर महीनेकी अन्धेरी रातमें वालेसने सेन्ट जानस्टनसे भागकर बड़ी मुश्किलने जान बचाई । उसके भागते समय जो हल्ला हुआ उसीमें उसकी प्रेमिका गायब होगई । वालेस अपने भागनेके रास्तेमें जो लागे डाल गया था शत्रु उसीके सहारे एलफोपार्कमें आपहुचे । उनके साथ एक शिकारी कुत्ता था । उन्होंने वालेसका गुप्त स्थान ढूँढनेके लिये उसे बहा छोड़ दिया । उसके पीछे पीछे एक सौ हथियारबन्द जवान जाने लगे । इधर सेनापति बटलर ३०० सेना लेकर पार्क घेरकर बैठे और सेनापति छिरेन दो सौ सेना लेकर अन्तमें उनकी मदद करनेके इरादेसे कुछ दूर पर ठहर रहे । सिर्फ ४० स्काटिश वीर उस दस गुनी अङ्गरजी सेनाके सामने उपस्थित हुए । चारोओरसे घेरा है भागनेका रास्ता नहीं इससे लड़नेके सिवा दूसरा उपाय न था । अतएव उन्होंने युद्धकी ठानली । उस धोर्डासी वीरसेनाने इस जोरसे अङ्गरजी पर आक्रमण किया कि पहले ही बारमें ४० अङ्गरज गिरे । बटलरकी सेना धीरे धीरे हताश होचली । उसकी शिथिलता देख कर वालेस दलबल सहित झुह तोड़कर अपने झिलेकी तरफ दौड़ा । टे नदीके उस पार जिला था । सोचा था कि टे नदी पार होजायगे पर आकर देखा कि नदी बड़ी गहरी है । बिना तैरे पार नहीं होसकते । वालेसके साक्षियोंसे ज्यादा आदमी

तैरना नहीं जानते थे इससे लाचार वह इसादा होना पड़ा । नदी में डूबनेसे रणभूमिमें गन्तुके तधिरसे पिछतर्पण करते करते प्राणदेना बेइतर समझकर वह वीरदल-लीट भाया और फिर लड़ने लगा । बटलर उन लोगोंको देखकर उरे नहीं जल्कि अपनी तितर गितर सेनाको मिजिल करके बड़ी तेजीसे आक्रमण किया । किन्तु जान पर खेलनेवाले स्वदेशप्रियोंका तेज कौन सह सकता है ? वह दैवीशक्तिसम्पन्न वीर रणक्षेत्रमें अद्भुत रणकौशल दिखाने लगे । मालूम होता था कि मानो दैवीशक्तिने उन्हें अजेय बना दिया है । दैवी शक्तिसेही उम उगलियों पर गिननेलायक जातीयदलने अङ्ग-रेजोंकी लाशोंसे मैदानको रम्यान बना दिया । दो बारकी लड़ाई में एक सौ अङ्गरेज मारे गये । बटलर हताश होकर मैदान छोड़ कुछ दूर पर सेनापति हिरनेने सलाह करने गये । उसी मौके पर वालिस अपने बचे हुए सोलह साथियोंको लेकर देखुटके मैदानमें चल दिया ।

इधर बटलर हिरनेकी सेना लेकर मैदानमें आये । मैदान खाली देखकर उन्होंने वालिसकी खोजमें फिर उसी शिकारीकुत्तेको छोड़ा । कुत्तेमें अद्भुत बुद्धि थी उसने वालिसका रास्ता पहचान लिया । वालिस गास्क बनकी तरफ जाता था । लाचार वह रास्ता छोड़कर उसकी दुर्गम पहाड़पर चढ़ना पड़ा । उसके एक साथी फाउन नामके आइरिशने उसके साथ जानेसे इनकार किया । उसको विश्वासघातक समझकर वालिसने उसका सिर काट डाला और लाश वहीं छोड़कर साथियों सहित पहाड़ पर चढ़ने लगा । वालिसकी नेखवरी में स्टिफिन और कार्ल नामके दो सहचर साथ छोड़कर वहीं छिप रहे ।

इधरसे बटलर और हिरने अपने ५०० सैनिकों सहित वहाँ पहुँचे । कुत्ता फाउनकी लाश छोड़कर एक कदम भी आगे न बढ़ा । सब लोग एकचित्तसे वह लाश देख रहे थे कि इतनेमें चुपकेसे कार्ल और स्टिफिन उनमें शामिल । किसीने उन्हें शत्रु नहीं समझा ।

हिरन वडे गोरसे उध लाशकी परीक्षा करगहे थे कि इतनेमें कालेंने अपनी तलवारकी नोकमें उनके गलेमें गहरी चीट पहुँचाई और फिर उसी वक्त दोनों गायब होगये । उसी चीटसे हिरन मर गये । सबने समझा कि वालिस जरूर कहीं पासही है उसके साथियोंके सिवा और किसीका यह काम नहीं है । हिरनकी मृत्युसे अङ्गरेजी सेनाको बड़ा शोक हुआ । बटलर अधीर हो चीख मारकर रोने लगे । वह कुछ देर बेसुध पड़े रहे । पीछे कुछ धैर्य धरकर चालीस सिपाहियों सहित हिरनकी लाश दफन करनेके लिये मेन्टजानस्टन को भेजा और बाकी सेनाको कई टुकड़े करके वालिसकी खोजमें इधर उधर भेजा । स्वयं कुछ सेना लेकर पासके बनकी निगरानी करने लगे ।

वालेस जब चीटी पर कुछ दूर तक चढ़ गया तब उसे अपने प्यारे सहचर कालें और स्टीफिनकी याद आई । उन्हें न देखकर समझा कि वह शत्रुओंके हाथमें पड़ गये घबराकर नीचे उतरा । चारों ओर दूढ़ने लगा । दूढ़ते दूढ़ते वह लोग गास्क किलेमें आगये । किलेकी चौड़ी और हवादार दालानमें सब आराम करनेलगे । पासके एक किसानके घरसे २ भेड़ लाकर जिवह करके पकाया खाया । खानेके बाद वह लोग लेटे हुए थे कि इतनेमें पासके पहाडसे विगुल की आवाज आई । स्काटलेण्ड निवासी ऐसीही आवाज करके बिस्वरी दुई सेनाको जमा करते थे । वालेसने यह पता लगानेके लिये कि विगुल किसने बजाया, पहले दो आदमियोंको भेजा । वह गोटार नहीं आये । फिर वह आवाज आई, वालेसने फिर दो आदमी भेजे, वह भी नहीं लौटे । वह आवाज फिर भी कान फाड़ने लगी । वालेसने घबराकर अपने बाकी नवो आदमियोंको भेजा । भगर कोई नहीं लौटा । वह प्रकृति उस सुनसान स्थानमें बैठा था धन वडे सोचमें पड़ा । एक ती काली रात दूसरे उस सुनसान जगहमें उस वडी इमारतमें एकलौटा, तीसरे साधियोंका न लौटना—

ऐसा मालूम होने लगा मानो गन्धु यह त्रिगुल गंगा रहे हैं । वह तलवार निकालकर जिधरसे आवाज आती थी उधर दौड़ा । किन्ने की दालानसे आगे पैर रखना चाहता था कि ऐसा जान पड़ा मानो दालानके दरवाजे पर फडन अपना सिर हाथमें लिये खड़ा है । वाल्लेसको देखकर उसने वह सिर उसके पैरकी तरफ फेंका । उठा कर मानो फिर फेंका । उसके मारे वाल्लेसका खून जमने लगा । उसको विश्वास होगया कि यह फडनका भूत है आदमी नहीं । भयसे व्याकुल होकर वहाँसे भागना चाहता । दरवाजे पर फडनकी प्रेतमूर्ति खड़ी है इससे उधरसे जानेकी हिम्मत न करके एक बन्द खिड़कीका किवाड़ पैरसे तोड़कर दस हाथ नीचे कूद पड़ा और वहाँसे उठकर बेतहाशा भागा ।

कुछ दूर पर नदी थी जब नदी पार हुआ तब वाल्लेसको जानमें जान आई । तब उसने उस किलेकी तरफ दृष्टि फेरी । उसे जान पड़ा कि मानो किला जल रहा है । उसने फडनके भूतको ही इस का कारण समझा । उसे यह भी विश्वास होगया कि उसी भूतने त्रिगुल बजाकर उसके साथियोंको मार डाला है । उन दिनों भूत का भय और भूतका विश्वास बहुतोंको था । वाल्लेस इस भौतिक उत्पातसे डरा और उदास हुआ । वह नदीके किनारे टहलते टहलते भगवानकी स्तुति करने लगा, पागलकी तरह रोते रोते उसने भगवानसे उनका अभिप्राय पूछा ।

इतनेमें उषादेवी पूर्व आकाशमें प्रसी उठी । रातका अन्धकार सूर्यके भयसे भागकर पहाड़की गुफामें जा छिपा । इतनेमें बटलरने दूरसे वाल्लेसको देखा । वह स्काटोंकी चाल रोकनेकी गरजसे उसी नदीके किनारे घोड़े पर टहलते थे वाल्लेसको देखतेही उधर घोड़ा दौड़ाया और पास आकर उससे नामधाम पूछा । वाल्लेसने नाम छिपाकर कहा कि मैं सर जान स्टुआर्टके पास एक खबर लेजा रहा हूँ । बटलरने कहा—“तू भूठ बोलता है तू जरूर आदमी है ।” यह कहकर तलवार निकालकर उस पर

दौड़े । वालेसकी तलवारने भट म्यानसे निकलकर बटलरकी टांग काट डाली । लड़के सेनापति उसी वक्त घोड़े से गिर पड़े । वालेस ने उनके घोड़ेका गला पकड़कर बटलरका सिर काट डाला । एक अङ्गरेज सैनिक दूरसे दौड़ा हुआ आया । वालेसने उसका बर्छा छीन लिया और बटलरके घोड़े पर सवार हो डालरियककी तरफ चला । अङ्गरेज सेनाने उसका पौछा किया । जो उसके पास आने लगे उन्हें वह मारने लगा । इस तरह अङ्गरेजोंका खून बहाते वालेस तेजीसे जाने लगा । बटलरका तेज घोड़ा भी इस तरह दौड़ते दौड़ते थक गया । वालेस घोड़ा छोड़कर आध कोस पैदल गया । आगे फिर एक घोड़ा मिला । वालेसने उस पर चढ़कर थोड़ी दूर की ओर सेना उसके पास पहुँच गई । उसने सरपट घोड़ा दौड़ाया तो भी कोई कोई पास पहुँचने लगे उन्हें वह तलवारसे काटने लगा । इस तरह २० अङ्गरेज मारे गये । अन्तमें वालेस एक दलदलके सामने आपहुँचा मगर यहाँ उसका घोड़ा गिर पड़ा और फिर नहीं उठ सका । उसे लाचार होकर फिर पैदल चलना पड़ा । बड़ी फुर्तीसे दौड़कर शत्रुओंकी नजरसे बचा , अन्तमें उसने फोर्थके किनारे आकर केम्बकस नगरके पास भदी पार होकर शत्रुओंके हाथसे जान बचाई ।

यहाँ पीछा करनेवालोंके हाथसे पीछा छुड़ाकर वालेस डरडङ्की तरफ चला । दूसरे दिन सुबोदयसे पहले वहाँ एक परिचित विधवा स्त्रीके घर आया । उसका थका मादा शरीर विश्राम चाहता था यहाँ आकर पूर्ण विश्राम पाया । विधवा खुद वालेसके लिये भोजन बनाने लगी । उसकी भोपड़ी वालेसके लिये बेखतर नहीं थी इस लिये उसने पासके बने एक पेड़के नीचे वालेनके लिये बिस्तर जमा दिया । स्त्रीके दो लड़के उसके पैर दाबने लगे । इधर उसने वालेसके साथियोंका पता लेनेके लिये एक औरतको यास्क किले की तरफ भेजा और वालेसकी खबर देनेके लिये तीसरे लड़केको दुनिदेसमें उसका चाचाके पास भेजा ।

खबर पातेही उसके चाचा वड़ा भाये । वालिससे चाचाही बहुत बातें हुई । उन्होंने वालिसके कामकी पागलपन बताते-तार हमी की और कहा—“तुम पहले एडवर्डके सेनाममुद्रम फूटकर पाप डूबोगे, डूबे हुए सदेगको हरगिज निकाल न सकोगे । इसलिये मेरा कहना मानो और इस असम्भव प्राणको छोड़कर एडवर्डके प्रधीन कहीके लाट बनकर सुख चैन करो । एकबार कहनेसे एडवर्ड मान लेगे इसमें मुझे शक नहीं है ।” यह वाक्य वालिसके कानोंकी बहुत बुरे लगे । उसने जवाब दिया—“मैं या तो स्काटलैण्डमें फिर शान्ति स्थापित करूंगा नहीं तो उसी काममें जीवन देदूंगा, स्काटलैण्डके पराधीन रहते मैं कोई सुख नहीं चाहता ।” धन्य वालिस । धन्य तुम्हारा स्वजातिप्रेम । तुम्हारे जैसे राजनीतिक सन्यासीकी चरणरज जिस देशमें पड़ती है उस देशकी सदाकी पराधीनता भी दूर होजाती है ।

वालिसकी मोहिनीशक्तिसे चाचाकी राय बदल गई । उन्होंने हृदयसे वालिसके उदारसकल्यका अनुमोदन किया । उन लोगोंकी बातचीत काले और स्टिफिनके अचानक आजानेसे रुक गई । अर्धरात्रि वालिसको सकुशल देखकर उनके आनन्दकी सीमा न रहो । वह लोग किम लिये वालिसका साथ छोड़कर रास्तेमें छिप गये थे और उसके बाद क्या क्या किया सब उन्होंने वालिसको कह सुनाया । वालिसने सबसे पहले उनकी जवानी सुना कि अङ्गरेज सेनापति सर जिरार्ड उनको तलवारसे मारे गये । वह लोग वहाँ आनन्दसे वार्तालाप कर रहे थे इतनेमें जो ची गास्क किलेमें भेजी गई थी वह लौट आई । वह कहने लगी—मैं देख आई कि गास्क किलेको जानिका रास्ता अङ्गरेज सैनिकोंकी लाशोंसे भरा पड़ा है । (पाठकी को याद होगी कि वालिसने अपने पीछा करनेवालोंको मारकर उन की लाशोंसे गास्कका रास्ता प्रशान्त बना दिया था) वह किला और उसकी दालान ज्योंकी त्यों है उसका एक पत्थरभी इधर उधर नहीं आ है किन्तु बिगुलकी आवाज सुनकर जो लोग गये थे उनका



कुछ पता न पाया ।” इस खबरसे वालिसका फुडनकी प्रेतमूर्तिका विश्वास और पक्का होगया ।

वालिस उस जङ्गलमें अब अधिक दिन ठहरनेको राजी न हुआ तब उस स्त्रीने उदारतापूर्वक उसे बहुतसा रुपया दिया और अपने बड़े और मझले बेटेको उसके साथ कर दिया । उसके चाचाने उन लोगोंको बढिया घोड़े और वीरोंकी पोशाकें दीं । उसी रातको वालिसने कार्ले, स्त्रिफिन और उस स्त्रीके दोनों लडकोंसहित उनउफ की तरफ कूच किया । सर जान ग्रेहम नामका एक बूढ़ा नाइट—जिसने लार्गसकी लडाईमें बड़ी बहादुरी दिखाई थी—यहांका मालिक था । उसने बुढ़ापेमें शान्तिसे रहनेके लिये लाचार होकर एडवर्डसे सन्धिकी थी किन्तु उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की । वालिसको पाकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ । वालिस बड़े आदरसे उसके किलेमें तीन दिन रहा । ग्रेहमके उध्रीके नामका एक पुत्र था । उसने यादनावस्थामेंही प्रान्तिक युद्धमें स्काटराज अलकजेण्डरकी बड़ी मदद की थी इस लिये उन्होंने उसे “वारविकका नाइट” की उपाधि दी । इस वीर युवकसे वालिसकी बड़ी मित्रता होगई । यह मित्रता मरते दम तक न टूटी । ग्रेहमने जीतजी वालिसका साथ न छोडा । वनमें किलेमें रास्ते में लडाईमें जहा वालिस जाता वहा ग्रेहम छायाकी तरह उसके पीछे पीछे रहताथा । वालिसके कष्ट दन्तनामय जीवनमें ग्रेहम उसका प्रधान शान्तिस्थल था ।

पर गम्भीरता छागई । किमी किमीने यह कहकर मनको प्रबोध दिया कि जब वालिसको सृष्टिज्ञ पुन पार होते किसीने नहीं देखा तो मानूस होता है कि वह फौरन डूब गया । किन्तु पर्सीको यह विश्वास नहीं हुआ । उन्होंने सोचा कि वालिस बड़ा पत्नी और चतुर है सभाय नहीं कि वह जलमें डूब गया हो । इस लिये उनका मन आगेकी बात सोचकर घबराया । इस समय सर जान स्टुअर्ट सेनट जानस्टनके शेरिफ बनाये गये ।

वालिसने गिलबकमें पहुचकरही करमबीमें चाचा सर रेनाल्डको, रिकर्टनमें भाई एडम वालिसको और दोनों मित्र बायड और क्लेयर को अपना हाल बतानेके लिये कार्लको भेजा । वालिसकी सफलता का समाचार सुनकर वह लोग बेहद खुश हुए और उसी वक्त उस की मददके लिये बहुतसा रुपया भेजा ।

जिन दिनों वालिस गिलबड्गमें था उन दिनों कौतूहलमें आकर कभी कभी लेनार्कसायरकी तरफ जाया करता था । उसकी तलवार अकसर अङ्गरेजीका खून पीती थी । वह रास्तेमें जङ्गा तितर बितर अङ्गरेजी सेना देखता उस पर हमला करता । उसकी तेज तलवारसे किसीकी रक्षा न होती, यहाँतक कि खबर देनेके लिये भी कोई लौटने नहीं पाता था । हेसिलरीग लेनार्कसायरके शेरिफ थे । उनका मिजाज बड़ा कडा और स्वाधीन था प्रजा उनको यम के समान समझती थी । उनको इस बातका बड़ा आश्चर्य हुआ कि कौन इस तरह मेरी सेना बरबाद कर रहा है । उन्होंने अपने सैनिकोंको हुक्म दिया कि कहीं जाओ तो आत्मरक्षाके लिये रुकें होकर जाओ । वालिस जब शत्रु सेना अधिक देखता तब कुछ छेड़ छाड़ न करता । उसके चारो साथी छाया तरह उसके पीछे पीछे रहते थे ।

## सातवां अध्याय ।

वालेसका प्रयत्न—लाकमेवेन और क्राफोर्ड किले पर  
अधिकार ।

वीरका हृदय भी प्रणयसे खाली नहीं है । ऐसा कोई हृदय नहीं देखा जाता जहाँ प्रणयकी अमलदारी न हो । राजाकी भटारी लेकर दरिद्रकी भीपड़ी तक सर्वत्र प्रणय विराजमान है । अनु-राग संसारत्यागी सन्यासियोंके हृदयमें भी प्रवेश करता है । वालेस राजनीतिक सन्यासी होकर भी इसके हाथसे न बच सका । परम-योगी दिगम्बर भी इसके हाथसे नहीं बचे । जिसका हृदय स्वदेश की दुर्दशासे शोकाकुल था, जिसने प्रण किया था कि स्वदेशका उद्धार किये बिना किसी तरहका दुनियावी सुख नहीं करूंगा वह आज प्रेमका जोर रोक न सका । उसने इसको जातीयव्रतमें खलल डालनेवाला बताकर हृदयको बहुत समझाया किन्तु हृदयने कुछ ख्याल नहीं किया । लेनार्कशायरकी कोई अलौलिक सुन्दरी मनो-सोहिनी उच्च-वशोद्भवा कोमलस्वभावा रमणी उसके चित्तविकारका कारण थी ।

मेहमानदारीके लिये कई प्रकारके भोजन बनाये गये थे । युवतो-  
युवका पहलीही मुनाकातमें एक दूसरे पर प्रेमासक्त होगये । युवतो  
ने कहा—“मैंने आजसे आपके चरणोंमें आत्मसमर्पण कर दिया ।  
जलयन्त्र, वन जङ्गल, रणभूमि या शान्तिनिकेतन—आप जब जहा  
रहेगे, दानी छायाकी भांति आपके पीछे पीछे रहेंगी, मैं प्रतिज्ञा  
करतीहूँ कि आपके भिवा और किसी पुरुषकी पत्नी न हूँगी । अब  
प्रार्थना यही है कि दामीको अपनाइये ।” वालेसका हृदय रमणों  
के प्रेमसे पिघल गया किन्तु वह जिलफेल विवाह करनेको राजी न  
हुआ । कहा—“जितने दिन स्काटलेण्ड शत्रुके हाथमें रहेंगा  
उतने दिन विवाहमें मेरा अधिकार नहीं है । जिस दिन स्वदेशको  
शत्रु रूपी काटेसे अलग कर सकूंगा उसी दिन तुम्हारा पाणिग्रहण  
करूंगा । मैं भी प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हें छोड़कर और किसी  
स्त्रीको पत्नी नहीं बनाऊंगा ।” इसी तरह दोनों प्रतिज्ञा करके एक  
प्रकार नैतिकदम्पती होगये । उसी दिनसे वह दोनों परस्पर पति  
पत्नीकासा व्यवहार करने लगे । नैतिक विवाह करके दोनोंने  
बड़े आनन्दसे भोजन किया ।

वालेस दूसरे दिन तड़के चारों साधियोंसहित गिलबक छोड़कर क-  
हींडकी तरफ रवानाहोगया । कहींडमें उसका भतीजा टाम हालिडे  
और भाई एडवर्ड लीटल रहते थे । उन्होंने समझ लिया था कि  
वालेस लडार्डमेंमारागया । आज्ञाचानक उसे देखकर आनन्दसेउछल  
वालेस वहाँ तीन दिन रहा । चौथे दिन लाकसेवेनकी तरफ चला ।  
वह सब मिलाकर १६ सवार होगये हैं । शहरसे कुछ दूर नाकउड  
नामक वनमें सबको छोड़कर वास्सेस लीटल कार्ल और हालिडेको ले  
कर शहरमें पैठा । वहाँ किसी सरायमें भोजन बनानेका हुक्म दे  
कर घोड़ोंको वहीं बांध दिया और आप पासके गिरजेमें आ  
कर भजन सुनने लगे । उनकी गैरहाजिरीमें क्लिफोर्डने चार स-  
थरी सज्जित उस सरायमें आकर पूछा—“यह किसके घोड़े वधे हैं ?”  
भठियारीने कहा—“हुजूर । पश्चिमसे चार भले आदमी आकर मेरे

यह ठहरे है उन्हींके चारों घोड़े है ।” घमण्डी क्लिफोर्डने कहा—  
“वह भूत ऐसे सुन्दर घोड़े लेकर क्या करेंगे ?”—यह कहकर उसने  
चारोंकी दुम काट डाली । भठियारी चिल्ला उठी । उसकी आवाज  
सुनकर वालिस और उसके साथी आपहुचे । इधर क्लिफोर्ड दुम  
काटकर रफूचकर हुआ । वालिस असली हाल सुनकर क्रोधसे लाल  
होगया तो भी इस दिवंगीकी बातसे उसकी हसी न रुकी । उसने  
साथियो सहित क्लिफोर्डका पीछा किया और पुकारकर हसीसे कहने  
लगा—“यार ! मानूम होगया कि तुम एक चतुर हजाम हो, मैं  
भी एक हजाम हूँ पश्चिमसे अच्छे रोजगारकी तलाशमें आया हूँ ।  
दिन बहुत चाहता है कि तुम्हें अपना इत्त दिखाऊँ ।” यह कहते  
कहते वालिस क्लिफोर्डके पं स पहुच गया । पहुचनेके साथ उसकी  
भोम तलवारने क्लिफोर्डको दो टुकड़े कर डाला । एक औरको भी  
मारा । वालिसके साथियोने बाकी तीनको मार डाला ।

वह लोग क्लिफोर्डका घोड़ा लेकर डेरे पर लौट आये और  
रसोईकी तय्यारी तक न ठहरे । भठियारीको भोजनका दान चुवा  
अपने दुमकटे घोड़ा और क्लिफोर्डके सुन्दर घोड़े को लेकर चलदिये ।

क्लिफोर्डके मारे जानेकी खबर नगरसे फैलतेही अइर्रेजी किले  
शे २७ सवार वालिस और उसके साथियोंकी खोजमें निकले ।

खून बहते देखकर क्रोधसे मत्त छाथीकी तरह प्रकले प्रार्जेजी पर टूट पड़ा । जण भरमें उसकी तलवारने पन्द्रह सवारोंकी जमीन पर सुना दिया । बाकी सवार यह वेदम सामना देखकर किलेकी तरफ मरके । स्काटीने भागती हुई प्रार्जेजी सेनाका पोशा किया । राहमें हालिडेने देखा कि दो सौ प्रार्जेजी सेना पासके जङ्गलमें छिपी हुई है तब उसने चाचाको लौटनेकी मलाह दी ।

जङ्गलकी अङ्गरेज सेनानेऊ देखा कि स्काट कहींडाली तरफ भागा चाहते हैं तब वहाँसे निकलकर उनका पीछा किया । सर ज्यू नामके एक प्रवीण अङ्गरेज सेनापति इस सेनाके नायक थे । वह वक्तवर पहने हुए एक खूबसूरत घोड़े पर सवार थे । वालेस एक पंडले पीठ सटाये मर ज्यूकी बाट देखता था । ज्योंही वह उसके सामने आये उसकी कराल तलवार उनके सिरके दो टुकड़े करके गले पर आकर ठहरी । वालेस चट ज्यूके घोड़े पर सवार होगया । सेनापतिकी मृत्यु देखकर अङ्गरेजीने उसे घेर लिया । उसी वक्त उसके साथी भी सहायताको आपहुचे । दोनों ओरसे घोर संग्राम होने लगा । हालिडे पैदलही विलक्षण वीरता दिखाने लगा । वालेस घोड़े पर चढा हाथमें बर्छा लिये शेरकी तरह शत्रुओंका मथन करने लगा । मानो चारोंओर मौत फैलाने लगा । अन्तमें अङ्गरेज हताश और बलहीन होकर भाग चले । इस लड़ाईमें सेनापति के सिवा बीस अङ्गरेज मारे गये और बहुतसे घायल हुए । स्काटी मेंसे एक भी नहीं मारा गया सिर्फ पाच आदमी जखमी हुए ।

ग्रेष्टाक नामका एक अङ्गरेज सैनिक सर ज्यूके नीचे अफसर था । उसने मुट्ठी भर स्काटीके सामने पीठ दिखानेवाले अङ्गरेजोंको धिक्कार देकर तोनसौ सेना लेकर आक्रमण किया । वालेस और उसके सब साथी अब घोड़ी पर सवार थे । वह लोग धीरे धीरे शत्रुओंको एक तग दर्रेमें लेआये । वालेसने इतनी थोड़ी सेना लेकर इनकी बड़ी सेनाके सामने खुले मैदानमें उतरनेका साहस नहीं किया इसीलिये हिकमतसे उसे तग जगहमें लेगया । वह जानता

था कि इस तग जगहमें संख्या ज्यादा होनेसे कुछ मुआका नहीं है । अङ्गरेज अपनी भूल समझकर पीछे हटे । वालेसने उनका पीछा करनेकी हिम्मत न की ।

इसी हाजतमें दोनों पक्षकी सेना पड़ी है इतनेमें वालेसके प्यार मित्र ग्रेहम और कर्कपेट्रिक सेना सहित वालेसको ढूँढते हुए वहा आपहुवे । ग्रेहमके साथ तीस और कर्कपेट्रिकके साथ पचाम चुने हुए योद्धा थे । दूरसे मित्रोंकी सेना देखकर वालेसने आक्रमणका इरादा किया । उसका जो इरादा था वही काम था । भयानक शेरकी तरह अङ्गरेजी सेना पर टूट पडा । दैवीगतिसम्पन्न स्वजाति प्रेमी वीरदलका वेग किसकी ताकत है जो वरदाशत कर सके ? पलक भरमें अंगरेज सैनिकोंकी लाशें मैदान भर गया । यह विजलीकासा तेज अङ्गरेजीसे वरदाशत न होमका । वह पीठ दिखाकर भागे । सेनापति ग्रेस्टाक सौ सिपाहियोंके घेरेमें घोड़ेपर सवार होकर भागा । किन्तु उसके सामने ग्रेहम और कर्कपेट्रिक चले आये । उधर वालेसने उसका पीछा किया । उसने दूरसे ग्रेहमको देखकर ग्रेस्टाक पर आक्रमण करनेका चिन्ताकर हुला दिया । ग्रेहम ने भट अङ्गरेज सेनापतिके पास पहुचकर तलवारने उसका सिर काट डाला । सेनापतिके मारे जाने पर अङ्गरेजी सेना भयसे इधर उधर भागी । बितनेही सिपाही पीछा करनेवाले स्काटोके हथ मार गये ।

वालेसने उसी रातको लाकमेवेन किले परं प्राक्रमण करनेका इरादा जाहिर किया। कहा—लडार्डमें जितनी सेना मारी गई है उससे मालूम होता है कि किलेकी रक्षाके लिये बहुत थोड़ेही आदमी हैं। सबने उसके इस इरादेका अनुमोदन किया और औरन उसके अनु-सार काम किया गया। उसी कालीरातको उन वीरदलने लकमे वेन किलेकी तरफ कूच किया। टाम हालिडे उस प्रदेशसे ज्यादा वाकिफ था इस लिये वही उस दलका पथप्रदर्शक बना। हालिडे के प्रधान सहचरीमेंसे वाटसनको कुछ दिन उस किलेमें रहना पड़ा था। उसकी किलेके सब लोगोसे मुलाकात जात थी। वह भकेले आगे आकर दरवाजे पर खड़ा हुआ। दुर्गद्वाररक्षकने पूछा—“वाटसन। क्या खबर है?” वाटसनने कहा—“मेनापति स्वयं आरहे हैं शीघ्र द्वार खोल दीजिये।” बिना कुछ सोचे विचारे उसने उसके कहनेसे दरवाजा खोलदिया। हालिडेउसके पीछे छिपा था। रक्षक ने ज्योंही दरवाजा खोला हालिडेकी तलवारने उसे काट डाला। उसके हाथमें चाबियोंका गुच्छा था, वाटसन उसे लेकर आगे आगे चलने लगा और हालिडे तथा दूसरे लोग उसके पीछे पीछे। किसीने उन्हें नहीं रोका। किलेमें ऐसा कोई था ही नहीं जो उन को रोकता। सिर्फ दो नौकर और कई स्त्रियां थीं। इसलिये वह लोग बेधडक चारों ओर घूमने लगे मानो वही किलेके मालिक थे। किला देखभाल कर सब भूख प्याससे विकल होगये थे, लडार्डमें गये हुए अङ्गरेजोके लिये जो खानपानका सरञ्चाम रखा था उससे अपनी भूख प्यास बुझाने लगे, केवल वाटसन दरवाजे पर पहरा देने लगा। इतनेमें मैदानसे भागी हुई अङ्गरेजी सेना आकर दरवाजे पर खड़ी हुई। उन लोगोको जरा खबर न थी कि किला दुश्मनोके हाथ आगया है। इस लिये उन्होंने बेखटके भीतर घुसना चाहा। वाटसनने कुछ रोकटोक न की। वह लोग ज्योंही भीतर पहुँचे विजयी स्काटसेनाने सबका काम तमाम कर दिया। एक भी योधा न बचा। दूसरे दिन तड़के स्काटिश सरदार, वाटसनके हाथमें किलेका



भार और अङ्गरेज औरतीको स्वदेश चले जानेका हुक्म देकर कर्हींड की तरफ रवाना हुए । उस दिन वहा रहकर दूसरे दिन नहाने खानेके बाद क्राफोर्ड मूरकी तरफ कूच कर गये । यहाँ आकर वह कई टल होगये । टाम हातिडे कर्हल किलेको लौट गया । अङ्गरेजीको मानूम नहीं हुआ कि वह इस लडाईमें शामिल था । वह देखटके वहाँ रहने लगा । कार्कपेट्रिक एस्कडेल वनमें जा रहा यहा अङ्गरेजीने उसकी कुछ डर न था ।

वालेस और ग्रैडम चालीस साधियों सहित क्राफोर्ड किलेकी रवाना हुए । वालेस उसी रातको उस किने पर आक्रमण करना चाहता था । इस समय मार्टिण्डल नामका एक कम्बरलेण्ड निवासी अङ्गरेज किलेका अफसर था । वालेस पामकी क्लाडउ नदीके किनारे सब सेना छोड एडवर्ड लीटल नामके सिर्फ एक साधीको लेकर शहरमें पैठा । एक होटलके पास जाकर उसने एक स्काट स्त्रीसे सुना कि इस समय अङ्गरेजसेना उसी होटलमें खापीकर मस्त हो रही है । खीने कहा—“अगर तुम स्काट हो तो जल्द भागो, क्योंकि वह लोग वालेस नामके एक स्काट और उसके लाकसेडेन किना खेलेनेकी चर्चा करते थे, इसलिये उधरसे होकर जाना तुम्हारे लिये खतरसे खाली नहीं है ।” वालेसने स्त्रीको अपना सहाहित चाहनेवाली समझा किन्तु उसकी सलाहके बर्खिलाफ काम करनेपर मुस्तैद हुए ।

उनके होश हवास बैठकाने कर दिये थे। वालिसने मक्कतो मार डाला। द्वाररक्षक लौटलने भी पाच मिर गिराये। इधर ग्रेहम वालिसकी आज्ञानुसार किलेके दरवाजे पर पहुँचा। क़िवाड बन्द देखकर उसने उसमें आग लगा दी। अग्निनीला देखकर वालिस उधर दौड़ा। देखतेही देखते क़िवाड जलकर भस्म होगया वह लोग भीतर घुसे। वहाँ सिर्फ कड़े औरते थी इस लिये यह लोग चारोंओर घूमने लगे। खानेकी कोई चीज न मिली। पीछे उन्होंने होटलसे खाना मगाकर भूख बुझाई और रात वही बिताई। सबेरे औरतोंको रिहाई देकर किलेमें आग लगाई और उनडफको फूँच कर दिया। यह रात उन लोगोंने उनडफमें बड़े आनन्दसे बिताई।

## आठवां अध्याय ।

सेमिडूटनकी उत्तराधिकारिणीसे वालिसका विवाह—अगरेजोंसे घिरकर वालिसका कार्टलेन क़ेगसमें आश्रय लेना—हेसिल रीगके हाथसे उसको नशेडा पदवीकी मृत्यु—वालिसकी प्रतिष्ठा—उसके हाथसे हेसिलरीगकी हत्या—बीगरका प्रसिद्ध युद्ध—वालिसका स्काटलेण्डका अभिभावक चुना जाना—क़ी नदोके किनारेके किले और टरमवरी किले पर अधिकार—अगरेजों से सन्धि—वालिसका कामनकनगर में निवास ।

सन् १२८७ ईस्वीके मार्च महीनेमें वालिस उनडफसे गिलबंकको रवाना हुआ। वसन्त ऋतु आई है। हवाबली हरे हरे सुन्दर पक्षीसे शोभायमान है चारों ओर चिड़ियोंकी मीठी तान उड़ रही कति नई सजधजसे जगतका मन मोह रही है। ऐसे समयमें

किस प्रणयीका चित्त ठिकाने रह सकता है ? वालेसका उदार-  
हृदय भी बसन्ती वायुसे प्रणयानलमें पिघलने लगा । इतने दिन  
सडाई भिडाईमें लगे रहनेसे प्रणयिनी स्त्रोका ख्याल नहीं रहा ।  
किन्तु आज इस विश्यामागारमें वसन्तके भक्तोरिसे उस अनुपम रूप-  
वती निराश्रया युवतीके लिये उसका मनमतङ्ग मतवाला होगवा ।  
विरह सह न सका और उसके घर जापहुचा । कई दिनके आवा-  
गमनसे और प्रणय-परिणय और सामरिकजीवनसे उचित अनुचित  
सम्बन्धके विषयमें अनेक तर्क वितर्क करनेके बाद वालेस उससे  
खुन्नखुन्ना विवाह करनेकी राजी हुआ । वालेसके प्रियमित्र पादरी  
व्हेयरने इस विवाहकी पुनोहिताई की । नवीन दम्पतीने कुछ दिन  
आनन्दपूर्वक मधुचन्द्रिमा (Honey Moon) बिताई । कुछही दिन  
बाद युवती गर्भवती हुई और समय पाकर एक लडकी पैदा हुई ।

इस प्रकार वालेस यद्यपि मनके सुखसे प्यारीके साथ रहने लगा  
तथापि उस सुखके समय भी देशकी दुर्गति याद करके उसे शोक  
होने लगा । जबतक अङ्गरेज स्काटलेण्डमें शासन करते हैं तबतक  
वालेसके चित्तकी उच्च सुखकी आशा कष्टा १

हुआ है। प्रसलिये उसने एक बण्ड जान पर खेनगा नहीं चाहा। भगडा बचाने लगा। पटल बचनकी भाति गुपचाप छेउकाड सड़ने लगा। किन्तु जय देखा कि अगरेज सामने मार रहे हैं तब देर करना उचित न समझकर यह लोग जयरदस्त शेरकी तरह उछलकर उन पर साटूटे। पल भरमें लोगों और शेरकी धारासे रणभूमि उभ्र गई। किन्तु इतनी अगरेज सेनाने साफर उन्हें घेर लिया कि पचास अगरेजोंकी जमीन पर सुनाकर और ब्यूह तोड़कर उन्हें मैदानसे भागना पड़ा। वालेस दलबल सहित प्यारीके घरकी तरफ दौड़ा। अगरेजोंने पीछा किया। वालेस की पत्नीने पति और उसके साथियोंकी विपद देखकर सिद्धवार खोल देनेका हुक्म दिया। स्काटलाग उस रास्ते से भीतर चले गये। जबतक सब स्काट सेना खिडकीकी राह किसी बेखुतर जगहमें न पहुची तबतक वालेस और ग्रेहम अद्भुत वीरतासे सिद्धवारकी रक्षा करते रहे। इधर स्काट कार्टलेनक्रो ग नामकी गुफामें जाछिपे। यह गुफा अब भी “वालेस गुफा” कहलाती है। साथियोंके निरापद स्थानमें पहुच जानेकी खबर पाकर वालेस और ग्रेहम सिद्धवार छोड़कर उधरही चले।

प्रणय खोकी देवी बना देता है। प्रणय उसे अपना स्वार्थ भूल जानेकी शिक्षा देता है। पतिके ऊपर आपत देखकर अपने भविष्य का विचार न करके वालेसकी पत्नीने अपने मङ्गलका सिद्धवार खोल दिया। पति और उसके साथियोंको खिडकीसे भाग कर जान बचानेकी सलाह दी। स्वदेशका उद्धार करके प्राणसे भी प्यारी खोकी सुख देनेकी आशासे आज वालेसने पत्नीकी सलाह मान ली। उन लोगोंके चले जाने पर प्यारीकी क्या गति होगी वह इस बातकी ख्यालमें नहीं लाया। वह स्वयं शत्रुओंकी स्त्रियोंसे जैसा सुलूक करता था शायद समझा था कि अगरेज सेनापति भी उसकी स्त्रीसे वैसाही सुलूक करेगा। किन्तु उसकी यह भ्रम दुराशा मात्र हुई। सती पतिका प्राण बचानेके अपराधमें

अङ्गरेज सेनापतिकी आज्ञासे पकड़ी गई और उसीवक्त तलवारसे काट डाली गई । वॉलेससे नाता तोड़कर सतीने प्राणत्याग तो किया किन्तु उसके आलोत्सर्गका चमकता हुआ दृष्टान्त सदाके लिये स्काटलैंडियोंको आदर्श बन गया ।

पत्नीके मारे जानेको खबर उसकी खास दार्दने वालेस तक पहुँचाई । इस शोचनीय समाचारसे उसके, उसके प्रियमित्र ग्रेहम और दूसरे स्काटोंके शोककी सीमा न रही । वॉलेसका हृदय यद्यपि शोकसे विकल हो गया था तथापि वह वीरोचित धैर्यसे शोक सन्हालकर रोतेहुए प्रियमित्र और दूसरे साथियोंको इस तरह उत्तेजित करने लगा—

समूचा वीरदन उदला लेनेकी इच्छासे मत्त होकर रातको लानार्क की तरफ रवाना हुआ । अगरेजीको उनके आत्ममग्नता गत न था वह बेफिक्र सीते थे । गडरमें जाकर उस टुकड़े दो टुकड़े हुए । एक टुकड़ेको लेकर वालेस हेमिलरीगके महलतो चला और दूसरे को लेकर ग्रेहम सर रावर्ट यार्नको ढूँढने लगा । गेरिफ हेमिलरीग ऊंची अटारी पर बैसपर सो रहे थे इतनेमें वालेस उनके गयनागारके दरवाजे पर पहुँचा । उसके नात मारनेसे दरवाजा टूट गया । भन्नाटेकी आवाजसे हेमिलरीगकी आँखें खुली । वह डरके मारे सीढियोंकी तरफ भागना चाहते थे कि वालेसने उनका गला पकड़ लिया और तलवारसे काट डाला । अचिगलेकजा गक दूर नहीं हुआ उसने हेमिलरीगको अब भी जीता मग्नभन्नार तजवार की नोक उनके वदनमें दोवार गड़ाई । हेमिलरीगका पुत्र पिताकी सहायताको दौडा पर वह भी पार हुआ । महलमें कुहरा पडगया । रोजेकी आवाज सुनकर सडकमें बहुत लोग जमा होगये । उधर ग्रेहमने सर रावर्टयार्नके भवानमें आग लगा दी वह उसीमें जलकर भस्म होगये । और भी कितनेही नगरनिवासी जल गये । वहाँके बाशिन्दोंमें अधिकतर स्काट थे इसलिये वालेससे उनकी आपसे आप सहानुभूति हुई । सबने आकर वालेसजा साथ दिया । सैकड़ों अङ्गरेज मारे गये । लानार्क पर स्काटोंका पूरा अधिकार होगया । जल्द यह खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैल गई । भुण्डजे भुण्ड स्काट आकर वालेसके भण्डेके नीचे खडे हुए । सबने एक वाक्यसे वालेस को सरदार और नेता माना । वालेसने अब अपने हृदयका भाव छिपा नहीं रखा, आज सबके सामने साफ कह दिया कि स्काटलेड की अगरेजीकी गुलामीसे छुडानाही मेरे जीवनका एकमात्र व्रत है ।

लानार्क विजयके बादही वालेसका नाम पहले पहल इतिहासमें आया । यहीसे जातीय ऐतिहासिक उसको समूचे जातीयदलका नेता मानने लगे । महात्मा शिवाजी जैसे पहले डाकू कहलाये थे उसी तरह वालेस भी पहले

छाकू बलाया गया था । सच पूछिये तो मानूली आदमी सहात्माओं के अलौकिक कार्यों का कारण समझनेमें असमर्थ होकर उनकी निन्दा किया करते हैं \* हरेक समाज सुधारक, हरेक धर्मसुधारक और हरेक राजनीतिक सन्यासीका जीवन ऐसीही अनुचित निन्दा के तीरोंमें जखमी हुआ करता है । वह लोग जिनका दुःख दूर करनेके लिये अपना सुख छोड़ देते हैं अपना जीवन उत्सर्ग कर देते हैं वही उनके उद्देश्य पर सन्देह करते हैं और हर तरहसे उनके काममें विघ्न डालते हैं । खासकर राजनीतिक सन्यासीकी जिन्दगी बड़े खतरोंमें होती है । वह गन्तु मित्र, स्त्रजाति विजाति सबसे सताये जाते हैं । जबतक सफलकाम न हो तबतक वह गन्तुओंके सामने धार्मी और स्त्रजातिके सामने अशान्ति फैलानेवाले छाकू हैं । अगर सफलमनोरथ हुए बिना वह मरजायं या यह काम छोड़ दे तो इतिहासमें उनका ऐसाही चित्र खींचा जाता है ।

स्काटलेण्डके भाग्याजागर्ने इस तरह जी फेर गदने औरता था उसकी खबर रखनेके मध्यम मर जातिग उी नलिभने एडाउडे पास भेजी । यह आदमी स्काटलेण्डका हीतर नी जातीय स्वाधीनता एडवर्डके चरणोंमें पैचनेकी तल जन गया था । इस जातीय विश्वासघातके इनामसे एडवर्डने रखनेके पत्रजी मध्यम मरको हटाकर उसकी जगह इनकी भिठाया । इसीकी चिट्ठीमें एडवर्डको सबसे पहले यह मालूम हुआ कि स्काट लोग रुदेगकी अंगरेजोंको बेडीसे छुडाने पर मुस्तैद है । एडवर्ड स्काटलेण्डकी फिर कब्जेमें करनेके लिये बड़ी भारी सेना लेकर उधर रवाना हुए । उनको छावनीमें रिकर्टनवासी जाप नामका एक काला स्काट था । अंगरेज उसे गिमस्यूके नामसे पुकारते थे । वह वालेसका नाम और गुणावली सुनकर उसकी खोजमें निकला । खोजते खोजते काइल प्रदेशमें जापहुचा । वहा स्काटिश अधिनायकसे भेट हुई । वालेस सेना जमा करनेके इरादेसे वहा गया था । उसने जापकी जवानी इङ्गलेण्डकी भीतरों हालत और एडवर्डकी इच्छा मालूम की । कार्यदक्षता और विश्वासकी खातिरसे इस आदमीको स्काटोने स्काटलेण्डका अस्रधारक बनाया ।

आयरशायरसे लौटकर वालेसने भटपट सेना इकट्ठी की । उसने पहलेका कुसूर माफ करके कैदियोंको रिहाई दी । वही लोग उसकी सेनामें विशेष करके थे । उसके चाचा सर रेनाल्डसे अंगरेजोंकी जो सन्धि हुई थी उसका समय जीत गया है । तोभी अंगरेजोंने उनकी जायदाद इस लिये जब्त कर रखी कि वह स्वयं खुल्लमखुल्ला लडाईमें अंगरेजोंके सुकावले खडे न हो । इससे वह खुल्लमखुल्ला तो वालेसका साथ न देसके मगर छिपे छिपे उसे धन और जनसे बहुत कुछ सहायता देने लगे । प्रधर कनिहम और काइलसे एडम वालेस और रावर्ट बायड एक हजार हथियारबन्द पुरुषों सहित लानार्कमें आकर वालेसको भरण्डेके नीचे खडे हुए ।

र जान गेहम और उसका चुनाहुआ रिसाला और दूसरे बहुतसे



स्काट-देवभक्त वालेससे आमिले । सब मिलाकर कोई तीन हजार सवार और असंख्य पैदल सेना जातीय पताकाके नीचे आजमी । सेनाकी संख्या तो बहुत बढ गई किन्तु उसमें अधिकतर सिपाही अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित न थे इससे मौके पर इस अधिकतासे उतना फायदा नहीं हुआ ।

इधर इंग्लैण्डनरेश एडवर्ड या उनके प्रतिनिधि साठ हजार सुसज्जित सेना लेकर लकशायरके बीगर नामक गाव तक आ पहुँचे । वहासे उन्होंने दो दूतों सहित अपने भानजे फीहकी वालेसके पास भेजकर यह कहनायाकि अगर वालेस अपने पिछले अपराधोंके लिये अब भी जमा सागले तो उसे जमा कीजायगी और बहुत कुछ इनाम दिया जायगा । नहीं तो यह राजपिट्रोही समझा जायगा और गिरफ्तार करके फाँसी पर लटकाया जायगा । वानेसने वही नभरत दिवाकर चिह्नोंके इसका जवाब दिया और अपनी गति दिखानेके लिये दोनों दूतों और भानजेको मार डाला ।

काममें हाथ नड़ी देना चाहिये । वालेसने उत्तर दिया कि स्काटलेण्ड की शत्रुके पजेसे छुड़ानेके लिये इससे भी ज़ट्टकर भयंकर काम करना होगा ।

एडवर्डकी छावनीसे लौटकर वालेसने सवेरे तक पाराम किया । खूब तउके समस्त जातीय सेना एडवर्डता मुतागला करने लगे तय्यार हुई । वालेस स्वयं बायउ और प्रचिगलेकके साथ रिसालेके प्रागे हुआ । जान ग्रेहम, एडम और समर्विल सहित बीचमें रहा । सर जालटर और उसका पुत्र डेविड तथा सर जान टिन्टो रिसालेके पीछे रहे । रिसालेके इन तीन स्तम्भोंके पीछे वालेसने पेटल सेना रखी और उसे हुक्म दिया कि तुम लोग जल्द मत लउने लगना । क्योंकि उनके पास न तो बढिया हथियार थे और न हारने पर भागनेके लिये सजेसजाये घोड़े । इसके बाद उतर्ग सब सैनिकोंकी सम्बोधन करके कहा कि जबतक रणमें विजयलक्ष्मी प्राप्त न हो तबतक कोई टूटपाट न सचावे ।

इस तरह तय्यार होकर वह लोग एक मन और एक वाक्यसे धीरे धीरे अङ्गरेजी मोर्चेकी तरफ जाने लगे । राहमें टाम हालिडे दो पुतों सहित और जार्डन कार्कपेट्रिक तीन सौ सेना सहित आभिये । उनके अचानक आजानेसे स्काटिश सेनाके आनन्द की सीमा न रही ।

वालेस अङ्गरेजी छावनी अच्छी तरह देख आया था इस लिये जिधर इङ्गलेण्डनरेय या उनके प्रतिनिधिका खेमा था उसने अपनी सेना उधरही चलाई । मानो सुनसान कन्दरेमें जोर शोरका जलप्रपात आपडा । अङ्गरेजी सेनाको इतना खयाल न था कि यहाँ पर हमला होगा इससे वह तय्यार न थी । सो पहले तो बड़ीही गडबड मची पीछे अङ्गरेजोंके धैर्यगुणसे उनकी छावनीमें फिर सिलसिला बधा । पहली सुठभेड बड़ी भयानक हुई । अङ्गरेज-सेना-नायक अर्ल आफ् केन्ट पाच सौ सेना लेकर रातको घुसने गये थे वह भाटपट आकर शिविरकी रक्षाके लिये जीजानसे चेष्टा करने लगे । उर गे हग प्रभृति स्काटिशसेना-नायक वालेसकी बगलसे आडटे ।

बड़ी तेजीसे स्काटिश सवार और पैदल सेना अर्ल आफ केन्टकी तरफ दौड़ी। उक्त अर्ल अद्भुत वीरतासे राजाके चन्दोविकी रक्षा करते थे। किन्तु वालेसकी तलवारने जल्दही उनकी देहके दो खण्ड कर दिये। सेनानायकके मारे जानेसे सब अङ्गरेजी सेना मैदान छोड़कर भागी। मैदानमें चार हजार और भागते वक्त सात हजार अङ्गरेजों सेना मारी गई। बीस हजार भाग गई। स्काटों ने कल्टर होप तक उसका पीछा किया। फिर सेनानायकके डुक से लौट आये।

परीचाकी लिये लागजैमलने आऊतो दस हजार सेना लेकर बीगर जानेका हुकुम दिया। वेस्टमोरलेण्ड और पिकाडींके जमींदार भी एक एक हजार घुडसवार लेकर उनके पीछे गये। रात्रिमें बारबिज, सर राल्फ ग्रे, आयसके डियालेस प्रभृति भी अपनी अपनी फौज लेकर आऊके साथ हुए। यह सन्धी अङ्गरेज सेना जब बीगरके मैदानमें पहुची तो सामने सिर्फ अङ्गरेजीकी लाशें देखी, स्काट एक भी न देखा। तिनहु तुरन्तही स्काटसेनाका गुप्त स्थान मालूम होगया। अङ्गरेजीके आगेकी सार पातेही वालेस समस्त जातीय सेनासहित रोपिंग नामक एक दलदलके किनारे आया। अपने घोड़े पीछे रखकर घुडसवार, पैदलसेनाके शामिल कतारबन्द होकर दलदलके किनारे रुड़े हुए। अङ्गरेजी रिसाला और पैदल सेना दलदलके दूसरे किनारे थी। अपने सेनापतिके हुक्मसे अङ्गरेजी रिसाला दलदलमें चला। ज्यादा आगे बढ़ा लोही घोडोके पैर कीचडमें ऐसे फस गये कि निराल न सके। स्काटसेना आक्रमणकी वाट देखती थी अब गेरकी तरह उछलकर दलदलमें फसे शत्रुओं पर टूट पड़ी। एक एक करके सब अङ्गरेज स्काट वीरोंकी तलवारोंसे मारे गये। पिकाडींका जमींदार सर ग्रेहमके हाथसे और डाक आफ वेस्टमोरलेण्ड वालेसके हाथसे मारे गये। दोनों सेनापतियोंके मारे जानेसे बाकी अङ्गरेज सेना इधर उधर भागने लगी। उसके मुंहसे इस दूसरी हारका समाचार सुनकर अङ्गरेज सेनापति बडाही शोकाकुल हुआ और सालवे पार होकर इंग्लेण्ड चला गया।

विजयलक्ष्मी प्राप्त करके वालेसने कार्कनमें एक महती जातीय सभा की। उस सभामें वह एक स्वरसे जातीय अभिभावक बनाया गया। सबने उसकी अधीनता स्वीकार की।

इसकेबादही वालेसने दक्षिणस्काटलेण्डकी यात्राकी। वहाके अङ्गरेज कप्तान और शेरिफोंको निकालकर उनकी जगह स्काच कप्तान और शेरिफ बहाल किये। बीगरकी अद्भुत विजय बिना यह रहोवदल संघर्षमें न होने पाता।

इस विजयके बाद स्काटलेण्डके पहाड़ी किले एक एक करके वालिसके हस्तगत होने लगे । क्री नदीके किनारे एक बड़ी चट्टान पर क्रगनटन कैमल नामका एक किला था । क्री नदीसे सागरका संगम होनेसे तिकोनी भूमि पर यह किला बना था । इसली रक्षा के लिये ६० अङ्गरेज चौकीदार थे । उसके अन्दर जानेका सिर्फ एक रास्ता था । वालिस सब सेना नीचे छोड़कर सिर्फ दो आदमियों सहित दरवाजे पर आया । चौकीदार बेखबर थे मनुष्योंके अचानक आजानेसे भीचकसे रह गये । वालिसकी जबरदस्त ठोकरसे दरवाजा खुल गया । दरवान, प्रहरी सब एक करके तलवारके गिकार हुए । ६० अङ्गरेज मारे गये । खबर देनेके लिये सिर्फ एक बूढ़ा पादरी और दो औरते रह गईं । जितने दिन किलेकी रमद न निपटी उतने दिन वालिस सेना सहित यहाँ रहा । रमद खतम होजाने पर किलेका दरवाजा तोड़कर खला गया ।

कराया । स्काटलेण्ड का शत्रु समझता वालेसने उन्हें नमस्कार नहीं किया और बिना शिष्टाचार किये एक पार्श्व ही उनके प्राणिका कारण पूछा । प्रधानमन्त्रीने उत्तर दिया—“इंग्लेण्ड के महाराजने इस वक्ता कुछ दिनके लिये सन्धि करने के इरादेसे मुझे आपने पास भेजा है । आपका क्या इरादा है ?”

वालेसको अङ्गरेजोंका बहुत विग्राम न था, तथापि उसने लाचार होकर सन्धि करना स्वीकार किया । सन्धि हुई कि एक वर्षतक इंग्लैंड और स्काटलेण्ड में कोई झगडा न होगा । सन्धिदिन जो स्थान जिसके दखलमें है वह उसीके दखलमें रहेगा । १२८७ ईस्वी के फरवरी महीनेमें यह सन्धिपत्र लिखा गया और दोनों तरफसे सच्ची की गई । इस सन्धिके बाद वालेस कामनज किलेमें जाकर रहने लगा । अङ्गरेजोंकी बातों और कामों पर उसे बहुत विग्राम न था इसलिये उसे बहुत बेखवरीमें रहनेका साहस न हुआ ।

सन् १२८७ ईस्वीसे पहले वालेसका नाम इतिहासमें नहीं आया था । स्वदेशके लिये जीवन समर्पण करके लगातार अङ्गरेजोंसे लड़ते भिड़ते रहने और कदम कदम पर विजयलक्ष्मी प्राप्त करनेसे बहुत जल्द उसका नाम समस्त स्काटलेण्ड में मशहूर होगया । बीगरकी लड़ाई जीतने पर वह स्काटलेण्ड का रक्षक माना गया । इंग्लेण्ड के महाराज गर्वित एडवर्डको भी उससे सन्धि करना पड़ी । किन्तु इस छोटीसी विजयसे उसका चित्त फूलकर कुप्पा होनेवाला नहीं था । वह स्काटलेण्डको एक दम स्वाधीन बनाना चाहता था इस लिये एका अङ्गरेजका चरण भी स्काटलेण्डकी छाती पर रहते उसे विश्रामकी आशा कहां ?

## नवां अध्याय ।

वालेसका स्वप्न—अङ्गरेजोंका विश्वासघात और  
आयर बारिकका हत्याकाण्ड ।

वालेसने जो आशका की थी वही हुई । अङ्गरेजोंके विश्वास-  
घातके लक्षण बहुत जल्द मालूम होगये । अप्रैल महीनेके आरम्भ  
मेंही एडवर्डने कारलाइलमें एक सभाकी । इस सभामें सब अङ्गरेज  
सेनापति बुलाये गये । विश्वासघातक आमेर डि वालेसके सिवा  
और कोई स्काट नहीं बुलाया गया । इस सभामें यह बात ते हुई  
कि १२६० ई०की १८वीं जूनको आयरनगरके बारिकमें एक सड़ती  
सभाका अविवेक्षण होगा । सब बड़े आदमियोंकी उसमें धानके  
लिये ल्योता दिया गया । आयरके गवर्नर पर्यी आरिन्गकी  
बात पड़नेहीसे जानते थे इसलिये उन्होंने यह कहकर उस  
जर्मिस अर्स्याकार किया कि मैं इस विश्वासघातका अनुसोदन नहीं  
करूंगा ।

इसे लो ।' तनवारकी चमत्से दमोदिगाए गतागमान हो गईं । वह बूढ़ा बालेसजी एत पर्वतकी घाटीमें लेजाकर प्रसर्धान होगया । बालेसकी आग्नीनि बहुत दूर तक उसका पीछा किया फिर रुक गईं । बालेस उसका विगेण ज्ञान जाननेके लिये व्याकुल हुआ । उसने देखा कि सामने कुछही दूर पर मेघमालासे एक बड़ा भारी प्रतारान निकलकर राससे सातने सैण्ड तक समस्त स्काटलेण्ड में फैल गया । उसी अग्निजुगुण्डसे एत स्वर्णमयी देवीका आविर्भाव हुआ । देवीकी देहकी प्राभासे दमोदिगाए चमक उठी । यहातक कि भगवान सूर्यदेव भी मन्निन होगये । देवी मूर्ति धीरे धीरे बालेसकी तरफ उतरने लगी । उसने बालेसके पास आकर कहा—“वत्स ! यह जाल छरा दण्ड पहण करो, ईगरेने निपीडित जातिका उधार करनेके लिये तुमको अविनायक बनाया है । हृदय में साहस करके उसका यह बड़ा काम पूरा करो । इस पृथिवीमें तुम्हें पुरस्कारकी आशा बहुत कम है किन्तु वैजयन्ती-धाममें तुम्हारे लिये सिंहासन तय्यार है ।” यह कहकर देवी बालेसके हाथमें एक पुस्तक देकर जिस मेघमालासे निकली थी एकवएक आकाश की ओर जाकर उसीमें मिल गई । स्वप्नमें बालेसने पुस्तक खोल कर देखा कि उसका पहला भाग जस्तेके अक्षरोंसे, दूसरा सोनेसे और तीसरा चांदी के अक्षरों से लिखा है । लिखा हुआ पढ़नेकी चेष्टा करनेमें बालेसकी नींद टूट गई । वह झट बेचसे उठकर गिर्जेके बाहर आया और पादरीने स्वपका पूरा हाल कह सुनाया । पादरीने यथाशक्ति उसका मतलब निकालनेकी कोशिश की । कहा—महात्मा से टण्डूने तुम्हें यह तलवार दी है । जिस पहाडके पास वह तुम्हें ले गये वह अत्याचारोंका तूदा था तुम्हें इन अत्याचारोंका बदला लेनेका इशारा किया है । वह प्राग स्काटलेण्डके अशुभकी सूचना है । वह देवी स्वयं कुमारी सेरौ है । इस दण्डसे तुम्हें स्काटलेण्डका शासन और शत्रुका दमन करना होगा दण्डके लाल रंगसे युद्ध और खून-बी जाहिर होती है वह तीन भागोंमें बटी हुई पुस्तक तुम्हारे





रावर्ट वायड, सन रेनाल्डके पीछेही पीछे प्राये थे उन्होंने रेनाल्ड की शोचनीय हत्याकी खबर पाकर वालिसके पीछे सायियो सहित एक होटलकी गरण ली । वालिसका एक प्रोग सहचर मायनेगुडका स्टीकन आयाकी सभामे जाता था । राहमे वालिससे रिश्ते-तौ किसी ओरतने रेनाल्ड आदिकी हत्याका हान उभमे कहा । उसलिये वह भी उसी होटलमे जाकर वायडसे मिना गोर बहासे सन लागलन वनकी तरफ चल दिये ।

इधर वालिस करसबीसे सन्धिपत्र लेकर आयाकी हाजगीकी तरफ चला । रास्तेमे उसी स्त्रीसे भेट हुई । उसने उस भयकर हत्या-काण्डकी बात उससे कही ओर उससे इसका बदलालेनेका अनुरोध किया । वालिस यह समाचार सुन कर हफावका ओर शोकाकुल हो गया । उसने एडमवालिस और विनियम काफोर्डके निहट यह खबर भेजनेका मार उस स्त्रीको देकर वायड और स्टीफनसे मिलनेकेलिये लागलनकी यात्रा की ।

उधर उसकी जवरदस्ती सभामे लानेके लिये सोलह अङ्गरेज सैनिक भेजे गये । राहमे वालिससे उनकी भेट हुई । वह वालिस को पहचानते नहीं थे । किन्तु उसकी अद्भुत वीरताने जल्दही उसका परिचय देदिया । उसने और उसके साथियोंके क्षणभरमे दस अङ्गरेजीको मार डाला । बाकी ६ जान लेकर भाग गये ।

आयरके नये गवर्नर आरनुल्फने उस सभामे जितने अङ्गरेज आये थे उनका उत्साह बढानेके लिये सबको गारुटका खिताब दिया । उस सभामे कोई ४ हजार अङ्गरेज जमाहुएये । गवर्नरने वादा किया कि मृत स्काट वैरनोकी जायदाद उन लोगीमे बांट दी जायगी । समूची सभ्य मण्डलीके सज्ज्वनार्थ एक बडाभारी भोज हुआ । अङ्गरेज खान पानके रेतपे तसे बदमस्त होगये । वही विखासिनी स्वजातिप्रेमिका स्त्री यह खबर लागलेनवनमे वालिसके पास लेगई । इस बीचमे वालिस के पास बहुतसे आदमी जमा होगये थे । उसने आज उनकी आयर पीण हत्याकाण्डका बदला लेनेका जोश दिलाया । यद्यपि वह

पहले से स्काटलेड का अधिनायक बनाया गया था तथापि उस समय वह सब लोग सौजूद न थे इससे उसने नये चुनावके लिये पाच आदमी चुननेका अनुरोध किया । उसके अनुसार वालेस वायड क्राफोर्ड एडम और अचिङ्गलेक चुने गये । इन पाँचाने चिट्ठी डालकर अपने अपने भाग्य की परीक्षा करना चाही । तीन बार चिट्ठी डाली गई तीनों बार वालेसके ही नाम निकली । तब उसने मेनापतिका पद ग्रहण किया और तनवार कृकर प्रतिज्ञा की कि जबतक आयर की हत्याका बदला न लंगा तबतक पानी न पीऊंगा ।

राबर्ट वायड, सर रेनाल्डके पीछेही पीछे आये थे उन्होंने रेनाल्ड की शोचनीय हत्याकी खबर पाकर वालेसके बीम साथियों सहित एक होटलकी शरण ली। वालेसका एक और सहाचर आयर्लैण्डका स्टीफन आयरकी सभामें जाता था राहमें वालेसके रिश्तेकी किसी औरतने रेनाल्ड आदिकी हत्याका हाल उससे कहा। इसलिये वह भी उसी होटलमें जाकर वायडसे मिलता और वहासे सब लांगलन बनकी तरफ चल दिये।

दुधर वालेस करसबीसे सन्धिपत्र लेकर आयरकी छावनीकी तरफ चला। रास्तेमें उसी स्त्रीसे भेट हुई। उसने उस भयकर हत्याकाण्डकी बात उससे कही और उससे इसका बदला लेनेका अनुरोध किया। वालेस यह समाचार सुनकर हक्कावक्का और शोकाकुल हो गया। उसने एडमवालेस और विलियम क्रॉफोर्डके निजट यह खबर भेजनेका मार उस स्त्रीको देकर वायड और स्टीफनसे मिलनेकेलिये लांगलनकी यात्रा की।

उधर उसकी जबरदस्ती सभामें लानेके लिये सोलह 'अङ्गरेज' सैनिक भेजे गये। राहमें वालेससे उनकी भेट हुई। वह वालेस को पहचानते नहीं थे। किन्तु उसकी अद्भुत वीरताने जल्दही उसका परिचय देदिया। उसने और उसके साथियोंके क्षणभरमें दस अङ्गरेजीको मार डाला। बाकी ६ जान लेकर भाग गये।

आयरके नये गवर्नर आरनुल्फने उस सभामें जितने अङ्गरेज आये थे उनका उत्साह बढ़ानेके लिये सबको नाइटका खिताब दिया। उस सभामें कोई ४ हजार अङ्गरेज जमाहुए। गवर्नरने वादा किया कि सेंट स्काट बैरनकी जायदाद उन लोगीमें बांट दी जायगी। समूची सभ्य मण्डलीके सम्बर्धनार्थ एक बड़ाभारी भोज हुआ। अङ्गरेज खान पानके रीतपेलसे बदमस्त होगये। वही विश्वासिनी स्वजातिप्रेमिका स्त्री यह खबर लांगलनवनमें वालेसके पास लेगई। इस बीचमें वालेस के पास बहुतसे आदमी जमा होगये थे। उसने आज उनकी आयर भीषण हत्याकाण्डका बदला लेनेका जोश दिलाया। यद्यपि वह

पहले से स्काटलेखका अधिनायक बनाया गया था तथापि उस समय यह सब लोग मौजूद न थे इससे उसने नये चुनावके लिये पांच आदमी चुननेका अनुरोध किया । उसके अनुसार वालिस वायड क्राफोर्ड एडम और अचिङ्गलेक चुने गये । इन पाँचोने चिट्ठी डालकर अपने अपने भाग्यकी परीक्षा करना चाही । तीन बार चिट्ठी डाली गई तीनोंबार वालिसकेही नाम निकली । तब उसने सेनापतिका पद ग्रहण किया और तलवार छूकर प्रतिज्ञाकी कि जबतक आयरकी हत्याका बदला न लूँगा तबतक पानी न पीऊँगा ।

उसी दम वालिस की कार्य प्रणाली स्थिर हुई । उसने स्थिर किया कि आयर की वारक और शहरके जिन जिन मकानोंमें आज रातको अङ्गरेज ठहरे हैं उनमें आग लगादेगी । उसने उस बिस्वासिनी स्त्रीको और आयरके कुछ आदमियोंको हुक्म दिया कि तुम लोग जिन मकानोंमें अङ्गरेज हैं उनपर खड्गियासे दाग दे आओ और वीर आदमियोंको भेजा कि वह उन सब मकानोंके दरवाजोंपर जलनेवाली चीजे रख दें । रावर्ट वायडकी पचास आदमियोंसहित किलेके दरवाजे पर इसलिये तैनात किया कि सब चारों ओर आग लगे तब नगरकी रक्षाके लिये किलेसे सेना बाहर न निकलने पावे । बाकी आदमियों सहित वह स्वयं छावनी की तरफ चला और दागवाले सब मकानों के दरवाजों पर आदमी तैनात कर दिये । एकही वक्त वारक और दागवाले मकानों में आग लगा दी गई । जलनेवाली चीजोंके सयोगसे आग लगते ही चारों ओर धधक उठी मतवाले अङ्गरेज जहाजजा थे वही जलकर भस्म होगये । उस रात को किलेमें तैनात थोड़ीसी सेना थी क्योंकि प्रायः सब सेना सभ में आ गई थी । जो लोग किलेमें थे उनमेंसे बहुतेरोंने अग्निकी ज्वाला देखकर किलेसे बाहर आनेकी कोशिश की वायडने कुछ रोक टोक न की । लेकिन किले में घुस कर जो लोग वहाँ छिपे थे उन सबको मारकर किला लेलिया । वहाँ उसकी रक्षाके लिये २० आदमी छोड़कर नगर की शान्ति रक्षा में वालिसकी मदद करनेके लिये बाकी साथियों

सहित बाहर आया । उम रात आयरमे सब मिनाकर ५ हजार अङ्गरेज अपने घोर पिछामवातका प्रायचित्त करने के लिये जाल के गाल में गये । १२६७ ईस्वी की प्रेमचतुर्मे यह घटना हुई ।

यथासमय सब आकर मिले, तब वालेसने बिना बिनख ग्लासगो की यात्रा करनेका महत्त्व किया । क्योंकि वहा भी ऐसी एक सभा होनेकी बात थी और वालेसकी खटका हुआ कि कहीं हमारे हित मित्रों पर वहा कोई विपद न पड़ी हो । उसने आयर के मुख्य मुख्य लोगोंको बुलाया । उनके हाथमें लौटने तक किले और शहरकी रक्षाका भार देकर तीन सौ सवारों सहित ग्लासगो की कूच किया । उनके पास घोड़े न थे इसलिये उन्हीने मृत अङ्गरेज सैनिकोंके घोड़ोंसे अपने अपने लायक ३०० घोड़े चुन लिये । ३०१ सवार बड़े वेगसे वातकी वातमें ग्लासगोके तोरणद्वार पर जा पहुँचे । अङ्गरेज डरके मारे अधीर हुए । विशपवेकके हाथ नगर और किलेकी रक्षाका भार था उन्हीने भट एक हजार सेना इकट्ठी की । वालेसने अपनी सेनाके दो टुकड़े करके एक भाग अचिंगलेक को दिया और एक भागका सेनापति स्वयं हुआ । दोनोंने दो तरफसे शहर पर हमला करनेका प्रस्ताव किया । अङ्गरेज वालेस की सेना थोड़ीसी देखकर ताज्जुबमें आये । फौरनही दोनोंदलोंमें लड़ाई छिड़ गई । यद्यपि अङ्गरेजोंकी घोर प्रायः चौगुनी सेना थी तथापि वालेस और उसके वीरद्वन्द्व अदमित तेजसे अङ्गरेज सवारोंको भूमि पर गिराने लगे । इधर अचिंगलेककी सेनाने उत्तर की तरफसे नगर पर आक्रमण किया । तब अङ्गरेज सेना दो हिस्सोंमें बंट गई । अचिंगलेककी सेनाने बड़े वेगसे टूटकर शत्रुसेना को तितर बितर कर दिया । इसी बीचमें वालेसने भी आगे बढ़कर एक तखवारसे अङ्गरेजी भाण्डेवालेका सिर काट डाला । भाण्डेके गिरतेही अङ्गरेजी सेनाके हृदयका बल टूट गया । चारसौ अङ्गरेज विशपवेकको लेकर दक्षिण जंगलकी तरफ भागे । वालेसने यह सहित पीछा करके बहुतोंको पछाड़ा । सर आमेर डी

वालेस ही मददसे वेक योडेसे साधियों सहित जान लेकर भागने पाये थे ।

जातोउदलकी इस बहादुरीसे सतुष्ट होकर स्काटलेन्डके बहुतेरे जमीन्दार (लार्ड) धीरे धीरे एडवर्डके विरुद्ध सिर उठाने लगे । वूल्फ, आयोल, मेनटीय, लोरन, सर नील केम्बल डङ्गन प्रभृति पुराने खान्दानी लोग एडवर्डकी अधीनता छोड़कर जातीयदलके साथ सझानुभूति दिखाने लगे ।

मेकफेडियन और सिर्फ ४ और जमीन्दार अङ्गरेजीकी तरफ रहे । उन्होने १५ हजार सेना लेकर सर नील केम्बलके नगरको कूच किया । यह शहर खाईसे घिरा हुआ था जिस पर सिर्फ एक पुन लटक रहा था । केम्बलने वह पुल फेंक दिया । शत्रुसेना को खाई पार होनेका साहस न हुआ वह इसी पार बैठी रही । इधर केम्बलने वालेसको खबर देनेके लिये दूत भेजा । केम्बल और वालेस दोनों डडीके स्कूलमें एकही साथ पढे थे । स्वदेशानुरागका भाव दोनोंके दिलमें उसी समय बढा । अर्ल डङ्गन दूत वने उन्होने ढूँढते ढूँढते अन्तमें डनडफ किलेमें वालेसको पाया । वह सुनतेही सर जान ग्रेहमको लेकर केम्बलकी मददको खाना हुआ ।

इस समय एडवर्डके पक्षपाती अर्ल रोकबी असह्य सेनासहित स्ट्रिंगा जैसल नामक किलेमें थे । वालेस उसी राहसे आता था उसने उस किले पर भी अधिकार जमानेकी ठान ली । जब वालेस उसके दरवाजे पर पहुचा तब अर्ल मलकम ससैन्य उससे आसिद्धा । उसने मित्रता सेनाके दो भाग करके पहला भाग मलकमके जिम्मे छोड़कर एक मो हट्टे कट्टे और लडाके वीरोको लेकर ग्रेहम सहित किलेमें प्रवेश किया । रोकबीने उस थोड़ीसी स्काटसेनाकी परवा न करके १४० तीरन्दार्जसि उसका मुकाबला किया । दोनोंमें घमास न युद्ध हुआ ।

ग्रेहम ज्योंही आगे बढा त्योंही एक अङ्गरेजी तीरन्दार्जना तीर उसके घोड़ेको लगा । ग्रेहम कूदकर जमीन पर

आया । यह देख वालेस भी घोड़ा जोड़कर पैदल हुआ । दोनों पांव-  
प्यादे घोर युद्ध करने लगे । इतनेमें मलकमने बाकी सेना लेकर  
क्रिलेमें प्रवेश किया । अङ्गरेज सेनाके अत्र कान गूँडे हुए । वह  
भागनेकी फिक्रमें लगी अगर राह न मिली । : हाथापाई  
करते वालेस रोकथीके साग्रने आ पहुँचा । झट उसकी तलवार  
ने रोकथीको काट डाला । धीरे धीरे स्काटवीरोंके अव्यर्थ अर्न्तसे  
सब अङ्गरेजों सेना मारी गई । सिर्फ रोकथीके दो पुत्र और २०  
सैनिक रहे । उनके आत्मनमर्पण करनेमें स्टर्लिंगकैमल स्काटीके  
हाथ आगया । इस दुर्गकी रक्षाका भार मलकमनी देकर वालेस  
केम्बलकी सहायताको चला ।

मेकफेडियन स्काट लोगो पर बड़ा भारी जुदा करने लगा या  
उसके रक्तके प्यासे सैनिक बालक और स्त्रीको मारनेमें भी नहीं  
संजुचातेथे इससेवालेसने प्रतिज्ञा कीकि यातो उसे उसके पापका पूरा  
दण्ड दूँगा या लडाईमें खान दूँगा । उसने दो हजार सेना लेकर  
केम्बलकी तरफ बूँव किया । केवल उक्त समय मार्गाइलशायरमें  
वालेसकी बात देखते थे । उक्तन वालेसका पयप्रदर्शक होकर उसे  
मार्गाइलशायरको ले चला ।

वालेसकी सेना चलते चलते थक गई । विशेषकर नाटे  
शरीरके कुछ सैनिक बहुत पिछड़ गये । आक्रमणमें विलम्ब करना  
या तितर बितर होकर आक्रमणकरना—दोनोंकी हारकीजडसम्भ-  
वार वालेसने अपनी सेनाके पाँच भाग किये । छोट छोटकर सर्वो-  
त्कृष्ट एक सौ सवार खय लिये, एक सौ सर जान ग्रैहमकी दिये  
थीर सर रिचार्ड लन्डिन और एडम वालेसकी पाँच पाँच सौ दिये ।  
यह बारहसौ चुनी हुई सेना लेकर वह लोग आगे बढ़े । बाकी  
सेनाकी धीरे धीरे आगे बढ़नेका हुक्म देगये ।

इस तरह कतार बाधकर वह लोग ग्लान्डीफार्डमें आपहुँचे ।  
यहां सर नील केम्बलसे मुलाकात हुई । केवल वालेससे मिलने  
दिये कुछ आगे बढ़ आये थे । वालेसकी पाकर उनके आनन्द



की सीमा न रही। केम्बलकी तीन सौ सेना सहित गिल माइ-केल नामका एक आदमी शत्रुसेनाका हालचाल लेनेके लिये भेजा गया। उसने एक शत्रुदूतसे सुना कि अङ्गरेजसेना उसीदिन थेसमोरसे चली जायगी। पीछे ऐसा न हो कि वह दूत जाकर मेकफेडियन को हमारी खबर दे इस खबरसे स्काटदूतने अङ्गरेज दूतको मार डाला। फिर उसने आकर वालेसको यह खबर दी।

केम्बलकी सेना लेकर अब वालेसके पास अठारह सौ सेना हो गई है। वीहड रास्तेका ख्याल करके वह लोग घोड़े छोड़कर पैदल शत्रुसेनाके सामने चले। मूसलधार हथि की तरह शत्रुसेना पर टूट पड़े। शत्रु सेना तितर बितर होगई। सख्याकी अधिकतासे फिर उसका सिलसिला बध गया। वालेस, थेहम, केम्बल, लन्डिन एडम वालेस और राबर्ट वायड—इन छ. वीरोंका अद्भुत रणपाण्डित्य और अमानुषी शक्ति देखकर शत्रुसेना चकित और भयभीत हुई।

निराशके जोशमें मेकफेडियन और उसकी आइरिश सेना लडाईमें जान पर खेलने लगी। दो घण्टे तक घोर युद्ध किया। किन्तु स्काटिश जातीय दलका समस्त वेग अन्तमें मेकफेडियनकी आइरिश सेना पर जापड़ा। वह उसे सन्हाल न सकी और लडाई छोड़कर भागी। कुछ पहाड पर चढ़ गई किन्तु ज्यादातर हथियारोंसे बचनेके लिये जलमें कूद पड़ी। दो हजार आइरिश जलमें कूदे और फिर न निकल सके। आपही जलमें डूब गये। मेकफेडियनकी स्काटिश सेना अन्ततक लड़ी अन्तमें उसने हथियार डालकर वालेससे चमत्ता मागी। वालेसने हुक्म दिया कि हरगिज सज्जातिका खून न गिरने पावे। मेकफेडियनने भागकर एक कन्दरे की शरण ली थी। डकानने बन्हा जाकर उसको मार डाला और उसका सिर लाकर वालेसको उपहार दिया।

जिन्होंने वालेसके शान्तिकी भीख मागी उन्हें उन सबको उनकी जमीन लौटादी। लोरैनमें सर्वत्र अभूतपूर्व शांति

विराजने लगी। स्वटेगानुरागके पुरस्कारके तौर पर वालिमने डकानके हाथमें लोरेनका क्लिना सौंप दिया।

धीरे धीरे अमर्या खजातिप्रेमी स्काट वालिमके झगड़ेके नीचे आखड़े हुए। सर जान रामजे, पुगेरित सिनक्लोयर, लार्डलुआर्ट आदि उनमें मुख्य थे। इधर वारोतकी जो सेना पिछड़ गई थी वह भी विजयक्षेत्रमें प्रापहुची। मैदानमें मरी हुई गनुसेनाके शरीरोंमें जो हथियार और सामान प्रब भी झोड़ूट थे वह सब इमने लेलिये। अब स्काटसेनाकी सत्ता बहुत बढ गई गौर वह विजयके उल्लासमें मस्त होगई।

वालिसने सुना कि स्कौन नगरमें आर्सेस वी नामक एक अङ्गरेज जन है। वह सर विलियम डगलसको लेकर वहा पहुंचा। उसके अचानक आक्रमणसे घबराकर वहावाले भागनेलगे। आर्सेसभी कुछ आदमियों सहित निकल गया। वाको सब इन दोनोंके हाथ सारे गये। वालिस और डगलस कीमती चीजे लूटकर जातीय छावनीको लौट आये।

सुविख्यात ब्रूसके ससैन्य आजानेसे इस समय जातीय दलका बल बहुत बढ गया था। जिस जातीय स्वाधीनताका यज्ञ वालिसने आरम्भ किया है सुप्रसिद्ध बैनकवरन रणक्षेत्रमें वीरवर ब्रूस उस यज्ञ को समाप्त करेंगे।

स्काटलेन्डके विद्रोहने ऐसा भीषण आकार धारण किया कि एडवर्ड अपनी फ्रिन्ड्सकी युद्धयात्रा रोक देनेको लाचार हुए। उन्होंने भानजे लार्ड हेनरी, पर्सी और राबर्ट डी हलीफोर्डके अधीन चालीस हजार पैदल और तीस सवार सेना स्काटलेन्डको भेजी। जब यह महती अङ्गरेजसेना एनगडेलसे होकर जारही थी उसी वक्त रातको कुछ स्काटोंने उस पर आक्रमण किया। इसमें अङ्गरेजीका नुकसान बहुत हुआ परन्तु स्काट उन्हें रोक न सके।

इस अङ्गरेज सेनासे स्काटसेनाकी इरविङ्गमें भेट हुई। स्काट उनके इरादेसे एक जंघेखितमें सजिसजाये अङ्गरेजीकी राह देखते थे।

स्काटकिा दल बडाजवरदस्त था उसकोलेकर लडना बहुत मुशकिल न था किन्तु स्काटलेन्डकी दुर्भाग्यसे जातीयदलमें इसी समय सेनाप-  
तित्वको लेकर बडा फसाद खडा होगया । जिस जातिका भाग्य फूटता है वह ऐसीही घडाबन्दीमें प्रागल होकर जातीय कर्तव्य भूल जातीहै । जातीय कर्तव्य भूलकर इस समय लुन्डिन; स्टुआर्ट, राबर्ट ब्रूस, सर विलियम डगलस, अलकजेन्डर डी लिनसे और वालेसके बहाल किये हुए नये विगय विसार्ट प्रभृति जातीय नेता अपने साथियो सहित जातीय दल छोडकर अङ्गरेजी छावनीमें चले गये । १२८७ ई० की तारीख ८ वी जुलाईको इन विस्वासघातक जातीय नेताओंसे एडवर्डकी सन्धि हुई । एडवर्डने इस सन्धिके फैसेलेमें जातीय नेताओंकी पूरी स्वाधीनता और जमानत ली । अङ्गरेजीने समझा था कि चारोंओरसे निराश होकर वालेस अन्तमें इसी सुलहनामे पर सही करेगा । किन्तु उन लोगों की आशा पूरी नहीं हुई । जिसने स्वजातिके चरणोंमें अपना जीवन समर्पण कर दिया है, जिसने अपना स्वार्थ स्वजातिके स्वार्थ पर न्यो-  
छावर कर दिया है वह क्या जातीय मर्यादाके बदले शत्रुसे अपना प्राण भीख माग सकता है ? नहीं—हरगिज नहीं । वह स्काट-  
केसरी सर जान ग्रेहम, सर एन्ड्रू मरे और दूसरे हितमित्री और सहचरों सहित मनमलीन करके पहाडकी ऊंची चोटियोंकी तरफ चला गया । इधर अङ्गरेज सेनापति पर्सी और क्लौफोर्ड स्काट लोगोंमें फूट डालकर और शरणागत स्काट बैरनोंको अधीनताकी बैडी पहनाकर भटपट इङ्ग्लैन्डकी चलदिये ।

राहमें जाते जाते स्काटोंके जीमें आया कि सेन्ट जानस्टन किले पर दखल करना चाहिये । यह किला खाई और दीवारोंसे घिरा था । दीवारें बहुत ऊंची न थीं इससे खाई पर तख्ते बिछाकर भट एक हजार सैनिक खाई पार करके और दीवार फादकर किले के भीतर घुस गये और दरवाजा खोल दिया । सम्बन्धी स्काट सेना भीतर चली गई । अङ्गरेज अचानकके आक्रमणसे घबरा गये ।

किलेदार सर जान स्टिवार्थ मुख्य मुख्य ६० सैनिक लेकर नाव पर सवार हो डन्डीनगरको भाग गये । किले पर हमला करनेके समय रथवेन नामके एक स्क्वायरने तीस माथियों सहित पहुँचकर वालेस को बड़ी सहायता की । तीन दिन वालेस किलेमें लूटपाट करता रहा फिर रथवेनकी किला सौंपकर उत्तरको चला गया ।

उसने एवर्डिनमें एक जातीय सभा की । उसके आनेसे एवट काउपेर नगर छोड़कर भागगये । उत्तरकी तरफ जाते जाते ग्लामिस नगरमें वालेस विगप सिनके यरते मिला । सिनक्लेयर उस के साथ होलिये । ब्रेचिनमें आकर उन्होंने रात बिताई । सर्वेरे तय्यार होकर स्काटलेण्डका झण्डा उड़ाया और इङ्गलेण्डके विरुद्ध खुन्न-खुन्ना युद्ध की घोषणा की । मियरन्स जिलेसे होकर वहलोग गये । अगरेज चारोओर डरकर भागने लगे । अन्तमें ४ हजार अङ्गरेजीने केन शहरके गिर्जेमें आकर शरण ली । उस गिर्जेके विग्रहने इङ्गलेण्ड जानेकी आज्ञाचाही । किन्तु वालेस आयरका विश्वासघात यादकरके बदला लेनेको तयार हुआ । उसने गिर्जेमें आग लगा दी । देखते ही देखते चार हजार अङ्गरेज जलकर राख होगये ।

इसके बाद वह लोग एवर्डिनमें गये वहाँ एक सौ अङ्गरेजी जगी जहाज माल असबाबसे लदे समुद्रमें खड़े थे । वालेस सेनासहित उन पर टूटपड़ा और लूटपाटकर अन्तमें आग लगादी । पुरोहित स्त्रियों और बालकोंके सिवा और किसीको भागने नहीं दिया । जहाजके बाकी अङ्गरेज जल मरे जो किनारे थे वह वालेसकी तलवारके शिकार हुए ।

वालेसने विजयीसेनासहित इसके बाद बूकनके लार्ड बोमेण्टकी तरफ झूठ किया । अङ्गरेज लार्ड उनके आनेकी खबर सुनतेही शहर छोड़ कर समुद्रके रास्ते भागगये । इसके बाद उसने डन्डी किलेपर हमला करनेका विचार किया । इसकी छोड़कर फोर्थके और सब किले इस समय वालेसके हाथ आगये हैं । उसका आगमन सुनकर विश्वाघा-  
क सर आयर डि वालेस इस जन्मके लिये जन्मभूमि छोड़कर

इङ्गलेण्ड भाग गया । वालिसकी विजयवार्ता उसने औरोकी मार्फत एडवर्डके कान्तक पहुँचाई एडवर्ड बहुत काममें फँसे रहनेसे स्वयं तो न जासके मगर साठ हजार सेनासहित खजानची क्रोसिंहम और और अर्लवारनको स्काटलेण्डपर भेजा । स्टर्लिंग किलेपर फिर दखल और स्काटलेण्डको अच्छीतरहसे पराजय करना इस चढाईका मुख्य उद्देश्य था । विश्वासघातक अर्ल डनवर इस अङ्गरेज सेनाके साथ टुइनदीके किनारे आकर मिल गये । यह विराट सेना स्टर्लिंग महलके सिंह दरवाजे पर आपहुँची, आतेही किला घेर लिया । अर्ल मलकम जातीय दलके प्रतिनिधि होकर इस किलेकी रक्षा करते थे ।

यह सुनकर वालिस डन्डीके घेरेमें एक हजार सेना छोड़कर बाकी सेना सहित स्टर्लिंग कैसलको चला । राहमें जापकी सेना लानिका भार सौंपकर और उसको मगलके दिन ससैन्य स्टर्लिंगकैसल के सामने उपस्थित होनेका हुक्म देकर रामजे और येहमके साथ वालिस शनिवारको उस किलेकी तरफ रवाना हुआ ।

एक लकड़ीके पुलसे किलेके भीतर जाना पड़ता था । वालिसने एक चतुर बढईसे पुलको बीचोबीचसे चिरवा दिया और उसपर इस तरह सटी दिलवाई कि किसीको उसका दो खण्ड होना मालूम न होसके । कटावके बीचमें इस तरह काठकी थूनिया दी कि चाहे जितनी सेना पुलसे वेखटके पार होजाय । थूनियां इस ढङ्गसे लगाई गईं कि एकाके छटावसे सब गिर पड़े और पुल दो टूक होकर नदी में डूब जाय ।

वालिस्ने उस बढईको हुक्म दिया कि तुम लडाईके दिन यहां छिपे रहना । जब मैं शत्रु वजाऊँ उसी समय थूनी छटाकर सरक जाना ।

उत भयानक मुठभेडका दिन आगया । अङ्गरेज सेना स्काटसेनासे पचास गुनी ज्यादा थी । वालिस वह थोड़ीसी सेना किलेमें रखाया । अङ्गरेज सेनाके दो भाग होकर बीस हजार क्रोसिंहमके

अधीन आगे गई और शहर वारेनके अधिपतित्वमें पीछेपीछे आने लगी। क्रोमिहमकी सेनापुलपार हो गई गन्त नहीं बचा। स्काट डरे। पञ्चभरमें वारेनकी सज्ज सेना पुलके ऊपर आ गई। तब शस्त्र बजा। उससे साथ साथ बढ़ लवा चौड़ा राकड़ीका पुल वारेनकी सेना सहित जलमें धुँस गया। मगररेज सेनामें भारी हानाकार मचा। गिरते हुए घोड़े और घुड़मवारोंकी चीखने आवाज फटने लगा। इधर बालेस, ग्रेहम, वायड रामजे प्रभृति सस्त शेरकी तरह क्रोमिहमकी सेना पर आटूटे। बालेस क्रोमिहमको लक्ष्य करके बड़ी दिलीरीसे उधरही दौड़ा। उसकी यह रण चण्डीमूर्ति देखकर शत्रुसेनाको रोकनेका साहस न हुआ। उसने वैधडका क्रोमिहमके सामने जाकर एकही तलवारमें घोड़े और घुड़मवारको काट गिराया। सेनापतिके पतनसे मगररेज सेनाका साहस टूट गया। तथापि उसने असीम साहसके साथ कुछ देर युद्ध किया। मगर जब देखा कि दस हजार सेना सेनापतिके साथ सिंघार गई तब वह डरसे तितर बितर होकर भाग गई किन्तु शत्रुसेनाके पीछा करनेसे कोई न बचा। जो जलमें कूद पड़ेये वह डूब गये। जिन्हें जलमें कूदनेका साहस न हुआ वह स्काटोंकी तलवारोंके नीचे आ गये। इसतरह जो बीस हजार मगररेज सेना पुल पार हुई थी उसमेंसे एकभी सैनिक अपने देशको न लौट सका। वारेनकी सेनामेंसे जो पुलके उसपार थे वह यह हाल देखकर एकासास उनवरकी तरफ भागे। किन्तु वहभी पीछा करनेवाले स्काटोंके हाथसे न बचे। बालेस और ग्रेहमने शत्रुओंको हेडिंगन नगरमें जा पकड़ा। उनमें हथियारोंसे कितनेही मारे गये। यहाँ रामजे, वायड, लन्डिन एडम्स बालेस और प्रलम्बलकम सहचरी सहित उससे आमिले। १२८७ ईस्वीकी ११वीं सितम्बरको यह प्रसिद्ध युद्ध हुआ। इसमें बहुत थोड़े स्काट मारे गये जिनमें एन्डरू मरेके सिवा और किसी सेनापतिकी मृत्यु नहीं हुई। मगर उस वैशुमार मगररेज सेनामेंसे बहुतही थोड़े आदमी भागकर बचे थे। क्रोमिहम प्रभृति २१

लोग उसी मैदानमें बेसमय मारे गये । इतने दिनमें स्काटोने वार-  
विक डनवर आयर आदिकी भयानक हत्याका बदला लिया । इतने  
दिन पीछे उनके हृदयकी दाह बुझी ।

स्काटलेन्डके रक्तसे जो अङ्गरेज शरीर सोटा ताजा हुआ था  
उसी अङ्गरेज शरीरके रक्त मांससे आज स्काटलेन्डकी भूमि उपजाऊ  
हुई ।

वालेस सहचरी सहित वह रात हेडिङ्गटन नगरमें बिताकर  
दूसरे दिन स्टर्लिङ्ग कैसलमें आपहुचा । बिना बिलास्य उसने  
घोषणा की कि स्काटलेन्डके सब बैरन आकर जातीय स्वाधीनता  
फिरसे कायम करने और जातीय शान्तिकी रक्षाके लिये मेरी मात-  
हती स्वीकार करें । जिन्होंने इससे इनकार किया वालेसने उनके  
दर्पका उचित दण्ड दिया । सरजान मेन्टीथ आदि पुराने खान्दानी  
बैरनोंने एकएक करके उसकी मातहती स्वीकार की ।

इधर वारेन अपनी अपार सेना स्टर्लिङ्ग कैसलके रणक्षेत्रमें  
खोजर बड़ी फुर्तीसे वारविककी तरफ भागे । स्वदेश वासियोंसे उस  
अङ्गरेज मेवयज्जका समाचार सबसे पहले उन्हींको वाहना पडा ।  
इस समाचारसे स्काटलेन्डके अङ्गरेज इतने डरे कि एक घड़ी भी  
स्काटलेन्डमें रहनेका उन्हें साहस न हुआ । उन्होंने अपना अपना  
किला छोडकर भाटपट इङ्गलेन्डका रास्ता लिया ।

इसप्रकार स्टर्लिङ्ग युद्धके बाद दस दिनमें वारविक और रक्त-  
वराके सिवा स्काटलेन्डके और सब किले वालेसके हस्तगत होगये ।  
बहुन दिनके बाद फिर स्काटलेन्डकी जातीय पताका फराने लगी ।  
इतने दिनपर स्काटलेन्ड स्वाधीन हुआ । आज जातीय दलके हृदयमें  
आनन्द नहीं समाता । पतित जातिके सिवा उस आनन्दका अन्दाज  
और कौन कर सकता है ?

वालेस स्काटलेन्डका गवर्नर बनाया गया । उसने मिलनवर  
क्राफोर्डको एडिनबराका किला सौंप दिया ।

यह प्रोक्त मन्वाद समुद्र पार होकर फ्लैंडर्धमें एडवर्डके पास  
पहुचा । उनके शिरसे मानो ताज पड़ पडा ।

## दसवां अध्याय ।

स्मिथमूर और लेमरमूरका युद्ध ।

स्मिथमूर ब्रिजकी लडाईके बाद स्काटलेण्डमें पांच महीने गान्ति रही । पांच महीने अङ्गरेजोंको स्काटलेण्डकी गान्ति भङ्ग करनेका साहस न हुआ । उसी भीतरी गान्तिके समय वालेसने पर्यनगरमें एक जातीय सभा बुलाई । स्काटलेण्डके सब जागीरदार और बडेनादमी उस सभामें जमा हुए । सिर्फ़ पिखातवातक कसपेट्रिकने आना अस्वीकार किया । उसने अपने किलेमें बैठकर उस जातीय बलकी नीचा दिखाया और उस जातीय बुलावे पर बहुत व्यंग वाण छोडे । सभाके सब लोगोंने उसी वक्त उसपर सेना भेजनेके लिये वालेसको सलाह दी । किन्तु वालेसने यह न करके पहले उसे कहला भेजा कि अगर आप अपने पिछले अपराधके लिये क्षमा मागें और आगे विश्वास दिलावें तो इस बार आप माफ़ किये जायगे । यह बात सुनकर कसपेट्रिक बहुत हसा और उसने दूतके द्वारा उत्तरभेजा कि अपने जङ्गली राजासे जाकर कहना कि कसपेट्रिक इस जिन्दगीमें उसकी अधीनता न मानेगा और अपने राज्यपे शासन करनेसे भी न डरेगा ।

इस हेतुकी पर समस्त जातीय सभा कसपेट्रिकसे विगड गई । क्रोधसे वालेसकी आंखोंसे चिगारिया निकलने लगी । उसने प्रतिज्ञा की कि कसपेट्रिक और मैं दोनों एक साथ स्काटलेण्डमें हुक्मत नहीं कर सकते एक म्याजमें दो तलवार नहीं रह सकती । यह प्रतिज्ञा करके वहमस्तदायीकी तरह सभासे निकला । वालेसकी जो प्रतिज्ञा थी वही काम । उसने उसी वक्त दो सौ सवार सेना लेकर डनवरको बूच किया । रास्तेमें उसकी सेना दूनी होगई ।

अर्लपेट्रिकने दो सौ सेना लेकर उस प्रवाहिनीकी चाल रोकना चाहा किन्तु प्रवलप्रवाहिनी तिगकीकी तरह पेट्रिककी सेनाको चीर न के दरवाजे पर आपहुंधी । जिस तेजीसे आई उसी



तेजीसे किलेपर अधिकार करके उसे सीटनके सपुर्द कर दिया । कसपेट्रिक जान लेकर किला छोड़ इङ्गलेण्डकी तरफ भागा जाता था । वालेसने तीनसौ सेनासे उसका पीछा किया और उसे भगाता भगाता एट्रिक्ववन तक लेगया । आगे जाना बेफायदा समझकर लौट आया ।

इधर भगोडे जागीरदारके दलसे ब्रूस और विशप वेक् प्रभृति जागीरदार शामिले । ब्रूस इनमें जल्द शामिल न होता किन्तु उन लोगोंने उसे यह कह कर राजी किया कि वालेस स्वयं स्काटलेण्डकी राजगद्दी चाहता है । अर्लपेट्रिकने बीस हजार सेना लेकर स्वयं उनवर घेर लिया और जहाजी सेनासे तरीके रास्ते रसद आना रोक दिया । विशपवेक दस हजार सेना लेकर डर्हममें रहे ।

वालेस यह खबर पातेही पांच हजार सेना लेकर सीटनकी मददकी दौड़ा । सीटन ज्यादा सिपाहियोंको किलेकी निगरानीमें तैनात करके थोडेसे साथियो सहित वालेससे आमिला । विशपवेक दस हजार सेना सहित स्विट्सूरमें छिपकर वालेसकी चाल देखते थे । इस बीचमें पेट्रिक भी किलेका घेरा उठाकर अपनी समूची सेना सहित स्विट्सूरमें वेकसे आमिला । इससे शत्रुसेनाका जोर तीव्र हजार या उससेभी ज्यादा होगया । वालेस केवल पांच या छः हजार सेना लेकर उस भारी सेना पर चढ़ दौड़ा । प्रचण्ड झरना जैसे नदीमें गिरकर उसके जलमें खलबलाहट डाल देता है वैसेही वालेस शत्रुसेनाको उथल पुथल करने लगा । किसी ताकत है जो वालेस और उसके वीरोकी गति रोकसके ? वालेस तलवार हाथमें लेकर धड़ले से अकेले शत्रुसेनाके व्यूहमें घुस गया । असख्य शत्रुसेनाने उसे घेर लिया । मानी सप्तरथी मिलकर अभिमन्युको मारने चले । कसपेट्रिकने उसे जरा जखमी किया । घोडेके मारे जानीसे उसे पावप्यादे लडना पडा । इधर उसके सैनिक उसे न देखकर बहुत घबराये कितनेही वहासे सरक गये । उन्हें उसकी यह हालत नली मालूम हुई । कसपेट्रिकने घोडेपर सवार होकर

पावथ्यादे वालेसको वर्द्धते मारना चाहता किन्तु वालेसकी सहाय्य रण क्षमतासे उसकी सत्र कोमिंग व्यर्थ होने लगी । इधर ग्रेट्सम लीडर, लायल, हे, रासजे, लुडिन, बायड, सीटन आदि जागीरदार वालेसको न देखकर पांच हजार सेनासहित गल्लुके व्यूहमें घुसगये । उनकी गोमने जाकर विगगमेसकी मुहक्री खानी पड़ी । जैसे छाथियोका झुण्ड कैसेके घनमें जाकर सामनेके पेडोंको उखाड़ कर पैरों तले रौदता है उसी तरह उस वीरदलने सामना करनेवाले अङ्गरेजीको रौद पटककर वालेसका उद्धार किया । वालेस घोड़े पर सवार होकर पीछा करनेवाले गल्लुआका हमला व्यर्थ करके अपनी छावनीमें लौट आया । इस बीचमें वहाँ उसके चार हजार साथी आज़ुटे थे । स्काटिश योद्धाओंके मैदानसे चले जानेसे कर्क-पेट्रिककी ही जय हुई किन्तु वह जय उसे बहुत बड़े दाम पर खरीदना पड़ी थी । इस मैदानमें सात हजार अङ्गरेज-सेनाकी समाधि हुई । इधर स्काटिशदल पांचसौसे अधिक मौते नहीं हुई और कोई स्काटिश कर्मचारी मारा नहीं गया । विजय लाभ करके भी कर्क-पेट्रिक सुखी नहीं हुआ, क्योंकि अगणित सेनाके मारे और वालेस के भाग जानेसे उसको बहुत अफसोस हुआ था ।

त्रिशपवेक स्काटिश सेनाके फिर हमलेके डरसे लैमरमूरकी तरफ चलदिये । इधर स्काटिशसेनाकी हारकी खबर चारों ओर फैलनेसे स्काटलेण्डके वाशिंगे डरकर स्काटिश जातीय झण्डेके नीचे आकर खड़े हुए । सब मिलाकर दो हजार नर्वसेना आकर जमाहुई । इसीको लेकर वालेस त्रिशपवेकका पीछा करने लैमरमूरकी तरफ चला । सवेरे वहलोग एकबएक अंगरेजी छावनीके सामने जापहुंचे । अंगरेज सेनाको पहलेसे इसकी कुछ खबर न थी इसलिये वह शान्ति-दायिनीनिद्राकी गोदमें आराम कर रही थी । स्काटिश सेनाने दो हिस्सोंमें बटकर दोतरफसे हमला किया । बहुतसे सैनिक सदाके लिये सोगये, जो उठे वह किधर भागे कुछ पता नहीं । किन्तु त्रिशपवेक अपनी जगहसे एकपैरभी इधर उधर न हुए वह लुडिनकी तलवारसे

घायल हुए तथापि बहादुरीसे लड़ते रहे। किन्तु जब शरीर शिथिल होगया तबवह मैदान छोड़कर भागे। कसपेट्रिड और ब्रूसनेभी पांच हजार सेनासहित वही रास्ता लिया। भागते भागते अङ्गरेज अन्तर्मे डर्हम किलेमें जाकर छिपे। विजयी स्काटसेनाने टुइड नदीतक अङ्गरेज सेनाका पीछा किया था लडार्डके मैदानमें और भागते समय बीस हजार अङ्गरेज मारे गये। स्मिथमूरकी लडार्डमें अङ्गरेजोंने विजय पाकरभी ७ हजार सेना खोई थी इस लेमरमूरकी लडार्डमें हारकर बीस हजार सेना खोई। इससे उनके मनमें उत्साह न रहा। वह विराट अङ्गरेज सेना तितर बितर होकर भाग गई। वालेस मौका पाकर कसपेट्रिकका किला उखाड़ने और खेत तहसनहस करने लगा सिर्फ़ डनवरका किला सावित छोड़ा।

लडार्ड शुरू होनेके अठारहवें दिन वालेस पर्यनगरमें लौट आया उस समयभी वहा जातीय सभाका अविवेशन होरहाथा। वालेसका विजय समाचार सुनकर सबलोग आनन्दित हुए। जातीयसभाने उसे समूचे स्काटलेण्डका गवर्नर बनादिया। जागीरदारीने अबके एक वाक्यसे उसकी अधीनता स्वीकारकी। वालेस स्टर्लिंग सभरको विजयके बाद अपने हितमित्रों और सेनाद्वारा गवर्नर बनाया गयाथा किन्तु इसबार समस्त जातिने एक वाक्यसे उसे उस गौरवके पद पर अभिषिक्त किया। इसी समयसे वह वास्तवमें स्काटलेण्डका प्रतिनिधि और शाननकर्ता कहा जासकता है।

स्काटलेण्डका गवर्नर मुकर्रर होनेपर सेनाविभाग पर वालेसकी पहली और पूरी निगाह पड़ी। ग्रन्थके आरम्भमें कहा गया है कि नाम त त वने राजाको भी सब तरहसे सहायता मिलनी सुशकिल होती। जागीरदारीकी ईर्ष्या और अहङ्कारका बुरा नतीजा वालेस पहलेही भोग चुका था। इसलिये विपद पडने पर उसे उनसे कुछ उदायताको आशा न थी। किसानों और गुलामोंका साथ जागीरदारीके स्वार्थसे ऐसा मिला चुथा था कि उनसे भी किसी तरहकी सहायताकी उम्मेद न थी। इसलिये वालेसने स्थायीसेना

रखनेका विचार किया। किन्तु एक दम नया ढङ्ग चलानेसे जागीरदारोंकी नाराजीका खटका या दमनिये उसने पहले बीचका रास्ता लिया। तनकाद्वार श्यायी सेना न कायम करके उसने वर्तमान मिलिशिया (गरायी सेना) की नींव डाली। समूचे स्वाट लेण्ड को कई जिलोंमें बांटा। मोनर और साठ वर्षके अन्दर जिन की उमर थी उनमें जो हथियार बांधने योग्य थे उनकी एक फिङ्गरिस्त तय्यार की। इन अस्थायी सेनामें एक तरहका नया ढङ्ग चलाया। हर चार आदमियों पर पांचवें, हर नौ आदमियों पर दसवें, हर उन्नीस पर बीसवें इत्यादि इसी ढिंभात्रसे हर ६६६ पर पर हजारवें आदमीको सेनापति मुकर्रर किया। उसके हुक्मकी पूरी तामील हो इसके लिये हर गावमें फांसीकी एक टिकटो रखी गई। जो डरपोक कायर पुरुष खटेशरचाके लिये बुलाने पर भी हथियार उठानेसे नाहीं करता, दृष्टान्तसे दूसरोंकी 'नहीं' छुड़ानेके लिये वह फांसी पर लटका दिया जाता। जो जागीरदार अपनी प्रजाको देशहितैषीदणमें शामिल होनेसे रोकता वह कैदखाने भेजा जाता या उसकी जायदाद जातीयभाण्डारमें जव्त करली जाती। यी उसकी अस्थायी सेना बनी। इन लोगोंको हमेशा हाजिर रहना नहीं पडता, अपने अपने दलपतिके अधीन रहकर विद्या सीखना पडती और बुलाये जाने पर जातीय भाण्डेके नीचे आकर खड़ा होना पडता था।

वालेस और उसके सहकारी मरे ने यी जातीय सेना बनाकर पीछे जातीय वाणिज्यकी उन्नतिकी ओर ध्यान दिया। वालेस केवल असाधारण वीरही नहीं था, राज्यको धनधान्य पूर्ण करने और बन्दोबस्त रखनेमें भी वह बहुत प्रवीण था। उसने हमवर्ग और लूकेनगरसे स्वाधीन वाणिज्यकी सन्धि की। उस सन्धिपत्रसे वालेसकी राजनीतिज्ञताका बहुत झुल्ल पता लगता है।

वालेस इस समय प्रभुत्वकी चरमसीमा पर पहुच गया है। उस नी प्रभुताका कोई मुकाबला करनेवाला नहीं है। इतने पर भी

## ग्यारहवां अध्याय ।

वालेसकी इङ्ग्लेन्ड पर चढाई—सेन्ट अलबनकी सन्धि ।

१२६७ ईस्वीके अक्टोबर महीनेमें खबर आई कि एडवर्ड कम्पे-  
द्रिककी सलाहसे स्काटलेन्ड पर दूसरी चढाई करना चाहते हैं ।  
यह खबर पातेही वालेसने जागीरदारों और अनुचरोंकी एक सभा  
बटोरी । उसके बुलावे पर रसलिनमूरमें चालीस हजार आदमी  
जमा हुए । उसने जागीरदारोंकी सम्बोधन करके कहा—“एडवर्ड  
स्काटलेन्डपर फिर चढाई करना चाहते हैं इसलिये मैंभी प्रण करता  
हूँ कि देहमें दम रहते उन्हें सफलमनोरथ न होनेदूंगा ।’ जागीर-  
दारोंने एक स्वरसे बड़े उत्साहपूर्वक उसकी प्रतिज्ञामें सहायता देना  
स्वीकार किया । ४० हजारमेंसे उसने २० हजार आदमी छोट  
लिये । जो लोग अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित और जातीयकार्यके व्रती थे  
वालेसने उन्हींको चुना । बाकी बीस हजार आदमियोंको उसने  
देशकी भीतरी उन्नतिके कामोंमें लगाया । लगातार लडाइया होनेसे  
इस देशकी भीतरी हालत बिगड गई थी इससे वालेसने कहा—  
अब ज्यादा आदमी लेनेकी जरूरत नहीं है ।

सागरगार्मिनी नदीकी भांति वह महती सेना एक मन और  
एक ध्यानसे जातीय गीत गाती इंग्लेन्डकी तरफ चली । वालेसका  
इरादा था कि एडवर्डकी स्काटिश मैदानमें पैर न रखनेदें । इसलिये  
वह लोग उनकी चाल रोकनेके लिये इंग्लेन्डकी तरफ रवाना हुए ।  
इस बार स्काटिश भाग्यकी इंग्लेन्डके मैदानमें परीक्षा होगी ।  
अबके वह लोग यह प्रतिज्ञा करके निकले हैं कि या तो युद्धमें  
जीतेंगे या वहीं कट मरेंगे । इस वास्ते वालेसने इस यात्रामें देशके  
बड़े बड़े जमींदारोंको साथ नहीं लिया । कारण अगर वह न लौटे  
तो उन्हीं जमींदारों द्वारा स्काटलेन्डकी रक्षा होमकेगी । बहुत  
कहने सुननेसे लाचार होकर उनमेंसे सिर्फ कुछ जमींदारोंको साथ

लेगया । बड़े आदमियोंमें सिर्फ़ मलकास, केखल, रामजी, ग्रेहम, एडम, वायड, अचिंगलेक, लुन्डिन, लोडर, हे और सीटनने साथ नहीं छोड़ा । इस महतो सेनाने ब्राविसके मैदानमें जाकर छावनी डाली । वहांसे सिर्फ़ ४० आदमियोंको साथ लेकर वालेस रज्जबरा किलेके द्वार पर पहुंचा और किलेदार सर रेल्फ़ाग्रेको बुलाकर हुक्म दिया कि तुम लौटते समय किलेकी चाबियां मेरे हाथमें देनेके लिये तैयार रहना नहीं तो तुम्हारी देह किलेकी दीवारमें लटका दूंगा । उसने रामजेकी सारफत ऐसाही हुक्म बारविक किलेमें भी भेज दिया ।

अब ज्यादा देर न करके वालेस और उसकी सेना टुइड नदी पार होकर नारदस्वरलेण्ड और कस्वरलेण्डमें दाखिल हुई । मत-वाले हाथीकी तरह उसकी सेनाने इनदोनों प्रदेशोंको दलमल डाला । आग लगाकर डरहम नगर खाक कर दिया । यार्कशायरकी भी यही दशा हुई । सेनाको बदला लेनेका जोश चढा था वह जहां जाने लगी वहां तलवार और आगसे काम लेने लगी । पन्द्रह दिन के अन्दर एडवर्डके दूतने आकर वालेससे चालीस दिनकी शान्ति चाही, कहा—“इसके बादही एडवर्ड लंडाईमें वालेसका सुकावला करेंगे ।” स्काटलेण्डके भाग्यनाथने यह प्रस्ताव मान लिया और यार्कनगरमें एक दिन ठहरकर ससैन्य नरदालरटनकी तरफ कूच किया । वहां पहुंचकर छावनी डाली । चालीस दिनकी सन्धि सर्वत्र प्रगट कर दी गई और वालेसने लूटका माल खरीदनेके लिये सब को बुलाया ।

एडवर्डने सन्धिका नियम तोड़कर सन्धिके भीतर ही वेखबरीमें वालेस पर आक्रमण करनेके लिये बहुतसी सेनासहित ग्लान्टननगरके कप्तान सर रेल्फ़ रेमण्डको भेजा । ग्लान्टननगरसे थोड़ी दूर पर कुछ स्काचमेन रहते थे । वह लोग यह खबर स्काटिश छावनीमें लेगये । वालेसने उसी वक्त हिड, लुन्डिन और रिचार्डके सेनापतित्वमें तीन हजार सेना भेजी । हुक्म दिया कि

## ग्यारहवां अध्याय ।

वालेसकी इंग्लैन्ड पर चढाई—सेन्ट अलबनकी सन्धि ।

१२८७ ईस्वीके अक्टोबर महीनेमें खबर आई कि एडवर्ड कम्पे-  
ट्रिककी सलाहसे स्काटलेन्ड पर दूसरी चढाई करना चाहते हैं ।  
यह खबर पातेही वालेसने जागीरदारों और अनुचरोंकी एक सभा  
बटोरी । उसके बुलावे पर रसलिनमूरमें चालीस हजार आदमी  
जमा हुए । उसने जागीरदारोंकी सम्बोधन करके कहा—“एडवर्ड  
स्काटलेन्डपर फिर चढाई करना चाहते हैं इसलिये मैंभी प्रण करता  
हूँ कि देहमें दम रहते उन्हें सफलमनोरथ न होनेदूंगा ।’ जागीर-  
दारोंने एक स्वरसे बडे उत्साहपूर्वक उसकी प्रतिज्ञामे सहायता देना  
स्वीकार किया । ४० हजारमेंसे उसने २० हजार आदमी छंट  
लिये । जो लोग अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित और जातीयकार्यके व्रती थे  
वालेसने उन्हींको चुना । बाकी बीस हजार आदमियोंको उसने  
देशकी भीतरी उन्नतिके कामोंमें लगाया । लगातार लडाइया होनेसे  
इस देशकी भीतरी हालत बिगड गई थी इससे वालेसने कहा—  
अब ज्यादा आदमी लेनेकी जरूरत नहीं है ।

सागरगामिनी नदीकी भांति वह महती सेना एक मन और  
एक ध्यानसे जातीय गीत गाती इंग्लैन्डकी तरफ चली । वालेसका  
इरादा था कि एडवर्डको स्काटिश मैदानमें पैर न रखनेदें । इसलिये  
वह लोग उनकी चाल रोकनेके लिये इंग्लैन्डकी तरफ रवाना हुए ।  
इस बार स्काटिश भाग्यकी इंग्लैन्डके मैदानमे परीक्षा हीगी ।  
अबके वह लोग यह प्रतिज्ञा करके निकले हैं कि या तो युद्धमें  
जीतेंगे या वहीं कट मरेंगे । इस वास्ते वालेसने इस यात्रामें देशके  
बडे बडे जमींदारोंको साथ नहीं लिया । कारण अगर वह न लौटे  
तो उन्हीं जमींदारों द्वारा स्काटलेन्डकी रक्षा होसकेगी । बहुत  
कहने सुननेसे लाचार होकर उनमेंसे सिर्फ कुछ जमींदारोंकी साथ

लेगया । बड़े आदमियोंसे सिर्फ़ मलकास, केम्बल, रामजे, ग्रेहम, एडम, वायड, अचिगलेक, लुन्डिन, लीडर, हे और सीटनने साथ नहीं छोडा । इस सहती सेनाने ब्राविसके मैदानमें जाकर छावनी डाली । वहांसे सिर्फ़ ४० आदमियोंको साथ लेकर वालेस रक्तवरा किलेके द्वार पर पहुंचा और किलेदार सर रेल्फ़ाके बुलाकर हुक्म दिया कि तुम लौटते समय किलेकी चावियां मेरे हाथमें देनेके लिये तैयार रहना नहीं तो तुम्हारी देह किलेकी दीवारमें लटका दूंगा । उसने रामजेकी सारफत ऐसाही हुक्म बारविक किलेमें भी भेज दिया ।

अब ज्यादा देर न करके वालेस और उसकी सेना टुइड नदी पार होकर नारदस्वरलेण्ड और कम्बरलेन्डमें दाखिल हुई । मत-वाले द्वाधीकी तरह उसकी सेनाने इनदोनों प्रदेशोंको दलमल डाला । आग लगाकर डरहम नगर खाक कर दिया । यार्कशायरकी भी यही दशा हुई । सेनाको बदला लेनेका जोश चढ़ा था वह जहां जाने लगी वहां तलवार और आगसे काम लेने लगी । पन्द्रह दिन के अन्दर एडवर्डके दूतने आकर वालेससे चालीस दिनकी शान्ति चाही, कहा—“इसके बादही एडवर्ड लंडाईमें वालेसका मुकाबला करेंगे ।” स्काटलेन्डके भाग्यनाथने यह प्रस्ताव मान लिया और यार्कनगरमें एक दिन ठहरकर ससैन्य नरदालरटनकी तरफ़ कूच किया । वहां पहुंचकर छावनी डाली । चालीस दिनकी सन्धि सर्वत्र प्रगट कर दी गई और वालेसने लूटका माल खरीदनेके लिये सब को बुलाया ।

एडवर्डने सन्धिके नियम तोड़कर सन्धिके भीतर ही वेखवरीमें वालेस पर आक्रमण करनेके लिये बहुतसी सेनासहित वालटननगरके कमान सर रेल्फ़ रेमन्डकी भेजा । वालटननगरसे थोड़ी दूर पर कुछ स्काचमेन रहते थे । वह लोग यह खबर स्काटिश दावनीमें लेगये । वालेसने उसी वक्त हिड, लुन्डिन और रिचार्डके सेनापतित्वमें तीन हजार सेना भेजी । हुक्म दिया कि



राहमें छिपकर आनेवाली अङ्गरेजीसेनापर वेग्वरीमें हमला करना। सर रेल्फ रेमण्ड सात हजार सेना लेकर आते थे अचानक तीन-हजार स्काचसेनाने बड़े वेगसे गर्जकर उनपर आक्रमण किया। उसकी प्रचण्ड तलवारोंसे पलक भरमें तीन हजार अङ्गरेज मारे गये बाकी डरके मारे जहातहां भाग गये। सेनापति सर रेल्फ लडार्डमें काम आये। वालेस फौरन उस भागती हुई अङ्गरेज सेना का पीछा करके मालटन नगरमें टाखिल हुआ और वहां अमंख्य शत्रुओंको मारकर शहर लूट लिया। दौ दिन रहकर शहरका किला गिरादिया और फिर छकडोंमें लूटका माल असबाब लटाकर अपनी छावनीमें लेआया। लौटकर अपनी सेनाको अचानकके आक्रमणसे बचानेके लिये छावनीके चारोंओर चारदीवारी बनाई।

इससे एडवर्ड समझ गये कि वालेस जल्द इंग्लैण्ड छोडना नहीं चाहता। अब उनके जीमें डर समाया। उन्होंने पमफ्रेट नगरमें पार्लीमेण्टका अधिवेशन किया, किन्तु लार्डोंने कहा कि जबतक वालेस स्काटलेण्डका मुकुट नहीं पहनता तबतक हमलोग आपकी उससे लडने नहीं देंगे। पार्लीमेण्टकी यह राय स्काटिश छावनीमें भेजी गई। इसके फैसलेके लिये केम्बल आदि स्काटिश वीरोंने वालेसको ताज पहननेका अनुरोध किया। उसने दृढतासे इस प्रस्तावको अस्वीकार किया। अन्तमें अर्ल मलकमकी सलाहसे एडवर्डका उग्र मिठानेके लिये सिर्फ एक दिन अपनेकी स्काटलेण्डका राजा कहनेका हुक्म दिया। तोभी अङ्गरेज खुली लडार्डमें वालेसके सामने आनेका साहस न कर सके। उन्होंने सलाह की कि किलेवाले शहरोंकी रक्षा करें और सब बाजार बन्द करके वालेसकी सेनाको रसद न मिलने दें। उनकी यह कोशिश व्यर्थ हुई। वालेसने सन्धि कास मय बीत जानेके बाद भी पांच दिन तक राह देखी तो भी अङ्गरेज सेनाका दर्शन न पाया तब अपना झण्डा उड़ाया और एडवर्डको अयोग्य राजा कहकर घोषणा की। वह नरदालरटन शहर

११। - खेती बरबाद करता यार्कशायरसे छोकर जाने लगा।

उसकी सेना गिरजे और खी बच्चोंके सिवा और कुछ नहीं छोड़ गई ।

धीरे धीरे वह जबरदस्त सेना यार्कनगरके सामने आपहुची । यार्कनगर किलेसे सुरक्षित था वहां बहुत सेना तैनात थी । स्काटोने चार हिस्से होकर चार जगहसे उस किले पर हमला किया । उनके साथ चार हजार तीरन्दाज थे । इधर नगरमें भी ४ हजार धनुर्धर और बारह हजार दूसरी सेना थी । इसलिये उसने बड़ी कामयाबीसे स्काचोंका हमला व्यर्थ किया । स्काट लोग डरसे नगर छोड़कर भाग गये ।

इधर रात होगई । स्काट रात भर शहरसे बाहर छावनी डाले पड़े रहे । सारी रात सशाल जलाकर वह लोग शत्रुओंका रगढंगे देखते थे । यद्यपि उनमें बहुतसे घायल हुए थे किन्तु एक भी स्काच मारा नहीं गया । इसीसे स्काटोने हार कर भी हिम्मत नहीं हारी ।

दूसरे दिन सूर्योदयके बाद स्काटोने नये उत्साहसे पहले दिनकी तरह कतार बांधकर नगर पर फिर आक्रमण किया । इस दिन भी आग फेककर तथा कई तरहसे शहरकी बड़ी हानि पहुंचाई किन्तु शहरमें घुस नहीं सके । फिर रात होगई फिर स्काटोने शहर-पनाहके बारह छावनी की । सब आक्रमण करने लगे मगर वालेस की प्राखोंमें नींद नहीं थी । वह घोड़े पर सवार होकर चारोंओर देखता फिरता था कि प्रहरी पहरा दे रहे हैं या नहीं । इतनेमें एकदएक पासही शत्रुसेना देखी । सर जान नाटन और सर विलियम ली पांच हजार सेना लेकर चुपके चुपके हमला करनेकी नीयत में स्काटिश छावनीकी तरफ बढ़ रहे थे । देखतेही वालेसने विगुल बजाया, फौरन उसकी हमेशा सुखैद सेना उठकर पक्षशत्रुसे सज्जित हुई । शत्रु शहरपनाहसे निकलकर पहले अर्ध मल्लवसके सामने आये । वालेस उसे हठी सराभता था इसलिये स्वयं तडाईमें पहुंचा । दोनों मिलकर शत्रु सेनाको मारने लगे ।

अन्तमें सर जान नाटन और १२०० सेनाकी मारे जानसे अलग

पीठ दिखाकर शहरमें भाग गये । स्काटोंने विजयोत्साहसे छावनीमें लौटकर आगमसे रात बिताई । मधेरे उठकर फिर शहर पर चढ़ाई की । इस तरह बहुत दिनोंके घेरेके बाद यार्कशहर ने सोना देकर प्राणभिक्षा चाही । वानेमने इस शर्तपर उन्हें छोड़ना चाहा कि वह लोग शहरपनाह पर स्काटिश भण्डा गाड़ने दें । यार्क लाचार राजी हुआ । स्काटलेन्डका भण्डा यार्क शहरकी दीवार पर फराने लगा । पांच हजार पौण्ड कर और इफरातसे रोट्टी शराब तथा दूसरी खानेकी चीजें पाकर स्काट बीस दिनोंके बाद शहर छोड़कर चले गये ।

अप्रैलका महीना आया । अभीतक वालेस और उसकी सेना इंग्लेन्डमें है । रसदका मिलना सुशकिल होजानेसे लाचार उसे लूट पाटकाही सहारा लेना पडा । वह लोग जंगली हरिण मारकर और खेतकी खड़ी फसल काटकर किसी तरह पेट पालने लगे । अन्तमें दक्षिणकी तरफ कूच कर गये । राहमें अग्निलीला करने लगे । गांव शहर लूटती जलाती वह अवध्य सेना लन्दनकी तरफ जाने लगी । तोभी अङ्गरेजसेनाने वालेसका सामना करनेका साहस नहीं किया । उसने पीछे हटते हटते अन्तमें लन्दन जाकर छावनी डाली ।

उधर रसदकी कामीसे वालेसको आगे बढ़नेकी हिम्मत न हुई । उसने अपने भण्डा लेचरानेवाले जापकी सलाहसे रिचमन्डकी कूच किया । वहा अभीतक इफरातसे रसद थी । उसे पाकर उसजी सेना बेहद खुश हुई । रिचमन्डने बहुतसे स्काच कौदी और मजदूर थे । यहां नौ हजार स्काच वालेसके भण्डेके नीचे प्याखडे हुए । यह सन्धिलिप्त सेना वहाले राम्पवार्थकी रवाना हुई ।

स्काटोंने उस शहरको सह्योमलामत छोड़ जाना चाहा था मगर नगर रक्षक सो सैनिकोंने उन पर ऐसा अत्याचार किया कि उन्होंने किलेको घेरकर आग लगा दी । किलेदार फिचियूने किलेके ज्योंही शहर निशाना चाहा त्योंही वालेसकी तलवारने उसका सिर धड़

हे अज्ञान कर दिया । पीछे स्काटोने किलेमें सुसज्ज वस्त्रें बूढ़े श्रीग  
स्त्रियोंको छोड़ बाकी सबको यमलोक भेज दिया । रात वहीं  
बिताई । सर्वेरे किलेका साल लेकर चलते बने । वालेसने फिफ्टियू  
के भिर सहित एडवर्ड या उनकी सन्तुष्टिभाके पास यह खबर भेजी  
कि अगर आप पूर्वप्रतिज्ञानुसार मुझे युद्ध न देंगे तो मैं एक  
बारही लन्दनके तोरणद्वार पर जापहुँगा । सन्तुष्टिभा बुलाई गई  
वस्तुतः वही बहमके बाद तय हुआ कि चाहे किसी दाम पर हो  
शान्ति मोल ली जाय । यह बात तय हुई किन्तु किसीने दूत बनना  
स्वीकार नहीं किया । अन्तमें एडवर्डकी रानी स्वयं स्काटिश छावनी  
में जानेके लिये जिद करने लगी । ऐसी अफवाह है कि वालेसके  
दीर्घचित्त गुणों पर रानी यहा तब सुख होगई थीं कि उसकी  
प्रेमाशिलापिनी हुई थी । जोही दूधर स्काट हारफोर्डशायरके सेन्ट  
अनवन शहरमें आपहुचे । नगरके पादरीने सदमाससे उनकी बड़ी  
खातिर की । इसने उन्हीने नगरको कुछ तुवासान नहीं पहुँचाया ।  
यहा स्काट छावनी डाल और चन्दोवा तानकर राजमहिषीकी वाट  
देखने लगे ।

अर्श मलकामने उन्हे इसमें मना किया । वालेसने रानीका हाथ धरकर उनका मुकुट चूमा । उनमें राज्यसम्बन्धी विषयो पर बहुत बात चीत हुई । टोपहरका खाना खानेके बाद दरबार हुआ । रानी ने वालेसको फुसलानेकी हजार कोशिश की किन्तु उसे किसी तरह उससे मस न कर सकीं । अनुकूल सन्धि पानेकी आशासे अन्तमें सोनेका लोभ तक दिखाया गया किन्तु वह आगा भी विफल हुई । खटेशके लिये प्राण न्योत्रावर करनेवाले खटेश प्रेमीके आगे कामिनी और कञ्चन दोनों निष्फल होते हैं । वालेसने औरतसे सन्धि करना अस्वीकार किया हा इतना मानलिया कि वह एडवर्डके यहां से सन्धिके प्रस्ताव लेआने वाले दूतकी रक्षा करेगा और सुमकिन हुआ तो उनका प्रस्ताव मजूर कर लेगा । एडवर्ड इस समय फ्रान्स की लडाईमें लगे थे जल्द उनके आनेकी उम्मेद न थी इससे रानी लाचार इतनेहीसे सन्तुष्ट होकर चली गईं ।

स्काट सेन्ट आलवनमें ही रहे । इसी बीचमें एडवर्डके दूत सन्धिके प्रस्ताव लेकर आये । सन्धिकी नियमावली तै हुई । रत्नवरा और वारविकके किले और इङ्गलेण्डमें कैद या और किसी कारणसे रहनेवाले स्काच वालेसके सपुर्द किये गये । जो स्काच सपुर्द हुए उनमें रेन्डलफ, अर्ल लोरन्, अर्ल वूकन, क्यूमिन और सुलिस मुख्य थे । वालेसने ब्रूस और सर आमेर डी वालेसको मांगा तो एडवर्ड ने उत्तर दिया कि वह भागगये । कसपेद्रिक भी वालेसके सपुर्द किये गये । वालेसने उन्हें आदरसे लिया । कुल एकसौ स्काच लार्ड कैद से छोडकर एकसौ बढिया घोडों सहित वालेसके पास भेजे गये । सन्धिके नियमानुसार स्काट जब नरदारलटनमें आये तब दोनों तरफ के हस्ताक्षर सन्धिपत्र पर हुए । जब स्काट दखरी नगरमें पहुचे तब उनकी सख्या ६० हजार होगई थी । यह विजयी महती सेना कैरममूरमें आई । यहां बारविक और रत्नवरा किलेकी चाबियां वालेसके हाथमें दी गईं । यह सन्धि ५ वर्षके लिये हुई ।

## बारहवां अध्याय ।

वालेसकी फ़ान्स यात्रा ।

स्काटलेण्डमें पाच वर्षके लिये सन्धि हुई । अब वालेसने एक बार फ़ान्स देखनेका विचार किया । इरादा है कि फ़ान्स की भीतरी अवस्था देखकर स्काटलेण्डकी भीतरी उन्नति करना चाहिये । इसी इरादेसे वह सिर्फ पचास आठमियों सहित सन् १२८८ ईस्वी की ता० २० अप्रैलकी फ़ान्स रवाना हुआ । पार्लिमेंटसे अनुमति लेनेमें उन्न उठनेका ख्याल करके उसने चुपचाप यात्रा करदी । छिपकर जानेका एक यहभी कारण है कि स्काटलेण्डमें उसके न रहनेका समाचार पाकर कहीं एडवर्ड सन्धिकानियम तोड़ चढाई न करदे या अपने जगो जहाज भेजकर उसे गिरिफ्तार न कराले ।

अनुकूल हवा पाकर जहाजकी पालें मानो हवासे बातें करने लगी । एक दिन और एक रात योंही बीती इतनेमें दूरसे सोलह जहाज बड़ी तेजीसे आते दीख पडे । वालेसने तुरन्त साथियोंको कमर बसकर तय्यार हो जाने का हुक्म दिया । यह जहाज फ़ान्सके लागविल शहरके टामस नामक एक आदमीके थे । टामस किसी बड़े आदमीकी हत्याके अपराधमें देशसे निकाल दिया गया था । तबले वह समुद्री डाकू बन गयाथा । वालेस कोभी उसने अपना शिगार बनाना चाहा था लेकिन कामयाब न हुआ ।

टामसने इस नये पेशेमें नया नाम पायाथा । समुद्री यात्री उसे लाल रीवर कहते । लाल रीवर जहाज दौडाकर वालेसके जहाज के दगलमें आ पहुचा । जहाज ज्योंही दगलमें आकर खडा हुआ त्योंही रीवर एक हलाय मारकर वालेसके जहाजपर कूद पडा । वालेस खड़े होकर इसीकी बाट देखताथा ज्योंही रीवर कूदा वालेस ने उसका गला पकडकर ऐसा धक्का मारा कि उसके मुंह और नाक से खून गिरने लगा । देखतेही देखते रीवरके सोलहो जहाजीने

आकर वालेसका जहाज घेर लेना चाहता । किन्तु वालेसका पोताध्यक्ष क्राफोर्ड फौजन पाल चढ़ाकर दूरनिकल गया और उनको बहुत पीछे छोड़ गया । अब रीवरने लाचर होकर वालेसने चप्पा मागी । वालेस ने चप्पा तो की किन्तु उसके हाथमें जो तनवार और डुरी थी वह लेकर उसे निरस कर दिया और गपथ कनाई कि वह कभी उसका कुछ नुकसान नहीं करेगा । इधर रीवरके आदमी बगलर गोले गोलियां बरसा रहे थे । वालेसके आँटिगमे रीवरने उनको मना कर दिया । दोनों दलमें शान्ति होगई । टामसने वालेसको रचेतक पहुँचा आना चाहा । अङ्गरेजों के आक्रमणके भयसे वालेसने मंजूर किया । राहमें दोनोंमें परिचय हुआ । टामसने अपना हाल सुना कर कहा—‘आज तक मुझे कोई परास्त नहीं कर सका था । मेरा विश्वास है कि स्काटलेन्डके उद्धारकर्त्ता वालेसके पास मैं हूँ ।’ टामसने जब जाना कि उसका विश्वास ठीक है तब उसने घुटना टेक कर स्काटलेन्ड और वालेसके काममें जान दे देनेकी प्रतिज्ञा की । वालेसने उसका हाथ धरकर उठाया और फ्रांसनरेशसे उसके लिये माफी मांगनेका वादा किया ।

उन दिनों लालरीवरके नामसे लोग धरधर कापते थे । जब जहाजोंका झुण्ड रचेलबन्दरके पास पहुँचा तब नगरनिवासी रीवर के जहाज पहचान कर बहुत डरे और आक्रमण रोकने या भागने की तय्यार होनेके लिये लड़ाईका बाजा बजाने लगे । यह देखकर वालेसने आज्ञा दी कि मेरे जहाजके सिवा और कोई जहाज बन्दरगाहमें न जाय । वालेसके झण्डे पर स्काटलेन्डका लाल धेर बना हुआ था । वह चिन्ह देखकर सबने अनुमान किया कि स्काटलेन्ड के आदमी आये हैं । उन दिनों फ्रांससे स्काटलेन्डकी दोस्ती थी इसलिये उन्होंने जहाजके यातियोंको आदरसे ग्रहण किया । यह लोग जही जानते थे कि स्काटिश गवर्नर स्वयं वालेस उनका प्रतिधि है तो भी उसके आदर सत्कारमें कुछ कमी न हुई । वालेसने टामस और दूसरे साथियो सहित राजधानीकी यात्रा की । पेरिस नगरमें

राजा और रानीने उसक और उसके साथियों का बड़े आदरसे स्वागत किया । तब एकटक स्काटिश वीरकेसरीको देखने लगे । भोजनादि के बाद राजा और उनके सभासद वालिसके साथ दरबारमें गये । ठहा दह्रांकी बहुतसीं बातें होनेके बाद राजाने ताज्जुबसे कहा कि वालिस लालरीवरसे क्योकार बच गये हैं । वालिसने उनसे रीवरका पूरा हाल बयान किया और उसके लिये क्षमा मांगी । फ्रांसनरेशने वालिसकी खातिर रीवरको साफ किया और वहाँ उसको नाइटका खिताब दिया । तबसे रीवर और उसके स वसाथी डकैती छोड़कर सब्से नागरिककी तरह फ्रांसमें रहने लगे ।

यो तीस दिन राजाकी मेहमाननीमें बीते । वालिस बेकार बैठे बैठे उकता गया । अङ्गरेजीका गाइन प्रदेशमें रहना सुनकर राजासे विदा हो वालिस उधरही चला । देखतेही देखते चारोंओरसे नौ नौ ख्याल उसके गण्डेके नीचे आखड़े हुए । आस्ट्रियाके अत्याचार से जैसे इटली निवासी एक समय पृथिवीके चारोंओर जा छिपे थे वैसेही इङ्गलैण्डके युद्धसे उस समय स्काट अनेक देशोंमें फैल गये थे । गेरीवाल्डी जहां इटलीका तिरङ्गा झण्डा उडाता वही असह्य इटालियन उसके नीचे आखड़े होते । गेरीवाल्डीकी तरह वालिसको कभी आदमीकी कमी न होती । गेरीवाल्डीकी तरह वह भी नाम मानकी सेना लेकर विराट शत्रुसेनाका सामना करता और प्रायः हरदारही जीतता । दोनों रणमें अजय थे । आज वालिस वही नौमी सेना लेकर बड़ा भारी अङ्गरेजी सेनाके सामने आया । मानो गेरीका झण्डा गेरीकी झुण्ड पर टूट पड़ा ।





उन्होंने सुना कि सर आमेर डी वालिसने वीथवेल किलेमें गराब और रसदका ढेर लगा रखा है । यह सुनकर उन्होंने सिर्फ पचास सैनिक लेकर उस किले पर आक्रमण किया । किलेकी रक्षाके लिये सर आमेरके मातहत अस्सी आदमी थे । स्काट उनमेंसे ६० को सारकर किलेका माल लेकर चल दिये । उनके ५ आदमी उस लड़ाईमें मारे गये । उन्होंने अब वहां रहना उचित न समझकर रातके समय अर्ल मलकमकी तरफ कूच किया । मलकम उनकी सहायतासे लेनक्स किलेकी रक्षा करने लगे ।

धर और और जागीरदारोंने अपनेकी लाचार देखकर वालेस की खोजमें दूत भेजा । दूत ढूँढता ढूँढता ससुद्र पार फ्लान्डर्समें आपहुँचा । वहां सुना कि वालेस गाइन प्रदेशमें है । दूत उधर ही दौड़ा और उसने वालेसके पास जाकर अङ्गरेजीका सब अत्याचार कहा । वालेस अङ्गरेजीके विश्वासघातसे बहुत क्रुद्ध हुआ और विदा होनेके लिये फ्रांसनरेशके प्रासादमें गया । फ्रांसनरेशने उसे विदा देनेसे बहुत रोका मगर वालेसने जब फिर आनेका वादा किया तब लाचार उसे विदा दी ; कहा कि वालेस अगर कभी स्वदेश छोड़कर फ्रांसमें रहना चाहेंगे तो फ्रांसनरेश उन्हें चाहे जिस स्थानके लार्ड बना सकेंगे ।

वालेस उनसे विदा लेकर अपने सहचरों और सर टामस लांगविल सहित जहाज द्वारा मनरोज हेवेन नामक बन्दरगाहमें आकर उतरा । उसके आनेकी खबर स्वाटलेण्डमें सर्वत्र फैल गई । चारों ओरसे उसके लडाकू साथी आकर उससे मिलने लगे । सर जान रामजे रुथवेन वाल्की आदि सेना सहित वर्नमवनमें जाकर उससे मिले । सब सेनाने वही छावनी छाती ।

१२६८ ईस्वीके अगस्त महीनेमें यह मिलन हुआ । सबसे पहले सेन्ट जानमृत किला देखल करनेका प्रस्ताव हुआ । रातको वह लोग टे नदीकी तरफ जाकर सड़कके किनारे जङ्गलमें छिप रहे । अङ्गरेज नौकर घाम लानेके लिये ६ हकडे लेकर आ रहे थे वालेसने

कई सार्थियों सहित भट जङ्गलसे निकलकर छकाडे छीन लिये। वह लोग नौकरीको कतल करके उनकी पोशाक पहनकर घास लाने चले और घास काटकर छकाडोंके भीतर १५ छधियारबन्द आदमियोंको छिपा ऊपरसे घास रखकर किलेको लौटे। पहरेदारोंने वेन्टुटके उन्हें किलेमें जाने दिया ममभा कि यह तो अपने ही घमियारे है। किलेमें घुसतेही मगस्र जवान घासमेंसे निकलकर जमीन पर कूद पड़े। वालिसने उन्हें साथ लेकर दरवाजेके पहरेदारीपर आक्रमण किया। उननौगोंके सारेजानेपर द्वार उनके हाथपै आगया। इसी बीचमें सर जान रामजे बाकी स्काच सेना लेकर किलेमें घुस आये। बातकी बातमें किलेके सब मिपाही सारे गये या भाग गये। कुछ टे नदीमें गूढ़कर डूब सरे। दुर्गाध्यक्ष सर जान सिवार्डने बड़ी सुशक्तिलसे मेथडेन वनये जाकर शरण ली। कोई चार सौ अङ्गरेज मारे गये। १४० नें भागकर प्राण बचाये। वालिसने सर जान रामजेको कप्तान और रथवेनको शेरिफ बनाकर फाइफकी तरफ कूच किया, कह गया कि अगर इधर अङ्गरेज आक्रमण करें तो फौरन सुके खबर दीजाय। स्काचोंको सेन्ट जान-स्टनमें बहुत साल असबाब मिला था इससे वह कुछ दिन आराम से रहे।

इधर वालिसके फाइफकी तरफ रवाना होनेकी खबर पाकर सिवार्ड डेढ हजार सेना सहित ब्लैक आयरन साइड नामक स्थानमें उसकी बाट देखने लगा। सेनाकी संख्या अधिक देखकर स्काट पहले तो बहुत उरे। वह सेन्टजानस्टनमें भी खबर न भेज सके क्योंकि अङ्गरेज रास्तेकी निगरानीमें थे। इस हालतसे वालिसने वही एग समरतभा की। मभामें बहुत कुछ वादाविवाद हुआ, बहुतोंने बहुत तरहकी रायदी किन्तु वालिसने कहा कि जान पर खेनकर लड़नेके सिवा दूसरा उपाय नहीं है। बहुत कुछ बितण्डे के बाद वालिसकी राय मंजूर हुई। वालिसके उत्साहसे जोशमें स्काटाने युद्धमें जय लाभ करनेके लिये प्रतिज्ञा की। उन्होंने

वनमें घुसकर हथौकी ओटमें डालियां गाड़कर एक सजवत किया बना लिया । किला अभी पूरा नहीं बना था कि सिवार्ड नसैव्य उन पर टूट पड़ा । अङ्गरेजसेनाने दो हिस्से होकर दो तरफसे किले पर हमला किया । एक हजार सेना सिवार्डके और पाच सौ सर आलेरडी वालेसके अजीन थी । दोनों तरफसे घाक्रापण रोकता गया इससे वेगुमार अङ्गरेज मारे गये । अन्तमें अङ्गरेज सेनापतिने किला घेरनेके इरादेसे आठ सौ सेना लेकर सारा जङ्गल घेर लिया और किले पर हमला जारी रखनेके लिये मात सो सेना नष्टित वालेसको छोड़ गये । आशादी कि अगर आप वालेस को पकड़ेगे तो एडवर्ड आपको फाड़फका अर्त्त बना देंगे ।

दोनों अङ्गरेज सेनापतियोंका मतलब समझकर वालेस क्राफोर्ड और लांगविलको किला सौंपकर ४० आदमी किलेमें छोड़ बाकी ६० को लेकर सिवार्डका सामना करने चला । सिवार्डके पहुचनेसे पहलेही वह लोग एक बान्धकी बगलमें बड़ी बड़ी घासोंके भीतर जाकर छिप रहे । अङ्गरेज आइट पाकर मार मार करते उन पर टूट पड़े । किन्तु स्वदेशके लिये प्राणसमर्पण किये हुए वीरोकी देह ईश्वरके दिये हुए वस्त्रतरसे रक्षित थी । इसीसे वह थोड़ेसे वीर उस प्रचण्ड अङ्गरेजसेनाकी गति रोकनेमें समर्थ हुए । वज्रमुष्टिमें तलवार धारण करके स्काटोने असह्य अङ्गरेजोंको कालके हवाले किया । अङ्गरेजोंकी और आगे बढ़नेकी हिम्मत न हुई वह भीचक ते होकर चिड़की तरह वही खड़े रहे ।

तो कल तुम्हें फामी पर लटका दूंगा। सिवार्डके चले जाने पर वाल्लेसने वाल्लेससे मुलाकात करके कहा कि एडवर्डकी गुलामी छोड़कर जातीय दलमें आजाओ। वाल्लेस सिवार्डका हुक्म पछले होसे नहीं मानना चाहते थे और न माननेका नतीजा भी सुन चुके थे इसलिये उन्होंने सहजमेंही वाल्लेसका कहना मान लिया।

दोनोंकी सेनाने मिलकर सिवार्डकी सेना पर धावा किया। इधर रामजे और रुथवेन वाल्लेसकी विपद सुनकर सेना सहित भटपट वाल्लेससे आमिले। इन सबकी मिली हुई सेनासे अब भी सिवार्डकी सेना ज्यादा थी। सख्याकी ज्यादातीके भरोसे सिवार्डने अपनी सेनाके दो हिस्से किये। दोनों सेनाओंमें घोर युद्ध होने लगा। बड़ी देर तक संग्राम हुआ। रामजे और रुथवेन अपनी ताजा सेनासे शत्रुओंको सारनेमें गजब करने लगे। स्वयं सर जान सिवार्ड वाल्लेसकी तलवारके शिकार हुए। अङ्गरेज सेना सेनापतिके मारे जानेसे तितर बितर होकर भाग गई।

लडाई जीतकर रुथवेन सेन्ट जानस्टनकी लौट आये और रामजे ने कूपर किलेकी कूच किया। कूपरका किला बैलडाई उनके हाथमें आगया। उधर वाल्लेस, क्राफार्ड, गुथरी, रिचार्ड वाल्लेस और लागविल लगातार लडाइयोंसे थककर वाल्लेसके मकान पर आगम करने गये। वाल्लेसने चर्थ, चोथ, लेह्य, पेयसे उनकी खातिरदारी की।

सबेरे स्काट सेन्ट एन्ड्रूकी तरफ चले। वहाका अङ्गरेज विशप भागकर समुद्रकी राह इंग्लेन्ड चला गया। इसके बाद वह लोग कूपर किलेको रवाना हुए। वहा कुछ दिन रह किले का दरवाजा तोड़कर चले गये।

सन् १२८८ ईस्वीकी १२ जूनको यह युद्ध हुआ। इस युद्धमें सब मिलाकर १५८० अङ्गरेज मारे गये जिनमें सर अलडोमर और सर जान सिवार्ड प्रधान थे।

द्वैक आधारन साइडके युद्धमें स्काटोंने बड़ीही बहादुरी

दिखाई दी। चौगुनी पचगुनी अङ्गरेज सेनाके सामने पडकर भी जरा न डरे न हटे। अंगरेजोंने उन पर बार बार हमला किया उन्होंने बारबार उनका बार व्यर्थ किया। अन्तमें उनकी अलौकिक वीरता पर मुग्ध होकर जयलक्ष्मी उनकी गोदमें आई। दो स्काट-सेनानायक इस युद्धमें मारे गये। फ्राइफके शेरिफ सर डब्लन बाल-फोर, सर फ्राई स्टोफर, सीटन और सर जान ग्रेहम घायल हुए। इस युद्धमें रासजे, गुधरी और विसेटने असाधारण विक्रम दिखाया था।

यह एक मामूली जंगली लड़ाई थी किन्तु इससे स्काट वीरोंका यश और भूचारी और फैल गया। सिवार्डकी मृत्यु सुनकर फ्राइफ के सब अङ्गरेज बहासे भाग गये। सिर्फ लकलेवेनकी छावनीमें थोड़ी सी अङ्गरेज सेना थी। उस छावनीके चारो तरफ पानी था इससे उसने समझा था कि कुछ डर नहीं है किन्तु बहुत जल्द उस की भूल दूर हुई। सब स्काट सिवाने कैबेलमें एकत्र होकर बहासे स्काटलेखनवेल नामक स्थानमें आकर छावनी डाली। रातको भोजनके पश्चात् बालेम सिर्फ १८ आदमी साथ लेकर चुपकेसे छावनीसे निकलकर लकलेवेनकी तरफ चला। इस पारके बन्दरगाह में पहुच कर माधियों को वही छोड उस पार से नाव लानेके लिये स्वयं जलने दृढपडा। उस वक्त उसके बदन पर सिर्फ एका कमीज थी और गलेसे तलवार लटकती थी। बालेम बातकी बातमें तेरवार दूसरे किनारे जापहुचा। नावपर कोई आदमी नहीं था इस लिये वह बेकटके नाव इस पार ले आया।

आठ दिनके उलबके बाद स्काट जिल्लेजी सब चीजे लूट कर उसी नावसे इस पार आये और नाव जलाका नये गये। वाल्लेस सेल्ट जानसूनको गया। वहाँ विगप मिनकेयर उममे जाकर मिले। वाल्लेस उत्तरकी तरफ जानेके गिये बहुत प्रधीर हुआ। किन्तु विगपने उसे मना किया। क्योंकि उस समय गलुसेना स्काट-लेन्डको चारोओरसे रौदती फिरती थी। गरजेज बीनका रास्ता इस गरजसे रोके बैठे थे कि उत्तरवाली जातीयमेनासे वाल्लेस मिलने न पावे। इधर वूजनके अर्ग इस बातकी कोशिश कर रहे थे कि जिससे वाल्लेसके पास किसी तरह रमट न पहुचने पावे।

अङ्गरेजोंके हजार कोशिश करने पर भी चारोओरसे कगल आदमी वाल्लेसके भण्डेके नीचे आकर रुडे होने लगे। नवयुवक रेन्डलफने मरेसे वाल्लेसकी मददके लिये बहुतसे आदमी भेज दिये। इस बीचमें जाप और बूयर चुपकेसे गलुसेनाकी भीतरही हालत देख आये और वाल्लेसको बता दी। वाल्लेसने यह सुवर पाकर जाप स्त्रिफन और कार्ले आदि ५० सहचरो सहित सेनृजानसूनसे दारंग किलेको बूच किया। राहमें एक विधवा स्त्रीने जानीय भावके जोशमें आकर उस छोटीसी सेनाके लायक सब खाना तय्यार रखा था। एक मलुभा पथप्रदर्शक बनकर रातको उन्हें उस खाईसे घिरे हुए किलेके पास लेगया। किलेके पीछे एक छोटासा गुप्त पुल था। स्काट उसी पुलसे किलेके भीतर घुसे। डेढ पहर रात चली गई थी। अङ्गरेज बेखटके होकर खाना पीना कर रहे थे इतनेमें वाल्लेस उस दालानके दरवाजे पर दिखाई दिया। सब लोग चौकवार उस की ओर देखने लगे। देखतेही देखते वाल्लेसकी तलवारने किलेदार टामलीनका गिर काट डाला। मालिककी मौत देखकर अङ्गरेजोंकी यत्न जारी गई। एक एक करके किलेकी रक्षा करने वाले १०० अङ्गरेज स्काटवीरोकी तलवारोंके शिकार हुए। इसके बाद वाल्लेसने अपने चाचाको कैदसे छुड़ाया। टामलीनने वाल्लेसमें न पाकर उसके चाचाको पकड़वाकर कैद कर रखा था। दुष्टने

उस बूढ़ेके हाथ पैर लोहेकी जलौरमें बांधकर पानीके गढेमें डाल दिया था । बूढ़ा जल्लीरसे कूटकर भतीजीको आशीर्वाद देने लगा । विजयी वीर भानुदेसे जयध्वनि करने लगे । उस रात वह वहाँ आगमसे सोये । दूसरे दिन भी वहीं रहे । बीच बीचमें मिर्फा अङ्गरेज आक्रमणकारी आकर उनके विश्राममें खलल डालते रहे । स्काट हरवार उनका हमला व्यर्थ कर देते थे । इस तरह उन्हीने वहाँ दूसरी रात भी बिताई ।

तीसरे दिन तडके उन्होंने वहाँसे डस्वार्टनको ब्रूच किया । वहाँसे कुछ दूर टरउठ स्थानमें सारा दिन बिताकर रातको चुपके चुपके शहरमें पड़े । वहाँ जातीयभावका ख्याल रखनेवाली दासीसद्वी पुरानी जान पड़दानवी एक विधवा औरत रहती थी । वालिस उसकी सक्कान पर गया । उसने स्काटिश वीरोको एक गोदाममें बेजाकर छिपा दिया और चर्च, चोथ, लेह्न पेयसे उनकी खूब खातिर की । उसके ६ बेटे थे । उसने सबसे वालिस का सच ग्रहण करनेके लिये शण्ठ कराया । वह विधवा स्त्री अङ्गरेजोंको बार देकर कुछ और आरामसे शहरमें रहती थी उसे किसी तरहकी तकलीफ न थी किन्तु जातीय दण्डके आनेसे उसने शान्तिकी दूर भगाकर जातीय कार्यमें पातोत्सर्ग करदिया ।

वालिसजी आग्रासे वह विधवा जिन जिन सक्कानोंमें अङ्गरेज रहते थे उन पर कुछ निशान कर पाई । इसके बाद वारिस अपने साथियों सहित अष्ट शस्त्रसे सज घोड़े पर सवार होकर भडकले निकला । वह लोग सबसे पहले एक होटलमें पहुँचे । वहाँ अङ्गरेज वहाँ खाना पीना कर रहेथे । वालिस भी तत्कवारों उनमें से अधिक सारंगते । उसके साथियोंने दासी अङ्गरेजोंको भी मार डाला । होटलका मालिक यह देखकर बेहद खुश हुआ और मट गानोंसे उनकी खूब खातिरदारी की । उनको भर पेट खिजा पिला कर होटल वाला पय दर्शक होकर अङ्गरेजोंके स्थानमें लेगया । तीनों भी अङ्गरेज शहरकी रखवालीके लिये तैनात थे उसी



एकएक करके वह सब जातीयदलके हाथ सारंगये। सूर्योदयके पहले ही वालेस अपने दन सहित नगरसे कुछ दूर एक गुफामें जाकर दिन भर छिपा रहा। होटल वालेने सद सामसे वहामी उनका पेट भरा।

रातको वह लोग रोजनीयके पहाड़ी किलेकी तरफ रवाना हुए। यहां बहुतसी अङ्गरेज सेना थी। एक छोटेसे पहाड पर किला बना था। स्काट जंगल झाडियोमें होतेहुए चुपकेचुपके पहाड की चोटी पर पहुचे। किलेके निवासी उस समय किसी विवाहके लिये गिर्जेमें गये थे मिर्फा कई गुलाम किलेमें मौजूद थे। स्काट वेधडक किलेमें घुस गये कुछ देर बाद अङ्गरेज गिरजेसे लौट कर आये। वह गिन्तीमें ८० या इससे भी कुछ ज्यादा थे दरवाजेपर आते ही स्काट बड़े वेगसे उनपर टूट पडे। पलभरमें सब अङ्गरेज जमीन पर लोटने लगे। स्काटोने सात दिन तक वहां विजय का उक्तव मनाया। फिर किलेका माल लूटकर उसमें आग लगा चलाते बने।

यहांसे वह फलसन नामक स्थानमें गये। वहां अर्ल मलकम रहते थे। ग्रेडम, वायड, लुन्डिनके रिचार्ड, एडम वालेस और बार्क्ले आदि वालेसके मित्र भी मलकमके मकान पर मौजूद थे। सबने बड़ी धूमधामसे वालेसका स्वागत किया। वालेस बड़े दिन तक वहां रहा। यहीं उसे अपनी माताके मरनेकी खबर मिली। उसकी माताने एलरक्लीसे निकाली जाकर डनफर्लिन एबीमें शरण ली थी। वहीं वह मरौ। माताके मरनेकी खबरसे वालेसकी बड़ा शोक हुआ और आप उसके दफन करनेमें शामिल होनेके लिये जानेका साहस न करके जाप और बूयरको धूमधामसे यह काम करनेके लिये भेजा। एक दिन गेरीवाल्डीको भी इसी तरह प्राणसे प्यारी स्त्री एनिटाको दफनानेका भार आश्रयदाता किसानके के हाथमें सौंपना और भागकर पीछा करनेवाले आस्ट्रियावालीके हाथसे जान बचानी पड़ी थी।

डगलमडेलके सर विलियम डगलसने यह सुनकर कि वालेस फिर

लडाईके मैदानमें उतर आया है जातीय व्रत पालन करनेकी प्रतिज्ञा की। यद्यपि उन्होंने जवानीमें लाचार होकर एडवर्डकी अधीनता स्वीकार की थी, यद्यपि उन्होंने अङ्गरेज सेमसे विवाह किया था तथापि जातीय भाव उनके हृदयसे दूर नहीं हुआ था। उन दिनों उनकी स्त्री का कोई रिश्तेदार संजुहर नामक किलेका अफसर था। उसने उस किले और डगलस डेलके बीचके स्थानको अच्छी तरह बरबाद कर डाला था। डगलसने इस अत्याचारका बदला लेनेके लिये आज स्वयं उस किले पर धावा किया। उन्होंने टामडिक्सन नामक एक नौकरको पहले वहा भेजा। राहमें एन्डर्सन नामक एक किलेके आदमीसे उसकी भेट हुई। डिक्सनने उससे अपनी पोशाक और घोड़ा बदल लिया और वही पोशाक पहन कर और लकड़ीका बोझ लेकर सवेरे किलेमें घुसनेका विचार किया। एन्डर्सनसे सुना कि किलेमें सिर्फ ४० हथियारबन्द आदमी है। टाम डिक्सन उसी पोशाकमें उसी घोड़े पर चढ़ कर किलेकी तरफ जाने लगा इधर एन्डर्सन भी पीछेसे डगलसको लेकर लौटा। डगलस और डिक्सनको पासही कहीं छिपाकर एन्डर्सन अकेले दरवाजे पर पहुँचा। इतना सवेरे दरवाजा खुलवानेके लिये दरवानेने उसे बहुत डाँटा। दरवाजा खुलतेही एन्डर्सनने कई डालियां काट कर द्वार पर इस ढङ्गसे डालदी कि फिर दरवाजा बन्द नहीं किया गया। इसी समय एन्डर्सनके इशारेसे डगलस दस्तबल सहित किलेमें घुस आया। सबसे पहले दरवान और फिर एक एक करके सब अंगरेज मारेगये। सिर्फ एक अङ्गरेजने जान बचाकर डूरिस डियरमें जा कर यह खबर दी।

था वह किसी कामसे दूरनी जगह गया था । किन्तु लार्ड किउमिन उनकी गैरहाजिरीमें वहां मौजूद था । वालेसने किला घेरने का काम मनकाम पर छोड़ कर डगलसकी सहायताके लिये बूच किया । राहमें अचानक रावेस खेलसे उसकी मुलाकात होगई । रावेसडेल पचास सिपाहियों सहित अपने किले की लौट रहा था । मतवाले हाथी पर जैसे शेर टूटता है वैसेही वालेस और उसके सैनिक उस छोटीसी अङ्गरेज सेनापर टूट पड़े । अङ्गरेज एक सांस भागे और आकर किलमिथ किलेमें दुकना चाहा किन्तु मलकमने दो सौ स्काटिश सेना सहित किला घेर रखा था । इस लिये अङ्गरेज वहां जातेही उसके शिकार हुए । वालेस लूट पाटमें मशगूल न होकर डगलसकी मददकी रवाना हुआ ।

राहमें लिनलिथगोपील और डनक्रीथ अदि किले उसके हस्तगत हुए । इधर वालेस की लगातार विजयसे उत्साहित होकर बहुतसे स्काटिश वीर उसके भण्डेकी छायामें आकर खड़े हुए । लोडर , सीटन , वास , ह्यू टो हे प्रभृति अपनी अपनी सेना सहित वालेससे आमिले । इस मिलनसे वालेस और मलकाम बहुतही प्रसन्न हुए । पीबल्स से आकर वालेसने घोषणाकी कि जो हम लोगोंके शामिल होंगे वह बहुत कुछ पुरस्कार पावेंगे । वालेसकी सेना धीरे धीरे ६०० होगई । उसने उसे लेकर क्लाइड्स डेलकी ओर कूच किया । अङ्गरेजीने सडुहर किलेमें डगलसकी घेर रखा था किन्तु वालेसका आना सुनतेही किला छोड़कर इंग्लेन्डकी भागे । वालेस क्लाफोर्डभूरतक पहुंचा था । अङ्गरेजीका भागना सुनकर उसने मलकामको वाकी सेना सहित छोड़ सिर्फ ३ सौ चुने हुए सवार लेकर शत्रुओंका पीछा किया । क्लोजवरनमें जाकर शत्रुओंकी धर पकडा । पीछे वाली एक टुकडी सेनासे लडाई होने लगी । पलक भरमें कोई डेढ सौ अङ्गरेज खेत हुए । आगेकी सेना यह सुन कर पीछे लौटी । इधर मलकामकी सेना भी वालेससे जामिली । दोनों मिलकर बडे जोरमे अङ्गरेज सेना पर टूट पडी । वह जोर

न सह कर अङ्गरेज फिर भागे । स्काटोने फिर पीछा किया । डाल सुइन्टन पहुंचनेसे पहलेही पाच सौ अङ्गरेज मारे गये तोभी पीछा न कूटा । घोड़ोके थक जाने पर वालेस और ग्रेहम पैदल पीछा करने लगे । उसी समय सौभाग्यसे एडम कोरी जानस्टन, कर्कपेट्रिक और हालिडे नये जोशसे वालेससे आसिले । वालेस पहली सेना से आनेका भार ग्रेहमको सपुर्द करके आप इस नई सेनामे एकघोडा चुनकर उसपरसवारहो नयेवलसे पीछाकरताचला । रास्तेमें वह लोग अङ्गरेज-मेधयज्ञ करते जाते थे । डुरिसडर, इनाक और टाइवर सूरके किलेदार मारे गये । काकपूल नामक पुलके किनारे देहिसाव अङ्गरेज मारेगये । कितनेहीं नदीमें कूद कर डूब गये । यहां केयर लाविराकस्थानके अध्यक्ष माक्सवेल वालेस से आसिले । उस रात वहीं रहकर दूसरे दिन उन्होने डमफ्रिज की यात्राकी । मार्गमें बोधना करते गये कि स्काटलैन्ड फिर जातीय दलके हाथमें आगया है इसलिये अब डरकी कुछ बात नहीं है । अङ्गरेज जहां जहां थे जल या थलके रास्ते इङ्ग्लैन्ड भाग गये । सिर्फ एका अङ्गरेज अबभी स्काटलैन्डमें हुकूमत करता था । सिर्फ इन्डीका किला मार्टन नामी अङ्गरेजके अधीन था । इसके सिवा समस्त स्काटलैन्डमें फिर जातीय पताका उडने लगी ।

किन्तु एका भी विदेशीका चरण स्काटलैन्डकी छाती पर रहते वालेसको कल न थी । इस लिये उसने डगलसको फिरसे पाये हुए प्रदेशोकी रक्षाका भार देकर इन्डीको कूच किया । वहा पहुंच कर वह शहर घेरने लगा मार्टनने प्राणभिक्षा करके आत्मसमर्पण करना चाहा किन्तु वालेस इसपर राजी न हुआ । इस समय एडवर्ड सेना सहित फ्रांसमें थे । स्काटलैन्डमें अङ्गरेज मेधयज्ञका हाल सुन कर उरोंने भारी सेना सहित स्काटलैन्ड पर चढ़ाई करने का विचार किया । वालेस इन्डीको घेरे हुए था इस बीचमें एक दिन उसके विष्णामी कर्मचारी जापने आकर खबरदी कि एडवर्ड एक लाख सेना लेकर आरहे है । यह समाचार पाकर वालेस दो

हजार सेना सहित गिन्तारगिरीको उन्डी घेर रहनेके काम पर नियुक्त करके आप ८ हजार सेना लेकर सेन्टजानमठको चला । यहाँ कई दिन अङ्गरेजोंकी बाट देखता रहा । इस बीचमें अङ्गरेज सेना-पनि उडसृक दस हजार सेना सजित तैयार त्रिज गासका स्वागमें प्रापहुवे । सानो एक काली घटाने आकर स्का डलेन्डके सौभाग्य सूर्यको छिपा लिया ।

### तेरहवां अध्याय ।

शेरिफ मूयरका युद्ध—फलकार्काका युद्ध—सर जान ग्रेहमकी मृत्यु—ब्रूससे वालेसकी भेट—लिंगलिचगाउमें अङ्गरेजी पर अचानक घेरा—उन्डी पर अधिभार—वालेस का इस्तेफा—उसका फ्रांस चलाजाना—लिनके जानका मारा जाना—फ्रांस नरेशका बडे आदरसे वालेसका स्वागत ।

उन्डीका घेरा उठवा देनाही उडसृक चाहते थे । इस लिये टे नदीमें सब जङ्गी जहाज भी भेजे गये । वह बडी भारी सेना लेकर आये थे इससे उन्हें स्काटोंका झुंक डर न हुआ । विशेषकर उनके चतुर पयप्रदर्शक उन्हें सामनेकी उपत्यका छोड़कर सेन्ट जानमठ की ओर लेजाया चाहते थे । उस उपत्यका प्रदेशमें वालेस साथियों सहित शत्रुकी बाट देखता था । उडसृकने उधरसे जाते समय देखा कि स्काटोंकी सख्या उनकी सेनासे बहुत कम है । यह देख वह लड़ाईके निचे उतर पडे । अङ्गरेजी सेना ऐसी धीरतासे चरती थी कि सर जान रामजेने पहले उसे देखकर समझा कि यह असेमलकामके आदमी हैं । किन्तु वालेसकी तेज दृष्टि भट समझ कि वह लौन है । उसने फौरन अपने सैनिकोंको तय्यार हो रिफ मूयरके मैदानमें कतार बांधकर खडे होजानेका हुक्म

दिया। अफ़रेज बड़े जोरशोरसे उन पर टूट पड़े। दोनो ओरसे घसानान युद्ध होने लगा। पृथिवी खून खून हो गई। स्काटवीरों की अलौकिक वीरतासे सम्बूची अफ़रेज सेना अपने सेनापति सहित लडाईमें मारी गई। बहुतसे बहुमूल्य पदार्थ स्काटोंके हाथ लगे।

वालेसने बड़ी फुर्तीसे स्टर्लिंग पुलकी ओर बृच किया। बच्चा जाकर पुल तोड़ दिया और नदीमें बहुतसे खूँटे गडवा दिये जिससे सेना किसी तरह नदी पार न कर सके। घोड़ीघी दूर पर नदीमें अफ़रेजोंने जहाज, विपद पड़नेपर अफ़रेजोंको चढा लेजानेके लिये तय्यार थे। वालेसने लीडर नामका सहचरको उनमें भाग लगा देनेके लिये भेजा। लीडर काम पूरा करके भट उससे आमिला। इधर सीटन अर्ल मलकस, सर जान ग्रेहम वगैरह भी अपने अपने सहचरों सहित वालेससे आमिले जिससे वालेसकी सेना बहुत बढ गई। पीछे खबर आई कि एडवर्ड अपार सेना लेकर टर्फीचेनमें आपहुचे हैं। एडवर्ड मस्त छाथीकी तरह चारोंओर सहार करते आते थे यहा तक कि सेन्ट जानस्टनके नाइट लोगीकी सम्पत्ति भी उन्होंने नहीं छोडी। इधर बृटके खुआटे दारह हजार और मिडमिन दीस हजार सेना लेकर फ़्लक्कार्डके मैदानसे कुछ दूरपर लडाईका नतीजा देखनेके लिये ठहरेरहे। वालेस दस हजार सेना लेकर उस अलख्य अफ़रेज अक्षौहिणीके सामने आया। उसकी तरफ अर्ल मलकस, सरजान ग्रेहम, रायजे, सीटन, लीडर, लुन्डिन और एडम वालेस सेनापति थे। एडवर्ड एक लाख सेना लेकर समुद्रगासिनी उत्तालतरङ्गिनी नदीकी भाति टर्फीचेनसे सामनभूरके मैदानको चले।

भाग्य फूटने पर सब जमें नही रहता। स्काटलैन्डके दुर्भाग्य-घन इस अन्तिम प्रदम्पाने स्काटिश सेनामें फूट पैली। स्वजाति विश्वासघाती मिडमिनने वालेससे हाथ करकी उसकी सेनामें फूट डाल दी। इन बातको लेकर भारी फ़साद खडा हुआ कि सेनापति जीन हो। मिडमिनने उध उठाया कि स्टुपार्टमें रहते

हजार सेना सहित स्विज्जरलैंडको उन्डी घेर रहनेके काम पर नियुक्त करके आप ८ हजार सेना लेकर सेन्टजानस्टनको चला । यहाँ कई दिन अग्निरैजीकी बाट देखता रहा । इस बीचमें अग्निरैज सेनापति उडस्टक दस हजार सेना सहित स्विट्ज़रलैंड त्रिज नामक स्थानमें प्रापहुँचे । सानो एक काली घटाने आकर स्काडलेन्डके सौभाग्य सर्व्वको छिपा लिया ।

### तेरहवां अध्याय ।

शेरिफ मूयरका युद्ध—फलकार्कका युद्ध—सर जान ग्रे हम्बकी मृत्यु—ब्रूससे वालेसकी भेट—लिनलियगाउने अग्निरैजी पर आघातक घेरा—उन्डी पर अधिचार—वान्नेस का इस्तेफा—उसका फ्रांस चलाजाना—लिनके जानका मारा जाना—फ्रांस नरेशका बडे आदरसे वालेसका स्वागत ।

उन्डीका घेरा उठवा देनाही उडस्टक चाहते थे । इस लिये टेनरीमें सब जङ्गी जहाज भी भेजे गये । वह बडी भारी सेना लेकर आये थे इससे उन्हें स्काटोका कुछ डर न हुआ । विशेषकर उनके चतुर पथप्रदर्शक उन्हें सामनेकी उपत्यका छोडकर सेन्ट जानस्टन होकर लेजाया चाहते थे । उस उपत्यका प्रदेशमें वालेस साधियों सहित शत्रुकी बाट देखता था । उडस्टकने उधरसे जाते समय देखा कि स्काटोकी सख्या उनकी सेनासे बहुत कम है । यह देख दह लड़ाईके निचे उतर पडे । अग्निरैजी सेना ऐसी धीरतासे चरती थी कि सर जान रामजेने पहले उसे देखकर समझा कि यह अनेकलक्षके आदमीहैं । किन्तु वालेसकी तेज दृष्टि भट समझा कि वह झूठ हैं । उसने फौरन अपने सैनिकोंको तय्यार हो शेरिफ मूयरके मैदानमें कतार बांधकर खड़े होजानेला हुआ

दिया। अङ्गरेज बड़े जोरशोरसे उन पर टूट पड़े। दोनों ओरसे घसानान युद्ध होने लगा। पृथिवी खून खून होगई। स्काटवीरों की अलौकिक वीरतासे सस्वूची अङ्गरेज सेना अपने मेनापति सहित लडाईमें मारी गई। बहुतसे बहुसूत्य पदार्थ स्काटोंके हाथ लगे।

वालेसने बड़ी फुर्तीसे स्टर्लिंग पुलकी ओर बूच किया। बच्चा जाकर पुल तोड़ दिया और नहीमें बहुतसे खूँटे गड़वा दिये जिनसे सेना किसी तरह नदी पार न कर सके। घोड़ीघी दूर पर नदीमें अङ्गरेजोंके जहाज, विपद पडनेपर अङ्गरेजोंको चढा लेजानेके लिये तय्यार थे। वालेसने लोडर नामका सचचरको उनमें आग लगा देनेके लिये भेजा। लोडर काम पूरा करके भाट उससे आगिला। इधर मीटन अर्ल सलकास, सर जान ग्रेहम वगैरह भी अपने अपने सचचरों सहित वालेससे आगिले जिससे वालेसकी सेना बहुत बढ गई। पीछे खबर आई कि एडवर्ड अपार सेना लेकर टर्फीचेनमें आपहुचे हैं। एडवर्ड मस्त छाथीकी तरह चारोंओर संहार करते आते थे यहा तक कि सेन्ट जानस्टनके नाइट लोगोंकी सम्पत्ति भी उल्लेने नहीं छोड़ी। इधर बूटके खुआटे दारह हजार और किडमिन बीस हजार सेना लेकर फलकार्कके मैदानसे कुछ दूरपर लडाईका नतीजा देखनेके लिये ठहरेरहे। वालेस दस हजार सेना लेकर उस बलस्थ अङ्गरेज अलौहिणीके सामने आया। उसकी तरफ अर्ल सलकास, सरजान ग्रेहम, रायजे, मीटन, लोडर, लुन्डिन और एडस वालेस सेनापति थे। एडवर्ड एक लाख सेना लेकर मनुद्रगामिनी उत्तालतरङ्गिनी नदीकी भाति टर्फीचेनके सामनभूरके मैदानजो चले।

भाग्य फुटने पर एडवर्डमें नही सुधरता। स्काटलेन्डके दुर्भाग्य-कार इस अन्तिम अवस्थामें स्काटिश सेनामें फुट पैली। खजाति विश्वासघाती किडमिनने वालेससे हाह करके उसकी सेनामें फुट डाल दी। इस बातको लेकर भारी फसाद खडा हुआ कि सेनापति शान हो। जिससिलने उध उठाया कि खुआटे रहते



वालेसको सेनापति बननेका कुछ अधिकार नहीं है और स्टुआर्टको भी यह बात हरगिज नहीं माननी चाहिये । किउमिनने जो चाहा था वही हुआ । वालेसने ऐसे संकटके समय सेनापतिका पद छोड़ने से अस्वीकार किया । जब समस्त जातिने एक वाक्यसे उसको जातीय शासनकर्त्ताके पद पर नियुक्त किया है तब उसने ऐसी हालतमें किसी खास आदमीके कहनेसे उक्त पद छोड़नेसे अस्वीकार किया । विशेषकर जिस आदमीने जातीय स्वाधीनताके समरमें आजतक जरा भी सहायता नहीं की है उसको जातीय सेनापतित्व लेनेका क्या अधिकार है ? वालेसने ऐसे प्रस्तावसे अपना अपमान समझा । खासकर स्टुआर्टके वाक्यसे उसे बड़ा गुस्सा आया । स्टुआर्टने दूसरी चिडियाका पर खोंसकर शोभा :पानेवाले कब्बेसे उसकी उपमा दी और कहा कि यदि हम लीम अपनी अपनी सेना लेकर चले जायेंगे तो वालेस कैसे जीतेंगे देखा जायगा ।

वालेससे अब सहा नहीं गया । उसने समझ लिया कि स्काटलैन्डका सुखसूर्य उदय होनेमें बहुत विलम्ब है, समझ लिया कि स्काटलैन्डके भाग्यमें बहुत दुःख बढ़ा है, समझ लिया कि ऐसे घरके शत्रु मौजूद रहते विजयकी आशा कहीं दूर है । यह समझकर वह अपनी दस हजार सेना लेकर फलकार्क मैदानके पूर्ववाले जंगलको चला गया । तब स्टुआर्टने अपनी भूल समझी । समझा कि मैंने विश्वासघातक किउमिनके जालमें फसकर स्वजातिका सत्यानाश किया, समझा कि इस भयङ्कर युद्धका योग्य नेता केवल वालेस है, समझा कि यह शीकका ताज मेरे सिर पर नहीं सजता है, समझा कि विधाताने मुझे जातीय सेनापति बनाकर नहीं भेजा है । समझकर वह घोर चिन्तामें डूब गये । समूची स्काटिश छावनी पर विपादकी घटा छागई ।

चतुर एडवर्डने इस घरकी फूटकी खबर पाई । पातेही अर्न हियरफोर्डको तीस हजार सेना सहित स्टुआर्ट पर चढ़ाई करनेके भेजा । स्टुआर्ट फौरन लड़नेको तय्यार हुए । कुछदेरतक दोनों

में घनास्तान युद्ध होता रहा । अन्तमें अङ्गरेज पीठ दिखाकर अङ्गरेजी छावनीमें जा छिपे । बीस हजार अङ्गरेज दूस लडार्डमें मारे गये । वालेस दूरसे ल्यूअर्टकी बहादुरी देखकर आनन्दमें मग्न होगया बार बार हाथ हिलाकर उसकी प्रशंसा करने लगा ।

किन्तु एडवर्ड प्रणसे पीछे हटनेवाले नहीं थे । उन्होंने फिर ४० हजार सेना देकर ब्रूस और विशप बेकको भेजा । अवके वालेस का मन घबराया—भावी जातीय असङ्गलकी आशङ्कासे उसका चित्त चञ्चल हुआ । एक बार दुरादा किया कि अभिमान छोड़ कर जातीय कार्यमें शामिल होजाऊं किन्तु इस बार अभिमानने स्वदेशानुरागको हरा दिया । वह गेरीवाल्डीकी तरह नहीं कह सका कि अगर एक मामूली प्यादा बनकर भी मैं जातीय कार्य करने पाऊं तो अपने जीवनको सफल समझूंगा । यहां गेरीवाल्डी से वालेसकी तुलना नहीं होती । वह किस हृदयसे जातीय स्वाधीनताकी रक्षाका भार विलासमें पड़े हुए अदूरदर्शी स्यूअर्टके हाथमें देकर लापरवाहीसे अलग खड़े होकर जातीयवत्स का नाश देखने लगा ? नहीं, वालेस ! तुम्हारे जीवनके सब कामों से आजके इस वर्तावका मेल नहीं है । जिस जातीय स्वाधीनताके लिये जेम्ससे कुछ चैन छोड़ चुके हो आज तुच्छ अभिमानके गुलाम होकर तुमने उसजातीयस्वाधीनतारक्षको, हाथमें पाकरभी मस्त हाथीकी तरह पैर तले रौंद दिया ? या तुम्हारा क्या दोष है । मध्याका लेख कौन मिटा सकता है ?

वालेसको सेनापति बननेका कुछ अधिकार नहीं है और स्टुआर्टको भी यह बात हरगिज नहीं माननी चाहिये । किउमिनने जो चाहा था वही हुआ । वालेसने ऐसे संकटके समय सेनापतिका पद छोड़ने से अस्वीकार किया । जब समस्त जातिने एक वाक्यसे उसको जातीय शासनकर्त्ताके पद पर नियुक्त किया है तब उसने ऐसी हालतमें किसी खास आदमीके कहनेसे उक्त पद छोड़नेसे अस्वीकार किया । विशेषकर जिस आदमीने जातीय स्वाधीनताके समरमें आजतक जरा भी सहायता नहीं की है उसको जातीय सेनापतित्व लेनेका क्या अधिकार है ? वालेसने ऐसे प्रस्तावसे अपना अपमान समझा । खासकर स्टुआर्टके वाक्यसे उसे बड़ा गुस्सा आया । स्टुआर्टने दूसरी चिडियाका पर खोंसकर शोभा पानेवाले कबसे उसकी उपमा दी और कहा कि यदि हम लोम अपनी अपनी सेना लेकर चले जायेंगे तो वालेस कैसे जीतेंगे देखा जायगा ।

वालेससे अब सहा नहीं गया । उसने समझ लिया कि स्काटलैन्डका सुखसूर्य उदय होनेमें बहुत विलम्ब है, समझ लिया कि स्काटलैन्डके भाग्यमें बहुत दुःख वदा है, समझ लिया कि ऐसे घरके शत्रु मौजूद रहते विजयकी आशा कहीं दूर है । यह समझकर वह अपनी दस हजार सेना लेकर फलकार्क मैदानके पूर्ववाले जंगलको चला गया । तब स्टुआर्टने अपनी भूल समझी । समझा कि मैंने विश्वासघातक किउमिनके जालमें फसकर स्वजातिका सत्यानाश किया, समझा कि इस भयङ्कर युद्धका योग्य नेता केवल वालेस है, समझा कि यह शीकका ताज मेरे सिर पर नहीं सजता है, समझा कि विधाताने मुझे जातीय सेनापति बनाकर नहीं भेजा है । समझकर वह घोर चिन्तामें डूब गये । समूची स्काटिश क्रावनी पर विपादकी घटा छागई ।

चतुर एडवर्डने इस घरकी फूटकी खबर पाई । पातेही अर्ल डियरफोर्डको तीस हजार सेना सहित स्टुआर्ट पर चढ़ाई करनेके भेजा । स्टुआर्ट फौरन सड़नेको तय्यारहुए । कुछदेरतक दोनों

में घमासान युद्ध होता रहा । अन्तमें अङ्गरेज पीठ दिखाकर अङ्गरेजी छावनीमें जा छिपे । दोन हजार अङ्गरेज इस लड़ाईमें मारे गये । बाकी दूरले ल्यूगार्टकी बहादुरी देखकर आनन्दमें मग्न होगया बार बार हाथ हिलाकर उसकी प्रशंसा करने लगा ।

किन्तु एडवर्ड प्रणसे पीछे हटनेवाले नहीं थे । उन्होंने फिर ४० हजार सैन्य देकर ब्रूस और विशप बेकको भेजा । अबके वालेस का मन घबराया—भावी जातीय असमझलकी आशङ्कासे उसका चित्त चञ्चल हुआ । एक बार द्वादा किया कि अभिमान छोड़ कर जातीय कार्यमें शामिल होनाज' किन्तु इस बार अभिमानने स्वदेशलुरागको हरा दिया । वह गेरीवाल्डीकी तरह नहीं कह सका कि अगर एक मानूली प्यादा बनकर भी मैं जातीय कार्य करने पाज' तो अपने जीवनको सफल समझूंगा । यहां गेरीवाल्डी से वालेसकी तुलना नहीं होती । वह किस हृदयसे जातीय स्वाधीनताकी रक्षाका भार विलाममें पड़े हुए अदूरदर्शी स, आर्टके हाथमें देकर लापरवाहीसे भलग खड़े होकर जातीयवस का नाश देखने लगा ? नहीं, वालेस ! तुम्हारे जीवनके सब कामों से आजके इस दतांवका मेल नहीं है । जिस जातीय स्वाधीनताके लिये जन्मसे कुछ चैन छोड़ चुके हो आज तुच्छ अभिमानके गुनाहगोकरतुमने उसजातीयस्वाधीनतारक्षकों हाथमें पाकरभी मस्त शायोदी तरह पैर तले रौंद दिया । या तुम्हारा क्या दोष है । मझावा लेख बोन सिटा सकता है ।

भाग कर पासके टरउड वनसे शरण लेनेके मिवा वालेस और उसकी सेनाके लिये और कोई उपाय न रहा। सोचने विचारने का भी समय नहीं। वालेस पलभरसे सेना सहित एडवर्डकी सेना के बीचसे जवाकी तरह टरउड वनको चला गया। इतनी जल्दीमें यह काम हुआ था कि वालेसके व्यूचभेद करके चले जानेके बाद एडवर्डकी सब हाल मालूम हुआ। घोड़ोंकी टापोंसे धूलउडकर चारों ओर इतना अधेरा होगया था कि वालेसकी मनुची सेना चलेजानेके पहले असली बातको कोई जान न सका। जैसे महा तूफान सामने को जड़ अजड़ सब चीजोंको उड़ा लेजाता है वैसेही वालेस और उसकी सेना सामनेकी विपक्षी सेनाको दल मल कर निकल गई। वालेस ग्रेहम और लोडर तीनों चुनी हुई सेनासे पीछा करनेवाले शत्रुओंका आक्रमण रोकते रोकते जंगलको चले गये। ब्रूसने बीस हजार सेना लेकर भागते हुए स्वदेशियोंका पीछा किया। वालेस अपनी चुनी हुई सेनाको प्रधान सेनासे मिल जानेका हुक्म देकर ग्रेहम और लोडरको मदद देता शत्रुओंका आक्रमण व्यर्थ करने लगा। जो उसकी प्रचण्ड तलवारकी परिधिमें आता वह कालके जवाले होता। अन्तमें ब्रूसने स्वयं वालेसका गला ताक कर बर्छा चलाया। वालेस जखममेंसे बर्छा निकालकर पट्टी बांधनेलगा। उधर ग्रेहम और लोडर बड़ी दिलेरीसे शत्रुओंका सामना करने लगे। वालेस फौरन तीन सौ सेना लेकर ग्रेहम और लोडरकी मददको पहुंचा। उधर विषयवेक अपनी सेना सहित ब्रूसकी मददको आ गये। ब्रूसने फिर वालेस पर बर्छा फेंका किन्तु अबके उसका निशाना खाली गया। वालेसने क्रोधसे अन्धे होकर कराल तलवारकी चोटसे ब्रूसको नीचे गिराया। ब्रूसकी सेनाने उसीवक्त उन्हें घोड़े पर चढा दिया। वालेस क्रुद्ध शेरकी तरह अकेले रणमें गर्जने लगा। बहुत जल्द ग्रेहम उसकी मददको पहुंच गया। पहुंचते ही उसने तलवारसे ब्रूसके सामनेके अङ्गरेजोंको काट डाला। यह कर एक दूसरे अङ्गरेज नाइटने पीछेसे उसकी पीठमें जोरसे

वर्द्धा मारा । ग्रंथमने पैरसे कुचले हुए मर्णकी तरह गुस्से में आकर एकही तलवारमें उसको काट डाला । किन्तु यही उसका आखिरी वार हुआ । लल्लु सामने देखकर उसने गधाधन सेनासे मिलनेके लिये उधर घोड़ेकी बाग सोड़ी । किन्तु रास्तेमेंही घोड़ा मारा गया और क्षणभरमें ग्रंथमका प्राणपक्षी उड़ गया । स्वाटरेन्डके पूर्ण चन्द्रमाको राहुने ग्रस लिया ।

वालेस शोकमें पानल होगया । मतवाले हाथीकी तरह शत्रुओं को रौदने लगा । जिसे सामने पाने लगा उसे मारने लगा । ग्रंथम की लाश पर उसकी आग बरमाने वाली आंखें पड़ती थीं और विजलीकी तरह उसकी नसनसमें खून दौड़ता था । ब्रूसने वालेसको शोकान्ध देखकर अपने वर्द्धाधारो सैनिकोंको उमके घोड़े पर वर्द्धा चढ़ानेका हुक्म किया । उनके वर्द्धेसे उसका घोड़ा घायल हुआ । तब वालेसका हौश ठिकाने आया । वह घोड़ेको दौड़ाकर अपनी सेनामें आगया । सेना कौरन नदीके किनारे खड़ी होकर उसका रास्ता देखती थी । वालेसने आगेही उसे नदी पार होनेका हुक्म दिया, खय सबसे पीछे घोड़े पर चढ़ा नदीमें बूढ़ पड़ा । खामिलक्त घोड़ा खोसीको उन पार पहुँचाकर गिर पड़ा । गिरा और मरा । उगी दत्त वार्त्तेने उमके लिये एक दूसरा घोड़ा लादिया । वालेस उस पर नवार होकर भूट अपनी सेनामें आगया । इस फलकार्ज-झरखेदमें तीन हजार अङ्गरेजी मना भारी गई । उधर सर जान ग्रंथम और सिर्फ पन्द्रह स्वाट पैदल मारे गये । फगरजीने लड़ाई तो जीती पर असख्य अङ्गरेज परिवारोंमें हाहाकार पड़ गया ।

कुल्हाडी सारी है, तब समझा कि गङ्गा रेजिमेंट से मिलकर स्वदेशका सत्यानाश किया है। अब पश्चात्तापमें उनका कलेजा फटने लगा। तब नदीके उन पारसे वालेसजी मित्रभावसे बुलाया। दोनों मिलने पर एक दूसरेकी दूधने लगे। वालेसने शपथ खाकर कहा कि राजगद्दी लेनेकी मेरी लाराया नहीं है। मैं जातीय स्वाधीनताके लिये इतने दिनसे लड़ रहा हूँ स्काटलैण्डके असली राजाकी अधीनता माननेकी सब तरहसे तय्यार हूँ किन्तु राजा होकर प्रजा पर हथियार उठाना—ब्रूससे ऐसा अपराध हुआ है जो चमाके योग्य नहीं। यह बात वालेसने साफ साफ कह दी। ब्रूसका हृदय वालेस के वाक्यसे पिघल गया। अन्तमें दोनों दूसरे दिन सबेरे डूनिपेसके गिरजेमें मिलनेका वादा करके उस दिन अपने अपने डेरेको चले गये। यह भी वादा हुआ कि ब्रूस बारह स्काटों सहित और वालेस दस आदमियों सहित आवेंगे। ब्रूस वालेससे बिदा होकर भाटपट एडवर्डके खेमेमें चले गये। वहा हाथमें खून लगे हुए ही सबके साथ खाना खाने बैठ गये। एक अङ्गरेजने उनकी दिशगी उड़ाई—“तुम स्काट लोग अपना खून आप पीते हो” यह बात उनके हृदय पर वज्रसी लगी। उन लोगोंने बारबार हाथ धोनेकी काहा मगर उन्होंने उत्तर दिया—“यह अपना खून है धो देनेका नहीं है।” उस दिनसे ब्रूसकी तलवार फिर स्काटलैण्डके विरुद्ध नहीं उठी।

दूधर वालेस टरउड जंगलमें चला आया। वहां उसकी सेना खा पीकर सोने लगी वह भी बिस्तरे पर गया पर उसकी आंखोंमें नींद नहीं आई। उठ बैठा। प्यारे मित्र ग्रैहम और स्काटिश वीरोंकी लाशें फलत्कार्क मैदानमें पड़ी है अभी तक दफनाई नहीं गई—इस मर्मभेदी चिन्ताने उसे व्याकुल कर दिया। वह अर्ल मलकम, लुन्डिन, रामजे, लोडर, सीटन और रिकर्टनके एडमकी साथ ले पाच हजार सुसज्जित सेना सहित उसी रातको लंडनके में आया। लाशोंके ढेरमेंसे चुन चुनकर स्काटिश वीरोंकी

लागे निकाली । जब प्रियसिद्ध ग्रेहमको देह मिली तब वह घोड़े से उतरकर लाश गोदमें लेकर रोने और विलाप करने लगा । उनके रोने वित्तवनेमें सब रोने लगे । अन्तमें सबने उसकी गोदसे लाश लेकर फलकार्कके गिरजेमें दफन की ।

प्यारे सिद्धकी अन्तिम क्रिया होजाने पर वादेके अनुसार वालिस दन आदमिया सहित डुनिपेसके गिरजेमें ब्रूससे भेट करने गया । अपनी छोटीसी सेनाको फलकार्कके मैदानमेंही ठहरनेको कह गया । ब्रूस ठीक समय पर वहा पहुच चुके थे । ग्रेहमके शोकसे वालिस ब्रूसके साथ मीठी बातें न कर सका । उसकी सर्गशेटी वार्तासे ब्रूसका हृदय विधगया । उन्होंने गिडगिडाकर कहा “वालेस, अब अधिक मुझे मत धिक्कारो मे अपनी करनीपर आप रो रहा हूँ ।” ब्रूसके अपना दोष खीकार करने पर वालिसकी हृदयका भाव बदल गया । क्रोध दूर होकर क्षांतिभावका सञ्चार हुआ । वह हृदय के उद्गमसे ब्रूसके चरणोंमें गिर पडा । ब्रूसने हाथ फैलाकर उसे गोदमें उठा लिया । ब्रूसने देदीके सामने प्रतिज्ञा की कि मैं अब किसी खदेगियो पर छथियार नहीं उठाऊंगा और एडवर्डसे जो प्रतिज्ञा कर रखी है उसका समय पूरा होतेही वालेससे आसिनुंगा । दोनोंने एक दूसरेसे विदा ली । ब्रूस एडवर्डकी हावनीमें चले गये और वालिस अपनी सेनामें जागया । १२६८ ईस्वीई १२ वी जुलाई को फलकार्कका दफन हुआ ।



स्थान से हट गया । एडवर्ड वीरोचित विक्रमसे संग्राम करने लगे । वाल्लेमने उनके भगड़े वाल्ले को एकही बारमें मार गिराया । भगड़ा गिरा देख कर अगरेज सेना डर कर भागी । एडवर्डने स्वयं लाचार होकर भागती हुई सेनाका साथ दिया । लिनलिथगाऊमें ११ हजार अगरेजोंका सथराव होगया । स्काट तोभी न हटे । ममूची स्काट सेनाने अगरेजोंका पीछा किया । उनकी प्रचण्ड तलवारोंसे चालीस हजार अगरेज भागते भागते मारे गये । बाकी सेना सहित एडवर्डने सालवे पार हो इंग्लैण्डमें जाकर प्राण बचाया ।

वाल्लेस लौट कर एनम प्रदेशसे होता हुआ एडिनबुरामें आया, आकर क्राफोर्डको फिर उसका शासनकर्त्ता बनाया । अगरेजी आक्रमणसे पहले जो जिस पदपर थे और जीतेथे उन्हें उन्ही पदोंपर नियुक्त किया । समस्त स्काटलैण्डमें फिर विश्वव्यापी शान्ति विराजने लगी । डन्डी किलेपर स्क्विमजियो द्वारा फिर दखल होगया ।

अवसर देखकर वाल्लेसने सेन्ट जानस्टन शहरमें एक पार्लीमेन्ट बुलाई । जब पार्लीमेन्टके सभ्य अपने अपने स्थान पर बैठ गये तो वाल्लेसने सबके सामने अपनी गवर्नरीसे इस्तीफा दिया । उसने साफ साफ कह दिया कि जब जमींदार लोग सुभसे डाह रखते हैं तब मैं इस पद पर नहीं रहना चाहता । कहा कि मैं फलकार्कके मैदानमें पूरा फल पाचुकाहू—देशके लिये जो आत्मोत्सर्ग किया था उसके बदले यथेष्ट अपमान और तिरस्कार पाया है । इस बार मैंने स्काटलैण्डको फिर शत्रुओंके पंजेसे निकाल दिया है अब मैं जन्मभूमिसे विदा लेकर फ्रांस चलाजाऊंगा । वहा जाकर जैसे बनेगा जिन्दगीके बाकी दिन बिताऊंगा ।

पार्लीमेन्टने उसे ऐसा न करनेके लिये बार बार अनुरोध किया किन्तु वाल्लेसना प्रण टूटनेवाला नहीं था । वाल्लेसने देख लिया कि जबतक स्काटलैण्डकी गद्दीके लिये जागीरदारोंमें झगडा रहेगा, जब मतभेदके अन्धे तगध्याल जमींदार सुभसे डाह करेगे, जबतक लैण्डके असली राजा ब्रूम अपना ख्याल न करेंगे तबतक

स्काटलेण्ड की सदाकेलिये शत्रुओंकीसुझीने निकाललेना असंभव है । इसलिये स्वदेशमें रहकर स्वदेशका वाग्वार अधःपतन नहीं देख सकता । जब कभी दिन आवेगा, फिर स्वदेशकी उद्धारकेलिये हथियार उठाऊंगा । यह कहकर वह आत्मीय आत्मीयसे पालीमेंसे विदा लेकर सिर्फ अठारह सहचरी सहित क्राउनकी चलागया । स्काटलेण्डका मुख्यकार्य कुछ दिनोंके लिये अस्त होगया ।

जो अठारह आदमी वालिसके साथ गये उनमें लांगविल, साइमन रिचार्ड वालिस, सर टामसन, एडवर्ड लीटन जाप और बूयर मुख्य थे । अपनीइच्छासे देशत्यागनेवालायहवीरद्वन्द्व कुछ व्यापारियोंसहित लण्डीवन्दरमें जहाजपर सवार हुआ । जहाज डल्लेण्डके राज्यसे हो कर जानेलगा । कुछही दूरपर लाल पालका शेर चिह्नित ध्वजावाला एक जहाज अचानक देखपड़ा । व्यापारियोंकी मालूम था कि यह किसका जहाज है । उन्होंने वालिससे कहा कि यह लीनके जान का जहाज है । यह जालिम अङ्गरेज स्काटलेण्डवासियोंकी मार डालना पुण्य समझता था । देखते देखते जान वालिसके जहाजके निशट पहुच गया । पहुचतेही उसने “युद्ध टैह” कहकर स्काटों की लड़नेके लिये लड़वारा । उस लड़कारके उत्तरमें बूयरके धनुषसे तीन वाण छूटे । एक एक वाणसे एक एक अङ्गरेज मारा गया । अङ्गरेज क्रोधमें आकर एक चपटे लगातार गोले और दाएँ दरसते रहे । अन्तमें दोनों दलोंमें हाथापाई और तलवार की लड़ाई होने लगी । एक एक करके साठ अङ्गरेज स्काटोंके हाथ मारे गये । जानकी भागनेका छील लगते देखकर तापोर्डने उसके जहाजके मस्तूलमें आग लगादी और वालिस, तागविल और बूयर उसे पकड़ कर अपने जहाज पर लेआये । वालिसकी तलवारकी एक ही चपेटमें उस जालिम डाकूका सिर धड़ले अलग होगया तलवार साथ युद्धकी आग भी बुझ गई । खबर देनेके लिये एक भी सहाय देणकी नहीं लौटने पाया । तब स्काटोंने उस आरतने मरा जहाज लेकर फ्रांसकी कुछ विदा । लण्डन वन्दरमें

पहुँचकर वालेसने सान असबाब खुद नैनिया और जहाज व्यापारियो को दे दिया । वालेस फ्रान्डर्स होकर फ्रान्स गया । पेरिस राजधानीमें फ्रांस नरेशने बड़े आदरमें वालेसको उतारा ।

## चौदहवां अध्याय

वालेसका फ्रांसका सेनापति बनाया जाना—एंडवर्डकी स्काटलेन्ड पर फिर चढ़ाई—क्रिउमिन और ब्रूनसे सन्धि—आर्मीसकी सन्धि—अगरेजोंकी स्काटलेन्ड पर फिर चढ़ाई—रसलिनका युद्ध—अगरेजोंकी हार—एंडवर्डकी फिर चढ़ाई—फिलिपका विश्वासघात ।

फ्रांसनरेशने वालेसका स्वागत करके उसको समूचे गाइन प्रदेश की हुकूमत सौंप दी । उन्होने वालेसको खूब बनाना चाहा । वालेसने स्वीकार नहीं किया तो उसे नाइटकी उपाधि और फ्रांसीसी सेनापतिका पद दिया । उन्होने उसको अपनी वर्दी आप प्रसन्न कर लेनेको कहा । वालेस अपनी सदाकी लाल सिन्धवाली पोशाक व्यवहार करने लगा । फिलिपने उसे बहुत जल्द रणभूमिमें उतरनेका अनुरोध किया । उस समय इंग्लेन्डसे फ्रांसकी बड़ी भारी लड़ाई चलती थी । वालेसके मैदानमें आतेही चारोंओरसे स्काट उसके भण्डोंके नीचे आकर जमा होने लगे । लागविलने भी उसके लिये बहुतसी फ्रांसीसी सेना जमा की । थोड़े समयमें दसहजार सेना उसके भण्डोंके नीचे जमा हुई । इधरसे खूब आफ अरलिन भी बारह हजार सेना सहित उसकी मददको आपहुये । मार्ग जयन्तक्षीने वालेस पर प्रसन्न होकर स्वयं उसके लिये सेना दी ।

इधर स्काटलेन्ड-रयिके पूर्व भागमें छिपजाने पर घोर दुःखकी रात आकर नारे स्काटलेन्ड पर छा गई । घरके शत्रुही स्काटलेन्ड के सत्यागाशकी जड़ थे । विद्रोहमघातक जातीय शत्रु सर आमेर डि वाने सने लियन हौसकी अफसरीकी आशा देकर सर जान मानौथने एडवर्डकी अधीनता स्वीकार कराई । इधर एडवर्डने भी भारी सेना लेकर इस सौके पर फिर स्काटलेन्ड पर चढ़ाई की । वालेमकी गैरहाजिरीमें जातीय सेनाका नायक होने लायक कोई आदमी उस वक्त न था । इनमें एक एक करके सब स्वाटिशविले वेल्लडाई उनके अधिकारमें आगये । जिन्होंने एडवर्डकी अधीनता न मानी वष्ट हाईलेन्डके प्रामक्केटापुत्रोंमें भागगये । विगप मिर्लियन बूट की भागगये । स्वाधीनताकी यादतक मिटादेनकेलिये एडवर्डने रोस की दीवारें गिरवादीं और राजसमन्धों सब कागजात नष्ट करदिये । जिन्होंने उनदी अधीनतामें जमींदारी करनेमें इनकार किया उनकी इंग्लैन्डके कैदखानोंमें भेज दिया । सर विलियम डगलस इंग्लैन्डके कैदखानोंमें ही रहे । टायस रैन्डलफ, लार्ड फ्रीजर और डिउ दि ईको उन्होंने वार्गेसकी पहरमें इंग्लैन्ड भेजदिया । सीधन, लोडर और लन्डिन दासकी भाग गये । सलकन और केवल वृटमें विगप मिलेयरके यज्ञ चले गये । रासर्ज और दघवेन क्लाइमेन नामके एका आदमीके साथ राघ गायरके अन्तर्गत मृदाफोर्ड शहरमें एका किला बनाकर रहने लगे । एडेन वालेम, लिन्डसे और रावर्ट पायरने आरम्भमें शरण ली । वालेमरूपी सूर्यके अन्तर्धान होनेसे मानी स्वाटिश जातीय सूर्यसङ्कलक्ष ग्रह केन्द्रजआकर्षण दिना चारों ओर दिखने लगे । कनपेड्रिक एडवर्डकी अधीनता स्वीकार करके अपने पिताके सौज उद्योगे लगे । एडरनेमी, मोल्लिन, दिडमिन, मोरनेके जान, लार्ड ट्रेचिन और टूनेर और दहृतमें रहने एडवर्डसे सन्धि करके अपनी अपनी जमीन भोगने लगे । मानी एक मूर्ख मण्डनके अह मरणा अपने बगलमें गिरकर दूसरे केन्द्रपर जालटके ।

ऐसे गुलाबीनी जंजीरसे बद्ध होकर दृष्टदासी देगदितैर्थादमने

एक जहाज सजाकर दूतके साथ वालेसके पास भेजा और कहता भेजा कि आप आकर स्काटलेन्डके सूने सिंहासन पर बैठिये इससे एडवर्ड का अत्याचार अब सहा नहीं जाता । वालेसके साथ फल-कार्कमें जो बुरा बर्ताव हुआ था उसे वह भूला न था इसलिये उसने प्रस्ताव अस्वीकार किया । जातीय दूत हताश होकर क्रूझ जहाज लेकर लौट आया । जातीय दलको वेहद अफसोस हुआ ।

इस वर स्काटलेन्डका वन्देवस्तु वेधक होने लगा । एडवर्ड समस्त स्काटलेन्ड पर फिर अधिकार करके अनुगत और आश्रित जागीर-दारोंको उसकी जमीन बांटने लगे । उन्होंने यार्कके अर्लको सेन्ट-जानस्टनकी मिलकीयत और टे और डी नटीके बीचके दुआबका सेनापतित्व दिया । लार्ड बौमन्डको हाईलेन्ड प्रदेशका सेनापति बनाकर भेजा, लार्ड क्लिफोर्डको डगलस डेलका अधिकार और दक्षिणस्काटलेन्डकी हुकूमत दी, विश्वासघातक किउमिनको समूचा गालवे प्रदेश सौंपा और लार्ड सोलिसको समूचे मार्स प्रदेशका मालिक और वारविकका सेनापति बनाया । एडवर्डने पवित्र आतिथ्यधर्मका नियम तोड़कर शरण आये हुए विषय लेमर्टन और लार्ड ओलीफेन्टको बेडियां पहना कर इङ्गलेन्डके कैदखानेमें भेजा । इस तरह वह स्काटलेन्डमें शान्ति स्थापन करके इङ्गलेन्ड लौटआये ।

पापका धन बहुत दिन नहीं रहता । एडवर्ड जातीय विश्वास-घात फैलाकर स्काटलेन्डकी छाती पर जो राजमहल बना गये थे उनके लन्दन लौटते लौटते विश्वासघातकी विप्राकर्षणी शक्तिसे उस आशीशान इमारतकी नींव धस गई । विश्वासघातक किउमिन ने ब्रूससे यह शर्त ठहरवाई कि अगर ब्रूस किउमिनकी सहायतासे स्काटलेन्डकी गद्दी पावे तो किउमिन जितनी जागीर मांगेगा ब्रूस उतनी देगी ।

इस बार समस्त स्काटलेन्ड एडवर्डके विरुद्ध खड़ा हुआ । एक एक करके सब किले फिर स्काटोंके हस्तगत होगये । केवल गैंग क्लिफ और लकमेवेन तथा दूसरे मामूली शहर अब भी

फ़ारेजीकी देखलमें रहे । १२८८—८९ ईस्वीमें स्काट धीरे धीरे फ़ारेजीके अधिकारमें गये हुए किलों पर हमले करने लगे । १२८८ में पोपसे एडवर्डकी एक सन्धि हुई । उसकी अनुसार एडवर्डने स्काटिश सिंहासनके मुख्य दावेदार वेतियलकी पोपकी सुपुर्द किया ।

वालेसके स्काटलेन्डके अभिभावकका पद त्याग करने पर किडमिन, लार्ड सोलिस और सेन्ट एन्ड्रूजके बिशप लेम्बर्टन स्काटलेन्डके रिजेन्ट बनाये गये । रिजेन्ट लोगोंने एक झरसे शत्रुओंको निकाल बाहर करनेका प्रण किया । उन्होंने बड़ी सुस्तैटीसे स्टर्लिंग का किला घेर लिया । एडवर्डने इस खबरसे डरकर जागीरदारोंको ससैन्य स्काटलेन्ड चलनेका हुक्म दिया । किन्तु जागीरदार लोग लगातार लड़ाइयोंसे थक गये थे इसलिये उन्होंने एडवर्डसे कई तरफ़के उध और बढ़ाने करके जाना न चाहा । किन्तु एडवर्ड चुप रहनेवाले आदमी नहीं थे उन्होंने अपनीही सेना लेकर स्टर्लिंग को बूच दिया । स्काटलेन्डमें पहुच कर देखा कि स्काट उनका सामना करनेको भलीभांति सुस्तैट हैं और स्काटिश सेना अबको उनकी सेनासे कम नहीं है । यह देख उन्होंने चुपचाप लौट जानाही अच्छा समझा । तब स्टर्लिंग किलेके निवासियोंको लाचार होकर लार्ड सोलिसको हाथमें आत्मसमर्पण करना पडा । स्काटिश रिजेन्टोंने सर विलियम फ़ोर्लिफ़ेन्टको स्टर्लिंग किलेका शासित बनाया ।

किडमिनने अब अपने पापका प्रायश्चित्त आरम्भ किया । अपार धन और असीम अधिकारसे उस समय स्काटिश जागीरदारोंमें भोई उसका खानी न था । उसने अपने धनके अनुसार दान देना शुरू किया । उसके दानसे प्रजा उसको बहुत मानने लगी । खालसर रिजेन्ट लोगोंने जब सुना कि वह लोग प्रजाके लोपे हुए विचारका उपयोग करेगा तो वालेस खदेष्ट लौटनेकी तय्यार है तबसे वह दर्दार्थी शासकोंके काम करने लगे

फिउमिन अपने अच्छे वर्तावसे प्रजाका विशेष प्रीतिभाजन होगया । वालेसके दाइनेसे फ्रांसनरेश फिलिप फ्रांससे बहुतसा अन्न और शराब स्काटलेन्डमें भेजने लगे । फिउमिन आधे टाम पर वह सब चीजें प्रजाके हाथ बेचने लगा । प्रजाने उसका नाम 'गुड स्काटिशमैन' यानी 'साधु स्काटिशमैन' रखा ।

उधर एडवर्डने स्वदेश लौटकर जागीरदारोंके सब उख मिटा कर १३०० ईस्वीकी पहली जुलाईको बड़ी भारी सेना लेकर फिर स्काटलेन्ड पर चढ़ाई की । इसवार ८७ जागीदार अपनी अपनी सेना सहित एडवर्डके झण्डेके नीचे आखड़े हुए । इस बारकी यात्रा समूचे स्काटलेन्डको सदाके लिये जीत लेनेके इरादेसे थी । जागीरदारोंमें ब्रिटेनके नाइट लोग, लोरेन, स्काटिशनरेश वेलियलके भाई अलकजेन्डर वेलियल, पेद्रिक, सपुत्र अर्ल डनवर सर साइमन फ्रेजर, ग्रेहमके डेनरी और रिचार्ड सिवार्ड प्रधान थे । इस विराट सेनाके चार भाग हुए । पहला भाग लिंकनके अर्ल, दूसरा वारिनके अर्ल जान तीसरा स्वयं एडवर्ड और चौथा युवराज एडवर्ड के सेनापतित्वमें चढ़ाई करने चला । एक रणवाकुरा सैनिक सेन्ट जान का जान—सत्रह वर्षकी अवस्थाके युवराज एडवर्डकी सहायतामें नियत हुआ ।

इस महती सेनाको लेकर एडवर्डने प्रसिद्ध पहाड़ी किले केयार लावेरकको जाघेरा । उस समयके अनेक लडाईके यत्न लेकर एडवर्डने किला तोड़नेकी चेष्टाकी मगर किसी तरह कामयाब न हुए । बार बार उनकी सेना किलेपर दखल जमानेकी कोशिश करने लगी मगर हर बार पीछे हटना पडा । इस तरह बहुत दिन बीत गये तो भी किला हाथ नआया । किलेवालेभी लगातार रोकनेकी चेष्टा करते करते थक गये और अन्तमें प्रस्ताव किया कि अगर हम लोग सकुशल किला छोड़ कर जाने पावें तो एडवर्डको किला शौप कर चले जानेको तय्यार हैं । एडवर्डकी यह प्रस्ताव मानना पडा । किले वाले अब शस्त्रसे सज्जित

होकर किलेसे निकल एडवर्डकी छावनीके मासनेसे चले गये । एडवर्ड देख कर दातीमें उगली काटने लगे कि सिर्फ़ साठ बहादुर इतने दिन उनकी अपार सेना की सब चेष्टा व्यर्थ करके किलेकी रक्षा कर रहे थे । कोई कोई इतिहास लेखक कहते हैं कि एडवर्डने अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर उस वीर दलमेंसे कईएकको फांसी पर लटका दिया था । खैर जोहो, एडवर्ड किलेपर अधिकार करके गियर फ़ोर्डके अर्नको उसका अपहरण बनाकर सैन्य उत्तरकी तरफ़ खाना हुए ।

इधर स्कॉटिश कमिश्नर फ़्रांस राज फ़िलिपसे सहायता न पाकर रोसमगरमें गये । उनकी दुःख कहानी सुनकर पोपने एडवर्डको स्कॉटलैण्डकी स्वाधीनता छीननेसे बाज रहनेका अनुरोध करके एक चिट्ठी लिखी । एडवर्ड यह आप्रापत्त पाकर पछले तो बड़े नाराज हुए पीछे शर्म होकर पोपको इस किस्मकी चिट्ठी लिखी कि मैं आपका पत्र पालीमेंटमें पेश करूंगा । चिट्ठी भेज कर भटपट उन्होंने लिणकानमें एक पालीमेंट बुलाई । उस मसामें १०४वैरन उपस्थित हुए । सबके दस्तखतसे इस किस्मकी एक चिट्ठी रोमके पोपको लिखी गई कि स्कॉटलैण्ड मुझसे इंग्लैण्डकी अधीनता स्वीकार किये आता है इससे इंग्लैण्ड इतने दिनकी प्रभुता छोड़ना नहीं चाहता । चिट्ठी भेजकर एडवर्ड मस्त हाथीकी तरह मसम स्कॉटलैण्डकी रौंदने लगे । बीच बीचमें स्कॉटिश सेनामें उनके सेनावा खण्ड खुद होने लगा । असत्य किले धीरे धीरे उनके अधिकारमें आने लगे ।



एडवर्ड ने समूचे दक्षिणी स्काटलैण्ड को हमेशा के लिये इंग्लैण्ड के राजसिंहासन के अधीन करना ठाना था। उन्होंने पुराने किलों की मरम्मत शुरू करा दी और सब किलों को टीवार खाई आदि से मजबूत कराने लगे। इस काम के लिये उन्हें इंग्लैण्ड से बहुत से मजदूर मंगाने पड़े थे। स्वदेशानुराग के कारण स्काटिश भूमि में उन्हें एक भी मजदूर न मिला। धन्य स्काटलैण्ड। धन्य तुम्हारा स्वदेशानुराग। इतना ही नहीं अपनी अपार सेना के लिये रसद तक उन्हें इंग्लैण्ड से मगानो पड़ी थी क्योंकि स्कॉट्सने अङ्गरेजी सेना को रसद न देने की इच्छा से बाजार बन्द कर दिये थे और अपने सब कलकारखाने इसलिये तोड़ दिये थे कि उनके देश की बनी हुई चीज अङ्गरेज न पास करें। धन्य स्वदेशानुराग। धन्य स्वजाति प्रेम।

उन्नीसवीं सदी के अन्त में अङ्गरेज अफगानस्थान जीत कर जैसी भू-भाग में पड़े थे एडवर्ड दक्षिण स्काटलैण्ड जीत कर भी वैसे ही सङ्कट में पड़े। उस प्रदेश की शासन में रखने के लिये जितना खर्च पड़ने लगा उतना कोई फायदा न हुआ। इधर फिलिप ने भी उनसे कम से कम सामयिक सन्धि करने के लिये प्रस्ताव किया। एडवर्ड के दूत ने पेरिस में जाकर इस सामयिक सन्धिकी शर्तें तय कीं। १३०० ईस्वी की ३० वीं अक्टोबर को डमफ्रीज शहर में उस सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर किया। उस सन्धि में स्काटलैण्ड भी शामिल हुआ। उसके मुताबिक हेलोमस ड्रिडसर्ड तक इंग्लैण्ड, स्काटलैण्ड और फ्रांस में शान्ति रहेगी। कोई किसी पर हस्तक्षेप न कर सकेगा।

सामयिक सन्धिका समय पूरा होते ही एडवर्ड ने स्काटलैण्ड पर फिर चढ़ाई शुरू की। वहाँ एक किला बनाने के लिये तय्यारी होने लगी। इधर फ्रांस के फिलिप के दरबार में स्थायी सन्धिके नियम बनाये जाते थे। अर्ल बिउकन, स्काटलैण्ड के स्टुअर्ट जेम्स और रिजेन्ट मोलिस और इनजेल बामडौ एम फ्रेविल स्काटलैण्ड के प्रति निधिके तौर पर पेरिस में मौजूद थे। एडवर्ड और फिलिप दोनों दिन में शान्ति चाहते थे। एडवर्ड मन ही मन यह इरादा करते फिलिप से झगड़ा मिटते ही स्काटलैण्ड का सब तरह से शासन

कर लेंगे । इधर फिलिप भी लडाईके खर्चसे तंग आगये थे ।  
जिन्तु वह स्काटलेन्डको छोड़ कर सन्धि करनेकी तय्यार न थे ।  
एडवर्ड भी किसी तरह उससे राजी नहीं हुए । अनेक बाद-  
विवादके बाद एक फैसला हुआ । एडवर्डने आग्रित फ्रेमिंग्स  
लोगोंको छोड़ दिया, फिलिपने आग्रित स्काटोंकी एडवर्डकी छपा  
पर छोड़ दिया । इङ्गलेन्डके वाणिज्यकी इससे बड़ी हानि होने  
पर भी एडवर्ड विवाट राज्य लालमार्गे अन्ध होकर राजी होगये ।  
इस सन्धिका नाम आमीसकी सन्धि है ।

इस बीचमें सर साइमन फ्रेजर एडवर्डका भण्डा छोड़ कर  
जातीय भण्डेके नीचे आकर खड़े हुए । वह बड़े प्रतिभाशाली  
और साहसी पुरुष थे । उनके अगुआईसे जातीय दलका बल बहुत  
बढ़ गया । उधर ग्लासगोके विधायने एडवर्डकी अधीनता स्वीकार  
की । फ्रेजरके अगुआईसे यह घाटा पूरा हुआ बल्कि कुछ नफा रहा ।

१६०२ ईस्वीकी ६० वी नवम्बरकी उमरपायकी सन्धिका  
मस्य पूरा हुआ । उसी दिन जान डी सिप्रैवके अधीन २०६ जार  
अङ्गरेजसेना स्काटलेन्ड पर भेजी गई ।

उभालियां पर गिनने योग्य थोड़ेसे स्क्वाटोंके हाथसे मिथेव जैसे सेनापतिके अश्वीन इतनी भारी अग्ररेज सेनाको हार सुनकर एडवर्ड ओवसे पागल होगये । यूरोपमें अपनी सेनाकी इज्जत बट जानेसे वह बहुत डरे । गई इज्जतको फेर लाने पर मुस्सैट हुए । स्काटलेन्डके लिये जो लोहेकी जङ्गीर बना रखी थी इस बार उन्होंने प्रण किया कि चाहे जैसे हो स्काटलेन्डके पैरसे वह बांधनी होगी । इस लिये उन्होंने स्वदेशविदेशमें जो जहाज या मयमैनिकों और जागीरदारों को अपने भाण्डेके नीचे आकर खड़े होनेका हुक्म दिया । वेधमार जङ्गी जहाज रसद और पोशाक आदिसे भरकर तरोके रास्ते स्काटलेन्डको रवाना हुए । उन्होंने स्वयं वह विराट सेना लेकर खुश्वी के रास्ते उत्तरको कूच किया ।

इधर फिलिपका विश्वासघात इस समय चरम सीमाको पहुच गया । उन्होंने स्काटिशकमिश्नरीको इस अन्तिम अवस्थामें कैद कर रखा । उन्हें फुसलाकर नजरबन्द रखा कि हम एडवर्डको स्काटलेन्डसे अलग सम्मिल करानेके लिये कोशिश कर रहे हैं । वैसे वीरो के उस समय स्वदेशमें रहनेकी बहुत जरूरत थी । तथापि फिलिप ने किसी तरह उन्हें जाने नहीं दिया । ऐसा करके वह एक तरहसे एडवर्डकी मदद करने लगे ।

एडवर्डके शासनकी बात समस्त स्काटलेन्डमें फैलने नहीं पाई थी कि कामजोर दिलके स्काट अमीरोंने आगे बढ़कर एडवर्डसे माफी मागी । जातीय विश्वासघातक सर जान मौन्टीथ उनमें अगुवा था । उसे इस विश्वासघातके बदले सम्पूचे लेनस् प्रदेशकी हुक्मत इनाममें मिली और अपने पहले पद (डक्लरटनको गवर्नरी) पर रहनेका हुक्म मिला ।

## पन्द्रहवां अध्याय ।

### वालिसकी सङ्कटावस्था ।

जब एडवर्डने असख्य सेना लेकर तीसरी बार स्काटलेण्ड पर चढ़ाई की तो तब भयभीत और चौकन्ने स्काटलेण्डने वालिसको इस भीषण विपदमागरमें एक मात्र कर्णधार समझकर याद किया । समस्त स्काटलेण्डवासियोंने एक वाक्यमें उसको स्काटलेण्डके सने गिहासन पर बिठानेका विचार किया । यह विचार करके उन्होंने वालिसको राजी करनेके लिये फ्रांसनरेश फिलिपके पास दूत भेजा । किन्तु फिलिप वालिसको वसमें शामिल नहीं होने देना चाहते थे इससे उन्होंने उसको इसकी खबर न होने दी ।

उधर फ्रांसीसी भूमिमें रहना वालिसको बहुत बुरा मालूम होने लगा । फ्रांस नरेशने उसे गार्डन प्रदेश दिया था किन्तु उसका शासन करनेमें उसे शारीरिक और मानसिक दोनों शक्तियां खर्च करना पड़ी थी । फ्रेंचरेजीने अब भी वीडो नगरपर दखल रखा था । पर्ल ग्लास्टर उस किलेके कप्तान थे । वालिस दो सप्ताहोंने लगातार उसको घेर रखा मगर किलेके निवासी समुद्रके रास्तेसे रजद और लड़ाईका सामान पाया करते थे इससे उसकी सब चेष्टा विफल होने लगी ।

काट देखाता था। वालेसके पहुँचतेही नाइट हथियारबन्द जवानों सहित सामने आया। वालेस डरनेवाना नहीं था उसने भाट तलवार निकालकर एकही चपेटमें नाइटको काट डाला। नाइटके मरनेसे युद्ध बन्द नहीं हुआ क्योंकि उसका भाई सेना लेकर लड़ने लगा।

सगर शेरके सामने भेड़के बच्चे की बहादुरी कबतक रहसकती है ? बातकी बातमें वालेस और उसके साथियोंकी तलवारोंसे नाइटके भाई और उसकी छोटीसी सेना खतम होगई। निर्णय मात्र आदमी भाग गये। वालेसके साथियोंमें घायल तो कई हुए पर मारा कोई नहीं गया। फ्रांसनरेश वालेसके प्रति इस आक्रमणका समाचार सुनकर बहुत दुःखित हुए और वालेसको अपने परिवारके शामिल रहनेका हुक्म दिया। कहा कि अब कोई तुम्हारा बाल नहीं छूएगा। राजा वालेसको बहुत मानते थे तोभी वालेसको बीच बीचमें अक्सर ऐसी आफतमें फँसना पड़ता था।

मृत नाइट और उसके भाईके दो जाति भाइयोंने उठल लैनेके डरादेखे राजासे चुगली खाई कि वालेस शेरसे लड़कर अपना पराक्रम दिखाना चाहता है। फ्रांसनरेशने उनका असली मतलब न समझकर इस बातका अनुमोदन किया। उन्होंने जरा भी नहीं समझा कि यह लोग इस बहाने वालेसको मृत्यु देवना चाहते हैं। इससे उन्होंने कुश्तीकी तय्यारी करनेका हुक्म दिया। नियत दिनको राजा सभाखर्दी सहित अखाड़ेमें आये। वीर चूडामणि वालेस भी निडर होकर अखाड़ेमें पहुँचा। जानकी उसे जरा परवा न थी परन्तु इस बातका सोच हुआ था कि फ्रांसनरेशने उसकी भीतने सामनेसे कैसे हामी भरी। वह नहीं जानता था कि राजाको धोखा दिया गया है। सबने उसको बख्तर पहनकर कंधरोंमें उगमिता गदगोध किया। उसने अभिमानपूर्वक दावा कि ईश्वर मेरी रक्षा करेगा। यह कहकर वह नृभिश्चूर्ति तनवार हाथमें कंधरोंके भीतर गई। फौरन कंधरोंका दरवाजा बन्द हो

गया । उती वक्त गेर गर्जकर उस पर टूट पडा । किन्तु वीरकीसरी वालिम भी डरनेवाला नहीं था । उसने शेन्का भयात्त पकड़वार इस जोरसे तत्तवार चलाई कि पलभरमें शेन्का दो टुकड़े होगये ।

अब वालिमकी असिमानकी त्रास भइल उठी । उसने गजाकी तरफ लाल आखे करके बाछा—“सहाराज ! क्या पायित स्वाटकी इस तरह सगवा डानवाने आपका इरादा था ? अगर आपना यही दिली इरादा है तो मैं डरता नहीं । आपकी पशुशालामें जितने एमूराज है एक एक करके सबको लालिका चुप्य दीजिये मैं इसी बराल तनवारसे हरिकको काट डालूंगा । उसके बाद नाज आपसे दिदा लूंगा । इतने दिन आपने जो सुके गरण दी थी उनके लिये आपका हतभर रहूंगा । किन्तु अब मेरे यछा रचनेकी जरूरत नहीं है । एमूश्रीसे लउनेके लिये वालिमका जल नहीं हुआ है । स्वाट-लेन्ड अभी मधुब्रीह्रीके प्रवीण है । वहा वालिमको तामा मधुनी दो सारनेके कास आयेगी । आज मैं आपसे और प्राप्तसे इस जग के लिये विदा लेता हूँ ।” यह कहवार वालिम चुप हुआ । उसकी गाल आखोंसे आग बरसने लगी । सबलोग मझाटमें आगये ।

है—इसकी याद फिर उसका कलेजा फाड़ने लगी । अबके प्रतिज्ञा की कि या तो जननीका उधार करूंगा नहीं तो प्राण दे दूंगा । अबके उसकी अन्तिम माधना है—अन्तिम आत्मवलि है ।

फ्रांसनरेश फिलिपने जब देखा कि वालेस स्वदेश लौट जानेका पक्का इरादा कर चुका है तब उन्होंने वालेसकी स्वदेश भेजनेके लिये जितने पत्र पाये थे वह सब उसे दिग्वाये । वालेससे अब रहा नहीं गया । स्वदेश फिर उसकी सेवा ग्रहण करनेकी व्याकुल है यह सुनकर फिर उसका चित्त उत्तरकी उड़ा । वह राजासे विदा होकर एक मात्र विश्वासो भित्त लागविलको साथ ले स्काटलेन्डको रवाना हुआ । वह लोग स्वीम बन्दरमें जहाज पर सवार हुए और अर्ल माउथ बन्दरमें जाकर उतरे । वालेसने फ्रांसकी युद्धके बाद १२८८ ई०के अन्तमें स्काटलेन्ड छोड़ा था , फ्रांसमें कुछ अधिक दो वर्ष रहकर १३१० में स्वदेश लौट आया । फ्रांसनरेश फिलिपको उसके वियोगसे बहुत अफसोस हुआ । वह वालेसको दिलसे प्यार करते थे इसीसे स्काटलेन्डसे बारबार अनुरोध पाकर भी उसे भेजना नहीं चाहा और इस ख्यालसे कि खबर पाकर वालेस उन्हें छोड़कर चला न जाय, उन्होंने वह सब चिड़िया किया रखी । किन्तु विधाताका लेख कौन मिटा सकता है ? मातृभूमिके उबार के लिये वालेसकी आत्मवलिकी जरूरत पड़ी थी । इसीसे आज वालेसने प्रियवन्धु फिलिपका बहुत कुछ आग्रह टालकर भी स्वदेश की यात्रा की । भाल लिखि लिपि को सक टार ?

अर्लमाउथमें उतर कर वालेसने एल्को नगरकी यात्रा की । वहां अपने जाति भाई क्राफोर्डके गोदाममें जाकर छिप रहा । गोदाम ऐसा बना था कि किसीको उसके आनेकी खबर न हुई । सिर्फ उसमें एक छेद था वही नदीमें आनेजानेका रास्ता था और उसी रास्तेसे उन लोगोंके पास खाना भेजा जाता था । वालेस और लागविल यों उन गुहायानमें चार पांच दिन रहे । क्राफोर्ड उनके लिये अधिक द मेन्ट जानसूनसे लाते थे । अङ्गरेजोंने देखा कि वह अपनी

जखरतमें ज्यादा रमद लेजाते हैं । उन्हें शक हुआ और उन्होंने  
उनको कैद कर लिया । पीछे जब सुना कि वालेस आया है  
तो उसका पता लगानेके लिये क्राफोर्डको छोड़ दिया । जिस रास्ते  
से क्राफोर्ड गये अगरेज मेनापति बटलरने आठसौ सेना लेकर उन  
का पीछा किया । यह सुनकर वालेस क्राफोर्ड पर बहुत विगड़ा—  
कहा कि तुमने अगरेजोंके हाथमें हम लोगोंको सौंपकर स्वजातिकी  
शत्रुता साधी ? किन्तु क्राफोर्डने सब हाल बताकर उसको शान्त  
किया और उन लोगोंको दूसरी जगह भाग जानेकी सलाह दी ।  
मगर वालेसने भागनेसे अस्वीकार किया । वह क्राफोर्ड सहित  
२० सहचर लेकर उस प्रकार अगरेज सेनाका मुकाबला करनेको  
मुख्तद हुआ ।

## सोलहवां अध्याय ।

वालेसकी गिरफ्तारी ।



लाचार वालेसको काठके किलेमें घुसना पड़ा। वालेसने चाहा था कि आज हन्द युद्धमें बटलरसे जोरआजमाई करेंगे किन्तु कापुरुष बटलरने हन्द युद्धका साहस न करके सेनाके सहारे असहाय वालेस को अभिभन्तु-वध करना चाहा। लेकिन उसका इरादा भ्रष्ट हुआ। थोड़ेसे स्काट अलौकिक वीरतासे उस काठके किलेकी रक्षा करने लगे। किला तोड़नेकी कोशिश करनेमें १५ अङ्गरेज मारे गये। तब बटलर अपनी सेनाके तीन भाग करके तीन तरफसे किले पर आक्रमण करनेके इरादेसे अचानक मैदानसे गायब होगया। वालेसने उसका गूढ़ अभिप्राय समझ कर अपने छोटे दलके भी तीन भाग किये। लागविल और विलियमके अधीन छ. छ. आदमी देकर और स्वयं सिर्फ ५ आदमी लेकर किलेकी रक्षा करने लगा। वह किलेके जिस तरफ था बटलर स्वयं उधर ही बढा। कुछ देर घोर युद्धमें दोनों सेना अद्भुत वीरता दिखाती रही किन्तु मस्त हाथीके साथ मींदडोका दल कबतक लड़ सकता है ? अङ्गरेज सेना लडाईमें शत्रुकी अजीब बहादुरीसे भौचक होकर भागी। इधर तारा नाथ ताराओं सहित गगनपट पर आकर विराजमान हुए। बटलर और उसकी सेना अपनी छावनीमें खाना पीना करने लगी। उधर स्काटोने सिर्फ भरनेका पानी पीकर अपने काठके किलेमें रात बिताई।

प्रधान अङ्गरेज सेनापति अर्न यार्कने बटलरको कहला भेवा कि हम तुम्हारी मददको जल्द आते हैं जब तक हम न पहुँचें तब तक तुम अपने किलेसे न निकलना। किन्तु बटलर वालेसकी पकड़नेकी बहादुरी लेनेके लिये इतना उतावला होरहा था कि उसकी अलंका बाहना न खाना। उसने वालेससे एकान्तमें भेटकर उसे यह बातें बतलाने के सिवा और किसीके हाथ आत्मसमर्पण न करना।  
कल्प—आपने मेरे पिता और दादाको मार डाला है अब मेरी जानकी नाम मान कर उन पापका कुछ प्रायश्चित्त कीजिये।  
—मेरी जानकी नाम मान कर उन पापका कुछ प्रायश्चित्त कीजिये। आप

जब आत्मरक्षासे असमर्थ होकर आत्मसमर्पण करनेकी जरूरत समझे तब मेरे सिवा और किसीके हाथ आत्मसमर्पण न करें—मैं सिर्फ इतनाही चाहता हूँ।” वालेस बटलरका यह निष्ठुर अभिप्राय सुनकर हँस पड़ा और बोला कि समूचा इंग्लैण्ड जमा होकर भी मुझे नहीं डराने सकेगा ।

वालेसको ‘मत्र मिह हो या प्राण जाय’ की प्रतिज्ञापर दृढ़कटि देखकर बटलर रातभर उमका किला घेरे रहा । रात बीती किन्तु अन्धेरा दूर नहीं हुआ रातके अन्धेरेके बदले झुहासा छागया । उस प्रबसरमें स्वाटिश्वोर काठके किलेसे निकल कर अङ्गरेजी छावनी पर टूट पड़े । अङ्गरेजीको कुछ दिग्दर्श न पड़ा । असख्य अङ्गरेज मारेगये । सेनापति बटलर वालेसकी तलवारके एकही वार से यसपुर प्रधारा । उसकी मृत्युसे अङ्गरेजसेना डरके मारे लड़ाई छोड़कर भाग गई । स्वाट इस मौके पर मेघवे वनको चल दिये । यहाँ इफरातसे रसद मौजूद थी इससे उनको और कोई तकलीफ न रही । यहाँ वालेसके दो एक साथी दलबल सहित उससे आमिले । वहाँ एक रात रहकर जातीप दल वार्नेस वनको खाना हुआ । वहाँ परुव वार प्राणदण्डकी आज्ञा पाये हुए स्टायर रथवेनसे मिल गया । यह सम्मिलित सेना वहाँसे एथोल और एथोलसे लोर्न गई । रास्तेमें उन लोगोंके कष्टको सीमा न रही । रास्तेके दोनों तरफके निवासियोंकी, दुर्भिक्षके मारे हड्डी हड्डी हिलती थी । लगातार लड़ाइयोंसे ऐतौ वाणिज्य आदि सब बन्द होगये । वहाँ खानेकी कोई चीज नहीं मिलती ।

बांध कर नहीं रखूंगा, यह कह कर अपने लौटने तक उनकी वहां ठहरा कर वह अन्तर्धान होगया।

वालेस पहाड़ी चोटियां लांघ कर एक खेनमें पहुंचा। उसकी यातनाकी सीमा न थी। वह सुस्त होकर एक पेड़के नीचे हाथपर गाल धर कर सोचने लगा। मन ही मन अपनेकी धिक्कार देकर कहने लगा—‘पांमर। तेरेही दोपसे तेरे माथियोकी आज यह कष्ट है। स्काटकेन्दुकी स्वाधीन करनेकी चेष्टामें तू इस तरह आत्मोत्सर्ग करने वाली बीरीकी आहुति देने चला है। किन्तु तेरी आशा ब्रया है। विधाताने तेरे भाग्यमें यह सौभाग्य नहीं लिखा। शायद तुझसे किसी योग्य और अधिक सम्भ्रान्त मनुष्यके ललाटमें यह सौभाग्य लिखा है। भाइयो। मेरेही लिये तुम भूखी रह कर नींद छोड़ कर घास पात पर पड़ कर बड़े कष्टसे दिन काट रहे हो ईश्वरसे मैं मनसा वाचा कर्मणा प्रार्थना करता हू कि तुम्हारा यह दुःख दूर हो। मैंही तुम्हारे इस दुःखका मूल हू, इसलिये मैं इसका प्रायश्चित्त करूंगा। मैं अकेले सबका दुःख भोगूंगा।’ ऐसी आत्मग्लानि पूर्ण चिन्तामें निमग्न होजाने पर शान्तिदायिनी निद्रा-देवीने आकर उसे गोदमें खेलिया। वह वीर देह पेड़के नीचे दुलक गई।

तीन दिनसे तीन अङ्गरेज और दो स्काट वालेसके पीछे पीछे घूमते थे। वालेसको जागतेमें पकड़नेकी किसीकी हिम्मत न हुई। एडवर्डने प्रकाश्य युद्धमें वालेसको हरानेसे असमर्थ होकरअन्तमें यह नारकी उपाय निकाला था। इनामका लोभ देकर उसको पकड़ने के लिये गुप्तचर नियत किये थे। यही पांच आदमी एडवर्डके नियत किये गुप्तचर थे। इनपाचोंके साथ एक लडका था वह उनके लिये भोजन जुटाया करताथा। यह पाचों पासकी एक भाडीमे छिपे थे। जब देखा कि वालेस नींदमें बेखबर सोगया है तब उन्होने वज्रासे उसे पकड़ा। सोते शेरको जगानेसे वह जैसे गर्ज उठता सही वालेस जागकर गर्जने लगा और एक पैरमें जो सबसे

जबरदस्त पा उसकी पास जा पहुँचा और उसकी पकड़ कर उसका सिर इस जोरसे पेड़की डाली पर पटका कि उसकी खोपड़ी चूर चूर होगई । इसके बाद अपनी तलवार लेकर बाकी चारों पर हमला किया और दोको पल भरमें काट गिराया । बाकी दो प्राण लेकर भागने लगे किन्तु वाल्मिकी दौड़कर उन्हें भी मार डाला । निर्ण नडका बचा । उसने कापने कापने वाल्मिकी के चरणोंमें गिर कर क्षमा मागी । कहा कि मैं बेसमझे वृद्धे इन लोगोंके साथ आया था और निर्ण खाना जुटानेके सिवा किसी काममें शामिल न था । वाल्मिकी उसे उसके मामान मर्हित अपने माधियोंके यहाँ रह गया और उनसे मारा हाल कह सुनाया । वह लोग चौंके और धरे और वाल्मिकी इस तरह थकले कहीं जानेके लिये दूमने लगे ।

उन्होंने उस लडकेसे उस प्रदेशकी हालत पृच्छ कर जाना कि रैनका शहरमें यद्ये दिना कुछ रसद सिलनकी उमेद नहीं । इस लिये दस लोग उसी रातको वहाँसे कूच करके रात रहतेही रैनका में पहुँचे । उस थोड़ेसे सैनिकोंको लेकर ही बाहेसने उसी रातको किले पर हमला किया । उसकी जबरदस्त ठोकरसे किलेका दरवाजा टूट गया जिसकी आवाजसे किलेके सब लोग जाग गये किलेके अर्ध्यक्ष और दूसरे लोग स्काट थे—जानके डरसे अङ्गरेजों की भरण आये थे । अब खुर्शीसे वाल्मिकी भाएके नाचे आगये ।



एधर बान्नेस मेन्टजानसुन किला घेरे हुआ था । अङ्गरेज बड़ी बहादुरीसे किलेकी रक्षा करते थे । एक दिन सबेरे पाचहजार अङ्गरेज किलेके दक्षिणी दरवाजेसे स्काटब्रू तोड़कर निकले किन्तु स्काटिंग वीरोने पनधरसे उनके नामने आकर उन्हें किलेमें लौट जानेकी सज्दर किया । स्काट अङ्गरेजीको छुट्टेड कर किलेमें लगेये । उडाम हसनेके जोरसे साधियोको छोड कर किलेमें घुस गये । अङ्गरेज भूट उन्हें पकड कर सेनापति अर्ल यार्कके पास लेगये । उन्होंने बान्नेसकी छतछ बनानेके नित्ये डन्जामकी दृतकी साथ उसके पास भेजा । सेनापतिने सोचाया कि मेरे इस दर्ताव पर लट्टू छोडकर बान्नेस एडवर्डकी अधीनता स्वीकार करेगा । किन्तु बान्नेस किसी तरह अपने उद्देशसे चटने वाला नहीं जा । उसने इस लण्डे दर्तावकी बदलेमें अङ्गरेज सेनापतिके पास शस्त्रपाट भेज दिया ।

रात को मैं चुपके वहां आकर तुमसे मिलूंगा । वालेसको भी अकेलेही छिपकर वहां आनिका अनुरोध किया ।

वालेस डरको कोई चीज नहीं समझता था । वह उस नियत रातको सिर्फ कार्ल और मौन्टीथके भेजे हुए उस युवकके साथ ग्लासगोमूरमें गया । वह ब्रूमकी बाट देखते शहरके बाहर टहलने लगा । इधर विश्वासघातक मौन्टीथ माठ हथियार बन्द जवानों सहित उनी रातको ग्लासगोमूरमें जा पहुँचा । वह ग्लासगोगिर्जे के नजदीक किसी मकानमें आदसियों सहित छिपा रहा । वालेस भी ढेर तक ब्रूमकारास्ता देख उसके आनेमें निराश होकर प्रिय सिव कार्लके साथ किसी पान्यशालामें टिकने चला गया । आधीरात होगई, नीदमें अनसावर वालेस और कार्ल सोनेके लिये एक कोठरीके अन्दर गये । युवक नीकर बाहर पहरा देने लगा । जब वह दोनों नीदमें बेखबर सो गये तब उस विश्वासघातक नीकरने धीरे धीरे अन्दर जाकर उनके हथियार निकाल लिये । फिर मौन्टीथको जाकर खबर दी कि वह लोग अब काबूमैं हैं । मौन्टीथने उनीवक्त आदसियों सहित आकर वह मकान घेर लिया । घरमें ज कर सोये हुए कार्लको दरवाजे पर लाकर मार डाला । इसके बाद धूर्त सोये हुए वीर सिंहकी रस्सियोंमें बाधने लगे । वालेसकी नीद टूट गई । वह उठल कर अलग जा खड़ा हुआ और अन्धरे में अस्त शब्द टटोलने लगा मगर कहीं कुछ नहीं पाया । तब





क लाइनमें दक्षिणकी रवाना हुई । गाड़ी बड़ी तेजीसे दौड़ने लगी मानी स्काटिंग सूर्य उस दिन दक्षिण साग में अस्त होनेके लिये उधरही चला । अथवा मानी किसी दैवीशक्तिने स्काटलेण्डके वक्ष-स्थलसे उसका कलेजा काढ़कर सुदूर दक्षिणके मार्गमें फेंक दिया । सहसा मानी स्काटिंग गगन अन्धकारमय होगया । सहसा मानी स्काटिंग शरीरका खून सूख होगया । -जिसने स्काटलेण्डका फिर उधार करनेके लिये छाती फाड़कर खून दिया था, जन्मभूमिके पुन-रुद्धारके लिये जिसने ममरभूमिकी सुखसेज माना था, आज वही स्काटिंग वीर स्काटलेण्डकी सूना करके स्काटलेण्डके जातिद्रोह और स्वार्थका प्रायश्चित्त करनेके लिये आत्मवन्ति देने इङ्गलेण्डकी रक्षा है इस समाचारसे स्काटलेण्डके स्त्री पुरुष बालक बृद्ध आज घर घर रो रहे हैं ।

इस समाचारसे दालेसके प्रिय सहचर लॉगविल्वे गोकवी सीमा न रही । उसने प्रतिज्ञा की कि जबतक इसका बदला नहीं लूंगा तब तक स्वदेग न लौटूंगा स्काटलेण्डमें ही रहूंगा । यह लक्ष्मदेव ने गया वहां एडवर्ड ब्रूससे उसकी मुलाकात हुई । वहां दोनो स्काटलेण्डके राजा राबर्ट ब्रूसकी वाट देखने लगे । बैनक दरगजे मगरमें लॉगविल्वे राबर्ट ब्रूसकी दगलमें खड़े होकर स्काटलेण्डकी स्वाधीनताके लिये दहीही महादुरीसे लड़ाई की थी । दून आकर दालेसकी खूबर सुनकर शोक सागरमें डूब गये । एडवर्ड ब्रूसने दालेसका अपार गुण वक्षान कर भाईकी कुछ टांस दिया और बदला लेनेके लिये जल्द तय्यार होने लगे ।

उसने विश्वासकेलिये मौन्टीथसे शपथ कराया । मौन्टीथने बिना कुछ हिचके ईश्वरको साक्षी दे शपथ किया मैं कि कभी वालेसको शत्रुके हाथ नहीं सौंपूंगा । सीधे सादे वालेसने मौन्टीथके कलमें पड़ कर दोनो हाथ रस्सीसे बाधनेको कहा । आपसे गिरफ्तार हुए बिना उस शेरको कोई पकड़ने वाला न था । हाथ बंध जाने पर उसने प्रिय मित्र कार्लेको दूँटा पर उसका कुछ पता न पाया । तब वह समझा कि मैं विश्वासघातकके हाथमें पड़ गया हूँ । तब समझा कि मेरा भाग्य फूटा । किन्तु अपनी चिन्तासे स्काटलेन्डकी चिन्ता उसे अब तक छुई । वह यह सोचकर बहुतही व्यथित हुआ कि मेरे बाद स्काटलेन्डकी क्या दशा होगी ।

इधर वालेसके हित मित्रोंको इस बातकी कुछ खबर न थी । वालेस उनके हाथसे निकल गया तब उन्हें पूरा हाल मालूम हुआ । मौन्टीथ इतनी फुर्तीसे उसे ले गया कि वह लोग सवेरे कार्लाइलमें जा पहुँचे और वहाँ जाकरही उसे लार्ड क्लिफोर्ड और वालेसके सपुर्द किया । उन्हें ने वालेसको शहरके कैदखानेमें कैद कर रखा तभीसे वह कारागार वालेस टावरके नामसे मशहूर है । बुरी घड़ीमें वालेस अकेले ब्रूसकी अगवानोंको निकला था । बुरी घड़ीमें उसने विश्वासघातक मौन्टीथका विश्वास करके आत्म समर्पण किया था ! हाय क्या हुआ ! अब कौन स्काटलेन्डका उद्धार करेगा ?

## सत्रहवां अध्याय ।

वालेसका विचार और प्राणदण्ड ।

कार्लाइलके कारागारमें वालेसको लेकर मौन्टीथने डब्लेन्डकी की । वह और वालेस कार्लिंगकी गाड़ीपर सवार हैं और दो । अद्वैत उनके पीछे हैं । इस तरह वह कैदीकी गाड़ी

क लार्डलसे दक्षिणको रवाना हुई । गाड़ी बड़ी तेजीसे दौडने लगी मानो स्काटिश सूर्य उस दिन दक्षिण साग में अस्त होनेके लिये उधरही चला । अथवा मानो किसी दैवीशक्तिने स्काटलेण्डके वक्षस्थलसे उसका कलेजा काढकर सुदूर दक्षिणके मार्गमें फेंक दिया । सहसा मानो स्काटिश गगन अन्धकारमय होगया । सहसा मानो स्काटिश शरीरका खून सूख होगया । -जिसने स्काटलेण्डका फिर उद्धार करनेके लिये छाती फाड़कर खून दिया था, जन्मभूमिके पुनरुद्धारके लिये जिसने समरभूमिको सुखसेज माना था, आज वही स्काटिश वीर स्काटलेण्डकी सूना करके स्काटलेण्डके जातिद्रोह और स्वार्थका प्रायश्चित्त करनेके लिये आत्मवन्नि देने इङ्गलेण्डको चला है इस समाचारसे स्काटलेण्डकी स्त्री पुरुष बालक बूढ़े आज घर घर रो रहे हैं ।

इस समाचारसे वालेसके प्रिय सहचर लांगविलके शोककी सीमा न रही । उसने प्रतिज्ञा की कि जबतक इसका बदला नहीं लूंगा तब तक स्वदेश न लौटूंगा स्काटलेण्डमें ही रहूंगा । वह लकमिवेन में गया वहां एडवर्ड ब्रूमसे उसकी मुलाकात हुई । वहां दोनों स्काटलेण्डके राजा राबर्ट ब्रूमकी वाट देखने लगे । बैनक बरनके समरमें लांगविलने राबर्ट ब्रूमकी बगलमें खड़े होकर स्काटलेण्डकी स्वाधीनताके लिये बड़ीही बहादुरीसे लड़ाई की थी । ब्रूम आकर वालेसकी खबर सुनकर शोक सागरमें डूब गये । एडवर्ड ब्रूमने वालेसका अपार गुण वखान कर भाईकी कुछ टांगस दिया और बदला लेनेके लिये जल्द तय्यार होने लगे ।

उसने विश्वासकेलिये मौन्टीयसे शपथ कराया । मौन्टीयने बिना कुछ हिचके ईश्वरको साची दे शपथ किया मै कि कभी वालेसको शत्रुके हाथ नहीं सौंपूंगा । सीधे सादे वालेसने मौन्टीयके कूलमें पड कर दोनो हाथ रस्सीसे बांधनेको कहा । आपसे गिरफ्तार हुए बिना उस शेरको कोई पकडने वाला न था । हाथ बंध जाने पर उसने प्रिय मित्र कार्लेको ढूढा पर उसका कुछ पता न पाया । तब वह समझा कि मै विश्वासघातकके हाथमे पडगया हूँ । तब समझा कि मेरा भाग्य फूटा । किन्तु अपनी चिन्तामे स्काटलेन्डकी चिन्ता उसे अब तक न हुई । वह यह सोचकर बहुतही व्यथित हुआ कि मेरे बाद स्काटलेन्डकी क्या दशा होगी ।

इसवर वालेसके हित मित्रोंको इस बातकी कुछ खबर न थी । वालेस उनके हाथसे निकल गया तब उन्हें पूरा हाल मालूम हुआ । मौन्टीय इतनी फुर्तीसे उसेलेगया कि वह लोग सवेरे कार्लाइलमें जा पहुँचे और वहां जाकरही उसे लार्ड क्लिफोर्ड और वालेसके सपुर्द किया । उन्हें ने वालेसको शहरके कैदखानेमें कैद कर रखा तभीसे वह कारागार वालेस टावरके नामसे मशहूर है । बुरी घडीमें वालेस अकेले ब्रूसकी अगवानोंको निकला था । बुरी घडीमें उसने विश्वासघातक मौन्टीयका विश्वास करके आत्म समर्पण किया था ! हाय क्या हुआ ! अब कौन स्काटलेन्डका उद्धार करेगा ?

## सत्रहवां अध्याय ।

वालेसका विचार और प्राणदण्ड ।

कार्लाइलके कारागारमे वालेसको लेकर मौन्टीयने डेविलेन्डकी की । वह और वालेस कालेरनकी गाडीपर सवार थे और दो । अद्वैत उनके पीछे हैं । इस तरह वह कोर्टीनी जाँ

क लांडलसे दक्षिणको रवाना हुई । गाड़ी बड़ी तेजीसे दौडने लगी मानो स्काटिश सूर्य उस दिन दक्षिण साग में अस्त होनेके लिये उधरही चला । अथवा मानो किसी दैवीशक्तिने स्काटलेण्डके वक्ष-स्थलसे उसका कलेजा काढकर सुदूर दक्षिणके मार्गमें फेंक दिया । सहसा मानो स्काटिश गगन अन्धकारमय होगया । सहसा मानो स्काटिश शरीरका खून सूख होगया । -जिसने स्काटलेण्डका फिर उद्धार करनेके लिये छाती फाड़कर खून दिया था, जन्मभूमिके पुन-रुद्धारके लिये जिसने समरभूमिको सुखसेज माना था, आज वही स्काटिश वीर स्काटलेण्डको सूना करके स्काटलेण्डके जातिद्रोह और स्वार्थका प्रायश्चित्त करनेके लिये आत्मवलि देने इङ्गलेण्डको जाता है इस समाचारसे स्काटलेण्डके स्त्री पुरुष बालक बूढ़े आज घर घर रो रहे हैं ।

इस समाचारसे वालेसके प्रिय सहचर लांगविलके शोककी सीमा न रही । उसने प्रतिज्ञा की कि जबतक इसका बदला नहीं लूंगा तब तक स्वदेश न लौटूंगा स्काटलेण्डमें ही रहूंगा । वह लकमेवेन में गया वहां एडवर्ड ब्रूससे उसकी मुलाकात हुई । वहा दोनो स्काटलेण्डके राजा राबर्ट ब्रूसकी वाट देखने लगे । बैनक वरनके समरमें लांगविलने राबर्ट ब्रूसकी बगलमें खड़े होकर स्काटलेण्डकी स्वाधीनताके लिये बड़ीही बहादुरीसे लड़ाई की थी । ब्रूस आकर वालेसकी खबर सुनकर शोक सागरमें डूब गये । एडवर्ड ब्रूमने वालेसका अपार गुण वखान कर भाईको कुछ टाकस दिया और बदला लेनेके लिये जल्द तय्यार होने लगे ।

इधर काली गाड़ी वालेसको लेकर यथामसय इंगलेण्डमें पहुची । एडवर्डकी खुशीका पारावार न रहा । वालेस १३०५ ईस्वी की ५ वी अगस्तको गिरिफ्तार करके २२ वी अगस्तको लन्दन लाया गया । १७ दिन रास्तेमें लगे । राहमें इङ्गलेण्डके कई पुरुष बड़े शालक अकचका अकसकाकर स्काटिश वीरकी देखने लगे । वालेसके माथ बहुत घादमी लन्दनमें आये । उस दिन

फेनचर्चस्ट्रीटके किसी गृहस्थके मकानमें बद्ध रखा गया । दूसरे दिन घोड़े पर सवार कराके वेस्टमिनिस्टरहॉलमें लाया गया । इंग्लैण्ड के ग्रैंड मार्शल सरजान डिग्रेव, लन्दनके रिकार्डर जिउफ्रे, मेयर शेरिफ, अल्डरमेन आदि बड़े बड़े आदमी उसके साथ गये । पीछे पीछे वेशुमार सवार और पैटल सेना गई । एडवर्डकी घबराहटका ठिकाना न था । जज लोग वालेसको दोषी ठहरावे इसके लिये वह उस दिन बारबार जजोंकी सख्या बदलने लगे । कभी स्थिर किया कि तीन जज विचारकरेंगे कभी चार और कभी पांच जजोंको चुना । कभी कहा कि दोसे कोरम होगा कभी तीनसे कोरम ठहराया । दाल नके दक्षिणी मंच पर वालेस बिठाया गया । वालेस घमण्डसे कहा करता कि मैं वेस्टमिनिस्टर हालमें बैठकर इंग्लैण्डका राज-मुकुट पहनूंगा । इसीसे आज व्यङ्ग्यसे उसके सिर पर लोरेल मुकुट रखा गया । एडवर्ड ऐसे कठिन समयमें भी वालेसको इस तरह मर्मवेदना पहुचानेसे जरा नहीं हिचके । अङ्गरेजकी यह आदत पुरानी है । एक दिन वेल्स पेद्रियट लियोलिनका भी इसी तरह मर्मन्तुदग्रमान किया गया । उसका सिर काट कर लन्दन टावरके ऊपर लटका कर उसके ऊपर आइवी लताका मुकुट रखा गया । वालेसके बंधके बाद सर साइमन फ्रेजरकी भी यही दुर्दशा की गई थी ।

वालेसपर राजविद्रोहका अभियोग लगाया गया । मिग्रेव, मार्ग्वी, सेनुविच; राकवेल और विन्ड नामके पांच जजोंने विचार आरम्भ किया । विचारका फल पहलेहीसे तय होचुका था तोभी जजोंने दिखावेके लिये वालेससे पूछा कि तुम पर राजविद्रोहका अपराध लगाया गया है तुम दोषी हो या निर्दोष ? वालेसने उत्तर दिया मैं निर्दोष हूँ क्योंकि मैं कभी इंग्लैण्ड नरेशकी प्रजा नहीं था इसलिये राजविद्रोहका अभियोग मैं

नहीं लग सकता । जजोंने वालेसके इस उचित उत्तरपर काफ़ी दिया । अन्तर्जातीय नियमके अनुसार वह राजद्रोहके अपराधी

दण्ड नहीं पासकता यह बात दुनिया समझ गई किन्तु जजीने समझकर भी नहीं समझा । क्योंकि उन्होंने एडवर्डके पास अपना कर्तव्यज्ञान और धर्मबुद्धि बेच दी थी । इसीसे आज उन्होंने विचारककी मर्यादा और जिम्मेदारी पर लात मारकर विडम्बना पूर्ण लोकदिग्वाज विचार किया । इसीसे आज उन्होंने नीचे लिखा युक्ति और न्यायरहित फैसला और दण्डाज्ञासुनाई । उन्होंने विचारामन पर बैठकर एडवर्डने जो कुछ सिखाया था वही कहके विचारक की जवाबदिलीसे पीछा छुड़ाया । फैसलेका मतलब यह है—स्काटलेन्ड नरेश जान वेलियलके राज्यच्युत होने पर—एडवर्डने स्काटलेन्डको जीता और अपने अधिकारमें किया । स्काटलेन्डकी पुरोहित मण्डली अर्ल और बैरन तथा दूसरी प्रजाने उनकी अधीनता मानली है । उन्होंने स्काटलेन्डमें शान्ति फैलाई है और वहांकी रीतिनीतिके अनुसार शासन प्रणाली जारी की है । यह सब होते हुए भी वालिसने देशभर फौज जमा करके अङ्गरेज कैम्पचारियों पर हमला किया है, लानार्कके ग्रेरिफ हेसिलरीगको मारकर उसको लाशके टुकड़े टुकड़े किये हैं, स्काटलेन्डका अकेला मालिक बनकर वहां अपना हुक्म चलाया है, पार्लिमेन्ट बुलाई है, ग्रास नरेशसे सन्धि करनेकी कोशिश की है नरदम्बरलेन्ड केम्बरलेन्ड और वेस्टमोरलेन्डको तहमनहम करदिया है, फलकार्कके मैदानमें इंग्ली लडाइमें इङ्गलेन्ड नरेशका सामना किया और हारने पर जब उससे कहा गया कि क्षमा मागकर शान्तिले तो उसने शान्ति लेनेसे इनकार किया था ।

डर नहीं जानते, कर्तव्य पालनके लिये मौतको प्यारों पत्नीके समान गले लगाते हैं। इसीसे घातकोंकी नगी तलवार देख कर भी वालेसका मुंह मलिन नहीं हुआ, वह जननी जन्मभूमिके लिये स्थूल शरीर छोड़ता है यह सोच कर आनन्दमें मग्न होगया। उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग टुकड़े टुकड़े कराके चारों तरफ फेंकवा कर एडवर्डने केवल अपनी क्रूरता दिखाई। इससे वालेसकी कीर्ति सदाके लिये अमर होगई और एडवर्डके यशरूपी चन्द्रमामें सदाके लिये कलङ्क लग गया।

इति ।





डर नहीं जानते, कर्तव्य पालनके लिये मौतको प्यारी पत्नीके समान गले लगाते हैं। इसीसे घातकोंकी नगी तलवार देख कर भी वालेसका मुंह मलिन नहीं हुआ, वह जननी जन्मभूमिके लिये स्थूल शरीर छोड़ता है यह सोच कर आनन्दमें मग्न होगया। उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग टुकड़े टुकड़े कराके चारों तरफ फेंकवा कर एडवर्डने केवल अपनी क्रूरता दिखाई। इससे वालेसकी कीर्ति सदाके लिये अमर होगई और एडवर्डके यशरूपी चन्द्रमामें सदाके लिये कलङ्क लग गया।

इति ।



# कंजीराम बाँठियाकी पुस्तकें

नं. २३७

ना

भारतमित्र हिन्दीभाषाका एक बहुत पुराना बड़ा और सस्ता साप्ताहिक पत्र है। ३१ सालसे कलकत्ते से निकलता है। समय समय पर इसमें अच्छे अच्छे चित्र छपते हैं। राजनीति सम्बन्धी लेखोंकी इसमें प्रधानता रहती है पर मौके मौके पर धर्म, समाज और साहित्य सम्बन्धी लेख भी इसमें खूब निकलते हैं। जो लोग अंगरेजी नहीं जानते या कम जानते हैं वह यदि इस पत्रको बराबर पढ़े जाय तो किसी आवश्यक सामयिक घटनाके जाननेके लिये उनको और कोई अखबार पढ़नेकी जरूरत न रहेगी। जो अंगरेजी पढ़े हैं वह खूब जान सकते हैं कि क्योंकर सब अंगरेजी कागजोंको मथकर उनका निचोड़ इस पत्रमें भरा दिया जाता है। इतने पर मूल्य केवल २) वार्षिक डाकमहसूल सहित है। नमूना भंगाकर देखनेसे ऊपर लिखी बातोंकी जाच हो सकती है।

मनेजर भारतमित्र

६७ मुक्तारामबाग़स्ट्रीट कलकत्ता।

॥ विचित्र-विचरण ॥

# विचित्रा-विचरण ।

अर्थात्

गलीवर्य ट्रवल्सका

हिन्दी अनुवाद ।

---

प्रसिद्ध जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

द्वारा ।

---

कलकत्ता ।

# विचित्र-विचरण ।

अर्थात्

गलीवर्स ट्रवल्सका

हिन्दी अनुवाद ।

---

परिचित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

द्वारा ।

---

कलकत्ता ।

६७ सुत्ताराम बाबू ट्रीट, भारतसिन्ध प्रेससे  
परिचित कृष्णानन्द शर्मा द्वारा मुद्रित और  
प्रकाशित ।

---

सन् १९०३ ई० ।

# समर्पण ।

( ————— )

यह पुस्तक अपने तीनों पूज्य मामा

प्राग्देय श्रीवलदेवलाल, श्रीगिरिधरलाल

और

श्रीजयकृष्णलालजीके

चरण कमलोंमें

अडा भक्ति पूर्वक अर्पण करता हूँ, जो मेरे पालक, पोषक -

और रक्षक है तथा जिनके अनुग्रहसे मैंने

लिखना पढ़ना सीखा है ।



जन्माष्टमी संवत् १८६० ।



# गलीवर्स ट्रवल्स ।

अङ्गरेजों ग्रन्थकर्त्ताओंमें जोनाथन स्वीफ्टकी भांति किसी ग्रन्थकारका नाम प्रसिद्ध न हुआ । उसकी प्रसिद्धि “गलीवर्स ट्रवल्स” लिखनेसे हुई । जब सन् १७२७ ईस्वीमें यह पुस्तक छप कर निकली तो राजनीतिवाले और साहित्यसेवी दोनों दान्तोंमें उगली काटने लगे । चारोंओर इसीकी चर्चा थी । हर समालोचक सभामे इसकी आलोचना होती थी । स्वीफ्टके दो चार इष्ट मित्रोंके सिवा ग्रन्थकर्त्ताका नाम कोई न जानता था । ऐसा व्यङ्ग्य पूर्ण उपाख्यान इससे पहले कभी किसीने नहीं देखा था । लोग बहुत घबरा कर ग्रन्थकर्त्ताका पता लगाने लगे । ऐसा अद्भुत, अननुवादित, हृदयग्राही और सुन्दर ग्रन्थ किसने लिखा है इसकी तलाश होने लगी । राजनीति सखन्धी व्यङ्ग्य इसमें कैसा छिपा हुआ है रसिकता श्लेष और अन्योक्ति का यह कैसा खजाना है समाज और चीजों पर कैसे सुन्दर कटाक्ष इसमें किये गये हैं यह देख देख कर लोग मुग्ध होते थे । सर वाल्टर स्काट एक प्रसिद्ध कवि कहते हैं—“गलीवरका एक शब्दभी व्यर्थ नहीं । समस्त मानव जातिके पापोंका वर्णन जब वह एक घड़ीके लिये भी छोड़ देता है तो उसकी बातें इङ्ग्लैण्डकी राजनीति समाजनीति और वहाँके दरबार पर आपडती हैं । जब वह इधरसे हटता है तो ग्रीकीन दुनियाके पापोंका या फिलासफीकी निष्फलताका खाका खिंचता है । पुराने यात्रियोंकी भी उसने अच्छी धून उड़ाई है । मनुष्यों के पाप, मूर्खता, नीचता राजनीतिकी त्रुटियों और सामाजिक दोषोंको दूसरी पर ढाल कर खूब दिखाया है ।”

सन् १७०२ ईस्वीसे १७१४ ईस्वी तक रानी एन, १७१४ से १७२७ ई० तक प्रथम जार्ज और १७२७ से १७६० ई० तक दूसरे



जार्जने इंग्लैण्डका राज्यशामन किया। रानीएनके ओक्स्फोर्ड और वोल्डिङ्गब्रोक् मन्त्री थे। यह सब ठोरी थे। प्रथम जार्जने गद्दी पर बैठ कर वालपोलको प्रधान मन्त्री बनाया। वह हीग अर्थात् प्रजाहितैषी दलका था। वालपोलके समयमें रिश्वतका बड़ा जोर था। हौस आफ कामन्सका वोट खूब विकता था। स्वीफ्ट इन लोगोंसे प्रसन्न न था। विशेषकर जब रानी एनके ऊपर कहे हुए मन्त्रियों पर दूसरे जेम्स का अनुयायी कह कर अभियोग चलाया गया तो स्वीफ्ट और भी चिढ़ा। औरमण्ड वोल्डिङ्ग ब्रोक् और ओक्स्फोर्ड नामके तीन मन्त्रियोंमेंसे पहले दो तो फरासको भाग गये और शेष तौसरेको दो सालकी जेल हुई। दूसरे जार्ज के समयमें भी वालपोल मन्त्री था पर पीछे वह निकाला गया। वालपोल रूखा देहाती बुद्धिमान था। बहुत पढ़ा लिखा न था। अच्छे आदमी उससे प्रसन्न न थे। इन लोगों पर गलीवर्स ट्रवल्स में खूब नोक भोक है।

विचित्रविचरणके पहले भाग निलीपटमें प्रथम जार्ज और प्रधान मन्त्रीकी नीतिका वर्णन है। वालपोलको खजानची फ्लिमनप बना कर खूब दित्तगीकी है। ऊंची एडी और नीची एडी वालोसे मतलब ठोरी और हीग दलके लोगोंसे हैं। अण्डेको छोटे सिरे और बड़े सिरेकी ओरसे तोड़नेका मतलब रोमन कैथलिक और प्राटेष्टेण्ट दलोंका आफसमें मत भेद है। इंग्लैण्डको निलीपट और फरासको ब्लैफस्कू बनाया है। गलीवरका ब्लैफस्कू जाना वेल्डिङ्गब्रोक्का फ्रांस भागना है। इसी प्रकार और सब बातें हैं।

निलीपटमें व्यक्तिगत आक्रमण है और दूसरे भाग ब्रौवडिगनेगमें साधारण समाज पर कटाक्ष है। इन दोनोंमें हीग यानी लिबरल दलवाला पर, वालपोल और इंग्लैण्डकी राजनीति पर चोटें हैं। तीसरे भाग लप्टामे उस समयके गणित और दर्शनवालोंके बेंड छाड़ है। विशेष कर रायल सोमाइटीवालो पर अधिक

कटाक्ष है जिनसे खीफ्टकी कुक्क अनवम थी । बलनीवर्षीसे मतलब है झगलेण्ड और लगाडोसे लण्डन ।

तीनों यात्राओंमें उस समयके विशेष लोगों सभा समाज दार्शनिकों राजा राज दरबार मन्त्री और राजनीतिवालोंका खाका है । चौथे भागमें मानव जातिके दोषों पर बड़ा तीव्र कटाक्ष है । कुक्क समझदार लोग कहते हैं कि कटाक्ष अधिक तीव्र होगया । मनुष्यकी इतनी हीनता न दिखाना थी । कुक्क हो विलायतमें यह पोथी अद्वितीय मानी गई है ।







नं० १

जोनाथन स्विफ्ट ।

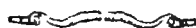
# शूमिका ।

---

यह “विचित्रविचरण” जोनाथन स्वीफ्टके बनाये “गलीवर्स ट्रवल्स” का अनुवाद है। स्वीफ्ट अङ्गरेजीका एक नामी लेखकथा। राजनीति विगारटोमें इसका बडा नाम था। उसका जन्म ३० नवम्बर १६६७ ईस्वीमें हुआ। वह १६८२ ईस्वीमें डबलिनके ट्रीनिटी कालिजमें दाखिल हुआ। उस समय उसके चेहरेसे उसकी भविष्य सुविद्यातिके लुछ भी चिन्ह नञ्ही दिखाई देते थे। गोल्डस्मिथकी भांति यह भी पढाईकी पुस्तकोको छोड कर इधर उधरकी पुस्तके पढा करता। लडकपनमें उसने खर्चकी भी बडी तङ्गी उठाई थी। बी० ए० पाम करनेसे पहले उसका चचा गौडविन मर गया था जो उसे खर्च दिया करता। तब उसका दूसरा चचा ड्रापडन उन की सहायता करने लगा पर पूरी सहायता न कर सकता था। इस तङ्गीने उसे जन्म भरके लिये विफायतसे खर्च करनेकी आदत सिखाई। बहुत धन कमाने पर भी उसकी मुट्ठी ढीली नञ्ही होती थी। १६८४ ईस्वीमें बी० ए० की परीक्षा दी पर पास न हुआ। अन्तमें रियायती पाम हुआ।

जान्सनकी अङ्गरेजी भाषामें बड़ी धाक है। वह तीव्र समालोचनाके लिये प्रसिद्ध हैं। वह इस ग्रन्थके विषयमें लिखते हैं—“गलीवर्स ट्रवल्स ऐसी अनूठी और नई चीज है कि पाठक उसे पढ़ते पढ़ते आनन्द और आश्चर्यमें एक साथ डूब जाते हैं। छोटे बड़े पण्डित सूखे मक्खन इसे चावसे पढ़ते हैं।” जब यह पुस्तक छप कर प्रकाशित हुई तो समालोचक समालोचना भूल कर एक स्वरसे इसकी प्रशंसा करने लगे। यहाँ तक कि बहुत जल्द इसका फ्रेञ्च भाषामें अनुवाद होगया।

स्वीफ्ट बड़ा उत्साही और सटाचारी था। जब वह गिर्जाका अधिकारी था उस समय उसने सटाचारी विद्वानोंकी बड़ी उन्नति की। मरते दम तक सटाचार फैलानेमें तत्पर रहा। १८ अक्टोबर १७४५ ईस्वीमें उसका देहान्त हुआ। वह बड़ा नामी लेखक था। हास्य और व्यङ्ग्य लिखनेमें अद्वितीय था। यशके लिये कभी कोई काम न करता था।



## धन्यवाद ।

इन पुस्तककी अनुवाद करनेमें मुझे श्रीयुक्त पाण्डेय उमापति टत्त शर्मा बी० ए० से बहुत कुछ सहायता मिली है । आप कलकत्तेके श्रीविश्वनाथ सरस्वती विद्यालयके प्रधान अध्यापक हैं । आपकी यूटी बहुत भारी है तथापि जब जहासे जो कठिन बात मैंने उनसे प्रश्नी उठाने उगी समय बताई । केवल इतनाही नहीं वरञ्च जिन गूढ़ बातोंका ठीक तात्पर्य समझनेमें उन्हें कुछ शङ्का हुई उनको अच्छे अच्छे अङ्ग्रेज विद्वानोंसे निश्चय कर मुझे बताया । आपकी ऐसी हृषा बिना मे यह पुस्तक ऐसी सुगमतासे कभी समाप्त न कर सकता ।

२०, वाग्तला छोट  
बलकटा ।  
१६—८—१८०३ ।

}

जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ।





# विचित्र-विचरण ।

## प्रथम खण्ड ।

### लिलीपटकी यात्रा ।

प्रथम परिच्छेद ।

मेरा घर है विलायतके नटिङ्गम शहरमें। वहा मेरे पिताके कुछ जायदाद थी। वस उसीसे जीविका निर्वाह होती थी। मुझे लडकपनहीसे समुद्र यात्राका बहुत शौक था। मेरे पिताके पांच लडके—मैं उनमेंसे तीसरा हूँ। जब मैं चौदह वर्षका हुआ तो पिताने वेम्ब्रीज शहरके “इमेनुएल कालेज” में मेरा नाम लिखवा दिया। वहा मैंने तीन वर्ष खूब जी लगाकर पढा। मैं बहुतही कम खर्चसे अपना गुजारा करता तथापि पिताकी आय थोड़ी होनेके कारण। खर्चे चल न सका। लाचार पढनेकी इतिश्री कर लण्डन शहरके प्रसिद्ध डाक्टर सिटर जेम्स वेट्सके यहां काम सीखने पर नियत हुआ। यहां चार दरर रह कर मैंने डाक्टरी सीखी। पिता भी र्चर्च दर्चके लिये कभी वधो कुछ भेज देते थे। मैं उसे जहान चलानेके काम तथा देशाटनके उपयोगी गणितोके सीखनेसे र्चर्च करताथा क्योंकि मैं जानताथा कि मुझे देश देशान्तरकी दया र्चर्च पड़ेगी। सिटर वेट्सको छोड कर जब मैं घर आया तो पिताने तासा लोन तथा और कई नातेदारोकी सहायतासे मुझे चार सौ रुपये दिये और तीनसौ वार्षिक देनेकी प्रतिज्ञा भी की। मैं उपयोगी से “लिडन” गया और यहां पेन्सल पढने लगा जोकि मुझे पहलेसे मालूम था कि ये सब पिपय लखी समुद्र यात्राके

लिये बहुत उपयोगी है। “लिडन” से लोट कर मैं अपने पुराने स्वामी मिटर वेट्सकी सुफारगसे “खालो” जहाजका डाक्टर सुकारर हुआ। इस जहाजके कप्तानका नाम अबराहाम पेनेल था। इनके साथ मैंने दो चार जल-यात्राएँ भी कीं। साठे तीन वर्षके बाद नौकरी छोड़कर लगइन शहरमें डाक्टरी करनेकी इच्छा हुई। आखिर मैंने वही किया। मिटर वेट्सने केवल मेरा उत्साह ही नहीं बढ़ाया वरन् बहुत कुछ सहायता भी की। बल्कि यों कहना चाहिये कि उन्हींकी कृपासे मेरी डाक्टरी चल निकली। ओल्ड जूरी मुहल्लेमें एक छोटासा घर भाड़े पर लेकर मैं रहने लगा। बन्धुबान्धवोंके बहुत समझाने बुझानेसे मैंने अपना व्याह किया। दहेजमें चार हजार रुपये नकद मिले।

दो वर्षके बाद मेरे परमहितैषी मिटर वेट्स परमधाम पधारे। फिर कोई सहाय मिला नहीं इससे मेरा काम भी ढीला पड़ गया। और डाक्टरीकी तरह केवल आडम्बरसे पैसा पैदा करना मुझे पसन्द न था। अतएव फिर जल यात्राही की ठहराई। स्त्री और इष्ट मित्रोंने भी यही उम्माति दी। बस अपनी दुकान उठा कर मैंने नौकरी करली। लगातार छः वर्ष तक दो जहाजोंमें मैं डाक्टर रहा और अमेरिकाके टापुओंको तथा हिन्दुस्थानकी भी देख आया। इन सफरोंमें मुझे रुपये भी खूब मिले। जब काम से छुट्टी मिलती तो मैं प्राचीन और आधुनिक ग्रन्थकारोंकी उत्तम उत्तम पोथियाँ पढ़ता। जब जहाज किनारे लगता तो मैं उतर कर वहाँके निवासियोंकी रीति नीति, रङ्ग ढङ्ग और चाल चलन ध्यान से देखता तथा उनकी भाषाएँ सीखता था। मेरी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र थी इसलिये इस कामको मैं सहजहीमें करलेता था।

पिछली यात्रामें विशेष कुछ लाभ नहीं हुआ। परवास्ते इस काममें जी छट गया। बालबच्चेके साथ घरही पर दिन बिताने की इच्छा हुई। ओल्डजूरीमें “फेटरलेन” में और वहाँसे “वापिश्” में अपना डेरा उन्डा उठा लाया। आशा थी कि जहाजियों

कौ मद्दसे कुछ काम मिल जायगा परन्तु पूरी नहीं हुई । तीन वरमके बाद “एण्टीलोप” जहाजके खात्री कप्तान विलियम प्रीचर्डने जो दक्षिण सागरकी यात्रा करनेवाले थे सुभे अपने जहाजकी डाक्टरीका काम दिया । ता० ४ मई सन् १६८८ ई० को हम लोगोंने त्रिष्टल बन्दरसे जहाजका लङ्गर उठाया । जहाज भी चल निकला । कुछ दिन तक हम लोगीकी खूब चैनसे कटी ।

एक दिन अकस्मात् ऋतु पलट गई । दक्षिण सागर छोड़कर जब हम लोग भारतवर्षकी ओर जा रहे थे एक भयानक तूफानने हम लोगीको आघेरा । हम राह भूल कर “वानडाइमन” द्वीपकी पश्चिमोत्तर दिशामें जापड़े । विचारनेसे मालूम हुआ कि हम लोग विषुवत रेखासे ३० डिग्री २ मिनट दक्षिण हैं । हम लोगों मेंसे बारह तो कड़ी मेहनत तथा सड़ा गला भन्न खाकर कालके गालमें समाये और ग्रैपकी बुरी दशा थी—चेहरेसे सबके कामजोरी टपकती थी । पृथ्वीके जिस भागमें हम लोग पहुँचे वहाँ नवम्बरही में ग्रीष्म ऋतु आरम्भ होता है । तीसरे पहर वहाँ सदा वायुका रंग बढ जाता है । पाँचवीं नवम्बरको जहाजियोंने सामने एक पहाड देखा । आकाश भी बादलोंसे घिरा था । सबके प्राण सूख गये । दृष्टनेके लिये बहुत चेष्टाकी गई पर फल कुछ नहीं हुआ । वायु ऐसे वेगसे चली कि जहाज घटपट पहाडसे टकराक टुकड़े टुकड़े होगया । पाँच जहाजी प्राण बचानेके लिये एक किशोरी पर चढ़के भागे । मैं भी उन्ही लोगीके साथ था । हम लोग जी जानमें डाड चढ़ाने लगे पर नौ मीलसे भी ज्यादा न जासके, एक बार दिनकुल बेकाम होगये—आगे बढ़नेकी भी शक्ति न रही । जहाज परकी कडाचूर मेहनतसे हम लोगीका काम तमाम हो चुका था तब पर इतनी और हुई । साचार हो किशोरीको भाग्यके भरोसे छोड दिया । आगे घण्टेक बाद उत्तरमें आई हुई हवाके झोकने हमारी किशोरीको उलट दिया । मेरे बाधियोंकी अथवा जहाजके सब आदमियोंकी क्या दशा हुई सुभे

अभवतः वह सब समुद्रके अतल जनमें सहा निद्राका सुप्त अनुभव करते होगी । ईश्वरकी दयासे मेरी जान बच गई । मैं तैरने लगा । हवा और लहरें जिधर राह बताती थीं मैं उधरही जाता था । जल अथाह था । तैरते तैरते थक गया । आखिर थाह मिली । पानी गले भर था । तूफानका भी जोर घट गया था । चढ़ाव इतना कम था कि लग भग एक मील चलनेके बादही किनारें पर जा पहुंचा । उस समय रातके आठ बजे होगी । एक मील फिर चला परन्तु बस्ती या आवादीका कोई चिन्ह दिखाई न पडा । कमजोरीके कारण शायद मुझेही न सूझा हो । एक तो थकावट दूसरे गर्मी तिम पर शराबका निशा पैर उठाना पड़ा होगा फिर चलना केसा ? लाचार हो वही घाम पर लेट गया । घास नहीं नदी और मुलायम थीं । लेटतेही नींदने धर टबाया । फिर क्या था लगा खराटे लेने । मैं खूब सोया । ऐसी गाढ निद्रा भला कभी काहेको आई होगी ? नींदघण्टेके बाद आखें खुलीं तो देखा दिन चढ़ आया है । उठना चाहा पर उठ न सका । मैं चित्त लेटा हुआ था । देखा मेरे हाथ पैर मजबूतीसे खंटेके साथ बंधे हैं । मिरके बालभी जो घने और लम्बे थे उसी प्रकार जमीनसे जकड़े हुए हैं । मतलब यह कि मेरा सारा शरीरही बंधा हुआ था । हिलने डोलनेकी भी शक्ति मुझमें न थी । सिर्फ ऊपरकी ओर देख सकता था । धूप तेज होगई थी । आखें भी खुलमने लगी । चारो नरफ पिनपिनीसी आवाजमें कुछ शोर गुल होरहा था जो मेरी समझमें न आया । मैं आकाशके सिवा और कुछ नहीं देख सकता था । कुछ देरके बाद मानूस हुआ कि कोई चीज बायें पैर पर रंग रखी है । जब वह छातो पर झोती हुई टोडीके पास आपहुची तो बड़ी कठिनाईसे नजर नीची करके मैंने देखा । ओफ ! देखतेही बुद्धि चकरा गई । आश्चर्यका ठिठकाना न रहा । जिसका कभी सपनेमें भी ख्याल नहीं हो सकता न उसे प्रत्यक्ष देखा । असम्भवकी सम्भव होते देखा अधिक

कह' मैं अपनी सुध बुध खी बैठा । मेरा अजब हाल था । मैं कुछ भी स्थिर न कर सका कि मैं जागता हूँ या सोता । आंखें बन्दकीं तो अन्धकार और खोलदी तो वही अनूठी वस्तु देखी । तब निश्चय हुआ कि सोता नहीं जागता हूँ—जो कुछ देखता हूँ वह भूट नहीं मच है ।

### द्वितीय परिच्छेद ।

पाठक मैंने क्या देखा सो बताऊँ ? अच्छा सुनिये, मैंने देखा आदमी—हा आदमी देखा जिसके आख नाक मुँह सब हमारे जैसे थे पर ऊँचाई आधे फुटसे अधिक न थी और जिसके हाथमें धनुष बाण तथा पीठ पर तर्कश था । वह अकेला न था उसके पीछे चालीस और थे । वह सब भी ऐसेही थे । उनको देख कर मैं इतने जोरसे चीख उठा कि वे सबके सब मारे डरके पीछे भहरा पड़े । पीछे मालूम हुआ कि मेरी देह परसे कूद कर भागनेमें बहुतों को चोट लगी—किसीके हाथ टटे, किसीके सिर फटे और कोई विचारा तो वहीं ढेर हो गया । लेकिन वह सब बड़ साहसी थे—दल बाधकर फिर चढ़ आए । उनमेंसे एक जो अधिक साहसी मालूम होता था मेरे मुँहको अच्छी तरह देख भाल कर आश्चर्यके साथ पिनपिनी किन्तु ऊँची आवाजमें बोला “हे कीनाह डीगल” । दूसरे लोगोंने भी इसी वाक्यको कई बार कहा । लेकिन इसका अर्थ क्या है सो उस समय मेरी समझमें न आया । मैं बराबर उसी प्रकार पड़ा रहा । पाठक समझ सकते हैं कि उस समय मुझे कितना कष्ट होगा । बहुत दुःखित होकर मैंने एक झटका दिया जिससे रस्सी टूट गई और खूटे उखड़ गये । बाया हाथ दम्बनसे मुझ हुआ । कष्ट तो तनिक हुआही पर एक झटका और मैंने दिया । अजब की दायीं ओरका दम्बन जिसमें बाल बंधे हुए थे टूट गया । अब जरा सिर घुमानेका मौका मिला । मन में आरंभ कि बाएँ हाथसे उन्हे पकड़ लूँ पर वे सबकी उब भाग गये

सम्भवतः वह सब समुद्रके अतल जलमें सहा निद्राका सुख अनुभव करते होंगे । ईश्वरकी दयासे मेरी जान बच गई । मैं तैरने लगा । हवा और लहरे जिधर राह बताती थीं मैं उधरही जाता था । जल अथाह था । तैरते तैरते थक गया । आखिर थाह मिली । पानी गले भर था । तूफानका भी जोर घट गया था । चढ़ाव इतना कम था कि लग भग एक मील चलनेके बादही किनारे पर जा पहुंचा । उस समय रातके आठ बजे होंगे । एक मील फिर चला परन्तु बस्ती या आवादीका कोई चिन्ह दिखाई न पडा । कमजोरीके कारण शायद मुझेही न सूझा हो । एक तो थकावट दूसरे गर्मी तिम पर शराबका निशा घेर उठाना पहाड होगया फिर चलना केसा ? लाचार हो वही घास पर लेट गया । घास नहीं नही और मुलायम थीं । लेटतेही नींदने धर टवाया । फिर क्या था लगा खर्राटे लेने । मैं खूब सोया । ऐसी गाढ निद्रा भला कभी काहेको आई होगी ? नींदघण्टेके बाद आखें खुलीं तो देखा दिन चढ आया है । उठना चाहा पर उठ न सका । मैं चित्त लेटा हुआ था । देखा मेरे हाथ पैर मजबूतीसे खंटेके साथ बंधे हैं । मिरके बालभी जो घने और लम्बे थे उसी प्रकार जमीनसे जकडे हुए हैं । मतलब यह कि मेरा मारा शरीरही बंधा हुआ था । हिलने डोलनेकी भी शक्ति मुझमें न थी । सिर्फ ऊपरकी ओर देख सकता था । धूप तेज होगई थी । आखें भी भुलसने लगी । चारो नरफ पिनपिनीसी आवाजमें कुछ शोर गुल होरहा था जो मेरी समझमें न आया । मैं आकाशके सिवा और कुछ नहीं देख सकता था । कुछ देरके बाद मानूस हुआ कि कोई चीज बायें पैर पर रेंग रही है । जब वह छातो पर होती हुई ठोडीके पास आपहुची तो बड़ी कठिनाईसे नजर नीची करके मैने देखा । ओफ ! देखतेही बुद्धि चकरा गई । आश्चर्यका ठिकाना न रहा । जिसका कभी सपनेमें भी ख्याल नहीं हो सकता ।

जैसे प्रत्यक्ष देखा । असम्भवको सम्भव होते देखा अधिक क्या

कहं मैं अपनी सुध बुध खी बैठा । मेरा अजब हाल था । मैं कुछ भी स्थिर न कर सका कि मैं जागता हूँ या सोता । आँखें बन्दकीं तो अन्धकार और खोलदी तो वही अनूठी वस्तु देखी । तब निश्चय हुआ कि सोता नहीं जागता हूँ—जो कुछ देखता हूँ वह भूट नहीं सब है ।

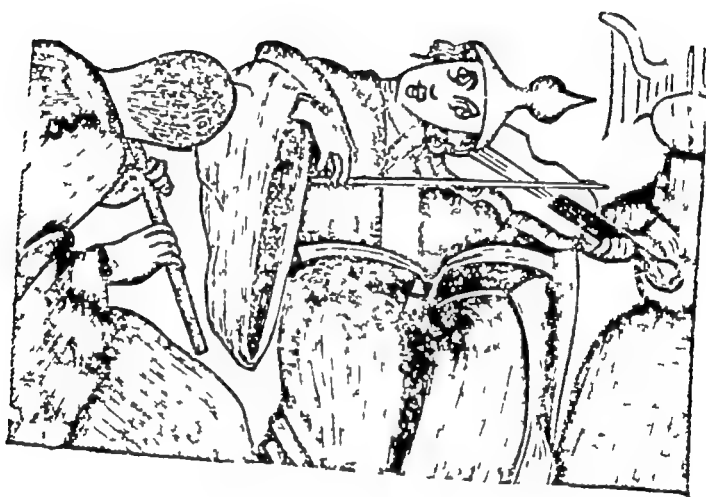
## द्वितीय परिच्छेद ।



पाठक मैंने क्या देखा सो बताऊँ ? अच्छा सुनिये, मैंने देखा आदमी—हां आदमी देखा जिसके आँख नाक मुँह सब हमारे जैसे थे पर ऊँचाई आधे फुटसे अधिक न थी और जिसके हाथमें धनुष बाण तथा पीठ पर तर्कश था । वह अकेला न था उसके पीछे चालीस और थे । वह सब भी ऐसेही थे । उनको देख कर मैं इतने जोरसे चीख उठा कि वे सबके सब मारे डरके पीछे भहरा पड़े । पीछे मालूम हुआ कि मेरी देह परसे कूद कर भागनेमें बहुतों को चोट लगी—किसीके हाथ टटे, किसीके सिर फटे और कोई विचारा तो वहीं ढेर होगया । लेकिन वह सब बड़ साहसी थे—दल बाधकर फिर चढ आए । उनमेंसे एक जो अधिक साहसी मालूम होता था मेरे मुँहको अच्छी तरह देख भाल कर आश्चर्यके साथ पिनपिनी किन्तु ऊँची आवाजमें बोला “हे कीनाह डीगल” । दूसरे लोगोंने भी इसी वाक्यको कई बार कहा । लेकिन हमका अर्थ क्या है सो उस समय मेरी समझमें न आया । मैं बराबर उसी प्रकार पड़ा रह्या । पाठक समझ सकते हैं कि उस समय मुझे कितना काष्ट होगा । बहुत दुःखित होकर मैंने एक भटका दिया जिससे रस्सी टूट गई और खूटे उखड़ गये । बाया हाथ दम्बनसे मुक्ता हुआ । कष्ट तो तनिका हुआही पर एक भटका और मैंने दिया । अजबकी बायीं ओरका दम्बन जिसमें बाल बंधे हुए थे टूट गया । अब जरा सिर घुमानेका मौका मिला । मन में आरंभ कि बायें हाथसे उन्हे पकड़ लूँ पर वे खवदी उब भाग गये

एकको भी न पकड सका । इस पर उन सबने वडी खुशी मनाई । उनमेंसे एकने जोरसे चिल्ला कर कहा “टेलीगोफोनेक” । वस मेरी बाह पर सैकड़ों तीर जो सूर्डके समान थे बरमने लगे । इसके सिवा आकाशकी ओर भी वे लोग बाण छोडने लगे । किन्तु इस बाण वृष्टिका असर मुझ पर कुछ भी नहीं हुआ । बहुतीने मेरे सुंङ की तरफ बाण मारे थे लेकिन वह सब सूर्डके बराबर थे । मैंने बाये हाथसे अपने सुंङकी रक्षाकी । बाण वृष्टि बन्द हुई । मैं अपनी दशा पर रोता था । जब बन्धन तोडनेकी कोशिश करता तो तीरोंकी वर्षा होती । उन लोगोंने भाले भी चलाये पर भाग्यसे चमडेका कोट बदनमे था इसलिये कुछ हुआ नहीं । अगर मैं चाहता तो उठ भागता पर ऐसा किया नहीं । चुप चाप पडे रहना अच्छा समझा । सोचा बाया हाथ गुलही चुका है रातको सहजमें निकल भागूंगा । अगर यहाके सब आदमी इसी परिमाणके है तो डर क्या है ? मैं सबकी एक साथही खबर ले सकता हूं । बस यही सब सोच विचार कर मैं चुपचाप पडा रहा । पर जो सोचा सो हुआ नहीं । जब मैं शान्त हुआ तो वह सब भी शान्त हुए किन्तु आवाजसे मालूम हुआ कि उनका दल बढ रहा है । मुझसे कोई चार गजकी दूरी पर दाहिने कानके पासही प्रायः एक घण्टे तक ठक ठक शब्द होना रहा मानो कोई कुछ ठाका ठाको कर रहा है । सिर उठाया तो देखा वे सब मचान बना रहे हैं । मचान धरतीसे एक हाथ जंचा था । उसमे दो तीन सीढिया भी लगी हुई थीं और उस पर चार पाच आदमी—वही छ’ डब्ब वाले—मजेमे खडे हो सकते थे । मचान तैयार होजाने पर चार आदमी उसपर चढ गये । उनमेंसे एकने जो सयाना और चतुर मालूम पडा मेरी ओर निहार कर एक लम्बी वक्तृता दी जिसका मतलब मैंने कुछ भी नहीं समझा लेकिन उसके भाव भङ्गीसे प्रगट हुआ कि वह कभी मुझे डराता धमकाता, कभी समझाता बुझाता और कभी मुझसे विनय प्रार्थना करता था । व्याख्यान आ-



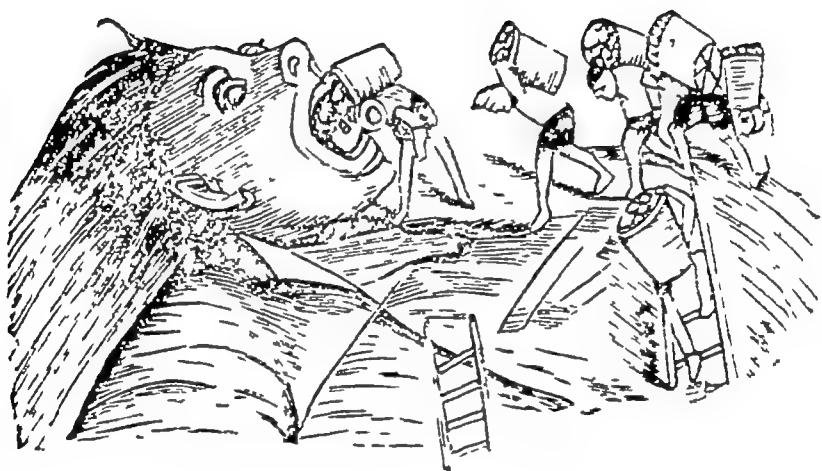


न० १०

तीन घटेतक लगातार सवने खूब गाया वजाया ।

पृष्ठ १३४





नं० ४

हुक्म पातेही सैकडो आदमी टोकरोसे लदे  
मेरी छाती पर आ पहुँचे ।

पृष्ठ ७

रश्म करनेके पहलेही वक्ताने तीन बार जोरसे कहा था “लङ्गरी डेवल सान” । इतना सुनकर पचास आदमी उसी परिमाणके आये और मेरे सिरका बन्धन काट कर चले गये । तब मैंने वक्ता की ओर सिर घुसाया । उसकी उमर लग भग पचास वर्षकी होगी । अपने साथियोंसे वह कुछ लम्बा था मैंने बहुत नभ्रताके साथ बाया हाथ उठा कर उनकी बातोंका जवाब दिया । सूर्यकी तरफ इशारा करके कसम भी खाई कि मैं दुर्गै नीयतसे यहा नही आया हूँ और न यहाके जीवोंकी कुछ दुर्गाई करूंगा । जहाज छोड़नेके बादहीसे खानेके लिये कुछ नही मिला था—भूख के मारे तबीयत बेचैन थी—जङ्गल जानेकी हाजत थी । कातर होकर मैंने बार बार उंगलियोंको मुंहमें डालकर खानेका इशारा किया । उसने मेरी बातोंको तो नही समझा पर ईश्वरकी दयासे मेरे मनके भावको समझ लिया ।

मचानसे उतर कर उस आदमीने जो सबका सरदार था अपने नौकरोंको खाने पीनेकी सामग्री लानेके लिये कहा । हुकम पातेही सेकंडी आदमी टोकरोसे लदे मेरी छाती पर आ पहुँचे । मेरे पेट पर चढ़नेके लिये उन्हें सीढिया लगानी पड़ी थी । मेरे आनेकी खबर पातेही वहाके राजाने पहलेहीसे मेरे खाने पीनेका बन्दो-बस्त कर दिया था । भोजन स्वादिष्ट था पर सबको मैं पहचान न सका । माल भी कई तरहके थे । भंडेका मांस लेकिन अधिक था । बन्दूकोंकी गोलियोंकी बराबर पावरोटिया थी । मैं चार चार पाँच पाँच रोटियोंका एकही कौर करताथा । मेरा खाना देख कर वह सब दङ्ग होगए । अब आई शराबकी दारी । मेरे भोजन हीसे उनको मालूम होगया कि थोड़ी मदिरामे काम नही चलेगा । इसी लिये उन्होंने अपने यहाके सबसे बडे पीपेका मुंह खोल कर मेरे हवाले किया । मैं उसे एकही घूटमें माफ़ कर गया । उनके उस बडे पीपेमें डेढ़ दो घटाकसे ज्यादा शराब न होगी । लेकिन शराब थी बड़ी मजेदार । मैंने एक पीपा फिर खाली किया ।

जब और मांगा तो कोरा जवाब पाया क्योंकि उधर तो भण्डारही खाली होगया था । इन सब अहुत कामोंको जब मैं कर चुका तब वह सब सारे खुशीके मेरे पैर पर कूदने लगे और बार बार पहले की भाँति “हेकीनाह डीगल” कहने लगे । इसके बाद उन्होंने दोनों पीपीको फेंक देनेके लिये इशारा किया और जो लोग जमीन पर खड़े थे उनसे गरज कर कहा “वोगाकमिभोला” । इतना सुनतेही भीड़ एक तरफ हट गई । जब मैंने पीपीको उठा कर फेंक दिया । तब वह लोग फिर बोले “हेकीनाह डीगल” । वह जुटजीव निहर होकर जब मेरी टेह पर नाचने कूदने लगे तो उनकी ठिठाई देख मुझे बहुत क्रोध आया । जीमें तो आई कि इन्हें उठा कर जमीन पर पटक दूं परन्तु कुछ सोच विचार कर मन मारके रह गया । जब मैं खा पी कर निश्चिन्त हुआ तो एक उच्च राजकर्मचारी टाहिने पांव परसे धीरे धीरे मेरे मुँहके सामने आया । उसके चेहरे पर क्रोधकी झलक तक न थी । उसने शान्ति और गम्भीरता पूर्वक कोई दस मिनट तक बातें कीं किन्तु मैंने कुछ भी न समझा । वह आगेकी तरफ इशारेसे कुछ बताता भी था जिसका मतलब पीछे खुला । वहासे आधी मील की दूरी पर राजधानी थी वहीं चलनेके लिये वह कहता था । राजाकी तरफसे वह मुझे बुलाने आया था । मैंने भी इशारेमें कहा कि मुझे छोड़ दो । पर उसने सिर हिला कर समझा दिया कि यह बात नहीं होनेकी । इशारेहीसे उसने यह भी जताया कि चाहे जैसे हो वह सब मुझे राजधानी जरूर ले जायेंगे और वहा खूब खाने पीनेके लिये देंगे, खातिर करेंगे और किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं होने देंगे । इन सब बातोंको पुष्ट करनेके लिये उसने राजाकी मुहर दिखाई पर मुझे एक न आई, मनमें आई कि निकल भागू लेकिन उनकी बाण हृष्टि याद कर मनकी बात मनहीं भुलाई । उन लोगोंका दल भी बहुत कुछ घट चुका था । निद्राज सोच विचार कर वहीं चलनेकी बात ठहराई । वह राज

कर्मचारी मेरे सनका भाव समझ कर बड़ी खुशीके साथ वहाँसे विदा हुआ । थोड़ी देरके बाद “पेपलम सेलम” की आवाजसे आकाश गूँज उठा । कई आदमियोंने आकर बाईं ओरके बन्दन को ढीला कर दिया । करवट बदलनेका मौका मिला । बहुत देरसे पेशाबकी हाजत थी—सो फुरमत पातेही पहले मैंने पेशाब किया—तबीयत छनक्री हुई । लेकिन वह सब मेरे पेशाबको देख आश्चर्य मानने लगे बल्कि बहुतरे तो हूँ जानेके डरसे इधर उधर भाग गये । उन लोगोंने एक सहा सुगन्धित सरसम मुँह और हाथोंमें लगा दिया जिससे तीरकों जलन जाती रही । सब पीड़ा दूर हुई । शरीरको आराम मिला मैं भी लगा खराटे लेने ।

### तृतीय परिच्छेद ।

जब आखि खुर्ची तो अपनेको एक लम्बी गाड़ी पर बधा हुआ पाया । गाड़ी खड़ी थी और चहारो आदमी मुझे घेरे थे ।

मैं आठ घण्टे खूद सोया या बेहोश रहा । राजाके डाकरीने शराबमें बेहोशीकी दवा मिला दी थी वस उसीसे इतनी देर बेसुध पड़ा रहा । ये सब भेद पीछे खुले थे । जब मैं घाम पर सोया हुआ था जाहसीने जाकर महाराजको खबर दी । उन्होंने उम्मी समय अपने आदमियोंको समझा दुआ कर मेरे पास भेजा । उन लोगोंने आकर मेरे पाय पैर बांध दिये जैसा कि ऊपर मैं कह आया हूँ । उधर महाराजने मेरे भोजनादिकी मामग्री तथा एक बहुत लम्बी गाड़ी तैयार करनेके लिये आज्ञा दे दी । बहुत से लोग महाराजके इस कामको बुरा बता सकतेहैं—युरप वाले तो कदापि इसे पण्डित नहीं करेंगे—परन्तु मेरी रायसे ऐसे मौकों पर यही करना उचित है । अगर महाराजके आदमी आकर एका एका मुझ पर आक्रमण कर बैठते या मुझको जगा देते तो मैं गुस्से से लठ कर उनकी पीठ लातता । सहा अनर्थ हीता । आपसमें हँस बटता । अतएव महाराजने जो कुछ किया सो बहुत ठीक और उचित था । न साप मरा न लाठी टूटी ।

इस देशके निवासी गणित विद्याके पूरे पण्डित होनेके अलावे कारीगर बड़े भारी है । कल काटेका बनाना तो इन सबके लिये सहज काम है । यहांके महाराज विद्याके परमानुरागी है । आप के राज्यमें विद्या और शिल्पकी बहुत कुछ उन्नति हुई है । इसी से लोग महाराजको “विद्यावन्धु” कहते हैं । बड़े बड़े पेड़ों तथा भारी भारी चीजोंके ढोनेके वास्ते यहां कलें तैयार हैं । लडाईंके जहाज भी यहां बनते हैं । एक एक जहाजकी लम्बाई नौ नौ फुट होती है । ये सब जङ्गलहीमें तैयार होते और वहांसे कल्लों के द्वारा समुद्रमें पहुंचाये जाते हैं । महाराजकी आज्ञा पातेही पाचसौ बढई और इच्चीनियरोंने चार घण्टेके अन्दरही एक सुविशाल गाड़ी बना कर तैयार कर दी । यह गाड़ी जमीनसे तीन इंच ऊंची, प्रायः सात फुट लम्बी और चार फुट चौड़ी थी । देखने में बुरी न थी । इसमें बाईस पहिये लगे थे । इसी गाड़ीके पहुंचने पर सबने “पोपलेस सेलेम” से आकाश गुच्छा दिया था । यह गाड़ी जहां मैं पड़ा हुआ था वही मेरे बराबर रखी गई । अब मुश्किल यह आपकी कि यह मेरा भारी शरीर गाड़ी पर कैसे बढाया जायगा । शेषमें उपाय निकल आया । एक एक फुट लम्बे खम्बे जमीनमें सीधे गाड़े गये । इनके सिरे पर एक एक चरखी ( छोटा पहिया ) लगाई गई । मेरे हाथ, पैर, गर्दन आदि तमाम शरीरमें बन्द बांधे गये । मजबूत डोरियोंका एक छोर तो चरखियों पर रहा और दूसरा आकड़ों के द्वारा दम्भीसे अटकाया गया । यह सब काम ठीक होजाने पर नौ सौ चुने हुए पदलवानोंने चरखियों परसे आई हुई डोरियोंको बड़े जोरसे खेचा । खेचतेही मैं धरतीसे पाच इंच ऊपर उठ आया । गाड़ीका लोगोंने ठीक मेरे नीचे ठेल दिया । बस जरामी डोरी ढाली करतेही मैं गाड़ी पर जा पहुंचा । फिर मेरा सारा शरीर गाड़ीके साथ खूब मजबूतीसे बांध दिया गया । इस प्रकार कोई पौने तीन घण्टे में मैं उस सुविशाल गाड़ी पर लादा गया । ये सब बातें सुनो पीछे मानूँ हुई क्योंकि

जिस समय वह सब काण्ड रचे जाते थे मैं बेहोशीकी पुडियाके कारण बिलकुल बेसुध था । महाराजके बड़े बड़े डेढ़ हजार घोड़े गाडीमें जुते थे जिनकी ऊँचाई साढ़े चार चार इंच थी । यह कही चुका हूँ कि जहाँ मैं था वहाँसे राजधानी आध मील थी । सब ठीक ठाक होजाने पर गाडी अग्रसर हुई । गाडी चलनेके चार घण्टे बाद अकस्मात् एक छीक आई और मैं चौंक पड़ा तो देखा कि बीच राहमें गाडी खड़ी है और मैं उस पर लदा हूँ । इन आश्चर्यमयी बातोंको देख मेरी अजब दशा थी । कुछ कल काटा बिगड़ गया था इसीसे गाडी रुकीथी । मिस्त्री सब मरम्मतमें लगे थे । एक ट्रिक्कीकी बात सुनिये । जब गाडी रुकी तो दो तीन आदमियोंको यह देखनेका शौक हुआ कि मैं सोया हुआ कैसा मालूम होता हूँ । वे लोग चुपचाप गाडी पर चढ़ आए और मेरे मुँहके सामने खड़े होगये । इनमेंसे एक महाराजका चौकीदार भी था । वह अपने डण्डेका छिरा मेरी दाईं नाकमें घुसेड कर भाग गया । मैं बड़े जोरसे छीक कर जाग उठा । यह डण्डा नाकमें सीककी तरह जान पड़ा था । बस इसी सबदसे बीचहीमें मैं जाग पड़ा था । राजधानी पहुँचनेके तीन सप्ताह बाद यह भेद मुझे मालूम हुआथा । फिर गाडी चली । चलते चलते शाम होगई । रात भर रास्तेहीमें विश्राम किया । हिफाजतके लिये सादसे एक हजार सिपाही थे । पाचसी छाथीमें मशालें लिये और पाचसी धनुष बाण चढाए दोनों तरफ डटे थे । सूरज उगने पर फिर दूधका डहा बजा । दोपहरको हम सब ऐसी जगह जा पहुँचे जहाँसे नगर कोट ( शहर पनाह ) का फाटक दो सौ गज दूर था । बस यही गाडी खड़ी हुई । स्वयं महाराज परिकर सहित मुझे देखनेके लिये यहाँ आये थे । महाराजने तो मेरी देह पर चढ़के मुझे देखना चाहा परन्तु सन्नियोंने विपदकी आशङ्का दूर महाराजको ऐसा करनेसे रोक दिया ।

जहाँ गाडी रुकी थी वहाँ एक पुराना विशाल मन्दिर था ।



उस देशमें इससे बड़ा मकान और नहीं है । कई वर्ष पहले इस मन्दिरमें एक नरहत्या होगई थी । इसी लिये नगरनिवासियोंने इसे अप्रवित्र समझ कर छोड़ दिया है । अब उसमें पूजा पाठ नहीं होता योंही खाली पड़ा रहता है । इस समय यह धर्मशालाका काम देता है । इसी मन्दिरमें मेरे टिकनेकी व्यवस्था हुई । उत्तर ओरका सदर दरवाजा चार फुट ऊँचा और प्रायः दो फुट चौड़ा था । इस दरवाजेसे मैं मजेमें रंग कर भीतर जासकता था । दरवाजेके दोनों तरफ दो छोटी छोटी खिडकिया थीं जो धरतीसे छ. इञ्चसे अधिक ऊँची न थी ।

कारीगरोंने बाईं ओरवाली खिडकीके पास ८१ जञ्जीरें लगा रखी थी । इन जञ्जीरोंकी लम्बाई तथा सुटाई लैंडियोंकी बड़ी की चेनके बराबर थीं । इन्हीं जञ्जीरोंको इकट्ठी कर मेरा बाया पैर बाधा गया और उनमें छत्तीस ताले जड़ दिये गये । बड़ी मडककी दूसरी तरफ मन्दिरसे बीस फुटके फासले पर एक गुब्बज था जिसकी ऊँचाई लग भग पाच फुटके होगी । महाराज पारिषद समेत उसी गुब्बज परसे मुझे देखने लगे । शहरके सिवा बाहरके लाखों आदमी तमाशा देखनेके लिये आये थे । एक हजार सिपाही डिफाजतकी वास्ते मौजूद थे तिस पर भी सैरकाडों आदमी खीट्टी लगा कर मेरी देह पर चढ़ते और झूटते थे । किसीकी कोई नहीं सुनता था । सब मेरे ऊपर गिरे पड़ते थे । लाचार हो महाराजको यह हुक्म जारी करना पड़ा कि जो कोई इस विराट पुरुष के पास जायगा उसे फासी दी जायगी । जञ्जीरसे बाधनेके बाद और सब वन्दन काट दिये गये । यह जजीर चार हाथ लम्बी थी । बस इसीसे मैं चार हाथ तक इधर उधर टहल सकता था । सिर्फ यही नहीं बल्कि टांग पसार कर मन्दिरके भीतर सो भी सकता था । क्योंकि दरवाजेसे चारही हाथ पर मैं था । मेरी तबीयत बहुत उदास थी । जी बहलानेके लिये जरा मैं खड़ा होमया ।

और टहलने लगा । मेरा खड़ा होना और टहलना देख कर उन सबके आश्चर्यकी सीमा न थी ।

चतुर्थ परिच्छेद ।



खड़ा होकर मैं चारों ओर देखने लगा । अहा ! क्या मनोहर दृश्य है ! क्या रमणीय स्थान है ! आखें लस नहीं होतीं—जी चाहता है निहारताही रहूँ । क्या अनोखी छटा है सारा देशही चमन सा खिला हुआ है । चौकोर खेतोंकी बहार फलकी क्या-योंसे किसी तरह कम नहीं है । नाना प्रकारके वृक्षों की कुछ निरालीही शोभा है । मात फुटसे ऊंचे यहां वृक्षही नहीं हैं । मेरी दाईं तरफ राजधानी है—अहा कैसा सुन्दर नगर है । नगर क्या है—छाया शियेटरका परदा है । देखतेही मन सुग्ग हो जाता है ।

श्रीचादिये निवटनेके लिये तवीयत वेचैन थी । दो दिनसं निवटा नहीं । अब और रोक न सका । मन्दिरमें घुस गया और दिवाड बन्द करके वही हलका हुआ । कहही चुका हूँ कि जर्जर धार हाथ लगी थी इसलिये भीतर जानेमें कुछ कष्ट नहीं हुआ । ऐसी भेली कार्रवाई उस मैने एकही दिनकी थी सो आशा है कि पाठकगण मेरी दशा विचार कर क्षमा करेंगे । फिर तो मैं खूब तडपे उठता और बाररही निश्चिन्त होता । दो महीनर उनी समय आकर नाफ कर जाते थे । वस इस विषयकी यही समझ करता हूँ । पाठक ! नाक भौंह मत निकोडिये तीव्र सरसालोचन की के लिये मैंने यह गीत गाय है ।

श्रीचादिये हुटी पादार मैं बाहर निकल आया । इधर जग-राज भी गुप्तदत्त उतर चुकेथे । घोड़े पर चढ़के मेरी ओर आने लगे पर ईश्वरने बड़ी कुशलकी । यद्यपि घोड़ा सुनिश्चित न था तथापि वर मेरे पर्वतादार शरीरको देख कर भडका और अपने पिछले पैरोंसे खड़ा होगया । महाराज भी घोड़े पर चढ़ना जानते

ये इसलिये गिरे नहीं अपनी जगह पर टटे रहते । इतनेमें माईसाँ ने आकर घोड़ेकी वाग थामली । महाराज भी कुशलपूर्वक उतर पड़े । फिर खड़े होकर आग्रह्यकी दृष्टिसे मुझे देखने लगे लेकिन जहाँ तक जजीरकी पहुँच थी महाराज उसमें दूरही रहते । उनके सारे पास नहीं आए । महाराजने रसोईयोंसे भोजनादिकी सामग्री लानेके लिये कहा । वे लोग पहुँचनेहीमें तय्यार थे हुक्म पातेही मध्य और मांशसे लटे हुए छकडे मेरे सामने लेशाण । तुरतही मैंने सबको खाहा कर डाला । बीस छकडे सामके और दस शराबके थे । सास तो मैं दो तीन कोरहीमें चाट गया—वाकी रह्यी शराब भी एकही घूँटमें साफ होगई । महाराजनी अपने जोटे छोटे राजकुमार और कुमारियोंको लिये कुर्मियों पर अलग बैठी थी । सङ्ग में शहरके नामी नामी रईसोंकी स्त्रिया भी थी । घोडा भडकनेके बाद सब महाराजके निकट चली आई । महाराजका रङ्ग बैतून सा, चेहरा सुन्दर मगर रोबीला घटन चुस्त दुरस्त और मठीला था । और लोगोंकी अपेक्षा महाराज कुछ लम्बे थे । नाक नोकीली और आँखें रसीली थीं । उमर उनतीस वरससे कुछही कम होगी । महाराजको राजसिंहासन पर बैठे अभी सातही वर्ष हुएहैं । इसी बीचमें आपने बहुत झुझ नाम और यश पैदा कर लिया है । महाराजको भली भाँति देखनेके लिये मैं जमीनमें लेट गया—करवट लेनेसे मेरा मुँह श्रीमान्के मुँहके ठीक सामने होगया । वे मुझसे छः हाथके फासले पर थे । महाराजको कई बार हाथमें लेना पडा था । इस वास्ते आपका चित्र हृदयमें चित्रित है । महाराजकी पोशाक सादी और सुहावनी थी लेकिन नरक पर रत्न जडित खर्ष सुकट और हाथमें तीन इश्व लख्मी तलवार थी । म्याल और गूठ दोनों ही सोनेकी थीं । और उनमें हीरे जड़े थे । जितने लोग वहाँथे सब जर्कजर्क थे—एकसे एककी पोशाक बढ कर थी । उस समय वहाँकी भूमि बनारसी कमखाव मालूम थी और महाराज अपने दलबल समेत उसके बेल बूटे ।





नं० ५

एकको हाथमें उठालिया और उसके सामने जोरसे  
मुँह बाया मानो उसे जीताही निगल जाउगा ।

पृष्ठ १५

महाराज मुझसे दोलते और मैं महाराजसे किन्तु कोई किसीकी बात नहीं लसकता था । महाराजके साथ वकील और पुरोहित भी थे जिन्हें मैंने उनके रज्जु ढङ्गसे पहचान लिया था । महाराजने उन्हें भी सुनते बात करनेके लिये आज्ञा दी । वह दिचारे बोले भी बहुत कुछ । मैंने भी कई देशकी भाषाओंमें जवाब दिया परन्तु फल कुछ हुआ नहीं । कोई किसीकी बोली समझ नहीं सकता था । दो घण्टेके अनन्तर महाराजने समाज समेत प्रस्थान किया । तत्पश्चात् लिये अक्सर लोग मुझे छेड़ते और दिक करते थे । महाराजकी राज्ञासे भीड़ भाड़ हटाने तथा हिफाजतके लिये कड़ा पहरा बैठा । वास्तवमें वहाके आदमी बड़ेही शैतान थे । एक दिन जब मैं द्वार पर बैठा था कई आदमी लगे मुझ पर तीर चलाने । एक तीर तो बाँध आखके पानुसे निकल गया । बड़ी कुशल हुई, नहीं तो आखही फूट जाती । सिपाहियोंने तीर चलानेवालोंमेंसे दू. को पकड़ लिया और उनकी कुछ सजा न कर उन्हें बांध कर मेरे हवाले कर दिया । मैंने पाचको जेबमें रख कर एकको हाथमें उठा लिया और उसके सामने जोरसे मुँह बाया मानो उसे जीताही निगल जाऊँगा । उस दिचारेके तो प्राण सूख ही गये लेकिन दर्शकोंका भी हरके मारे अजब हाल था । जब मैंने खलीतेखे हुरी निकाली तो सबके सब सन्नाटेमें आनखें और वह दिचारा तो अपनी जानसे हाथ धोकर बड़े जोरसे रो उठा । मैंने हुरीसे उसका दम्बन बाट कर उसे जमीन पर रख दिया । वह जान लेकर भागा । शेष पाचके साथ भी मैंने यही वर्त्ताव किया । अरी इस कार्यवाहीसे सब लोग बहुतही प्रसन्न हुए । महाराज जब यह खबर पहुँची । यहाँ मेरी दही प्रगटा हुई । इससे मुझे पान भी हुआ जिमवा हाल आगे चल कर तानूस होगा ।

जः सौ बिक्रीने गाड़ी पर लट कर थापहुचे । दर्जियोंने ऐदमी दिक्कीनेको एक साथ मिला कर सी डाला . इस तरहके चार बनाये गये । फिर इन चारोंको इकट्ठा करनेसे एक गद्दा तैयार हुआ । खैर, इस गद्देसे कुछ नारास मिला । चादर कस्बन, तकिये, मम्हरी वगैरह भी इसी नापसे बनाई गई । इस प्रकारमे रातका कष्ट दूर हुआ ।

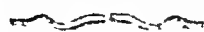
मेरे यहां पहुंचनेकी खबर देश भरमें फैल गई । धनी, दरिद्र, छोटे बड़े, आलसी, शौकीन—सब प्रकारके लोग घर घर छोड़ कर मुझे देखनेके लिये चारों ओरमें आने लगे । आस पासके गांव सब खाली होगये । यदि मन्साराज नई नई कड़ी आजाये जारी करके इस भेडियाधमानको न रोकते तो गटरही तथा खेती वारीके काम बिलकुल बन्द होजाते । महाराजने यह नियम कर दिया कि जो लोग देख चुके है वे अपने अपने घर लौट जाय और बिना सरकारी हुक्मके मन्दिरके आस पास ( एकसौ हाथ तक ) फिर न आवे । अगर कोई आयेगा तो उसे प्राण टण्ड दिया जायगा । हुक्म लेनेमें रुपये लगते थे सो राज्यके सिकत्तर साहबको खूब रुपये मिलने लगे ।

इस बीचमें महाराजके यहां कई सभायें बैठी । इन सब सभाओंका मुख्य उद्देश्य मैंही था । मेरे साथ अब कैसा व्यवहार करना चाहिये इत्यादि बातोंहीका विचार सभासद लोग आपसमें करते थे । वहांका एक भलामानस मुझे बहुत चाहता था । वह राज दरबारकी गुप्त बातें बहुधा मुझसे कह जाता था । न जाने वह कैसे इन सब गुप्त भेदोंका पता लगा लेता था । पीछे उसीसे मादूम हुआ कि सभावाले इस फिकरमें पड़े है कि अगर कहीं मैं जजीर तोड़ कर निकल जाऊं तो बड़ा अनर्थ होगा । किसीकी यही चिन्ता थी कि अगर मैं कुछ दिन वहां रह गया तो सारा देश दुर्भिक्षके चंगुलमें जरूर फस जायगा । मेरी खुराक जुटानेमें सारा बहुत कुछ खर्च पड़ता है । थोड़ेही दिनोंमें खजाना खाली

होजायगा । इसलिये मुझ आफतकी टालनेके लिये सभासदों ने नये नये ढङ्ग निकाले किसीने अन्न बिना मारना बताया और किसीने विपैले तीरोंसे मेरा कामही तमास करनेके लिये सलाह दी । परन्तु दूरदर्शी लोगोंने कहा नहीं, ऐसा करनेसे महा अनिष्ट होगा । जब रतनी बड़ी लाग मडेगी तो सखूचा देश दुर्गन्धिसे भर जायगा—फिर सहासारीको देशका सत्यानाश करनेमें कितनी देर लगेगी ? जिस समय सभामें सब तर्क वितर्क हो रहे थे दो क्षिपः-हियोंने आकर महाराजसे मेरी बड़ी बड़ाईकी और उन छः आदमियोंकी कथा जिन्हें धमका कर मैंने छोड़ दिया था कही । महाराज तथा सभासदगण मेरी इस कार्यवाहीको सुन बहुतही खुश हुए । उसी समय सर्व सभ्यतासे निश्चय हुआ कि राजधानीके समीप नौ सौ राजके भीतर जितने ग्राम हैं वे सब 'नर पर्वत' ( भरे ) के खाने पीनेकी सब चीजे नित्य सबेरे जुटाया करें और इन सब चीजोंका दाम खजानेसे मिला करेगा । 'नर पर्वत' के कास काजके लिये छः सौ नौकर चाकर रखे जाय । इन लोगों को तलब भी खजानेसे मिला करे तथा इनके रहनेके लिये मन्दिर वं दरवाजेके निकटही घर बने । पोशाक तैयार करनेके वास्ते तीन सौ दर्जी तथा यहांकी भाषा सिखानेके लिये छः अच्छे पण्डित नियत हों । सरकारी घुडसवार तथा सिपाही सब अपनेको ठीठ दगानेके निसिक्त सदा । " नर पर्वत " के निकट लाकर अपनी अपनी कसरत दिखाया करे ।



## पञ्चम परिच्छेद ।



एक दिन महाराजने कहा "मगर मेरे कार्गचारी तुम्हारी तलाशी लें तो तुम्हें बुरा न मानना चाहिये । तुम्हारे जैसे विराट पुरुषके पास अगर कोई भयानक कथिदार हो तो पलसे प्रत्यक्ष हो सकती है । सो इस काममें किसी प्रकारका उजर मत करना और यह तुम्हारी सहायताके बिना भी नहीं सकता है । तुम्हारी दयालुताका बहुत कुछ नाम पैला है इन्हीं में अपने कार्गचारियों की जान तुम्हारे हाथ सौंपता हूँ ।" महाराजकी मरका भाव स्मरण कर मैंने कहा "मुझे कुछ भी उजर नहीं है । याप भी मेरी तलाशी ले लीजिये मैं तैयार हूँ ।" महाराज बोले "मैं नहीं ले सकता । इस राज्यके नियमानुसार मेरे दो कार्गचारीही तलाशी लेंगे । जो जो वस्तु तुम्हारे पास मिलेगी वह सब जब तुम दहाने जाओगे तब लौटा दी जायगी । अगर दारु चाडोरी तो उन सब चीजोंका उचित दाम तुम्हें मिलेगा ।" आखिर दो राजकार्गचारी मेरे पास आए । मैं उन दोनोंको हाथमें लेकर दामसे जीवसे उबारता गया । उन दोनोंने भली भाँति अन्वेषण किया । जब काम होगया तब उनको जमीन पर रख दिया । जितनी चीजें मिली थी सबकी सूची बना कर महाराजको रिपोर्ट सुनाई गई । उस रिपोर्टका अविकल अनुवाद यह है—

"हम लोगोंने 'नर पर्वत' के कपड़ोंका पूर्ण रूपसे अन्वेषण किया । दाहनी ओरकी पाकेटमें मोटे कपड़ेका एक टुकड़ा मिला जो आमान्के दरवार हालकी जानसके बराबर है । बाईं ओरकी पाकेटमें चान्दीका एक सन्दूक था । जिसका ढकना भी चान्दीही का है । यह बहुत भारी है । इसे हम उठा न सके । इसे खोल कर देखनेकी इच्छा हुई । जब खुला तो देखा इसमें कुछ गर्दसी भरी हुई है जिसके उड़तेही हम लोग कीकते कीकते बेदम हो हमसेसे एक उस सन्दूकमें घुसा । वह घुटने तक उस गर्द

में डूब गया । वेष्टकोट की दाहिनी तरफ़वाले खज्जीतमें उजली मगर पतली चीजका एक बढासा पुलन्दा देखा जो मजबूत रस्सीसे बंधा हुआ था । उसमें क्या है सो मानूस नहीं । यह पुलन्दा तीन पुर्सा लम्बा है । इस पर हमारी हथेलीके समान काले काले दाग थे जो सम्भवतः चखर होंगे । बायें खलौतिमें एक प्रकार का एक यन्त्र पाया जिसके एक तरफ़ बीस बड़ी बड़ी खूटियां गड़ी हैं । जान पड़ता है 'नर पर्वत' इस यन्त्रमें अपना सिर भाड़ता है । वह हमारी बोझी जल्दी नहीं समझ सकता था इसलिये हम बहुत सी बातें पूछ न सके । पटलूनकी दक्षिण ओरवानी पावंटमें लोहे की एक पोखी लाट देखी जो एक पुर्सा लम्बी है । यह लकड़ीके एक बड़े कुन्देमें जड़ी है । लाटके एक तरफ़ लोहेकी अनूठी मूर्तियां बनी हुई हैं । यह क्या है सो हम लोग नहीं जान सके । दूसरी जगहमें भी ऐसीही एक चीज है । दाहिनी ओरवाली छोटी पावंट में बहुतसे गोल मगर चपटे, छोटे, बटे, उजले और लाल धातुके टुकड़े थे । जो उजले थे सो चान्दीके मानूस पड़े लेकिन वे इतने भारी थे कि हम दोनों मिल कर भी उन्हें उठा न सके । दाईं जगहमें दी काले काले घनगट खम्भे थे । लव जेबके भीतर खड़े थे तो बड़ी काठिनाईसे उनके सिरे तक पहुंच सके थे । एक तो खोलमें दण्ड है और दूसरेके ऊपरवाले छोर पर कुछ गोलसी उजली चीज मालूम पड़ी जो हमारे सिरसे डूनी है । इन दोनोंके भीतर इस्पात के बड़े बड़े मोटे पत्तर दण्ड हैं । हमारे कहनेसे 'नर पर्वत' ने खोल खर उन दोनों चीजोंकी दिखलाया और कहा कि एक तो दाख बगानेकी बाल है और दूसरी माम दाटनेकी । दो खलौति और थे जिनमें हम लोग नहीं गये । बाहरहींसे देखा पटलूनके ऊपरी भागमें दाईं ओरके खीसेसे चान्दीकी एक जजीर नटवती है । हमारे कहनेसे उसने जजीरको बाहर निवाला । देखतेही उस लोग भीचबसे रह गये । देखा जजीरकी निचले सिरेसे एक गोल पदार्थ बंधा हुआ है । जिसके एक तरफ़ चान्दी है और दूसरी

तरफ है खच्च पार दर्शक पदार्थ । जिधर खच्च है उधरही अनूठे अनूठे अक्षर लिखे है । उन अक्षरोंकी कूना चाहा पर छून मके, खच्च पदार्थसे उगली टकारा कर रह गई । नर पर्वतने उस अद्भुत पदार्थको हमारे कानोंसे लगाया तो हमारे अक्षरजका ठिकाना न रहा । उसमेंसे टक् टक् शब्द निकलता है । जैसे फुहारसे जल धरावर गिरा करता है वैसेही उसमेंसे भी आज्ञा निकला करती है । हम लोग अनुमान करते है कि यह एक विचित्र जीव है अथवा नर पर्वतका इष्ट देवता । यह पिछली बातही मुझे म्ल्य प्रतीत होती है क्योंकि नर पर्वत इस यन्त्रकी आज्ञा बिना कोई कामही नहीं करता है । यह पदार्थ उसे दिन रातकी मूचना देता है । बायें खीसेसे एक जाल निकला । मछली पकड़नेके जाल वैसे होते है यह भी वैसाही है । लेकिन यह बटुणकी तरह खुलता और बन्द होता है । इसमें मोनके बड़े बड़े बहुतसे मछे है । यदि वास्तवमें यह मोना है तो इसका स्थूल अपरिमित होगा ।

महाराजको आज्ञानुसार हमने नरपर्वतके खीसीका भली भांति अनुमन्थान किया । जिन चीजोंका वर्णन ऊपर कर चुके है । उनके अतिरिक्त एक वस्तु और देखी । उसकी कमरसे चमड़ेकी एक पेट्टी लपट्टी हुई है जिससे एक लम्बी तलवार बाई और लटकती है । यह तलवार पचीस इंच लम्बी है । दाहिनी ओर दो खण्डका एक वेग है । इसके एक एक खण्डमें महाराजके तीन तीन ग्रादमी मजेमें अट सकते है । एक खण्डमें भारी भारी बहुतसी गोलियां है और दूसरेमें एक तरहका काला अन्न । लेकिन यह भारी नहीं है । पचास टोनाको एक बारही मुट्ठीमें उठा लियाया ।

नर पर्वतके पास जो कुछ चीजें मिली या देखी उनकी यह पूरी सूची है । नर पर्वतने हमारे साथ अच्छा बर्ताव किया और महाराजके प्रति विशेष राजभक्ति दिखलाई है । महाराजके शुभ शामन समयके नवासिबे चन्द्रके चौथे दिन यह रिपोर्ट लिखी गई ।

क्रोफ्लिन फ़ेलक  
मार्सी फ़ेलक ।”

रिपोर्ट सुन कर महाराजने मुख्य चीजें दाखिल करनेके लिये मुझसे अनुरोध किया । जिन जिन पदार्थोंको देख कर वे चमत्कृत हुए थे पहले मैं उन्हीका वर्णन करता हूँ । दरबार हालकी जाजमसे जिसकी समताकी गई थी वह था मेरा कमाल । मेरी पिस्तौलहीकी बराबरी लोहेकी पोली लाटसे की गई थी । सुघनी की डिबियाहीने मन्दककी ध्वजत पाई थी । विचारी घड़ी तो साक्षात् देवताही बन बैठी थी ।

महाराजने पहले तलवार दिखलानेके लिये कहा । मैंने स्यान समेत तलवार निकाली । महाराजकी आज्ञासे उसी समय चुनी हुई तीन हजार फौज धनुष बाण चढाये मेरे चारों तरफ मगर झुके दूर हट गई । मेरी दृष्टि तो महाराजकी ओर लगी थी इस लिये उस सुविशाल सैन्यदलकी न देख सका । इसकी खबर मुझे पीछे मिली, अस्तु । फिर महाराजने स्यानसे तलवार निकालनेके लिये कहा । मैंने वही किया । यद्यपि समुद्रके जलसे भीगने के कारण कहीं कहीं उस पर मोरचा लग गया था तथापि ज्यादा दिखा उसका साफ था । मैं हाथमें लेकर उसे इधर उधर घुमाने लगा । सूर्यकी किरण पड़तेही वह विजलीभी चमक गई । सब दर्शकोंकी आंखें बन्द होगई, डरके मारे होश उड़ गये । महाराजने स्यानमें रख कर जमीन पर धीरेसे धर देनेके लिये आज्ञा दी । मैंने वही किया । फिर पिस्तौलकी दारी आई । बारूद चमड़ेकी तोशदानमें थी इस वास्ते वह भीगनेसे बच गई थी । मैंने पिस्तौलमें केवल बारूद भर कर एक गावाजकी । जिससे मैंकहीं दक्षिण होगये । महाराज भी लरा डौक उठे थे । फिर दोनों पिस्तौल और तोशदान तलवारके साथही रखदिये । महाराजसे यह भी निवेदन कर दिया कि यह बारूद बहुत लोखिलकी चीज है । इने आगने बहुत दक्षिण जाणिये नहीं तो मारा रहल एक क्षणमें उड़ जायगा । महाराज घड़ी देखनेके वास्ते बहुत देरने थे । बाहिर मैंने घड़ी निकाली । दो गादनी उने उठा कर महाराज

केपास लेगये । घड़ी देखते ही उनके आश्चर्यका वागपार न था । काटेकौ चाल तथा लगातार टक् टक् शब्दने तो उन्हें आश्चर्यके समुद्रमें डुबा दिया । घड़ीके विषयमें पण्डितोंसे पूछा गया तो किसीने जानवर, किसीने देवता और किसीने कहा बताया सो मेरी समझमें न आया । इसके उपरान्त मैंने रुपये, पैसे, अशर्फिया, बटुआ, छुरे, छुरा, कघो, सुंवनीकौडिविया, रुमान और रोज-नामचा महाराजके सामने रख दिया । तलवार, पिस्तौल और तीशदान महाराजने गाड़ी पर लदवा कर खजानेमें भेज दिये । बाकी चीजें मुझे वापस मिली ।

एक गुप्त पाकिट और द्यौ जिमकी तल ग्री जान दूझ कर मैंने होने न दी । इस पाकिटमें एक जोडा चग्मा, जेबो दूरबीन तथा और भी बहुतसी कामकी चीजें थी । शायद लोग तोड़ फोड़ दें वस इसी ख्यालसे मैंने इन सब चीजोंको गुप्तही रक्खा ।

षष्ठ परिच्छेद ।



मेरी लज्जता और सज्जनताके कारण महाराज मुझसे बहुतही प्रसन्न रहते थे । राज दरवारके जितने लोग थे सभी मुझसे सन्बुध थे । प्रजागणका तो मैं खिलौनाही बन गया था । इन सब कारणांसे मुझे अपने छुटकारेकी बहुत लुक आशा होने लगी । मैं भी सबको खुश रखनेकी कोशिश करता था । चिन्तासे क्रमशः मेरा भय भागने लगा । सब ढीठ होचले । पाच पाच छ' छः आठमी टोलो बाध कर आते और मेरी देह पर लहलहे कूटते और नाचते । यहा तक सब निडर होगये कि छोटे छोटे लडके और लहकियां मेरे बालोंमें लुझा चोरी खेलने लगे । मैं चुपचाप पडा पडा देखता था । अब मैं इनकी भाषा भी अच्छी तरह बोलने और समझने लगा था । एक दिन महाराजने अपने यहाके खेल तमाशे दिखलाये । वस्तुतः ऐसी कुशलता—ऐसी निपुणता—

... मैंने कही नहीं देखी ! ऐसे तो सभी तमाशे अच्छे

घे लेकिन “रञ्जू-नृत्य” यानी छोरी परका नाच मुझे बहुतही भाया । एक फुट ऊंचे दो खम्भे ( नहीं खूँटी ) जमीनमें माड कर उनमें दो फुट लम्बा उजला धागा बांध दिया जाता है । वस इसी धागे परके नाचका नाम है “रञ्जू-नृत्य” । इस नाचका पूरा विवरण मैं सुनाता हूँ चाशा है पाठकगण ध्यानसे सुनेंगे ।

जो भारी भारी कामोंके अधिकारी हैं अथवा जो महाराजके हाथ पाद बना चाहते हैं वही यह नाच नाचते हैं । उच्च पद पानेके लिये वक्त इसी रञ्जू-नृत्यमें पटु होना चाहिये—विद्या या कुलीनताकी कुछ आवश्यकता नहीं है । यह नाच बालेपनहीसे सिखाया जाता है । किसी उच्च पदस्थ राजकर्मचारीके मरने वा पदच्युत होने पर पांच छः सम्प्रेदवार अपना अपना नाच दरबारको दिखाते हैं । जो बढिया नाचता या जो बिना गिरे पड़े खूब कूदता है वही उस पदको पाता है । राज्यके प्रधान प्रधान मन्त्री भी अक्सर इसी प्रकार नृत्य कर महाराजको वता देते हैं कि अभी तक वह अपनी निपुणताको नहीं भूले हैं । खजा नचीको सब अफसरोंसे कमसे कम एक इंच अधिक कूदना पडता है । मैंने अपनी आँखोंसे उसको छोरी पर तलवार रख कर कला-बाजी करते देखा है । इस नाचमें खजानचीके बाद महाराजके प्राइमेट सिकतर मेरे परममित्र रेलडू सेलहीका नज़र था । और बाकी सब समान थे ।

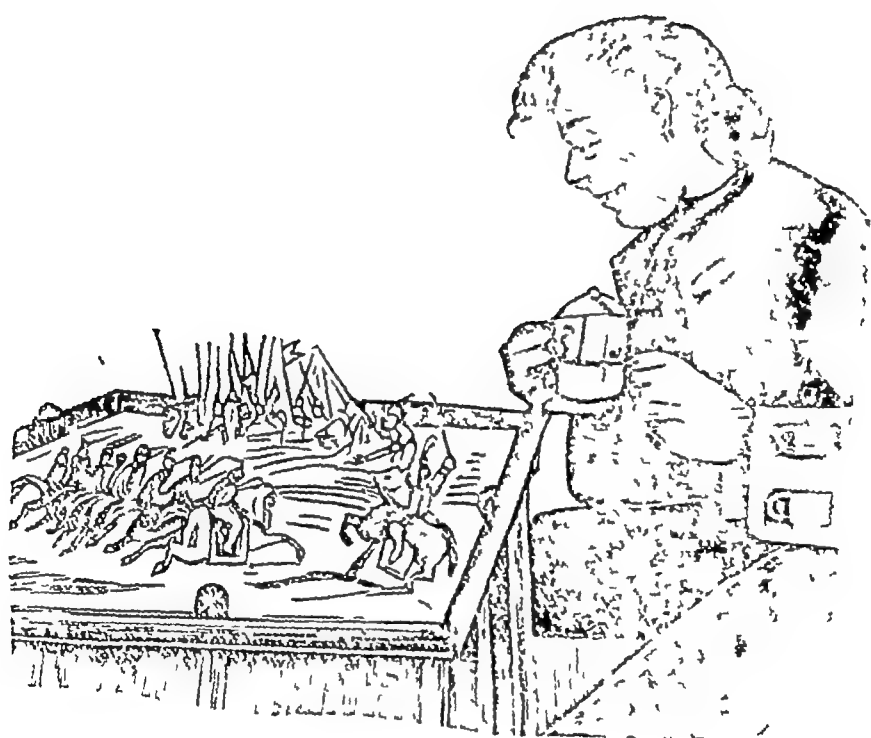
गद्दी बिछी दुर्घ थी इसीसे बचभी गये नहीं तो उसी क्षण उनका काम तमास होजाता ।

एक खेल और है जो महाराज, महारानी और प्रधान मन्त्री के सिवाय दूसरा कोई नहीं देख सकता—मोभी बग़ावर नहीं कभी कभी किसी शाम मौके पर होता है । महाराज छ. छ. इन्द्रके तीन पतले रंगसी डोरे मेज पर रख देते हैं जिनमें एकतो गीला, दूसरा लाल, और तीसरा हरा होता है । जो बाजी मार लेता है उसी को महाराज मस्तुट हाँकर ये डोरे इनामके बतौर देते हैं । राज-महलके बड़े कमरेमें यह तमाशा होता है । खेलनेवालोंकी अपना अपना कौगल दिखाना पड़ता है । रज्जु-नृत्यसे इसका ढङ्ग निरानाही है । ऐसा कौगल तो पृथ्वी पर मैने कहीं नहीं देखा । महाराज छड़ीको सामने तान कर खड़े होते हैं और खेलनेवाले स्व एक एक करके उस छड़ीको उठाने कर लाय जाते हैं । कभी उससे नीचेसे निकल जाते और कभी इधर जाते कभी उधर जाते हैं । महाराज भी छड़ी को कभी ऊपर उठाते और कभी नीचे गिराते हैं । बस इसी छड़ीके इशारे पर खेल होता है । सभी कभी छड़ीका एक सिरा महाराजके हाथसे और कभी दोनोंही मन्त्रीके हाथमें रहते हैं । जो इन उछल कूटसे अक्ल होता उसे गीला, दूसरा होता उसे लाल और तीसरा होता उसे हरा डोरा मिलता है । ये डोरे करधनीकी तरह कमरमें पहने जाते हैं । ऐसे वहाँ बहुत कम लोग हैं जिनकी कमरमें ऐसी एक भी करधनी न हो ।

फौजी तथा महाराजके अस्तबलके घोड़े रोज मेरे पान लाये जाते थे । आते आते वे सब ढीठ होगये । अब मुझे देख कर वे नहीं भडकाते थे । अब वे मजेमें पैरके पास चले आते थे । मैं अपना हाथ धरती पर रख देता तो सवार लोग बड़ी फुर्तीसे घोड़े समेत उसे फाद जाते । एक दफे एक शिकारी बड़ी चालाकीसे मेरे पैर को घोड़े समेत फाद गया था । लेकिन ताज्जुब तो यह है कि उस समय मेरे पैरोंमें जूते भी थे । एक दिन मैंने एक अच्छे खेल







रुमाल पर खानि स युव ।

महाराजकी खूब ही प्रशंसा किया था । मैने बहुतसे खूटे मगवाये । दो दो फुट लम्बे नौ खूटे जसीनमें गाड़ दिये । चौकोर जसीनके चारो ओर ने खूटे गाड़े गये थे । इसका क्षेत्र फल था अठ्ठाई वर्ग फुट । फिर खूटोके ऊपर चारो तरफ चार डरहे मजदूरीसे बांध दिये गये । उन्ही खूटोसे अपने रुसातकी खूब कसकर बांध दिये फिर चारो ओर खेचनेमें रुसात बिलकुल तन गया तनकभी निकुलन नहीं । जान लेना चाहिये कि यह रुसात ऊपरवाले चारो छगडीने पांच इंच नौचेकी ओर बांधा था वन इन्हीसे डरहे मुंडेरका काम देते थे । जब मय ठीक ठाक होगया तब मैंने महाराजसे गाडा लेकर चौदीस रुपए हुए सवारोवी उनकी अफसर रहित उमरुगास पर डाल कर जवाबद कारनेके लिये कह दिया । यह मद मय शस्त्रसे सुरक्षित थे । उन रुसात पर दो त्रिशे होकर वह मद अक्रिय मद करने लगे । खूब घससानगी लड़ ई हुई । महाराज इस खेलसे बहुतही मग्न हुए । कई रोज यह तमाशा चला था । ईश्वरकी कृपासे इस खेलसे कोई दुर्घटना नहीं हुई । बहुत एक दिन एक भटकीसे दोडेरी टापसे रुसातने छेद होगया था परन्तु क्षण क्षण नही हुई ।

ला सकते हैं।” मैंने उसके सगवानेके लिये महाराज ने अनुरोध किया। उन्होंने भी आज्ञा देदी। आखिर वह अनुरोध चीज आ पहुँची, सहजसे नहीं - पात्र घोड़े उसे खेचकर लाये थे। देखता तो मालूम हुआ कि मेरी टोपी है। समुद्रमें तैरनेके समय मैंने इसे डोरीसे बांध लिया था पर फिर यह कहा गिर पड़ी सो मालूम नहीं। टोपी आई मही लेकिन बिल्कुल किन्न भिन्न थी। क्योंकि एक तो घसीट कर लाई गई दूसरे छेद करके उसमें डोरी बांधी गई थी।

इस घटनाके दो दिन बाद महाराजने एक और विचित्र तमाशा देखा। महाराज सुभसे बोले “तुममें जहा तक हाँकके पाव फैला कर सीधे खड़े होजाव। मेरी कुछ फौज जो यद्वाहे कायदे के साथ तुम्हारे दोनों पैरोंके बीचसे निकल जायगी।” मैं पाव फैलाकर खड़ा हुआ। घुड़ सवार सोलह २ और पैटन चौबीस चौबीसकी पांती बांध कर ध्वजा पताका उड़ाते डढ़ा पीटते मेरे पैरोंके बीचसे निकल गये। कुल पलटन चार हजार थी। महाराजका हुक्म था कि जानेके समय कोई ऊपर न देखे परन्तु दो एक मन चले और रसिक सिपाहियोंने इस हुक्मको ताक पर रखदिया था। पुराना होनेके कारण मेरा पतलून कुछ फट गया था। सो ज्योंही ये लोग पैरोंके बीचोंबीच पहुँचे त्योही ऊपर देख कर अचम्भेके साथ हस पड़े।

एक बहुत जरूरी बात कहनेको भूलही गया था। वह यह कि जिस देशकी कथा मैं कह रहा हूँ अथवा जो कहिये कि जहाँ मैं आ फंसा हूँ उसका नाम “लिलीपट” है और वहाँके निवासी मुझे “नर पर्वत” कहते हैं।

मैंने अपनी स्वाधीनताके लिये महाराजकी सेवामें इतने प्रार्थना पत्र भेजे कि उनका भी चित्त पिघल उठा। आखिर एक सभा करके मदकी राय लीगई। सबने मेरेही पक्षमें रायदी। केवल आदमी जिसका नाम “स्वायंरेशवलगुलाम” था अकारणही

मेरा शत्रु, परम शत्रु, बन्धु शत्रु बन बैठा । यह बल गुलाम समुद्री सेनापतिके सिधा राजसन्तौ भी था । महाराज इसे बहुत चाहते थे । इसीसे यह उनका विश्वास भाजन भी था । यह अपने कामों में बड़ा पक्का लेक्जिन चेहरा रूखा था । वम इसी दुष्ट बल गुलाम ने न जाने क्यों मेरे विरुद्ध राय देदी परन्तु कुछ हुआ नहीं क्योंकि इसे छोड़ कर सभी मभासद मेरे पक्षमें थे । अतएव महाराजने भी मेरे अनुकूलही सखति प्रगटकी । लाचार ही बलगुलामको भी सबकी रायमें राय मिलानी पड़ी परन्तु मभाके सन्तव्योंको स्वयं लिखनेके लिये उसने बड़ा हठ किया । आखिर यह भार उसीके मिर सौपा गया । बलगुलामने भी आज्ञा पत्र लिखकर तैयार किया । कई माननीय पुरुषोंके मझ वह स्वयं आज्ञापत्र लेकर मेरे पास आया । मैंने ध्यानसे आज्ञापत्रको सुना और उसकी शरतों को मञ्चूर किया । फिर बलगुलामके आज्ञानुसार पहले तो अपने देशकी प्रणालीसे पुनः उनकी देशप्रणालीसे मुझे शपथ करनी पड़ी कि मैं इन नियमोंको अवश्य पालूंगा । जरा उन लोगोंके कसम खानेकी रोति सुनिये । बायें हाथसे दायां पैर घाम कर दाहिने हाथकी दिवली उझर्लीमें ब्रह्माण्ड और अंगूठेमें दाहिने कान का उपरी भाग कसम खानेके समय छूना पड़ता है । मुझे भी यह सब कसरत करनी पड़ी थी । पाठकोंके अवलोकनार्थ मैं उस आज्ञापत्रका अनुवाद किये देता हूँ ।

लिलीपटके महाप्राक्रान्तशाली महाराज गलघटो समारिण एभ-  
निसगर्डिलोशेफिन मुहूर्ती उह्नी गुइने जिनके साम्राज्यकी परिधि  
प्रायः बारह मील और विस्तृति भूमण्डलकी सीमा पर्यन्त है—जि-  
नके युगल दरण पृथ्वीके केंद्रकी पवित्र करते हैं—जिनका मस्तक  
सूर्यमण्डलको स्पर्श करता है—जिनके सिर हिलातेही समारके  
गमन राजा काप जाते हैं—जो दुष्टोंका दमन और शिष्टोंका स-  
त्कार करते—जो सब महाराजोंके महाराज जो मनुष्य कोटिमें सब  
से उच्च हैं—जो इंसान शत्रुसे मनोहर, प्रीतिसे सुखदायी,

एकमापी और भीष्मकालमें मरदायी है — नर पर्वतको भी हमारी स्मृतिमें कभीसे आया है, यद्यपि ऐतरेय ब्रह्मसंहिता में निरुपलब्धता की पालन करनेके निमित्त बाध्य किया है ।

(१) 'नर पर्वत' को हमारी यात्राके बिना कदापि दूर राज्य के उत्तर नहीं नहीं जाना चाहिये ।

(२) 'नर पर्वत' को हमारी प्रकाशय तन्त्रिकों के बिना कदापि राजधानीके भीतर आनेका साधन न करना चाहिये । यदि उसके आनेको आवश्यकता समझी जायगी तो दो बन्दे पत्नी दगर निवासियोंको सूचना देटी जायगी कि आज नर पर्वत शहरमें आता है कोई आदमी घरमें बाहर न निकले ।

(३) यह नर पर्वत केवल बड़ी बड़ी मंडलीकी पर दृष्ट गवता है । मैदानमें जहा मवेशी चरते हैं या खेतोंमें, यह न टहन सकता न सो सकता है ।

(४) नर पर्वतको बड़ी बड़ी मंडली पर भी खूब सचेत होकर चलना चाहिये जिसमें हमारी प्यारी प्रजा या उसके घोड़े, गा-डिया-आदि पैरके नीचे न कुचल जायें । इनके अतिरिक्त हमारी प्रजाओंमेंसे किसीको भी उसकी न-के-के गिरा जायसे उठाना न चाहिये ।

(५) अगर कहीं कोई जरूरत उत्पन्न हो तो नर पर्वत दूत और उसके जाउका जवम धरके हर एक चन्द्रम एक बार एक दिनका सफर तय करेगा । और जरूरत हुई तो कुशल पूर्वक दूत को छोड़े उसके वापस की आदेश ।

(६) हमारे शत्रु ब्रह्मपूजके राजासे युद्ध उपस्थित होने पर नर पर्वतको हमारी सहायता करनी पड़ेगी । शत्रु लोग हम पर आक्रमण करनेके लिये जङ्गी जहाज तैयार कर रहे हैं । अतएव नर पर्वतको उचित है कि उनको नष्ट भष्ट करनेको यथा साध्य चेष्टा करे ।

(७) नर पर्वतको छुट्टीके समय भारी भारी घण्टा रसने तथा

गाह्नी इसारतोंकी दीवारों पर चढ़ा कर कुनियोंकी मदद करनी चाहिये ।

(८) नर पर्वत दो चन्द्रमें हमारे राज्यकी परिधि अपने डगोसे नाप कर ठीक करदे ।

(९) नर पर्वत ऊपर कहे हुए नियमोंको पालन करनेकेलिये यदि धर्मकी मोगन्द खायगा तो उसे खाने पीनेके लिये रोज १७२४ आर्द्राग्योकी खुराक मिला करेगी, वह जब चाहेगा महाराजसे बिना रोक टोक मिल सकेगा और हम लोगभी सब तरहसे उसकी अपना लुपा पात्र नसक्ता करेगे । हमारे राजत्वकालके ८१ वें चन्द्र के बारहवें दिन यह आज्ञापत्र ' देल्फावोराक ' प्रासादमें लिखा गया ।'

एव हिमाद्रियोनि हिमात्र लगाया कि कमसे कम १७२४ आदमी तो जरूरही मेरे बराबर होंगे । वस इमी लिये इतने आदमियोंकी खुराक मेरेवास्ते काफी मसभी गई । पाठकगण । इतनेहीसे आप लोग वहाके निवासियोंकी विद्वता तथा महाराजकी बहुदर्शिता और सावधानता मसभ सकते हे ।

स्वाधीनता पानेके बादही मुझे राजधानी देखनेकी लालसा हुई ।

### समय परिच्छेद ।

अब मैं स्वाधीन हू । स्वाधीनता पानेके बादही मुझे राजधानी देखनेकी लालसा हुई । प्रार्थना करने पर महाराजने अनुमति भी दे दी पर चेता दिया कि खबरदार । पुरजनोंको अथवा उनके मकानोंको किसी प्रकारकी हानि न पहुँचाना । मेरे नगर भ्रमण का विज्ञापन सारे शहरमें छिड़ोरा पीट कर दिया गया । सबको घरसे बाहर निकलनेकी मनाही हुई । सब प्रदन्ध ठीक होजाने पर मैं नगर देखनेके लिये निकला । नगरकोटकी दीवार अढ़ाई फुट ऊँची और करीब ग्यारह इंच चौड़ी है इस पर एक घोड़ा गाड़ी मजेमें चल सकती है दस दस फुट पर एक एक गुन्ज है । पश्चिम दरवाजेसे मैंने नगरमें प्रवेश किया । मैं सिर्फ फतूही पहने था । कोटके दामनके झटकेसे शायद छतों और छज्जियोंकी हानि पहुँचे इसी खयालसे मैंने कोट फीट कुछ नहीं पहना । यद्यपि महाराजकी कड़ी आज्ञाके कारण सब नगर निवासी अपने अपने घरोंमें घुसे थे तथापि मैं बड़ी सावधानीसे फूक फूक कर पाव रखता । छतों पर और छज्जियों पर ठमा ठस भीड़ थी । मैं बहुत देश देशान्तरोमें घूम चुका हूँ पर ऐसी आवादी कहीं नहीं देखी । शहरकी बनावट चौकोर है । नगर कोटकी चारों दीवारें पाच पाचती फुट लम्बी हैं पाच पाच फुट चौड़ी दो बड़ी बड़ी सड़कें हैं जो

\* ठोस पदार्थका क्षेत्रफल निकालनेके लिये घन किया जाता  
जैसे  $१२ \times १२ \times १२ = १७२८$  ।

सारे शहरकी चार हिस्सोंमें बाटे हुए हैं । छोटी छोटी गलियोंमें मैं नहीं गया—बाहरहीसे देखा । उनकी चौड़ाई डेढ़ फुटसे ज्यादा नहीं थी । पांच लाख आठसौ इस शहरमें रह सकते हैं, सकान भी तीन सज्जिलेसे लेकर पांच सज्जिले तक देखनेमें आवे । बाजार बहुत सुन्दर और दुकानें खूब सजी थी ।

राजधानीका नाम 'मिलडेगुडी' है । नगरके ठीक बीचमें महाराजका राजमहल है । यही पर दोनों महलके आपसमें मिली है । राजमन्दिरके बीच फुटकी दूरी पर चारों तरफ़ दो फुट ऊँची दीवार है इस दीवार पर चढ़नेकी सुभी आजा थी । मैं इस पर चढ़ गया । दीवारने राजमन्दिर इतने फामले पर था कि मैं सब तरफ़की चीजें देख सकता था । बाहरी चौक ४० फुटका था । दो चौक और थे फिर भीतर राजभवन था । इसकी देखनेकी सुभी बहुत लालमा हुई पर देख न सका क्योंकि सदर फाटककी ऊँचाई डेढ़ फुट और चौड़ाई सातही इंच थी । बाहरका कोई सकान पांच फुटसे ज्यादा ऊँचा नहीं था । अगरचे दीवारों पत्थरकी चार इंच चौड़ी थी तो भी उन पर कूद कर चढ़ जाना असम्भवही था क्योंकि ऐसा करनेसे वह जरूर टूट फूट जाती । महाराजकी भी आन्तरिक इच्छाथी कि मैं राजमन्दिरकी शोभा देखता पर लाचारी थी । मैं अपने डेरे पर लौट आया और उपाय सोचने लगा । सोचते सोचते उपाय निकल आया । सबेरा होतेही मैं सरकारी बङ्गलमें जो हजार गज दूर था गया । वहाँ मैंने चुन चुन कर बड़े बड़े पेड़ोंकी छुरीसे काट गिराया । फिर उन्नी लकड़ियोंसे तीन तीन फुट ऊँचे दो सज्जित टूल बनाये । तीसरे दिन पुनः शहरमें टिढ़ोरा पीटा गया । मैं दोनों टूलोंको हाथमें लटकाए पुनः राजमन्दिरकी ओर चला । जब पहले चौकके अन्तर्गत पाम पहुँचा तो एक टूल पर तो मैं रुड़ा होगया और दूसरेको हतके ऊपरसे उठाकर पहले और दूसरे की मज्जी बीचवाली जमीन पर जिनकी चौड़ाई आठ फुटकी आदिस्तेमें रख दिया । फिर हतकी लाघ कर दूसरे टूल पर



जारहा और पहलियों ने कडेसे उठा कर साथे रख दिया । वस इसी प्रकारसे ये अतः पुरसे जा धमका । बीचवानी खनकी खिड़कियोंके सामने मुंह करके सँ बैठ गया । खिड़कियाँ पहलीहीसे खुली थीं । अन्ना भीतर केसाँ चनिर्वननीय सजावट थी । महा रानी तेज महाराज कुमार अपने अपने कमरेमें पहिली और महेली के साथ विराजमान थे । महारानी छपा कटाकसे मुझे नैर कर जरा गुपकुग पठी और फिर चूमनेके लिये अपना हाथ बाहर कर दिया । मैंने उसे चूसा । वस इस तरह नारा राज बदन देख भाल कर मैं अपने लेंगे पर वापस आया ।

स्वाधीनता पानेके पन्द्रह दिन बाद एक गैजेटेरे महाराजवा सिकत्तर 'रेसिडेन्स' मेरे पास आया । साथमें बँबल एकड़ी आदमी था । गाड़ी कुछ दूर अलग खड़ी हुई । उसने मेरे साथ कुछ बात चीत करनी चाही । एक तो वह भला मानस दूसरे मेरा परमहितैषी—राजमहामं इसने मेरा बहुत कुछ उपकार किया था—इसलिये रोने उसकी बात मानली । मैं लेट गया जिसमें वह सानीसे मेरे कानों तक पहुँचे परन्तु उसने कहा "नहीं, मुझे आप हाथहीमें उठाले और कानके पास लेजाय ।" मैंने बर्नी किया । पहले तो उसने मेरे छुटकारे पर आनन्द मनाया फिर कहा "अब हम लोगोंका भी काम जल्द पूरा होना चाहिये । हमारे राज्य की आज कल जैसी दशा है अगर वैसी न होती तो आपका इतनी जल्दी छूटना अनश्वरही था । बाहरवाले चाहें हम लोगोंको अच्छी दशामें रखें परन्तु वास्तवमें आज कल हम लोगोंकी दशा बहुत ही खराब है । दो बड़ी आफतोंके मारे हम लोगोंका नाकोदम है । एक तो आपका विरोध और दूसरे बाहरकी एक प्रबल शक्त के आक्रमणकी आशङ्का—वस इन्ही दो बातोंसे आजकल हम लोग हैरान हैं—अतः ठिकाने नहीं है मारे चिन्ताके चित्त चञ्चल है । आपसे विरोधका कारण सुनिये । सत्तरचन्द्रसे भी ज्यादा हुए हींगे दो विरोधी दम खड़े हुए हैं । एकका नाम है 'द्रामिक्शन'

अण्डेको उधरहीसे फाँडते है जिधर उसका सिरा कुछ बड़ा होता है । परन्तु वर्तमान महाराजके दादाने लडकपनमें अण्डा तोड़नेके समय अपनी उगली धोखेसे काट डाली थी । इस पर उनके पिताने यानी हमारे महाराजके परदादाने हुक्म जारी किया कि सब कोइ अण्डेको छोटे सिरकी तरफसे फाँड़ें । जो ऐसा नहीं करेगा उसको बड़ी कड़ी सजा होगी । वम इस आज्ञाके प्रचार होतेही तमाम राज्यमें विद्रोह फैल गया । प्रजा सब लडनेके लिये तैयार होगई । इतिहाससे जाना गया है कि छः बार अराजकता फैली—राजा प्रजामें घनघोर युद्ध हुआ । एक राजा खेत रहें और दूसरे गद्दोंसे उतारे गये । ब्लेफस्कूके महाराजों विद्रोह-शान्त हाने पर जिन जिनको देशसे निकालनेकी सजा हुई उन्हें अपनी शरणमें लेगये । अण्डा छोटे सिरकी तरफ नहीं फोड़ने के कारण करीब ग्यारह हजार आदमी समय समय पर शूली पर चढ़ाये गये । इन्ही सब विपद्योको लेकर सैकड़ों बड़ी बड़ी पोथियां बनी और छपीं । लेकिन विपत्तियोंकी बनाई पुस्तकें बाजारोंमें बिकने नहीं पाती । उनके छपनेकी भी सख्त मनाही है । विपत्तियोंको नियमके अनुसार अब राज्यमें कोइ नौकरी भी नहीं मिलती है । ब्लेफस्कूके महाराजने धर्मकी दुहाई देकर हमारे महाराजको पुरानो रीति उठानेका दोष लगाया और दूतों द्वारा बारम्बार कहला भेजा कि 'ब्लान्दिकल' नामक धर्मशास्त्रके चौब्वनवे अध्यायमें धर्म प्रचारक 'लष्टोग' ने जो कुछ लिखा है उसको विरुद्ध यह कार्य है ।" परन्तु वास्तवमें यह बात नहीं है । धर्मशास्त्रमें केवल इतनाही लिखा है "सत्यधर्ममें विश्वास करनेवाले जिधरसे सुवीता देखें उधरहीसे अण्डेको तोड़ें ।" इसलिये प्रत्येक मनुष्य अपने सुवीतेके अनुसार अण्डा फोड़ सकता है । सुवीता किधरसे फोड़नेमें है सो यह भी सब आदमी सज्जनमें समझ सकते हैं । और जिसकी समझमें न आवे सो प्रधान मजिस्ट्रेटसे पूछले ।

आदमी यथासे निकाले गये थे वह सब ब्लेफस्कूके महाराज

को शरण है । महाराजने उनकी बहुत खातिरकी है । जो यहाँ रह गये हैं सो भीतरही भीतर उन दुष्टोंसे मिले हैं और गुप्त रीति से उनकी सहायता करते हैं । वस यही तो लडाईका कारण है । छत्तिम चन्द्रसे युद्ध चल रहा है । इन युद्धोंमें हमारे चालीस बड़े बड़े और छोटे न जाने कितने जहाज नष्ट हुए । तीस हजार सेना और सम्पत्ति काम आए । विपत्तियोंकी हमसे अधिक जानि हुई है । अब वह लोग फिर हम लोगों पर आक्रमण करने की तैयारिया कर रहे हैं । बहुतने जङ्गी जहाज एकत्र हो चुके हैं । अब इस समय महाराजकी आशा भरोसा आपहीके ऊपर है । अब आपकी मरजी हो सो कीजिये सुभे महाराजने जो कुछ कहा था सो आपसे कह दिया ।”

मैंने कहा “महाराजसे निवेदन करदीजिये कि मैं विशेषी हूँ इस घराऊ भगड़ेमें सुभे क्या मतलब ? मैं किसीकी भी तरफटारी न करूँगा । मेरे लिये दोनों दलवाले समान हैं । लेकिन हा, अगर महाराज पर कोई आपत्त आवेगी तो मैं जान देनेको मुस्तैद हूँ । जब तक दसमें दस हैं महाराजका एक बाल भी बाका न होने दूँगा । जो जानसे महाराजकी और महाराजके राज्यकी रक्षा करूँगा ।” इतना सुन रेलडूँग्ल प्रसन्न हो चलता बना ।

प्रथम परिच्छेद ।

बुरा लगाव पाया जाय तो उसे प्राण दण्ड दिया जाता है । जहाजी भी आवा जाई एक दस मिनट होजाती है ।

गुप्तवर्तन के आकर कहा कि दुश्मनों के जहाज उस पा-  
बन्दरगाह में पापहुँचे हैं । सुनकर जहाजवाले उस लोग लज़र उठा  
वेले । यह खबर सुनकर मैंने सज्जाराह में अपने मनकी बात कही  
फिर होमिसार सज्जाराह में समुद्र की गहराई की वास्तव पृथ्वी तो मा-  
नुष हुआ कि बीच में तो ज्वार के समय प्रायः एक फुट जल होजाता  
है लेकिन बाकी तमाम चारदी पट जल रहता है । सज्जाराह लोग  
अकपर समुद्र का जल नापा करते रहे इसी लिये यह बात उनसे  
पूछी गई थी । ये सब बातें पूरा ताक कर मैं समुद्र के पूर्वोत्तर  
तट की ओर गया । वहाँ एक छोटी सी पत्थरी के पीछे छिप कर  
दूरबीन लगाई तो देखा दुश्मनों के पचास जहाजों तथा और कई अम-  
बाय हथियारों के जहाज लज़र गिराये रहते हैं । ये सब देख भाल कर  
मैं लौट आया । फिर बड़े बड़े रस्ते तथा लोहे के छड़ मगवाये ।  
रस्ते तो सुतली के समान और छड़ सोजा मिनि की सड़ के बराबर  
थी । मैंने उन रस्दों को मजबूत बनाने के लिये रस्सियाँ बंधाई । फिर  
छड़ों की सोड़ कर बली बना लिया । पचास रस्सियों के एक एक  
बली बांध कर मैंने पूरा समुद्राभिमुख प्रमाण किया । वहाँ पहुँच  
कर कोट जूता और सोजी उतार दिये अपने चमड़ेवाले कोट की  
पहन कर समुद्र में कूद पड़ा । त्वार नाने की आधा घण्टा इकी  
था । बहुत तेजी के साथ मैं जाने लगा । बीच में लग भग तीन  
गज तैरना पड़ा । फिर ऊँच कम था इससे पाँच पाँच गया ।  
आधे घण्टे के भीतर ही मैं जहाजों के पास जा पहुँचा । जहाजवाले  
मुझे देखते ही डरके मारे समुद्र में कूद पड़े । और जल्दी जल्दी  
तेर कर किनारे पर जा पहुँचे । वहाँ तीस जहाजों से कम आठवीं न  
होंगे जब जहाजवाले सब भागगये तो मैंने चूटपट हर एक जहाज के  
पीछे छेड़ने एक एक बली लगादी और सब रस्सियों को इकट्ठा कर  
दे दी । इधर शत्रुगण दना दन मुझ पर आण दृष्टि कर रहे

थे । पर मैं इसजी कुछ भी परवाह न कर अपना काम करता जाता था । जब वह सब सुरुहमें तीर मारने लगे तब मैंने अपना चश्मा जो पाणिटमें था निकाल कर आंखों पर लगा लिया । अगर चश्मा न लगता तो काम भी न कर सकता और आंखें भी फूट जातीं । जब सब काम ठीक हो गया तब मैंने रखोंकी जोरसे खेंचा लेकिन एकभी जहाज अपने ठिकानेसे न हिला । क्योंकि सबके सब मजबूत लड़रोंसे बंधे थे । बस मैंने जीबसे कुरी निकाल कर सब लड़रोंकी काट डाला । फिर क्या था ? एकही झटकेमें सब जहाज चल पड़े बस आगे मैं और पीछे पीछे जहाज थे ।

ब्ले पासजूवाले पहले तो मेरा असल मतलब न समझ सकी केवल आश्चर्यके मारे घबड़ाये गये थे । जब मैं लड़रोंकी काटने लगा तो उन लोगोंने मसझा कि मैं जहाजोंकी केवल तितर बितर करना चाहता हूँ परन्तु जब उन्होंने मुझे रक्षा खेंचते और जहाजोंकी एक पातोमें जाली देखा तबतो उनका माया ठनका । अब वह करही क्या सज्जतेथे ? हताश होकर दुःखसे डारें मार कर रोने लगे ।

और भी घबराये । उन्होंने समझ लिया कि मैं डूब गया और दुश्मन लोग लड़नेके लिये आरम्भ है । पर थोड़ीही देरमें उनका सब चिन्ताये जाती रहीं । ज्यों ज्यों मे आगे उग उठाता था त्यों त्यों समुद्रकी गहराई भी घटती जाती थी । जब मैं बहुत निकट था पहुंचा तब जोरसे कहा “महाराजकी जय ।” अब आनन्दक क्या ठिकाना था ? जब मैं ऊपर आया तो महाराज बड़े आनन्दसाथ मुझसे मिले । मेरी बहुतसी प्रशंसाकी । उम्मी घड़ी मुझ “नर्डन” की उपाधि मिली । यह वहांकी सबसे बड़ी तथा सम्मानसूचक उपाधि है ।

ये सब काम होजाने पर महाराजने मुझसे कहा “दुश्मनोंके वाकी जहाज भी मौका पाकर लेयाना” ओफ । महाराजोंने लोभ का कुछ ठिकाना है ! इतने पर भी दृष्टि नहीं । वेफेस्लूका राज्य अपने अधीन करना विद्रोहियोंका दमन करना—ममस्त प्रजासे छोटे सिरकी ओर आगे फुडवाना और समस्त ससारकी एक छत्र राज्य करनाही महाराजकी हार्दिक इच्छा है । उस इच्छाओंको पूर्ण करनेके लिये महाराज कमर कसे बैठे हैं । अइर्निश इसीकी चिन्ता है । महाराजकी इच्छा फलटनेके लिये मैंने बड़ी बड़ी चेष्टायेकीं । न्यायसे, नीतिसे, युक्तिसे महाराजको बहुत समझाया पर वह न समझे । तब मैंने खुलासा कह किया कि मैं एक स्वाधीन तथा बौर जातिको गुलाम बनानेका कारण नहीं हूंगा । जब राज-सभामें इसकी चर्चा चली तो जितने विज्ञ तथा चतुर पुरुष थे मेरीही बातोंका अनुमोदन करने लगे ।

महाराजके विरुद्ध होतेही मेरे सिर आपातका टोकरा आपड़ा । जो कुछ मैंने कहा वह महाराजकी नीति तथा इच्छाके बिलकुल विपरीत था । खुल्लम खुल्ला महाराजकी बात काट कर मैंने बड़ी भूलकी । महाराज मनमें मुझसे बहुतही रुष्ट हुए । उन्होंने मेरे कसूरको नहीं माफ करनेकी ठानली । लेकिन सभामें इस बातको देखकर कहा कि चतुरोंने तो चुप होकर मेरी तरफदारीकी

पर मेरे गुप्त शत्रुगण अनाप शनाप बकनेसे बाज न आये । नाना प्रकारके पडयत्न रचे गये । जिनका परिणाम दो महीने के पश्चात् प्रकट हुआ । ये सब खबरें मुझे अपने मित्रोंसे मिली थी । सहाराजोकी मित्रताका यही फल है । पहलेकी भलाई तो चूल्हेमें गई । जरामा उचित कहनेहीके लिये अब प्राणों पर आन दनी । अहह ! वास्तवमें संसारकी लीला विचित्र है ।

प्रायः तीन मसाले बाद ब्रेफस्वूके सहाराजने सन्धिके निमित्त दूत भेजे । हमारे सहाराजने भी सन्धि करली लेकिन शते सब अपनेही फायदेकी गच्छी । छः दूत पांचसौ आदमियोंके साथ बड़े ठग्रेसे सन्धि करने आए थे । जैसे भारी राजाके वह सब दूत थे और जैसा भारी काम लेकर वह आये थे ठाट बाठ भी उनके ठैसेही भारी थे । सन्धिके समय जहां तक बना मैंने उन दूतोंकी बहुत सहायताकी । और लोगोंसे मेरी भलाईका हाल सुन कर वह मुझसे भेंट करनेके लिये आये । मेरी बहुतसी बड़ाई करनेके बाद उन्होंने अपने राज्य ब्रेफस्वू में चलनेके वास्ते मुझे न्योता दिया । फिर मेरे अद्भुत कार्योंको देखनेकी अभिलाषा प्रकटकी । मैंने उसी दस उनकी अभिलाषा पूरीकी । अब उनकी पुन वर्णन करने पाठकी बात समय नष्ट नहीं करूंगा ।

ज्ञान भी उसने कह दिया है । इनसे मिलनेकी उसने शत्रुताका लक्षण बताया है । पर जो हो, मैं बेकासूर हूँ—मेरा दिल माफ़ है । यहाँके दरबार और मन्त्रियोंकी कार्रवाईयोसे अब मैं भी कुछ कुछ परिचित होचला ।

यह पर यह कह देना उचितही है कि ब्लैफ़स्कू के दूत जो कुछ बोलते थे उसका अर्थ एक दुभाषी सुनते नम्रता जाता था । इन दोनों राज्योंकी भाषाएँ भिन्न भिन्न हैं । दोनोंही अपनी अपनी भाषाको प्राचीन, सुन्दर और गति पूर्ण बताते और दोनोंही एक दूसरेकी भाषाको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं । जहाजीकी छीन लेनेके कारण अभी हमारे महाराजका पला भारी था अतएव उन्होंने दूतोंको लिलीपटकीही भाषामें सन्धि पत्र लिखने तथा वक्तृता देनेके लिये लाचार किया था । बहुतसे लोग दोनों बोलियाँ मजेमें बोलते थे । दोनों राज्योंमें वाणिज्य व्यापार होता था । इससे व्यापारियोंकी आवा जाई जारी थी । वहाँके भगोड़े यहाँ और यहाँके वहाँ आश्रय पातेथे । बड़े बड़े आदमियोंके लडके रीति, नीति, तजरवेकारी, दुनियादारी आदि सीखनेके लिये आया जाया करते थे । वस इसी घनिष्टताके कारण समुद्र तट निवासी नामी आदमियोंमें ऐसे बहुत कम लोग थे जो दोनों बोलियोंमें बात चीत न कर सकते हों । जब मैं बैरियोंकी चालवाजीसे दुःखी होकर ब्लैफ़स्कू गया तब सुझा यह मालूम हुआ था । वहाँ जाना भी भरे लिये अच्छाही हुआ इसका हाल आगे चल कर कहूँगा ।

पाठकीको याद होगा जिन जिन शर्तों पर सुभे स्वाधीनता मिली थी उनमेंसे दो तीन अत्यन्त निन्दनीय और कुस्मित थीं । इच्छा न रहने पर भी प्यारी स्वतन्त्रताकी लोभसे उन्हें मैंने अङ्गीकार करलिया था । किन्तु अब मैं 'नर्डक' हूँ—एक उपाधिधारी माननीय व्यक्ति हूँ । उन सब निन्दनीय शर्तोंको पूरा करनेसे मेरी मानहानि होती—महाराजकी दो हुई उपाधिकी मानहानि होती । इन्हीं सब बातोंको सोच विचार कर शायद



सहाराजने एक दिन भी उन नीच कर्मोंकी करनेके लिये सुझावे नहीं कहा, अमु । कुछ दिनके बादही मैंने सहाराजका एक और बड़ा भारी उपकार किया । और कोई चाहे इसे कुछ कहे पर मैं तो उपकारही कहूंगा ।

एक दिन आधीरातके समय जब मैं खराटे लिरहा था अचानक शोर गुल सुन कर चौक पड़ा । आंखें खोली तो देखा दरवाजे पर मेकडों आदमी हमा कर रहे हैं । इस गुल गपाडेकी सुन कर मैं डर गया । वह लोग “वरग्लम” की रट लगाये थे । इतनेमें कई राजकर्मचारी भीड़को चीरते हुए मेरे पास आए और बोले “आप जल्द चले—राजसदलमें आग लगी है । सहारानीकी एक सखी उपन्यास पढ़ते पढ़ते सोगई और दिव्यकी बलता हुआ छोड़ दिया था । दम उठी दिव्यने आग लग गई है । यह उसकी गफलत है जो उसने दिया नहीं दुकाया । आप अब जल्द चले नहीं तो सब तबाह होजायगा ।” मैं सुनतेही उठ खड़ा हुआ ।

मेहनतके सारे शराब प्रपना रह टिग्वाने लगी । वस मैंने पेशाश की धार बांध दी । फिर क्या था ? तीनही मिनटमें सारी आग बुझ गई । ईश्वरकी अनुकम्पासे वह सुन्दर राजमहल जो न जाने कितने दिनोंसे बना हीगा । जलनेसे बच गया ।

भीर हो चुका था । महाराजसे बिना मिलेही मैं अपने डेरे पर वापस आया । इतनी बड़ी गेबरवाही करने पर भी तबीयत झटकेमें थी । न जाने मेरे लिये क्या हुआ जो । आर्द्रनभ है कि जो कोई राजमहलके अहातेके अन्दर पेगाय करेगा उसे चाहे वह कोई क्यों न हो फासी दी जायगी । देखें महाराज मेरे साथ कैसे पेश आते हैं । महाराजने मेरे पास एक चिठी भेजी पढ़ कर कुछ खुशी हुई । उसमें लिखा था “तुम्हारा अपराध क्षमा करनेके लिये मैं प्रधान विचारकसे कह दूंगा ।” परन्तु भोडे भाग्यके कारण आज तक अपराध क्षमा नहीं हुआ । मुझे यह भी टोह लगी कि महारानीको मेरी इस कार्रवाईसे बहुत घृणा होगई है । वह अपना डेरा उखाड़ा उठा कर दूसरे मकानमें चली गई है । जिस मकानमें आग लगी थी उसकी अगर सरज्जत भी हो तो भी वह उसमें अब नहीं रहेगी । उन्होंने यह प्रतिज्ञा भी करली है कि जिसने इस घरको अपवित्र किया है उसे वह अवश्य मजा चखावेगी ।

नवम परिच्छेद ।



यद्यपि मैं चाहता हूँ कि इस देशका सुविस्तर वर्णन किसी दूसरी पोथीके लिये उठा रखूँ तथापि अपने मन चले पाठकोंके मनोरञ्जनार्थ यहाँ पर कुछ साधारण बातें लिखता हूँ । यहाँके निवासी छः इञ्चसे कुछही कम ऊँचे होते हैं । वस इसी हिसाबसे अग्न्याण्य जीवजन्तु और पेड़ पत्तोंकी उचाई समझ लीजिये । अगर न समझ सकते हो तो ये नमूने हाजिर हैं—बड़े बड़े घोड़े और साढ़ोंकी ऊँचाई पाँच इञ्चकी भीतर है । भेड़ डेढ़ इञ्चसे कुछ कम या ज्यादा ऊँची होती है । राजहंस गौरैयाके बराबर होता है और छोटे छोटे झोड़े मकोड़े तो मेरे दृष्टिगोचरही नहीं होते थे । पर लिलीपटी तो

मजेमें देख सकते हैं। ईश्वरकी लीला गपसरगार है। ये लोग निवाटकी छोटीसे छोटी चीजको भी मजेमें देख सकते हैं पर दूरकी नहीं। एकवार मैंने अपनी आखीसे एक रसोइये को लवा पक्षीकी क्वाल खेंचते देखा है। यह सखीके बराबर था। एक बालिकाको सुईमें रेशमका डोरा पिरोते देखा है। परन्तु मेरे लिये ये सुई डोरे दोनोही अदृश्य थे। सबसे ऊचे पेड़ सात फुटके होते हैं। सरकारी बागसे ऊचेसे ऊचे हज्जीकी फुनगियां मैं योही छू लेता था। बाकी शाकपात भी इन्ही परिमाणके थे। उनकी ऊचाई आदिका अनुमान पाठका खय करते।

बहुत गूडे शब्दोंमें मैं इनके लिखने पढ़ने की बात अभी कहूंगा। वहा बहुत दिनोंसे विद्याकी अच्छी चर्चा है। लेकिन इन लोगोंके लिखनेका ढग निरालाही है। ये बाई ओरसे नहीं लिखते, न मुसलमानोंकी तरह दाई ओरसे लिखते और न चीना लोगोंकी तरह ऊपरसे नीचेकी तरफ लिखते हैं। ये लिखते हैं तिरछा-दिलायती दीवियोंकी तरह कागजको एक कोनेसे दूसरे कोने तक।

मुकद्दसा की खबर देनेवाली अर्थात् सेटियोंके बारेमें है । मुकद्दसे विरुद्ध जितने अपराध हैं उनको बड़ी कड़ी सजा है । लेकिन अगर अपराधी विचारालयमें उपस्थित होकर अपनेको निर्दोष सिद्ध कर दे तो सेटियों की जान बड़े बुरे तौरसे ली जाती है । सिर्फ यही नहीं उसका सब मालमता और जमीन जायदाद बेच कर अपराधी को उसके खर्चका चौगुना रुपया उसके कष्ट और परिश्रमके बदले दिया जाता है । अगर कमी हुई तो सरकारी खजानेसे बह पुरी कर दी जाती है । महाराज उसको बेकसरीका ढिंडोरा मारे शहरमें पिटाते हैं और उसका बहुत आदर सम्मान करते हैं ।

यहां चोरीकी अपेक्षा जुआचोरी भारी कसूर समझा जाता है । इसी लिये जुआचोरीकी फांसी देनेमें यहायाले कभी नहीं चूकते । इनका कथन है कि जरा सावधान होनेहीसे चोरोसे उबार ही सकता है किन्तु जुआचोरोसे सच्चीकी रक्षा नहीं । उधार और लेने देने बिना दुकानदारी चल नहीं सकती लेकिन जहा जुआचोरी जारी है और जहा जुआचोरीकी सजा कानूनमें नहीं है वहा बेचारे सच्चे दुकानदारोहीका दिवाला निकलता है और जुआचोर, ठग मजमें रूँझे डूबते हैं । मुझे याद है, एक दिन जब मैंने महाराजसे एक अपराधी, जिसने अपने मालिक का बहुत साधन गवन किया था शिफारिश करके कहा कि यह तो केवल विश्वासघात है ; इस साधारण अपराधके लिये फांसी देना ठीक नहीं । इसपर महाराज बोले “आश्चर्य है । ऐसे बड़े घृणित अपराधको आप साधारण बताते हैं ।” महाराजकी इस बातका जवाब मुझे कुछ न सूझा । केवल इतना कहके मैं चुप होगया कि ऐसा चाल और कुला व्यवहार । पर सचमुच उस दिन मैं महाराजके सामने बहुतही लज्जित हुआ ।

यद्यपि हम लोग बराबर कहा करते हैं कि इनाम और सजा यही दो चूल हैं जिनपर राजशासनके क्वाड घूमते हैं । इस कहावतको पूरा कर दिखाने वाले लिलीपटके सिवा

दूसरा राज्य इस संसारमें नहीं है । यहाँ जो कोई तिहत्तर चन्द्र तन्त्र कानूनके अनुसार चلتता है सो पूरा सबूत देने पर हैसियतके मुताबिक सरकारसे इनाम पाता है । इस कामके लिये अलग एक फाण्ड खुला हुआ है इसके सिवाय उसे “राज्यव्यवस्थानुसारी” की पदवी मिलती है जिसे वह अपने नामके साथ जोड़ लेता है पर यह पीढ़ी दर पीढ़ी नहीं चलती । जब मैंने कहा कि हमारे देशमें केवल सजाहीका कानून है इनामका नहीं तो वे सब हसने लगे और बोले कि आप लोगोंका कानून भद्दा है । लिलीपटके न्यायालयोंमें न्यायदौ एक एक मूर्ति स्थापित है जिसके ऊः नेत्र—दो आगे दो पीछे और दो दोनों बगलमें—और दो हाथ हैं—दहिने हाथमें अशर्फियोंका खुला हुआ तोड़ा और बायेंमें स्याम सहित तलवार । तात्पर्य यह कि न्याय सावधान है, सब ओर देखता है और वह दण्ड देनेकी अपेक्षा पारितोषिक देना श्रेय मकभता है ।

निपुणतासे बढ़ कर यहाँ सदाचरणका आदर है । इसीलिये राजकीय पद निर्वाचनके समय लोगोंका ध्यान निपुणताकी अपेक्षा सदाचारकी ओर अधिक रहता है । मनुष्य मात्रको राजाकी नितान्त आवश्यकता है । यहाँ वालोंका विश्वास है कि प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ काम करनेकी योग्यता रखता है ।

मैं राजकाज नहीं सौंपना चाहिये । ऐसा करनेसे महा अनर्थ होगा । सदाचारी पुरुष अज्ञानतासे अगर कोई चूक कर भी बैठे तो उससे सर्वसाधारणकी उतनी हानि नहीं होगी जितनी कि उस ऊँची बुद्धिवालेसे, जो जान बूझ कर पाप करता है और जो पाप करनेकी, पाप बढ़ानेकी और अपने पापोंको छिपानेकी अच्छी तरकीब जानता है ।

इसी प्रकारसे जो नास्तिक है यानी जो ईश्वरको नहीं मानता वह भी राजकीय पद पानेके योग्य नहीं है । क्योंकि राजा परमेश्वरका प्रतिनिधि स्वरूप है और राजकर्मचारो राजाके प्रतिनिधि है । यहा वालीका कथन है कि जो अपने स्वामीहीको नहीं मानता उसे राजकर्मचारी बनाना महाभूलही नहीं वरन् बल सूखता है ।

जो कुछ मैं कह चुका था अब जो कुछ कहूँगा सो सब पुराने जमानेकी बातें हैं । आजकलकी लज्जाजनक बातें मैं न कहूँगा । अधःपतित होना मनुष्य मात्रका स्वभाव है । लिलीपटवाले भी इसी स्वभावके फेरमें पड कर अपनी पुरानी चालढाल छोड बैठे हैं । रस्सों पर नाच कर भारी भारी थोहदे पाना—छडियों पर कूद कर विख्यात होना इत्यादि क्या अधःपतनका नमूना नहीं ? इन बुरो बातोंकी नींव डालनेवाले हमारे महाराजके दादाही थे । अब ईर्ष्या, द्वेष, विरोध और धडाबन्दीके प्रतापसे इन सब बुराइयोंकी पूरी उन्नति होचली है ।

कृतघ्नताको यहा लोग बडा भारी अपराध समझते हैं । वह कहते हैं कि जो अपने भलाई करनेवालेकी बुराई करता है वह सब संसारका बैरी है क्योंकि जब वह भलाई करनेवालेके साथ बुराई करता है तब जिसने उसके साथ कुछ भी नकी नहीं कीहै उसके साथ बुराई करनेसे वह दुष्ट काव बाज आने लगा । ? इस कृतघ्नोंका जीवित रहना ठीक नहीं । चट पट उनकी इति चाहिये ।

यहाँ माता पिता और पुत्रका परस्पर व्यवहार हम लोगोंके व्यवहारसे बिलकुल बिलक्षण है। स्त्री पुरुषोंका परस्पर मिलन स्वाभाविक है। लिलीपट लोगोंका मत है कि और और जानवरी की तरह नर नारी भी कामाग्नि बुतानेके लिये सम्भोग करती है। इसी सम्भोगका नतीजा है सन्तान। सन्तानके प्रति माता पिता का स्नेह भी स्वाभाविक है। पिताने जन्म दिया है और माताने गर्भमें धारण किया है वस इतनेहीके लिये पुत्र सदा उनकी सेवकाई नहीं कर सकता और न जन्म भर उनके उपकारसे दबा रहेगा। इसी प्रकारकी युक्तियाँ दिखलाते हुए लिलीपटके लोग कहते हैं कि बालक बालिकाओंकी गिजा माता पिताके भरोसे न छोड़ना चाहिये। वसी हेतु हर एक शहरमें एक ऐसी जगह बनी है जहाँ लड़के लड़कियाँ पाली पोसी और सिखाई पढ़ाई जाती हैं। वस योही दिन दरीद्र और मजूरीके सिवा मव किसीको अपने छोटे छोटे बच्चे रखने पड़ते हैं। यहाँ ऐसे स्कूल कई प्रकारके हैं जिनमें भाति भातिकी विद्यायें पढ़ाई जाती हैं। लड़के और लड़कियोंके लिये अलग अलग स्कूल हैं। स्कूलोंमें ऐसे ऐसे मास्टर हैं जो नउके और लड़कियोंको उनके माता पिताकी अवस्थाने उपयुक्त बना देंगे। तथा उनकी योग्यता और रुचिके अनुसार उन्हें पढ़ा भी देंगे।

ही कापड़े पहनाते हैं लेकिन इसके बाद उन्हें ( चाहे वह किसीके लडके हों ) अपने हाथोंसे कापड़े पहनने पड़ते हैं । सेवा टहलका काम बूढ़ी बूढ़ी दासियां करती हैं । लडके नौकरीके माथ यात करने नहीं पाते पर खेलकी जगह जा सकते हैं । एक अध्यापक वा सहकारी अध्यापक माथमें जरूर रहते हैं । इसी लिये लडके उन कुसंस्कारों और बुरे व्यमनोंसे माफ़ बच जाते हैं जिनमें हमारे देशके लडके प्रायः लित रहते हैं । मा बाप सालमें दोही बार उन्हें देखने पातेहैं सो भी एक घण्टेसे ज्यादा ठहर नहीं सकते । आनेके समय वह लडकोंको चूम सकते हैं परन्तु उनसे काना फूँसी नहीं कर सकते, न कुछ प्यारकी बातें कह सकते और न खिलीना और मिठाई वगैरह दे सकते हैं । इन सबकी निगरानीके लिये एक माष्टर वहाँ बराबर खड़ा रहता है । अगर किसीने स्कूलकी फीस देनेमें गड़बड़ीकी तो सरकारी कर्मचारी तुरत उसे बखल कर लेते हैं ।

मासूखी गृहस्थ, कोठीवाल, सौदागर और कारीगरोंके बालकों के लिये अलग स्कूल है । उनमें भी इसी ढङ्गसे शिक्षा दी जाती है और प्रबन्ध भी सब ऐसेही है तथापि कुछ अन्तर है । यह अन्तर केवल दरजेके ख्यालसे है । जो व्यापार सीखनेके वास्ते कहीं उम्मी दवार हुआ चाहते हैं सो ग्यारह बरसके होने पर कुट्टी पाते हैं लेकिन जो नहीं चाहते उन्हें पन्द्रहवें बरस तक रहना पड़ता है ।

कन्या पाठशालाओंके भी यही सब नियम हैं । लडके वैसे पढ़ते हैं बड़े आदमियोंकी लडकियां भी वैसेही पढ़ती हैं । भेद केवल इतनाही है कि इन्हें दासियां माष्टरके सामने कंधे पहराती हैं । पाच वर्षके पश्चात् वह आपही पहन लेती हैं । अगर किसी दासी का किसी कन्याके सामने किसी तरहकी भयानक कहानिया, भूतोंके किस्से या झूठी गप्पें कहना साबित होजाय तो चाबुका मार कर वह शहरमें तीन बार घुसाई जाती है । इसके बाद वह एक रौंग कौदकी जाती है । फिर आजन्मके लिये नगरसे बाहर

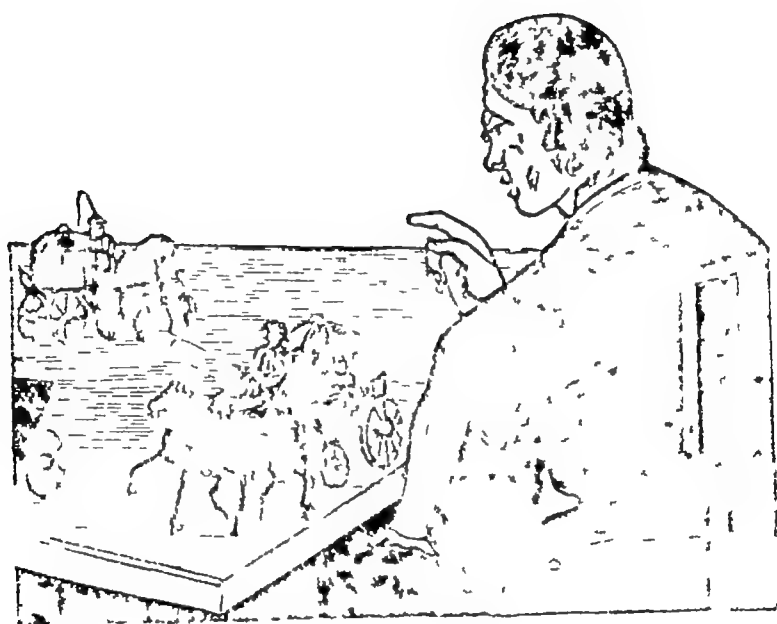


बीमारोंको अनाथालयमें खानेके गिये मिलता है । भीन मांगने का रोजगार यहां कोई जानताही नहीं है ।

दशम परिच्छेद ।

अब कुछ मेरा हाल सुनिये । जिल्लीपटनमें मैं कुल नौ महीने तेरह दिन रहा था । सरकारी जंगलमें लकड़ी लाकर मैंने अपने आरामके लिये एक मेज और एक कुर्मी बनाना थी । ऐसा मत समझिये कि मैं यह सब काम भी गूढ़ जानता हूं । दो सौ दर्जियोने मिल कर मेरे लिये कमीज और बिछोने सिवे थे । यहा तीन इंच चौड़े और तीस फुट लम्बे कपडे होते हैं । मोटेसे मोटे कपडे मेरे वास्ते भगवाये गये । उनकी कई तरह करनेसे मेरा काम चला । दर्जी जब मेरा बटन नापता तब मैं लेट जाता । एक दर्जी तो गर्दनके पास और एक घुटनेके पास खड़े होते । दोनोंके हाथमें रस्सीका एक एक सिरा रहता था । तीसरा एक इंच लम्बे और चार से उस रस्सीको नापता । फिर दाहिना अंगूठा ऊपर उठे । बस इतनेहीसे सब अङ्गोंकी नाप होजाती है । जरा हिंसाव सुनिये—अंगूठेका घेरा नाप कर दूबा डेरनेसे कलाईका घेरा निकलता है । फिर इसी तरह कमर और गर्दनका भी जानिये । मैंने अपनी कमीज दिखलाई तो उन्होंने ठीक वैसीही एक बना दी । तीनसौ दर्जियोने मेरी पोशाक तैयारकी थी । इनके नापने का ढङ्ग न्यारा था । मैं घुटनोंके बल बैठ गया । उन्होंने गर्दन तक सीढ़ी लगाई । फिर उस पर चढके एकने मेरे पेटसे जमीन तक साहुलकी तरह एक डोरी गिराई । यही छुई मेरे कौटकी लखाई । मैंने कमर और बाह बापही नाप दिखाई । जब सब कपडे तैयार होगये तो वह जोड पर जोड लगानेसे डगुदडीकी तरह सालूम पडते थे । यह सब मेरेही डेरे पर बनेथे क्योंकि वहा इतनी बड़ी ठौर और कहीं न थी जहा वह सब समाते ।

मेरी रसोई बनानेके लिये तीनसौ बावरचीघे मेरे डेरेके पासही





कोई आवे तो कह देना कि आज जो पचना नहीं है—भीतर सीते हैं फिर अपने कसरेकी किगाड़ी मून्ड कुर्मी पा पावेठा पास पालकीको दस्तूरजे सुताविक सेज पर रख दिया । मनाम बन्दर्ग होनेके बाद उसने यों कहना शुरू किया “तुम्हें जान लेना चाहिये कि इधर कई कसौटिया तुम्हारे चारोंमें बड़े गुप्त तौरसे छुई हैं । आखिर आज दो दिन हुए महाराजने भी अपनी राय दे दी है तुम्हें यह सानूमन्ही है कि जवसे तुम यना पाये वनगुनाम तुम्हारा जानी दुश्मन बन बैठा है । उस दुश्मनीका असल सबब तो मैं कुछ नहीं जानता पर हा, जवसे तुम शत्रुओंके जहाजोंको छीन लाये हैं तबसे वह तुमसे और भी कुदने लगा है । तुम्हारे इस कामसे उसने बहुत नीचा देखा है । खजानची भी अपनी स्त्रीके कारण तुम्हारे परम शत्रु बन गया है । इन दोनोंने मिल करके तुम्हारे ऊपर राज विद्रोह आदि बड़े बड़े दोष लगाये हैं । इसमें और भी कई आदर्भ शामिल हैं । सब दोषोंकी सूची भी बनकर तैयार होगई है ।”

इस भूमिकाको सुनतेही मेरे होश उड़ गये । मैं कुछ कहने के लिये मुंह खोलनाही चाहता था कि वह फिर कहने लगा “जरा चुप रहो—पहले मेरी बात पूरी होने दो । मैं तुम्हारा बड़ा छतक हूँ । तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है । इसीसे अपनी जान जोखीमें डाल कर सब बातोंका पता लगाता हुआ तुम्हारे पास आया हूँ । उस सूचीकी नकल भी लाया हूँ । मैं तुम्हारे लिये अपनी जान भी देनेको तैयार हूँ ।” इतना कहके उसने उसे पट कर सुनाया । उसमें यह लिखा हुआ था ।

नर पर्वतकी दोषावली ।

दोष नं० १

महाराज कलीन डेफ्फर मूलके समयमें कानून पास हुआ है कि जो कोई राजमहलके अहातेके अन्दर पेशाव करेगा सो विद्रोहियोंकी भांति कड़ी सजा पावेगा । नरपर्वतने इस कानूनके वरखिलाफ आग बझानेके बहानेसे महारानीकी महलमें जान बूझ कर पेशाव किया है ।

दोष न० २

नर पर्वतके वृषस्कू से जहाँ ब्रह्मा जीन ताने पर महाराजने बाकी ब्रह्माजीको ताने, उस राज्यको अपने राज्यमें मिलाने और विद्रोहियोंको नेस्तनाबूद करनेके लिये कहा तो नर पर्वतने विद्रोहियोंकी तरफ महाराजकी आज्ञा समझन दारके कहा कि स्वाधीन और निर्दोष यत्थुर्थीकी स्वाधीनता तथा प्राप्त नष्ट नहीं करूंगा ये सब उनकी चालवाजिया हैं ।

दोष न० ३

वृषस्कू राज्यमें दृढगण मन्त्रिके लिये आये तो नर पर्वत दिव्यमयात करके उनसे मिला और उनका आदर सत्कार दिया । यद्यपि इसको मालूम था कि वृषस्कूके महाराज कुछ दिन हुए हमारे प्रगट पदु पे और उनसे युद्ध भी ठन चुका है तथापि यह उन्हींकी तरफदारी करता था ।

विप्रेने तीर सारे या तुम्हारे नीकनीमे तुम्हारे कप-योग विप्रेने पर कोई बहरीरा रस छिड़कवा दिया जाय किन्तु तुम महारानी ज्वालासे अपने माखीको भापनी काटी और तबप तबप कर सर साधो । उन लोगोंने इन बातों पर बहुत जोर दिया जा । सब तुम्हारे विरुद्ध थे । पान्तु सन्ताराज तुम्हारी जान गया नहीं चाहते हैं । शेषसे सिक्कतर साहब बुनाए गये ।

रेलवे मन्त्र हकीकतमें तुम्हारे पक्षे दोस्त हैं । जब सन्ताराजने उनकी राय पूछी तो उन्होंने कहा “वेगद नर पर्वतकी कच्छ बड़े भारी हैं । तोभी अभी दया करनेकी गुंजाइश है । दयालु होगा महाराजकी प्रदान गुण है और महाराजके इस गुणका सर्वत्र नाम भी है । नर पर्वतसे मुझे मित्रता है इस वास्ते चाहें मुझे कोई पक्षपाती कहते परन्तु जब श्रीमान्ने पूछा तो मैं भी टिल खोल कर वाजिदगी कहूंगा । नगर श्रीमान् नर पर्वतकी उपकारों की तरफ ब्याल करके—अपनी दयालुताकी जोर ढेर करते उसकी जान छोड़ें तो अच्छा है । इसके बदले उनकी माखें दोनों निकलवा लेना चाहिये । ऐसा करनेसे न्याय भी होगा और खारे सभार में आपकी दयालुताका नाम भी होजायगा और श्रीमान्ने सन्धिकों का यश सर्वत्र फैल जायगा । जांख निकलवानेसे नर पर्वतकी ताकत ओझी लो दनी रहेगी । समय पड़ने पर वह भी श्रीमान् की सेवा भी कर सकेगा । अथा होनेसे आदमी निराश और साहसी होजाता है क्योंकि वह कुछ देखता नहीं है । और वास्तवमें आख एक बड़ी भारी वस्तु है । बूफस्वसे जहाज लानेके समय आखों ने उसे बहुत बाधा दी थी । सन्धिकोंकी आखोंहीसे वह देखेगा, बड़े बड़े राजा महाराज भी ऐसाही करते हैं ।

“रेलवेसबके इस प्रस्तावकी सारी सभाने नापन्द किया । बल-गुलाम चुप न रह सका । वह लाख पीछा होकर बोल उठा “आश्चर्य है कि सिक्कतर साहब राजविद्रोही और विद्रोहवादी “णारिश करते हैं । उपकार । यह उपकारही तो उसकी अण-

सुरतक घटानेकी बात तो लिपाई गई लेकिन जन्मा कानिका हुआ वही पर रह गया है । वनगुनामने तुम्हारी जान लेनेके लिये बहुत मिन लड़ाया । सहायनीका भी हमसे मारा गया । जबसे तुमने पेशाबसे जाग बुझाई है तभी वन तुम्हारे बहुत नागज है ।

परन्तु मिजत्तर साहब हुआ लेकर तुम्हारे पान आवेगे और नव कागज पत्र पढ़ कर तुम्हें बुनावेगे । सहायनीकी दयावा वर्णन करके चन्दास भागा सुना देंगे । तुम्हें बैठकर जमीनमें लेटना पड़ेगा तुम्हारी माँकी पुतलियोंमें बहुत बुनीले तीर छोड़े जायेंगे । इसकी देख भाजके लिये वीन गरकारी डाक्टर सुखेद रहेंगे ।

“सुम्हें जो कुछ कहना था सो कह दिया । अब तुम जो उचित समझो सो करो । देरी करनेसे शायद सुभ पर लोग शक करें इस लिये अब मैं जाता हूँ ।”

इतना कह वह चल्ता हुआ और मैं दुःख और चिन्ताके चक्र में पकड़ कर अपनी सुध बुध खो बैठा ।

वर्तमान महाराज और इनके मन्त्रियोंने एक नई रीति चलाई थी कि जब विचारक महाराजका क्रोध शान्त करने प्रयत्न किसी मुँह लगेकी वेषांगि बुझानेके लिये प्रायः दरवाजी व्यवस्था कर देता है तो महाराज भरी सभामें खय अपनी विश्वविदित दयालुता और उदारता पर एक व्याख्यान देते हैं । राज्य भरमें यह व्याख्यान छापकर बांट दिया जाता है । प्रजाको इतना और कोई चीज नहीं दहलाती है जितना महाराजकी जपाका जीर्तन । क्योंकि अक्सर देखा गया है कि जितनी ज्यादा बढाई की जाती है सजा भी उतनीही निष्ठुरता और कड़ाईसे भरी होती है । तिस पर तुरा यह कि अपराधी विलङ्घल निर्दोषही रहता है । लेकिन मैं जो कभी किसी राजदरबारमें रहा नहीं, अपने को पहचान नहीं कर सकता विशेष कर महाराजकी इस रीति तो दयालुता और उदारताका लेशमात्र सुम्हें दिखाई





एक रानी बाध दी । रानी गण्डे गण्डे अन खोल खोल कर उस पर रख दिने । फिर जहाजकी खेचता चला करी तैरते तैर करती चली—वे फस्टूने बरसने जा पड़ जा । उस बहुत दिनों ने लोग मेरी पाठ देख रहे थे । उन लोगोंने दो पादमी दिये जो राजधानीको तम्ब लेवने । यज्ञकी राजधानीका भी नाम वे फस्टूनी है । रानी उन दोनों पादमियोंको हाथमें उठा लिया था । उस राजधानी दो सौ गज दूर रानी मेंसे उन दोनोंको जमीन पर रखदिया और कहा जानो मेरे गमकी खबर महाराजके सिपायों को दो । एक छप्पेहीमें मुझे समाचार मिला कि महाराज सपरिवार दल बल ससेत आगमनीके लिये आते हैं । मैं सौ गज और बढ गया । मुझे देखतेही वह लोग सब अपनी अपनी सवारियों परसे उतर पड़े । वह सब मुझे देख कर भी अचभेने न आये । मैं महाराज और महारानीके हाथोंको चूमनेके लिये धरतीमें लेट गया । फिर मैंने महाराजसे निवेदन किया “मैं अपनी प्रतिज्ञानुसार श्रीमान्के दर्शनार्थ आया हूँ । अब जो कुछ मेरे योग्य सेवा हो सो आज्ञा कीजिये ।” मैंने अपने अपमानकी कुछ बातें नहीं कहीं क्योंकि खुलमुखता खबर इसकी मुझे न थी । अब मैं उनके राज्यसे निकल आया हूँ अब चाहे वह इसकी चर्चा न करे । लेकिन ऐसा नहीं हुआ ।

मेरी खातिर कौसी हुई या रक्तनेके लिये घर कौसा जिला आदि का पूरा वर्णन कर पाठकोंको दिक करना नहीं चाहता । मत लग यह कि जैसी चाहिये वैसी सब बातें हुई । बिछीना लिखीपट से अपने साथ लाया था उसकी बिछा कर सो रहता था ।

छादश परिच्छेद ।

तीन दिनके बाद मैं योहीं टहलता हुआ सागरके पूर्वोत्तर तट की ओर जा निकला तो देखा कि समुद्रमें कुछ दूर पर नावकी एक चीज धौंधी पड़ी है । मैं जूते और मोनी उतार कर

सरसमत करवाते और मुझे स्वदेश जानेकी अनुमति दे ।” महाराज ने सोच विचार कर मेरी प्रार्थना स्वीकार की ।

काई दिन बीत गये लेकिन लिनीपटसे कुछ खबर नहीं आई । मुझे बहुत आश्चर्य हुआ । पीछे गुप्त रीतिसे खबर मिली कि लिनीपटेश्वरको मुझ पर या मेरी कार्रवाई पर कुछ भी शक नहीं हुआ क्योंकि वह जानते थे कि उन्हीने गाजा लेकर मैं यहाँ आया हूँ और सभाकी विलकुल बातें अभी प्रकाशित नहीं हुई हैं । उन्होंने समझा कि मैं केवल सैरके लिये ब्रेफस्कू आया हूँ योडेही दिनोंमें लौट जाऊंगा । लेकिन जब मेरे नीटनेमें टेर चूई तो उन लोगोंका माथा ठनका । निदान खजानची और सन्निधीकी रायसे एक होशियार आदमी मेरे अभियोगपत्रकी नकल तथा ब्रेफस्कू नरेशके नामसे चिट्ठी लेकर आया । चिट्ठीमें लिनीपटेश्वरकी दयालुताकी प्रशंसा करनेके बाद लिखा था “नरपर्वत नामका एक आदमी यहाँसे भाग कर आपकी शरणमें गया है । इसके ऊपर बड़े बड़े दोष लगाये गये हैं । वह दण्ड पानेके डरसे भाग गया है । इसमें अपराध तो भारी है तथापि दया करके केवला नाखे निकलवा लें की व्यवस्थाकी गई है । आप उसकी मुर्क बाध कर जल्द यहाँ भेज दीजिये । अगर दो घण्टेके अन्दर वह साजिर नहीं होगा तो इसकी ‘नर्डका’ की उपाधि कौन लीजायगी और वह राजदिद्रोही समझा जायगा । अगर आप भी सन्धि और खिन्नता रखना चाहते हैं तो जल्द उसे हाथ पैर बाध कर भेज दीजिये ।”

ब्रेफस्कू नरेशने तीन दिनोंके बाद सोच विचार कर बहुतसे उजर दिखलाते हुए यों जवाब लिखा “वद्यपि नरपर्वत में जहाजीको लेगया है तथापि इसको हम भेज नहीं सकते हैं । सन्धि के समय उसने हमारा बहुत कुछ उपकार किया है । और अब भेजनेकी दरकार भी नहीं है क्योंकि अब वह यहाँसे अपने देशकी जानेवाला है । समुद्रमें एक बड़ीसी नाव मिल गई है । उसकी भत होरही है । मरभत होतेही वह यहाँसे जल्द चला जायगा ।

याशा है कि चन्द हफ्तेमें यह दोनों राज्य इस असह्य भारसे मुक्त होजायने ।'

इन उत्तरको लेकर दूतराम लिलीपट गये । ब्लेफस्कू नरेशने यह सब दाति कहनेकी बात सुझसे कहा "अगर तुम यहा रहो तो तुम्हे से सब सकता ह ।' लेकिन मैं अब राजा सहाराजीका विनाग नो करने नगा ? मैंने सहाराजकी कृपाका धन्यवाद करके कहा "जब पन्नात्मान मेरे लिये एक नौका भेज ही दी है तो अब क्या करके क्या करना है ? भाग्यके भरोसे नौका समुद्रमें छोड दूंगा परसात्मा बेडा पार लगा देगा । यहां रहके आप दो बडे बडे सहाराजीमें बैर करादेना मुझे प्रमन्द नहीं है । अब कृपा करके मुझे जानिकी आज्ञा होजाय ।" सहाराजने भी प्रमन्न होकर आज्ञा देदी ।

बहुतसी बातोंको सोच विचार कर मैंने भी जल्द प्रस्थान करना विचारा । पाचमी कारीगर पाल बनानेमें लगे । सबसे मोटे कपडेकी तरह तह करके दो पाल बने । मैंने अपने हाथोंने रस्स तय्यार किये । एक भारी पत्थर टूट कर लज़र बनाया । कई बडे बडे पैंड शाट कर डाड और पतवार बनाये । सहाराजके बट-इयोसे इन कामोंमें बहुत कुछ मदद मिली ।

स तो सादर एत दर्जन जगदी निजानियोंकी भी धर लेता पर  
 बात क्या ? सहाराजने कम दिया था कि अगर कोई जाना चाह  
 नोगी किसीकी नज़र मत लेजाना । प्रजा लिये चलनेके समय मेरी  
 जेबोंकी तलाशी भी हुई थी ।

उसी तरह सब सामान लेम होकर १७०१ ईस्वीकी २४ वी  
 सितम्बरके छः बजे सवेरे मैंने नौफ्रस्कू बन्दरमें कूच किया । हवा  
 दक्कितन पूरब कीनसे बन्ती थी । से सीधा उत्तर मुँह चला ।  
 काफीन बारन सीत जानेते बाद शामते छः बजे गये । पश्चिमोत्तर  
 कोनकी तरफ डेढ़ मीलके फाससे पर एक टापू नजर आया । मैंने  
 किशतीकी उधरही घुमाया । वहा पहुच कर मेने टापूके उस हिस्से  
 में जिधर हवाका जोर कम था अपनी किशतीका लज़र गिराया ।  
 टापू आवाद नही था । कुछ खा पीकर आराम किया । खू  
 सोया । उठनेके दो घण्टे बाद सवेरा हुआ । रात साफ़ और  
 स्वच्छ थी । उठ कर कलेवा किया हवा अच्छी थी । फिर लड़ा  
 उठाया । कलकी तरह फिर उत्तर मुँह जाने लगा । दिग्दर्श  
 यन्त्रसे दिशाका निर्णय कर लेता था । उस दिन कोई  
 बात लिखने लायक हुई नही । तीसरे दिन तीसरे पहरके  
 एक जहाज दिखाई पडा दक्षिण पूर्वकी ओर जा रहा था । मैं  
 भी किशती उसी तरफ घुमाई । पुकारा पर कोई जवाब नही  
 मिला । हवाका जोर घट चला था । मैंने सब पाल तान दिये  
 आध घण्टेके बाद जहाजवालीने लुके देखे । उलीने अपना फर  
 हाग उड़ाया और बन्दूक छोड़ी । उस रसद से जहाजका द  
 ठिकाना था । फिर देश पहुच कर अपने हात बन्दोंके सुँद देख  
 की उसीदसे तबीयत हरीभरी होई । जहाजने पाल उतार  
 गये । २६ वी सेप्टेम्बरकी शामको रे जहाजने पास जा पहुचा  
 अङ्गरेजी फरफरा देखनेके लिये मेरा दिल लज्जत रहा था । गर्द  
 और मेडोंकी जवसे धर लिया । दादी चीजोंकी से जहाज पर  
 बट गया । जहाज अङ्गरेजी सौदागरका था । उस जापान

वापिस आरहा था । इसका कप्तान था जौन विड़ । यह बड़ा नैक तथा अपने कामसे पक्का था । कोई पचास आठसी जहाज पर थे । उनमें मेरा एक पुराना दोस्त भी था । उसीने कप्तानसे मेरी जान पहचान कराई । कप्तानने मेरी बहुत खातिर की । उसके पूछने पर मैंने अपनी रामकहानी सुनाई तो वह मुझे पागल समझने लगा । जब मैंने पाकेटसे अपने पशुओंको निकाल कर सामने रख दिया तब मेरी बातोंको सत्य माना । फिर मैंने वृफस्कू नरेशकी तमबीर तथा अशफिया दिखाई । मैंने कप्तानको दोसौ अशफियां दी और कहा कि इङ्गलैण्ड पहुंच कर एक गाय और गाभिन भेड दूंगा ।

आखिर १७०२ ईस्वीकी १३ वी अप्रैलको डाउन्सके बन्दरमें पहुँचे । एक बड़ी मुश्किल यह हुई कि एक भेडको एक चूहा पकड़ कर ले गया । दाकी ढोर कुशलसे पहुँचे । ग्रिनविच पहुँच कर उन्हें चरनेके लिये मैदानमें छोड़ दिया । वह सब चर कर मस्त हो गये । अगर कप्तान हवा कर घोड़ीसी बढिया जगह जहाज पर न देता तो यह सब जानवर जीते जागते न पहुँचते । जब चारा घट गया तो बिमझुट तोड़ कर पानीके साथ खिलाता था ।

रूपये दिये बाकी पूजी अपन पास रक्की । काकाजीन मरनेके  
 समय तीनसा चालीस सालाना आसदनीकी सम्पत्ति लेरे नाम  
 लेख गये थे । इतनीसी यादकी एक जगह और थी । समवासे  
 यन्न बन्धका अब टोटा नहीं रहा । मेरा लडका जीनी राठगानामे  
 पढ़ता है । मेरी बेटा जिसका नाम बेटा है अब बेटे बेटावाली हुई ।  
 यह खंडका काम करती है । बालबच्चेमे बिना हाँकर है फिर  
 नफरमे चला । बिटार्के समय मदकी प्रांगे डवडवा पाई थी ।  
 खेर किसी तरह बाहर चुप्रा । कप्तान जोन निजोलनका जहाज  
 मरतको जाता था । अबके मैं इसी जहाज पर रुकने हुआ । हम  
 यात्राका हत्तान्त हमरे खण्डमे लिखेगा । यह यात्रा बड़ी सजेदार  
 हुई । इसका हत्तान्त आचार्य घटनाओंसे परिपूर्ण है ।

इति प्रथम खण्ड समाप्त ।



# विचित्र-विचरणा ।

---

द्वितीय भाग ।

ब्रौडिगनेरकी यात्रा ।

---





# विचित्र-विचरण ।

## द्वितीय भाग ।

### ब्रौवडिंगनेगकी यात्रा ।

प्रथम परिच्छेद ।

सुखसे घरने रहना मेरे भाग्यसे लिखाही न था । दो महीने ढाढ़ फिर स्वदेश त्यागना पडा । ता० २० वी जून १७०२ ई०को सूरतके लिये जहाज खुला । जहाजमें सौदागरीकी चीजें भरी थी । यह कह चुका हूं कि इस जहाजके कप्तानका नाम जौननिकोलस था । उत्तमाशा अन्तरीप तक वायु बहुत अनुकूल रही । यहा ताजा पानीके लिये हम लोग ठहर गये । पीछे जहाजकी पेंदीमें एक छेद दिखाई पडा । लाचार जहाज खाली किया गया । इधर कप्तानको भीत ज्वरने आघेरा । इसलिये मार्च तक हम लोग यही डेरा जमाए रहे । सब ठीक ठाक होजाने पर हम लोगोंने फिर लहर उठाया । लेडेगास्करके मुहाने तक हम लोग निर्विघ्न चले गये । लेकिन इस द्वीपसे उत्तर मुंह होतही वायुने अपना प्रचण्ड रूप धारण किया । इस प्रान्तमें दिसम्बरके प्रारम्भसे मईके आरम्भ तक सदैव समान गतिसे वायु सञ्चालित होती है । किन्तु १८ वी अप्रैलको इसका वेग बहुतही बढ़ गया । लगातार बीस दिन तक यही दशा रही । इतनेमें हम लोग मुलक्काद्वीपसे कुछ पूरव जा पड़े । २ मईको हवाका जोर कुछ घट गया । मैं हर्षित हुआ परन्तु बहुदर्शी कप्तानने कहा “होशियार रहो—बड़ा भारी तूफान आनेवाला है ।” आखिर वही हुआ । दूसरेही दिन भीषण तूफान

आपहुँचा । परसात्माकी दयासे जहाज डूबा तो नहीं पर राहसे भटक गया । हम लोग कहा जा पहुँचे कह नहीं सकते । बड़े बड़े पुराने जहाजी भी कुछ निर्णय न कर सके । हम सब हट्टे कट्टे थे, जहाज भी दुर्लभ था, खानेकी सब सामग्री थी लेकिन पीनेके लिये जल न था । बहुत कष्ट हुआ । जहाज जिधर जाता था उधरही जाने दिया । दिगदर्शन यन्त्रसे मालूम हुआ कि हम लोग ठीक पूरब जा रहे हैं ।

१६ वी जून १७०३ ईस्वीको दूरसे कुछ भूमि दिखलाई पड़ी । जहाज उधरही घुमाया गया । १७ वी को उस भूमिके पान जा पहुँचे । तो देखा एक टापू है । लङ्गर गिराया गया । कप्तानने कई हथियारबन्द आदमियोंको पानी ढूँढनेके लिये कहा । वह लोग किशोरी पर सवार हो किनारेकी ओर गये । कप्तानकी आज्ञा से मैं भी उनके साथ चला गया था । किनारे पर आए लेकिन कोई जलाशय नहीं मिला और न आवादी वगैरा के कुछ चिह्न दिखाई पड़े । और लोग तो जलकी टोहमें इधर उधर घूमने लगे पर मैं एक ओर सीधा एक मील तक योही चला गया । जमीन बिलकुल पहाड़ी तथा ऊसर थी । थकावट मालूम हुई और दूसरे कोई मनोहर दृश्य दिखाई न दिया इससे मैं किनारेकी ओर धीरे धीरे लौटने लगा । दूरसे मैंने देखा कि मेरे साथी सब किशोरी पर चढ़े जहाजकी तरफ जा रहे हैं । मैंने बहुतैरा पुकारा पर कुछ लाभ नहीं हुआ । इतनेमें मेरी दृष्टि एक विशाल जन्तु पर जा पड़ी जो किशोरीके पीछे पीछे बड़ी तेजीके साथ जा रहा था । उसके डग भी बड़े बड़े पड़ते तथा जल घुटनोही तक था । डींगी बहुत आगे निकल गई थी और जलमें जरा पत्थर भी बहुत थे इससे वह जीव उन लोगोंको दौड़ कर पकड़ न सका । उस भयानक जन्तुको देखतेही मेरे तो देवता कूच कर गये । डरके मारे फिर पीछे भाग चला । कुछ दूर जाकर एक पहाड़ी पर चढ़ गया । वहाँसे आस पासकी कटा दिखाई पड़ी । जमीन आवाद थी । पर घासकी

तख्वाई देख कर पछले सुके बहुतही अचरज हुआ । बीस फुट लम्बी घास जब तक मैंने नहीं देखी थी ।

आगे बढ़ा तो एक बड़ी चौड़ी सड़क मिली जो जीके खेतमें ही बार निकाली थी । पीछे सालूम हुआ कि वहाँ सड़क नहीं मानूली प्यङ्गड़ी थी । उसकी चौड़ाई देख करही सुके यह धोखा हुआ था । कुछ देर तक मैं योही चला किया । ससेय फसलका था । नाजके पेधे ४०।४० फुट ऊँचे देखनेसे आये । इन सब चीजोंको देख कर मेरी अल्ल गुम थी । लगातार एक घण्टा चलनेके बाद मैं खेतके दूसरे कोर पर जा पहुँचा । यह १२० फुट ऊँची टट्टी ले घिरा हुआ था । और पेड सब तो इतने ऊँचे थे कि देखनेसे टोपी गिर पडती थी । एक खेतसे दूसरे खेतमें जानेके लिये चार सीढिया बनी थी । ऊपर एक पत्थर रक्खा था उसी परसे गेचें उतरना पडता था । इन सीढियोंसे उस पार जाना मेरे लिये असम्भव था । क्योंकि एक एक सीढी छः छः फुटके फासले पर और ऊपरवाला पत्थर २० फुटसे भी अधिक ऊँचे परथा । मैं इस विचार में था कि टट्टीमें कोई छेदवेद मिल जाय तो उस पार चला जाऊँ इतनेमें बाडके उस पारसे एक राक्षस सीढीकी तरफ आता हुआ दिखलाई पडा । इसका भी डील डौल उसी जन्तुके जैसा था जो मेरे साथियोंके पीछे समुद्रमें दौडा जाताथा । यह साधारण गिरजाके समान ऊँचा था और एक एक डग दस दस गजका करता था । आश्चर्य और भयसे मेरी अजब दशा होगई । मैं एक क्षणमें छिप

या काटने लगे । मुझमें जल्पा तक बना दूर भाग चला । कहीं कहीं पीछे इतने घने थे जि चल्नेमें बड़ी तकलीफ हुई । जौकी नुकीले कांटे बदनमें चुभते थे पर क्या करता—प्राण लेकर भागा जाता था । पीछेमें जो काटनेवालोंकी गाहट सुनाई पड़ी । बका-बट, भय और निराशासे मेरी खड़ाबटका ठिकाना न रहा । लाचार हो वही लेट गया । सोचा अब प्राण देनेहीमें सुग है । स्त्री और पुत्रदा स्मरण कर गना भर पाया । अपनी सूर्यता पर बहुत पछताया । हाय ! क्यों घर बार छोड़ा ? न घरमें निकलता न जान जाती । हाय मैं वैमौत मरा । इस दुःखमें भी लिलीपटकी याद आ गई । वहा मैंही एक राक्षस समझा गया था । वहा मैं जङ्गी जहाजोको खेव लाया था और वहा न जाने मैंने कितने और अद्भुत कर्म किये थे । हाय ! जैसा मैं लिलीपटी लोगोंको समझता था वैसेही यह राक्षस मुझे समझेगा । सबसे दुःखकी बात तो यह है यह जङ्गली असभ्य जीव देखतेही मुझे खा जायगे क्योंकि आकार के सदृशही मनुष्यमें जङ्गलीपन और असभ्यता होती है । विद्वानों ने बहुत ठीक कहा है कि मुकावला किये बिना किसी वस्तुको छोटी बड़ी नहीं कहना चाहिये । लिलीपटी लोगोंसे भी छोटे और इन राक्षसोंसे भी बड़े जीव संसारमें हो सकते हैं ।

इस बीचमें एक मजदूर मेरे बहुत निकट आगयाथा । मैंने सोचा अगर कहीं धोखेसे इसके पाव मुझ पर पड़ गये तो यही ढेर हो जाऊंगा या एक हाथ हमवेहीका चल गया तो मेरा काम तमाम है । डरके मारे प्राण छूख गये । जब वह मजदूर फिर आगे पैर बढाने लगा मैं खूब जोरसे चिल्ला उठा । मेरी आवाज सुनकर वह चौकन्ना हुआ और इधर उधर देखने लगा । आखिर उसकी दृष्टि मुझ पर पड़ी । जैसे कोई किसी विपैले छोटे जीव जन्तुको देख कर होशियारोंसे उसे उठानेकी तरकीब सोचता है वैसेही वह भी खड़ा खड़ा सोचने लगा । निदान साहस करके उसने अगूठे तर्जनीसे मेरी कमर पकड़ कर उठा लिया और आखीसेतीव

गज दूर रख कर गौरसे देखना शुरू किया । जब उसने सुभे जमीन से साठ फुट ऊपर उठाया तो मैं कुछ न बोला । जिसमे मैं गिर न पड इस ख्यालसे उमने खूब जोरसे सुभे दबाया था । उसके दवानेसे बहुतही कष्ट हुआ । मैं सूर्यकी ओर निहार कर अति दीनतासे विनती करने लगा । सुभे यही सालूस होता था कि अब इसने सुभे जमीन पर पटका क्योंकि इस लोग भी छोटे मोटे कीड़े मकोड़ेको योही फेंक देते हैं । लेकिन परमात्माकी दयासे मेरे यह अच्छे थे । वह मेरी बोली और हाव भावसे बहुतही प्रसन्न हुआ । आदमियोंकी भांति बोलते देख कर उसे और भी अचम्भा हुआ । परन्तु मेरी बातें उसकी समझमें नहीं आई । आखिर आखे डबडबा कर मैं रोने लगा और कमरकी ओर देखने लगा । वह मेरा भाव समझा गया । चटपट कोटके दासनमें सुभे लपेट कर अपने सालिकके पास लेआया । यह सालिकराम वही थे जिनको खेत में पहले मैंने देखा था ।

### द्वितीय पच्छेद ।



किसानने अपने मजदूरसे सब बातें सुन कर एक तिनका जो टडीने समान लवाया उठा लिया और मेरे कोटके दासनको उलट पलट कर देखा । उसने शायद समझा कि यह खाल है । फिर बाल हटा कर मेरे सुभेकी भली भांति देखा । सब मजदूरोंको बुला कर उसने पूछा कि ऐसा जानवर तुम लोगोंने और कभी यहाँ देखा है ।

फिरियोंका बटुषा निकाल कर उनके नांगे रक्ता। उसने ले तो  
 गिरा पर तोल न सका। तब मेने डगमगे जाता कि गरजी चबेली  
 खुरि पर रन दी। उनने वनो किया। जैसे बटुषा गोल गर मय  
 गिरे उनके हाथ पर उलट दिये। उने पृथगे उननी गीली कर  
 के उन निपोंकी उठा उठा कर देखा लेकिन कुछ समझ न सका।  
 फिर उगे उने बटुषा में और दृष्टको जगन रगनेका इशारा किया।  
 मेने तुरत उसकी आज्ञा साथे चढ़ाई।

यन किसानकी पृथ विग्राम लोगता नि मे दोई सज्जन जीव  
 ह। वह सुखी धारकर बोलता था। यद्यपि उधारण सट या  
 तथापि उसकी बोलोसे मेने कानके परदे फटते थे। मैं भी गरज  
 गरज कर कई बोलियोंमें उता देता पर दोई भी किसीकी बात  
 नहीं समझता था। उमने मजदूरीके जग पर जानेके दिये कह  
 कर पाकटो प्रपना ससाल निकाला। यह एक फुटने ज्यादा  
 सोटा नहीं था। उसी रुझागरे वध कर वा सुने घर ले  
 गया। विलायतमें वीविया जिन प्रना नकडे और बैठक देखकर  
 डर जाती है उसी प्रकार उनकी ली भी सुने देखतेही चौंक उठीं  
 और चिला कर भाग गई। निदान वह मेरी चिटानोको देख टौठ  
 हुई और फिर तो सुने बहुत पार लगे लगी।

बारह बजे दिनको खानसारा खाना लेकर राजिर हुआ।  
 जिस रक्ताबीमें खाना आया था उनका व्यास २४ फुट था। किसान  
 के परिवारमें केवल उसकी स्त्री तीग लडके और उसकी बुढिया  
 दादी थी। जब सब भोजन करनेके लिये बैठे तब किसानने कुछ दूर  
 गल्लन मेज पर सुके बिठाया। मेज तीस फुट लची थी। मैं गिरने  
 के डरसे किनारा छोड़ बीचमें जा बैठा। किसानजी सीने मास  
 के तथा रोटीके कुछ टुकडे थालमें रख कर मेरी ओर सरवा दिये।  
 मैं सलाम करके चवाने लगा। मेरा खाना देख कर वह सब बहुत  
 ही प्रसन हुए। फिर एक छोटासा प्याला भगवा कर सुके शराव  
 के लिये दी। यहापर। इस छोटेसे प्यालेमें छः बोलस शराव

चटती घी । मैंने बड़ी कठिनाई से दोनों हाथोंसे घ्रालीको उठाया और अद्वयके साथ गृहिणीका स्वास्थ्य पान किया । फिर अङ्गरेजी में हतबलता प्रकाशकी । इस पर वह सब खिलखिला उठे । उनके विकट हास्यसे मैं तो वधिर होगया । मदिराका स्वाद कुछ बुरा नहीं था । किसानने मद्धेतसे मुझे अपनी तरफ बुलाया । मैं चला लेकिन रोटीके टुकड़ेकी ठोकर खाकर मेज पर पट गिर पडा । ईश्वरकी दयासे चोट नहीं लगी । खैर, उठा और फिर चलने लगा । इतनेमें किसानके बैठेने जिसकी उमर दस वर्षसे अधिक न थी टांग पकड कर मुझे उठा लिया और फिर इतना ऊँचा उठाया कि मेरा कलेजा कांप गया । किसानने लडकेके हाथसे मुझे छीन लिया और एक तमाचा उसके बायें गाल पर जमा कर बहासे चले जानेकी लिये कहा । मैंने हाथ जोड कर कसूर माफ करनेके लिये इगारा किया । उसने भी मेरी बात मानली । बालक फिर बैठ गया । मैंने पास जाकर उसके हाथको चूमा और किसानने मेरी देह पर बालकका हाथ फिरवा दिया ।

विभीकी सामने बराबर उठा रहा । दो चार बार माहम करके उनकी वगलसे निकल भी गया । आखिर वही विचारी डर कर चम्पत होगई । इतनेमें तीन चार कुत्ते आपहुं चे । यह सब बहुत बड़े थे—इनमेंसे एक तो हाथीके समान था । मैं इन सबको देख कर तनक भी न डरा ।

जब भोजन समाप्त होने पर था टाई एक वर्षका बालक गोदमें लिये आ उपस्थित हुई । वह बालक खिलीना समझ कर मुझसे लेनेके लिये रोने लगा । उसकी माता उसका मचलना देख कर मुझे उसके पास लेगई । उस लड़के नाटानने मेरी कमर पकडली और मेरा सिर अपने मुहमें डाल लिया । मैं इतने जोरसे चिल्ला उठा कि उसने डर कर मुझे फेंक दिया । अगर गृहिणी अपने अंचलमें मुझे न लेलेती तो मैं अवश्य चकनाचूर हो जाता । बालक फिर रोने और मचलने लगा । टाईने चुप करानेके वास्ते झुनझुना जो बालककी कमरसे बधा था बजाया पर वह क्यों चुप होने लगा था ? इस झुनझुनेका शब्द बहुत कर्कश था । जब किसी तरहसे भी वह शान्त न हुआ तब उसने अन्तिम उपाय किया अर्थात् उसे दूध पिलाने लगी । उस टाईके स्तनद्वयको देख कर मुझे जितनी घृणा हुई उतनी आज तक कभी नहीं हुई । उन स्तनोंके रूप रङ्ग और आकारकी तुलना किससे करूं सो समझमें नहीं आता है । यह कुच छ फुट ऊंचे तथा इनका घेरा १६ फुट से कदापि कम न था । स्तनका मुंह मेरे सिरसे आधा था । इनकी रङ्ग विचित्र थे । इन पर नाना प्रकारके दाग थे । इन कुचों को देख कर मेरा तो जी घबड़ा उठा । उस समय मुझे विलायती बीबियोंकी याद आगई । यह बीबिया हमारे समान होनेहीके कारण इतनी सुन्दर मालूम होती हैं । इनके दोष हम लोग इन आखोंसे नहीं देख सकते हैं । यदि सूक्ष्मदर्शक यन्त्र से इनके शरीर देखे जाय तो इनका यह गोरा चमड़ा भी रूखा मोटा और बदरङ्ग पड़ेगा ।



जब मैं लिलीपटमें था तो वहाँके लोग मुझे संसार भरसे अधिक गोरे मालूम होते थे । मुझे स्मरण है एक दिन जब इसी बातकी चर्चा चली तो वहाँके एक पण्डितने कहा था “हाँ जब तुम्हें मैं नीचेसे देखता हूँ तो तुम्हारा चेहरा माफ़ सुधरा चिकना और गोरा मालूम पड़ता है लेकिन जब तुम अपने हाथमें मुझे उठा लेते हो तब तुम्हारा चेहरा भयङ्कर मालूम देता है—बदनमें बड़े बड़े छद्म दिखाई पड़ते हैं । दाढ़ीकी खूटियाँ सूअरके बालसे दस गुना बड़ी दिखाई देती हैं और रङ्ग बिलकुल फीका जचने लगता है ।” जब वह लिलीपटकी स्त्रियोंकी वाचत कहता कि फलानीके मुँह पर दाग है—फलानीका मुँह चपटा है और फलानीकी नाक बड़ी है तो मुझे कुछ भी नहीं मालूम होता था । यह बात बहुत ठीक है कि छोटी छोटी वस्तुओंका गुण दोष इन नज़रोंसे प्रगट नहीं होता है परन्तु बड़े बड़े पदार्थोंका होजाता है । पाठकगण ! कहीं आप यह न समझ बैठें हों कि यह विराट जीव कुरूप होते हैं । नहीं ऐसा मत समझिये—यह बड़े सुन्दर और रूपवान होते हैं । विशेष कर मेरे किमानकी आकृति पृथ्वी परसे अति कमनीय मालूम होती थी ।

खेर भोजन समाप्त हुआ । किसान फिर अपने खेत पर गया किन्तु उसके भावसे प्रगट हुआ कि वह जानेके समय अपनी छीसे मेरी हिफाजत करनेके दाखले कह गया था । मैं थकावटके मारे ऊँघता था । रूढ़िणीने मेरी दशा समझ अपने विस्तरे पर मुझे सुलाकर एक साफ़ रुमाल उठा दिया । यह रुमाल काँचको जड़ी जहान का पाद नहीं नहीं उसका भी लकड़दादा था ।

दो डयलिये नीचे उतरना चाहता था । पुकारनेकी हिम्मत न पड़ी और पुकारही कर वा होता—मेरी आवाज तो वही गूँजकर रह जाती । जब मैं पड़ा पड़ा मोच रहा था दो चूहे पलङ्ग पर आधसके और लगे इधर उधर मूँघा माथी करने । एक मूँघते मूँघते मेरे मुँहके पास आपहुँचा । मैं उरके मारे उठ बैठा और अपना खज्जर निकाल लिया । यह लगे दोनों तरफसे मुझ पर आक्रमण करने । एकने तो झपट कर मेरा गलाही पकड़ लिया । ईश्वर की दयाने मैंने भी तुरन्त खज्जरका एक हाथ ऐसा मारा कि वह वही एकसे दो होगया । अपने माथीकी यह टंगा देखकर दूसरा चतता बना लेकिन मैंने बड़ी फुरतीके साथ उस पर भी एक हाथ चलाही दिया था । इसके बाद टम लेनेके लिये मैं चारपाई पर पर टहलने लगा । यह चूहे पहाड़ी कुत्तेके समान बड़े तथा अति भयङ्कर थे । यदि मेरे पास खज्जर न होता तो यह जरूर मुझे खा जाते । इसकी दुम मैंने नापी तो एक इंच कम दो गज हुई । लोहसे बिछीना तरावर होगया । मैंने बड़ी कठिनतासे मरे हुए चूहेको नीचे फेंक दिया ।

इतनेमें गृहिणी आगई । मुझे लहमे भरा देख कर चट गोद में उठा लिया । मैंने चूहेकी और संकेत किया और बता दिया कि मैं निरापद हूँ । यह देख वह बहुत प्रसन्न हुई । फिर टाईकी बुलाया दाईने आकर चिममसे मरे चूहेको खिड़की की गल्लेसे फेंक दिया । गृहिणीने मुझे मेज पर खड़ा किया । मैंने अपना खज्जर दिखलाया और पोंछ पाछ कर रखलिया । अब मुझे उस कामकी हाजत थी जिसकी दूसरा कोई मेरे बदले नहीं कर सकता था । मैंने संकेतमें कहा कि मुझे जमीन पर बिठला दो । बड़ी कठिनतासे उसने मेरा अभिप्राय समझा । मुझे गोदमें लिये बगीचे पहुँची । वहा जमीन पर बिठा दिया । मैं उसे वही रहनेके लिये कह कर दोसी गज आगे निकल गया । एक मटमें बैठ कर मैंने हाजत रफाकी ।

ऐसी ऐसी बातें लिखनेसे बहुतेरे पाठक नाक भीड़ चढ़ावेगे परन्तु उन्हें जान लेना चाहिये कि तत्वज्ञानियोंकी कल्पनाशक्ति बढ़ानेमें यह बातें बहुत कुछ सहायता करेगी। इसी लोगोके उपकारके लिये मैंने अपनी यात्राका रत्ती रत्ती वृत्तान्त लिख डाला है। नाजुक मिजाज पाठक क्षमा करें।

### द्वितीय परिच्छेद ।



किमानके नौ बरसकी एक कन्या थी। यह सूर्यके काममें तथा दक्षोको कपड़े पहनानेमें बड़ी पक्की थी। इसकी मा और इनने मिल कर मेरे मोनेके लिये एक पालना तैयार किया था। चूँकि डरसे रातको यह पालना ऊँची जगह पर लटकाया जाता था। जब तक इन लोगोके साथ रहा मैं इसी पर सीता था। ज्यों ज्यों इनकी भाषा मैं सीखने लगा त्यों त्यों मेरा सुख बढ़ चला—जब जिस वस्तुको दरकार होती मांग लेता था। यह बालिका ऐसी बुद्धिमती थी कि दोही चार बार उसके सामने कपड़े उतारने से वह मुझको कपड़ा पहनाना सीख गई। मैं नहीं चाहता था कि वह मुझको कपड़े पहरावे तथापि वह पहना देती थी। उसने मेरे वास्ते सात कमीजें तथा और कई कपड़े तैयार किये थे। यह कपड़े बहुत मोटे थे। यह मुझको अपनी भाषा भी सिखाती थी। जब मैं कोई चीज देखकर पूछता वह क्या है तो वह अपनी भाषामें उसका नाम बता देती थी। वस इसी ढङ्गसे उस देशकी भाषा मैं बहुत जल्द सीख गया। इस बालिकाका स्वभाव बहुत अच्छा था। यह नाटी थी तथापि चालीस फुटसे कहीं लम्बी थी। इर्मन मेरा नाम थोल्ड्रिग (बचूड़ा) रखता। फिर सब इसी नामसे मुझको पुकारने लगे। उसीकी क्षणमें उस देशमें मेरी जान बची थी। जब तब वहाँ मैं रहा उससे कभी अलग नहीं हुआ। वह मुझको सिखाती पिलाती दी इससे मैं उसको “दाया” कहता। मैं उसका बहुत स्नेह करता हूँ। पर मेरा बहुत लाड प्यार करती थी।

आस पासके गावोंमें मेरी खूबर विजनीकी तरह फैल गई । जहाँ सुनो वहाँ मेरीही चर्चा होती थी । आपसमें लोग कहते थे “अमुक किसानके खेतमें एक विचित्र जीव मिला है । वह बहुत ही छोटा है लेकिन सूरत गजान आदमी कीमी है । सब कामभी आदमीकी तरह करता है । उसकी बोली अजब ढलकी है । लेकिन यहाँकी भी दो चार बोलिया वह सीख गया है । दो पैरसे सीधा चलता है—वह पालतू और सीधा है—बुलानेसे आता और कहनेसे सब काम करता है । देखनेमें बहुत सुन्दर और रंग भी गीरा है ।” इस बातकी जाचके लिये एक मनुष्य जो किसानका दोस्त और पड़ोसी था आया । किसानने मुझको लाकर मेज पर खड़ा कर दिया । उनके कहनेसे दो चार कदम चला, खजूर निकाल कर चुमाया और फिर रख लिया । उन्हीकी भाषामें उनका स्वागत किया । यह सब मैंने अपनी दायासे सीखा था । इसके बाद वह चश्मा लगाकर मुझको भली भाँति देखने लगा । उसके दोनों नयन दो चन्द्रमाओंके समान दो झरोखोंमेंसे चमकते मालूम हुए । मैं इस दृश्यको देख कर हसी रोक न सका । मुझको हसते देख सब कोई हँस पड़े । इस पर बूढ़ा बहुत नाराज हुआ और बन गया । यह परले सिरका कज्जूस और लोभी था । मेरे लिये तो साक्षात् साठे माती शनिश्चर था । उसने किसानको मेरे द्वारा धन उपार्जन करनेकी सम्मति दी । जब यह दोनों मेरी ओर निहार निहार कर आपसमें बातचीत करने लगे तो मेरा माथा ठनका । मैंने समझ लिया कि कोई भारी विपद आनेवाली है । दूसरे दिन सबेरे टायाने सब हृत्तान्त अपनी मातासे सुन कर मुझको बता दिया । वह बिचारी मुझको गले लगा कर रोने लगी और बोली “मैंने तो समझा था कि तू मेरे पास रहेगा सो नहीं हुआ । पारसाल मैंने एक सेन्ना पाला था जब बड़ा हुआ तो बाबाने उसे कसाईके हाथ बेच दिया । बाबा कभी कोई चीज मेरे पास नहीं रहने देते हैं । न जाने हाटमें तेरी क्या दुर्दशा होगी ।” पर मुझको किसी बात

की चिन्ता न थी । मुझको पूरा भरोसा था कि कभी न कभी इस फन्देसे मैं अवश्य छूट जाऊंगा । मैंने सोचा अगर इङ्गलैंडेश्वर भी यहाँ आते तो उनकी भी यही दशा होती फिर मेरी क्या गिनती है ?

किसानने अपने सितकी सम्पत्तिके अनुसार हाटके दिन नगरा-  
भिसुख प्रस्थान किया । मुझको एक पिञ्जडेमें, बन्द करके धागे  
रख लिया और दायाको अपने पीछे घोड़े पर बिठा लिया ।  
पिञ्जडेकी बनावट सन्दूक कीसी थी । इसमें हवा आने जानेके  
लिये दो चार छेद तथा एक द्वार बना हुआ था । दायाने मेरे लिये  
एक छोटीसी गद्दी भी बिछा दी थी । अस्तु, हम लोग ठिकाने पर  
पहुँचे । आधेही घण्टेमें बाईस कोसकी मञ्जिल पूरी हुई । हरा-  
रतसे मेरे तो बन्द बन्द टूटतेथे क्योंकि घोड़ा बराबर सरपट दौड़ता  
आया था । इसके एक एक कदम चालीस चालीस फुट पर पड़ते  
थे । किसानने एक सरायमें डेरा जमाया । वह प्रायः यही उतरा  
करता था । सरायवालेसे सब ठीक ठाक करके उन्होंने विज्ञापन  
निकालवाया कि एक अजीब जानवर आया है जो छः फुट लम्बा  
और बहुत सुन्दर है । सूरत आदमीसी है । बोलता है और बहुत  
से अद्भुत काम करता है जिसको देखना ही सरायमें आवे ।

सरायके एक बड़े कमरेमें जो तीनसौ वर्ग फुटका था एक मेज  
पर मैं खड़ा किया गया दाया पासही एक तिपाई पर निगरानी  
तथा तमाशा दिखानेके निमित्त बैठी । किसान दरवाजे पर खड़ा  
हुआ । जिसमें गोलमाल न हो इसलिये तीस तीस आदमियोंको  
शरी बारीसे भीतर भेज देता था । दायाके कहनेसे मैं मेज पर  
चलता था । जो कुछ वह पृष्टती उसका मैं जवाब देताथा । आने  
वालोंका स्वागत तथा स्वास्थ्यपान करता था । तलवार निकाल  
कर कलावाजी दिखाता और न जाने क्या क्या दिखाता था । दाया  
उतनेही प्रश्न करती थी जितने मैं समझता था । इसी तरह उस  
दिन मैंने १२ भुण्डके सामने अपना तमाशा दिखाया । मैं थक कर  
प्रधमुषा होगया । जिन लोगोंने देखा उन्होंने इतनी प्रशंसाकी

कि सारा शहर सरायमें टूट पड़ा और सब दरवाजा तोड़ कर भीतर घुसनेके लिये तैयार होगये । दायाका छोड़ कोई दूसरा मुझे छू नही सकता था । दर्गकगण भी इतनी दूर रहते थे कि उनके हाथ मुझ तक नहीं पहुँच सकते थे । यह सब प्रबन्ध किसान ने केवल अपने लाभके निमित्त कर रक्के थे । इतने पर भी स्कून का एक शेतान छोड़कर बाटाम खेंच कर मुझको मारही बैठाया । कुगल हुई नहीं तो मेरी खोपड़ी फट जाती । यह बाटाम लौकी के बराबर था । आखिर वह छोड़कर खूब पीटा गया और निकाल दिया गया ।

हाट बन्द हुई । हम लोग भी घर वापिस आये । अबके किसान ने मेरे आरामके लिये बढिया सवारीका प्रबन्ध किया । इस आठवण्टेकी कडाचूर मेहनतसे मुझको ज्वर हो आया । उठने बैठनेकी ताब न रही । तीन दिन तक बेसुध पड़ा रहा । चौथे दिन होश हुआ पर हाथ । घर पर भी मुझको चैन नहीं । देखने वाले भुण्डके भुण्ड घर परही आने लगे । एक दिन तीससे अधिक सज्जन सपरिवार पधारे । किसानने सबसे पूरा टाम वसूल किया था । आस पासके अर्थात् सी मील तकके लोग मुझको देखने आये । किसानके घर रुपयोंकी वर्षा होने लगी । मुझको बुधवार के सिवा कभी मरनेकी भी कुट्टी नहीं मिलती थी । बुधवारही इन लोगोंका रविवार अर्थात् विश्रामका दिन था ।

किसानकी अब रुपयोंकी चाट लगी । उसने मुझको बड़े बड़े शहरोंमें घुमानेका सङ्कल्प किया आखिर सब सामानसे लैस होकर वह १७ वीं अगस्त १७०३ ईस्वीको राजधानीके लिये उठ खड़ा हुआ । यह राजधानी वहासे तीन हजार मील दूर थी । दाया भी साथ चली । सवारीमें वही घोड़ा था । मैं अपने पिच्छेमें था और दाया इसे लिये हुए थी । मेरे आरामकी सब सामग्री पिच्छे में मौजूद थी । चीज वस्तुकी देख भालके लिये साथमें एक भी था ।

किसानने रास्तेके निकटके प्रत्येक शहर और गांवमें तमाशा दिखा कर रुपया बटोरना विचारा था परन्तु दायाकी राय न हुई । उसने कहा “ऐसा करनेसे ग्रिलडिंग वीमार होजायगा और मैं भी घोड़े पर चलनेसे थक जाती हूँ—बहुत भारी मञ्चिल करना ठीक नहीं ।” मञ्चिल हलकी होने लगी । एकसौ चालीस पचास मील परही पडाव पडने लगा । हवा खिलाने तथा देशकी सैर करानेके लिये दाया अक्सर मुझको बाहर निकालती परन्तु बराबर कसके घासे रहती थी । छः सात नदिया हम लोगोंने लाघी । सब गङ्गा और नीच नदीसे गहरी तथा बड़ी थी । टेम्ससी छोटी नदी बहा एक भी नहीं मिली । रास्तेमें दस सप्ताह लगे थे । दाया के मना करने पर भी मैं कोई अठारह बडे बडे शहरों तथा कई छोटे छोटे गांवोंमें दिखाया गया था ।

२६ वीं अक्तूबरको हम लोग राजधानीमें जा पहुँचे । इसका नाम “लंदन वरलग्रड” है । इस नामका अर्थ है “विश्वगौरव” । किसानने राजभवनके समीपही नगरके प्रधान मुहल्लेमें एक मकान किराये पर लिया । फिर विज्ञापन निकाला गया । इसमें मेरा पूरा वर्णन था । चारसौ फुट लम्बे चौड़े कमरेमें एक बड़ी मेज रखी गई । इसका व्यास ६० फुट था और इसके चारों ओर लोहे का बटहरा तीन फुट ऊँचा लगा हुआ था । इसी मेज पर मुझको तमाशा करना पडता था । मैं दस बार दिनमें दिखाया जाता था । दर्शकगण भी देखकर आश्चर्य तथा आनन्द प्रगट करते थे । किसान का हाथ गरम होताथा । अब मैं उस देशकी भाषाको भी भली भात बोलने तथा समझने लग गया था । दाया जेबमें छोटीसी एक पॉपी धर लाई थी उसीको मैं पटता था । यह सैमसन साहबद्वारे पटनारके बराबर थी ।

चतुर्थ परिच्छेद ।



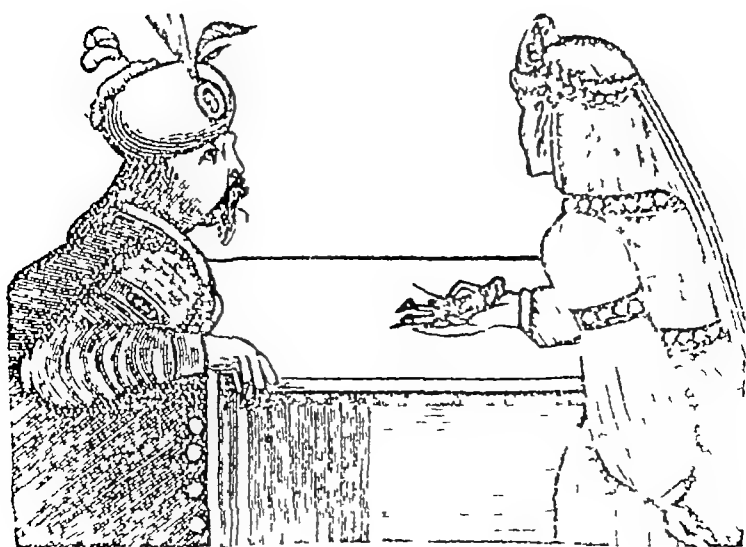
फन यह हुआ कि थोड़ेही दिनोंमें मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया भ्रम मन्दी पड़ गई और गरीब सख कर काटा होगया । किसानने मेरी सौत निकट समझ और भी हाथ साफ करना चाहा । उसने विचारा तब जो कुछ मिल जाय वही नफा है । इसी बीचमें महारानीके यहाँसे बुलाहट आगई । किसान भी लानचके मारे उठ खड़ा हुआ । महारानी मेरी आशुति तथा खेल तमाशा देख कर बहुतही प्रसन्न हुई । महारानीने हाथ बढ़ा दिया मैंने सादर उसका चुम्बन किया । फिर उन्होंने मेरे टेगका वृत्तान्त तथा सफर का हाल वगैर पूछा । मैंने जहाँ तक बना स्पष्ट रूपसे सब कह सुनाया । महारानीने पूछा “क्या तुम मेरे पाम रह सकतेहो ?” मैंने सलाम करके जवाब दिया “मैं इस समय किसानका गुलाम हूँ । अगर स्वाधीन होता तो श्रीमतीकी सेवामें रहना अपना सौभाग्य समझता ।” महारानीने तब किसानसे पूछा । किसानने ता जानलिया था कि मैं दो चार टस दिनमें मर जाऊँगा इससे उसने मुझको बेचनाही उचित समझा अन्तको उसने मुझे हजार अशर्फियोंमें महारानीके हाथ बेच डाला । जब किसान अशर्फिया लेकर जाने लगा तब मैंने महारानीसे दाय्याके रखनेके लिये प्रार्थना की और कहा इसके रहनेसे मुझे बहुत आराम मिलेगा । महारानीने मेरी बात मानली । तब किसानही क्यों उजर करने लगा था ? राजदरवारकी नौकरी बड़े भाग्यसे मिलती है । द्विचारी दाय्या भी खुशीके मारे फूल कर कुप्पा होगई । किसान सलाम करके मुझसे बोला “लो तुम्हें अच्छी जगह पहुँचा कर मैं जाता हूँ ।” मैंने सलामके बदले सिर्फ सलाम किया पर कुछ कहा नहीं । किसान भी अशर्फियोंकी गठरी ले चलता हुआ ।

किसानके चले जाने पर महारानीने मेरी तस्वाईका कारण पूछा । मैंने कहा “किसानने जब मुझे खेतमें पाया तो मेरी खोपड़ी चूर चूर नहीं करदी बस इतनाही उपकार इसने मेरा किया है ।

उपकारके बदले वह बहुत धन उपार्जन कर चुका है । अभी







न० ८

मै महारानीकी दाहिनी हथेली पर पट पड़ाया ।

पृष्ठ ८३

यहासे भी हजार मुहरे लेगया है । अब मैं उससे उद्धरण हू । जितना परिश्रम वह मुझसे करवाता था उतना परिश्रम करके मुझसे दस गुने बलवाले जीव भी नहीं जी सकते हैं मैं अब तक जीवित हू यही आश्चर्य है । मेरी सारी देह गल गई है । यदि वह मेरी मृत्यु निकट न समझता तो इतने सस्ते दाममें श्रीसती मुझे कटापि न पाती । अब मैं श्रीसती जैसी दयाशील, सृष्टि भूषण, विश्वप्रिया, आयुष्मती सहिषीकी शरणमें आया हूँ पूर्ण आशा है कि अब मैं सुखसे आनन्द पूर्वक अपना समय बिताऊँगा ।”

मेरी बातें सुन कर महारानीको हर्ष तथा आश्चर्य हुआ । वह हाथमें उठा कर मुझे महाराजके निकट ले गई । महाराज शयनागारमें थे । महाराजका चेहरा दृढ़ और गम्भीर था । मैं महारानीकी टाहिनी हथेली पर पट पड़ा था । महाराज मुझे भली भाँति न देख सके थे—पूछा “यह चिड़िया कबसे पाली है ?” महारानी बड़ी बुद्धिमती थी उन्होंने चट मुझको मेज पर खड़ा कर दिया और सारा वृत्तान्त महाराजसे निवेदन करनेके निमित्त कहा । मैंने बहुत थोड़े शब्दोंमें अपनी राम कहानी कह सुनाई । दाया दार पर खड़ी थी । वह भी भीतर बुलाई गई । उसने पूरा हाल कह सुनाया । उस बेचारीको मेरे देखे बिना चैन कहा ?

महाराजकी विद्याका वहाँ बहुत कुछ नाम था । आप गणित और विज्ञानमें पारगत थे किन्तु मेरा ढङ्ग देख कर आपकी भी हृदि चकरा गई । आपने अपनी विद्या और बुद्धिके प्रतापसे मुझे बल्ला पुतला या किसी घड़ीका पुरजा समझा परन्तु जब मेरी बोली मेरा उच्चारण प्रकृति सुना तो आपको बहुतही अचम्भा हुआ । मेरी बातोंका विश्वास आपको नहीं हुआ । श्रीमान्ने फिर कई प्रश्न किये मैंने सबका सार्थक और स्पष्ट उत्तर दिया । इन वाक्योंमें वही दोष थे जो विदेशीसे उच्चारण वा मुहाविरमें होमकते हैं । पर एक बात थीर है—भाषा मेरी गवारी थी क्योंकि किसानहीके घर मैंने शिक्षा पाई थी ।

महाराजने तीन पण्डित बुलवाये । इन लोगोंने मुझको खूब अच्छी तरह देख भाल कर अपनी जुदी गायदी । यह तो सर्भोंने माना कि मैं स्वाभाविक नियमसे उत्पन्न नहीं हुआ हूँ और न मेरी बनावटही ऐसी है कि मैं तेज चल कर, हल पर चढ कर और विलमें रह कर अपने प्राणको बचा सकूँ । दातोकी परीक्षा कर उन लोगोंने मुझको मास खानेवाला जानवर ठहराया पर इसमें यह असमजस आपडा कि चौपाये सबही मुझसे बहुत बडे हैं उनका मास खाना मेरे लिये असम्भव है । पीछे यह सिद्धान्त हुआ कि मैं कीडे मकोडे खाता हूँ । एक पण्डितने मुझको अकाल प्रसूत बताया पर दूसरेने उसका खण्डन किया । कहा “ऐसा हो नहीं सकता क्योंकि इसके अङ्ग सब पूरे हैं । जो असमय उत्पन्न होता है उसके अङ्ग अधूरे होते हैं और वह जी नहीं सकता है ।” इन बुद्धिमानोंकी रायसे मैं बीना भी नहीं था क्योंकि मैं बहुतही छोटा हूँ । महारानीका प्यारा बीना अत्यन्त ठिङ्गना होने पर भी ३० फुट लम्बा था । शेषमें मैं एक अद्भुत जीव समझा गया ।

यह सब होजाने पर मैं हाथ जोड कर बोला “महाराज । मैं जिस देशका हूँ उस देशमें करोडी खी पुरुष इसी डील डीलके हैं । जीव जन्तु, पेड पत्ते, घर द्वार प्रभृतिभी इसी परिमाणके हैं । मौका पडने पर हम लोग अपनी रक्षा कर सकते हैं । जैसे यहाके लोग सब काम कर सकते हैं वैसे हम लोग भी बच्चा करते हैं । मेरी बात सुन कर सब मुंह बिचकाके हस पडे और बोले “किसानने इसको अच्छा सबक पढाया है ।” महाराज सबसे बुद्धिमान थे । पण्डितों को विदा करके उन्होंने किसानको बुलाया । भाग्यसे किसान उस समय तक शहरहीमें था । वह हाजिर किया गया । महाराजने एकान्तमें उससे कुछ पूछा फिर डकठा कर सबका इजहार लिया । अब उन्हें मेरी बातोंका कुछ कुछ विश्वास होने लगा । महाराजने मुझे महारानीके सपुर्द किया और यत्पूर्वक रखनेके लिये कहा ।

मेरा प्रेम दायासे देख कर दायाको भी रहनेके वास्ते हुका दिया । एक कमरा उसके रहनेके लिये दिया गया । उसके लिखाने पढ़ाने के वास्ते एक गुरुआनी नियतकी गई । सेवा टहलके लिये दासिया मिली । लेकिन मेरे लालन पालनका भार दायाहोके सिर रक्खा गया । सहारानीने अपने खास बढईको पिजरा बनानेकी आज्ञा दी । यह बड़ा सुघड कारीगर था । इसने मेरे कहनेके अनुसार तीन सप्ताहमें लज्जीका एक सुन्दर पिजरा बना दिया । यह सोलह फुट लम्बा, सोलह फुट चौड़ा तथा बारह फुट ऊँचा था । इसमें खिडकिया, दरवाजे और अगल वगल दो छोटी छोटी कोठरिया थी । ऊपर तख्तेबन्दी थी । इसमें एक द्वार भी था जो चूलके सहारे खुलता और बन्द होता था । दिनमें बिछौने आदिको धूप खिलानेके लिये दाया दरवाजा खोल देती और रात को बन्द कर देती थी । कहनेके लिये तो पिजरा था पर वास्तवमें यह खासा कमरा था, एक चतुर बढईने जिसका छोटी छोटी चीजें बनानेसे बड़ा नाम था । दो कुर्सिया तथा मेज बना दी थी । चीज वस्तु रखनेके वास्ते एक सन्दूक भी बना दिया था । यह सब ठीक हाथीदांतकेसे मालूम पड़ते थे । जिसमें सुके काष्ठ न हो इस लिये मेरे घरके चारों ओर ऊपर नीचे तमाम रुईकी मोटी गद्दी मढदी गई । दरवाजेमें छोटासा एक ताला लगाया गया । यह परतपुष्ट देकर बन्दवाटा गया था । इतना छोटा ताला वहाँ पहिले और बाकी किसीने नहीं देखा था । लेकिन मेरे लिये तो वह महाताला था । दायासे हाथद खोजाय इसलिये मैंने चाभीकाँ अपने पास रक्खता था । सबसे सहीन रेशमी कपड़ेकी पोशाक मेरे लिये बनी । यह कपड़ा दिलायती कम्बलके समान मोटा था । यह पोशाक उनी देशके टढ़की थी । इन लोगोका पहरावा कुछ पारसियोंसे और चीना लोगोसे सिध्दाथा परन्तु देखनेमें सुन्दरथा ।

• सहारानी अब मुझे इतना चाहने लगी कि बिना मेरे वह भोजन नही करती उगली बाईं ओर मेरी मेज कुर्सी लगती थी और प्रान्सी

तिपाई पर दाया हिफाजतके लिये बैठती थी । मेरे लिये चान्दीके छोटे छोटे वर्त्तन मगाये गये थे । दाया इन्हे अपनी जेबमें रखती थी । जब मैं मागता तो साफ करके देती । महारानीके पात्रोंके आगे यह लडकींके खिलौनेसे मालूम होते थे । महारानीके सङ्ग दोनों राजकुमारियोंके सिवा और कोई नहीं खाता था । इनसेसे एक तो सोलह और दूसरी तेरह वरमकी थी । महारानी मांसका एक टुकड़ा मेरी रकाबीमें डाल देती मैं उसे काट काट कर खाता और वह तमाशा देखती थी । महारानी बहुत कम खाती थी पर हमारे यहाँके दस बारह कुली मजूरोकी पूरी खुराक आपका एकही निवाला था । दस अन्याधुन्य खानेको देख मेरा जी घबरा उठा था । वह समूचे लवापझीको चवा जाती थी । लवाको सहज मत समझना—यह हमारे देशके पेरुसे नौगुने बडे होते थे । सोनेके प्याले में वह एक पीपा शराब एकही घूटमें सोख जाती थी । महारानीकी कुरी तीन हाथ लम्बी थी । चम्मच, काटे प्रभृतिका अनुमान इसीसे कर लीजिये । मुझे याद है एक दिन मैं दायाके साथ बादशाही कमरेमें जहाँ खय महाराज भोजन करते थे योही चला गया वहाँ ऐसी ऐसी दस बारह कुरियोंको एक साथही उठते देखा था । ऐसा भयानक दृश्य फिर कभी देखनेमें नहीं आया ।

मैं कही चुका हूँ कि बुधवार इन लोगोंका विद्याभ दिन है । इस दिन महाराज सपरिवार बैठ कर भोजन करते हैं । अब मेरी भी छोटी छोटी मेज तथा कुर्सियाँ महाराजकी बाई तरफ लगने लगी । महाराज मुझे बहुत चाहते थे तथा मेरी बात सुनकर बहुत प्रसन्न होते थे । आप युरोपके आचार व्यवहार, धर्म कर्म, रीति नीति, विद्या बुद्धि और आर्डन कानूनके बारेमें बराबर पूछते थे । मैं सबका यथोचित उत्तर देता था । महाराजजी समझ बहुत अच्छी थी । कभी कभी वह अपनी भी राय प्रगट करते थे । मैं अपने प्यारे देशके व्यापार, युद्ध, धर्मानुराग, इत्यादिकी बातें खूब बड़ा बड़ा कर गौरवके साथ कहना था । लीग (प्रजाहितैषी)



नं ६

जब महारानी हाथमें उठाकर सुभे आईनेके सामने कर  
देती तो मैं मारे ग्लानिके मरजाता । हाय ! मैं  
इतना छोटा क्यों हुआ ।

पृष्ठ ८७

और टोरी ( राजानुयायी ) दलोंका जब मैं वर्णन करता तो महाराज मुझे हाथमें उठा लेते और मुसकुरा कर पूछते “अरे तू किस दलका है ?” फिर प्रधान मन्त्रीसे जो वही पीछे खड़ा रहता था कहते “देखो ! मनुष्यके सब ठाठ बाट कैसे घृणित है ! एक अदना कीड़ा भी इनकी हसी उड़ा सकता है । इसके देशमें भी पदवियां बटती हैं तथा मान सम्मान होता है । इसके देशवाले भी कपड़े पहनते हैं तथा सवारियों पर चढ़ते हैं ! यह छोटे छोटे घोमले और बिलको अपना शहर बतलाता है । यह सब भी प्यार करना जानते हैं यह भी लड़ते हैं, ठगते हैं और दूसरेके भेदीको प्रकाश करते हैं ।” जब महाराज इस प्रकार बोलते तो मारे गुस्सेके मेरा चेहरा लाल होजाता । हमारे उस देशकी जो आज कल शिल्प, विज्ञान और अस्त्र शस्त्रका आकर है—फ्रांसका भय स्थान है—जो सारे यूरोपका मध्यस्थ है—जो सत्य, धर्म, दया, और सम्मानका स्थल है और जो सम्पूर्ण जगत्का गौरव माननीय है,—निन्दा इस तरह हो ।

खैर, मैं अपनी अवस्था विचार कर चुप हो रहा लेकिन मनमें बहुत बुरी लगी । कुछ दिन उन लोगोके साथ रहने तथा वहाँकी विलक्षण वस्तुएँ देखनेसे मेरा डर भय सब जाता रहा । उन दिनों मेरा मन ऐसा हो गया था कि अगर कहीं आप लोगोको देख पाता तो मैं आप लोगोकी छुट्टाई पर बहुत हसता और उतनाही अचरज करता जितना कि इन विराट पुरुषोंने मुझे देख कर किया था । जब महारानी हाथमें उठा कर मुझे आइनेके सामने कर देती तो मैं मारे स्नानिके मर जाता । हाय मैं इतना छोटा क्यों हुआ !

मैं कह चुका हूँ कि महारानीके एक बीना भी था । यह बीना होने पर भी तीस फुट लम्बा था । इसे देख कर न जाने क्यों मेरा जी कुट जाता था । वह भी मेरे जैसे तुच्छ जीवको देखकर घमण्ड करता था । जब वह मेरे सामने आता तो अकड़ कर चलता । नेत्र पर खड़े होकर जब मैं राव उमराओमें बोलता तब दुष्ट मेरी



छुटाई पर ताने मारता । मैं उसे भाग पड़ाता और कभी कभी हुन्ती लडनेके लिये इसीसे ललकाता भी था । एक दिन भोजन के समय बातचीत बातसे वज्र विगड बैठे और मुझे साराईमें भरे हुए काटोरिमें पटक कर लखा हुआ । मैं थिरके बल चिर पड़ा । अगर तैरना न जानता होता तो बड़ी मुश्किल होती । दाया भी संयोगसे वज्रा मीजुद न थी । महारानी उनके सारे व्यवसाई गई थी । आखिर दायाने दौड़ कर मुझे निकाल लिया । उतनेहीमें बहुतसी मलाई मैं खागया था । चाँट साट तो कुछ लगी नही पर कपडे नव खराब होगये थे । वामनजी पकड कर लाये गये और कोड़ेसे उनकी खूब खबर लीगई । वही मलाई जिसमें मैं पटका गया था सजाके बतौर उन्हें खिलाई गई । महारानी उनसे बहुत अप्रसन्न होगई । उसी समय वह दरवारसे निकाले गये । मैं बड़ा खुश हुआ । अगर वह रहता तो न जाने फिर क्या आफत मचाता ।

एक बार पहले उसने एक और भद्दी दिहली कौथी । महारानी बहुत हसी पर साथही बहुत गुस्से भी हुई । अगर मैं सुफारिश न करता तो वह उसी दिन निकाल दिया जाता । महारानी ने चरबी निकाल कर हड्डीको खड़ा कर दिया था । वामनजी महाराजने मौका पा मुझे उस हड्डीके भीतर कसर तक घुसेड दिया । मैं एक घड़ी तक उसी तरह खड़ा रहा । शरमके सारे दिसीको पुकारा भी नही । आखिर मैं निकाला गया । वामनजी को उस दिन भी कोड़े लगे थे ।

मेरी भीरुता पर महाराजी प्रायः ताना मारती और कहती “क्या तुम्हारे देशमें सभी ऐसेही बुजदिल और डरपोक हैं ?” इसका कारण सुनिये । गर्मीमें मक्खिया वज्रा बहुत सताती हैं । यह मक्खिया ऐसी वैसी नही अगन चिडियाके बराबर होती है । जब मैं खानेको बैठता तो ये कानके पास आकर भन भन करती और बहुत तङ्ग करती थी । कभी कभी खानेकी चीजों पर बैठ कर चग देती । वज्राके लोगोको वह बीट दिखाई नही पडती क्योंकि

उनकी आंखें बड़ी थीं लेकिन मेरे रामको तो सब साफ सालूस होता था । कभी नाक या बाघे पर बैठ कर ऐसा डङ्ग मारती कि मैं बेताब होजाता । इसीसे इन सक्खियोंसे मैं बहुत डरता था । जब यह भिनभिनाती तो मैं चौकन्ना होजाता था । वामनजी सक्खियां पकड़ कर अकसर मेरे मुँहके ज़ारी छोड़ दिया करते थे । मैं बड़ी फुर्तीसे उनके दो टुकड़े कर डालता था । मेरी इस फुर्तीकी बहुत तारीफ़ होती थी ।

एक दिन सबेरे टायाने पिछ्छरेको झरोखे पर रख दिया । मैं भी आफतका मारा पिछ्छरेका किवाड़ खोल कर मिठाई कलेवा करने लगा । मीठेकी गन्धने वीमियो भिड़ें घुस आईं । कुछ तो मेरी मिठाई उठा लेचली और कुछ मुँहके सामने भिनभिनाते लगीं । मैं सारे डरके घबरा गया । लाचार होकर मैंने कटागी निकाली । चारको उसी दम काट गिराया बाकी भाग गईं । फिर मैंने द्वार बन्द कर दिया । यह भिड़े तीतरके समान थी । फिर मैंने इनके डङ्ग निकाले । यह डेढ़ डेढ़ इंच लम्बे थे तथा सूईसे पैसे थे । उन्हें मैंने बड़ी हिफाजतसे रख लिया । विलायत लौट कर सबका दिखलाया । तीन तो एक स्कूलमें दे दिये और एक अपने पान रखवा ।

### पञ्चम परिच्छेद ।

अब मैं इन देशका कुछ संक्षेप वर्णन पाठकोंको सुनाया चाहता हूँ । राजधानीके आस पास कोई दो हजार मील तक मैं घूम आया हूँ । महाराज तो सीता प्रान्त तक जाते थे परन्तु महारानी इससे आगे कभी गई नहीं और मैं बराबर महारानीहीके सङ्ग रहता था । इन देशका नाम ब्रोवडिगनेस है तथा इसकी राजधानीका नाम है लर ब्रलग्रड । यह राज्य लग भग ६००० हजार मील लम्बा तथा चार पाँच हजार मील चौड़ा है । अतएव मैं कहता हूँ कि हमारे भूगोल विज्ञान बहुत भूलते हैं । वह कहते हैं कि

जालीफोर्नियाके बीचमें समुद्रके सिवा और कुछ नहीं है । पर मेरी राय मतासे इसके विरुद्ध थी । परमात्माके अनुग्रहसे मेराही विचार ठीक निकला । अब इस महादेशको अमेरिकाके पश्चिमीत्तर भाग से संयुक्त कर भूचित्र इत्यादिका पुनः संगोधन करना चाहिये । से इस विषयमें बहुत कुछ सहायता दे सकता है ।

यह देश एक प्रायद्वीप है । इसकी पूर्वोत्तर सीमा पर तीस मील ऊंची पर्वत माला है । यह सब ज्वालामुखी पर्वत है और यह स्थान भी ऐसा विकट है कि कोई उमपार जा नहीं सकता बड़े बड़े पण्डित भी नहीं बतला सकते कि पर्वतोंके परलेपार क्या है । शेष तीन दिशाओंमें महासागर लहरे मारता है । इस देशमें नामके लिये भी कोई बन्दरगाह नहीं है । समुद्रके किनारे जहा नदिया गिरती है इतने तुकीले ढाँके बिखरे हुए हैं तथा समुद्रमें तूफानका इतना जोर रहता है कि वहाँ किशोरी चलाना बहुतही कठिन है । इसी हेतु यहांके निवासी अन्यान्य देशोंसे वाणिज्य व्यापार करनेमें पूरे असमर्थ हैं । बड़ी बड़ी नदियोंमें जहाज देखे जाते हैं । इन नदियोंमें बहुत बढिया मछलिया होती हैं । यहाँ वाले इन मछलियोंको बहुत पसन्द करते हैं क्योंकि समुद्रकी मछलिया वैसीही होती हैं जैसे हमारे देशकी । इसलिये छोटी समझ कर यह लोग समुद्रकी मछलियोंको नहीं पकड़ते । इससे प्रकट होता है कि प्रकृतिने यह सब विलक्षण बड़ी बड़ी चीजें इसी देशके वास्ते सिरजी हैं । दूसरी जगह ऐसी चीजें क्यों नहीं होतीं इसका विचार विज्ञानी लोग करेंगे ।

यह देश खूब आबाद है । इसमें ५१ बड़े बड़े नगर तथा सीके लग भग नगर कोटवाले शहर हैं । छोटे छोटे गावोंकी तो गिनती नहीं । अब “लर ब्रलग्रड” का वर्णन सुनिये । बीचसे एक नदी बह गई है इसीके दोनों तीर पर राजधानी बसी हुई है । इसमें प्राय अस्सी हजार घर तथा छ. लाख मनुष्य बास करते हैं । यह चौन्न मील लम्बा तथा ४५ मील चौड़ा है ।

राजाका महल ठीक सहलके कायदेका तो था नहीं पर एक मीलके घेरेमें बहुतसे मकानोंका ढेर मालूम होता था । बड़े बड़े कमरेकी ऊँचाई दोसौ चालीस फुट थी । बस इसी अन्दाजसे लम्बाई और चौड़ाई भी समझ जाइये । हम लोगोंको एक गाड़ी मिली थी । इसी पर नगर देखनेको हम लोग जाया करते थे । मैं तो पिछरेमें रहता था—हां पिछरा अलबत्ते गाड़ी पर रख लिया जाता था । कहनेसे दाया कभी कभी हाथ पर भी ले लेती थी । तभी बाजारकी सब चीजें मजेमें दिखलाई पड़ती थीं । एक दिन एक दूकानके सामने गाड़ी खड़ी हुई । वहां बहुतसे भिख-मङ्गे जमा थे । वह सब मौका अच्छा देख गाड़ीको घेर कर खड़े होगये । वैसा भयानक दृश्य युरोपवालोंने कभी काहेको देखा होगा । उस भीड़में एक स्त्रीको देखा जिसकी छातीमें नासूर था जो फूल कर बहुत बड़ा होगया था । उसमें कई छेद थे । दो तीन छेद तो इतने बड़ेथे कि उनमें घुसकर मैं मजेमें छिप जा सकता था । एक आदमीकी गर्दन पर एक फुन्सी देखी । यह पाच दस्तूर जन (पशम) से भी बड़ी थी । एक आदमीके पैर दोनों कटे थे । लकड़ीके पाव लगे थे सो बीस बीस फुट लम्बे थे । सब से अधिक घृणा तो उन लोगोंके कपड़ों पर चीलड़ोंको रेंगते हुए देख कर हुई । इन चीलड़ोंके युथने सूअर कैसे थे । इस घृणित दृश्यको देख कर मेरा जी घबरा गया था ।

जिस पिछरेमें अब तक मैं बाहर लेजाया जाता था वह बहुत बड़ा था । दायाको इसके धरने उठानेमें बड़ी तकलीफ होती थी इसके सिवा गाड़ी पर भी रखनेमें बड़ी अड़चल पड़ती थी इससे महारानीने एक दूसरा छोटा सफरी पिछरा बनवाया । यह दस फुट ऊँचा, बारह फुट लम्बा तथा इतनाही चौड़ा था । इसके तीन ओर बीचमें तीन खिडकियां थीं जिनमें बाहरसे लोहेके तार की जाली मदी हुई थी । चौथी तरफ निधर खिडकी न थी दो मजबूत कींठें लगे हुए थे । इन्हींमें कामरवन्द परो कर सवार लोग

कसरसे पिञ्जरेको बांध लेते और सायने घोड़े पर रख लेते थे । एक झूला छतसे लटकता था । एक मेज और दो कुर्मिया पेचसे कमी हुई थी । इस पिञ्जरेसे मुझे बहुत आगस मिला । जब कभी दायाकी अवकाश नहीं मिलता तो कोई विग्यामी यादसी पिञ्जरे समेत मुझे घोड़े पर अपने आगे रख लेता और गह्वरकी सैर करा देता था । जिधरसे मेरी सवारी निकलती थी उधर एक मेलासा लग जाता था ।

यह एक बहुत सुन्दर मन्दिर है । इसका गुम्बज इस देशके सब मन्दिरोंसे ऊँचा है । इसके देखनेकी मुझे बहुत लालसा हुई । आखिर दायाकी साथ एक रोज वहाँ मैं गया । जितना ऊँचा इसे मैंने समझा था उतनाही पाया । यह तीन हजार फुटसे ज्यादा ऊँचा न था । यहाँके मनुष्य जितने लम्बे होते हैं उम हिसाबसे तो यह कुछ भी ऊँचा न था । हम लोगोके डीलके ख्यालसे विलायतमें इससे ऊँचे ऊँचे मकान हैं । जो हो, मन्दिर बहुत सुन्दर और मजबूत बना हुआ था । इसकी दीवार सौ फुट चौड़ी थी । यह पत्थरका था । चालीस चात्तीस फुटके पत्थर इसमें लगे थे । देवी देवता तथा महाराजाओंकी बड़ी बड़ी मूर्तियाँ लगी थी जो सब सङ्गमरमरकी थी । एक मूर्तिकी एक उगली टूट कर गिर पड़ी थी । मैंने उठाकर नापी तो चार फुट हुई । दाया मेरे खेलने के लिये उसे घर उठा लाई थी ।

महाराजकी पाकशाला सचमुच सुन्दर थी । इसका चूड़ा करीब छ सौ फुट ऊँचा था । चूल्हे भी बहुत बड़े बड़े थे । रसोई घरके वर्तन भाड़ेका पूर्ण वर्णन करनेके लिये यदि मैं बड़ी बड़ी वस्तुओंकी उपमा दूँगा तो पाठक मुझे झूठा समझेंगे और उधर कहीं यह पुस्तक ब्रीवडिगनेगकी भाषामें अनुवादित होगई तो महाराज तथा वहाँके निवासीगण अपनी वस्तुओंकी हीन उपमा देख कर बुरा मानेंगे । इसलिये इस विषयको मैं यही समाप्त कर देता हूँ ।

सहाराज अपनी घुड्यालमें कभी कभी छः सौसे अधिक घोड़े रखते थे। यह सब घोड़े ५४ से ६० फुट तक ऊँचे थे सहाराज की सवारी पर्य्य त्योहारसे जब निकलती ५०० सुन्दर सवार साथ चलते। पहले मैंने इसी दृश्यको अनिर्वचनीय समझा था पर जब मैंने व्यूह देखा तो मेरे छप्ते कूट गये। इस व्यूहका वर्णन आगे होगा।

पष्ठ परिच्छेद ।

अगर मैं इतना छोटा न होता तो मैं सानन्द उस देशमें वास करता। मेरी कुटाई देख बहावाले ताना मारते और हसते थे। इस कुटाईके कारण मुझे बहुत कष्ट उठाना पड़ा तथा नीचा देखना पड़ा। अपने अपमानका हाल अब मैं कुछ सुनाता हूँ दाया मुझे छोटे पिञ्जरेमें अकसर बगीचे ले जाती थी। कभी पिञ्जरेसे निकाल कर हाथ पर ले लेती और कभी टहलनेके लिये मुझको रविशो पर छोड़ देती थी। एक दिन वामन राम भी हमारे साथ बगीचे गये थे। यह घटना उसके निकाले जानेके पहलेकी है। दायाने टहलनेके लिये मुझे छोड़ दिया। मैं टहलते टहलते सेवके प्रेडोके नीचे जा पहुँचा। यह पेड़ भी ठुमके थे। मैंने जो बहलानेके लिये वामनसे जरा छेड़ छाडकी। वामनचन्दने भी लीला अच्छा देख सेवकी डालियोंको पकड़ कर जोरसे हिला दिया। फिर ब्रा था—लगी सेव मेरे लिर पर टपाटप गिरने। सेव भी ऐसे दौरे न थे। बड़े बड़े पीपेकी बराबर एक एक सेवथा। वे उन फालीकी चोटसे जमीनमें खेत गया। पर विशेष कुछ हानि नहीं हुई थी। वामनका कुत्तर मैंने माफ करा दिया क्योंकि छेड़ खाना पहले मैंने ली थी।

दूसरे दिन दायाने मुझे चरी चरी दृव पर खेतनेको छोड़ दिया और आप टहलती हुई कुछ दूर निव्वन गई। इतनेमें ओले गिरने लगे। ओलीकी चोटसे से दस दिन तक पेटास रहा। यह ओले अपने घातके मोलीने १८०० गुना बढ़े थे।

इस वगीचेमें सबसे भयानक घटना हुई सो सुनिये। मैं खेल रहा था और दाया दूसरी तरफ चली गई थी। इतनेमें सालीका एक उजला कुत्ता आया और मुझे सँभल उठा ले भागा अपने सालिकके सामने उसने आहिस्तेसे जमीन पर रख दिया। साली मुझे अच्छी तरह पहचानता था। वह महारानीके डरसे चटपट मुझको उठा कर दायाके पास ले आया। उधर दाया जब लौट कर आई तो मुझको न पाकर पुकारने और रोने लगी। मुझको सही सलामत पाया तो प्रसन्न हुई। मैं उस समय बेसुध सा था। महारानी सुन कर खफा होगी इसलिये यह खबर वही टवाटी गई। मैंने भी इस लज्जाजनक घटनाको प्रकाशित करना उचित नहीं समझा। एक दिन ऐसेही चील मुझ पर झपटी पर मैंने साहस करके तलवार निकाल ली फिर उसको घुमाता हुआ एक झुरमटमें जा छिपा। अगर मैं तलवार न निकालता तो चील जरूर उठा ले जाती। अब दाया मुझको अकेला नहीं छोड़ती थी। एक दिन मैं छछून्दरके बिलमें अकस्मात् गिर पड़ा। गले तक गडप होगया। चोट तो विशेष नहीं लगी लेकिन कपड़े सब खराब होमये। एक बार एक घोड़ेकी ठोकरसे मेरी फिल्लीकी हड्डी टूट गई थी।

और ज्यादा मैं क्या कहूँ छोटी छोटी चिड़िया भी मेरा अपमान करती थीं। वह सब निडर हो लापरवाहीके साथ मेरे आम पास फुदकती फिरती थी। एक बार एक चिड़ियाने तो हाथसे गोटी छीन लीथी। मैं इनसे किसीको पकड़नेके वास्ते हाथ बढ़ाता तो वह सब चोंच चलाती थीं। एक दफे मैं बड़ी बीरताके साथ एक चिड़ियाको लाठीसे मार कर दायाके पास ले चला। परन्तु अफसोस। सीनेके देन पड़ गये। वास्तवमें वह मरी नहीं थी लाठी की चोटसे बेहोश होगई थी। जब होशमें आई तो लगी पल्ल फटफटा कर मेरी खबर लेने। अगर एक आदमी दौड़ कर मेरी मदद न करता तो वह जरूर उड़ जाती। यद्यपि यह उस

देशकी छोटीसे छोटी चिड़िया थी तथापि हमारे यहांकी राजहंससे कहीं बड़ी थी ।

सहारानीकी सखियां देखने तथा कूनेके लिये मुझको अकसर अपने कमरोंमें बुलातीं । मैं दायाके सङ्ग तमाम जगह जाता था । जिया सब नङ्गा करके मुझको अपने अपने पेट पर सुलातीथी । इन सबकी देहसे एक ऐसी गन्ध निकलती थी कि जिससे मेरी नाक फटती थी । यह कहनेसे मेरी अज्ञा उन स्त्रियों पर जिन्हें मैं आदर की दृष्टिसे देखता हूँ कम न समझना चाहिये । अस्तु देहकी गन्ध भला जैसे तैसे सह भी लेता था पर जब वह सुगन्ध द्रव्य लगाती तो मैं बेहोश होजाता था । मैं समझता हूँ मेरी कुटाईकी अपेक्षा मेरी इन्द्रिया बहुत तीक्ष्ण हैं । जैसे इन विराट जीवोंकी गन्ध मुझको सह्य नहीं वैसेही लिलीपटवालोंकी मेरी नहीं थी । मैं बहुत सफाईसे रहता था तो भी उनकी नाकमें बटवू पहुँचही जाती थी । जो हो, सहारानी तथा दायाकी देहसे विलायती वीवियोंकी तरह सुगन्ध निकलती थी ।

सबसे दुःख मुझको इस बातका है कि यह औरतें मुझको नितान्त तुच्छ समझती थी । मेरा लेहाज ख्याल परदा कुछ भी नहीं करती थी । मेरे सागने नङ्गी देख कर कामोद्दीपनके बदले घृणा होती थी । मतलो आती थी और डर लगता था । इनके चमड़े मोटे और रूखे तथा बाल मोटे और लम्बे थे । अधिक व्या कहूँ इनके अङ्ग प्रत्यङ्ग देख मैं घबरा जाता था । यह जो कुछ पीती थीं उनको मेरे सामने त्यागनेमें भी तनक नहीं लजाती थी । इनमेंसे एक जो सबसे सुन्दर तथा जिमकी उमर १६ वर्षकी थी मुझको बहुत तङ्ग करती । कभी पकाड कर मुझको अपनी छाती पर ठिठा लेती और कभी न जाने क्या क्या करती । उन बातोंको दुर्लभ से अनुचित समझता हूँ । उसके हृदयरेपनके उत्र कर लेने उनके पास जानाही छोड़ दिया ।

एक दिन हम लोग दध खानका तलाश देखने गये । दयादि



यह दृश्य देखना पसन्द न था तथापि कौतूहल वश चलेही गये । वह समुद्र जिसका वध होनेवाला था एक कुर्मी पर बैठा था । हत्यारेने एकही हाथसे उसकी गर्दन धडसे गलन करदी । फिर क्या था लगा रताका फुहारा छूटने लगा । सिर भी बिकाट झण्डके साथ भूमि पर गिर पडा । मैं आधा सील दूर बचने पर रीं गरज सुन कर चौंक उठा था । एक बात कहनेको भूलती गया था वह यह कि हत्यारेकी तलवार चालीस फुट लम्बी थी ।

घर वारको याद कर जब मैं उठाम होता तो महारानी मेरे जी बहलानेकी चेष्टा करती समुद्र यालाका प्रसन्न छेड कर उसकी सब बातें सुनती थी । मेरे खेलनेके लिये एक छोटीनी नाव बनने की आज्ञा हुई । कारीगरने मेरे कहनेके अनुसार नाव बना कर तैयार करदी । पाल पतवार इत्यादि भी बन कर ठीक होगये । उसमें मेरे जैसे आठ आदमी सजेमे बैठ सकते थे । महारानी उसे देख कर इतना प्रसन्न हुई कि हाथमें उठाये महाराजके पास दौड गई । महाराज भी नावकी कुटाई पर बहुतही खुश हुए । उसी समय उसको चलानेकी आज्ञा मुझको हुई । मैं किशोरी समेत पानीमें भरे हुए एक चहबच्चेमें छीड दिया गया । जगह करायी इससे अपना पूरा हुनर दिखला न सका । आखिर महारानीने काठका एक कठौता बनवाया । वह तीनसौ फुट लम्बा, पचास फुट चौड़ा और आठ फुट गहरा था । वह खूब मजबूत बना हुआ था । वह पानीसे भर कर दीवारके सहारे भीतर कमरेमें रख दिया गया । सैला पानी निकाल देनेके लिये नीचे एक सूरख भी था । दो आदमी आसानीसे उसको पानीसे भर देते थे । वन इसीमें किशोरीको चला कर महारानीका तथा उनकी सहेलियोका मनोरञ्जन दारता क्योंकि मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि बहावी नदियों में नाव चला लेता । जब मैं पाल तागता तो स्त्रिया अपने पहीसे उममें हवा पहुचाती । जब वह थक जाती तो उनके छोकाडे फूँकसे पाल उडा देते थे । और मैं कभी दाये कभी बाये इच्छानुसार

किश्वीकी घुमाता था । जब खेल खतम होजाता तो दाया सूखने के लिये उसे खूँटीसे लटका देती थी ।

एक दिन मैं मरते मरते बच गया । छोकरने नौकाकी जब कठौते में रख दिया तो दायाकी सूखीने मुझे उसमें रखना चाहा । ज्योंही उसने उठाया मैं उसके हाथसे कूट गया । कुशल हुई मैं उसकी मालासे उलझ कर बच गया नहीं तो वहीं ढेर होजाता । इतनेमें दायाने आकर मुझे उबार लिया ।

कठौतेका जल तीसरे दिन बदला जाता था । एक दिन नौकरी की अमावधानीसे एक बड़ा मेडक कठौतेमें घुस आया । फिर उछल कर नाव पर आरहा और एक ओर छिप गया । मुझे यह मालूम न था । ज्योंही मैं पहुँचा किश्वी डगभगाने लगी । मैं इधर उधर देख रहा था कि वह मेडकानन्द कूद कर बीचमें आपहुँचे और फिर मेरे ऊपर नीचे चारो ओर कूदने लगे । स्वभावानुसार मेरे मुँह पर उसने मूत दिया । तमाम कपडे भीग गये । लाचार होकर डाड उठाया और उसे मार भगाया । इतना बड़ा मेडक मैंने कभी नहीं देखा था ।

सबसे भारी विपद मेरे ऊपर जो आई थी जरा उसका हाल सुनिये । उसवार मेरे प्राण बचनेकी कोई आशा न थी परन्तु ईश्वरेच्छासे बचही गये । बात यों है—वावर्चीखानेके एक सुन्शी के पास एक बन्दर था । दाया मुझे अपनी कोठरीमें बन्द करके कार्यवश कहीं चली गई थी । दिन गर्मीका था इससे खिडकिया सब खुली छोड़ गई थी । इसके सिवा पिछरेका द्वार तथा खिडकिया भी खुली थी । मैं बैठा बैठा कुछ सोच रहा था । यकायक आहत सुन कर चौक पड़ा । इधर उधर निगाह दौड़ाई तो देखा एक बन्दर झुल्लाचें मार रहा है । मैं बहुत डरा—उठनेकी हिम्मत न पड़ी । इस बीचमें बन्दर भगवान उछलते कूदते पिछरेके निकट आपहुँचे । आप बड़े प्रेमेसे पिछरेको देखने लगे । हर एक खिडकी में ताक भाक करने लगे । मैं डरसे एक कोनेमें दब गया पर आप

बाप साननीवाले थे ? आप बिलकाली सारते दांत निकालते इधर उधर ताक रहे थे। मैंने चाहा कि बिक्रीनेके भीतर छिप जाऊ लेकिन इतना समय कहां। ज्योंही उस बन्दरकी दृष्टि मुझ पर पड़ी उसने लपक कर कोटका दामन पकड़ लिया। मैंने भी जरा अपना जोर दिखाया पर कुछ लाभ न देख चुप होगया। आखिर वह मुझे बाहर खेच लाया। मां जैसे नडकेकी दूध पिलाती है ठीक वैसेही उसने अपने दाँयें हाथमें मुझे पकड़ लिया। मैंने फिर जोर किया तो उसने ऐसा दबाया कि मैं एक दम बेकाबू होगया। शेषमें मैंने कुछ छिड़छाड़ न करनाही उचित और उत्तम समझा। शायद उसने बन्दरका बच्चाही समझ कर मुझे गोदमें लिया था क्योंकि वह दूसरे हाथसे मेरा मुँह धीरे धीरे ममलता था। उसी समय दरवाजा खुलनेकी आहट हुई। वम वह उकल कर खिड़की पर जा धमका। वहासे एकही कलाहमें शीशेके छप्पर पर और फिर वहांसे परनाले परसे होता हुआ पड़ोसकी छतपर जा पहुँचा। एक हाथसे मुझे बराबर पकड़े था। मैंने दायाको चिल्लाते हुए सुना। वह बिचारी चिल्लाते चिल्लाते परेशान होगई थी। फिर तो तमाम महलमें कुहराम मच गया। नौकर चाकर अस्तव्यस्त हो इधर उधर दौड़ने लगे। इधर मुड़ेरेके ऊपर बैठ कर बन्दरराम मुझे खिल्ला रहे थे। मैं नहीं खाता तो वह चपत लगाता था। बहुतेनी पत्थर मार कर बन्दरको भगाना चाहा। परन्तु वह सब रोकने गये नहीं तो मेरी खोपड़ी जरूर उड़ जाती।

आखिर सौदिया लगाई गई। कई आदमी ऊपर चढ़ने लगे। बन्दरने यह सब मामला देख कर मुझे वहीं छोड़ा और आप नींदो ग्यारह हुआ। मैं पाचसौ गज ऊँची छत पर कुछ देर तक बैठा रहा। और भला क्या करता डरके मारे कलेजा कांप रहा था। यही मालूम होता था कि अब हवाने नीचे धकेला अब मैं गिरा। इतनेमें एक छोकरा मेरे पास पहुँचा। वह अपने पतलूनकी जेबमें रख कर कुशल पूर्वक नीचे ले आया।

बन्दरने न जाने क्या क्या मेरे मुँहमें भर दिया था इससे कुछ बन्द था—बोलनेकी सामर्थ्य न थी। दायाने सूईकी नोकसे मेरा मुँह साफ कर दिया। वमन होनेसे चित्त ठिकाने हुआ। कस-जोरी इतनी थी कि दो सप्ताह चारपाई पर पड़ा रहा। उस कपिने इतने जोरसे दबाया था कि दर्दसे हड्डिया टूटती थीं। महाराज महारानी मुझे देखनेके लिये बारम्बार आते थे। वह बन्दर जो मुझे लेभागा था मारा गया। महाराजने आज्ञादी कि अबसे ऐसे जानवर महलमें कोई न रखे।

मैं चढ़ा होकर जब महाराजको उनकी लुपाका धन्यवाद देने के लिये दरबारमें गया तो श्रीमान्ने पूछा “जब तुम बन्दरके हाथ में थे तब क्या सोचते थे ? उसका खिलाना तुम्हें कैसा मालूम हुआ ? वह खाना तुम्हें पसन्द आया था नहीं ? इत परकी ठंडी हवाने तुम्हारी भूख बढ़ाई या नहीं ?” तुम्हारे देशमें अगर बन्दर तुम्हें पकड़ लेता तो तुम क्या करते ?” मैंने कहा “श्रीमान् ! अब्बल तो हमारे देशमें बन्दर नहीं है जो है भी सो दूसरे देशसे तमा-शके लिये आये है। दूसरे यह इतने छोटे होते है कि एक दर्जन बन्दरसे मैं मजेमें मुकाबला कर सकता हूँ। और यह बन्दर तो जो मुझे पकड़ लेगया था हमारे देशके हाथीके बराबर था। इनको देखतेही मेरे देवता कूच कर गये थे। अगर मैं होशमें रहता तो जरूर अपने खंजरसे उसे मार भगाता।” यह सब बातें मैंने बड़ी वीरतासे कही। मेरी बात सुन कर सब कहकहा मार कर हस पड़े। मैं अपनी सूखता पर बहुत लज्जित हुआ। वास्तव में जो अपनेसे बहुत बड़े है उनसे घमण्ड क्या ! लेकिन विलायतमें यह बात नहीं है। वहाँ मैंने देखा है कि अदनासे अदना भी बड़ोके साथ टांगे अडाता है।

एक दिन गोबरके ढेरको देख कर उसके फाटनेकी इच्छा हुई। ज्योंही फाटने लगा गडापसे घुटने तक उममें डूब गया। यह दिवंगी सुन कर भी सब कोई खूब हँसतेथे। मतलब यह कि कुछ दिन तक मैंही दरवारका विद्वक हो पड़ा था।

## सप्तम परिच्छेद ।



मैं राजदरबारमें हफ्तेमें दो बार जाता था । महाराजकी अक्सर बाल बनवातेही पाता था । छुरा मामूली तलवारसे दूना लम्बा था । देशकी परिपाटीके अनुसार महाराज सप्ताहमें दो बार बाल बनवाते थे । मैंने नाईसे बड़े बड़े चालीस पचास बाल चुनवा कर ले लिये । इन बालोंकी मैंने एक कंधी बनाई मंगी कंधी टूट गई थी । इसीसे काम निकालता था । महाराजी जब बाल भाडती तो उनकी बाल टूटते थे । मैंने सब की वीन वीन कर जमा किया । फिर दो कुर्सिया इन्हीवालोंसे बना डालीं । यह दोनों कुर्सिया महारानीको अर्पण कीं । महारानीने उन्हें अपने कमरेमें रक्खा उन्होंने कई बार मुझे उन पर बैठनेके लिये कहा पर मैं नहीं बैठा । मैंने सोचा जो बाल एक समय महारानीके सिरकी शोभा बढ़ातेथे उन पर बैठना उचित नहीं । महारानीके बालसे मैंने एक बटुआ भी बनाया था । इस पर महारानीका नाम सुनहले अक्षरोंमें लिखा था । यह बटुआ महारानीकी इच्छानुसार मैंने दायाको दिया । यह बटुआ केवल देखनेहीका था । इसी लिये वह इसमें छोटे छोटे हलके सिक्कोको छोड़ और कुछ नहीं रखती थी ।

महाराज गाने बजानेके अच्छे प्रेमी थे । वहा प्रायः गाने बजाने की चर्चा होती थी । मैं भी कभी कभी बुलाया जाता था । मैं सेज पर पिछरेमें बैठ कर गाना सुनता था । उस गानेमें इतना शोर गुल होता कि सुर ताल कुछ भी समझ न पड़ती थी । अगर हमारे यहांके बहुतसे ढोल और भोंपो इकट्ठे करके बजाये जावें तो भी उस गुल गपाडेके बराबर न हों । पिछरेको गानेवालीसे दूर रखवाता और सब किवाड बन्द कर लेता तब उनका गाना कुछ बुरा मालूम नहीं होता था ।

मैंने सितार बजाना भी लडकपनमें कुछ सीख लियाथा । दाया के पास भी एक बाजा था । इसकी घनावट ठीक सितारसी थी

इस लिये मैं उससे भी सितारही कहता । एक उस्ताद हफ्तेमें दो बार आकर दायाको सितार सिखला जाता था । मैंने सोचा मैं भी एक दिन सितार बजाकर महाराज और महारानीको प्रसन्न करूँ । पर मेरे योग्य सितार कहा ? दायाका था सो ६० फुट लम्बा और उसकी सुन्दरिया एक एक गजके फासले पर थीं । ऐसा सितार मैं क्या मेरे लडकदादा भी बजा सकते नहीं । निदान मैंने महाराजके कारीगरोसे एक सितार नहीं सितारी बनवाई । उसीकी दरबारमें मैंने बजाया । सब सुन कर बहुतही प्रसन्न हुए ।

मैं पहलेही लिख चुका हूँ कि महाराजकी समझ अच्छी थी । वह प्रायः मुझे पिछरे समेत बुलवाते थे । पिछरा मेज पर रखा जाता था । मैं श्रीमान्के आज्ञानुसार कुर्मी निकाल कर श्रीमान्के तीन गजके फासले पर पिछरेके ऊपर बैठता था । बैठनेसे श्रीमान्के श्रीमुखके कुछ कुछ बराबर होजाता था । एक दिन साहस करके मैंने कहा “महाराज । उस दिन श्रीमान्ने युरोपके तथा अन्यान्य देशके राजाओं पर जैसी घृणा प्रकटकी थी वह श्रीमान्जैसे गुणवान पुरुषको शोभा नहीं देती । शरीर बड़ा होनेसे बुद्धि भी बड़ी होगी यह सोचना ठीक नहीं । हमारे देशमें तो जो अधिक लम्बा होता है वही मूर्ख कहलाता है । पशु पक्षी कीड़े मकोड़ोमें भी यही बात है—चिट्ठी मधु मक्खिया प्रभृति और जीडोंकी अपेक्षा अधिक परिश्रमी शिल्पी तथा सुघड होती है । श्रीमान् चाहें मुझे जितनाही छुट क्यों न समझते हो परन्तु मेरी इच्छा यही है कि मैं श्रीमान्की किसी विशेष सेनामें आज और कुछ उपकार विशेष करूँ । महाराजने बड़े ध्यानसे मेरी बातें सुनी और उर्मा दिनसे वह मुझे पहलेकी अपेक्षा अच्छी दृष्टिसे देखने लगे । महाराज बोले “अच्छा तुम अपने देशकी मन्त्री मन्त्री सब बातें कह सुनाओ । अन्यान्य राजाओंकी रीति नीति भी सुन लेना चाहिये । अगर कोई अच्छी बात सुननेमें आवेगी तो उसे ग्रहण कर अपने राज्यका उपकार करूँगा ।”

प्रिय पाठकगण । प्यारी जन्मभूमिकी प्रकृति प्रशंसा करनेके समय डिमस्थिनीज या मिमिरो ( प्रमिडवक्ता ) की वाग्गति मेरी जिह्ममें आजाय यह इच्छा मेरे मनमें कितनी बार हुई थी सो आपही विचार कर देखें ।

मैंने यों कहना आरम्भ किया “हमारा देश दो टापुओंके मेलसे बना है । इसके तीन बड़े बड़े हिस्से हैं । यह समस्त एक राजा के अधिकारमें है । इसके अतिरिक्त अमेरिकामें भी हम लोगोंके उपनिवेश है । हमारे देशकी भूमि उपजाऊ तथा जल वायु सुन्दर है । पार्लियामेण्ट नामकी वहां एक बड़ी सभा है । इस सभामें दो दल हैं । एकका नाम है “हाउस आफ लार्ड्स” और दूसरेका “हाउस आफ कामन्स” पहले दलमें पुराने घरानेके प्रतिष्ठित कुलीन लोग हैं ।’ युद्ध विद्या और कला कुशलताकी असाधारण परीक्षा देकर यह लोग राजा और राज्यके मन्त्री, व्यवस्थापकसभा के सभ्य तथा उस उच्च न्यायालयके विचारकर्त्ता नियुक्त होते हैं जिसकी फिर अपील नहीं । सचार्ड, सदाचार और साहसके साथ स्वदेश तथा राजाकी रक्षाके निमित्त सदा प्रस्तुत रहते हैं । यही लोग देशके सर्वे गौरव और रक्षक हैं । यह लकीरके फकीर हैं । इनमें कितनेही पवित्रात्मा भी हैं जो विषय यानी धर्माध्यक्ष कहलाते हैं । धर्म और धर्मापदेष्टाओंका तत्वावधान करनाही इनका कर्त्तव्य है । पादरियोंमें जो सबसे पवित्रात्मा और विद्वान होता है वही विषय बनाया जाता है । वास्तवमें यही सबके गुरु हैं ।

“दूसरे दलमें देशके मुख्य मुख्य भलेमानस हैं । यह स्वेच्छा पूर्वक अथवा देशवसियोंके द्वारा मनोनीत होकर सभ्य होते हैं । सुयोग्य और देशानुरागी लोगही सबकी ओरसे प्रतिनिधि बनाये जाते हैं । यही दोनों दल इङ्गलेण्डकी स्वाधीनता और शासन प्रणालीके मुख्य अङ्ग हैं । यही दोनों दलवाले राजाके सङ्ग बैठकर नए कानून भी बनाते हैं ।

इसके उपरान्त मैंने कहा कि प्रजागणके स्वत्व तथा शान्ति रक्षा के निमित्त विचारालय है । आर्डन कानूनके जाननेवाले लोग इन सब विचारालयोंमें विचारपतिका आसन ग्रहणकर लड़ाई भगडेका निवटेरा करते तथा भले आदमियोंकी रक्षाके लिये अत्याचारियोंको दण्ड देते हैं । हमारे राजकोषका प्रबन्ध दूरदर्शितासे पूर्ण है । जल और धन दोनोंही राहसे शत्रुओंके दात खड़े करनेमें हमारी सेनाका खूब लाभ है । हमारे यहां लाखों मनुष्य स्वच्छन्दता पूर्वक वास करते हैं और सब न्यारे न्यारे मतके हैं । राजनीति जानने वालोंका भी एक दल अलग है ।

इसके सिवा मैंने उन खेल तमाशोंका भी बखान किया जिनसे हमारे प्यारे देशकी नामवरी बढ सकती थी । सौ वर्ष पहलेका इतिहास भी मैंने संक्षेपसे कह सुनाया ।

पांच दिनमें मैंने इस कथाको पूरा किया था । प्रति दिन कई घण्टे तक कथा होती थी । महाराज बड़े ध्यानसे सुनते थे । जो विषय अच्छे जान पड़ते थे अथवा जिनके बारेमें कुछ पूछना था उन सबको महाराज एक पोथीमें लिखते जाते थे । पाठकगण । मैंने अपने व्याख्यानका केवल सारांश यहां लिखा है वहां तो खूब लम्बी चौड़ी वक्तृता दी थी ।

जब मैं अपनी बात पूरी कर चुका तब कुछे दिन महाराजने पोथी देख कर कई प्रश्न किये और अपना सन्देह मिटाया । आपने पूछा “तुम्हारे देशके बड़े आदमियोंके लडकोंकी मानसिक और शारीरिक उन्नतिके लिये कौन कौन उपाय किये जाते हैं ? लडके अपनी पहली तथा पढनेवाली उमरमें किस प्रकार समय बिताते हैं ? जब कोई सहश विलुप्त होजाता है तब उस अभावको पूर्ण करनेके लिये क्या किया जाता है ? नये लौर्ड बननेके लिये किन गुणोंकी आवश्यकता है ? लौर्ड बननेके लिये राजाकी खुशामद तो नहीं करनी पड़ती है—रानीकी सखियोंको या प्रधान मन्त्रीको रुपये तो देने नहीं पड़ते हैं अथवा सर्वसाधारणकी वुराई चाहने



वाले किसी दलकी वृद्धिकी आवश्यकता तो नहीं पडती है ? इन लीडोंको अपने देशके कानूनका कितना ज्ञान रहता है ? अडोमी पडोसीकी जमीन जायदादका भगडा निवटानेके लिये जितने ज्ञान का प्रयोजन होता है उतना यह किम प्रकार अर्जन करते हैं। क्या यह लोग सदा निर्लोभ रहते और कभी पक्षपात नहीं करते हैं ? क्या आवश्यकता होने पर भी कभी कोई घुम वर्गर नहीं लेता है ? जिन पादडियोकी बात तुमने कही क्या वह सब केवल धर्म ज्ञान और मदुव्यवहारही के कारण पार्लियामेण्टके मेम्बर होते है ? क्या मेम्बर होनेके पहले इन पादडियोकी समयके अनुसार व्यवस्था देनेकी आदत नहीं रहती है ? और जब यह साधारण पादरी ये उस समय भी क्या किसी बडे आदमीके टुकडे तोड कर उसकी हा में हा नहीं मिलाते थे ? अगर मिलाते थे तो मेम्बर होने पर फिर उस बडे आदमीकी खुशामद करते है या नहीं ?

“हाउस आफ कामन्सके सभ्य चुने जानैका क्या नियम है ? रुपयेवाले विदेशी रुपयोके जोरसे धनहीन गंवारीसे “वोट” सग्रह कर सभ्य होजाते है या बुद्धिमान देशवासीही चुने जाते हैं ? जिस काममें कुछ तलब तनखाह नहीं उसके लिये लोग इतना ललचाते क्यों है ? इस बेगारके लिये इतनी हाय हाय क्यों ? अपना सर्वस्व नष्ट करके इस सभामें घुसनेके वास्ते लोग इतना क्यों मरते है ? ऐसे परोपकारमें सत्यका अभाव प्रतीत होता है। क्या इन महोत्साही महात्माओंकी घूसखोर मन्त्रीके मेलसे मन्द बुद्धि और अत्याचारी राजाकी ठकुरसुहातीके लिये प्रजाभातकी बुराई करके अपने खर्चे और मेहनतके बदलेमें धन मूसनेका कुछ ख्याल तो नहीं रहता है ?” और भी बहुतसे प्रश्न महाराजने किये थे जिनका उल्लेख मैं यहा उचित नहीं समझता हूँ।

फिर महाराजने अदालतीका प्रसङ्ग छेडा। इस विषयकी मैं अच्छी तरह समझा सकताहूँ क्योंकि एक बार मैं भी मुकद्दमा लड हूँ। पहले अपना सब खाहा किया पीछे खर्च समेत डिग्री

मिली। महाराजने कहा “न्यायान्याय विचारनेमें कितना समय तथा कितने रुपये लगते हैं ? झूठे बनावटी मुकद्दमेमें वकील वारिष्ठर स्वाधीनता पूर्वक बहस कर सकते हैं या नहीं ? न्यायकी तराजू में धर्म या राजनीति सम्प्रदायके लोगोका कुछ बोझ है या नहीं ? इन वकील वारिष्ठरोंको न्यायका साधारण ज्ञान है या केवल आटो-शिक, जातीय और स्थानीय व्यवहारोंहीका ? वकील या जज जिस कानूनके अनुसार बहस या विचार करते हैं उसके बनानेका उन्हें कुछ अधिकार है या नहीं ? वकील वारिष्ठरण एक बार जिस विषयको बहस करके मण्डन कर चुके हैं मौका पडने पर फिर उसीको खण्डन करनेके लिये नजीर पेश करते हैं या नहीं ? विशेषतः यह कभी हाउस आफ् कमन्सके सदस्य होते हैं या नहीं ?”

अब खजानेकी बारी आई। मैंने कहा था कि हमारे यहां प्रायः पचास लाख पाउण्ड सालमें टेक्सके आते हैं। परन्तु महाराज को मेरी बातका विश्वास नहीं हुआ। जब मैंने टेक्सोके नाम गिनाये तो पचासके दूने सौ लाखकी नीवत पहुँची। तब आपसे चुप न रहा गया। आप बोल उठे “तुम्हारी रीति नीतसे हमारे राज्यको लाभ पहुँच सकता है इसमें सन्देह नहीं परन्तु इतनी आमदनी होने पर भी तुम्हारे राजा सामूली आदमियोंकी तरह ऋण ग्रस्त क्यों होजाते हैं ? तुम लोगोके सहाजन कौन हैं ? देना चुकानेके लिये तुम लोग कहासे रुपये पाते हो ? तुम्हारे यहा अकसर युद्ध होता है और उसमें बहुत खर्च पडता है। इससे मालूम होता है कि तुम लोग बडे भगडालू हो। सेनापति तो राजासे अधिक धनवान् होते होंगे ? व्यापार, सन्धि अथवा सीमा रक्षाके सिवा तुम्हें अपने टापूसे बाहर जानेका क्या काम है ? शान्तिके समय भी सेना रखके व्यर्थ खर्च बढ़ानेसे क्या लाभ ? जहाके मनुष्य स्वाधीन हैं वहा तलब देकर सेना रखनेकी क्या दरकार है ? अगर तुम लोगोकी मरजीके मुतादिक राजा शासन करता है तो फिर डर किसका ? किससे लडनेके लिये फौज रखते हो ? क्या रहस्य लोग

अपने अपने घरकी रक्षा बालबच्चोंके साथ मिल कर उन लुट्टोमें जो दूसरोंके गले पर कुरी चला कर रूपया पैदा करते हैं अच्छी तरह नहीं कर सकते हैं ? बाजारू चौकीदारोंकी अपेक्षा अपनी रक्षा आप कहीं अच्छी होगी।”

हमारे यहाँके गणितकी सुन कर महाराज बहुत हसे। हमारे गणितको वह अनूठा बतलाते थे। सबसे अच्छे तो उन्हें यह सुन कर हुआ कि विलायतमें मनुष्य गणना राजनैतिक धार्मिक आदि सम्प्रदायोंकी गिन कर पूरी होजाती है। आपने यह भी कथन किया कि जिन लोगोंकी राय सबको हानि पहुँचानेवाली है वह लोग अपनी अपनी राय बदलनेके बदले उसे छिपाके क्यों नहीं रखते हैं ? विष बाजारमें बेचनेसे हानि है कुछ घरमें छिपा कर रखनेसे नहीं। अगर राजा राय बदलनेके लिये लोगोंको लाचार करेगा, तो उसका अन्याय और यदि छिपानेके लिये नहीं कहेगा तो निर्बलता प्रगट होगी। अतएव सबको अपनी अपनी राय छिपा कर रखना चाहिये।

मैंने कहा था कि हमारे देशमें बड़े आदमी आमीट प्रमोदके लिये जुआ खेलते हैं। इस पर महाराजने पूछा “किस उमरके लोग जुआ खेलते हैं और कब कीड देते हैं ? कितना समय इस काममें लगाया जाता है ? क्या जुएमें कभी कोई अपना सारा धन नष्ट नहीं कर देता है ? नीचे जातिके जुआरी धन पैदा करके बड़े आदमियोंको अधीन कर लेते हैं या नहीं ? कुरी सड़तमें उम्हे खेंच लाते हैं या नहीं—मानसिक उन्नतिसे उन्हें विमुख कर देते हैं या नहीं ? जो बड़े आदमी जुआ खेल कर दरिद्र होजाते हैं क्या वह फिर दूसरों पर हाथ साफ नहीं करते हैं ?”

गत सौ वर्षका इतिहास मैंने कह सुनाया तो महाराजको बहुतही आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा “क्या तुम्हारे देशमें केवल पडयन्त, विद्रोह, खून खराबी, नरबलि, समाजविप्लव, देशनिकाला, इत्यादि भरा हुआ है ? यह सब तो लोभ, विवाद, कपटता,

विश्वासघात, नृशंसता, क्रोध, पागलपन, घृणा, ईर्ष्या, द्रोह, विषय वासना, और उच्चभिलाषाहीके फल है ।

दूसरे दिन महाराजने बड़े श्रमसे मेरे व्याख्यानके सार भागको कह चुनाया और अपने प्रश्नोंको मेरे उत्तरसे मिलाया । फिर हाथसे मुझे लेकर धीरे धीरे पीठ ठोकते हुए श्रीमान्ने प्यारसे जो कुछ कहा था सो आज तक मैं नहीं भूला हूँ । आपने कहा “ऐ मेरे नन्दे मित्र ! तूने अपने देशकी बहुत सुन्दर प्रशंसा सुनाई । तेरे कहनेसे मुझे अब अच्छी तरह मालूम होगया कि व्यवस्थापक होनेके लिये मूर्खता, सुस्ती और पापाचरणकी बहुत जरूरत है । जो कानूनको उल्ट पलट करने, बिगाडने और बालकी खाल निकालनेमें निपुण होते हैं वही तुम्हारे यहा आईनकी व्याख्या, वक्तृता तथा उसके अनुकूल काम भली भाँति कर सकते हैं यह मुझे अब मालूम हुआ । तुम्हारे यहाँकी कोई कोई बातें पहले तो अच्छी थी पर अत्याचारके कारण धीरे धीरे मिटती जाती है और बहुतसी तो एक दम लुप्त होगई । जो कुछ तूने कहा उससे प्रगट होता है कि विलायतवाले किसी विषयमें पूर्णता प्राप्त करना नहीं जानते और यह तो जानतेही नहीं कि मनुष्य अपने गुणहीके प्रतापसे बड़े होते, पादरी दया और ज्ञानसे बढ़ते, सिपाही आचरण और साहससे विख्यात होते, जज न्यायसे यशके भागी होते, व्यवस्थापक देशानुरागसे तथा राजमन्त्री बुद्धिमानीसे प्रख्यात होते हैं । तूने अपना सारा समय देशाटनहीमें बिताया है इसलिये शायद तू अपने देशके बहुतसे पापीसे बचा होगा । जो कुछ तूने कहा और जो कुछ मैंने सुना उससे मुझे मालूम होगया कि तुम लोग बड़े भयानक विपैले कीड़े हो । सत्तारमें ऐसे कीड़े और नहीं होंगे ।

अष्टम परिच्छेद ।

मैं नितान्त सच्चा हूँ इसीसे यह सब बातें लिखी हैं अन्यथा कदापि न लिखता । मेरी “स्वर्गादपि गरीयसी” जन्मभूमिकी

निन्दा होती थी और मैं खड़ा खड़ा सुनता था । पर मैं करही क्या सकता ? अगर कुछ कहता तो लोग हत्तीमें उड़ा देते । इसीसे मैं चुप रहा । मैं बड़े फेरमें पड़ गया था । महाराज इतना खोद खोद कर सब बातोंको पूछते थे कि मैं कुछ छिपा न सका । तथापि जहां तक बना मैंने छिपानेकी चेष्टाकी । महाराजके सब प्रश्नोंका उत्तर मैंने बहुत थोड़े शब्दोंमें गडबड मडबड दे दिया । अपने जानते मैंने बहुतसी कुरतियाँ और झुचालीको टांपना चाहा पर हुआ नहीं ।

महाराज विचारका इसमें क्या टोप है ? वह दुनियाके एक छोरमें रहते हैं । भिन्न भिन्न जातियोंकी रीति नीति वह क्या जाने ? इस वास्ते नई नई बातें सुन कर उनका अचरज या असम्भव मानना कुछ विचित नहीं है । कूएके मेडक वनसे बुद्धिमें पक्षपात और विचारमें ओझापन आही जाता है । परन्तु हम और यूरपके सभ्य देश इस दोषसे बचे हैं । ऐसे दूर देशके राजाके पाप पुण्यके विचारोंको मनुष्य मात्रके लिये आदर्श बनाना जरा टेढ़ी खीर है ।

जो कुछ मैंने कहा है उसको दृढ़ करने तथा परिमित शिक्षाका जघन्य फल दिखलानेके लिये एक बात सुनाता हूँ । पर बहुत कम लोग इसका विश्वास करेंगे । चाहे कोई विश्वास करे या न करे मैं बात सच्ची कहूँगा । मैंने महाराजकी प्रसन्न करनेकी आकाक्षा से बारूद और तोपकी प्रशंसा करके कहा “तीन चार सौ वर्षसे यहां बारूद नामकी एक बुकनी चली है । इस बारूदके बड़े भारी ढेरको एक छोटीसी चिनगारी पल भरमें स्वाहा कर देती है और यह विजलीसी कड़क कर आकाशमें उड़ जाती है । लोहे या पीतल के चोंगीमें अन्दाजसे बारूद और लोहे या शीशेकी गोलियां भर कर पलीता दागतेही गोलियोंकी शक्ति अपार होजाती है । फिर किसकी सामर्थ्य जो इनकी गतिको रोके ? इन्ही चोंगीका नाम बन्दूक है । जिनमें बड़े बड़े गोले भरे जाते हैं उनका नाम तोप है ।

तोपसे केवल मनुष्यही नहीं मरतेहैं, बड़े बड़े किलोंकी दीवारें भी रसातलमें पहुँच जाती हैं और आदमियोंसे भरे भराये जहाज जहाँके तहाँ विलीन होजाते हैं । इस लोग प्रायः इन्हीं तोपोंकी मददमें किले तोड़ फोड़ कर देखल कर लेते हैं और शत्रुओंकी सेना सहार कर विजय प्राप्त करते हैं । इसके बनानेकी तरकीब मैं जानता हूँ । इसके मसाले सहज और सस्ते हैं । मैं सहाराज के कारीगरोंको तोप, बन्दूक, बारूद वगैरा बनानेका उपाय बता सकता हूँ । यहाँके सौ फुटसे ज्यादा लम्बी तोप न होनी चाहिये । इस तोपके द्वारा मजबूतसे मजबूत नगरकोट पलभरमें उड़ सकता है और ससूची राजधानी पलक मारते मलानाश होसकती है ।”

मेरी बात सुन कर महाराजके होश हवास उड़ गये । वह साधर्यसे बोल उठे “क्या कहा तोप और बारूद । ताज्जुब है कि तुम्हारे जैसे कौड़े मकोड़ेभी ऐसी ऐसी अमानुषिक बातें सोचते हैं । भालूम होता है कि किसी पिशाचने मनुष्य जातिकी जड़ काटनेके लिये यह सब यन्त्र पहले पहल निकाले हैं । खून खराबीकी बातें कहनेमें तेरा मन जरा भी न डरा । वेधडक बोलता चला गया । तेरी छाती बड़ी कड़ी है । मैं शिल्प या श्रष्टिक नूतन आविष्कार में जितना प्रसन्न होता हूँ उतना और किसीसे नहीं । मेरा आधा राज्य दाँहे चला जाय पर मैं इस निगोड़ी तोपको अपने यहा घुमने न दूँगा । और तुम्हें भी अगर जान प्यारी हो तो फिर इसकी चर्चा मत चलाना ।”

अइह । चित्तकी महीर्णता और छोटे विचारोंका भी कैसा अद्भुत प्रभाव है । परस बुद्धिमान, सकल विद्यानिधान नीति कुशल, प्रजा प्रिय महाराजने जो अपने सद्गुणोंसे प्रतिष्ठित, सम्मानित और गर्वपूजित हैं उस मयोगको जिनकी द्वारा वह अपनी प्रजाके धन और प्राणके पूरे अधिकारी हो सकते थे योंही हाथसे निकल जानें दिया । यूरपवालोंको ऐसा मयोग कभी सपनेमें भी नहीं मिलता है । अगर मिला जाय तो वह कदापि उसे न छोड़ें । मैंने कुछ

सुयोग्य सन्ताराजकी निन्दा करनेकी इच्छामें यह नहीं कहा है परन्तु मैं जानता हूँ कि महाराज अपनी इस कार्यवाहीसे हमारे पाठकोंकी दृष्टिमें बहुत हलक हो जायगे । लेकिन एक बात है— यूरोपके विज्ञ पुरुषोंने जैसे राजनीति (Politics) का भी एक शास्त्र बना डाला है वैसा इन लोगोंने अब तक नहीं बनाया है क्योंकि यहाँ विद्याका प्रचार अभी अच्छी तरहसे नहीं हुआ है । वस इसीसे यहाँवालोंमें यह दोष है । मुझे याद है एक दिन बातचीत में जब मैंने महाराजसे कहा कि हमारे यहाँ तो शासन विषयक बहुतसी छपी हुई पोथियाँ हैं तो वह हम लोगोंकी समझको बहुत भद्दी कहने लगे । राजा या मन्त्रीके रहस्य, मस्कार और षडयन्त्रको वह घृणित समझतेथे । जिन राज्यमें कोई गनु वा प्रतिद्वन्द्वी नहीं है । वहाँ “राज्यके रहस्य” (Secrets of State) से क्या तात्पर्य है सो वह समझ न सके । वह राज्य शासनका अभिप्राय केवल साधारण ज्ञान, न्याय और दया तथा दीवानी और फौजदारी मुकद्दमोंको जल्दी फैसल करना आदि बतलाते थे । उनकी रायसे जिस भूमिमें एक सेर अन्न पैदा होता है उसीमें दोसरे उपजानेवाला एक किमान देशका जितना उपकार करता है उतना राजनीति जाननेवाले सब मिल कर भी नहीं कर सकते हैं । अन्न पैदा करने वाले छापकही देशके सबे गौरव है ।

इन लोगोंकी विद्या बहुत दोषयुक्त है । यह केवल धर्मनीति, इतिहास, काव्य तथा गणितमें पारङ्गत होते हैं । परन्तु गणित उतनाही सीखते हैं जितना कि नित्यप्रतिके व्यवहारमें, छापि तथा शिल्पकी उन्नतिमें काम आता है । हम लोगोंमें तो ऐसी विद्याका कुछ आदर नहीं है । विचार, पदार्थ, विज्ञान और वेदान्तकी बातें तो उनके मपतिष्कमें किसी तरह भी मैं घुसा न सका ।

यहाँकी वर्णमाला केवल २२ अक्षरोंकी है । वस कानून भी यहाँ इतनेसे अधिक शब्दोंके नहीं होते हैं । परन्तु वास्तवमें विरले ही कानून इतने शब्दोंके होते हैं । कानूनकी भाषा अत्यन्त सरल

और स्पष्ट होती है। कानूनका दो तरहसे प्रर्थ लगाना यहांके लोग जानते हैं। माईन कानूनकी टिप्पणी करनेसे प्राग् दख होता है। दीवानी फीजदारी मुकद्दसेकी नज़ीरें इतनी कम पाई जाती हैं कि यहांके लोग इस विषयके चातुर्यका अभिमान करही नहीं सकते हैं।

चीनियोंकी तरह इनके यहां भी छापेका प्रचार बहुत दिनोंसे है। यहां बहुत बड़े बड़े पुस्तकालय नहीं हैं। सबसे बड़ा पुस्तकालय महाराजका कहा जाता है उसमें भी हजारसे अधिक पोथियां नहीं हैं। यह सब पुस्तकें बारह सौ फुट लम्बी गैलेरीमें सजाई हुई हैं। मुझे महाराजकी आज्ञा थी मैं जो किताब चाहता था लेकर पढता था। महारानीके कारीगरोंने लकड़ीकी पचीस फुट जंची एक सीढ़ी बनादी थी जो दायाके कमरेमें रखी रहती थी। इसके ऊंडे पचास पचास फुट लम्बे थे। यह एक ठौरसे दूसरी ठौर उठाकर रखी जा सकती थी। सीढ़ीका निचला हिस्सा दीवारकी जडमें दस फुट दूर रहता था। जो पोथी मैं पढना चाहता था उसे दीवार के सहारे खड़ी कर देता था। फिर मैं सीढ़ीके ऊपरसे पढना शुरू करता—पत्तिकी लम्बाईके अनुसार आठ दस कदम दायें बायें सरकता हुआ नीचे उतरता था। इस प्रकार पढ कर एक पृष्ठ समाप्त करता और पुन ऊपर चढ कर दूसरे पन्नोंमें हाथ लगाता। पन्ने पलटनेके निमित्त दोनों हाथोंसे मदद लेनी पडती थी क्योंकि पन्नों की लम्बाई पन्द्रह बीस फुट और मुटाई दफतीके समान थी।

इन लोगोंकी रचना स्पष्ट, ओजस्विनी और कोमल होती है पर अलङ्कार युक्त नहीं। यह लोग बहुतसे अनावश्यक शब्दोंका प्रयोग और विविध प्रकारका वर्णन नहीं करते हैं। मैंने इनकी बहुतसी पोथिया पढ़ी हैं। विशेष कर इतिहास और नीति ग्रन्थों अधिक देखे हैं। दायाके सोनेके कमरेमें एक छोटीसी पोथी धरी रहती थी मैं प्राय इन्की पढता था। यह दायाकी गुरमानीकी पोथी थी जो नीति और उपामनाकी पुस्तकोंका कार



बार करती थी । इस पुस्तकमें मनुष्य जातिकी निर्व्वन्तताका वर्णन था । स्त्रियों और गवारोंके सिवा कोई पण्डित इसका आदर नहीं करता था । जो हो, इस पुस्तकके पढ़नेका मुझे बहुत चाव हुआ । इसलिये इसकी मैंने पढा । पढ भव देखा कि ग्रन्थकारने यूरोपके नीति विशारदोंके समस्त साधारण विषयोंका उल्लेख करके लिखा है कि मनुष्य स्वभावहीमे कैसा चुद्र, कैसा घृणित और कैसा अमहाय है । इतना असमर्थ है कि जप्ली जानवरोसे क्या हवासे भी अपनी रक्षा नहीं कर सकता है । बलवान जीवोंसे मनुष्य कितना निर्व्वल, द्रुतगामियोंसे कितना सुस्त, दूरदर्शियोंसे कितना अदूरदर्शी तथा परिश्रमियोंसे कितना आलसी है । ग्रन्थकारने आगे चलके फिर कहा है “प्राचीनकालकी अपेक्षा आजकल स्वयं प्रकृति देवीकी अवस्था विगड़ गई है । अब छोटे छोटे जीव पैदा होने लगे हैं । पुराने जमानेमें केवल मनुष्यही बड़े डीलडौलवाले नहीं होते थे । वरञ्च दैत्य दानव भी होते थे । अब भी जहां तहा जमीन खोदनेसे पुराने समयके बड़े बड़े अस्त्र पस्त्र और हड्डियां पाई जाती है । इतिहास और दादा परदादोंसे सुनी हुई बातें इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं । यह हड्डियां आजकलके छोटे आदमियोंकी हड्डियोंसे कहीं बड़ी हैं । इससे यह सिद्धान्त निकलता है कि आरम्भमें प्रकृतिका यही नियम था कि मनुष्य बहुत बड़े और बलवान हो—खपडेके गिरनेसे या लडके के कङ्कड़ी भारनेसे या छोटी छोटी नदियोंमें डूबने इत्यादि छोटी मोटी घटनाओंसे न मरे ।” इसी तरहकी युक्तियां दिखला कर ग्रन्थकर्त्ताने कई सुन्दर नैतिक-सिद्धान्त निकाले हैं जिनका यहां उल्लेख करना मैं इत्था समझता हूँ पर इतना जरूर कहूंगा कि प्रकृतिसे लडाईं ठानकर नीतिके व्याख्यान करनेकी, नहीं नहीं, असन्तोष तथा दुःख प्रकाश करनेकी परिपाटी सारे संसारमें फैली गई है ! मुझे विश्वास है कि अच्छी तरह खोज करने पर इन विराट् पुरुषों के समान हम लोगोंमें भी इस असन्तोषका कुछ कारण न ढहरेगा ।

अब कुछ सेनाके विषयमें लिखता हूँ। यहांके निवासी गर्वके साथ बोल उठते हैं “हमारे राजाके तो दो लाख आठ हजार सेना है - एक लाख छिहत्तर हजार पैदल और बत्तीस हजार घुड़-सवार।” मौटागरी और किसानोंकी जहा फौज है और शहर के रईमकी जहा फौजके अफसर हैं वहा इतनी फौज होनी कौन मुश्किल है ? तिस पर तुरा यह कि इन सबको तलव तनखाह या इनाम इकराम कुछ नहीं दिया जाता है। यह लोग युद्ध विद्यामें बड़े निपुण और दक्ष होते हैं। पर इससे इनकी कुछ नामवरी नहीं क्योंकि हर एक किमान अपने अपने जमींदारके और नगर निवासी अपने अपने नगरके प्रधान रईसके आज्ञाधीन रहते हैं। फिर युद्धविद्यामें यह सुदक्ष क्यों न होगी ?

नै कवाइद देखनेको अकसर जाता था। राजधानीके पासही दोस मीलका एक चौकोर मैदान था वही कवाइद होती थी। पच्चीस हजार पैदल और छ हजार घुड़सवारसे अधिक सेना एकत्र नहीं होतीथी। पर जितनी दूरमें वह खड़ी होती थी उसको ख्याल कर गिनती करना मेरे लिये असम्भव था। सवार सब घोड़े सहित लग भग नव्वे फुट तो जरूर ऊंचे होंगे। मेनापतिका मद्धेत पार्तेही नव सवार एक साथही तलवार निकाल कर आसमानमें घुमाने लग जाते थे। यह दृश्य इतना विराट् इतना अद्भुत और इतना आश्चर्यजनक होता था कि जिसका वर्णन क्या अनुमान भी नहीं होसकता है। उस समय यही मालूम होताथा कि आकाशमण्डलमें चारों ओरसे दिजली चसक रहीहै। आकाश विद्युन्मय हो गयाहै।

यहा किसी दूसरे मुल्कसे कोई आया नहीं फिर महाराजको सेना रखनेका या उसे कवाइद मिखानेका विचार कैसे हुआ भी जाननेके लिये मेरी बहुत इच्छा हुई। पीछे इतिहास पटनेसे तथा लोगोंके कहनेसे सब हाल मालूम होगया। नमारकी समय मानव-जाति जिस रोगसे पीडित है यहा वाले भी उसी महारोगसे बहुत दिनों तक पीडित रह चुके हैं। प्रधान पुरुष प्रायः प्रभुत्वके लिये,

सोच कर दाया इतनी दुःखित हुई थी। होनेवाली बात मानी उसे पहलेहीसे मालूम होगई थी। पिञ्जरा हाथमें ले छोकरा समुद्र की ओर चल पड़ा। आधे घण्टेमें ठिकाने पर जा पहुँचा। यह जमीन पहाड़ी थी। मेरे कहनेमें उसने पिञ्जरा जमीन पर रख दिया। मैं खिड़की खोल कातर होकर उलुक दृष्टिसे सागरकी तरफ निहारने लगा। निहारते निहारते जी घबरा गया तब भूल्ले पर जाकर लेट रहा। छोकरा खिड़किया मंद कर चिड़ियों के अण्डोंकी खोजमें घूमता हुआ दूर निकल गया। मैं भी अपने की निरापट ससम्भ, लगा खराटे लेने। पिञ्जरेके बेतरह हिल उठनेसे आँखें खुली तो देखा कि पिञ्जरा बड़ी तेजीके साथ ऊपर को उठ रहा है। मैं गला फाड़ फाड़ कर पुकारने और चिल्लाने लगा पर कुछ जवाब नहीं। मैंने खिड़की खोली तो आकाश और बादलोंके सिवा और कुछ दिखाई न दिया। इतनेमें पड़की फट-फटाहट सुन पड़ी जिससे मैं अपनी दुरवस्थाको अच्छी तरह समझ गया। मालूम होगया कि कोई गिड़ पिञ्जरेकी चीचमें लिये उड़ा जा रहा है। किसी चट्टान पर पटक कर मुझे जीता निगल जायगा। हाय ! इतने पीछे रहने पर भी गिड़को मेरी गन्ध पहुँच गई। यह सब बातें सोच कर मेरे होश हवास जाते रहे। आँखोंके आगे अन्धियारी छा गई। परमात्माका स्मरण कर मैंने नेत्र बन्द करलिये।

गिड़ और भी फराटे भरने लगा। पड़की फटफटाहट भी बढने लगी। पिञ्जरा भी दायें बायें हिलने लगा। चीचकी खटा खट सुनाई पड़ी। इतनेमें किसी चीजके टूटनेकी फटसे आवाज आई और पिञ्जरा बड़े वेगसे नीचे गिरने लगा। यह इस तेजीसे गिरा कि मेरा टस घुटने लगा। एक मिनटके बाद इतने जोरका धमाका हुआ कि कानके परदे फट गये, तमाम अन्धेरा छा गया। फिर पिञ्जरा ऊपर उठा और खिड़कियोंकी सन्धिसे उजाला आने लगा। अब मालूम होगया कि मैं समुद्रमें गिर पड़ा हूँ। पिञ्जरेमें मैं था कुछ मेरा असबाब। मजबूतीके लिये उसके ऊपर नीचे और

चारो कोनोंमें लोहेके पत्तर जड़े थे । अतः वह पांच फुट तो पानी के भीतर ओर बाकी बाहर रहा । वह उतराता हुआ वहने लगा ।

मैं ससम्भता हूँ जब गिड़ पिञ्जरा लिये उड़ा जाता था तब और भी दो चार गिड़ आपहुचे और आपसमें शिकारके लिये लड़ने लगे । इसी लड़ाई भिड़ाईमें पिञ्जरा चीचसे कूट कर समुद्रमें गिर पड़ा । और बात भी यही मालूम होती है । पिञ्जरेके नीचे लोहेका मजबूत पत्तर लगा था इसीसे जलकी चोटसे वह नहीं टूटा । हर एक जोड़ इसका खूब कमा हुआ था और किवाड़ भी इसमें कलोटार न थे बल्कि ऊपर नीचे उठनेवाले । सो वह भी खूब कसे थे । पानी घुसनेका टाव किसी तरहसे भी न था । मैं बड़ी कठिनाईसे भूले परसे उतरा । हिम्मत करके ऊपरकी दरीची हवा आनेके लिये खोलदी क्योंकि हवा बिना मेरे प्राण निकले जाते थे ।

टायाकी याद मुझे बराबर आती थी । हाय ! जन्म भरके लिये मैं उससे अलग होगया । वह मेरा कितना लाड प्यार करती थी ! मेरे बिना वह कितना रोती होगी । महारानी न जाने उस पर कितना गुस्सा होती होगी । उसके दुःखको सोच कर मैं अपना सब दुःख भूल गया । जैसी विपदमें मैं फसा था वैसी और किसी पर काहेकी आई होगी ! यही मालूम होता था कि अब पिञ्जरा किसी पहाड़में टकराया अब उलटा—अब सरा, मौत सिरपर नाच ही रही थी सिर्फ शीशेकी किवाड़ियोंके फूटनेकी देर थी । दरी-चियोंमें जाली मढ़ी हुई थी इसीसे जान बची । अब पानी भी जरा जरा घुसने लगा । मैं भी उसके वन्द करनेकी यथा साध्य चेष्टा करता जाता था । मैं अपनी जिन्दगीसे हाथ धो बैठा क्योंकि चारो ओर मृत्यु दिखाई पड़ती थी । और कोई प्राप्त चाहे न आवे पर अब जलके बिना तो जरूर मरना पड़ेगा । चार घण्टे तक मैं इन्ही सब विचारीमें मग्न रहा ।

मैं पहले कह चुका हूँ कि पिञ्जरेके उस तरफ जिधर खिड़किया

न थीं दो कडे लगे हुए थे । इन्हींमें रस्सी पिरो कर सवार लोग पिञ्जरेको कसरसे बांध लेते और घोड़े पर ले चलते थे । अच्छा सुनिये । जब मैं मृत्युका सपना देख रहा था मुझे उस तरफ जिधर कोठे थे कुछ आहतमी मालूम हुई । फिर जान पड़ा जैसे पिञ्जरे की कोई खेच रहा है । अब वचनेकी कुछ कुछ आगा होने लगी क्या होने लगी सो मालूम नहीं । मैंने चट एक कुर्मीको जो पेच से कसी हुई थी उखाड़ कर ऊपरवाली खिड़कीके ठीक नीचे ला रखा जिसे हवा आनेके लिये अभी खोल दिया था । मैं कुर्मी पर खड़ा होगया और खिड़कीके पास मुंह लेजाकर जोरसे पुकारने लगा । जितनी भापायें जानता था एक एक कर सबमें मदद माग गया । फिर छड़ीको जो बराबर माथ रहती थी रुमाल बांध कर ऊपर उठाया और कई बार हिलाया । समझा था कि आस पास कोई जहाज होगा तो आकर मुझे उबार लेगा ।

यह सब मैंने किया पर लाभ कुछ न हुआ । पिञ्जरा आगे बढ़ताही जाता था । एक घण्टेके बाद यह किसी कड़ी चीजसे टकर खागया । मैंने समझा कि टकर पहाडसे लगी है और अब मामला खतम है । इतनेमें ऊपर रस्सकी खरखराहट सुनाई पड़ी और पिञ्जरा भी धीरे धीरे जलसे तीन फुट ऊँचा उठ गया । मैंने फिर रुमाल हिलाया गला फाड़ फाड़के पुकारा । अबके तीनवार जयध्वनि सुन पड़ी । मारे खुशीके मैं फूल कर कुप्पा होगया छत पर आदमियोंके चलनेकी धमधमाहट मालूम हुई । खिड़की की राहसे अङ्गरेजीमें किसोने पूछा “भीतर कौन है ?” मैंने जवाब दिया “एक अङ्गरेज । बड़ी भारी विपदमें फँस गया हूँ । ऐसी विपदमें कभी कोई नहीं पड़ा होगा । दया कर इस कौदसे मुझे निकालो मैं बड़ा उपकार मानूँगा ।” ऊपरसे आवाज आई “कुछ परवाह नहीं—अब मत डरो । पिञ्जरा जहाजसे बांध दिया गया है । बढई आता है राह बन जाय तो तुम्हें निकाल लूँगा ।” मैंने कहा “इतने बड़ेडेकी क्या दरकार है ? इसमें तो बहुत देर लगीगी ।

किसी सत्ताहसे कह दीजिये वह इसको उठा कर जहाज पर रख देगा ।” मेरी बात सुन कर कोई तो हस पड़ा और कोई मुझे पागल समझने लगा । सचसुच उस समय मुझे याद न था कि मैं अपने जैसे आदमियोंके बीचमें आगया हूँ । आखिर बढई आया और छेद बनाया गया । सीढीके सहारे मैं जहाज पर जा पहुँचा । उस समय मैं बहुत कमजोर था ।

जहाजवाले सब अचम्भेमें थे । प्रश्नोकी भरमार मुझ पर होने लगी पर उस समय मुंह खोलना मुझे पसन्द न था । इन नन्हे नन्हे जीवोंको देख कर मैं घबरा सा गयाथा । उन विराट पुरुषोंके आगे यह तुच्छ मालूम पड़ते थे । कप्तान जो बड़ा भलामानस था अपने कामरेमें लेगया और वहाँ उसने मुझे शराब पिलाई फिर अपने बिस्तरे पर सुला दिया । मैंने कहा “मेरे पिञ्जरेमें बड़ी बड़ी वेशकीमती चीजें हैं—एक सुन्दर झूला, एक मफरी पलङ्ग, दो कुर्सियाँ, एक मेज वगैरह हैं । पिञ्जरेके चारों ओर रेशमी गदियाँ और परदे लगे हुए हैं । अगर उसको अपने किसी आदमीसे बचा सगवाइये तो अभी सब खोलकर दिखा दूँ ।” मेरी इन बेमहल बातोंको सुनकर कप्तान शायद मुझे पागल समझने लगा । तथापि वह नम्र-भाकर बोला “आप आराम कीजिये मैं अभी भगदाताहूँ ।” इतना कह वह बाहर चला गया और मैं निद्रादेवीसे प्रेसालाप करने लगा ।

मैं कई घण्टे तक सोया लेकिन बराबर उन्ही नव पिछली बातोंको सपनेमें देखता रहा । जब नींद टूटी तो मैं बहुत अच्छाया । उस समय रातके आठ बज गये थे । कप्तानने फिर मुझे खिलाया और बड़ा सम्मान दिया ।

मेरे पिञ्जरेकी बड़ी बीकालेदर हुई । उनकी टंगा देख मुझे बड़ा दुःख हुआ । बेवृत्त सत्ताहीने तीड फाँड नीच खसोट कर उसके तख्त निकाल लिये थे । रेशमी गदियोंको फाँड फूँड कर चीपट कर दिया और पेचने लड़ी हुई नेज उगेर की भी तीड ताँड पर सत्यानाश कर डाला था ।

जब सन्नाटा होगया और मेरा जी भी ठिकाने हुआ तब कप्तान ने मेरे सफरका हाल पूछा और कहा “आज दिनको करीब बारह बजे जब मैं दूरबीन लगा कर इधर उधर देख रहा था मेरी नजर आपके पिछरे पर जापड़ी। मैंने पहले इसे कोई नाव समझा था। नजदीक आने पर यह कुछ औरही मालूम पड़ा। तब मैंने किशती पर अपने आदमियोंको इमका पता लगानेके लिये भेजा। वह सब आकर आचार्यके साथ बोले कि यह तो तेरता हुआ एक घर है। पर सुभे विश्वास न हुआ। उन लोगोंने कमर खाके कहा तो भी मैं हंसने लगा। शेषमें मैं स्वयं वहां गया और एक बड़ा रस्सा भी साथ लिवाता गया। मौसम अच्छा था। कई मरतबे आप के पिछरेकी प्रदक्षिणाकी द्वार और किवाड़ोंको अच्छी तरह देखा। अंकड़ों पर दृष्टि पड़ी तो उनमें रस्सा बाध दिया और खेंच कर जहाजकी ओर लेचलनेको मल्लाहोंसे कहा। जब जहाजके पास आये तो एक दूसरा रस्सा ऊपरवालो आकड़ीसे बाध कर ऊपर उठानेके वास्ते हुक्म दिया। सब जहाजियोंने मिल कर चरखी पर खेंचा परन्तु तीन फुटसे ज्यादा ऊंचा न उठा सके बाट आपका रुमाल फहराता हुआ उनकी दिखलाई पड़ा तब समझा कि इसके भीतर कोई अभाग वन्द है। फिर जो कुछ हुआ सो आप जानते ही है।” इतना सुन कर मैंने अपना वृत्तान्त कह सुनाया और पूछा “जिस समय आप लोगोंने पहले सुभे देखा उस समय आकाश में कोई बड़ा पक्षी दिखाई पड़ा था ?” उसने जहाजियोंसे पूछ कर जवाब दिया “मैंने तो नहीं देखा लेकिन एक मल्लाह कहता है कि उसने उस समय तीन गिद्ध उत्तरकी तरफ उड़ते हुए देखेहैं पर वह बहुत बड़े न थे। मामूली जैसे होते हैं वैसेही थे।” मैं समझता हू बहुत ऊंचे पर होनेहीके कारण वह छोटे मालूम पड़े होंगे।

मैं—अच्छा यहासे जमीन कितनी दूर पर होगी ?

कप्तान—कमसे कम तीनसौ मील पर।

मैं—नहीं, इतना नहीं। समुद्रमें गिरनेसे करीब दो घण्टे पहले तो मैं उसी देशमें था जहासे चला आता हू।

इतना सुनतेही वह फिर मुझे बीडस समझने लगा और पुनः सोनेके लिये कहा । मैंने बहुत तरहसे समझाया और कहा कि मैं कभी पागल न था और न हूँ । मेरे होश हवास सब ठीक है । पर वह क्यों मानने लगा ? बोला “तुम जरूर कोई भारी अपराधी हो । किसी भारी अपराधके कारण तुम्हें यह सजा मिली थी । मैंने बड़ी भूल की जो तुम्हारे प्राण बचाए । खैर चलो दूसरे बन्दर पर तुम्हें उतार कर जहाज हलका कर लूंगा । तुमने जैसी जैसी असम्भव बातें जिस माव भङ्गीसे कही हैं उनसे तुम पर पूरा सन्देह होता है ।

मैंने हाथ जोड़ कर कहा “आप धीरज धरें और मेरी नव कहानी सुनलें तब आपके मनमें जो आवे सो कोजिये ।” मैं पुनः आदिसे अन्त तक अपनी सब बातें एक एक कर सुना गया । सत्य की तामस जय है । और कामान भी लुब्ध पड़ा लिखा था । अत एव मेरी सच्ची बातोंने उसके चित्त पर लुब्ध प्रभाव डाला । मैंने बख्श संगवा कर वहाकी अनूठी अनूठी चीजें दिखावाई । महाराजगी दाढीके बालकी कट्टी ( जो मैंने बनाई थी ) एक फुटसे लेकर गज गज भर लज्बी सूई और पिन, भिडके डड्ड जो, छुएके बराबर थे, महारानीके बाल और एक अगूठी जो महारानीने प्रसन्न होकर बगुनियासे उतार कर मेरे गलेमें पहना दी थी दिखाई तो कामानका विश्वास हुआ । मैं कामानको उसकी खातिरदारीके बदले अंगूठी देने लगा पर उगने नहीली । फिर मैंने एक गद्दा दिखाया जो महारानीकी एक सहेलीके अगूठेसे काट लिया था । यह सूझ कर इतना कडा होगया कि लण्डन पहुँच कर इसका एक कटोरा बनवाया और फिर चान्दीसे सटवा दिया । चूहेके चामका एक प्राजासा भी मैंने दिखाया ।

दात देख कर कामानको बहुत आश्चर्य हुआ । यह दांत दाया के एक नीकरना था उसके दातमें लव दर्द हुआ तो एक नाम एकीमने उमका दातही उखाड़ डाला था । मैंने उसे धो धाकर



अपने लन्दूकके हवाले किया । यह अन्दाज एक फुट लम्बा था और इसका व्यास था चार इंच । कप्तानने और कुछ तो लिया नहीं पर इस दांतको बड़ी सुगन्धिलसे लिया । इसके लिये मुझे विपुल धन्यवाद भी दिया ।

इन सब चीजोंको देख कर कप्तान बहुत खुश हुआ और बोला “इंग्लैण्ड पहुँचने पर इस यात्राका सन्तान्त पुस्तकाकार ‘पाप छप-वादि’ तो बहुत अच्छा हो ।” मैंने कहा “आज कल बहुतेरी यात्राएं छप गईं हैं । आजकल सब बात आश्चर्यजनक है । ग्रन्थकार लोग भी आजकल शायद अपनी डींग हांकने, स्वार्थ मिट करने और सूखे पाठकोंका मनोरञ्जन करनेकी अपेक्षा सत्यकी ओर बहुत कम ध्यान देते हैं । और मेरी पोथीमें तो अद्भुत पेड़ पत्ते जीव जन्तु वगैराके वर्णनके बदले साधारण बातें हीगी अथवा जड़ली जातियों की पुरानी असभ्य चाल ढाल और मूर्ति पूजा रहेगी सो इन बातों को प्रायः सभी ग्रन्थकर्त्ता लिख चुके हैं । तथापि आपकी इस कृपाका धन्यवाद है । मैं अवश्य आपकी आज्ञा पालन करूंगा ।”

मैं सब बातें गर्ज कर कहता था । इस पर कप्तानने पूछा “क्या वहाके लोग कुछ ऊँचा सुनते थे ?” मैं बोला “नहीं—मेरीही आवाज इतनी धीमी थी कि उनको सुनाई नहीं पड़ती थी । मैं जब वहां था तो मुझे इतने जोरसे बोलना पड़ता था जितना कि छत परकी आदमीको आगनवालेसे बोलनेमें चिल्लाना पड़ता है । दो घरसे यही अभ्यास पड़ रहा है । जब तक वह मुझे हाथमें न उठा लेते थे उनको मेरी आवाज सुनाई नहीं पड़ती थी । उन लोगों की विकट ध्वनि सुनते आप लोगोंकी आवाजा मुझे फुसफुसाहट से मालूम होती है । एक बात और सुनिये । जब मैं पहले आपके जहाज पर आया । तो आप लोग मुझको अत्यन्त छोटे मालूम पड़ते थे । इसी छुटार्ईके मारे जब वहा मैं था आईना कभी नहीं देखता था । आईना देखनेसे मुझको अपने ऊपर अत्यन्त घृणाही जातीथी । उनकी वह विराट् मूर्ति देख कर मुझको अपना शरीर

बहुतही छोटा और घृणित मालूम होता था ।” कप्तान बोल उठा इसीसे भोजनके समय आप अचरजके साथ इधर उधर देखते और हसते थे। यह ढङ्ग देखकर हम लोगोंने आपकी पागल समझाया ।”

मैं—हा आप सच कहते हैं। जब आपने छोटी छोटी रिकामी और प्याले रख दिये तो मुझको बड़ा आश्चर्य हुआ था। यद्यपि रानीने मेरे लिये छोटे छोटे वर्तन बनवा दिये थे तथापि वहाँ के घड़े वड़े वर्तन रात दिन देखते देखते मेरी आंखें विगड़ गई हैं। आदमी जैसे अपनी भूल आप नहीं देखता है वैसेही मैं भी अपनी कुटार्ई नहीं देख सकता था।

कप्तान—ठीक है आपके पेटसे आपकी आंखेंही बड़ी हैं। दिन भर उपास करने पर भी आपने कुछ ज्यादा भोजन न किया।

इसी प्रकार और बहुतसी बातें हुई जिनका लिखना फजूल है। नौ महीनेके बाद जहाज इंग्लैण्ड पहुँचा। तीसरी जून १७०६ ईस्वीकी डाऊनमें जहाजने लफ्हर गिराया। मैं कप्तानको भाडा देने लगा पर उसने फूटी कीछी भी न ली। आखिर मैं एक टट्टू किराया करके घरकी तरफ रवाना हुआ।

रास्तेमें छोटे छोटे घर, पेड़, मवेझी, आदसी वगैराको देखकर मैं अपनेकी फिर लिलोपटमें समझने लगा। मुझको बग़ावर यही घर लग रहा कि वहाँ कोई पैरसे न झुचल जाय। मैं अकसर बोल उठता था—“हटो बचो नहीं तो कुपट जाओगे।” इस पर लोग मेरा मुँह देखने लग जाते थे।

जब मैं घर पहुँचा तो भीतर घुमनेके समय ठीकर लगनेके डर से सिर झुका लिया था। खी मुझको देख कर खुशीके मारे मिलने को दौड़ी तो मैं भुक् गया। मैंने समझा अगर न भुक्गा तो वह मेरे गले तक न पहुँच सकेगी। मेरी सड़कीने पैर हुए पर मैं उसे देखती न सया बग़ाकि मुझको तो साठ फुट ऊँची चीज़ देखनेकी बात थी। जब वह उठ कर खड़ी हुई तो देखा और उसकी गोदमें उठनेके लिये एकही हाथ बटाया था। अपनेकी तो दिराट् पुरुष

और दूसरोंकी निपट बीना मैं समझने लग गया था । मैंने स्तीसे कहा—“प्यारी । तुम सबको खानेके लिये नहीं मिलता था क्या ? तुम सबतो खूब कर काटा वन गई हो ।” मतलब यह कि जब मैं घर पहुँचा तो सभी मुझको कष्टानकी तरह मिडी समझने लगे। इसमें आश्चर्यही क्या ? यह तो पक्षपात और अभ्यासका नमूना है।

थोड़े दिनोंके बाद सब बात साविक दस्तूर होगई । मैं अपने आपमें आगया और घरवाले भी मुझको होश हवासमें समझने लगे । स्त्रीने बहुत कहा सुना कि अब समुद्रकी यात्रा मत करो पर विधनाकी यह मञ्जर न था ।

इति द्वितीय भाग समाप्त



# विचित्र-विचरण ।

## तृतीय भाग ।

### लपूटाकी यात्रा ।

प्रथम परिच्छेद ।

पाठकगण । मैं दस बारह दिन भी घरमें न रहा था कि 'होपवेल' नामक जहाजका सरदार विलियम रविनसन मेरे पास पहुँचा । इसके साथ पहले कुछ दिन तक मैं काम कर चुका था । यह जहाजका नावुटा था और मैं जरीह । यह मुझको भाईसे भी बढ कर मानता था । इसीसे मेरे आनेका हाल सुन कर मुझसे मिलनेके लिये दौड़ा आया । मेरे खुशी राजीसे घर लौट आने पर इसने बहुत आनन्द प्रगट किया । बहुत देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं । फिर इसने कहा—“मैं दो महीनेमें हिन्दु-स्थानका अफर करनेवाला हूँ । मैं कुछ कह तो नहीं सकता लेकिन अगर आप चाहें तो चल सकते हैं । दो सहकारीके अलावे एक जरीह भी आपके नीचे रहेगा । मामूली तनखाहसे आपको दूनी मिलेगी । आप बहुत सफर कर चुके हैं सो आपका तजरवा मुझसे कुछ कम नहीं है । इसलिये मैं वादा करता हूँ कि जहाजका सब काम आपकी सलाहसे किया कर्गा ।” और भी शिष्टाचारकी बहुतनी बातें उसने कही थी । मैं इस अनुरोधको टाल न सका । देशदेशान्तरीमें वृत्तकी कुछ ऐसी चाट लग गई थी कि पिछले कष्टोंका कुछ भी ख्याल न कर मैंने फिर चलनेकी ठहराई । यात्री ने बहुत जहा भुना पर उसे भी ससम्मान मुझको राजी करलिय

ता० ५ वीं अगस्त १७०६ ईस्वीको जहाज खुना और ११ वीं अप्रैल १७०७ को फोर्टसेण्ट जीजे जापहुचा। कई गादमी बीमार पड गये थे इसलिये तीन हफ्ते तक जहाज यहां रुका रहा। यहांसे हम लोग टौनक्लीन गये। जो कुछ माल यहां खरीदना था वह सब तैयार न था अतएव कप्तानने यहा भी कुछ दिन ठहरनेकी आज्ञा दी। चुपचाप बैठे रहनेने सिवाय खर्चके कुछ लाभ नहीं। इसलिये कप्तानने कुछ मोच समझ कर छोटीसी एक नाव खरीदी और उसमें वही सब चीजे भरों जिनसे टौनक्लीनवाले आम पामके टापुओमें त्रिजारात करते है। नाव पर चौदह मनुष्य थे जिनमें तीन उसी देशके थे। मैं सबका सरदार हुआ। कप्तान तो टौनक्लीन में रहा और मैं नाव लेकर टापुओको तरफ रवाना हुआ।

तीसरे दिन बडे जोरकी आंधी आई। नाव राह छोड कर उत्तर पूर्व दिशाको जाने लगी। पाच रोज तक यही दशा रही। फिर पूर्वको मुड़ी। आंधी बन्द होगई थी लेकिन पश्चिमी हवा का 'वेग' अधिक था। दसवें दिन डाकुओके दो जहाजोंने पीछा किया। नाव बोझके मारे तेजीसे चल नहीं सकती थी। आखिर डाकुओने हमारी नावको पकड लिया। हम लोगोके पास अस्त्र शस्त्र कुछ नहीं था। हम लोग सब तरहसे निरुपाय थे।

दोनों जहाजके डाकुओने एकही समय आक्रमण करके तेजीके साथ नावमें प्रवेश किया। मैंने अपने आदमियोंको पहलेसे पट पड रहनेकी आज्ञा दे रखी थी। सब मुंह छिपाये पडे थे। मैं भी पडा था। डाकुओने अतिही हम लोगोकी मुश्के बांध कर अपने आदमियोंके हवाले किया फिर वह लोग लगे नावको रत्ती रत्ती ढुंढने।

इन लुटेरोमें एक दिनामार भी था। वह सबका मालिक तो नहीं पर सरदार सा मालूम होता था। वह सूरत शकलसे पहचान गया कि हम सब अङ्गरेज हैं। हम लोगोको चुना कर वह अपनी बोलीमें बकने लगा—“तुम लोगोको पीठसे पीठ बांध

कर समुद्रमें डुबा दूँगा ।” मैं दीनामारोंकी भाषा मजेमें बोल लेता था । मैंने उससे कहा—“साहब ! हम लोग भी प्रोटेस्टेण्ट क़स्तान हैं । हम आप सब एकही देशके हैं । हाथ कर क़स्तानसे सिफ़ा-ग़िश कर दीजिये जिसमें हम लोगोंकी जान बचे ।” इतना सुनतेही वह आग बगूला होमया । लाल लाल आख़े करके अपने साथियों से जापानी भाषामें न जाने क्या क्या बोलने और मुझको धमकाने लगा ।

इन डाकुओंके दो जहाज थे । बड़े जहाजका सरदार एक जापानी था । वह टूटी फ़ूटी डिनमार भाषा बोल लेता था । उसने मेरे पास आकर कई प्रश्न किये । मैंने नम्रतासे सबका उत्तर दिया । तब वह बोली—“अच्छा धीरज धरो तुम्हारी जान नहीं जायगी ।” मैंने तब ख़ूब झुककर जापानीको सलाम किया और उस दिनासार से कहा - “देखो ! तुम क़स्तानोंसे अधिक दया इस विधर्मीमें है ।” पर इन ठिठार्डका मजा मुझको ख़ूब मिला गया । वह दुष्ट नीच मेरी जान लेनेकी चेष्टा करने लगा पर उसकी कुछ पेश न गई । उसका यही मन था कि मैं समुद्रमें फेंक दिया जाऊँ पर जापानी बड़े दयालु थे उन्होंने इसकी एक न सुनी । आख़िर उसने मुझको एक भारी सज़ा दिलाई जो सौतसे भी बढ कर थी ।

मेरे आदमियोंको लुटेरीने आपसमें बराबर बांट लिया । नाव पर नये मल्लाह बहाल किये गये । मेरे लिये डांड पालसे दुरुस्त एक डोंगी आई । इसमें चार दिनकी ख़ुराक रखी गई लेकिन दयावान् जापानीके कहनेसे दूनी करदी गई । मैं परमात्माका ध्यान कर डोगी पर चढ बैठा और वह समुद्रमें छोडदी गई । जिस समय मैं चला उस नराधम दिनामारने ख़ूब कोसा और गालिया दी । पर मैंने उधर देखा तक नहीं । हा एक बात कहनेकी भूलही गया था कि जापानीने मेरे कपडोंकी तलाशी किसीको नहीं लेने दी थी ।

डाकुघोडे कुछ दूर निकल जाने पर दूरबीनके सहारे दक्षिण

पूर्वकी ओर कुछ टापू नजर आए। जवा ठीक थी। सबने पाम-  
वाले टापूसे पहुँचनेकी इच्छासे पाल तान कर डोंगीको उपरही  
घुमाया। लगभग तीन घण्टेमें वहा जा पहुँचा। यह स्थान विल-  
कुल पथरीला था। खैर, मैं उतरा। अगळे जमा कर पत्थरसे आग  
निकाली और उन्हें भून कर खून खाया। हाथमे भोजनकी जो  
कुछ सामग्री थी उसे आगके लिये बच रक्खा। रातको वही एक  
गुफामें सो रहा। नींद खूब मजेकी आगई थी।

सवेरे उठ कर मैं दूसरे टापूमें गया। वहासे तीसरे और फिर  
चौथेमें पहुँचा। कभी डाडसे और कभी पालसे काम निकालता  
था। अपने दुःखकी गथासे पाठकोंको टिक न कर खुलासा कह  
देता हूँ कि पाचवें दिन मैं अन्तिम द्वीपमें पहुँच गया। इसके बाद  
फिर कोई द्वीप दृष्टि गत नहीं होता था। यह पहले टापूसे दक्षिण  
पूर्वकी ओर झुकता हुआ था।

मैंने मसक्ता था कि यह निकट होगा मगर दूर निकला। कोई  
पांच घण्टे वहा तक पहुँचनेमें लगे थे। वहां पहुँचने पर द्वीपकी  
प्रदक्षिणा करने लगा। इसी बीचमें एक खाड़ी नजर पड़ी।  
जो मेरी डोंगीसे तिगुनी चौड़ी थी। डोंगी रखनेकी यह अच्छी  
जगह मिल गई। यह भी भूमि पथरीली थी किन्तु कहीं कहीं  
हरी हरी घास और भीनी भीनी बासवाली वेलें दिखाई पड़ी।  
मेरे साथ भोजनकी जो कुछ थोड़ीसी सामग्री थी उसीमेंसे कुछ  
खाया और कुछ एक गुफामें हिफाजतसे रख दिया। वहा गुफा  
की बहुतायत थी। रात भर उसी गुफामें जिसमें भोजनकी सामग्री  
रक्की थी मैं पड़ा रहा। सूखी सूखी घास चुन कर विस्तर बनाया।  
सोया पर नींद नहीं आई। इसी सोचमें सवेरा होगया कि हाय  
इस वीरानमें अब कैसे प्राण बचेंगे—न जाने मैं कौन भीत  
मरूंगा। अपनी दशा विचार कर मैं नितान्त कातर होगया।  
उठनेकी सामर्थ्य न रही। जब कुछ दिन चढ़ आया तब मैं गुफासे  
बाहर हुआ। कुछ देर तक इधर उधर घूमा किया। आकाश अति

स्वच्छ था सूरज इतना तेज था कि उधर निहारना कठिन हुआ । लाचार मुँह फेर लिया । इतनेहीमें यकायक सूर्य छिप गया । अन्धेरा होगया लेकिन बादलमें सूर्यके छिप जानेसे जैसा अन्धेरा होता है वैसा नहीं था । यह एक दम विलक्षण था । मैंने मुँह फेरा तो देखा कि मेरी ओर भगवान् भास्करके बीचमें एक विशाल धुन्धला पदार्थ आपड़ा है जो टापूकी तरफ बढ़ा आता है । यह दो मीलके लग भग ऊँचा मालूम होता था । कोई छः सात मिनट तक सूर्यदेव इसके ओभालमें रहे पर हवा बहुत ठंडी नहीं हुई और न आकाशहीमें अन्धेरा था । ज्यों ज्यों वह निकट आता जाता था त्यों त्यों उसके सब भाग साफ मालूम होते थे । वह कुछ ठोस पदार्थसा था । उसकी पेदी चिपटी, चिकनी और चमकीली थी । समुद्रकी परछाईसे वह और भी चमदार मालूम पड़ता था । मैं कितारेसे करीब दो मील तक ऊँचे पर खड़ा था । मैंने देखा कि वह पदार्थ जो मेरे ओर सूर्यके बीचमें आगया था ठीक मेरे सामने एक मीलसे भी कम दूरी पर उतर रहा है । मैंने दूरबीन लगाई तो मालूम हुआ कि अनेक मनुष्य उसके दोनों ओर घट और उतर रहे हैं परन्तु वह सब दृश कर रहे हैं सो कुछ जान न पड़ा ।

शायद स्वभावतः सजीवों पिय है । मैं मगही मन बहुत प्रसन्न हुआ । सोचा इस देवघटनासे शायद मेरा निवास यहाँसे होजाय पर साथही इतने आकाशमें उड़ता हुआ टापू देख कर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा । तब पर तुरा यह कि उसमें मनुष्य भी वास करते थे जो इच्छानुसार इस द्वीपको चला और ठहरा सकते थे सिर्फ यन्त्र नहीं ऊपर उठा सकता, नीचे उतार सकते और जिधर मन चाहता उधर ले जा सकते थे । उस समय उस अद्भुत पदार्थ पर दार्शनिक विचार करनेका अवसर न था इसलिये सब छोड़ छोड़ कर मैं वह देखने लगा कि वह किस तरफ जाता है क्योंकि थोड़ी देरके लिये वह ठहर गया था ।

थोड़ी देरके बाद वह हट और दक्षिण आया । अब सन्नि



दिखाई पड़ने लगा कि एकसे दूसरे पर जानिके लिये दोनों बगलों में छल्ले और मीठियोंका सिलमिला बना हुआ है। सबसे नीचे यानो छल्ले पर कुछ लोग बड़ी बड़ी बस्तियां लिये सज्जलिया पका रहे हैं और कुछ लोग खड़े तमाशा देख रहे हैं। मैंने अपनी टोपी तथा रुमालको छिन्नाना शुरू किया। जब वह और भी निकट आया तो मैं गला फाड़के चिल्लाने लगा। इतनेमें जिधर मैं था उधरहीको बहुतसे मनुष्य एकत्र होगये। मेरे सवालका तो कुछ जवाब मिला नहीं पर देखा कि वह सब मेरी तरफ उगलीसे कुछ इशारे कर आपसमें कुछ बात चीत करने लगे। फिर पांच छः आदमी दौड़ते हुए ऊपरके महल पर चढ़ कर गायब होगये। मैंने समझा कि वह सब अपने सरदारके पास खबर देने गये हैं और बात भी पीछे वही ठहरी।

दर्शकोंकी भीड़ बढ गई। आधही घण्टेमें वह टापू चल कर इतना ऊपर उठा कि उसका निचला छज्जा ठीक मेरे सामने सौ गजसे भी कमती फासले पर आपहुंचा। मैंने हाथ जोड़ कर दीन-तासे बड़ी बिनती की पर उत्तर मिला नहीं। जो लोग नीचेवाले छल्ले पर खड़े थे ठाट वाटसे भलेमानस रहस जान पड़े। वह लोग मेरी ओर निहार निहार कर आपसमें परामर्श कर रहे थे। आखिर उनमेंसे एकने स्पष्ट, मीठे और सरल शब्दोंमें मुझको पुकारा। इसका उच्चारण ठीक इटली देशकी भाषाके सदृश था। इसीसे मैंने भी उसी भाषामें उत्तर दिया। किन्तु किसीने किसीकी बात नहीं समझी। बात चाहे न समझी हो पर मैं कैसे दु खनें था सो जरूर उन लोगोंने समझ लिया था।

उन लोगोंने मुझको पहाड़ी परसे उतरकर समुद्र तटकी तरफ जानेका सहेत किया। मैंने भी चट पट वही किया। जब मैं उड़डीयमान् हीपके नीचे जा पहुँचा तो जल्दीसे बधी हुई छोटीसी एक चौकी लटकाई गई। मैं उस पर जा बैठा और वह फिर चढ़-खीके सहारे ऊपर खेंचली गई।

## द्वितीय परिच्छेद ।



जब मैं ऊपर पहुँचा तो बहुतसे आदमी मुझे घेर कर खड़े हो गये । जो सब पास खड़े थे भलेसानस मालूम पड़े । मैं उन्हें और वह मुझे आश्चर्यके साथ देख रहे थे । मैंने अब तक ऐसे विचित्र आकार, आचरण और रूपके मनुष्य कभी नहीं देखे थे । इन सबकी गर्दने बायें या दायेंकी रुकी हुई, आखें एक भीतरकी धसी और दूसरी ऊपरकी ऊठी हुई थी । कपड़ों पर चन्द्र सूर्य नक्षत्र तारों की स्मृतियाँ तथा नारङ्गी, बांसुरी, वीन, तुर्ही, सितार इत्यादि वाजोंकी तसवीरें बनी हुई थीं जिन्हें युरोपवाले जानते भी नहीं हैं । ऊपर ऊपर खड़े हुए कई खानसामा नजर आए जिनके हाथमें एक एक छोटा डण्डा था । इन डण्डोंके एक ओरमें हवासे फूली हुई एक एक घैली लगी हुई थी । इन घेलियोंमें सूखी सटर अथवा कल्लडिया भरी हुई थी । इन्हीं डण्डोंसे वह खानसामा उन लोगोंके मुँह और कानोंमें जो वहाँ खड़े थे मारते थे । मैं इनका मतलब कुछ भी समझ न सका । मालूम होता है कि उन लोगों का मन विचारमें ऐसा निमग्न रहता कि चेत कराये दिना वगैरे सब न बुझ सुन सकता है और न कुछ बोल सकता है । इन्हीं वान्से बड़े आदमी लोग चिताये जानेके लिये एक एक कानची वरदार नौकर रखते हैं । जहाँ वह जाते हैं कानची वरदारोंको साथ ले जाते हैं । जब दो चार आदमी इकट्ठे होते हैं तो कानची वरदार लोग बोलने वालेके मुँह पर, सुननेवालेके कानों पर और देखनेवालोंकी आँखों पर कानची जला कर उनका ध्यान भड़का देते हैं तब वगैरे लोग आपसमें बातचीत करते हैं अन्यथा नहीं कर सकते । जब बावलाहक लोग राखीमें चमकते हैं तब भी ध्यानमें निरत बन्द रहते हैं अगर नीचे पर तडातडा कल्लडिया पड़ती न चले तो वह जरूर खम्भीसे टकरा जायेंगे और गलियोंमें दूरीकी धक्का देकर गिरा देंगे आपसी धक्का लागकर नातिथीमें गिर पड़ेंगे ।

जीनेकी राह लोग मुझे धुर ऊपर लेगये । वहां राजमहलकी तरफ लेचले । मार्गमें वह लोग कई बार मुझे भूल गये—किस कामके लिये जातेहैं सो सब भूल गये थे । जब कमचिया पडतीं तो होगमें आकर फिर आगे बढ़ते थे । वस इसीसे पाठक समझले कि वह सब कैसे ध्यानी थे ।

आखिर हम लोग राजमन्दिरमें पहुँचे । दरवार लगा हुआ था । महाराज सिंहासन पर विराजमान और अगल वगलमें सुनी-तन्त्र मन्त्रीगण डटे हुए थे । सामने बड़ीसी एक मेज थी जिस पर भूगोलक (ग्लोब), चक्र (स्फीअर) तथा गणित सम्बन्धी सर्व प्रकारके यन्त्र रक्खे थे । हम लोगोंका पहुचना महाराजको कुछ भी मालूम नहीं हुआ क्योंकि वह उस समय एक कठिन प्रश्न हल कर रहेथे । एक घण्टेमें उनका ध्यान टूटा । हम लोग अब तक चुपचाप खडे थे । महाराजके दोनों ओर दो छोकरे कमचिया लिये खडे थे । जब महाराज प्रश्न हल कर चुके तब एकने मुंह पर और दूसरेने दाहिने कानपर धीरेसे कमचिया जमाई । जैसे कोई नींदसे अचानक उठता है वैसेही आप चौक उठे । मुझे तथा और सब लोगोंको देखकर उन्हें स्मरण हुआ क्योंकि मेरे आनेकी सूचना पहलेही देदी गईथी । महाराज कुछ बोले इतनेमें एक छोकरेने आकर मेरे दाहिने कान पर कमची फटकारी । मैंने इशारेसे कह दिया कि मेरे लिये इसकी कुछ आवश्यकता नहीं है । वस महाराज तथा दरवारियोंकी नजरों में उसी घडीसे मैं बहुत हलका होगया । महाराजने बहुतसे प्रश्न किये । मैंने भी जितनी भाषाएँ जानता था सबमें जवाब दिया । जब कोई किसीकी बात न समझ सका तो महाराजकी आज्ञासे मैं एक कमरेमें भेजा गया जहां दो नौकर पहलेहीसे सेवा टट्टलके लिये हाजिर थे । महाराजका अतिथि अभ्यागतका आदर सत्कार करने में अपने पुरुषोंसे अधिक नाम है । भोजनकी सब चीजें लाई गई । उन चार मन्त्रियोंने जिन्हें महाराजके बहुत निकट खडे देखा था मेरे साथ भोजन करके मेरा सम्मान किया । सामग्रिया दो प्रकार

की थी । हर एकमें तीन तीन रक्ताविया थीं । एकमें तो चौपाया के साम धे जो रेखागणितके चित्रोंकेसे बने थे और दूसरेमें पक्षियों के, जो बालीके आकारके थे । खानदामा लोग जो रोटियां काट काटकर देते थे सो भी गणित सम्बन्धी चित्रोंके रूपमें थी ।

भोजनके समय मैंने लङ्कितसे कई चीजोंके नाम पूछे । उन्होंने महर्ज आपनी भाषासे सबके नाम बताये । मैंने चट सबकी दाद कर लिया । फिर रोटियाँ वगैरह जो दरकार होती सो माग लेता था । पर एक बात यह कि भी समझ लेना चाहिये कि भोजन करनेके समय भी उन्हें कलचिया खानी पड़ी थी ।

खाने पीनेके बाद सब अपने अपने ठिकाने चले गये । महाराजकी आज्ञानुसार एक मनुष्य कासची बरदार समेत आया । वह अपने सहा कलस टावात, कागज और दो चार किताबें भी लाया था । इशारेमें उसने जो कुछ नमस्माया उससे यही प्रगट हुआ कि वह रुझे वहांकी भाषा सिखानेके लिये आया है । चार घंटे तक मैं उसके साथ बैठा—इसी बीचमें मैंने बहुतसे शब्द और उनके अर्थ अङ्ग्रेजीमें लिख लिये थे । छोटे छोटे कई वाक्य भी फुटीने याद करलिये थे । शिक्षक महामय नौकरसे कभी कुछ लानेके लिये, कभी बैठके, कभी सलाह करने कभी घूमने और कभी खड़े होनेके लिये कहते थे और वह वही करता जाता था । उन सब वाक्योंको प्रत्यक्ष सन्त से कागज पर लिखता जाता था ।

एक यन्त्रसे पहलने उठाने मेरी उचाई नापी फिर कागज पर मेरे शरीरका नक्शा बनाया । छठे दिन कपड़े तय्यारकर ले प्राया जो हिमाचल भूल होजानेके कारण निपट कुदृष्ट, ग्रीव बढकताये । ऐसी गलतिया दर्जियोंसे बहुधा हुआ करती थी गीर वह सब (कपड़े सिलानेवाले) भी इन भूलोंकी उतनी परवाह नहीं करते थे वस इसीसे मुझे भी कुछ अप्रमोह नहीं हुआ ।

कपड़े फटे थे और तबीयत भी कुछ खराब हो गई थी इससे मैं कई दिन तक घरसे बाहर नहीं निकला । इन छ. दिनोंमें शब्दकोषकी बहुत बडा कर लिया था । इसी हेतु फिर जो दरबारमें गया तो महाराजकी बहुतसी बातोंकी मैंने समझा और टुटफूटू कुछ जवाब भी दिया था । महाराजने गान्धा जी कि अब यह द्वीप इशानकोनसे होता हुआ शहर "लगाडो" के ठीक ऊपर पहुँचे । महाराजके पृथ्वीस्थित राज्यकी राजधानीका नाम "लगाडो" है । वह यहाँसे २७० मील दूर था । वहाँ तक पहुँचनेमें साढ़े चार दिन लगे । आकाशमें इतका चलना कुछ भी सामान्य नहीं होता था । लगाडो पहुँचनेके दूसरे दिन सबेरे ग्यारह बजे स्वयं महाराज और उनके परिजन, राजसभासद, राजकर्मचारी प्रभृति सब साज बाज मिला कर लगे गाने और बजाने । तीन घंटे तक लगातार सधने खूब गाया बजाया । उन लोगोंने क्या गाया बजाया सो मेरी समझमें कुछ न आया । लेकिन कान जरूर बहरे होगये थे । शिचक महाशयसे पूछा तो उन्होंने सब बातें समझा दीं ।

रास्तेमें कई शहर और गावोंके ऊपर प्रजाकी दरखास्त लेनेके वास्ते यह द्वीप खडा हुआ । रक्षिया नीचे लटका दी जाती थी उन्होंने प्रजागण अपनी अपनी दरखास्तें बाध देते थे और वह ऊपर खेचली जाती थी । कभी कभी खाने पीनेकी चीजें भी चरखीके द्वारा ऊपर खेचली जाती थीं ।

वहाँकी भाषाको गणित और सङ्गीत शान्तिसे बहुत कुछ सम्बन्ध

है बल्कि यों कहना चाहिये कि यह भाषाही भाषाकी प्राण है । गणित तो सै जानताही था और मछीतसे भी अनभिन्न न था अत एव प्रनायासही बहाकी शाय सै सीख गया था ।

बहाकी सक्ता वडे कुद्वे होते रे । न दीवारें ससान होती और न कोठियां दुरुस्त होती हैं । इसका कारण यह है कि वह लोग बार्थकर ज्यामितिकी घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं और उसे न्यूनतु तुच्छ समझते हैं । गणित तो संप्रतीतसे वह लोग वडे पर और कामोंमें निरे अनाडी, घोर बेगजर होते हैं । बक-वादी बखल दरजेके हैं हार कभी मानतेही नहीं । कल्पना विवेचना और अविष्कृत तो जानतेही नहीं अथवा यों कहिये कि यह सब शब्द उनकी भाषाहीमें नहीं है । वस जो कुछ पण्डितार्थ है सो गाने बजाने और हिसाब बनानेमें । ज्योतिष पर बहुतां का विश्वास है पर सबके साखने उसे स्वीकार नहीं करते हैं ।

यह ब्रह्मग्रीव सदैव चिन्तामें मग्न रहते हैं । एक छिनका भी विराम इनके चित्तको नहीं होता । कुछ न कुछ यह लोग सदा विचाराही करते हैं । पर इनके इस विचारसे श्रेष्ठ जीवोंका कुछ बनता विगडता नहीं । आकाशखण्ड यह नक्षत्रोंका परिवर्तन होना भी इनकी पित्ताका मूल है । इसी परिवर्तनसे यह भयकी आशङ्का करते हैं ।

एक लाख सौल दूरीके अन्दर भी पृथ्वी ग्राहक तो इसकी जलबलके खाफ होजानेमें कुछ भी डर नहीं लगीगी । सूर्यदेव भी रोज अपनी किरणें खर्च किये जातेहैं बढानेकी कुछ चेष्टा करते नहीं । आग्निर मय किरणें खर्च हो जायगी तो विचारें तेजहीन हो जायंगे और किसी कामके न रहेंगे । फिर पृथ्वी प्रभृति जितने ग्रह नक्षत्र दिन-करको छपासे देदीप्यमान होतेहैं वह सभी नष्ट भ्रष्ट होजायगे ।

इन सब विपदोंको विचार कर वह सब ऐसे व्याकुल होगये है कि रातको अच्छी तरह सोते भी नहीं और न गृहस्थीका कुछ सुखही अनुभव कर सकते हैं । चिन्ताहीन साग समय व्यतीत होता है । प्रातःकाल जब किसी मित्रकी भेट होती है तो वह पहले आपसमें भास्कर भगवान्हीकी राखी खुगो पृष्ठते हैं । उगने डूबने के समय उनको कैसी टमायी । इस आनेवाली विपद अर्थात् धूस-केतुकी टक्करसे बचनेकी कुछ आशा है या नहीं । अगर है तो किस उपायसे इत्यादि बातेंही परस्पर होती हैं । हमारे यहाँ लडके रातको जिस प्रकार चावसे भगर डरते हुए भूत प्रेत पिशाचोंकी कहानियां सुन करे प्रसन्न होते हैं पर डरके सारे सोनेके लिये नहीं जाते है सूर्यादिकी बातें सुन कर बहावालोंकी भी ठीक वही दशा होजाती है ।

इस हीपकी स्त्रिया बडीही चञ्चल होती हैं । पतिसे तो घृणा पर विदेशी जारोसे प्रेम अत्यन्त प्रसन्नतासे करती है । अपने विदेशी नौचे पृथ्वीसे सरकारी कामसे अथवा अपने कामसे आया करते हैं । इन्हींको स्त्रिया जार बलांकी है । व्या नीच क्या ऊच सबके घरको यही दशा है । पतिराम सदा विचारमें मग्न रहते है और यह सब सजमें माल उडांती हैं । अगर कहीं दगलमें कसचिया न हुई और हाथमें कागज पेनसिल मिल गई तो फिर क्या है ? स्त्रिया जारके साथ अटखेलियां करती हाथसे हाथ मिलाये सामनेमें निकल जाय तो भी पुरुषोंको कुछ खबर नहीं । इसीसे यह सब बहुत निर्भय और सच्छन्द होकर व्यभिचार करती है ।

यद्यपि यह द्वीप सै समझता हूँ समार भरके सब स्थानीसे मनो-  
हर और रख्य है—घर द्वार भी सुन्दर और बढिया है मिया मन  
माने दृष्टसे यहा आनन्द पूर्वक रह सकती है—इनको बडी खाधी-  
नता रहती है जो चाहे सो करे तथापि इनका मन यहां नहीं  
लगता है । दुनियाकी मेर करने तथा राजधानीकी बहार देखने  
के वास्ते तरमा करती है । इसका एक कारण है । वह सब यहा  
लाकर दोढ़ करदी जाती है । फिर सहाराजकी विशेष आज्ञाके  
बिना नीचे नही जामकतीं और यह आज्ञा भी बडी बडी कठिनाइयो  
से प्राप्त होती है क्योंकि प्राय देखा गया है कि जब कभी किसी  
भले घरकी बिया नीचे भूमि पर जाती है तो फिर लौटनेका नाम  
नही लेती । समझाने बुझानेसे भी कुछ फल नही निकलता है ।  
ब्रह्मादाले कहते थे कि दंडे घरकी एक छीने जिसके कई लडके भी  
थे प्रधान सगीका व्याह हुग । वह बीसारीके सिससे एक बार  
नीचे उतर गई । प्रधान मन्त्री बहुत सुन्दर और गीकीन थे । उन  
का बहुत लाड प्यार करते थे । उनका घर भी बहुत बढिया था ।  
सजेसैं राजसी ठाठसे वह रहते थे ।



लगभग एक महीनेमें उनकी भाषा में अच्छी तरह नीबू गया । जब जब कभी दरबार जाता तो उनी भाषामें बोलता और महाराज जो कुछ कहते सो समझता भी था । जिन सब देशोंमें वृम आया उन सबकी राजनीति, इतिहास, धर्म या आचार व्यवहार के बारेमें महाराजने कभी कुछ नहीं पूछा और जो कुछ पूछा भी सो केवल गणितके विषयमें । मैंने इस विषयमें जो कुछ कक्षा में आपने कामचिया खा खा कर सुना था ।

### तृतीय परिच्छेद ।

महाराजकी आज्ञा ले मैंने द्वीपकी खूब सैर की । साथमें शिक्षक महाशय भी थे । अरबमें मैं यही जानना चाहता था कि इस द्वीपकी बहुरङ्गी गति किस प्रकारने होती है सो मैंने जान लिया अब पाठकीको इसका भेद बताता हूँ ।

इस उड्डीयमान द्वीपका आकार ठीक गोल है । व्यास ७८३७ गज अर्थात् करीब साठे चार मील और क्षेत्रफल तीस हजार बीघेहैं । यह तीसरी गज मोटा है । नीचेसे इसकी पेटी चौरस तथा हीरे जैसे काठिन पत्थरकी बनी हुई मालूम होती है और ऊपरभी दोसरी गजके लगभग है । इसके ऊपर कई धातुओंके पत्तर सिल-मिलेसे चढे हुए हैं । सबके ऊपर बढिया मट्टीका दस बारह फुट गहरा अस्तर है । परिधिसे केन्द्र पर्यन्त ऊपरका तल ठालुआ था इसीसे वरसातका सब पानी सिमट कर नालोंकी राहसे बीचमें आता है वहासे चार बडे बडे हौजोंमें बट जाता है जिनका घेरा आधी आधी मील और जो केन्द्रसे दोसरी गजके फासले पर है । हौजोंके पानीको दिनमें सूर्य सोख लेता है इसीसे उनमें पानी बढने नहीं पाता है । इसके सिवा महाराज अपने द्वीपकी बादलोंसे भी ऊपर लेजा सकते हैं । ऊपर लेजानेसे फिर पानी बुन्दीका कुछ डर नहीं रहता है । प्राज्ञतत्त्व वेत्तागण कहतेहैं कि वरसात बादल दो मीलसे ऊपर नहीं जाता है सो वहा दो मीलसे ऊपर कभी दल नहीं देखा गया है ।

इस द्वीपके केन्द्रस्थलमें एक गुफा है जिसका व्यास कोई पचास गज है। इसी राहसे ज्योतिषीगण एक बड़े गुम्बजमें जाते हैं। अतएव इसका नाम ज्योतिषी कन्दरा पड़ा है। यह गुम्बज पत्थरवाले तलसे सौगज नीचे है। यहाँ बैठकर ज्योतिषी लोग ग्रहोंका विचार करते हैं। इसमें बीस लेम्प बराबर जला करते हैं जो हीरेके प्रतिबिम्ब पडनेसे हर एक तरफ खूब तेज रोशनी डालते हैं। यहाँ दूरबीक्षण प्रभृति बहुतसे ज्योतिष सम्बन्धी यन्त्र रखे हुए हैं। सबसे अद्भुत वस्तु तो एक बड़ा भारी चुम्बक पत्थर था जिसके जोरसे यह द्वीप चलता था। इस नी बनावट कपडे बुननेके करगहको सी थी। यह लम्बा छः गज और मोटा कमसे कम तीन गज था। यह चुम्बक हीरेके एक धुरेके सहारे घूमता था। इसके एक ओर खेंचनेकी और दूसरी ओर हटानेकी शक्ति थी। जब इस चुम्बकका वह भिरा जिसमें खेंचनेकी शक्ति थी पृथ्वीकी तरफ कर दिया जाता तो द्वीप नीचे उतरता था और जब हटानेवाली शक्तिका भिरा नीचेकी ओर किया जाता तो वह ऊपर चढ़ता था। चार मीलसे अधिक ऊँचा वह नहीं चढ़ता था। पण्डितोंने निश्चय किया है कि चार मीलसे ऊपर चुम्बककी शक्तिया काम नहीं करती हैं। जब यह चुम्बक तिरछा किया जाता था तो इसकी गतिभी तिरछी होजाती थी। इसी तिरछी गतिके द्वारा यह एक जगहसे दूसरी जगह पहुँच जाता। जिस समय चुम्बक दायें बायें लम्बा पड़ा रहता उस समय द्वीपकी भी गति रुक जाती थी। मतलब यह कि चुम्बकके सहारेही यह चढ़ उतर ठहर और एक ठौरसे दूसरी ठौर जा सकता था। भूमिस्थ राज्य के बाहर यह द्वीप नहीं जा सकता था क्योंकि पृथ्वीके भीतर जो गव धातु चुम्बक पर असर डालते हैं सो इन राज्योंको छोड़ और नहीं है। उन देशोंकी जो चुम्बककी शक्तियोंके अन्तर्गत है महाराज सहजमें अधिकृत कर सकते हैं।

यह चुम्बक कई ज्योतिषियोंके अधिकारमें रहता है जो महाराज वंशावतार इसको इधर उधर घुमाया करते हैं। इन लोगों

के जीवनका अधिक भाग दूरबीनमें नक्षत्रोंके देखनेहीसे व्यतीत होता है। हम लोगोंकी दूरबीनसे इनकी दूरबीन कहीं बढ चढ के है। इनकी बड़ीसे बड़ी दूरबीन तीन फुटसे अधिक लम्बी नहीं होती लेकिन काससे सौ फुट लम्बीके कान काटती है। उमीलिये यह युरोपीय ज्योतिषियोंकी अपेक्षा आविष्कार करनेमें बहुत आगे बढे है। यह लोग दस हजार अचल ताराओंकी सूची देना चुके हैं लेकिन हमारे यहाँ इसकी तिहाई मग्या भी नहीं है। इन्होंने दो उपग्रह और निकाले हैं जो मङ्गलके आस पास घूमते हैं।

इन लोगोंने तिरानवे पुच्छल तारे और निकाले हैं और उनकी चाले भी शोध कर बहुत ठीक करदी है। अगर यह बात सत्य है जैसा कि वह लोग कहते हैं तो सर्वसाधारणमें इसका प्रचार हो जाना चाहिये। धूमकेतुका पूर्ण ज्ञान किसीके हे भी नहीं। इसकी प्रचार होजानेसे ज्योतिषका यह अङ्ग भी पूरा होजायगा।

महाराज यदि अपनी मन्त्रिमन्त्रासे मिलकर नीतिके अनुसार राज्य करते तो जगतमें सबसे बढ कर राजा होजाते पर इनमें दो अडचलें आपडी हैं। एक तो महाराज रहते आकाशमें ओर प्रजा भूमि पर। दूसरे मन्त्रियोंका पद अनिश्चित है इसीलिये देशकी सेव करना कोई नहीं चाहता है।

अगर किसी शहरमें अराजकता वा विरोध फैले अथवा लोग माझूली कर देना बन्द करदें तो महाराज दोही प्रकारसे उन्हें अपने अधीन करलेते हैं। पहला और सहज उपाय तो यह है कि जो शहर विद्रोही होता चढ द्वीप उस पर मडलाने लगता सूर्यके प्रकाशकी रोक देता है। फिर क्या है दुर्मिच्छ और रोगादि उस शहर पर चढ दौडते हैं। और यदि कहीं भारी अपराध हुआ तो ऊपरसे पत्थरोंकी हष्टि होती है। लोग तो खैर किसी तरह खोह कन्दरामें लुक छिप कर प्राण बचा लेते हैं पर घर बार तो एक दमही चौपट होजाते हैं। इस पर भी यदि शान्त न हुआ तो अन्तिम उपाय किया जाता है अर्थात्

द्वीप गिर कर गाँवाँको नष्ट भ्रष्ट कर देता है । परन्तु यह दण्ड बहुत कस काससे लाया जाता है क्योंकि इससे राज्यका बहुत नुकसान होता है ।

अत्यन्त आवश्यकता हुए बिना यह दण्ड काममें नहीं लाया जाता है । मन्त्रीगण भी जल्दी इन दण्डकी व्यवस्था नहीं करते क्योंकि इन सबकी सब भूमि सम्पत्तियाँ नीचेही रहती हैं । सो इन दण्डसे इनकी भी बहुत हानि होती है । इनके अतिरिक्त नीचे भूमि पर बड़े बड़े पत्थर हैं । उनमें ठोकर लगनेसे द्वीपकी पेट्टीके फटने और उसमें आग लगनेकी पूरी सम्भावना है । लोहे और पत्थरके संघर्षणसे अग्नि उत्पन्न होती है । यह सब कोई जानता है । इसीलिये महाराज भी जल्दी यह दण्ड किसीको नहीं देते । अगर देते भी हैं तो बहुत चौकसीके साथ धीरे धीरे द्वीप नीचे गिराया जाता है ।

हम राज्यके नियमके अनुसार राजा तथा बड़े और सभसे राज-कुमार द्वीपके बाहर नहीं जाने पाते हैं और महारानी भी बालिका-हूए बिना नहीं जा सकती है ।

चतुर्थ परिच्छेद ।



कभी नहीं मिली थी। मैं वज्रा दो महीने रखा। केवल औरतोंसे, व्यापारियोंसे, क्रमची वरदारोंसे और दामन वरदारोंसेही बात चीत कर जी बहलाता था क्योंकि इन विचारोंको विचारकी बीमारी न थी। जो कुछ मैं पूछता उसका यथोचित उत्तर इनकी लोगोंने मुझे मिलता था।

दरबारमें एक सरदार था। महाराजसे उसकी कुछ नातेदारी भी थी और यही सबब था कि लोग उसका आदर करते थे। पर साथही इसके सारा समार उसे गूर्ख और बेवकूफ नमझता था। उसने राज्यकी बड़ी बड़ी सेवाएँ की थी, उनकी समझ बूझ भी अच्छी थी और आदमी भी सच्चा ईमानदार था। लेकिन एक बड़ी भारी कसर उसमें यह थी कि वह ताल मुर कुछ भी नहीं जानता था। उसके बेतालपनकी कई बार शिकायत भी हो चुकी है। अध्यापकगण भी उससे तङ्ग आगये। सहजसे सहज गणितका प्रश्न भी बँह कठिनाईसे समझ सकता। जो कुछ हो मुझ पर बड़ी दया करता था। अकसर मेरे यहां आता और युरोप तथा इन देशोंकी जहा जहा मैं गया हूँ रीति व्यवहार, विद्या बुद्धि, राजनीतिके विषयमें पूछता था। जो कुछ मैं कहता उसे ध्यानसे सुनता और कहीं कहीं उचित राय भी देता था। उसके साथ भी दो कमचीवाले थे जिनसे वह राज दरबार या भारी भारी जगहोंके सिवा और कहीं काम नहीं लेताया। जब मुझसे बात चीत करता तब उन्हें दूर भगा देताथा। इसी भलेम<sup>1</sup>सकी छप्रासे मेरा कुछ-कारा हुआ। इसीने कह सुनके महाराजसे अनुमति दिलाई थी।

१६ वी फरवरीको मैं महाराजसे विदा हुआ। आपने दो सौ पौण्डकी चीजें विदाईमें दी थी तथा मेरे मित्रने इतनीही वस्तु इससे अधिक थी। इसके अतिरिक्त उन्होंने लगाडो (राजधानी) निवासी अपने दोस्तके नामक एक चिट्ठी भी मुझे दी थी। जब उडन टापू राजधानीसे दो मीलके फासले पर एक पहाडीके पर उतरा तो मैं उसी प्रकारसे जैसे चढ़ा था उतार दिया गया।

उम देशका नाम जो उल्टीयमान हीपके नरेशके आधीन है—  
“बलनीवरवी” है और राजधानीका लगाही है सो मैं लिखही चुका  
हूँ। जब मैं पुनः पृथ्वी पर पहुँचा तो जीते जी आया। मैं वे पर-  
वाईके साथ राजधानीकी ओर चल पड़ा। मेरी पोशाक उसी  
देशकी सी थी और बोली भी वहाँकी सीखही गया था अतएव  
निडर होकर जाने लगा। जिस भलेमानसके नामकी चिट्ठी थी  
उसके सन्तानका पता बहुत जल्द लग गया। उसकी चिट्ठी दी।  
चिट्ठी पढ़ कर उसने मेरा आगत स्वागत किया। उसका नाम  
सुनोही था मेरे रहनेके लिये उसने एक कमरा अलग खाती बन  
दिया और मेरी बड़ी खातिरदारी की।

दूसरे दिन सबेरे सुनोही रथ पर बिठा कर गहरकी सैर कराने  
को लेचला। यह शहर लण्डनका आधा था। सकान सब विचित्र  
रंगर बेशरन्मत थे। तमान उटामी बाई थी। मडकों पर आदमी  
बड़ी तेजीसे चलते थे जो देखनेसे वहाँगी मालूम पड़ते थे। नद  
स्थिर थे, सुख विषम थे। और कपडे फटे चिटे थे। हम लोग  
शहरका फाटका पार करके गावसे घुसे। लग भग तीन मीलके  
चले गये। वहाँ देखा कि बहुतसे सजदूर रङ्ग विरङ्ग रदियार लिये  
जमीन पर झुछ कर रहे हैं पर क्या कर रहे हैं सो समझने न  
प्राया। खेतोने नाज दा घासके चिन्ह भी दिखाई न पड़े लेकिन  
सही बहुत बढ़िया नजर आई।

यह लगाडोका गवर्नर था । लेकिन मन्दिरियोंके पडयन्मसे अयोग्य ससभा जाकर यह पदच्युत हुआ । जो हो मन्तारज अब भी उस पर कृपा रखते हैं और इसे अपना शुभचिन्तक अथवा दुष्टिहीन समझते हैं ।

लार्ड मुनोडीने मेरे प्रश्नोंका कुछ उत्तर न देकर देवल यही कहा “अभी तो आपको गाये घोडेही दिन हुए हैं कुछ दिन रहिये सहिये तब सब आपही मालूम होजायगा । यह आप जानतेही हैं कि जाति जातिकी जुदी जुदी चाल है ।” मैं भी चुप रहता । जब डिरे पर लौट कर आए तो उसने पूछा—“कहिये वह मेरे मकान सब कैसे है ? इनमें क्या बेहदापन है ? मेरे आदितियोंकी पोशाके या सूरत शकलें कैसी हैं ?” मैंने जवाब दिया ‘दण्डिता और मूर्खताके कारण यहांवालोंमें जो दोष हैं उनसे आप अपनी दूरदर्शिता, गुणशीलता तथा लक्ष्मीके प्रभावसे बचे हैं ।’ मचमुच इसके मकान वगैरः सभी चीजें सुन्दर, ठीक और सुठझ थी । इस पर वह बोला—“यहांसे बीस मील दूर मेरी जमींदारी है अगर आप वहां चलें तो इस विषयकी बातें अच्छी तरह हो सकती हैं ।” मैंने वहां जाना मन्जूर किया । वस दूसरेही दिन हम लोग उधर को रवाने हुए ।

किसान सब अपनी अपनी भूमिको किस प्रकार जोतते जोतते हैं सो सब रास्ते भर वह दिखलाता जाता था पर दो एक जगहका छोड़ कहीं भी नाजकी वालें या घासकी पत्तिया नजर नहीं आई । तीन घण्टे चलनेके बाद बिलकुल परदाही बदल गया । हम लोग एक परमसुहावने रमणीय स्थानमें जा पहुंचे । पासही पास किसानोंके सुन्दर सुन्दर घर बने हुए थे । कहीं अगूरकी टट्टिया, कहीं नाजकी क्यारिया और कहीं पशुओंके चरनेके हरे भरे मैदान की अनोखी छटा दृष्टिगोचर होती थी । इससे बढ कर रम्यस्थान कभी देखा हीगा सो स्मरण नहीं । मुनोडीने कहा—“वस वहीसे मेरा इलाका शुरू है और बराबर मेरे महल तक चला गया है ।

मेरे इस प्रबन्धको देख यहाँवाले हलते और ठट्टा मारते हैं और मुझे नितान्त दुर्बल चित्त तथा विनासी समझते हैं।”

आखिर हम लोग सुनोडीके सहलसे पहुँचे। सचमुच यह सहल अत्यन्त सुन्दर और प्राचीन कालकी शिल्पविद्याके अनुसार बना हुआ था। फौआरे, बगीचे, सडके, रविगे और कुञ्जे आदि बहुत सुन्दर बनी हुई थीं। मैं यह सब देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। ब्यालूके दाद जब हम दोनोंके सिवा और कोई न रहा तब सुनोडी बोला—“ब्रफमोस है। अब यह सब सकान तोड कर मुझे नये ढङ्गसे बनाना पड़ेगा। बाग बगीचोंको फिरसे लवाना पड़ेगा। और अपनी प्रजाओंको भी ठही आज़ा देने पड़ेगी क्योंकि गिरे घसण्डकी, अनोखेपनजी, सूर्यताकी और ओछेपनकी तनारा निन्द्या है। और इसके अलावे महाराज भी कुछ अनन्तुष्ट है। अगर मदकी गिरसे न बनाऊंगा तो महाराज मुझसे अधिक रुष्ट हो जायेंगे।”



यह लगाडोका गवर्नर था । लेकिन मन्त्रियोंके पड़यत्नसे नयोग्य समझा जाकर यह पदच्युत हुआ । जो हो महाराज अब भी इस पर कृपा रखते हैं और इसे अपना शुभचिन्तक अथवा कुटिहीन समझते हैं ।

लार्ड मुनोडीने मेरे प्रर्णोत्सा कुछ उत्तर न देकर देवल यही कहा “अभी तो आपको गावे घोडेही दिन हुए हैं कुछ दिन रहिये सहिये तब सब आपही मालूम होजायगा । यह आप जानतेही है कि जाति जातिकी जुदी जुटी चालहे ।” मैं भी सुन कर चूप रहा । जब डेरे पर लौट कर आए तो उमने पृच्छा—“कहिये वह मेरे मकान सब कैसे है ? इनमें क्या बेहदापन है ? मेरे आदितियोंकी पोशाके या सूरत शकलें कैसी है ?” मैंने जवाब दिया “दरिद्रता और भूखताके कारण यहावालोंमें जो दोष है उनमें आप अपनी दूरदर्शिता, गुणशीलता तथा लक्ष्मीके प्रभावसे वचे है ।” सचमुच इसेके मकान वगैरः सभी चीजें सुन्दर, ठीक और सुठझ थी । इस पर वह बोला—“यहासे बीस मील दूर मेरी जमींदारी है अगर आप वहां चलें तो इस विषयकी बातें अच्छी तरह हो सकती है ।” मैंने वहा जाना मन्जूर किया । बस दूसरेही दिन हम लोग उधर को रवाने हुए ।

किसान सब अपनी अपनी भूमिको किस प्रकार जोतते जोतते हैं सो सब रास्ते भर वह दिखलाता जाता था पर दो एक जगहका छोड कहीं भी नाजकी वालें या घासकी पत्तिया नजर नही आई । तीन घण्टे चलनेके बाद बिलकुल परदाही बदल गया । हम लोग एक परमसुहावने रमणीय स्थानमें जा पहुंचे । पासही पास किसानोंके सुन्दर सुन्दर घर बने हुए थे । कच्ची अगूरकी टट्टिया, कच्ची नाजकी क्यारिया और कच्ची पशुओंके चरनेके हरे भरे मैदान की अनोखी कृटा दृष्टिगोचर होती थी । इससे बढ कर रम्यस्थान कभी देखा हीगा सो स्मरण नही । मुनोडीने कहा—“बस यहीसे मेरा इलाका शुरू है और बराबर मेरे महल तक चला गया है ।

मेरे इन प्रबन्धको देखे यहावाले हसते और ठट्ठा मारते है और सुके नितान्त दुर्बल चित्त तथा विलासी समझते है ।”

आखिर हम लोग सुनोडीके सहलमे पहुँचे । तबसुच यह सहल अत्यन्त सुन्दर और प्राचीन कात्तकी शिल्पविद्याके अनुसार बना हुआ था । फीअारे, बगीचे, सडके, रविगे और कुञ्जे आदि बहुत सुन्दर बनी हुई थीं । मैं यह सब देख कर अत्यन्त प्रमत्त हुआ । व्यालूके बाद जब हम दोनोंके सिवा और कोई न रहा तब सुनोडी बोला—“अफसोस है । अब यह सब सकान तोड कर सुके नये ढङ्गसे बनाना पडेगा । वारा बगीचीजो फिसे लगाना पडेगा । और अपनी प्रजाओको भी ठही आज्ञा देने पडेगी क्योंकि मेरे घनाडकी, अनोखेपनजी, लृखताकी और ओछेपनजी तमास निम्न है । और इसके अलावे महाराज भी कुछ अनन्तुष्ट है । अगर सबकी गिरसे न बनाउगा तो महाराज सुभारे अधिक गट्ट का जायगे ।”

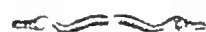
निकाननकी चेष्टा करतेहैं, मीठागन्नीने निते नने नये प्रीजान ईजाद करते हैं जिनसे दम मनुष्यका काग गन्नी करते और बड़ीसे बड़ी इसारत भी एकही चफूतेमें तय्यार होजाय और बिना समझत किये मद्दा बनी रहें । हर मीसरामे फल फला करे तथा उनको गिनती भी सौगुनी बढ जाय इत्यादि इत्यादि । पर कोई भी बात आज तक पूरी नहीं हुई । नतीजा यह निकला कि मारा देश उजाड होगया, मन्नाग खरुडहर होगये, और मनुष्य सब दरिद्र अन्न बख्शहीन होगये । इतने पर भी सुधारकगण निराग नहीं हुए हैं । और भी पचास गुने साहस और उत्साहमें अपने उद्देश्य साधनमें लगे हैं । लेकिन मुनोडीको यह सब पसन्द नहीं है । वह वही अपनी पुरानी चाल पसन्द करता है । जिस घरमें उसके पुत्रवा लोग रहते आये हैं उसीमें वह अपना दिन काटता है । और भी दो चार बड़े आदमी इसके मतके हैं । यह सभी देश गन्धु और खूख समझे जाते हैं । यह लोग अपनी अपनी भलाई और आराग्य देखते हैं देशकी उन्नति नहीं चाहते हैं यही इन पर दोष लगाया जाता है ।

शेषमें लार्ड मुनोडी फिर वीं कहने लगा—यच्चासे तीन मील दूर एक पहाडकी बगलमें पनचक्कीला पुराना खरुडहर अब तक मौजूद है । यह नदीकी धारसे चलाई जाती हैं । इसमें अग और मेरी गनेक प्रजाका मजेमें गुजारा होता था । सात साल की बात है कि इन सुधारकीने इस पुरानी पनचक्कीको तोड कर एक नई बनवानेका तथा पानीके लिये एक नहर खुदवानेका प्रस्ताव किया । उस समय उन लोगोंने इस काममें मुझे बहुतसे फायदे दिखलाये । कहा नल और इञ्जिनके द्वारा नहरसे पानी ऊपर चढाया जायगा । हवा ज ची जगह पर जलको कम्पायमान कर नीचेकी अपेक्षा उसमें अधिक शक्ति उत्पादन कर सकती है । उस समय दरवारसे मेरा कुछ ऐसा मेल मिजाप भी न था और मित्रोंने भी इधर बहुत कहा सुना लाचार मैंने सुधारकीके प्रस्तावको अङ्गी-

कार कर लिया । पुरानी पनचकी ढलवा दी गई और नईसे काम लगाया गया । कोड़े की यादगी दो बरस तक काम करते रहे पर हुआ वही ढाकने तीनों पात । सुधारकगण धिरेही सत्ये दोषका ठिकरा फोड़ कर चम्पत हुए । तबसे वह लोग बात बातसे सुभा पर ही जटाच करने हैं । अब दूगरीको बातें बना कर फसाते हैं पर हात कार्य अभी तक नहीं हुए हैं ।”

कुछ दिनोंके बाद इस लोग शहर वापस आये । सुधारकों को पाठशालाएँ देखनेकी अभिलाषा हुई पर पाठशालावालोंसे सुनोड़ीका मेल जीन नहीं था अतएव उन्होंने अपने एक मित्रको मेरे साथ कर दिया । मैं महर्षि विद्यालय अश्वलोकनकी चला क्योंकि मंडकाईने तै भी एक तरहका सुधारका था ।

पञ्चम परिच्छेद ।



यह विद्यालय एक बड़ी भारी इमारत नहीं है । मंडकके दोनो ओर जो जो घर पुराने पड़ते जाते हैं वही सब खरीद कर विद्यालय में मिला लिया जाते हैं । एसीसे विद्यालयके घरोंका एक मिनसिला बला गया है ।

हवा गर्म करवाही उसका उद्देश्य था । उसने मुझसे कहा—  
 “पाठ वरसके बाद मैं जरूर नाट साहसके वर्गीयमे सख्यकी  
 किरणें पहुंचाईके योग्य हो जाऊंगा लेकिन अगर यह है कि मेरे  
 पास गूँजी नहीं है । आप जानते है कि रुपयेके बिना कोई काम  
 नहीं होता । ककडीकी फसल भी अच्छी नहीं होती इससे दरभी  
 बहुत चढ़ गई है सो आप कुछ मदद करें तो बहुत उपकार होगा ।”  
 मुनोडी पहलेहीसे जानता था कि विद्यालयवाले सबसे भीख मांगते  
 हैं । इसी लिये उसने चलनेके समय कुछ रुपया मेरे हवाले कर  
 दिया था । वही मैंने उसे दे दिया ।

दूसरे कमरेमे घुमतेही ऐसी दुर्गन्धि आई कि मैं घबरा कर  
 लौटने लगा । पर मेरे साथीने ऐसा करनेसे मना किया । आखिर  
 बिना नाक सूँढ़ेही भीतर धस पड़ा । यहाके सुधारकजी सबसे  
 पुराने तथा बूढ़े थे । आपका मुँह तथा दाढ़ी पीली थी । हाथ और  
 कापड़े गलीजसे भरे हुए थे । जब उनके निकट पहुँचा तो उन्होंने  
 गले लगाया । अगर मैं जानता कि वह मुझे गले लगादेंगे तो कदापि  
 वहां न जाता । ऐसे आदर सम्मानको दूरहीसे नमस्ते है । यह  
 महात्मा सनुषकी विष्ठाका पुन अन्न बनानेके लिये सिर मार रहे  
 है । इन्हें सुधारक-समाजसे हफ्तेमें एक मटका गुह निला करता है ।

तीसरे र्क के बाह्यत बनावेमे व्यस्त देखा । अग्निको तरल  
 बनानेके विषयमें एक पोथी भी उसने लिखी थी जिस वह बल्ब  
 छपाना चाहता था । मैंने उस पोथीको देखा भी था ।

चौथे कमरेमे एक असाधारण कारीगर था । उसने स्कान  
 बनानेकी नई प्रणाली निकाली थी कि पहले छत बना कर तब  
 दीवार और नीच इत्यादि बनाना चाहिये । मकड़ी और मधु-  
 सक्खियोंका उदाहरण बतला कर उसने कहा कि यह कुछ कठिन  
 कार्य नहीं है ।

पाचवें घरमें एक जन्मका अन्धा था । उसके कई चेली थी ।  
 वह सब भी जन्मान्ध थे । चित्रकारीके लिये रङ्ग बनानेकी

इनका काम था छूवर और मूँच कर यह रङ्गीको चुन लेते थे । भाग्यका दोष है कि चेनोकी तो क्या गुरु भी अपना कारतब भली भाँति मुझे न दिखना सजे । चिठ्कारोने इन लोगोका खूबची उत्साह बढ़ाया है ।

छठे आविष्कारमें मैं बहुतही प्रसन्न हुआ । इसने हल, बैल तथा मजूरोँका खर्च बचानेमें बास्ते सूअरीसे जमीन जुतवानेका एक नया ढङ्ग निकाला है । वह यह है कि तीन दीघे जमीनसे छ छ फुट पर आठ इंच खोद कर बलून, खिजूर, अखरोट तथा उन चीजोको जिन्हें सूअर पसन्द करते हैं गाड़ देना फिर ह. सी या अधिक सूअर उन खेतमें छोड़ देना चाहिये । सूअर सब उन चीजों के लालचसे मारि खेतको थोड़ेही दिनोंमें खोद डालेगी । सिर्फ यही नहीं अपने मैलेकी खाद भी उसमें डालते रहेंगे । फिर सजेमें खेती करो । यह बात मल्य है कि परीक्षा करने पर खर्च और मिहनत तो ज्यादा हुई परन्तु फसल कुछ नहीं । जो ही, इसकी उन्नति करनी चाहिये ।

लायक हो जायेंगे । रोद, तेल आदि लमलम पदार्थों की सक्रियों का उपयुक्त आहार है ।

मेरे वायुगोलेकी कुछ गिजायत थी । मेरा साथी मुझे डाक्टर साहबके पास ले गया । आप इस रोगकी चिकित्सा में अच्छे नाम-वर पुरुष थे । आपके पास एक फुफ्फुसों की जिमसे छाथीदातका पग-दाना लम्बा मुँह लगा था । इसी फुफ्फुसोंके मुँहकी रोगीके मल द्वारमें आठ इंच घुमेड दूर आप भीतरकी दूषित वायु निकल लेते थे । अगर वायुगोलेका वेग प्रबल हुना तो आप उलटी क्रिया करते अर्थात् मल द्वारकी राह बाहरकी हवा पेटमें खूब भर देते थे वम यह नई हवा दूषित वायुके सङ्ग दूरे जोरसे निकल पड़ती थी और रोगी चढ़ा होजाता था । मैंने दोनों तरहसे एक कुत्ते का इलाज करते डाक्टर साहबको देखा था । पहले उपायसे तो कुछ बतीजा निकला नहीं पर दूसरेसे कुत्तेका कामही तमास हो गया । डाक्टर साहब उसके जिलानेके उद्योगमें लगे और इन दोनों वहासे नौ दो ग्यारह हुए क्योंकि कुत्तेकी हवासे जी बहुत घबरा गया था ।

और भी अनेक कामरे सैने देखे जिनका वर्णन कर पाठकोंको दिक् करना मैं नहीं चाहता । अब तक सैने विद्यालयका एकही भाग देखा था । दूसरे भागमें आध्यात्मिक और वैषयिक उन्नतिसे चाहनेवाले लोग थे । पहले मैं एक मुख्य व्यक्तिका जो विश्व शिष्यी कहलाता था, हाल सुनाता हूँ । वह मानव जातिकी आयु बटाने के लिये तीस सालसे सिर खुपा रहा था । उसके इलाक़े दो बड़े बड़े कामरे विचित्र पदार्थोंसे भरे हुए तथा पचीस मनुष्य काम करनेवाले थे । कुछ लोग हवाको जमाकर धूँके योग्य बनानेमें कुछ सड़सरमरकी तकियेके शिथी मुलायम करनेमें और कुछ लोग घोड़ीको लगडानेसे बचानेके लिये उनके खसबो पत्थर बनानेमें लगे हुए थे खूब उस्तादजी उस समय दो कामीसे माथा लडा रहे थे । एक तो यह था कि भूमिमें भूमीही बोना चाहिये क्योंकि बीजत्व

भूमीहीमें है । इने उन्कोने कई प्रकारसे मिड भी किया पर मेरी समस्यामें कुछ न आया । दूसरा यह कि गोद, धातु और जडी वृटी सिला कर एक ऐसा सरहस बने जिसके लगानेसे मेसनीकी देह पर जन न निकले । वह कहता था कि छोडेही दिनीसे राज्य भरमें जनहीन मेसने हो जायगे ।

अब हम लोग पाठशालाके उस भागमें जा पहुँचे जहा कात्यनिक विद्याके पढनेवाले रहते थे । जिस अध्यापकने एक्ले भेट दृष्ट वद चालीस विद्यार्थियोंको लिये एक बडी कोठरीमें बैठा था । दण्ड प्रणालीके बाद मेरी दृष्टि एक चौखट पर जापडी जो बडी लम्बी चौडी थी वस्ति यो कहना चाहिये कि जो कोठरीका ज्यादा हिस्सा घेरे हुए थी ।



बालकीसे चौखट पर निजने हुए अक्षरोंकी धीरे धीरे पढ़नेके लिये तथा जहाँ दो चार शब्द इकट्ठे मिले उनके लिखनेके लिये शेष चार विद्यार्थियोंसे कहा । दो चार बार इसी प्रकार कल घुमाई गई हर एक चक्षरमें शब्दावलीका स्थान बदलता जाता था ।

लड़के क घण्टे रोज इस तरह परिश्रम करते थे । अध्यापकने कई बड़ी बड़ी पोथियां दिखलाई जो भग्न वाक्योंका संग्रह थी । उनको पूरा करके विज्ञान और शिल्पका एक पूरा भण्डार बनाने की उसकी इच्छा थी । अगर सब कोई चन्दा करके ऐसे ऐसे पाचसौ यन्त्र लगाडीमें स्थापित कर दें तो बहुत कुछ उन्नति हो सकती है ।

फिर मैं भाषा विद्यालयमें गया । वहाँ तीन जन बैठे स्वदेश भाषाकी उन्नत करनेका परामर्श कर रहे थे । पहला प्रस्ताव यह था कि अनेकाक्षर शब्दके बदले एकाक्षर शब्दका प्रयोग तथा क्रिया को निकाल कर भाषाको संक्षेप करना । वस्तु' समारसे जो कुछ विचारा जा सकता है सो सब सज्ञाके सिवा और कुछ नहीं है ।

दूसरा प्रस्ताव था शब्द मात्रको दूर करनेका । इससे स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा और भाषा भी अत्यन्त संक्षेप हो जायगी । यह साफ प्रगट है कि जितने शब्द हम बोलते हैं उनसे हमारे फेफड़े को आघात पहुँचता है । बस इसीसे आयु भी जीण होती जाती है । जब सब वस्तुओंकी सज्ञाही शब्द है तो सब कोई उन वस्तुओंही को अपने अपने साथ क्यों न लिये फिरे जिनके बारेमें बात चीत करना हो । अगर स्त्रियां गवार और मूर्खोंके साथ मिल कर विद्रोह का भय न दिखाती तो अब तक यह रीति चल गई होती और प्रजाको भी लाभ पहुँचता । जो हो, बहुतसे पण्डित और ज्ञानी इस नई रीतिसे चलते हैं अर्थात् बोलनेके बदले चीजोंहीसे काम निकालते हैं । लेकिन इसमें एक बड़ी भारी कठिनाई है । वह यह कि किसीके बहुत तरहकी बातें करनी हईं तो उसे अपनी पीठ पर सब चीजोंका गड्ढर लादना पड़ेगा या दो मजदूर करने पड़ेंगे । मैंने इनमेंसे दो अध्यापकोंकी फेरीवालोंकी तरह बोझसे

लटे हुए अन्धमर देखा था । अगर कहीं रास्तेमें दोनोंकी आपसमें भेट होगई तो गठरिया खोल कर घण्टी वात चीत करते पर मुंह दोनोंहीके बन्द रहते थे । वाते पूरी होजाने पर अपने अपने रास नकी बोरोसे रख कर चलते वनते थे । दोनों दोनोंकी सट्ट गठ रिया उठानेमें कारने थे ।

सासूली वातचीतके निये हरएक आदमी जेवमें गौर वस्तुमें चीजें सजेमें नेजा नकता है । गौर घरमें तो कोई वस्तु कम होना ही न चाहिये । बैठकमें भी इस छानिस मन्थापणके गिम्सित नसख वस्तु प्रस्तुत रहना अवश्यक है ।

इस तरहके मन्थापणमें सबसे बड़ा लाभ तो यह होगा कि सब देशवाले जो एकही तरहकी वस्तु व्यवहार करतें हैं इस भाषाकी समझने और फिर उह जगत्भाषा हो जायगी । वस राजदूतगग सहजमें बिदेशी राजा या मन्त्रियोंकी बोलिया समझने लग जायगे ।

गणित पढानेकी परिपाटी ऐसी विलक्षण देखी कि युरोपवाने उसका अनुभव भी नहीं कर सकते हैं । गणित मन्थनी प्रतिभा और प्रसाणादि पतली रोटी पर लिख कर वालकीकी भुलें पंथमें खिलावे जाते हैं और फिर तीन दिन तक रोटी और पानीके सिवा और कुछ खानेकी नहीं दिया जाता है । रोटीके परिपाक होजाने पर उसका प्रभाव सस्तिष्क पर पहुँच जाता है । यही उन लोगो की धारणा है । परन्तु अभी तक यह जगह वैधे नहीं उतरा है इन्की भी धारण है । एक तो स्याही गडबट बनती है दूसरा बड्डे पर हीजे रहते नहीं ।

गठ परिच्छेद ।



करते थे कि राजा सहायजगण पण्डित, योग्य और धार्मिक लोगों  
होकर अपना कृपापात्र बनाना परान्त करें—सन्तीगण सबकी  
भलाईका विचार करें—योग्य, गुणी और उत्तम कार्य करने  
वालोंको पुरस्कार मिला करें—राजकुमारोंकी ऐसी शिक्षा दी जाय  
जिससे वह अपने तथा प्रजाके स्वार्थको समझे—राज्यके लिये वही  
लोग चुने जाय जो इन रीतियोंको बरते हल्लाटि बहुतसी बातें थी  
जो कभी किमीने सोची भी न होगी । इन बातोंका पूरा होना  
सुझे असम्भवही दौखता है ।

परन्तु जो जो इनना मैं अवश्य कहूंगा कि सब प्रस्तावही ऐसे  
न थे । एक बड़ा बुद्धिमान डाक्टरशा जो राजनीतिके तत्वको अच्छी  
तरह समझता था । उसने सब प्रकारके रोग और कलङ्ककी अव्यय  
महोषधि ढूँढनेमें जो राजाके दोष और कर्मचारियोंकी लम्पटता  
से प्राय होते हैं, अच्छा परिश्रम किया था । यह कहा जाता है  
कि सभासमितिवाले बहुतसा चित्तकी तीव्रता तथा उत्तेजनादिसे  
प्राय दुःखित रहते हैं । उनके सिरकी विशेष कर हृदयकी बीमा-  
रियां होती है । तिल्ली, घुमटा सूखादि रोगोंसे वह पीडित होते  
हैं । गलगण्ड तीक्ष्ण तथा मन्दक्षुधा प्रभृति नाना प्रकारके रोग  
उन्हें घेरे रहते हैं जिनके नाम अनन्त हैं । इसलिये डाक्टर साहब  
की राय है कि अधिवेशनके पहले तीन दिन कुछ डाक्टर हाजिर  
रहा करें जो सभा भङ्ग होनेके समय प्रत्येक सभामदकी नाडी देखे।  
फिर चौधे दिन औषधिली व्यवस्था करे ।

यह भी लोकापवाद है कि राजाके प्रिय सन्तियोंके भूतनेको  
बीमारी होती है । डाक्टर साहबकी राय थी कि प्रधान मन्त्रीका  
विचित्रता बहुत सन्धेप और स्पष्ट रूपसे कामकाजके विषयसे जो  
कुछ कहना हो सो उनसे कहें और चलनेके समय उनकी नाक  
सलदे या पेट पर एक घूसा जमावे या घटाको चुचलदे या दोनी  
—नोको खेचे या सूई चुभोदे या बांहमें जीरसे चुटकाया काटे

जिनमें फिर वह भूल न जायं । दरबारके द्वितीसे जब तक काम पूरा न होजाय रोज मन्त्रीको इसी तरह चिताना चाहिये ।

अगर सभाहीमें लोग लड़ पड़े तो उनके मत मिलाप करा देने का बहुत अच्छा उपाय डाक्टर बतलाता था । वह कहता था कि दोनो दम्पतिमें मौ सौ मुखियोंको चुन कर दो दोका ऐसा जोड़ा लगावे कि जिनके सिर आकारमें प्रायः समान हों । इन जोड़ोंको एक पातमें बिठादे । 'दो अच्छे जर्जर ठीक एकही साथ एक जोड़े के सिरका पिछला हिस्सा ऐसे छद्मसे काटलें कि दोनोके मस्तिष्क आधे आधे होजाय । फिर एकका मस्तिष्क दूसरेके सिरमें लगादे । दस आपसमें मेल हो जायगा । अगर यह काम जरा कठिन है । पर वह कहता था कि तनक होशियारी करनेहीसे रोगी दमि तो जायगा क्योंकि जब दो तरहके मस्तिष्क एकही सिरमें आजायगे तो बहुत जल्दी दिवाह सिट जायगा ।

स्त्रियां सुन्दरता और कपडे पहननेकी सुघडाई पर टेक दें। पुरुषोंकी तरह यह सब भी अपने अपने मौन्दर्ध्य और वेगविन्यास का विचार करेगी। परन्तु दृढता, मतीत्व, सुबोध और सुन्दर स्वभाव पर टेक नही लगना चाहिये क्योंकि इससे ज्यादा खर्चा बैठेगा।

और एक मज्जनने एक कागज दिखाया जिसमें राजा महाराज के विरुद्ध जो कुछ पड्यन्त या विद्रोह होते हैं उनके प्रगट करने के उपदेश सब लिखे थे। वह कहता था कि जितने बड़े बड़े राज नीतिज्ञ लोग हैं वह जिन पर मन्देह छोड़ उनके भोजनकी, भोजनके समयकी, किस करवट मोते हैं, किस हाथसे आवदस्ता लेते हैं इत्यादि बातोंको परीक्षा किया करे। उनकी विष्टाकी भनी भाति जाच करें तथा उसकी रज़त, गन्ध, स्वाद गाढेपन आदिकी देख भाल रखे। तजरवेसे देखा गया है कि मनुष्य पञ्चानेमें जेसा गम्भीर अभिनिविष्ट और तत्पर होता है वेसा और कामी नही होता। ऐसी अवस्थामें उसने स्वयं परीक्षा करके देखाया कि राजाको मारनेका विचार करकेसे विष्टाका रङ्ग हरा होजाता है। लेकिन जब विद्रोहकी अथवा राजधानीकी भयंकर देनेकी इच्छा मनमें होती है तो उसका झुक् औरही रह हो जाता है।

बिलकुल बातें विशदरूपमें लिखी हुई थी। कई बातें राजनीतिज्ञोंके लिये अद्भुत तथा लाभकी भी थी। लेकिन मेरी समझ से विषय अपूर्ण था। मैंने साहस करके कह दिया कि अगर आप चाहें तो मैं भी कुछ नये उपाय बता सकता हूँ। उसने सादर मेरे प्रस्तावको स्वीकार किया और जो कुछ मैंने बताया सो ग्रहण किया। बहुत काम गत्यकार दूसरेकी बताई बातें मानते हैं।

मैंने कहा—“निवनियाके राज्यमें जिसे बहावाले ‘लखन’ कहते हैं वे कुछ दिन रङ्ग आया हूँ। वहाँके अधिकांश निवासी पड्यन्त तो प्रकाश करनेवाले, शपथ खानेवाले, अभियोग चलाने वाले, जासूसी करनेवाले तथा गवाही देनेवाले इत्यादि हैं। यह लोग अपने साथ नाना प्रकारके यन्त्रादि रखते हैं और राज्यके बेतन



प्रशान्त सहासागरके उत्तर विस्तृत है जो लगाडोसे डेढनी मीलसे अधिक दूर नहीं है। वहां मलडो नाडो नामका एक सुन्दर बन्दर है। लगनग द्वीपके रहनेवाले यहा आकर तिजानत करते हैं। यह जापानसे पूरब तीनसी मील पर बसा हुआ है। जापानके महाराज और लगनगके राजामें खूब मेल मिलाप है इसीसे दोनो टापुओमें जहाजों की आवा जाई अकसर बनी रहती है। मैंने इसी राहसे युरोप पहुंचनेका मनसूबा किया। मैंने दो खच्चर भाडे किये तथा एक वेगार राह बताने और माल टाल ढोनेके लिये। सुनोडीसे मैं विदा हुआ। चलनेके समय उसने खूब दिया लिया था।

रास्तेमें कोई घटना लिखनेके योग्य नहीं हुई। खुशी राजी मलडो नाडो पहुंचा। यहा लगनग जानेके लिये कोई जहाज तैयार न था और न जल्दी जानेकी सम्भावनाही थी। लाचार वहां टिकना पडा। बाजार छोटा मोटा अच्छा था। एक आदमी से जान पहचान होगई। उसने बड़ी खातिर की। वह बडा भला मानस था। उसने कहा कि लगनगके लिये जहाज एक महीनेमें कममें नहीं कूटेगा। तब तक चलिये पासहीके गलवडव ड्रिव नामक छोटेसे टापूकी सैर कर आवे। मैं भी राजी होगया। एक छोटीसी छीमर किराये कीगई। उस पर सवार होकर हम लोग चलते हुए।

गलवडव ड्रिव शब्दका अर्थ है जादूगरीका द्वीप। यह छोटासा सजेका टापू है। यहाकी जमीन उपजाऊ है। यहा एक तरह की जाति निवास करती है जो सबके सब जादूगर हैं। राजा भी इसी जातिका है। यह आपसहीमें व्याह करते हैं। जो सबसे बडा होता है वही राजगद्दी पर बैठता है। राजाका मकान सुन्दर और बगीचा मनोहर था। चारों ओर पत्थरकी बीस फुट ऊंची दीवार थी। भीतर गोशाला, गोदाम आदि अलग अलग बनी हुई थीं।

राजाके नौकर चाकर जो थे सो सब विचित्रही थे। राजा

जादूके दलसे चाहे जिस मुर्देको बुलाता और पके चौबीस घण्टे उससे काम लेता । इससे ज्यादा नहीं ले सकता और न फिर उसी मुर्देका बिना भारी जरूरतके तीन महीनेके अन्दर बुला सकता था ।

जब हम लोग वहां पहुँचे तो दिनके खारब बजे थे । मेरे साथियोंमें से एकने जाकर मेरे आनेकी खबर राजाको दी । आज्ञा पाकर मैं भी भीतर गया । दोनों ओर सिपाही खड़े थे जिनकी घोशाक और सजावट अनोखी थी । उनके चेहरे देख कर मैं इतना डर गया था कि लिख नहीं सकता । वह सभी भूत थे । दालान बगैरहको लाव कर दीवानखाममें जा पहुँचा । मेरे साथ दो आदमी और थे—एक तो मित्र और एक मित्रका सहचर । राजा सिंहासन पर बैठा था । तीन तैरन दार हम लोगोंने मलाम किया । कई प्रश्नके बाद राजाने बैठनेकी आज्ञा दी । सिंहासनकी निचली सीढ़ी के पास तीन तिपाइया रखी थी उन्हीं पर हम तीनों बैठ गये । यद्यपि दलना दग्वीकी भाषा वहांकी भाषासे दिनहुन जुड़ी थी । तथापि राजा उसे समझता था । उसने उसी भाषासे मेरे सपरका हाल पृथा और उगलीके इशारेसे अपने आदरिणीको गट जानेके लिये कहा । वह सब इशारा पातेही ऐसे चम्पन हो गये जैसे आदर करने पर सपना होजाता है ।



को सन्तर्भ में रखनेके लिये कहा गया पर हम लोग न गये । इसके लिये जग प्रार्थना करनी पड़ी थी । हम लोग राजमहलके बाहर एक घरे सोये और सवेरे उठ कर फिर राजाके पास गये ।

इस प्रकार वहां हम लोग दस दिन रहे । दिनको महलमें और रातको बाहर रहते थे । फिर तो मैं भूतोंसे ऐसा डीठ होगया कि क्या लिखू । सब डर भय जाता रहा । अगर कुछ रह भी गया होगा तो उसे कौतूहलने दबा दिया था । राजाने सुभक्तसे कहा—  
“कहो जिस भूतको बुलाएं । मृष्टिकी आदिसे आज तक जितने मनुष्य मरे हैं सब आसक्त हैं । तुम जो चाहो सो पृष्ठ सकते हो पर एक बात याद रखो कि जो जिस समय जीवित था उससे उसी समयकी बातें पूछना आगे पीछेकी नहीं क्योंकि वह लोग कभी भूट नहीं बोलते सदा सब बोलते हैं ।” मैंने सब स्वीकार किया । हम लोग जिस कमरेमें थे वहांसे बगीचा साफ दिखाई पड़ता था । सबसे पहले मैंने “अगर बेला” की लडाईके बाद बड़े सिकन्दरको ससैन्य देखना चाहा । वस राजाके उमली हिलातेही खिडकीके नीचे एक बड़े लम्बे चौड़े मैदानमें एक प्रत्यक्ष होगया । सिकन्दर भीतर बुलाया गया । बड़ी सुशक्लसे उसकी ग्रीक भाषा समझने आई थी । उसने कसम खाके कहा—“मुझे विष नहीं दिया गया । बहुत शराब पी जानेके कारण ज्वरसे मैं मरा था ।”

फिर अल्पस पर्वत लांघते हुए हनीवलको देखा । उसने कहा कि अंगूरी शराबकी एक बून्द भी मेरे कम्पमें न थी ।

सीजर और पोम्पे ससैन्य दिखलाई पड़े जो लड़नेको तैयार थे । सीजरकी अपनी पिछली बड़ी जीतके कारण जुलूसमें मज धजके निकलते देखा । फिर रोमकी सिनेट सभाको एक बड़े हालमें और आजवाकके प्रतिनिधियोंको दूरमें अवलोकन किया । पहलेमें मालूम होताथा कि वीर और देवता विराजित हैं और दूसरेमें ठग, जेवकतरे डाकू, फेरीवाले, हरमुष्टक और हुडदङ्गे भरे हुए हैं ।

राजाने मेरे कहनेसे सीजर और ब्रूटसको बुलाया । ब्रूटसकी

देख कर चित्तमें भक्तिका सञ्चार होआया। उसने चेहरेसे वीरता, पूर्ण धर्म प्रियता, दृढ प्रतिज्ञता, निर्भीकता, सच्ची दैर्घ्यवैरिता, उदारता टपकी पड़ती थी। मौज़र और ब्रूटममें रूब मेल मिलाप देख कर सुभे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मौज़रने मेरे सामने स्वयं मुक्तकण्ठसे स्वीकार किया था—“मेरे जीवनके बड़े बड़े कार्य भी अधिन अगम मेरे सारे जानिके तुल्य गौरव युक्त नहीं है।” ब्रूटससे मेरी बहुत बात चीत हुई। वह कहता था—“मेरे पुरखे जूनियस, सुकरात, एपामिराउस, कनिष्ठवेटो, सरटोसस मोर और तै सदा एका सप्प रहते हैं इनके जोड़का सातवां न कोई हुआ न होगा।”

और कितने सहाय्याओंका दर्शन सैने किया मो सविस्तर लिख कर पाठकोंको कष्ट देना नहीं चाहता। सारांश यह कि सब युगों की सब बातें ग्रन्थोंके मासने आगई थी। से विशेष कर उन्हीं लोगोंको देख कर मन्तुष्ट हुआ जो दुष्टों और पराये राज्यके हीनने वालीका दमन कर पीडित दुःखित जातियोंको स्वाधीनता प्रदान कर गये हैं। उन सब व्यापारीदो अदलीकन कर से कितना प्रसन्न हुआ सो लिए कर बनाना अनश्वरी है।

अष्टम परिच्छेद

चानना तो दूर रहा कोई उनके नाम भी न जानता था । एक भूत ने जिसका नाम सालूस नहीं चुपकेमे मेरे कानमें कहा कि यह टीकाकार लोग प्रेतलोकमें कवियोंके पाम सारे लज्जाके कभी फट-कते भी नहीं क्योंकि इन सबने अशुद्ध टीका लिख लिखकर सबको बहकाया है । मैंने डिडीमस और युष्टाथियस दो टीकाकारोंको होमरके सामने पेश किया तो आपने उनकी योग्यतामे बढ कर आदर किया और कहा कि कवियोंके कर्मको समझनेके लिये बुद्धिकी आवश्यकता है । स्कोटम और रैसमके आने पर जब मैंने उनका वृत्तान्त कह सुनाया तो अरिष्टोटलसका धीरज जाता रहा । उसने छूटतेही उनसे पूछा—क्या बाकी लोग भी तुम्हारे ऐसे सूझें हैं ।

पांच दिन तक मैं प्राचीन विद्वानोंसे सम्भाषण करता रहा । रोमके पहले बादशाहोंमेंसे बहुतोंको देखा । एक विख्यात रमो-इयको बुलाया जो सब सामग्री प्रस्तुत न रहनेके कारण अपनी पाक चातुरी न दिखा सका ।

मेरे दोनो साथी किसी जरूरी कामके सबब ज्यादा ठहरना नहीं चाहते थे । लाचार मुझे तीनही दिनमें सबको देखना पडा । दो चारसी बरसके अन्दर युरोप या विलायतमें जो अच्छे अच्छे नामवर होगये हैं उनके दर्शनकी अभिलाषा हुई । मैं पुराने घराने के नामी पुरुषोंका बडा भक्त हूँ इसीलिये मैंने दो चार दर्जन राजाओंको तथा उनके आठ दस पुरुषोंको क्रमसे बुलवाया । पर पीछे मुझे बडा अफसोस हुआ क्योंकि राजकुलमें राजपुरुषोंके बदले मफरदे, शोहदे, इटलीके पादरी, हजाम वगैरह ही नजर आये । मैं और भी कुछ पतेकी कष्टता पर राजाओंको आदरकी दृष्टिसे देखता हूँ इससे कुछ कह नहीं सकता । जब इनकी यह दशा है तो राव, उमराव और बाबू लोगोंके बारेमें कहाही क्या जाय ? किजी किसी बशके लोगोंकी एक आकृति विशेष होती है । जिमसे वह पहचाने जाते हैं । यह बात किस कुलमें कबसे चली मो पता लग - - - मुझे कुछ कम आनन्द नहीं हुआ था । क्यों

किसी कुलमें लम्बी ठुड्डिया, क्यों दो पीढ़ियों तक दुष्ट, दो तक वेवकूफ और ठग आदि होने लगे सो मुझे अच्छी तरह मालूम होगया। कैसे कोई कोई खानदान निहुरता, अनत्यता और भीरुता के लिये विख्यात होगया और किसने पहले दुष्ट रोगका बीजारोपण अपने कुलमें किया इत्यादि बातोंका भी पता मुझे लग गया। माराश यह कि एक भी विशुद्ध दंश दृष्टिगोचर न हुआ।

आधुनिक इतिहासोसे मैं बहुत घबरा गया। क्योंकि सौवर्ष पहलेके राजघरानेके नामवर पुरुषोंकी अच्छी तरह खोज करनेसे भली भांति प्रगट होगया कि वेईमान लेखकोने दुनियाको कैसा धोखा देखा है। अब लोग नितान्त डरपोक भीरुको युद्ध विद्यामें पटू स्यूखोंको चतुर, खुशामदियोंकी सच्चा, नास्तिकीकी धर्माला, व्यक्तिचारियोंको सदाचारी और जासूसोंको मृत्यवादी समझने लगे हैं। जजोंके घमण्डोर होने और आपसके ईर्ष्याहेपसे कितनेही विचार निरपराध और सज्जनोंको देशनिकाना तथा पामी हुई कितनेही दुष्ट अत्याचारियोंको ऊंचे ऊंचे पद मिले और कितनेही पेटार्थी, कुटने, भाड और रणियोंकी सृष्टि चली दनी। और भी बहुतसी बातोंका गुप्त भेद सुन कर मनुष्य जाति की विद्या दुष्टि पर घृणा होने लगी थी।

जल सेनापतिने कहा—“एक तो मैं युद्ध करना नहीं जानता दूसरे शत्रुसे भी मिल गया था तो भी सेरीही जीत हुई ।” तीन राजाोंने भी कहा—“हम लोगोंने भी कभी किसी गुणीको ऊँचे पद पर नियत नहीं किया । भूलसे या मन्त्रियोंके विश्वासघातसे जिनका हम सदैव विश्वास करते थे भलेही कोई होगया हो तो हम कह नहीं सकते । अगर हम लोग फिर जी उठें तो ऐसा कभी न करें ।” इसके सिवा अच्छी अच्छी युक्तियां दिखलाकर वह यह भी बोले कि अत्याचारके बिना राजसिंहासन ठहर भी नहीं सकता है क्योंकि स्थिरता दृढता, एकाग्रतादि गुण सर्वसाधारणके कार्यके बाधक हैं ।

किस प्रकारसे बहुतेरे मनुष्य बड़ी बड़ी उपाधियां तथा ऐश्वर्य पाजाते हैं सो जाननेके लिये मुझे अत्यन्त लालसा हुई । राजासे कहने पर उपाधि तथा ऐश्वर्य पाये हुये आधुनिक समयके अनेक भूत बुलाये गये । इन लोगोंने अपने अपने धन वा मान पानेके जो कुछ कारण बताये सो सुन कर बड़ी ग्लानि हुई । झूठ बोलना झूठी गङ्गाजली उठाना, जुआंचोरी तथा कुटनापन करना आदि पापकर्महीसे प्रायः लोग बड़े हुए थे । सबने स्वीकार किया कि कोई स्त्री और कन्याके व्यभिचारसे—कोई स्वदेश वा राजाकी बुराई करनेसे—कोई विष प्रयोगसे और बहुतेरे अन्यायसे निरपराधीको विनष्ट करके धनवान हुए थे । हम गरीबोंको गेटा बड़े आदमियोंका अदब करना चाहिये परन्तु इन विचित्र बातोंके मारे चुप न रह सका । पाठक क्षमा करेंगे ।

मैं इतिहासोंमें अकसर पढ़ता था कि बहुतोंने राजा और राज्य दोनोंहीकी बड़ी बड़ी सेवाएंकी है । इन सेवा करनेवालोंको मैंने देखना चाहा । पीछे खोज करनेसे मालूम हुआ कि उनके नाम इतिहासोंमें नहीं हैं और जो दो चार हैं भी सो नराधम, दुष्ट और राजद्रोही बनाये गये हैं । और शेषकी कहीं चर्चा भी सुननेमें न आई । सब नीची नजर किये गुरी दशमैं मेरे पास आये थे । यह भी प्रगट हुआ कि किसीने अन्न कष्टसे और किसीने आत्मग्लानिसे प्राण दिये थे और शेष सूली पर चढ़ाये गये ।

एक प्रेतात्मा की कहानी सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ । उसके साथ अठारह वर्ष का एक बालक भी था । वह रोमनगर के एक जहाजी जहाज का कप्तान था । उसने एक जरा युद्ध में जय प्राप्त कर शत्रु के तीन जहाजों को समुद्र में डुबी दिया और एक छीन लिया । एगुप्टो के भागने का यही सबब था । कप्तान की जीत हुई यही पर उसका एकलौता पुत्र युद्ध में कास आया । यही पुत्र उसके साथ था । रोम आकर उसने एक दूसरे बड़े जहाज की कप्तानी के लिये जिसका कप्तान लड़ाई में मारा गया था, मन्नाट अगुए के प्राये की । परन्तु अगुए ने वह पद एक छोटे को दे दिया जिसने समुद्र कभी देखा न था । और वह उसकी बेगम की एक दाई का लडका था । विचारा कप्तान निराश होकर अपने जहाज पर लौट आया पर नमाज की गये गले पड़े रोजा की बात हुई । कप्तान अभावधानी के दोष में पदच्युत हुआ और कप्तान के सहकारी का एक दामन बरदार उस ओहदे पर बहाल किया गया । कप्तान विचारा रोमनगर छोड़ कर बहुत दूर एक गांव में किसानों के साथ रहने लगा । यही उसकी मृत्यु हुई । सुभे इस कहानी का विज्ञाप नहीं हुआ तो एगीप्रा की जो उस जहाज का सेनापति था

विगाड दिया, आकार कैसा छोटा कर दिया और लम्बा तक करें सब तरहसे कमजोर करके कैसा कुरूप कर दिया ।

इन सबके बाद मैंने इंग्लैण्डके पुराने ढङ्गके ज़िगावीका दर्शन किया जो एक मसय साटा भोजन, साटी पोशाक में - दी चाल चलनके लिये, अपने व्यवहारमें सचार्डके लिये, सच्ची स्वतन्त्रता साहस और देशानुरागके लिये विख्यात थे । तबके और अर्धत लोगो को देख कर कलेजा कांप गया । इन महात्माओंकी महान् रूपरे के लोभमें पडकर कैसी अधःपतित हो गई है । १९११ आमिण्डके चुनावके समय वोट ( Vote ) बेच बेच कर इन लोगोंके दरबार के पापीको खूब बटोरा है । हा हन्त !

नवम परिच्छेद ।



गलवडवड्डिवके राजामे बिदा होकर हम लोग मानडोनाडा पहुँचे । वहाँ पन्द्रह दिन ठहरनेके बाद एक जहाज मिना जो लग नग जाता था । मैं उसी पर सवार हुआ । दोनो सज्जनीने मेरा बडा आदर सत्कार किया । यहां तक कि रास्तेके लिये कलेवा भी मेरे साथ बांध दिया था । विचारे जहाज तक मुझे पहुँचा भी गये । इस सफरमें एक महीना लगा । रास्तेमें एक बार तूफान भी आया था । खैर जहाज हामेगनिगके बन्दरमें पहुँचा । यह लगनगसे दक्खिन भूरव वसा हुआ है ।

जब मैं उतरा तो किसी खलासीने ठुटतासे अथवा भूलसे मेरी खबर कष्टम हाउसवालीको करदी । फिर क्या था मेरी लज्जाभारी लौगई । मैंने अपनेको हालेण्डवासी बताया क्योंकि मुझे जापान तक जाना था और वहा डचके सिवा दूसरे युरोपियन घुसने नही पाते थे । मैंने कष्टम हाउसकी अफसरसे कहा कि मेरा जहाज वलनीवरवीके किनारे तवाह होगया । मैं किसी तरह लपूटा (उडन टाप्) जापहुँचा । अब मैं जापान जाया चाहता हूँ । वहासे मैंने देगको चला जाऊंगा । इस पर उसने जवाब दिया — “बिना

सरकारी हुज्म पाये मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता । अभी तुम्हारे आनेकी खबर सरकारसे भेजता हूँ । पन्द्रह दिनसे वहाँसे जवाब आजायगा तब तुम्हारी छुट्टी होजायगी ।\* लीजिये मैं बिना अपराध केद्वी होगया । मैं एक सुन्दर सक्कानसे पहुँचाया गया । मेरे खाने पीनेका भी मद प्रबन्ध सरकारकी तरफसे कर दिया गया । द्वार पर पहरेके लिये एक मन्तरी भी बैठाया गया । मेरे आनेकी चर्चा तमाम फैल गई । दूर देशका आदमी सम्मिल कर सभी लोग मुझे देखने के वास्ते आते थे ।

एक छोकरा मेरे साथही जहाज पर आया था । वह लगनग और सानडो नाडा दोनो जगहोंकी बोनिया जानता था । मेने उसे अपना द्विभाषी नियत किया । उससे वहाँकी भाषा भी सीखता था ।



आता है तो जान बूझ कर सारी गच धूलसे शरटी जाती है । सँदे एक सज्जनकी जमीन चाटते चाटते बेटस हो जाते देखा है । यहाँ तक कि जब वह रोग कर खड़ा हुआ तो मुँहमे गावाज नहीं निकल सकती थी । इसकी कोई दवा भी नहीं द्योदि जो लोग राजासे मुलाकात करने जाते हैं उनके लिये राजाके सामने बूकना या मुँह पोखना बड़ा भारी कसूर है । इसकी सजा केवल फाँसी है । एक रीति और है जो मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं । जब राजा की इच्छा किसी दरबारीकी जान साधारण तौरसे लेनेकी होती है तो सारे महल पर एक तरहकी विपैली बुकनी फैला दी जाती है । बस चाटनेवाला चौबीस घण्टेके अन्दरही यमपुर पहुँच जाता है । लेकिन यह बात है कि राजाको अपनी प्रजाकी जान बहुत प्यारी है और इस विषयमे वह बहुत सावधान भी रहते हैं । हमारे युरोप के राजे महाराजे भी ऐसीही हों यही मेरी वाब्हा है । इसी लिये जब किसीकी जान बुकनीके द्वारा लीजाती है तो श्रीमान् गचको खूब साफ करके धो डालनेकी कड़ी आज्ञा देते हैं । अगर नौकर चाकर इसमें असावधानी करते तो राजा साहब बहुत नागज होते हैं । मेरे सामनेकी बात है कि एक छोकरेकी गलतीसे एक होनहार नवयुवककी जान चली गई । उस छोकरेने जान बूझ कर डाहसे विषकी बुकनीको साफ नहीं किया था । इस अपराधके लिये उसे कोड़े लगनेवाले थे पर राजाने छपा करके उसे छोड़ दिया और कहा—“मेरी आज्ञाके बिना फिर ऐसा मत करना ।”

अच्छा अब आगे सुनिये । रेंगते रेंगते सिंहासनसे चार गजके फासले पर पहुँचा तो धीरेसे घुटना टेक मै खड़ा हुआ । फिर सात बार जमीनसे माथा टकरा कर उस भाषाका एक वाक्य मुझे कहना पड़ा । यह पहलेहीसे मुझे रटाया गया था । इसका मतलब यह है—श्रीमान् सूर्य और साढे ग्यारह चन्द्रमाओसे भी अधिक जीवे ।” इसका आपने क्या जवाब दिया सो मेरी समझमें न आया । मैं भी मुझे जो कुछ रटाया गया था सो मैंने कह दिया । वह

वह है—“मेरी जिह्वा मेरे मित्रों सुझमे है।” अर्थात् मैं अपने दुभाषियेको बुलानेकी आज्ञा चाहता हूँ। फिर दुभाषिया आया। एक छगटेमें ज्यादा बात चीत होती रही। राजाने जो कुछ पृष्टा उसका जबाब दुभाषियेके द्वारा बराबर मैं देता जाता था। मैं तो दलतीवरदी भाषामें बोलता था और वह लगनगकी भाषामें उसका तर्जमा करता जाता था।

राजा मेरी मुलाकातमें बहुत प्रसन्न हुए। आपने अपने कच्चे-चारोंको मेरे डेरे उखड़े तथा भोजन आदिके प्रबन्धके लिये आज्ञा दी उसने सब ठीक ठाक कर दिया।

राजाके अनुरोधमें मैं वहाँ तीन महीने रह गया। आप मुझ पर बहुत लुण्ठन करते थे। आप मुझे एक अच्छा पद भी राजमुद्रा में देते थे पर मैंने अङ्गीकार नहीं किया क्योंकि वृद्धादिमें दानवर्द्धि ही गायत्री रहना उचित जान पड़ा।

दशम परिच्छेद ।



आता है तो जान बूझ कर सारी गच धूलसे रगटी जाती है। मैंने एक सज्जनकी जमीन चाटते चाटते वेदस हो जाते देखा है। यहां तक कि जब वह रेंग कर खड़ा हुआ तो मुँहमें मावाज नहीं निकल सकती थी। इसकी कोई दवा भी नहीं क्योंकि जो लोग राजासे मुलाकात करने जाते हैं उनके लिये राजाके सामने ठुकना या मुँह पोछना बड़ा भारी कसूर है। इसकी सजा केवल फाँती है। एक रीति और है जो मुझे विलकुल पसन्द नहीं। जब राजा की इच्छा किसी दरबारीकी जान साधारण तौरसे लेनेकी होती है तो सारे महल पर एक तरहकी विपैली बुकनी फैला दी जाती है। बस चाटनेवाला चौबीस घण्टेके अन्दरही यमपुर पहुँच जाता है। लेकिन यह बात है कि राजाको अपनी प्रजाकी जान बहुत प्यारी है और इस विषयमें वह बहुत सावधान भी रहते हैं। हमारे युरोप के राजे महाराजे भी ऐसीही चीं यही मेरी वांछा है। इसी लिये जब किसीकी जान बुकनीके द्वारा लीजाती है तो श्रीमान् गचको खूब साफ करके धो डालनेकी कड़ी आज्ञा देते हैं। अगर नौकर चाकर इसमें असावधानी करते तो राजा साहब बहुत नाराज होते हैं। मेरे सामनेकी बात है कि एक छोकरेकी गलतीसे एक हीन हार नवयुवककी जान चली गई। उस छोकरेने जान बूझ कर डाहसे विषकी बुकनीको साफ नहीं किया था। इस अपराधके लिये उसे कोड़े लगनेवाले थे पर राजाने क्षमा करके उसे छोड़ दिया और कहा—“मेरी आज्ञाके बिना फिर ऐसा मत करना।”

अच्छा अब आगे सुनिये। रेंगते रेंगते सिंहासनसे चार गजके फासले पर पहुँचा तो धीरेसे घुटना टेक मै खड़ा हुआ। फिर सात बार जमीनसे माथा टकरा कर उस भाषाका एक वाक्य मुझे कहना पड़ा। यह पहलेहीसे मुझे रटाया गया था। इसका मतलब यह है—श्रीमान् सूर्य और साढ़े ग्यारह चन्द्रमाओंसे भी अधिक  
 “।” इसका आपने क्या जवाब दिया सो मेरी समझमें न आया।  
 । मुझे जो कुछ रटाया गया था सो मैंने कह दिया। वह

यह है—“मेरी जिज्ञा मेरे मित्रके मुहमें है।” अर्थात् मैं अपने दुभाषियेको बुलानेकी आज्ञा चाहता हूँ। फिर दुभाषिया आया। एक घण्टेसे ज्यादा बात चीत होती रही। राजाने जो कुछ पूछा उसका जवाब दुभाषियेके द्वारा बराबर मैं देता जाता था। मैं तो बलनीवरवी भाषामें बोलता था और वह लगनगकी भाषामें उसका तर्जमा करता जाता था।

राजा मेरी मुलाकातसे बहुत प्रसन्न हुए। आपने अपने कर्म-चारोंको मेरे डेरे डण्डे तथा भोजन आदिके प्रबन्धके लिये आज्ञा दी उसने सब ठीक ठाक कर दिया।

राजाके अनुरोधसे मैं वहाँ तीन महीने रह गया। आप मुझ पर बहुत कृपा रखते थे। आप मुझे एक अच्छा पद भी राजसभा में देते थे पर मैंने अह्मीकार नहीं किया क्योंकि बुढापेमें बालबच्चों के साथही रहना उचित जान पड़ा।

### दशम परिच्छेद ।



लगनगके रहनेवाले सुशील और उदार हैं। पूर्व देशके लोगो को जो एक तरहका अभिमान होता है उसका यद्यपि एक छींटा इन लोगों पर भी पड़ा है तथापि यह विदेशियोंके साथ शिष्टाचार करतेहैं विमोक्षित; जिनका राजसभामें आदर होता है उनका अधिक सम्मान करते हैं। वहाँ कई बड़े बड़े आदमियोंसे मेरी जान पहचान होगई। मेरा दुभाषिया हरदस साथ रहताथा इससे बात चीत में कोई अन्तर नहीं पड़ता था।

एक दिन सजेका जमघट था। एक मित्रने मुझसे पूछा—“हमारे किसी अमरकी आपने देखाहै ?” मैं बोला—नहीं। लेकिन यह तो बताइये कि मतलब क्या है। यह सारी सृष्टिही मरनहार है फिर आपके इस अमरका क्या अर्थहै ?” वह बोला अच्छा सुनिये। यहाँ सयोगसे कभी कभी किसीके यहाँ एकाध बालक ऐसा उत्पन्न हो जाता है जिसके माथेमें वार्ड भौहके ठीक ऊपर एक गोल लाल

दाग रहता है । लोग कहते हैं कि जिसके यह चिन्ह होता है वह कभी मरता नहीं ।" उसके कहनेसे यह भी मालूम हुआ कि यह दाग पहले चबूतीसे कुछ छोटा रहता है लेकिन पीछे बढ जाता है और रङ्ग भी बदल जाता है । बारह वर्षके बाद यह हरा हो जाता है और पचीस तक वैसाही रहता है । बाद और नीला फिर पैंतालिसवें सालमें खूब काला होता है और आकार भी बढ कर अठन्नीसे कुछ छोटा बन जाता है । फिर कोई परिवर्तन नहीं होता । ऐसे लडके बहुत कम पैदा होते हैं । सारे राज्यके अमर लडके लडकी मिलाकर अधिकसे अधिक ग्यारह सौ होंगे । राजधानीमें कुल पचासही हैं । और शेषमें एक बालिका तीन साल की है । अमर किसी एकही खानदानमें पैदा नहीं होता । सयोग से सर्वत्रही होता है । इन अमरोंकी सन्तान भी अमर नहीं होती । सब लोगोंकी तरह वह भी मरती है ।

यह वृत्तान्त सुन कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ । जिसने यह बात कही थी वह बलनीवरवी भाषा समझताथा और मैं वह भाषा खूब सप्पाटेसे बोल सकता था सो मारे आनन्दके मेरे जीमें जो कुछ आया सो बक गया । मैं भीकसे बोल उठा—अहा ! वह जाति धन्य है जिसमें लडकोंको अमरत्व प्राप्त करनेका भी सौभाग्य है ! वह मनुष्य धन्य हैं जो प्राचीन कालके गुणोंकी जीवन्त स्मृति दर्शन करते हैं और जिन्हें प्राचीनकालकी विद्या पढानेकी गुरु तय्यार हैं । परन्तु सबसे बढ कर धन्य वह अमरगण हैं जो मानव जातिकी विश्वव्यापक विपदसे बचे हुए हैं और जिनके चित्तमें मृत्युका कुछ भी भय नहीं है । परन्तु आश्चर्य है कि राजसभामें एक भी अमर दृष्टि गोचर नहीं हुआ ! काला दाग ऐसा चिन्ह है जो कभी छिप नहीं सकता । महाराजसे न्यायी राजा अपने दरबारमें ऐसे चतुर सुयोग्य मन्त्रियोंको न रखें यह भी विचित्रही है । कदाचित् अमरगणही राजसभासे दूर भागते हों क्योंकि यह सब पापीकी है । अथवा नवयुवक लोगही अपनी तीक्ष्ण बुद्धिके सामने

बड़ोंकी सुन्दर सम्मतियोंकी तुच्छ समझते हूँ। प्रायः देखा भी गया है कि यह लोग अपने बातके बड़े पक्की होते हैं इसीसे अमरों की अपने समाजमें घुसने नहीं देते ! अस्तु, जब महाराज तक मेरी घुस पैठ है तो अवश्य उन्हें उचित परामर्श दूंगा। दुभाषियेके द्वारा उन्हें समझाऊंगा कि अमरगणको अपना मन्त्री बनाइये। वह मेरी सम्मति माने चाहे न मानें मैं अब यहां अवश्य रहूंगा। महाराज यज्ञ रखनेके लिये आग्रह करतेही हैं और अच्छा पेट देने को कहही चुकेहैं तो अब जरूर रहूंगा और यदि अमरगण स्वीकार करें तो उन्हींके सङ्ग अपना जीवन शेष करूंगा।”

वह मनुष्य जिससे मैंने यह सब कहा था वलनीवरवी भाषा जानता था यह मैं पहलेही लिख चुका हूँ। वह मेरी बातें सुन कर हंसा। फिर अपनी मण्डलीवालोंको मेरे व्याख्यानका सारांश सुनाया। इस पर उनमें खूब गहरी बात चीत हुई जिसका एक अक्षर भी मैं समझ न सका और न भाव भङ्गीहीसे कुछ समझमें आया कि मेरी बातोंका कैसा प्रभाव उन पर पड़ा। थोड़ी देर चुप रहकर उसी व्यक्तिने जो बात करता था कहा—“आपकी बातें सुन कर हम लोग बहुत प्रसन्न हुए।” अच्छा यह तो बताइये कि अगर आपहो अमर होते तो किस प्रकार जीवन व्यतीत करते।”

मैंने जवाब दिया—“ऐसे सुन्दर विषयपर व्याख्यान देना विशेष कर मेरे लिये सहज है। मैं सदैव सोचा करता हूँ कि अगर राजा होता तो यह करता, सेनापति होता तो यह करता और लाट होता तो यह करता। और इस अमर होनेके वारेमें तो सब सोचे बैठा हूँ कि कैसे रहूंगा और क्या क्या करूंगा।

“अगर परमात्माकी दयासे मैं अमर होता और ज्योंही जीवन मृत्युका अन्तर सुम्ने मानूस होजाता त्योंही सबसे पहले चाहे जैसे होता धन बटोरनेकी चेष्टा करता। कम खर्च और सुन्दर बन्दोबस्तसे बहुत जल्द धनवान होजाता। बस कोई दो सौ वर्षमें कुवेर का भण्डार मेरे पास आजाता। लडकईसे शिल्प और विज्ञान

पढनेमें मन लगाता वस विद्यामें भी साक्षात् वृत्तस्थति बन जाता । फिर जो कुछ बड़े बड़े कार्य या घटनाएँ होती सो सावधानीसे लिखता और निष्पक्ष भावसे प्रत्येक राजा और मन्त्रीके कार्योंको आलोचना करता तथा अपनी टिप्पणियाँ उनके साथ जोड़ देता । रीति, व्यवहार, भाषा, वेष, भोजन और स्त्रीकी गढ़ल बढलको भी लिख कर दिखलाता । इस प्रकार मैं विद्या बुद्धिका जीवित खजाना होता और अपनी जातिका तो एक पूज्य देवता होजाता ।

“माठ वर्षके बाद मैं कदापि व्याह न करता । खर्च कमती करता तो भी अतिथि सेवासे मुँह न मोड़ता । होनहार युवकोंको धर्मके लाभ तथा तत्व बताता । लेकिन मैं नये पुराने अमरोंमें से बारह चुन कर उन्हींके साथ रहता । जिनको रुपयेकी दरकार होती उन्हें रुपये और जिनको स्थान न होता उन्हें अपने गृहमें स्थान देता । किसी किसीको अपने साथ भी खिलाता । और तुममें से बहुत कमको सो भी दोचार पण्डितोंकी अपने साथ बिठाता और जब वह मर जाते तो बिना दुःख किये उनके पुत्रोंको ग्रहण करता । जिस तरह बाटिकामें सालके साल फूल फूलते हैं और गिरते हैं पर उसका किसीको कुछ ख्याल भी नहीं होता । उसी प्रकार मैं भी अपने नखर साथियोंके लिये कुछ दुःख न करता ।

“यह अमरगण और मैं अपने अपने विचारोंको आपसमें प्रगट करते—किस तरह अष्टाचार जगतमें घुस आया इसकी आलोचना करते और सब किसीको डरा धमका समझा बुझाकर इस पापाचार को बन्द करनेकी चेष्टा करते । हमारे आदर्शका अनुकरण करने से मनुष्य जातिके स्वभावकी वह नीचता जिसकी निन्दा सब युगों से होती आई है दूर होजाती ।

“राज्यो और सत्ततनतीके न्यारे न्यारे छलट पोर तथा इह लोक और परलोकके परिवर्तनको देखता । पुराने नगरोको उजडते, छोटे छोटे देहातोंको राजधानी बनते, बड़ी बड़ी मगधहर नदियो सूख कर सीते बनते, ससुदको एक किनारा सुखाते और दूसरा

उद्योते, सभ्य देशोंमें असभ्यता फैलते और असभ्योंको सभ्य बनते अपनी आखोंसे देखता और देख कर प्रसन्न होता । न जाने और कितनी नई चीजें देखता ।

“धूमकेतुके उदय अस्तको तथा सूर्य, चन्द्र और तारोंकी गति-योके परिवर्तनको अवलोकन कर ज्योतिष विद्यामें बड़ी बड़ी अद्भुत वस्तुओंका आविष्कार करता ।”

और भी बहुतसी बातें मैंने कही थीं । जब मैं अपनी वक्तृता पूरी कर चुका तब उसी सज्जनने पुनः मेरे कथनका सार भाग सब को कह सुनाया । उन लोगोंने अपनी भाषामें बहुत देर तक न जाने क्या क्या बातें की जो मेरी समझमें न आई । लोग मेरी ओर देख देख कर हँसते जरूर थे । उसने फिर यी कहना शुरू किया—आप भूलते हैं । आपने इस विषयको भली भाँति समझा नहीं । अमर केवल यही पेटा होतेहैं और कहीं नहीं होते । जापान या बलनीवरवी राज्यके रहनेवालोंको अमरका विश्वास नहीं है । वह लोग इन बातोंको झूठ समझते हैं मैं दोनों राज्योंमें कुछ कुछ दिन रह कर जहाँके पण्डितोंसे बात चीत कर चुका हूँ । सब कोई अधिक दिन जीना चाहता है । मरना कोई पसन्द नहीं करता । जिनका एक पैर कब्रमें लटका चुका है वह भी दूसरेको बाहर खँचनेके लिये पूरी कोशिश करते हैं । अत्यन्त बूढ़ा भी एक दिन और जीनेकी इच्छा करता है । मरना सब कोई बुरा समझता है । मृत्युसे भागना सबका स्वाभाविक है । केवल हम लोग लगनगके रहनेवाले जीनेकी कुछ परवा नहीं करते क्योंकि हम लोग बराबर अमरोंको देखा करते हैं । इससे हम लोगोंको अधिक दिन जीनेकी इच्छा नहीं होती है ।

“आपने जो कुछ कड़ा मोठीक नहीं है और न युक्ति सङ्गतही है । मरना हटा कष्ट और जवान बना रहना भी पसन्द नहीं करता ? यह प्रश्न न था कि सब सुखोंके साथ कोई सदा जवान बना रहना चाहता है या नहीं । बल्कि यह था कि दुष्टोंके सब दुःखोंको भूलते हुए कोई सब दिन कैसे जी सकेगा । इन दुःखोंके साथ अमर



जीना शायद कोईही पसन्द करे । लेकिन जापान और बलनीवरवी वाले अधिक दिन जीना चाहते हैं । बिना दुःख और लोभ पाये कोई सरना नहीं चाहता है । आपही कहिये आप तो बहुत जगज्ज घुम पाये हैं । यह बात क्या झूठ है ?”

इस भूमिकाके बाद वह अमरीके बारेमें यों कहने लगा—“अमर लोग तीस वरस तक हमारी तरह सब काम करते हैं पीछे मरने पड़ने लगते हैं । अस्सी वर्ष तक यही जानत रहती है । यहाके साधारण लोगोंकी परमायु अस्सी वर्षकी है । अमरगण जब अस्सी वर्षके होते हैं तो वह साधारण बुढ़ोंकी अपेक्षा अधिक सुस्त और बलहीन होजाते हैं । सदा जीना पड़ेगा इसी भयसे उनकी सुध बुध चली जाती है । हठ, चिडचिडाहट, लालच, गुस्सा, पाखण्ड और बहुत बोलना बढ जाता है । प्रीति निवाहना, मोह ममता सब छूट जाती है । प्योते प्योटियोंके सिवा दूसरोंका प्यार करना भूल जाता है । ईर्ष्या, द्वेष और बुरी वामना बढ जाती है युवकों को विलास करते तथा हड्डीको मरते देख कर उन्हें ईर्ष्या होती है । जवानीकी बातें याद कर बहुत मलाल उनके जीमें होता है । किसी को मरते देख कर वह बहुत रोते और कहते हैं हाय यह पुण्यधाम को विश्राम करने चले और हम यहा दुःख भोगनेको पडे हैं । कब हमरा उद्धार होगा । हाय हम काहेको कभी उस लोकमें जायगे, इत्यादि । उनकी स्मरण शक्ति कम हो जाती है । जो कुछ लडकपनमें पढते हैं सो सब भूल जाते हैं । उनके आगे जो जो घटनाएँ हो चुकी हैं वह सब भी उन्हें याद नहीं रहती इसलिये उनसे किसी घटना या विषयका पक्का भेद नहीं मिल सकता है । कदा तक कहे अमरीकी दुसह दुःख सहना पडता है । उनके कष्टका ठिकाना नहीं । लेकिन जो अमर बुढापेमें निरे बच्चेकी तरह हो जाते हैं, और जिनकी स्मरणशक्ति एकदम लुप्त होजाती है उनकी कुछ कम कष्ट होता है । उन पर सब कोई दया भी करता है । क्योंकि जो दोष होते हैं सो इनमें नहीं होते ।

“अगर किसी अमर पुरुषका ब्याह अमर स्त्रीसे होगया तो राज्यके नियमसे दो में से किसीकी उसर अस्सी सालकी होने पर वह मस्खन्ध तोड़ दिया जाता है। क्योंकि नियम बनानेवालीने दिवारा है कि जो लोग बिना अपराधके यहा मर्त्यलोकमें सदा वास करनेका दण्ड पाचुके है उनके ऊपर बुढापेमें स्त्रियोंके भरण पोषणका भार डालना उनके दण्डको दूना करना है ।

“अस्सी वर्षके उपरान्त अमर लोग नियमानुसार मृतवत् समझे जाते है और उनके पुत्र सब सम्पत्तियोंके अधिकारी होजाते है । उनके खाने पीनेके लिये कुछ अन्न अलग निकाल दिया जाता है । और गरीबोंको अनायालयसे खानेको मिलता है । फिर अमरोंकी किन्ही प्रकारका भारी काम नहीं मिलता और न उनका कोई विस्वाम करता है । वह जमीन जायदाद न खरीद सकते और न बेच सकते है । दिवानी या फौजदारीके मुकद्दमेमें गवाही भी नहीं दे सकते है ।

“नव्वे वर्षमें उनके दांत गिर पडते, और बाल उड जाते है । फिर उनकी किसी प्रकारका स्वाद नहीं मिलता । भूख प्यास बन्द होजाती है । जो कुछ मिलता है उसे खा लेते है लेकिन किसी वस्तु पर रुचि नहीं होती । जो सब रोग पहले ही चुकाते है वह न घटते है न बढते है ज्योके ल्यो बने रहते है । स्मरण शक्ति एक दस चौपट होजाती है । चीज वस्तुकी कौन पृछे अपने बाल बच्चोंके नाम तक भूल जाते है । इसी हेतु वह पोथिया भी नहीं पढ सकते है ।

“यहांकी भाषा भी सदा बढला करती है । एक शताब्दीका अमर दूसरी शताब्दीकी भाषा नहीं समझता है । दोसौ वर्षके बाद अमर लोग अपने पडोसीसे भी बात चीत नहीं कर सकते । स्वदेश में रह कर भी वह सब विदेशीकी तरह होजाते है ।”

जहा तक सुझे याद है अमरोंकी यही एक कहानी मैंने सुनी थी । मैंने नये पुराने पांच छः अमरोंके दर्शन भी किये थे । सबसे नया अमर दोसौ वर्षसे अधिकका न था । कई मित्रोंके कहने पर

भी कि मैं बड़ा भारी भ्रमणकारी हूँ, सारे जगत्की छान आया हूँ, अमरीने मुझसे कुछ न पूछा और न कान फट फटाण । इतना जरूर कहो—“कुछ निशानी देते जाइये ।” अर्थात् कुछ भिजा दीजिये । वहाँ भोज्य मागना आर्डनके विरुद्ध है । इन सबको अनाथालयसे भोजन मिलता है पर उससे पेट नहीं भरता इसीलिये वेचारे अमर लोग आर्डनके भयसे इस घुमावसे भीख मागते हैं ।

सब आदमी अमरीसे घृणा करते हैं । अमरका उत्पन्न होना लोग असङ्गत् समझते हैं । जब कोई अमर पैदा होता है तो उसका सब विवरण रजिष्टरमें लिख लिया जाता है । उसी रजिष्टरसे अमरोंकी उमरका पता लगता है । हजार वर्षमें अधिकका रजिष्टर रक्खा नहीं जाता पुराना होनेसे मड गल जाता है । या विद्रोहादि होनेसे नष्ट भ्रष्ट कर दिया जाता है । अमरोंकी उमरका पता लगानेका माजूली कायदा यह है । उनसे पूछा जाता है कि किस राजा या बड़े आदमीका नाम तुम्हें याद है । नाम बताने पर इतिहास देखनेसे उमर मालूम हो जाती है । अस्सी वर्षके हो चुकने पर जिस राजाका राज्य आरम्भ होता है उसका नाम अमर लोग नहीं बता सकते हैं ।

अमरोंके चेहरे बड़े भयङ्कर होते हैं । मैंने ऐसे भयानक चेहरे कभी नहीं देखे । औरतोंकी तो कुछ भत पूछो उनकी सूरत और भी डरावनी होजाती है । अवस्थाके सङ्ग सङ्ग आकृति भी बदलती जाती है । जिसकी जितनी अवस्था अधिक होगी उसकी आकृति भी उतनीही भयङ्कर होगी । कः अमरोंको देखतेही मैंने पहचान लिया था कि इनमें सबसे बड़ा कौन है । यद्यपि एक या दो सौ सालसे अधिकका उनमें कोई न था ।

पाठकगण ! अब निश्चय जानलें कि जो कुछ मैंने देखा सुना उससे अमर होनेकी इच्छा एम दक जाती रही । अपने कहे पर मैं खूब पकताया और लज्जित हुआ । इस जीनेसे मरनाही मैंने समझा । राजा भी मेरी इन सब बातोंको पीछे सुन कर

खूब हसा और बोल्हा—“अपने देशवालीको मृत्युसे ढीठ करनेके लिये एक जोडा अमर लेजाइये न ।” यह आईनके विरुद्ध था नही तो चाहे जो खर्च होता मैं जरूर एक जोडा अमर विलायत भेज देता पर क्या करता लाचारी थी ।

जो हो अमर लोगोंके बारेमें जो सब नियम थे सो खूब सोच समझके बनाये गये थे । मैं उन्हें पसन्द करता हूँ । दूसरे देशवाले भी ऐसे ऐसे मौके पर ऐसाही करते हैं । यदि यह नियम न होते तो अमर लोग बुढ़ापेमें टपणाके मारे सारी जातिके कर्त्ता धर्त्ता तथा राज पाठके भी अधिकारी वन बैठते क्योंकि बुढ़ापेमें टपणा अधिक बढ जाती है । पर पीछे अयोग्यताके कारण सारे देशको बरखा ढार कर देते ।

### एकादश परिच्छेद ।

मैं समझता हूँ अमरीके वृत्तान्तसे पाठकोंका मनोरञ्जन हुआ होगा क्योंकि यह मामूली ढङ्गसे कुछ निराला है । अबतक यात्राकी जितनी पोथियां हाथ लगीं किमीमें ऐसी बात पढी है सो याद नहीं पडती । अगर मैं भूलता हूँ तो कहना यह है कि अगर एकही देशका वर्णन कई यात्री करते हैं तो वह प्रायः एकसा मालूम होता है । इससे यह नहीं समझना चाहिये कि पिछले यात्रीने पहले की चोरीकी है ।

लगनग और जापानवालोंमें खूब तिज्जारत होती है-। सम्भव है जापानी लेखकोंने अपनी पोथियोंमें अमरीका कुछ वृत्तान्त लिखा हो । एक तो मैं जापानी भाषा नहीं जानता दूसरे मैं वहा बहुत कम ठहरा इसमें इस बातकी कुछ छानबीन न कर सका । लेकिन आशा है कि इस लोग जरूर इसकी टोह लगावेंगे ।

लगनग नरेशने वहा रहनेके लिये बहुत आग्रह किया पर मैं राजी नहीं हुआ क्योंकि मन बालबच्चों पर लगा हुआ था । पीछे राजाने भी अपनी अनुमति दी और जापानेश्वरके नामकी चिट्ठी सुहर द्वारकी मेरे हदालेकी । चारसौ चव्वालीस बड़ी बड़ी अग्रर्पिया

तथा एक लाल छीरा बिटार्डमें दिया । विलायत आकर वह छीरा ग्यारहमौ पौण्डमें बेचा था ।

ता० ६ मई सन् १७०८ ईस्वीको मैं राजा तथा अन्यान्य मित्रों से बिदा हुआ । राजाने रिफाजतके लिये अपने निपाहियोंको साथ कर दिया था जो समुद्र तक पहुँचा गये । छ दिनके बाद जहाज मिला । उसी पर मैं मवार हुआ । पन्द्रहवें दिन जापान पहुँचा । कष्टम हाउसवालोंको महाराजके नामकी चिट्ठी दिखाई । यह लोग लगनम नरेशकी सुहरको खूब अच्छी तरह पहचानते थे । यह सुहर हथेली जैसी चौड़ी थी और उसमें एक राजाकी तस्वीर खुदी हुई थी जो एक लगड़े भिखारीको जमीनसे उठा रहा था । चिट्ठी देख कर वहाँके मजिस्ट्रेटने मेरी बड़ी खातिरकी । तुरत गाड़ी भाड़ा करके अपने आदमियोंके साथ मुझे येडो भेज दिया । मुझे माझीला भाड़ा भी न देना पड़ा । जापानकी राजधानीका नाम येडो है । वहाँ पहुँच कर महाराजकी चिट्ठी दी । बड़े ठाठसे चिट्ठी खोली और पढ़ी गई । फिर दुभाषियेके द्वारा मैंने अपनी रामकहानी सुनाई और कहा कि अब वहाँसे अपने देश जाया चाहता हूँ । महाराजसे मैंने यह भी निवेदन किया कि मैं भाग्य के फेरसे यहाँ आपड़ा हूँ कुछ सौदागरी करने नहीं आया इसलिये जैसे और यूरोपीय लोगोंसे क्रूसविह ईसामसीहकी मूर्ति कुचलवाई जाती है मुझसे न कुचलवाई जाय । मैं श्रीमान्का दंडा उपकार मानूँगा । इतना सुन कर महाराजकी मेरे डब होने पर सन्देह हुआ क्योंकि मैंने अपनेको डचही बताया था । इसका कारण मैंने लिख आया हूँ । महाराज बोले—“आश्चर्य है कि आज तुम यह बात कहते हो । अब तक तुम्हारे देशके किसीने यह बात नहीं कही थी । पहले पहले तुम्हारेही मुँहसे यह बात सुननेमें आई है । अब मुच तुम्हारे हीलेखर होनेमें मुझे सन्देह है । तुम जरूर फिस्तान हो । खैर, तुम मेरे मित्रको चिट्ठी लाये हो इससे तुम्हें करता हूँ । पर इसमें एक चालाकी करनी पड़ेगी नहीं तो

तुम्हारी जान नहीं बच सकती । अगर हालेण्डर लोग सुन पावेंगे तो जरूर तुम्हें मार डालेंगे । इसलिये तुम चुपचाप चले जाओ । मेरे आदमी तुमसे कुछ न कहेंगे मानो वह भूल गये हैं ।” मैंने इस हापाके लिये सहाराजको अनेक धन्यवाद दिया । उस समय कुछ सेना नङ्गासकको जानेवाली थी महाराजने सेनापतिको ससभा दुभाके प्रतिमा कुचलनेकी बात गुप्त रखनेकी कह दिया । मैं सेना के साथ जापानसे रवाना हुआ ।

ता० ८ वीं जून १७०८ ईस्वीको मैं नङ्गासक पहुँचा । रास्तेमें बड़ी तकलीफ हुई । वहाँ तुरत अम्बोयना नामक एक जहाज मिल गया । वह हालेण्डकी राजधानी अमस्टरडामको जाता था । इस पर सल्लाह सब हालेण्डरही थी । मैं हालेण्ड-केलिडन शहरमें पहले बहुत दिन रह चुका हूँ । वहाँ मैं पढ़ता था इससे वहाँकी बोली मैं अच्छी तरह बोल सकता था । कहांसे मैं आता हूँ सो सो जहाजियोंको मालूम होगया । अब वह सब मेरा हाल अह-वाल पूछने लगे । मैंने बहुतही सुख्तरमें अपना हाल कह सुनाया पर बहुतसी बातें छिपा रखी थी । अपनेको मैंने हालेण्डवासीही बताया था । हालेण्डके बहुतसे आदमियोंके नाम मैं जानता था । इससे मा बापके नाम भी गढ़ लिये । कहा वह ग्वेलडरलेण्डके इलाकेमें रहते थे उन्हें कोई नहीं जानता है । कप्तान जी भाडा मांगता सोई मैं देता पर वह जान गया कि मैं डाक्टर हूँ इससे उसने मुझसे आधाही भाडा लिया पर शर्त यह हुई कि रास्तेमें मैं डाक्टरी करता चलूँ । जहाज पर चढ़नेके पहले कई जहाजी मुझसे आकर लगे पूछने कि आपने ईसामसीहकी प्रतिमाको कुचला या नहीं । हां सब तरहसे महाराजका मन भर दिया, कह कर मैं उनकी बातोंको उडाने लगा पर तिजारती जहाजके एक दुष्ट मल्लाहने मेरी तरफ इशारा करके एक अफसरसे कह दिया कि इसने प्रतिमाको नहीं कुचला है । इस पर उस सेनापतिने जो मुझे जहाज पर चढ़ाने आया था उस दुष्टको खूबही पीटा । फिर मुझसे किसीने कुछ नहीं पूछा ।

रास्तेमें लिखनेके लायक कोई बात नहीं हुई। उत्तमाशा अन्तर्गोप तक जहाज सजेमें चला आया। वायु बराबर अनुकूल मिलती गई। वज्रा केवल झच्छ जल लेनेके वास्ते जहाज ठहर गया था। १० वीं अप्रैल १७१० ईस्वीको हम लोग कुगल पूर्वक अमस्टरडाम पहुँच गये। सिर्फ तीन आदमी बीमार होकर मरगये और एक समुद्रमें गिर पड़ा था। अमस्टरडामसे बहुत जल्द एक छोटे जहाज पर मैं इङ्ग्लैण्डकी रवाना हुआ।

१६ वीं अप्रैलको डाउन्स पहुँचा। दूसरे दिन जहाजसे उतरा पूरे पाँच वर्ष छः महीनेके बाद पुनः जन्मभूमिका दर्शन प्राप्त हुआ। मैं सीधे रेडरिफ़की तरफ चल पड़ा। उसी दिन दो बजे घर जा पहुँचा। घरमें सबको राजी खुशी पाया। बड़ा आनन्द हुआ।

इति तृतीय भाग समाप्त ।



# विचित्र-विचरण ।

## चतुर्थ भाग ।

### हिनहिन देशकी यात्रा ।

प्रथम परिच्छेद ।

मैं लडके वालोंके साथ लग भग पांच सहीने घरमें रहा । अगर मुझे सुखका ज्ञान होता तो मैं जरूर कहता कि यह मेरे पांच सहीने अत्यन्त सुखसे कटे । इतनेमें—“एडवेनचर” नामक एक बड़े तिजारती जहाजकी कप्तानी मुझे मिल गई । फिर किससे घरमें रहा जाता ? प्यारीका पाव भारी था पर मैंने इसकी भी कुछ परवा न की । घर बार छोड़ मैं चटपट निकल खड़ा हुआ । डाकरीसे जी ऊब गया था इसीसे अबकी कप्तानी स्वीकारकी इन । कामको मैं अच्छी तरह जानता था और यह नौकरी भी अच्छी थी । डाकरीके काम पर एक नवयुवक रक्खा गया । ता. ७ वीं मितस्वर १७१० ईस्वीकी पोर्टस्माउथने हम लोगोंने कूच किया । १४ वीं की त्रिष्टल जहाजकी कप्तान पोर्कूपसे टेनेरिफमें छेड़ दई जो बक्स काटनेके लिये कम्पीचीकी खाड़ीको जारहा था । १६ वीं की एक तूफानने हम दोनोंको अलग कर दिया । लौटने पर मुझे मानूस हुआ कि उसका जहाज डूब गया और एक छोकड़ेके सिवा और कोई न बचा । वह विचारा कप्तान बड़ा सच्चा और गूढ़ने फनका पूरा उस्ताद मगर जरा जिद्दी था । इसी जिद्दने उन्हें चौपट किया । मेरा कहना मान लेता तो वह भी मेरी तरह नौट कर अपने लडके वालोंसे मिलता ।



मेरे साथके कई आदमी ज्वरके प्रकोपमें पञ्चत्वकी प्राप्त हुए । आदमीके बिना काम चलना कठिन था अतएव उन व्यापारियोंकी आज्ञासे जिन्होंने मुझे बहाल किया था वारवेडोज और लीवार्ड हीपीमें जहाज रोकवार कुछ नये आदमी भर्ती किये । पर पीछे इसके लिये मुझे पकृताना पडा क्योंकि उनमें प्रायः डाकूही थे । हम लोग जहाज पर पचाम आदमी थे । मैंने प्रशान्त सहासागर में अमेरिकावालोंसे वाणिज्य करने तथा जो कुछ बन जाय सो आविष्कार करनेका मनसूबा बांधा था । इन दुष्टोंने जो नये भर्ती हुए थे मेरे साथियोंको मिला लिया और मुझे गिरफ्तार करके जहाजकी देखल करनेका विचार किया । पडयन्त करके एक दिन सवेरे ये लोग मेरे कमरेमें घुस आये और मेरी मुग्गे बाध कर बोले—“अगर जरा भी हिलेगा तो समुद्रमें डबो देगी । खबरदार जो मुँह खोला ।” मैंने शपथ करके कहा—“मैं कुछ न करूंगा जो तुम कहोगे वही करूंगा । मैं तुम्हारा कैदी हूँ ।” इतना सुन कर उन्होंने मुग्गे खोलदीं । केवल एक पैर जञ्जीरसे बाध दिया । पहर पर एक सन्तरी बैठा । अगर मैं बन्दन खोलनेकी जरा भी कोशिश करता तो वह जरूर गोली मार देता क्योंकि उसे यही हुक्म था । मेरे खाने पीनेके लिये वहीं पहुँच जाता था । वह लोग जहाजके कर्त्ता धर्ता बन बैठे । उन लोगोंका इरादा स्वेनके जहाजो को लूटनेका था पर यह काम बहुत आदमियोंके बिना हो नहीं सकता था । इसलिये उन्होंने जहाजके मालको पहले बेचनेका फिर मेडेगास्कर जाकर कुछ डाकू बटोरनेका पक्का विचार किया । मेरे कैद होजानेके बाद भी जहाजके कई आदमी मरे थे । कई हफ्ते तक जहाज चलता रहा । अमेरिकावालोंसे उन लोगोंने व्यापार भी किया । मैं अपने कमरेमें बन्द था । जहाज किधरसे कहा जाता था सो मुझे कुछ खबर न थी । मैं बराबर मृत्युके ध्यान में निमग्न था ।

८ वी मई १७११ ई० को जेम्सवेल्ल मेरे पास आया और

बोला—“कप्तानने तुमको किनारे पर छोड़ देनेके लिये हुक्म दिया है ।” मैंने उससे बहुत कहार सुना पर सब व्यर्थ हुआ । जहाजका कप्तान कौन था सो भी उसने नहीं बताया । जबरदस्ती सबने मुझे एक किशोरी पर डिठा दिया । अच्छीसे अच्छी पोशाक मुझे पहन लेने दी जो विलकुल नई थी । कटारके सिवा और कोई हथियार मेरे साथ न छोड़ा । इतनी लूपा और कीथी कि मेरी लड़ाभोरी नहीं ली । इसीसे याकिटमें कुछ रुपये और कुछ जरूरी चीजें रह गई थीं । करीब तीन मील दूर लेजाकर मुझे किनारे पर छोड़ दिया । मैंने पूछा कि इस देशका क्या नाम है पर किसी ने कुछ न बताया । कहा—“कप्तानके हुक्मसे हम लोग यहां छोड़ देते हैं और कुछ नहीं जानते । जल्दी भागो नहीं तो ज्वार आती है ।” इतना कह वह सबके सब चलते बने ।

मैं कातर होकर आगे बढ़ने लगा । जलते जाते तीर पर जा पहुंचा । वहां सुस्तानेके लिये बैठ गया और अब क्या करना चाहिये सो सोचने लगा । घोड़ी देरके बाद फिर उठ कर चला । जहाजी लोग जब सफर करते हैं तो कडे, काचकी अंगूठियां खिलौने वगैरा साथमें ले लेते हैं । मैंने भी कुछ लेलिये थे । जो कोई जङ्गली असभ्य मिलेगा उसे यह सब देकर अपने जीवनकी रक्षा करूंगा । यही सब सोचता विचारता मैं आगे बढ़ा जाता था । बूझोकी लम्बी पत्तियोंसे सारी भूमि ढकी हुई थी । यह किसीके लगाने न थे स्वभावतः उत्पन्न थे । घासकी बहुतायत थी । जईके भी कई खेत दिखाई पड़े । मैं चौकन्ना हो इधर उधर देखता चला जाता था । मनमें यह डर था कि कहीं पीछे या अगल बगलसे कोई हमला न करे या अचानक कोई तीरही न चला बैठे । इतनेमें एक सड़क दिखाई पड़ी जिस पर मनुष्यके, पशुओंके विशेष कर घोड़ोंके पद चिह्न थे । आखिर मैदानमें कई जानवर देखे—दो चार पेड़ पर बैठे हुए थे । उनकी सूरतें अजीब और भद्दी थीं । देख कर जी घबरा उठा । उन्हें भली भांति देखनेके इरादेसे मैं एक

दृश्यते लीट रहा । उनसेसे कुछ जानवर जरा नजदीक आ पहुँचे ।  
 अब मैंने उन्हें अच्छी तरह देख लिया । उनके निरीमें तथा छातियों  
 से घने घूँघरवाले बाल थे । दाढ़ियाँ बकरेकी मी थी । पीठके  
 नीचे तथा पैरोंमें आगेकी तरफ लम्बे लम्बे बाल लटकते थे मगर  
 दाँवी शरीर साफ था । रङ्ग हलका पीला था । दुम नहीं थी पर  
 पोंछे बाल जरूर थे । वह अकामर पिछले पैरोंमें खड़े होते थे । पंजों  
 के नख लंबे, तेज और टेढ़े थे इसीसे वह गिलहरियोंकी तरह जंघे  
 पेडी पर चढ़ सकते थे । वह बड़ी फुर्तीसे उछलते, कूदते और  
 फाटते थे । बियाँ पुरुषोंकी तरह बड़ी न थी । सिर पर लंबे पतले  
 बाल थे पर मुँह सफाचट थे । आगे पीछे तथा तमाम देहमें छोटे  
 छोटे बाल थे । स्तन पैर तक लटकते थे और चलनेमें भूमिको  
 चूमते थे । इनके बाल भूरे, लाल, काले और पीले थे । सारांश  
 यह कि ऐसे कुरूप जानवर मैंने और कभी नहीं देखे । न जाने  
 क्यों उन्हें देख कर बड़ी घृणा होती थी । जितना देखा उतनेही  
 मैं जी बचरा गया । उठ कर फिर सड़कसे जाने लगा । बहुत  
 दूर नहीं गया था कि इन्हीं जानवरोंमेंसे एकको देखा जो बीच  
 रास्तेमें खड़ा था । वह मेरी ओर बैठने लगा । वह मुझे ऐसे ढङ्ग  
 से देखता था मानो पहले कभी देखा नहीं । उसका मुँह  
 बनाना भी विचित्रही था । जरा और पास आकर उसने पंजोंको  
 उठाया । क्यों उठाया सो रास जाने । लेकिन मैंने कटार निकाल  
 कर उलटी तरफसे एक भरपूर हाथ जमाया । सीधी तरफसे मारने  
 की हिम्मत न पड़ी । कहीं कुछ होजाय तो गाववाले गुस्से पीगे  
 यही समझ कर मैंने उलटी ओरसे मारा था । चोट लगतेही वह  
 पीछे हटा और बड़े जोरसे चिल्लाया । उसकी चिल्लाहट सुनकर  
 बौसियों जानवर गुराँते और मुँह बनाते दौड़ आए । मैं दौड़  
 कर एक पेड़से पीठ लगा कर खड़ा होगया और कटार घुमा कर  
 उन सबको भगाता रहा । कुछ दुर पीछेकी तरफसे डालियोंके  
 हारे पेड़ पर चढ़ गये और वहासे मेरे सिर पर मल मूत्र त्यागने

लगी । पेडके नीचे आश्रय लेकर सै बहुत बचा लेकिन तो भी कपडे सब खराब होगये ।

इतनेमें अचानक सबके सब भाग गये । मुझे बड़ा अचरज हुआ कि वह सब इतनी जल्दी क्यों भागे । मैं फिर सडक पर आया । वाई ओर एक घोडेको धीरे धीरे घूमते देखा । अब मैं मसक्त गया कि वह सब इसी घोडेको देख कर भागे थे । घोडा जब पास आया तो मुझे देख कर जरा ठठक गया । फिर सम्हल कर ताज्जुबसे मेरी तरफ निहारने लगा । उमने चारों ओर घूम घूम कर मेरे हाथ पैरोंको देखा । मैं आगे बढ़ जाता लेकिन वह रास्ता रोके बीचमें खड़ा था कुछ देर तक हम दोनों परस्पर देखा देखी करते रहे । आखिर मैंने माहंस करके सवारीको तरह ठोंकने और पुचकारनेके लिये उमकी गर्दनकी तरफ हाथ बढ़ाया । किन्तु घोड को मेरा पुचकारना नहो भाया । उसने गर्दन हिला भौह चढ़ा और दाहिना पैर धीरे धीरे उठा कर मेरा हाथ हटा दिया । फिर दो चार बार हिनहिनाया । उमका हिनहिनाना भी अजब था । मालूम हुआ जैसे वह अपनी भापामें आपही आप कुछ बोल रहा है ।

जब मैं और वह इस प्रकार खड़े थे एक घोडा और आपहुँचा । दोनों घोडोंने कायदेसे खुर मिलाए । वारीवारीसे हिस हिनाये । स्वर ऊँचा नीचा तथा उच्चारण स्पष्ट था । कुछ दूर हट कर दोनों घोडे आपसमें कुछ सत्ताहसी करने लगे । कोई भारी विषय विचारनेके समय जैसे लोग टहलते हैं उसी प्रकार वह दोनों भी टहलते थे कि कहीं मैं भाग न जाऊँ । अज्ञान पशुओंमें ऐसी ऐसी बातें देख कर मेरे आश्चर्यका ठिकाना न रहा । मैंने विचारा कि जब इन पशुओंमें इतनी बुद्धि है तो यहाके मनुष्योंमें न जाने कितनी बुद्धि होगी ? वह विश्व भरके मनुष्योंसे अवश्य बुद्धिमान होगी । यह विचार कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ । मैंने दोनों घोडोको सलाह करते हुए छोड कर वहाके निवासियोंसे चटपट मिलनेका सङ्कल्प मनमें किया । ज्योंही मैं चला पहले घोडेने जो अवलकथा देखलिया ।

वह इतने जोर और इस ढङ्गसे हिनहिना उठा कि मैं जहाका तहा रुक गया और उसके पास चला गया । लेकिन अपने डरको जहा तक बना छिपाया । इस आफतसे अब कैसे पिण्ड छुटेगा इसीका मुझे भय तथा चिन्ता हुई थी । पाठक सहजमें समझ सकते हैं कि इस हालतमें रहना मुझे बहुत पसन्द न था ।

दोनों घोड़े मेरे निकट आए और बड़े भावसे मेरे हाथ और मुँहको देखने लगे । अवलोक घोड़ेने अपने दाये प्रगले सुमसे मेरी टोपीको खूब रगडा । इतना रगडा कि वह अपनी जगहसे हिल गई । मैंने उसको उतार कर फिर फिर पर दे लिया । इस पर उसने और उसके साथीने जो समन्द रङ्गका था बड़ा आश्चर्य माना । पिछले सुमसे मेरे कोटके दामनको छुआ उसे देहसे अलग लटकता देख उनके आश्चर्यकी मात्रा और भी बढ़ गई । दाये हाथ को सुमसे ठोका मानो उसके रङ्ग और कोमलताको वह प्रगसा करता था । लेकिन उसने मेरे हाथको ऐसे जोरसे टवाया कि मैं चिल्ला उठा । फिर तो दोनों आहिस्ते आहिस्ते मुझे ढूँने लगे । जूते और मोजे देख कर शायद उन्हें बहुत ताज्जुब हुआ था वह दोनों उन्हें प्रायः कृते और आपससे हिनहिनाते थे । उस समय उनकी भाव भङ्गी ठीक वैसीही होती थी जैसी विज्ञानवाजों को किसी नई बातकी हल करनेमें होती है ।

घोड़ोंकी बुद्धिमानी तथा मनुष्यके सदृश आचार व्यवहार देख कर मैंने विचारा कि यह जरूर कोई जादूगर है । किसी कार्य विशेषके कारण रूप बदल कर यहा विचरण करते हैं और विदेशी समझ कर मुझसे खेल करते हैं अथवा यहाके आदमियोंसे मेरी रूप रङ्ग पोशाक नहीं मिलती है इससे यह विस्मित है । पहलीही बातको युक्ति युक्त समझ कर घोड़ोंसे मैं यो कहने लगा—“सज्जनो ! अगर आप जादूगर हैं जैसा कि मैं समझता हूँ तो आप अवश्य सब भाषायें समझते होंगे । इस लिये मैं साहस करके निवेदन करता हूँ कि मैं एक दरिद्र दुखी अग्रेज हूँ । भाग्यके फेरसे यहा





आपडा ह । खपा कर आप दोनों में से कोई एक सज्जन अपनी पीठ पर बिठा कर मुझे किसी गांवमें पहुँचा दें । मैं आपका बड़ा उपकार मानूँगा और यह कड़ा और कुरी (पाकेटसे निकाल कर) आपकी भेंट करूँगा ।” मैं जब बोलता था तो दोनों जानवर बड़े ध्यानसे खड़े खड़े सुनते थे । मेरी बात पूरी होजाने पर वह दोनों पुनः हिनहिनाने लगे । उनकी भाषा मनका भाव अच्छी तरह प्रगट करती थी । चीनी भाषाकी अपेक्षा इन घोड़ोंकी शब्दोंकी वर्णमाला सहजमें बन सकती है ।

उनके मुँहसे “याहू” निकलता था । इसका अर्थ मैं क्या मेरे पुरखे भी न जानते होंगे । परन्तु इस शब्दको सीखनेके वास्ते मैं चेष्टा करने लगा । ज्योंही घोड़े चुप हुए मैं जोरसे—“याहू याहू” कहके चिल्ला उठा । जहा तक बना उनके हिनहिनानेकी भी नकल देने की । इस पर तो वह दोनों और भी चकराए । अवलकने दो बार—“याहू याहू” कहा मानो वह उसका ठोक उच्चारण बतलाता था । मैं भी उसके साथ नाथ बोलता गया । हर बार कुछ न कुछ उन्नति करता जाताथा । परन्तु यह उच्चारण भला तुरतही कैसे होता ? समझने तब दूसरा शब्द सिखानेकी चेष्टा की । लेकिन इसका उच्चारण करना जरा टेढ़ी खौर था —“ह्यैय्ह्न्हम्स ।” पाठकी के सुबीतेके लिये इसी शब्दको—“हिन हिन” बना डाला है । “याहू” की तरह अनायास इसमें सफलता प्राप्त न कर सका । पीछे मेरी योग्यता देख उन्हें बड़ा अचरज हुआ ।

कुछ देर तक और दोनोंमें बात चीत होती रही जो मैं समझता हूँ मेरेही वारेमें थी । फिर दोनों घोड़े मुझ मिलाकर विदा हुए । अवलकने आगे आगे चलनेके लिये मुझे इशारा किया । जब तक और कोई राह बतानेवाला न मिल जाय तब तक उसीका कहना मानना मैंने उत्तम समझा । जब मैं धीरे धीरे चलता तो वह—“हुन हुन” करता । मैंने उसका अभिप्राय समझ कर उस



को सकेतसे यथा शक्ति समझानेकी चेष्टाकी कि मैं थक गया हूँ तेजीसे नहीं चल सकता । इस पर वह ठहर जाता और मैं उतनी देर बित्वास कर लेता था ।

### द्वितीय परिच्छेद ।

करीब तीन मील चलनेके बाद हम एक बड़े मकानके पास पहुँचे जो लकड़ीके खम्भों पर बना हुआ था और जिसका छप्पर नीचा तथा फूसका था । अब मेरा चित्त जरा ठिकाने हुआ । जेब में कुछ ग्विलौने निकाले । मोचा घरवालेको देकर मित्रता करूँगा । यात्री लोग अक्सर इसी प्रकार ग्विलौने देकर अमेरिका आदिके असभ्य जङ्गलियोंमें मेल मिलाप बढ़ाते हैं । घोडेने मुझको पहले भीतर घुसनेके लिये सकेतसे कहा । मैं भीतर घुसा । यह एक बड़ा कमरा था । जमीन कच्ची और चिकनी थी । एक ओर दूर तक नाटे गड्डी हुई थीं । तीन बकरे और दो घोड़ियाँ बड़ा दिखाई पड़ीं जो खाती नहीं थी । किसी किमीको पीछे बल बैठे देख कर आश्चर्य हुआ । सबसे अधिक आश्चर्य तो हुआ उनको गृहस्थीका काम काज करते देख कर । यह मासूली दरजेके मवेशी थे । यह चरित्र देख कर मेरा पहला भाव दृढ़ होगया कि जो मनुष्य अज्ञान पशुओं को इतना सभ्य बना सकते हैं वह न जाने कैसे बुद्धिमान होंगे । वह अवश्य बुद्धिमें सबसे आगे होंगे । पीछे अबलक भी तुरत आ पहुँचा । शायद कोई कुछ छेड़ छाड़ करता परन्तु उसके आजाने से किसीने कुछ नहीं कहा । घरका मालिक जैसे हुकूमत करता है वैसेही वह कई बार हिनहिनाया । उन सबने भी अदबके साथ हिनहिना कर जवाब दिया ।

इस कमरेके बाद तीन बड़े बड़े कमरे और थे जिनमें आमने सामने तीन दरवाजे थे । हम दूसरेमें होकर तीसरेकी तरफ चले । अबके घोडारामही पहले भीतर घुसे और मुझे ठहरनेके लिये कर गये । मैं दूसरे कमरेमें खड़ा रहा । इतनी देरमें मैंने

घरके सालिक मलजिनीके वास्ते सीगात ठीक करली। दो कुरियां, भूठे मोतियोके तीन कडे, एक छोटासा आईना और एक साला जेवसे बाहर निकाली। घोडेन दो चार बार हिनहिनाके कुछ कहा। मैं बदलेमें किसी मनुष्यके शब्दकी अपेक्षा करने लगा। लेकिन मिवाय हिनहिनाहटके और कोई शब्द सुनाई न पडा लेकिन पहलीसे यह कुछ तीक्ष्ण अवश्य थी। मैं सोचने लगा कि यह किसी बड़े रईसका मकान है इसीसे भीतर जाने देनेके लिये इतना बन्दोबस्त और इतनी तैयारिया है। पर इस बड़े आदमीके सब काम घोड़ीहीसे चलतेहैं सो मेरे ध्यानमें न आया। मैंने समझा आफत और दुःख भेलते भेलते मैं पागल होगया हूं। मैं अपने को मन्हाज कर चारो ओर देखने लगा। यह भी पहलीकी भांति मगर सुन्दरताके साथ सुसज्जित था। मैंने बार बार आखें मली पर वही सब चीजें देखनेमें आई। देखमें चुटकिया काटी तो भी अपनेको जागताही पाया। तब मैंने निश्चय करलिया कि यह सब जादू या इन्द्रजालके खेलके सिवा और कुछ नहीं है। अधिक विचारनेका अवसर भी न मिला क्योंकि अश्व प्रभु द्वार पर खडे थे और तीसरे घरमें जानेके लिये बुला रहे थे। मैं आपके साथ भीतर गया। वहा एक साफ सुथरी चटाई पर एक परम कमनीय घोड़ी को दो बच्चोंके साथ जिनमें एक बछेरा और एक बक्रेरी थी पीछे के सहारे बैठे देखा।

मेरे पहुँचतेही घोड़ी उठी और मेरे पास आई। मेरे हाथ मुँहको भली भांति देखा कर नाक भौह चढाली और दो चार बार—“दाह” शब्दका उच्चारण किया। यद्यपि मैंने पहले पहल इसी शब्दकी सीखा था तथापि उसका कुछ अर्थ नहीं जानता था। पीछे जान गया मगर जान कर जन्म भर दुःख हुआ। घोडेन फिर निरहिनाया और—“हुन हुन” शब्द किया। मैं समझ गया कि फिर कही चलनेको कहता है क्योंकि सड़क पर भी एक बार इसने ऐसाही किया था। अर्कके सुभको यह एक दूसरे घरमें ले

गया जो यहासे कुछ दूर था। वहां पहुंच कर मैंने उन्ही तीन घृणित जीवोंको जो समुद्र तटसे चलनेके बादही रास्तेमें मिले थे कुत्तो और गदहोंका मांस खाते हुए देखा। रस्मियोंके हाग यह गहतीरसे बंधे हुए थे। अगले दोनों पक्षोंसे पकड़ते और दातोसे काट कर खाते थे।

अब प्रभुने एक बक्करेसे जिमका रङ्ग नाल था तीनों जानवरों मेंसे बड़ेको खोल कर आगनमें लेचलनेको कहा। मैं और वह जानवर पास पास खड़े किये गये। मालिक नौकर दोनोंने मिल कर हमारे चेहरोंको खूब मिला कर देखा। उनके मुंहसे बराबर—  
“याह याह” ही निकलता था। इस जघन्य जानवरकी सूरत ठीक आदमीकी देख कर मेरे आश्चर्य और भयको कुछ सीमा न रही। चेहरा सचमुच चिपटा और चौड़ा था, नाक बैठी हुई ओठ बड़े मुह लम्बा था। सब जङ्गली जातियोंसे तो इतना भेद होता ही है क्योंकि यह लोग अपने अपने बच्चोंको जमीनमें पट सोने देते हैं या पीठ पर लादे फिरते हैं। बच्चे भी अपने मुंहको माकी पीठसे रगड़ा करते हैं इसीसे इनकी सूरत शकल बिगड़ जाती है। मेरे हाथों और उसके अगले दोनों पैरोंसे केवल इतनाही भेद था कि उसके नख बड़े बड़े थे, हथेली खुरदरी और पिङ्गल वर्ण थी तथा पीछे बाल थे। पैरोंमें भी बस इतनाही भेद था। मैं तो समझ गया परन्तु मेरे जूते और मोजेके कारण घड़े इस भेदको न समझ सके। देखमें भी रङ्ग और बालहीका अन्तर था जैसा कि मैं लिख चुका हूँ।

याहके शेष अङ्गोंसे मेरे अङ्गोंमें इतना अन्तर देख कर दोनों घड़े बड़े कठिनार्द्धमें पड़े। इस अन्तरका कारण मेरे कपड़े थे जिनका घोड़ीको कुछ भी ज्ञान न था। लाल घोड़ेने मुजभसे उठा कर एक सड़ा टुकड़ा मेरे हाथमें दिया। मैंने लेलिया और सूँघ कर सभ्यताके साथ लौटा दिया। उसने याहोंके घरमेंसे गदहे मांस लाकर दिया लेकिन उससे ऐसी सड़ी गन्ध आती थी कि

मैंने नाक सिकोड़ कर मुँह फेर लिया । उसने उस मासके टुकड़े को याह्नके आगे फेंक दिया । याह्नरास सब भकोस गये । फिर उसने एक पूला घास तथा जई दिखाई । लेकिन मैंने तब भी सिर हिला दिया और वता दिया कि यह सब मेरा अहार नहीं है । मैंने विचारा कि अगर किसी मनुष्यका दर्शन न होगा तो मैं भूखी मर जाऊँगा । यद्यपि मानव जातिके प्रेमी सुभसे अधिक बहुत ही काम होंगे तथापि मैं सत्य कहता हूँ कि इन याह्नोंकी तरह सब प्रकारसे जघन्य नीच धृष्टित जीव मैंने नहीं देखे । जितना मैं उनसे सटता उतनेही वह और भी धृष्टित मालूम होते थे मेरी यह दृष्टा देख कर अश्व प्रभुने याह्नको धान पर लेजानेका हुक्म दिया और अगले सुभको अपने मुँह पर आसानीसे रख कर कुछ इशारा किया जिसका मतलब यही था कि मेरा आहार क्या है । घोड़ेकी इस कार्रवाईसे सुभको बड़ा अचरज हुआ । पर मैं ऐसा जवाब न दे सका कि वह मेरा भाव समझ जाता । अगर समझ भी गया हो तो क्या वह मेरे खाने पीनेका बन्दोबस्त कर सकता था ? जब हम लोग इस प्रकार इशारावाजीमें लगे हुए थे मैंने एक गायकी वगलसे जाते हुए देखा । मैंने चट पट उसकी तरफ बताने कर उसको दूहनेका इशारा किया । अबके काम बन गया । वह धुभके घर लौटा लाया । दाईं घोड़ीको एक कोठरी खोलनेका हुक्म दिया । किवाड खुलतेही देखा कि मट्टी और लकड़ीकी साफ सुदरे वर्तनोंमें दूधका ढेर लगा हुआ है । उसने एक कटोरा लवालव भरके दिया । मैं सब पीगया तब जी ठिकाने हुआ ।

टोपहरको घरकी तरफ एक गाड़ी जिसमें चार याह्न जुते हुए थे आती हुई दिखाई दी । इस गाड़ीमें एक भी पहिया न था और इसकी बनावट विमानसी थी । इस पर एक बृह घोड़ा चढ़ा हुआ था जो ऊँचे पदका मालूम होता था । गाड़ी घरके पास आकर खड़ी हुई । वह पिछले पावोंको बढा कर उतरा क्योंकि अचानक कहीं उसके अगले पावों पर चोट लग गई थी । वह हमारे

घोड़ेके यहाँ न्योता खाने आया था । गृह स्वामीने खूब आदर मत्कार किया । सबसे अच्छे कमरेमें पाति बैठी । घामके सिवा जई की खीर भी परसी गई । और सबने तो ठंडी परन्तु वृद्धने गर्म गर्म खीर उड़ाई । बीच कमरेमें नाटें मण्डलाकार मजाई गई थी जिनके चारों ओर घोड़े सब फूलके मोटे आमनों पर पुष्टे टेक कर बैठे थे । नाटें कई हिस्सोंमें बटी हुई थी । बीचमें सूखी घाममें भरा पहलदार एक कठीता था जो नाटोंमें मिला हुआ था । प्रत्येक घोड़ा और घोड़ी मजेमें खूबसूरतीके साथ अपनी अपनी घाम और खीर खाती थी । बक्करे बक्करिया बहुत शान्त थी । घरके मालिक तथा मलकिनी बहुत प्रसन्न तथा पाहुनेको आराम पहुचानेके लिये सब तरहसे सुस्त थी । अबलकने अपने पास खड़े रहनेको सुझाव दिया । दोनोंमें बहुत देर तक बात चीत होती रही । बृद्ध घोड़ा अकसर मेरी तरफ देखता था—“याह याह” कहता था इस से मैं अनुभव करता हूँ कि मेरेही विषयमें वह दोनों बोलते थे ।

मैं उस समय दस्ताने चढाये हुए था । अबलक मेरे हाथकी दशा देख कर घबडा गया । उसने दो चार बार अपना सुम मेरे हाथमें डुलाया मानो हाथोंकी फिर पहली अवस्थामें लानेके लिये कहता था । मैंने तुरत दस्ताने उतार जेबमें रख लिये । यह देख वह सब प्रसन्न हुए और इसका सुन्दर फल भी सुझावको उट्टो मिला गया । जो दस पाँच शब्द मैंने सीखे थे सो बोलनेकी आज्ञा हुई । जब तक यह सब उधर खाते थे तब तक इधर अश्व प्रभुने जई, दूध, आग, पानी वगैरहके नाम सिखा दिये थे । मैं उनका उच्चारण अच्छी तरह कर सकता था क्योंकि लडकपनहीसे बोलिया सीखनेकी सुझावों अच्छी योग्यता थी ।

पाति उठ जाने पर अश्व प्रभुने एक चौर लेजाकर मेरे भोजन के लिये सकेत द्वारा चिन्ता प्रगट की । उनकी भाषामें जईका नाम—“हून्ह” है । मैंने इस शब्दका उच्चारण दो चार बार किया ।

हले तो मैंने जइसे इनकार किया था पर पीछे सोचा कि जब तक

उहांसे निकाम न हो तब तक जईकी रोटियां और दूध प्राण बचाने के लिये बहुत है। इसीसे मैंने जई सागीरी। उसने इतना सुनतेही टूटले रङ्गकी घोड़ीसे जो घरकी दाई थी जई लानेके वास्ते आका दी। वरु काठीतेसे ढेरभी जई लेआई। मैंने उसे आगसे गर्म किया और हाथीने समस्त दार उसकी भूसी निकाल दी। दो पत्थरोंसे कूट काट कर उसका आटा बनाया। पानी लाकर आटा गून्धा फिर रोटिया पकाईं। गर्म गर्म रोटियां दूधके साथ खाईं। यद्यपि युरोपके प्रायः बहुतेरे आदसियोंकी यह खूराक है तथापि मुझको पहिले निलकुल फीकी मालूम पड़ी पर पीछे अभ्यास पड गया। कुछा कुछा अकसर खाना पडा है अतएव इस तरह पेट भर लेना मेरे लिये कोई नई बात न थी। जब तक मैं वहा रहा एक घडीके लिये भी मेरे सिरमें कभी दर्द न हुआ। मैं कभी कभी याहुओके बालके फन्देसे खरगोश और चिडियोंका शिकार जरूर करता था। पुष्ट जडी बूटिया इकट्ठी करता और राग बना कर रोटियोंके साथ अकसर खाता और जायका चढ़ानेके लिये कभी कभी सक्कन निकालता और छाछ पीता था। पहिले तो नोन बिना कष्ट हुआ पर जब अनोना खाते खाते अभ्यास पड गया तो उसकी याद भी नहीं आतीथी। मुझे विश्वास है कि जल ले गोंसे लवणका इतना प्रचार होना वस भोग बिलास ही का जल है। बड़ी बड़ी लखी समुद्र यात्राओंमें अथवा बडे बडे राजारोंसे दूर जगहोंमें सास लेजानेके लिये उसमें नोन डालनेकी जरूरत पडती है क्योंकि गोन पडनेसे सास सडता नहीं। इसके सिवा केवल सुरापानकी रुचि बढ़ानेहीके लिये पडले पहल हम लोगोंने लवणका व्यवहार हुआ था। क्योंकि देखा जाता है कि आदमीके सिवा और किसी जीवको नोन नहीं भाता। और मैं अपनी कहता हूँ कि हिन्दुहिन्देशसे लौट आने पर बहुत दिनों तक जिनकी वस्तुमें भी मुझसे नोन नहीं खाया जाता था।

मैं अपने खाने पीनेके विषयमें वस इतनाही लिखना अलम्

समझता हूँ पर और खसणकारी लोग तो इसी विषयसे अपनी किताबें भर देते हैं मानो उनके खाने पीनेसे पाठकोंको बड़ा भारी मरोकार है । जो कुछ हो, इतना लिखना भी मैंने इसलिये जरूरी समझा कि शायद कोई पीछे यह न कह बैठे कि तीन वर्ष तक ऐसे देशमें और ऐसे निवासियोंके बीचमें आचार मिलना असम्भव ही था ।

जब साझा हुई तो अश्व प्रभुने मेरे रहनेके लिये अलग बन्दोबस्त कर दिया । मेरा डेरा अखालयसे कुछ छः गजके फासले पर था और याहुओंके तबिलेसे एक टम जुटा था । फूमका विस्तर और फूसहीका सिरहाना बनाया । अपने कपड़ोंसे देह ढाक कर खूब सोया । थोड़ेही दिनके बाद सुखकी सब सामग्रियां इकट्ठी होगई और मैं सुखसे रहने लगा जिसका हाल आगे चल कर विस्तार पूर्वक सुनाऊंगा ।

### तृतीय परिच्छेद ।

मैं घोड़ोंकी भाषा सीखनेके लिये पूर्ण चेष्टा करने लगा । अब मैं अश्व प्रभुको केवल प्रभु लिखा करूंगा । प्रभु, प्रभुके लडके तथा नौकर चाकर सबही मेरे गुरु बनना चाहते थे । वह मुझसे अज्ञान जानवरको ऐसा वर्ताव करते देख कर बड़ा अचम्भा मानते थे । जो कुछ मैं देखता सबका नाम इशारेसे पूछता और जब एकान्त होता तो डायरीमें लिख लेता था । जब भूलता तो उच्चारण पूछ लेता । लाल बक्रेसे जो घरका नौकर था बहुत मदद मिलती थी ।

घोड़े कण्ठ और नाकसे बोलते थे । उनकी बोली हीलेख या जरमनी भाषासे बहुत मिलती थी परन्तु अश्व भाषा उनसे अधिक ललित और सार्थक थी । सम्राट पञ्चम चार्ल्सकी भी यही राय थी । वह कहते थे—“अगर मैं घोड़ोंसे बोलता तो हीलेखही की भाषामें बोलता ।”

प्रभुको इतना अचम्भा हुआ कि वह धीरज न धर सके । जो

जानसे सुझी अपनी बोली सिखानेमें लग गई । अपनी कुटीका प्रायः सब समय मेरे साथही व्यतीत करते थे । मैं विश्वास होगया था कि मैं जरूर याद हूँ । लेकिन मेरे सीखनेकी योग्यता, सम्यता और नफाईसे उन्हें बड़ा आश्चर्य होता था क्योंकि यह सब लक्षण याहुओंमें नहीं होते । प्रभुने यह सब पीछे बतलाया था कि मेरे कपड़ोंको देख कर उनकी अकल कुछ काम नहीं करती थी । कभी कभी वह यही समझ लेते कि यह भी मेरे शरीरका एक अङ्गही है क्योंकि जब वह सब रातको सोजाते तब मैं कपड़े उतारता और सवेरे उनके उठनेके प्रथमही पहन लेता था । कहाँसे मैं आपडा और क्योंकर सब कामोंमें बुद्धिमानो प्रगट करता हूँ इत्यादि बातें जाननेके लिये प्रभु नितान्त उत्सुक थे । वह मेरेही मुँहसे मेरी कहानी सुनना चाहते थे । जिम फूर्तिसे उनकी भाषामें मैं व्युत्पन्न होता जाताथा उससे उन्हें पूरी आशा थी कि मैं बहुत जल्द उनकी अभिलाषा पूरी करूँगा । जो कुछ मैं सीखता सब अर्थ सहित अंग्रेजीमें लिख लेता था । पहले तो मैं छिया कर लिखता था पर कुछ दिनके बाद उनके सामनेही लिखने और तर्जमा करने लगा । मैं दया करता हूँ सो समझानेमें सुझी बड़ी कठिनता हुई । क्योंकि पोधियाँ या साहित्य किस पक्षीका नाम है सो बहावाले दिलकुल नहीं जानते ।

मैं उनकी बहुतसे प्रश्न करीब दस सप्ताहमें समझने लगा और तीन महीनेमें कुछ कुछ जवाब देनेकी लायक भी होगया । अब प्रभुसे न रहा गया । वह चटपट मेरे सफरका हाल पूछ बैठे । और सब मेरे अङ्ग तो कण्डेके भीतर थे केवल हाथ, मुँह और सिर दिखाई पड़ते थे । इन अङ्गोंको याहुओं कीसे देख कर प्रभुने सुझी भी याहुही समझा । याहु बड़ेही धूर्त और दुष्ट होते तथा कभी सीख नहीं मानते थे । मगर मेरा बर्ताव कुछ निरालाही था । यह देख प्रभु और भी हैरान थे । इसीसे उन्होंने पूछा था—“तुम कहाँ से आये और समझदारोंकी तरह काम करना तुमने कहा सीखा?”



मैंने जवाब दिया—“मैं रात समुद्र तैरते नदी पारने लताड़ीने एक गोले बड़े पात्र पर चढ़के यहाँ तक आया हूँ। मेरी जातिके तीन कई लोग मेरे साथ थे। मेरे साथियोंने जवनदस्ती मुझको तीर पर उतार दिया और आप चलते बने।” कुछ बोल कर कुछ बतला कर बड़ी मुश्किलसे इतनी बातें प्रभुको समझाई थी। प्रभुने कहा—“तुम भूलते हो। तुमने जो कहा सो नहीं है।” अर्थात् झूठ है। झूठका प्रति शब्द उनकी भाषामें नहीं है। समुद्रके वाद कोई देख होना या जानबरोका जहाजके द्वारा समुद्रमें जहा चढ़े तहा चला जाना प्रभुकी समझसे अमभवही था। उन्हें निश्चय था कि कोई हीय्हुन्हुन्म जहाज नहीं बना सकता है और न कोई इसके चलानेका काम याहुओंके मपुटे कर सकता है।

हीय्हुन्हुन्म अर्थात् दिनहिन उनको भाषामें घोड़ेको कहते हैं। इसकी व्युत्पत्ति है—“प्रकृतिकी पूर्णता।” मैंने प्रभुसे कहा कि अभी मैं आपकी बोली अच्छी तरह बोल नहीं सकता। लेकिन जहाँ तक बनेगा जल्दी इसके बोलनेकी कोशिश करूँगा। आशा है कि थोड़ेही दिनोंमें मैं आपको आश्चर्यमें डालनेवाली बातें सुनानेके योग्य हो जाऊँगा। इतना सुनतेही उसने अपनी घोड़ी, बकैरे, बकैरी तथा नौकरोंको मेरे पढ़ानेके लिये हुक्म दे दिया। जिमको मौका लगता था वही मुझको पढ़ाता था। इसके सिवा प्रभु स्वयं प्रतिदिन दो चार घण्टे मेरे साथ माथा खाली करते थे। आस पासके सब गावोंमें बात फैल गई कि एक विचित्र याहू आया है जो दिनहिनकी तरह बोलता तथा अपने चाल चलनसे चतुर मालूम होता है। फिर क्या था लगी अच्छे अच्छे घरकी छोड़ियाँ सब मेरे यहाँ आने। वह सब आकर मुझसे बात चीत करतीं और प्रसन्न होती थी। जो कुछ पूछती उसका जवाब उन्हीं की बोलीमें यथाशक्ति दे देता था। इससे फल यह हुआ कि पाचही महीनेमें मैं वहाकी भाषा अच्छी तरह समझने लगा तथा एक मारसे बोलने भी लगा।

यह हिनहिन जो देखने तथा सुझसे बोलने आया था सुझकी ठीक यादू नहीं कहता था क्योंकि मेरे शरीर पर एक जुदा ढङ्गकी खाल थी । इसके सिवा यादूओकेसे मेरे बाल नहीं थे । लेकिन यह भेद पन्द्रह दिनके बाद प्रभुकी अकस्मात् मालूम होगया ।

पाठकीसे मैं पहलेही निवेदन कर चुका हूँ कि रातको जब सब सो जाते थे तब मैं कपडे उतारता और सवेरे सबके उठनेके पहलेही पहन लेता था । एक दिन बड़े तडके प्रभुने मेरे बुताने के लिये अपने नौकर लाल बछेरेको भेजा था । जब वह आया मैं खरींटे ले रहा था, कपडे अलग एक तरफ रखे थे और कमीज कमरके ऊपर पड़ी थी । उसकी आवाज सुन कर मैं चौक उठा तो देखा कि वह घबड़ानासा कुछ कह रहा है । सन्देश सुना कर वह तुरत नी दो ग्यारह हुआ । जो कुछ उसने देखा था उस का न जाने क्या गडबड मडबड हाल प्रभुसे जाकर कह दिया । कोट पटलून डाट कर जब मैं वहा पहुँचा तो प्रभुने देखतेही पूछा—  
“क्या मोने पर तुम कुछ औरही तरहके मालूम होते हो ? बछेरा कहता था कि तुम्हारा कोई अङ्ग उजला, कोई पीला और कोई भूरा है ।”

यादू बनाये जानेके डरसे अबतक मैंने लिवासके भेदको छिपाया था पर सब हथा हुआ । अब और छिपाना उचित नहीं समझा । अमर छिपाता भी तो अब छिप नहीं सकता क्योंकि मेरे कपडे जूते सब पुराने होगये थे । थोड़ेही दिनके बाद वैकाम होजाते । फिर यादूधोंकी अथवा और किनी जानवरोंकी खालसे देह ढाकनेका कुछ न कुछ उपाय करनाही पडता जिससे सब बातें पीछे आपही खुल जातीं । इस लिये प्रभुवरसे मैंने स्पष्ट कह दिया कि उस देशमें जहासे मैं आया हूँ मेरी जातिवाले सब सर्दी गर्मीसे बचने तथा लज्जा निवारणके लिये अपने अङ्गोंको किसी किसी जीवके वालोंसे बने हुए कपडोंके द्वारा सदा ढाके रहते हैं । अगर आप आज्ञा दें तो मैं सबूतके लिये अपना वदन खोल कर दिखला सकता हूँ परन्तु

एक प्रार्थना है कि प्रकृतिने जिन प्रज्ञोको छिपानेके लिये बताया है उन्हें न खोलूंगा । इतना सुन कर प्रभु बोले—“तुम्हारी बिनकुल बातेंही अनूठी हैं विशेष कर पिछली तो अत्यन्त है । मेरी समझ में यह नहीं आया कि प्रकृतिने जो कुछ दिया है उसके छिपानेके लिये वही क्यों बताने लगी । मैं और मेरे घरवाले तो किसी अह की लाज नहीं करते हैं । खैर, जो तुम्हें भावे सो करो ।” इस पर मैंने पहले बटन खोले फिर कोट उतार डाला । पीछे फतुही, पटलून, मोजे और जूते भी उतार दिये । परदेके लिये कर्माजको सरका कर कमरसे लपेट लिया ।

प्रभुने बड़े आश्चर्य और कौतूहलसे मेरे इस कामको अवलोकन किया । मुजम्मेमें लेकर हर एक कपड़ेको गौरसे देख्वा, मेरी देख को धीरे धीरे सहलाया और घूम घूम कर खूब देख्वा भाला । बहुत सोच विचार कर आप बोले—यह तो निश्चयही है कि तुम याह्न हो मगर इन याहुओंसे और तुमसे बड़ा फर्क है । तुम्हारा चमड़ा माफ, चिकना और मुलायम है । तुम्हारे शरीरके बहुतरे हिस्सोंमें बाल नहीं है, पंखे भी तुम्हारे छोटे और दूसरे बड़के हैं । तुम सदा पिछले पैरोंसे चलते हो इत्यादि ।” इसके बाद आपने कपड़े पहनने का हुक्म दिया । मैं भी सर्दीसे काप रक्षा था इससे चटपट आप का हुक्म तामील किया ।

मैंने कहा—“आप बार बार याह्न कहते हैं तो मेरी आत्माको बड़ी व्यथा पहुँचती है क्योंकि यह कुत्सित जीव मुझको फूटी आन्न भी नहीं सुहाते । इन्हें देख कर न जाने क्यों मुझको घृणा होती है । इसलिये हाथ जोड़ता हूँ मुझको याह्न न कहा कीजिये और अपने घरवालों तथा इष्ट मित्रोंसे भी कह दीजिये कि कोई मुझको याह्न न कहा करे । एक प्रार्थना और है कि मेरे कपड़ेका डाल आपके सिवा और कोई जानने न पावे । अन्ततः जब तक यह कपड़े फट न जाय तब तक किसीसे कुछ मत कहिये और बाल बक्रेसे भी कह दीजिये कि किसीसे कुछ न कहे ।”

प्रभुने सानुग्रह प्रार्थनाकी स्वीकार किया । जब तक वष ऋते नहीं किमीने इस रहस्यको नहीं जाना । फिर मैंने क्या प्रवन्ध किया सो आगे चल कर लिखूंगा । प्रभुकी आज्ञासे मैं फिर जी जान लगा कर उनकी बोली सीखने लगा । मेरे यहाँकी बातें सुननेके लिये वह बहुत व्यग्र थे । मेरी योग्यता देख वह बहुत विस्मित होते थे ।

अब वह और भी दूनी सिहनतसे मुझको वहाँकी भाषा सिखाने लगे । सब अपने सङ्ग मुझको लेजाते थे । कोई मुझसे छेड काड नहीं करता था । छेडकाडके लिये उन्होंने सबको मना कर दिया था । मेरी अनूठी बातें सुननेहीके लिये यह सब सुप्रवन्ध किया गया था ।

पढानेमें वह कडाचूर परिश्रम करतेही थे । इसके सिवा जब मैं उनसे मिलता तो रोज वह मेरा अहवाल पूछते थे । मैं भी यथासाध्य उनके प्रश्नोंका उत्तर देता था । इससे सब बातों का साधारण मगर अधूरा ज्ञान उनकी होगया था । कब कैसे कौन बात हुई सो लिख कर पाठकोंको कष्ट पहुँचाना मैं नहीं चाहता लेकिन मैंने अपने बारेमें यों कहा था—

“मेरा देश यहाँसे बहुत दूर है जैसा कि मैं कह चुका हूँ । देशसे हम लोग पचास आठमी जहाजमें जो आपके घरसे बडा था बैठ कर चले । वह लकड़ीका बना हुआ था और जल पर तैरता था । आपसमें लडाई होलानेके कारण साथियोंने मुझको जहाज से निकाल दिया । मैं बिना समझे वृक्षे एक ओर चल पडा । चलते चलते यहाँ तक आ पहुँचा । रास्तेमें यादुओंने रोका तो आपहीने जाकर कुडाया था ।” जहाँ तक बना मैंने अच्छी तरह जहाजका खाका खिंचा । पालसे वह कैसे चलता है सो रुमालसे बतलाया । मतलब यह कि जहाज क्या वस्तु है सो मैंने उन्हें भली भाँति समझा दिया था । यह सुन कर प्रभुने पूछा—“अच्छा यह

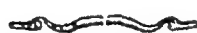
तो कही जहाज बनाता कौन है ? भना यह कब सभाव है कि तुम्हारे यहाकी हिनहिन इसका प्रबन्ध पशुओंके हाथ सौंपेगे ?”

मैं—अब कुछ कहनेकी हिम्मत नही पडती। अगर तुरा न मानें तो मैं जवाब देसकता हूँ और अपने यहाँकी अनूठी बातें भी सुना सकता हूँ ।

प्रभु—नहीं मानूँगा। मैं कसम खाके कहता हूँ कि तुरा न मानूँगा। तुम्हें जो कुछ कहना है सो निडर होके कहो। मैं तुम्हागी बातें सुननेको बहुत बेचैन हूँ ।

मैं—जहाज तो मेरे जैसे जीवही बनाते हैं। केवल यही जीव मेरे यहां और उन देशोंमें जहांसे मैं हो आया हूँ राज्य करते तथा बुद्धिमान गिने जाते हैं। यहां हिनहिनीको आदमियोंकी तरह काम करते देख कर मुझे उतनाही विस्मय हुआ जितना आप लोगोंको मुझे देख कर हुआ। इन याहुओंकी सूरत शकलें मुझसे मिलती हैं पर मैं नही कह सकता यह इतने जङ्गली तथा नीच क्यों होगये। अगर मैं भास्यके जोर से अपने देशमें पहुँच कर यहाकी बातें कहूँगा तो लोग यही कहेंगे कि “तुमने कहा सो नहीं है।” कोई भी इसको सम्भव न मानेगा कि, हिनहिनीका आधिपत्य याहुओंके ऊपर है। घोडे आदमियों पर हुकूमत करते हैं यह कौन विश्वास करेगा ?

चतुर्थ परिच्छेद ।



मेरी बातें सुनकर प्रभुकी सुधबुध काफूर होगई। चेहरसे बेचैनी टपकने लगी। सन्देह और अविश्वास करनेकी चाल बहा इतनी कम थी कि ऐसे ऐसे मौकों पर क्या करना चाहिये सो बहा वाले नही जानते। ऐसे तो प्रभुकी समझ बहुत चोखी थी परन्तु मुझे याद है कि जब कभी मनुष्यके स्वभावकी चर्चा चलती और मैं प्रसङ्ग बश मिथ्या भाषण तथा असत्य वर्णनके वारेमें कुछ कहता तो वह बड़ी कठिनतासे मेरे भावोंको समझते थे। वह कहा करते थे—

“एक दूसरेके मनके भावोंको समझाना और सच्ची बातें सुनानाही बोलनेके उद्देश्य हैं । अगर किसीने वह बात कही जो नहीं है अर्थात् झूठ तो बोलनेके उद्देश्य सिद्ध नहीं हुए । क्योंकि असल बातोंका जानना तो दूर रहा मैं कहनेवालेके तात्पर्यको समझता हूँ यह भी नहीं कहा जा सकता । फल यह होगा कि मैं ज्योंका त्यों रहूँगा या उससे भी खराब होजाऊँगा क्योंकि तब उजलेको काला और बड़े को छोटा समझने लगूँगा ।” उस झूठके बारेमें जिसे मनुष्य लोग पूरे तौरसे समझते और बोलते हैं घोड़ोंका बस यही ख्याल है ।

अच्छा अब मैं अपने किसीकी तरफ झुकता हूँ । जब मैंने कहा कि हमारे यहां याहूही राज्य करते हैं तो यह उनके ध्यानहीमें न आया । प्रभुने पूछा—“क्या तुम्हारे देशमें हिनहिन है ? अगर है तो वह क्या करते हैं ?” मैंने कहा—“हां हैं । गर्मीमें तो वह सब मैदानमें चरते, जाड़ेमें तबेलोंमें रहते और सूखी घास तथा जई खाते हैं । याहू लोग हिनहिनोको मलने, खरहरा करने, सूँघ साफ करने, दाना खिलाने आदिके लिये रक्खे जाते हैं ।”

प्रभु—बस बस मैं समझ गया । याहू चाहे कितनेही बुद्धिमान बनें लेकिन तुम्हारे राजा हिनहिनही हैं । मैं जीसे चाहता हूँ कि मेरे याहू भी ऐसेही अकलमन्द होजायें ।

मैं—माफ कीजिये अब आगे और कुछ मैं न कहूँगा क्योंकि मुझको विश्वास है कि अगर कुछ कहूँगा तो आप जरूर रक्ख हो लायगे ।

प्रभु—नहीं नहीं मैं काभी रक्ख न दूँगा । तुम अच्छा बुरा जो जानते हो सो निर्भय होकर कह जाओ । मैं वादा करता हूँ मैं काभी रक्ख न दूँगा ।

मैं—अच्छा तो सुनिये । हमारे यहां हिनहिनको घोड़ा कहते हैं । घोड़े सब जानवरोंसे सुन्दर और भले होते हैं । इनसे बल तेजोंमें कोई पशु बढ कर नहीं है । बड़े आदमियोंके घोड़े सवारी या बुढ़दौड़के काममें आते अथवा गाड़ियोंमें जोते जाते हैं । जब

तक वह चप्पे रखते हैं उनकी खूब खातिर और छिपावत होती है लेकिन बीमार या लगडे होजानेसे वेच दिये जाते हैं । फिर विचारीको अन्त समय तक सब तरहके कठिन परिश्रम करने पड़ते हैं । मरने पर खाने खेच कर बेच दी जाती हैं और नागीको कुत्ते और मिया खाजाते हैं । लेकिन मामूली दरजेके घोड़ोंका ऐसा मौभाग्य क़हा । इन्हें किमान और कुली वगैरह नीच लोग रखते हैं जो मेहनत तो खूब लेते पर खानेको काम देते हैं ।

इसके सिवा मैंने घोड़ों पर चढ़नेका ढङ्ग वर्णन किया । लगाम, जौन, कांटे, चाबुक साज वगैरह की सूरत शकल बताई । मैंने यह भी कह दिया कि पयगीली राहमें चलनेमें घोड़ोंके सुम अकसर टूट जाते हैं । इसके बचावके लिये घोड़ोंके पैरोंमें एक कडे पदार्थका पत्तर जड दिया जाता है ।

यह सुन कर प्रभु बहुत खिन्न हुए । फिर आप बोले—“तुम लोगोंको हिनहिनकी पीठ पर चढ़नेकी हिम्मत कैसे पडती है, यहाँका कमजोरसे कमजोर हिनहिन याहूकी मजेमें दबोच सकता है और पीठपर चढ़नेसे तो उसका कामही तमाम कर सकता है ।”

मैं—आपका कहना ठीक है मगर हमारे देशमें घोड़े बचपनही से सिखाये जाते हैं लेकिन जो जरा बदमाश होते वह गाड़ियोंमें जीते जाते हैं । शैतानी करनेसे खूब पीटे भी जाते हैं । जो घोड़े सवारी या गाड़ोके काममें आते हैं वह दो वर्षके होने पर आखता कर दिये जाते हैं । इससे वह सीधे और शान्त हं जाते हैं । वह सजा और इनामको खूब समझते हैं । पर आप यह निश्चय जान लें कि उनको जरा भी ज्ञान नहीं होता । उन्हें निरे याहूही समझिये ।

ऊपर कही हुई बातें प्रभुको समझानेमें मुझे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा । क्योंकि उनकी भाषामें शब्दोंका बहुत तोछा था । हम लोगों से उनकी आवश्यकता और विषयवासना भी थोड़ी है फिर शब्द

पैरोंसे सट्ट लेनी पड़ी थी । घूम कर नाक छूनी पड़ी थी । हिन हिन जातिके साथ हम लोगोंका यह जङ्गली व्यवहार सुन कर उन्होंने किम उत्तम रीतिसे अपना कोप प्रकाश कियाथा सो बताना असम्भव है । उन्हें आखता करनेकी चाल विशेष कर बहुत बुरी लगी क्योंकि इससे घोड़ोंकी स्वाधीनता तथा बश नास होजाता है । उन्होंने कहा कि अगर कोई देश ऐसा हो जहां केवल याहुकी बुद्धिमान हों तो वह जरूर राज्य कर सकते हैं क्योंकि अन्तसे सदा बुद्धिहीकी जय और पशुबलकी पराजय होती है । संसारके कामों के लिये तुम्हारे जैसा बुद्धि और कोई सज्जन जीव नहीं है । इसके बाद आप बोले—“अच्छा यह तो कहो कि तुम जिन लोगोंके साथ रहते हो वह रूप रङ्गमें तुमसे हैं या हमारे याहुओंसे ?”

मैं—मेरी उमरवाले तो मेरेहीसे हैं पर बच्चे और औरतें बहुत सुन्दर और कोमल होती हैं । उनकी देह तो दूधसी उजली होती है ।

प्रभु—हा ठीक है । तुमसे और याहुओंसे बड़ा भेद है । तुम बहुत साफ सुथरे तथा एक दम बदसूरत नहीं हो । पर असल फायदेके ख्यालसे तुम याहुओंसे भी गये बीते हो । तुम्हारे अगले या पिछले पैरोंके नख किसी कामके नहीं । तुम्हारे अगले पैरोंको मैं पैर नहीं कह सकता क्योंकि मैंने कभी तुम्हें इनसे चलते देखा नहीं और वह सुलायम भी इतने हैं कि जमीनमें टेके नहीं जा सकते । तुम उन्हें बराबर खुला रखते हो और कभी कभी जो बैठन चटा लेते हो सो पिछले पांवोंके बैठन जैसे मजबूत नहीं हैं । तुम्हारी चाल भी ठीक नहीं क्योंकि हरवक्त गिरनेका डर बना रहता है । अगर पीछेवाले पैरोंमेंसे एक भी फिसला तो धडामसे गिर पड़ोगे । तुम्हारा मुंह चपटा है, नाक निकली हुई है, आंखें दोनों ठीक सामने हैं इससे अगल बगलकी चीजें बिना सिर घुमाए तुम देख नहीं सदाते । अगला पाव मुंह तक बिना उठाए खा नहीं सकते । इसी लिये हाथोंमें गांठें दनी हुई है । पिछले पैर



टुकड़े टुकड़े क्यों हैं ? यह इतने कीमती हैं कि चमड़े के बैठन चढ़ाए बिना तुम तेज पथरी पर चल नहीं सकते। सर्दी गर्मी में बचने के लिये तुम्हें प्रपनी टेह पर खोल चढ़ानी और उतारनी पड़ती है। यह भी रोजका एक झंझट ही ठहरेगा। यहाँ के जितने जानवर हैं सब याहुओं से घृणा करते हैं। कमजोर तो उनमें किनारा खेचते और जबरजस्त उन्हें अपने पास फटकने नहीं देते हैं। माना कि तुम बुद्धिमान हो मगर तुमसे सब जानवरों का जो स्वाभाविक विरोध है सो दूर होना कब सम्भव है और याहुओं का सुधार भी फिर कैसे हो सकता है ? इन्हें घर में रख कर काम के लायक बनाना हमारे बूते ही नहीं सकता। जोहो इस विषय को अब मैं तूल नहीं दिया चाहता। क्योंकि सुभक्तों तुम्हारी कहानी सुनने की अत्यन्त लालसा लग रही है। तुम्हारा जन्म किस देश में हुआ और यहाँ आने के पहले तुम पर क्या क्या बीती सो कह सुनाओ।

मैं—सैम्मी आपको सब तरह से सन्तुष्ट किया चाहता हूँ पर एक बात का बहुत सन्देह है कि जिन विषयों को आप विलक्षण जानते नहीं उनको भली भाँति समझना सम्भव है या नहीं क्योंकि अपना देने के लिये भी यहाँ वैसी कोई वस्तु नजर नहीं आती है। खैर, मैं कोई बात उठा न रखूँगा। लेकिन आपसे एक प्रार्थना है कि जब आवश्यकता हो तो उचित शब्दों से मेरी सहायता करते जाइयेगा।

प्रभु के प्रार्थना स्वीकार करने पर मैंने यों कहना शुरू किया—  
“मेरा जन्म अच्छे कुल में हुआ है। मेरी जन्मभूमि इडलेण्ड नाम का एक टापू है जो यहाँ से उतनीही दिन की राह है कि जितने दिन में आपका सबसे जबरदस्त नौकार (घोड़ा) सूर्य के वार्षिक मार्ग को तै कर सके। मैंने लड़काई से जर्गही सीखी शरीर के फोड़े फुनसिया घाव वगैरह को आराम करना ही जर्गहा का रोजगार है। मेरे देश का राज्य पाट एक औरत चलाती है। जिसको हम लोग रानी कहते हैं। रूप के

लिये मैंने घरवार छोड़ा है । रुपये लेजा कर बालबच्चोंका पालन करूँगा । इस पिछले सफरमें मैं एक जहाजका कप्तान था और मेरे नीचे पचास याहू काम करते थे । उनमेंसे बहुतरे मर गये तो और और देशोंके कुछ लोग उनकी जगहों पर रखने पड़े । दो बार हमारा जहाज डूबते डूबते बच गया । एक बार तो एक बड़े तूफान की चपेटमें आगया और दूसरी बार एक पहाड़से टकरा गया था ।

प्रभु—जब तुम्हारे साथी मर गये और तुम पर विपद आई तो श्रीरोंको तुम्हारे साथ आनेकी कैसे हिम्मत पड़ी अथवा तुमनेही उनको कैसे बहकाया ?

मैं—जो लोग मेरे साथ आये थे उनको कहीं ठिकाना न था । दाने दानेको वह सुहताज थे । दरिद्रता या भारी अपराधके कारण उन सबने अपनी अपनी जन्मभूमि त्यागदी थी । कोई सुवा-कहनेके मारे तबाह होगया था, कोई शराब, रण्डी और जुएमें अपना सब खाहा कर चुका था । कोई राजविद्रोह या विश्वासघात करके देशसे भागा था—कोई हत्या, चोरी, विष प्रयोग, डकैती, जालसाजी, नकली भिक्के बना और भूठी गङ्गाजली उठा कर चम्पत हुआ था । किसीने घृणित व्यभिचार करके काला सुँह किया और कोई अपना सङ्ग छोड़ कर शत्रुसे जा मिला था । बहुतों ने जेलकी वेडिया काटी थी । फाँसी पडने या जेलमें भूखी मरनेके डरसे किसीको भी स्वदेश लौटनेकी हिम्मत नहीं पड़तीथी । इसीसे बेचारे पेट भरनेकी फिकरमें इधरसे उधर डोलते थे ।\*

जब मैं बोलता था तो प्रभु बराबर टोकते जाते थे । जो दान उनकी समझमें नहीं आती थी उसको वह खोद खोदकर पृथक्तेथे । मैंने भी उन पापोंका रङ्ग ढङ्ग जिनके सबब हमारी समाजके बहुत से लोग देश छोड़ छोड़के भागे हैं प्रभुको बड़े शब्दाडम्बरसे नमझाया । कई दिनके परिश्रमके बाद उनकी समझमें यह सब बातें आई पर तो भी वह पूछते थे कि लोग पाप क्यों करते हैं । इसके करनेकी जरूरतही क्या है । मैंने तब शक्ति और धनकी

चाहना तथा डाह, द्रोह, सदिरापान और कारोच्चाके भयानक फलकी तरफ उनका ध्यान दिलाया । इन सबका वर्णन करनेके समय मुझकी अनुमान और घटना दोनोंकी सहायता लेनी पड़ी थी । जो बात पहले कभी देखी सुनी नहीं उसका ख्याल अचानक आजानेसे जो दशा होजाती है मेरी बातें मुन कर वही दशा घोडेरामकी हुई । वह आश्रयके साथ भौंते तानके ताकने लगे । शक्ति, शासन, युद्ध, कानून दण्ड आदि हजारों शब्दोंका टोटा अश्व भाषामें था अतएव इनका यथार्थ अभिप्राय समझानेमें बड़ी कठिनाई हुई । पर उनकी समझ अच्छी थी और इधर वार्तालाप होने होते विचारनेकी शक्ति भी बढ गई थी इससे शेषमें उन्हें पूरे तौरसे सालूम होगया कि हमारे देशके मनुष्य क्या क्या करनेके योग्य है । इसके उपरान्त उन्होंने युरोपकी खास कर इंग्लैण्डकी मुख्य मुख्य बातें कहनेके लिये अनुरोध किया ।

### पञ्चम परिच्छेद ।

दो ढाई सालमें मेरे और प्रभुके जो वार्तालाप हुआ था उसका सार खेंच कर पाठकोंको मैं सुनाता हूँ । मैं ज्यों ज्यों उनकी भाषा में व्युत्पन्न होता जाता था त्यों त्यों सविस्तर वृत्तान्त सुननेके लिये उनकी भी दृष्टि बढती जाती थी । मैंने भी कोई बात उठा नहीं रखी । युरोपका अच्छी तरहसे पेट फाड़ कर उनके सामने धर दिया । वाणिज्य व्यापार शिल्प विज्ञानको भी मैंने नहीं छोड़ा । विविध विषयों पर जो प्रश्नोत्तर चलते सो कभी घटतेही न थे । पर मैं तो यहां उन्ही बातोंका सारांश लिखूंगा जो अपने देशके विषयमें हुई थीं । मैंने बातोंका सिलसिला यथा शक्ति दुरुस्त कर दिया है । समयादिकी कुछ परवाह न कर सत्यताकी तरफ ध्यान दिया है । मगर अफसोस सिर्फ यही है कि प्रभुकी दलीलें और महाविरें ठीक ठीक प्रकाश न कर सकूंगा क्योंकि एक तो मुझमें इतनी योग्यता नहीं और दूसरे हमारी अंगरेजी भाषा भी गवारी है ।

प्रभु ने आज्ञानुसार मैंने कहा—“तीसरे विलियमके समय राज्य

सैं बहुत उलट पलट हुआ था। उसीने फ्रांसके साथ महायुद्ध ठाना जिसको उसके उत्तराधिकारीने भी चलाया था। इसमें सब बड़े बड़े ईसाई राजा शामिल हुए थे। इस युद्धमें कोई दस लाख याहू (समुय) खेत रहे, शायद एकसीसे अधिक नगर लिये गये और सैकड़ों जहाज डबोये या जला दिये गये होंगे।”

प्रभु—अच्छा राजा आपमें एक दूसरेसे लड़तेहैं इसका मामूली सबब क्या है ?

मैं—सबब तो बहुत हैं पर दो चार भारी भारी सुनाता हूँ। एक तो राजाकी राज दृष्टि काभी अघाती नहीं है। दूसरे मन्त्रियों की बदमाशी जो राजाको युद्धमें लगा कर आप हाथ मारते हैं और प्रजाकी पुकार ररजा तब पहुँचने नहीं देते। रुच पूछिये तो मन्त्री लोग अपना ऐव ढाकनेहीके लिये राजाको युद्धादिमें फंसा देते हैं। मतभेदसे भी लाखोंकी जान गई है। मास रोटी है या रोटी मास है—किसी फलका रस लहू है या शराब—बासुरी बजाना पुण्य है या पाप—डण्डेको अर्थात् क्रूसको चूमना अच्छा है या आगमें जलाना—कोटके लिये बढिया रङ्ग कौनहै काला, उजला, लाल या भूरा—कोट लम्बा हो या छोटा, चौड़ा हो या सकड साफ हो या मैला—इत्यादि इत्यादि बातोंही पर युद्ध चलता है। सो युद्ध भी केना कि जो बरसी चले और जिममें लाखोंकी जान जाय।

कभी कभी दो राजा तीमरेका राज्य दखल करनेके लिये आपस में लड़ सरते हैं जहा उनका कुछ भी हक नहीं है। कभी कभी कोई राजा एकके भयसे दूसरेके साथ लड़ जाता है। कभी शत्रुके बहुत जबरदस्त होनेसे और कभी बहुत कमजोर होनेसे भी सग्रास होता है। जो चीज पड़ोसीके पास है उसको हथ लेना चाहते हैं या हथार पास है उसे ण्डोसी लिया चाहते हैं, कभी इसी बात के लिये लड़ाई होती है। जब तक उससे उस चीजको ले न लें या दे न दें लड़ाई बन्द नहीं होती। अकाल और महागर्गने जिस देशको तबाह कर दिया है और जहा आपसमें फूट फैल गईहै उस

देश पर चढ़ाई करना तो युद्धका एक उचित कारण है। उस निकट वर्ती मित्रसे भी जिसका राज्य लेलेनेमें हमारा राज्य दृढ़ और रक्षित हो लड़ाई करणा उचित समझा जाता है। जहाँ मनुष्य दरिद्र और मूर्ख है वहाँ सेना भेजकर आधीको सरवा डालना और बाकी को सुस्थ बनानेके लिये गुलाम बनाना भी न्याय मङ्गत है। किसी राजाने शत्रुके आक्रमणसे बचनेके लिये दूसरे किसी राजाकी सहायता मागी। उसने आकर सहायताकी पर पीछे शत्रुको भगा कर आपही उसका शत्रु बन बैठा। जिसकी रक्षाके लिये आना उसी को मार डालने, कैद करने, या निकाल बाहर करनेमें बड़ा नाम और इज्जत होती है। राजाओंमें रक्त वा विवाहसे सम्बन्ध होना भी युद्धका एक कारण है। नाता जितना निकट होगा लड़ाई भी उतनीही ज्यादा होगी। गरीब बेचारे भूखों मरते हैं और अमीर घमण्ड करते हैं। घमण्ड और दरिद्रतासे सदा वैर है। इन कारणोंसे फौजके सिपाहीका काम सबसे इज्जतदार समझा जाता है क्योंकि यह सिपाही अपने निर्दोष जाति भाइयोंके मारनेके लिये रक्खे जाते हैं। उनके जाति भाइयोंने चाहे उनका कुछ न बिगाड़ा हो पर वह मनमाने तौरसे उनकी हत्या करेंगे।

युरोपमें ऐसे भी बहुतसे गरीब राजा हैं जो आप तो किसीसे लड़ नहीं सकते परन्तु अपनी फौज दूसरे धनवान् राजाओंको भाड़े पर देते हैं। जो रुपये मिलते हैं उनमेंसे चार आने तो सिपाहियों को देते और बारह आने आप लेलेंते हैं। इसीसे उनका गुजारा भजेमें होता है युरोपके उत्तर भागमें ऐसे राजा अनेक हैं।

प्रभु—तुमने जो कुछ कहा उससे तुम्हारी बुद्धिमानीका विलक्षण पता लगता है। खैर, आनन्दकी बात है कि लज्जा भयसे बड़ी है और परमेश्वरने भी तुमको ज्यादा दुष्टता करनेके योग्य नहीं बनाया है। तुम्हारा मुंह ऐसा चपटा है कि तुम जबरदस्ती किसी को काट नहीं सकते। तुम्हारे पंजे ऐसे छोटे और सुलायम हैं कि  
 'रा एक याह तुम्हारे जैसे दर्जन भरके दात खट्टे कर सकता है।

इस वास्ते तुमने युद्धमें मारे जानेवालोंकी जो गिनती बतवाई है सो मुझे—“वह चीज जो नहीं है” ( भूठ ) मालूम पडती है ।

प्रभुकी अज्ञानता देख मैं मुस्कराहट रोक न सका । मैं युद्ध विद्यासे अनभिज्ञ न था । मैंने तोप, बन्दूक, कडावीन, पिस्तौल, गोली, छुरा, बारूद, तलवार, सङ्गीन, युद्ध, किला घेरना हटाना, चढाई करना, सुरङ्ग खोदना, तोपसे उडाना, जल संग्राम हजार मनुष्य समेत जहाज डबीना, हरएक तरफ बीस बीस हजार आदमियोंका सारा जाना, मरनेके समयका कराहना, अङ्गो का हवासमें उडना, धूआ धक्कड, गुलगपाडा, गोलमाल, घोड़ोंकी टापोंके नीचे कुचल जाना, रनखेतमें कुत्तों भेड़ियों और गिद्धोंका मांस खाना, लूटना, छीनना, मूसना, जलाना, उजाडना आदि बातोंका पूरा हाल प्रभुको कह सुनाया । अपने प्यारे देशवासियों के साहसको प्रकाश करनेके लिये कहा था कि मैंने आंखोंसे सैकड़ों दुश्मनोंको तोपोंके द्वारा उडते तथा उनके अङ्गोंकी टुकड़े टुकड़े होकर आकाशसे गिरते देखा है ।

मैं और कुछ कहनेको था पर प्रभुने मना किया और कहा—  
“जो कोई याहुओंका स्वभाव जानता है सो सहजमें विश्वास कर सकता है कि ऐसे निहट जीवको कहीं ईर्ष्याके समान धूर्तता और शक्ति होती तो उसके लिये सब काम जो तुमने कहा सम्भव थे । लेकिन तुम्हारी बातोंसे सारी जाति पर मेरी घृणा और भी बढ गई है । ऐसी बातें मैंने पहले कभी नहीं सुनी थीं । पीछे चाहे सुनते सुनते अय्यास पड जाय लेकिन आज तो सुन कर सिर घूम गया । मैं याहुओंसे घिन करता हूं पर उनके दोषोंकी शिकारी पचीकी क्रूरतासे और मेरे सुम तोडनेवाले पत्थरोंकी तीक्ष्णतासे अधिक नहीं समझता हू । लेकिन जो जीव बुद्धिमान बननेका दावा करता है सो अगर ऐसे ऐसे महापापीको कर सकता हो तो वह अज्ञान पशुओंसे भी गया बीता है । इससे मुझको विश्वास होता है कि तुम लोगोंको अकल फकल कुछ नहीं है केवल एक

शक्ति है जिससे तुम्हारे स्वाभाविक पाप बढ़ा करते हैं । नदियोंकी हिलते हुए जलमें कुदृढ़ वस्तुओंकी परकाँची केवल बड़ीही नहीं बरन् और भी गुरूप मालूम पड़ती है ।”

युद्धका विषय समाप्त हुआ । अब दूसरा प्रसङ्ग छिड़ा । मैंने कहा था कि कानूनसे तबाह हो जानेके डरसे बहुतमें आदमी देश छोड़ कर चले गये हैं । इस पर वह बोले थे—“तुमने तो पहले कहा था कि कानून प्रजाकी भलाईके लिये बनता है फिर उसमें तबाह होनेका डर क्यों ? यह बात मेरी समझमें नहीं आई । कानून या कानूनके चलानेवालोंसे तुम्हारा क्या अभिप्राय है मो खुलासा कह जाओ । मैं समझता हूँ प्रकृति और ज्ञानही सच्चा जीवोंको कुपथसे बचा कर सुपथ पर चलानेवाले हैं । तुम भी तो सच्चा बनते हो कहो आजकल तुम्हारे यहाँ आईन कानूनका क्या बड़ ढङ्ग है ?”

मैं बोला—“साहब । आईन कानून भी एक दिव्या है जिसमें मेरा पूरा ढखल नहीं है पर हा एक बार मुझ पर कुछ प्रत्याय हुआ तब मैंने एक वकील मुर्करर किया था पर कुछ लाभ नहीं हुआ । खैर, जहाँ तक वनेगा मैं आपको सब कह सुनाऊँगा ।

“मेरे यहाँ बहुतसे लोग बने हुए लम्बे चौड़े शब्दोंके द्वारा उजले को काला और कालेको उजला सिद्ध करनेकी विद्या बचपनसे सीखते हैं । जो जैसा दाम देता है उसका काम भी यह लोग वैसाही करते हैं । इन लोगोंकी एक मण्डलीही अलग है । और जितने लोग हैं सो इस मण्डलीके गुलाम हैं । इसका एक उदाहरण सुनिये । मान लीजिये किसी पड़ोसीकी आंख मेरी गाय पर लगी । वह नेज्जे लिये एक वकील भाड़े करेगा । मुझे भी तब अपना हक टिखलानेके वास्ते एक दूसरा वकील करना पड़ेगा क्योंकि किसी का अपने लिये आप बोलना आईनके विरुद्ध है । इस मामले में सच्चा अधिकारी होने पर भी मैं दुहरे नुकसानमें रहूँगा । एक तो मेरे वकील साहबने जन्महीसे झूठकी तरफ़दारी करनेका

अभ्यास किया है फिर सच्ची बातमें उनकी अकल कौं काम करने लगी ? यह तो उनके लिये अस्वाभाविक कार्य है । इच्छा चाहे उनकी बुरी न ही पर वह काम जरूर बुरा कर डालेगी । दूसरे मेरे वकीलको बहुत सावधानीसे चलना होगा नहीं तो कानूनकी चाल घटानेवालीकी तरह जजोंकी झिड़किया तथा और और वकीलोंकी फटकार सुननी पड़ेगी । इसलिये गाय बचानेके बम दोही उपाय है । एक तो विपत्तीके वकीलको डबल फीस देकर मिला लेना । फिर वह अपने सबकिलको यह कह कर धोखा देगा कि दावा तुम्हाराही पक्का है । दूसरा यह कि मेरा वकील मेरे दावेको भूठा और शत्रुके दावेको सच्चा यथाशक्ति सिद्ध करे । अगर यह काम तनिका चतुराईसे किया जाय तो मेरे पी दारह है । आप यह भी जानलें कि यह जज लोग टीवानी और फौजदारी दोनों प्रकारके मुकद्दमे करते हैं । अच्छे अच्छे वकीलोंमें जो दूढ़े और आलसी होते हैं वही जज बनाये जाते हैं । जन्मभर सत्य और न्यायके विरुद्ध रहनेके कारण जज लोग छल कपट, मिथ्या शपथ और अत्याचारके पक्के पत्नी होजाते हैं । यहां तक कि सच्चे मुकद्दमोंमें घूम लेना भी पसन्द नहीं करते । सच्चेकी तरफदारी करना वह अपमान समझते हैं । मैं ऐसे कई जजोंको जानता हू जिन्हींने सच्चे आदमियोंसे भारी घूम न लेकर भूठीसे हलकी घूम ली है ।

वकीलोंमें एक दस्तूर यह है कि जो बात पहले होयुकी है उस कानूनसे फिर कर सकते हैं । इसलिये यह लोग उन फौसलों को बड़ी सावधानीसे लिख रखते हैं जो एक बार साधारण न्याय और युक्तिके विरुद्ध होचुके हैं । बुरेसे बुरे मुकद्दमोंके सबूतमें यह लोग इन्हीं फौसलोंको नजीरके बतौर पेश करते हैं । फिर जजोंकी कथा मजाल जो इनके विरुद्ध कुछ करें ।

वकील लोग बहसके समय मुकद्दमोंकी असल बातोंको छोडकर फालतू बातें बड़े जोर शोर और नोक भोकसे बकते हैं । इसी मामलेमें वह कभी नहीं पृच्छेंगे कि मेरी गाय पर शत्रुका किस



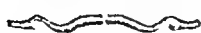
तरह अधिकार पहुँचता है । लेकिन यह जरूर पूछेंगे कि मेरी गऊ लाल है या काली—उमके सींग छोटे हैं या बड़े—मैं जिस खेत में उसे चराता हूँ वह गोल है या चौकोर—वह घरमें दूँची जाती है या बाहर—उसके कोई रोग है या नहीं इत्यादि । उमके वाट नजीरें निकलेंगी । फिर मुलतवौकी वारी आवेगी मोबरमीं चलेगी । दस बीस तीस सालके वाट नतीजा निकलेगा ।

इन वकीलोंकी एक खाम गलबल भाषा है जो किमीकी समझमें नहीं आती । इसी भाषामें आर्डन कानून लिखे जाते हैं यह लोग सबका ऐसा गडबड भाला कर देते हैं कि झूठ सच और न्याय अन्याय कुछ मालूमही नहीं पड़ता है । इसीमें मामलोंमें इतनी देर होती है । जो जमीन छः पीढ़ियोंसे मेरे दखलमें चली आनी है वह मेरी है या तीनसौ मील दूर रहनेवाले एक विदेशी की, ऐसे फैसलेके लिये भी तीस साल दरकार है ।

उन मुकद्दमोंकी कार्रवाई बहुतही सुखतमिर और तारीफके लायक है जिनमें सरकार मुद्दई होती है । जज लोग बड़े बड़े शक्तिशाली राजकर्मचारियोंका रङ्ग ढङ्ग देखकर अपराधीको फासी दे देते या छोड़ देते हैं पर दिखानेके लिये कानूनकी शरण अवश्य ले लेते हैं ।”

प्रभु बीचहीमें बोल उठे—“तुम्हारे कहनेसे मालूम होता है कि तुम्हारे वकील सब बड़े योग्य और गुणवान होते हैं मगर अफसोस यही है कि दूसरोंको शिक्षा देनेके लिये उन्हें कोई उत्साहित नहीं करता है ।” मैंने कहा—“आपका कहना ठीक है लेकिन यह वकील सब अपने पेशेको छोड़ कर दूसरे कामोंमें निरत और लग्न होते हैं । इनसे बोलनेमें जी घिनाता है । यह महानीच और सब विद्याओंके परम बैरी होते हैं । अपने पेशेमें लोगोंको जैसे बहकाते हैं वैसेही हर वक्त हर बातमें सबको बहकानेके लिये तैयार रहते हैं ।

षष्ठ परिच्छेद ।



यह प्रसुने ध्यानमें बिलकुल नही आया कि वकील लोग अपने जाति भाइयोको हानि पहुँचानेके लिये क्यों इतने परेशान रहते हैं। मैंने कहा था कि वह भाडा लेकर ऐसा करते हैं पर यह भी उनकी समझमें नही आया कि भाडा क्या वस्तु है। इसके समझानेमें मुझको अपार कष्ट उठाना पडा था। रुपया क्या है, रुपयेसे क्या होता, रुपया किन धातुओसे बनता है और रुपयेकी कीमत क्या है सो सब समझा कर मैंने कहा—“जब याहुओ ( मनुष्य ) के पास खूब रुपये पैसे होते हैं तब वह बढियासे बढिया पोशाक, अच्छे में अच्छा घर उत्तमसे उत्तम खान पान, सुन्दरसे सुन्दर स्त्रिया, अधिकसे अधिक भूमि सम्पत्ति आदि जो चाहें खरीद सकते हैं। मतलब यह कि रुपयेहीसे सब कुछ होता है। पर रुपयेसे कभी किसीका पेट भरता नही। जो लोभी है सो धन बटोरनेके लिये और जो खर्चीले है सो उडानेके लिये हाय हाय करते रहते हैं। गरीब बेचारे मेहनत करते हैं और अमीर मजा उडाते हैं। हजार पीछे एकही बडा आदमी निकलता है नहीं तो सब दुःखी। जो रोज मजदूरी करके और रूखा सूखा खाकर किसी तरह पेट भर लेते हैं कुछ बडे आदमियोको आराम पहुँचानेहीके लिये यह विचारे परित्यक्त करते हैं।

इस विषयमें मैंने और भी बहुत कुछ कहा पर उनकी समझमें कुछ न आया। वह बोले—“जो कुछ जमीनमें उपजता है उस पर सबका दावा है और विशेष कर उनका है जो सबके मिरताल होते हैं। अच्छा यह बताओ कि उत्तमसे उत्तम खान पान क्या है ? सबको इसका टोटा क्यों होता है ?” यह सुन कर मैंने सब खानों के नाम तथा उनसे बनानेकी तरकीबें जो याद थी कष्ट सुनाई। यह भी मैंने कहा कि दुनियाके हर एक हिस्सेमें जहाज भेजे बिना खाने पीनेकी सामग्रिया छुट नही सकती हैं। मिया जब तक

सारी दुनियाके तीन चत्तर न लगा आवे तब तक उनके मनकी चीजही नहीं मिलती है । प्रभु बोल उठे—“वह देश बड़ा मत्स्या-नाशी है जहाँ खानेके लिये कुछ नहीं मिलता है । खाना तो एक ओर रहा जहाँ पाणीका भी ठिकाना नहीं है ।”

मैं—नहीं साहब यह बान नहीं है । डल्लेखाने जितना खा सकते हैं उससे तिगुनी उपज वहाँ होती है । इसके सिवा अन्नकी और फलकी सुन्दर गरावे बहुतायतसे बनती है । और भी जरूरत की सब चीजें वहाँ मिलती हैं । पर मर्दोंके ऐसी अजरत तथा औरतों की नाज बरदारीके लिये अपने यहाँकी जरूरतकी बहुतेरी चीजे दूसरे देशकी भेजनी पड़ती हैं और वहाँसे बदलेमें रोग, सूर्यता और पापकी जड लेनी पड़ती है । इसीसे हमारे बहुतेरे भाई लाचार होकर पेटके लिये भीख मागत, डकैती करते, चोरी करते, ठगते, कुटनापन करते, खुशामद करते, झूठी कसम खाते, जाल करते, झूठा खेलते, झूठ बोलते, चापलूसी करते, गुण्डे करते, वोट बेचते, कलम घसीटते, नचनोंकी तरफ निहारते, विष देते, निन्दा करते, दम्भ करते, व्यभिचार करते और न जाने क्या क्या करते हैं ।

कुछ पानीके बदले हम लोग शराब नहीं पीते हैं जीको खुश करनेके लिये पीते हैं । यह पानीकी तरह एक पतली चीज है । इसके पीनेसे आदमी मस्त होजाता है, चिन्ता फिकर दूर होजाती है, अच्छी अच्छी तरहसे मनमें उठती हैं, भय भाग जाता है, बड़ी बड़ी आशाये होती है, शरीर निश्चल होजाता है, ज्ञान लुप्त हो जाता है और गाढ निद्रा आती है । यह सब कुछ होता है पर पीछे रोग धर दवाते हैं और शक्ति चली जाती है । फिर जीवन भार होजाता है ।

बहुत लोग बड़े आदमियोंको और आपसमें एक दूसरेकी नित्य की सुपकी सासग्री या जरूरी चीजें देकर अपना गुजारा करते हैं ।

अपनी कहता हूँ सुनिये जब मैं अपने देशमें कपड़ोंसे लैस होकर । हूँ तो मेरी देह पर सैकड़ों सौदागरीकी चीजें रहती हैं ।

इमारत और घरके अगवादीमें हजारों रुपयेकी और प्राणप्यारीके मृत्पारमें तो न जाने कितनेकी रहती है ।

मैं आपसे निवेदन कर चुका हूँ कि मेरे देशमें बहुतसे लोग बीमारियोंसे मरते हैं । कुछ लोग इन्हीं बीमारियोंको चढ़ा करके अपनी जीविका चलाते हैं ।

प्रश्न - यह बात मेरे ध्यानमें नहीं आई । हमारे हिनहिन सब तो मरनेसे सिर्फ़ दो चार दिन पहले कमजोर और सुस्त होजाते हैं । सयोगसे कभी कोई अङ्ग भङ्ग भी होजाता है । यह बात तो विलकुल असम्भवसी मालूम होती है कि प्रकृति देवी तुम्हारी देहमें रोग पैदा होने देगी क्योंकि उसके सब कार्य पूर्ण होते हैं अपूर्ण नहीं । तुम लोग इतने रोगी क्यों होते हो ? इसका कारण क्या है ?

मैं—हम लोग हजारी तरहकी चीजे खाते हैं जो पेटमें जाकर अपना जुदा जुदा असर डालती है । इसके सिवा जब भूख नहीं तब हम लोग खा लेते हैं । जब प्यास नहीं तब पानी पी लेते हैं । बिना कुछ खाये खाली पेटमें रात रातभर तेज शराब पीते रहतेहैं । इससे शरीर शिथिल होजाता है, भूख मर जाती है और देह गर्म हो आती है । वैद्यकीसे एक प्रकारका रोग होता है जिससे हम लोगोंकी हड्डिया तक गल जाती है ।

यह और बहुतसी दूसरी बीमारिया वापसे बेटेकी मिलती है । इसलिये बहुतरे आदमी रोगकी गठरी लाटे जम्म लेते हैं । कहा तक कोई नाम बतावेगा रोग अनन्त है । मनुष्यका शरीरही अगर सच पूछिये तो रोगका घर है । बीमारोंको चढ़ा करनेके लिये एक प्रकारके लोग हैं जो लडकपनहीसे यह काम सीखते हैं ।

सबसे रोगीके सिवा बहुतसे मन गढन्त भी हैं । वैद्यगण इनकी मन्गढन्त दवा भी तैयार करते हैं । इन रोगी और औषधीके अलग अलग नाम हैं । इन रोगीसे प्राय औरतेंही बीमार होती है ।

वैद्यगण भविष्य कहनेमें बडे पटु हैं । इनके वचन शायदही भ्रू न निकलते हैं अगर वैद्यराजके मनमें कुछ कीना हुआ तो

मञ्जो बीसारियोमें आप नृत्युहीकी बात पहले कहते हैं क्योंकि यह उनके इस्तिनियारकी बात है । आगम कहनेके बाद कहीं रोगीके अच्छे लक्षण देव सयोगसे दिखाई पड़े तो आप झूठे बननेके डरसे एकाध पुडिया ऐसी छोड़ देते हैं कि काम पूरा हो जाता है ।

जिन छी पुरुषोंमें अनवन होजाती है उनके लिये वैद्य विशेष कर लाभकारी है । ज्येष्ठ पुत्र, प्रधान मन्त्री और राजकुमारीकी भी इनसे लाभ पहुँचता है ।

मैंने पहले किसी मौके पर अपने देशकी गामन प्रणालीके विषयमें जिसकी धाक सारे समाजमें है कुछ कहा था । उस समय प्रधान मन्त्रीका भी जिकर आया था । आज फिर प्रधान मन्त्री का नाम सुन कर प्रभु पूछ बैठे कि यह लोग किम तरहके याह ( आदमी ) होते हैं ।

मैं पुनः यो कहने लगा —“राज्यके प्रधान मन्त्री भी एक प्रकार के जीवही हैं जिनके न हर्ष है न शोक, न दया न मया, न काम न क्रोध, न प्रेम न घृणा और न कोई विषय वामनाही है । हैं केवल धन, प्रभुता और उपाधि पानेकी उत्कट अभिलाषा । वह बोलते सब कुछ हैं पर उससे उनके मनका भाव प्रगट नहीं होता है । वह इस इरादेसे कभी सत्य नहीं बोलते कि कोई उसे सत्य समझले और न इस इरादेसे झूठही बोलते हैं, कि कोई उसे झूठ जानले । पीठ पीछे जिनकी वह शिकायत करते हैं समझलो उनके पीं बारह हैं और जिनकी मुँह पर तारीफ करे वस जानलो कि उनके दिन खोटे आये हैं । जब मन्त्रीगण वादा करें—विशेष कर जब कसम खाकर वादा करें तो समझ लेना चाहिये कि लक्षण बुरे हैं । फिर बुद्धिमान लोग ठहरते नहीं आशा छोड़ कर चल देते हैं ।

प्रधान मन्त्रीके पद पर पहुँचनेके बस तीनही उपाय हैं । पहला जोड़ू, वेटी या वहनकी चालाकीके साथ दूसरेके हवाले करना, ।  
दूसरा आगेके मन्त्रियोंका दोष निकालना और तीसरा सत्समाज

में राज दरबारके कलङ्को पर उत्साह पूर्वक लेकचर फाटकागना । लेकिन चतुर राजा उन्हींको अधिक पसन्द करतेहैं जो पिछले उपाय का अभ्यास करते हैं । क्योंकि ऐसेही परमोत्साही लोग उनकी नाते हा मिला कर सदासे ठञ्जरुहाती कहते आये हैं । मन्त्रीही सब कामोंके कर्त्ता धर्त्ता और विधाता होते हैं । वह सीनिटवालीको रेशवत देकर अपनी शक्ति बनाये रखते हैं । वह सब लोगोंसे रुपय भी खूब लूटते हैं । पर अन्तमें—“एक आफ इण्डेमनिटी” की दुहाई देकर वह लोग निकल जाते हैं । हिसाब किताब पूछना तो दूर रहा कोई उनके सामने चू तक नहीं करता है ।

प्रधान मन्त्रीका महल भी एक कारखानाही समझिये जहाँ नित्य नये मन्त्री गढे जाते हैं । नौकर, चाकर और दरवान लोग भी अपने मालिककी नकल करके जुदा जुदा महकमोंके मन्त्री हो जाते हैं । निर्फ यही नहीं घमण्ड झूठ और बूसमें उनसे भी आरा दढ जाना सीखते हैं । इससे फल यह होता है कि वह ऊँचे दर्जे के लोगोंको चेला बना कर अपना मतलब गाठते और कभी कभी चालाकी और बेशर्मीसे धीरे धीरे अपने स्वामीहीके उत्तराधिकारी बन जाते हैं ।

प्रधान मन्त्रीके यहा हृदय बेश्या या मुँहलगे चपरासीकी खूब चनती बनती है । इन्ही लोगोंके द्वारा आपकी ह्वापा सर्वत्र बेगती फिरती है । राजजाजके चलानेवाले अगर गच्ची लोग कहे जायें तो कुछ अत्युक्ति नहीं है ।

एक दिन मैंने अपने यहाके बडे आदमियोंकी कुछ चर्चाकी थी । प्रभु प्रसन्न होकर बोले—“तुम भी जरूर किसी बडे आदमी के बेटे हो क्योंकि तुम हमारे बाहुओंसे रफ, रुप और सफाईन बहुत बढे बढे हो । उतनी पुर्ती और बल तो तुममें नहीं है क्योंकि

Act of indemnity ( क्षति पूर्णकी धारा ) । द्वितीय चार्जस ने अमलमें यह कानून प्रथम चार्जसके विरोधियोंको क्षमा प्रदान करनेके लिये दनाया ।

तुम्हारी रहन सहन दूसरे ढङ्गकी है । लेकिन तुम बीनना जानते हो । मिर्फ यही नहीं तुम्हें अक्सर भी कुछ मरोकार है । इसीसे हिनहिन लोग तुम्हें अद्भुत याद कइते हैं ।”

इस पर मैंने कहा—“आपने कृपा कर अपने श्रीमुखसे मेरी प्रशंसाकी इसके लिये आपको धन्यवाद है परन्तु मैं यह कह देना उचित समझता हूँ कि मैं बड़े आदमीका लडका नहीं हूँ । मेरे मा बाप सीधे सादे सच्चे भलेमानमये। अवस्था भीउनकी कुछ ऐसी अच्छी न थी । धनके बिना मेरी शिक्षा भी पूरे तौरसे न होसकी । योही टुटरूटूँ कुछ थोडामा पढ लिया है । हमारे यहाके बड़े आदमी कैसे होते हैं सो आप अभी नहीं जानते है । उनका ढङ्गही निराला है । बड़े आदमियोंके लडके बचपनहीसे मुस्ती और ऐयागीकी तालीम पाते है और बड़े होने पर पुरुषार्थको नष्ट कर कुल-टाओसे विकट रोग मोल लेते है । अपना घर फूक तस्मादा देख कर वह लोग केवल रुपयेके लोभसे नीच, झुरूप, रोगी स्त्रियोंके साथ व्याह करते है पर उनसे मनुष्ट कदापि नहीं होते । इसीसे उनकी सन्तान भी रोगी, दुर्बल और अपौगण्ड प्राय उत्पन्न होती है । अगर स्त्रियोने अडोस पडोस या नौकर चाकरोसेसे किसी हटे कटे तन्दुरुस्तको चुनलिया तो खैर है नहीं तो तीसरीही पीढीमें वमजोल जाती है । कमजोरी, बीमारी, दुबलापन और पीलापनही बड़े आदमियोंकी सच्ची पहचान है । हटा कटा और मजबूत होना उनके लिये बेइज्जती है क्योंकि सब कोई उन्हें सार्इम या गाडीवानसे पैदा हुआ बताने लगेंगे । वह लोग तिझी, ढिलाई, सूखता, सजक, कामशक्ति और घमण्डके सारे जैसे गरीरसे हीन होते है वैसेही बुद्धिसे भी ।

इन्ही लोगोंकी सलाहके बिना आर्डन कानून न बनता है, न बदलता है और न उठता है । यही लोग हमारी भूमि सम्पत्तिके विषयमें जो कुछ निर्णय कर देतेहैं सो अचल होजाता है । उसका एहन फिर कोई नहीं कर सकता है ।

सप्तम परिच्छेद ।

पाठकगण । आप आश्चर्य्य करेंगे कि जो सुभे, दाह समझ कर समस्त मानव जातिके प्रति घृणा प्रकाश करे उसके सामने मैंने अपने यहाकी सब बातें खोलकर कैसे कह दीं । पर दूसका कारण है । मैं स्पष्ट कहता हूँ कि उन भले चारपायीके सभुओंने मेरी आँखें खोल दी । उनकी सद्गतसे मेरी समझ ऐसी होगई कि मैं मनुष्यके कार्य्य और वासना सात्वकी दूसरीही दृष्टिसे देखने लगा । मैंने मनुष्य मर्यादाको रक्षा करनेके योग्य नहीं समझा । और समझहीके भला क्या करता ? प्रभु तो ऐसे ढङ्गसे सब बातें पूछते थे कि उनका क्षिपाना मेरे लिये असम्भवही था । इसके अतिरिक्त वह हजारों दोष सुझमें नित्य निकाला करते थे जिनकी खबर पहले सुझको कुछ भी न थी । हम लोगोंमेंसे कोई भी उन दोषों को दोष करके नहीं मानेगा । प्रभुका अनुकरण कर मैं भी असत्य भाषण और कपटाचारसे बहुत भागने लगा । सत्य ऐसा प्रिय मालूम हुआ कि मैं उस पर सब कुछ वार बैठा ।

एक वर्षके भीतरही वहांवालों पर मेरी इतनी अद्याभक्ति होगई कि मैंने जीमें ठान लिया कि अब कभी स्वदेशको न लौटूंगा । यहीं हिनहिनोके साथ जहा पापका नाम तक नहीं है जीवनका शेष भाग बिताऊंगा । पर मेरे भोंडे भाग्यमें उस पुण्यभूमिका निवास लिखा नहीं । हाय मनकी मनहीमें रही । जो हो, प्रभु जैसे खोद खोद कर पृथ्वीवालेके आगे भी मैंने अपने देशवासियोंके दोषोंको जहां तक बना न्यून करके तथा ममानके बाधन किया था । ऐसा कौन है जो अपनी जगद्वासका पक्षपात नहीं करता है ?

जब मैंने नव प्रश्नोंका उत्तर दिया तो प्रभु कुछ अन्तुष्टसे मालूम हुए । एक दिन बड़े तडके आपने बुला रीका । जब मैं पहुँचा तो पावनी दैठनेकी आवाज मिली । मैं वहीं बैठ गया । इतना आदर मेरा गौर कभी नहीं हुआ था । आप बोले—“तुम्हारी और तुम्हारे



देगकी बात मैं सोच रहा हूँ। बहुत सोचने विचारनेसे मान्य होता है कि तुम भी एक प्रकारके जानवरही हो लेकिन न जाने कैसे तुम पर नलका ज़रामा क़ीटा पड़ गया है। पर तुम लोग उस अल्लाहसे और कुछ काम न लेकर केवल अपने स्वभाविक दोषोंको बढ़ातेहो और सृष्टिके विरुद्ध नये नये पाप मनने गढ़ते हो। पर-मात्माने जो कुछ शक्ति तुम्हें प्रदानकी थी भी तुम जान वृष्ण कर खो बैठे हो। पहले तुमको इतना अभाव न था पर तुमने अपने अभावीको बहुत बढ़ा लिया है। अब उन्हीके पूर्ण करनेमें तुम अपना सारा जीवन नष्ट कर देते हो। अभाव पूर्ण करनेके लिये नित्य नई बात गढ़ते हो। साधारण याहूके समान भी बल या फुर्ती तुममें नहीं है। तुम पिछले पैरोंमें डगमगाते हुए चलते हो। अपने पंखोंको तुमने न जाने कैसे निकम्मा कर दिया है अब उनसे तुम अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते हो। धूपसे बचनेके लिये टुड्डी पर बाल घे सो भी सफाचट है। याहुओंकी तरह तुम तेजी से न दौड़ सकते और न पेड़ों पर चढ़ सकते हो।

आईन कानून भी तुम्हारी बुद्धि तथा धर्मकी अपूर्णता हीके फल हैं। क्योंकि सञ्ज्ञान जीवोंका शासन करनेके लिये केवल बुद्धिहीकी आवश्यकता है। तुमने अपने देशके लोगोंके विषयमें जितना कहा है उससे भी तुम अपनी बुद्धिमान्नीका टावा नहीं कर सकते। भाई बन्दीके मुलाहिजेसे तुमने बहुतसी बातें छिपाई तथा जो नहीं हैं सो प्रायः कही हैं।

“तुम्हारा रङ्ग रूप तो याहुओंकामा है पर तेजी, फुर्ती, शक्ति तथा पक्षे वैसे नहीं है। तुमने अपने आचार, विचार, चाल चलन, काम काजके बारेमें जो कुछ कहा है उससे साफ तुम्हारे मनकी हतिया मान्य होती है। याहू लोग आपसमें एक दूसरेसे जितनी घृणा करते हैं उतनी दूसरे जानवरोसे नहीं करते। इसका सबब भी उनकी खरतका भद्दापनही है। अपना गुंछ तो आप कोई देखता ही पर दूसरोंके देख कर सबही नाक झिकोडते हैं। तुम लोग

अपने शरीरकी टांके रहते हो सो बुरा नहीं है । इससे तुम्हारे बहु-  
तेरे ऐव छिपे रहते हैं । कोई किसीके ऐवोंको नहीं देख सकता है ।  
अगर तुम लोग अपने अङ्गोंको नहीं छिपाते तो बड़ी मुश्किल  
होती । जिन कारणांसे तुम लोग आपसमें लड़ते हो उन्हीं कारणां  
से याह भी लड़ते हैं । अगर पचास याहुओंकी खुराक पांचके  
आगे फेंक दी जाय तो वह शान्त होकर खानेके बदले आपसमें  
लड़ मरेंगे । हर एक चाहेगा कि मैंही सब हडप जाऊँ । इसी  
लिये इन भवको मैदानमें चरानेके लिये एक चरवाहा रक्खा जाता  
है और जो घरमें रहते हैं सो अलग अलग फासले पर बाध दिये  
जाते हैं । जब कोई सवेशी उमर पाकर या किमी घटनासे मर  
जाता है तो कोई हिनहिन्द अपने याहुओंके भारे उसे उठाने भी  
नहीं पाता है । आस पासके गांवोंके याह उस लाशको लेनेके  
लिये दल बांध कर चढ दौड़ते हैं । उन दलोंमें वैसाही युद्ध  
होता है जैसा तुमने अपने यहा कहा है । पक्षोंसे आपसमें  
वह सब खूब नोच खसोट करते हैं पर मुश्किलसे कोई किमीजो  
मार सकता है क्योंकि तुम लोगोंकी तरह उनके पास कोई हथि-  
यार नहीं है । कभी कभी आस पासके याहुओंमें खूब घनघोर  
मशाम होता है पर उसका कुछ कारण दिखाई नहीं पड़ता । एक  
दलवाले दूसरे दलवालों पर चढाई करनेका मौका ढूँढा करते हैं ।  
मौका पातेही अचानक उन पर टूट पड़ते हैं । पर जब मामला  
बढ़व देखते हैं तो लौट आते हैं । जब लड़नेके लिये कोई शत्रु  
नहीं मिलता है तो यह आपसहीमें घमसान मचा देते हैं । इसीको  
तुम्हारी भाषामें—‘सिविलवार’ ( अन्तर्गुह ) कहते हैं ।

यहां कई स्थानोंमें एक प्रकारके चमकीले पत्थर होते हैं जो  
कई रङ्गके हैं । याह इन पत्थरोंको बहुतही प्रसन्न करते हैं यहा  
नक कि अगर कोई पत्थर भूमिमें भी गड़ा हो तो उसे नहीं छोड़ते  
हैं । दिन भर पक्षोंसे मट्टी खोद कर पत्थर निकालही लेते हैं ।  
फिर छिपा कर मन्दमें जमा करते हैं । तो भी उनको चैन नहीं

होता । उन्हे यही खटका लगा रहता है कि कोई उन पत्थरों को चुग न ले । इसीसे वह अपने खजानेकी रखवाली जी जानसे करते हैं । मैं नहीं कह सकता कि क्यों याह लोग उन पत्थरोंके लिये जान दंतिने और उनका क्या काम इनसे निकलता है । गायट तुम लोगोंकी तरफ़ याहभी नालची होते हैं । एक बार मैंने परीक्षाके लिये एक याहके पत्थरोंको चुपचाप उनकी मान्दने उठवा संग्रहा । जब उसने अपने खजानेकी खाली पाया तो लगा बड़े जोरसे डाढ़े मार कर रोने । उसके रोनेकी गावाज सुन कर सब याह इकट्ठे हो गये । वह भुँखला कर सबको नोचने खसोटने लगा । खाना पीना सोना सब छोड़कर चुपचाप मन मलीन तनछीन होकर बैठा रहता था । जब मैंने फिर चुपकेसे उसके पत्थर जटाके तहा रखवा दिये तब वह तुरत अच्छा होगया । अब वह मजेमें सब काम काज करता है लेकिन पत्थरोंको कहीं दूमरी जगह छिपा आया है ।

“जहाँ यह चमकीले पत्थर बहुतायतसे होते हैं वहाँ अडोस पडोसके याह अकसर जवरदस्ती घुस कर लूट पाट सचात हैं वस भयङ्कर युद्ध ठन जाता है और खूब मार काट होती है ।

और यह तो साधारण बात है कि जब दो याहुओंको खेतमें एक पत्थर मिल जाता है तब वह परस्पर लड़ने लगते हैं । इतने में एक तोसरा उसे लेकर रफू चकर होता है । तुम्हारे यहाके सुकद्दमीकी भी वस यही गति है ।” अपने लोगोंकी मान रक्षाके लिये यहाँ पर प्रभुकी जामें हा मिलानाही मैंने उचित समझा पर वास्तवमें यह बात नहीं है । क्योंकि वहाँ तो मुहई मुहालेह उस पत्थरके सिवा और कुछ नहीं खोते परन्तु यहाँ जब तक मुहई या मुहालेहके पास एक कौड़ी भी बचती है अदालत सुकद्दमीको फैसल नहीं करती । जब दोनों कपड़ाल होजाते हैं तब डिग्री या डिमिमिस करती है ।

प्रभु पुन कहने लगे—“याह बडेही पेटू होते हैं न जाने इनकी कैसी भूख है । घास पात, फल मूल, मडा गला मास को

कुछ इनके सामने आता है सबको भकोस जाते हैं। पेटहीके कारण याह् ऐसे घृणित होगये हैं। इन लोगोंकी प्रकृति भी विलक्षण है। यह घरकी बढियासे बढिया चीजको पनन्द नहीं करते पर बाहरसे जो कुछ चुरा कर या लूट कर लाते हैं उसे बडे प्रेमके साथ खाते हैं। अगर कही बडा शिकार छात्र लगा तो फिर क्या पूछना है ? इतना खायगे कि पेट फटने लगेगा। पर यह लोग एक जडी भी ऐसी जानते हैं कि जिसके खातेही सब चीजें आपही निकल जाती हैं।

एक तरहकी जडी और है जो बहुत सुश्रुतिगले मिलती है। इन जडीमें खूब रस होता है। याह् बडे चावसे इसको पीते हैं। शराबने जो दशा तुम लोगोंकी होतीहै वही इन सबकी उस रससे। रस पान कर याह् गण आपमें लिपटते हैं, बकोटते हैं, भूकते हैं, दात निकालते हैं, किलकारो मारते हैं, भूमते हैं, चलते हैं, गिरते हैं, पडते हैं और फिर टाग फैलाकर कीचडमें सो जातेहैं।”

सचमुच वहा याहुओके सिवा और कोई बीमार नहीं पडता है सो वह भी अपने यहाके ढोडोसे बहुत कम। यह बडे मैले और पेटू होते हैं दस इसीसे इनके बीमारिया भी होती है। इन बीमारियोंका कोई खास नास नहीं है। साधारणतः यह ‘याह्के रोग’ के नामसे प्रसिद्ध है। इनकी दवा यही है कि इनके मलसूत्रको मिला कर जबरदस्ती इनके मुंहमें डाल दिया। इससे पायदा भी खूब होता है। सर्वसाधारणके उपकारके निसिक्त मैं चाहता हूँ कि इस दवाका प्रचार मेरे देशमें भी होजाय।

प्रभुने पुन कहना आरम्भ किया—“लिखने पढने, राजकाज चलाने, कारीगरी और दस्तकारीमें तो हमारे और तुम्हारे यहाके याह् बराबर नहीं मालूम होते। जिन विषयोंमें तुम्हारा उनका स्वभाव मिलता है आज उन्हींकी कुछ बातें कहता हूँ। मैंने सुना है कि याहुओके गरोहीमें एक एक सरदार होता है। सबमे बदसूरत और शैतान याह्ही सरदार बनाया जाता है। हर एक

सरदारके पास एक एक मुसाहिव रहता है जो सब बातोंमें सरदार कीके समान होता है । सरदारके तलवे चाटना और याह्न लिया उसकी मान्दमें पहुँचानाही मुसाहिवका काम है । सरदार प्रसन्न होकर इनाममें गदहेके मांमका एकाध टुकड़ा कभी कभी दे देता है । शेष याह्नगण मुसाहिवसे अत्यन्त घृणा करते हैं । इसीसे विचारा डरके मारे सदा सरदारकी देहसे चिपटा रहता है । जब तक अधिक दुष्ट याह्न नहीं मिलता तब तक पुराना मुसाहिव बना रहता है । उसके मिलतेही पुरानेको धता बताई जाती है । फिर बेचारे पर बड़ी कड़ी पड़ती है । उस गरोहके सब कोटे बड़े, और मर्द, बूढ़े जवान याह्न दल बांध कर नये मुसाहिवके साथ आते हैं और पुराने मुसाहिवको सिरसे पैर तक मजमूँवसे भर देते हैं । अब तुम्हीं बता सकते हो कि तुम्हारे यहाँके मुसाहिवों और प्रधान मन्त्रियोंसे यह बात कहा तक मिलती जुलती है ।”

इस विवेक पूर्ण आक्षेपके उत्तर देनेका माहम मुझे नहीं हुआ । एक साधारण कुत्तेकी बुद्धिसे भी जो अपने भुण्डके सरदार कुत्तेकी आवाज पहचान कर धावा करता है और कभी चूकता नहीं आदमियोंकी बुद्धिकी प्रभुने हेय समझ लिया । हा हन्त ।

प्रभु फिर बोले—“याह्नियोंकी कुछ बातें बड़ी विचित्र हैं पर तुमने तो अपने देशका हाल कहते समय उस विषयमें कुछ कहाही नहीं । अच्छा सुनो । और जानवरोंकी तरह याह्न नारियों पर सब याह्न नरोंका समान अधिकार है । पर अन्तर यही है कि याह्न स्त्रियाँ पैर भारी होने पर भी नरोंको बुलाती हैं और पुरुष लोग आपसमें जिस प्रकार लड़ते भगड़ते हैं उसी प्रकार स्त्रियोंसे भी । यह दोनों चालें ऐसी गन्दी हैं कि कोई इन्हें पसन्द नहीं करता है । सब जीव जन्तु साफ सुथरा रहना चाहते हैं पर हमारे याह्नियोंको गन्दगीही पसन्द है । दुष्ट भो आप परले सिरके होते हैं ।”

इन दोनों बातोंका अगर कोई मुहतोड जवाब होता तो मैं जरूर देता पर क्या करूँ कुछ जवाब मिला नहीं इससे चुप हो रहा ।

अगर एक सूअर भी वहां मिल जाता तो मैं जरूर गार्दामियोंकी हिमायत करता पर भाग्यके दोषसे वह भी वहां न मिला । बाराह याहूअोंसे चाहे सुन्दर हो पर स्वच्छतामें तद्रूपही है । प्रभु उसका सैला खाना और कीचमें लोटना पोटना देख लेंते तो वह भी इस बातको अवश्य स्वीकार करते ।

प्रभुने अपने नौकरोंसे यह भी सुनाया कि कभी कभी कोई याहू एक कानेमें लोट कर भूंकता है, कराहता है और जब कोई पास जाता है तब गुराँता है वह देखनेमें खूब मोटा ताजा मालूम होता है पर कुछ खाता पीता नहीं । नौकरीकी भी मालूम न हुआ कि वह क्यों ऐसा करता है । इसके आराम करनेकी वम एकही दवा है वह यह कि उससे खूब कड़ी मिहनत लेना । मेहनतके बाद वह आपही होशमें आजाता है । मैं प्रभु को यह बात सुन कर चुपका होरहा । बीलनेसे शायद अपने लोगोंकी कुछ बुराई हो वस इसी ख्यालसे मैं कुछ न बोला । आलमी, विलासी और धनिकोंके रोगका कारण अब मुझे मालूम होगया । इन लोगोंसे भी खूब परिश्रम कराना चाहिये, परिश्रमके द्वारा इनको आराम करनेका भार मैं लेता हूँ ।

प्रभुने यह भी कहाया कि याहू स्त्रियां अकसर नदीके तीर या झाड़ियोंके पीछे खड़ी होंकर आमं जानवाने जवान याहूअोंसे आखे लडाती हैं । चौंचलेके साथ कभी प्रगट होती है और कभी छिप जाती है । उस समय उनकी देहसे बड़ी गन्दी वृ निकलती है । और जब कोई मर्द पीछा करता है तो धीरे धीरे घागे बढ जाती हैं मगर पीछे फिर फिर ताकती भी जाती है । नहरसे अपने घर जानिका भी खाड़ लाती है । इन ढकोसलोंके बाद वह सब सुदीते की उन जगहोंमें पहुँच जाती हैं जहा वह जानती है कि वह पीछा करनेवाला भी आपहुँचेगा ।

उन सबके बीचमें अगर काँड ऊपरी औरत आ पडती है तो चार पांच जनों उसे घेर कर खूब दिक करती है । कोई धरती है

कोई किचकिचाती है, कोई मुँह बनाती है और कोई उसकी सारी देहको सूँघती है। फिर नाक भौंह निकोड कर सब चल देती है।

प्रभुने देखी या सुनी हुई जो बातें कही उनमें गायद कुक नोन मिर्च उन्हींने जरूर लगाया होगा। जो हो मुझे यह जानकारी बड़ा ही आश्चर्य और दुःख हुआ कि कामेच्छा, कुलटापन, निन्दा और चवाव करना स्त्रियोंका स्वाभाविक धर्म है।

जिन दिनों बात चीत होती थी मेरे मनमें बराबर यही खटक लगा रहता था कि प्रभु उन अस्वाभाविक दोषोंका कलङ्क कहीं याहुओं पर न लगा बैठें जिनमें हमारे श्री पुरुष साधारणतः लिप्त रहते हैं। पर प्रभुने इस विषयमें कुछ नहीं कहा इससे मालूम होता है कि प्रकृतिदेवीने यह सब नहीं सिखाया है यह सब हमारे शिल्प और ज्ञान विज्ञानहीका फल है।

### अष्टम परिच्छेद ।



पाठकगण ! मेरे प्रभुजी आखिर छोड़ेही तो ठहरे उन्हें हम मनुष्यों के चाल व्यवहारसे क्या मतलब ? पर याहुओंकी वावत उन्हींने जो कुछ कथन किया सो मुझ पर या मेरे देशवालों पर मजेमे घटता था। मैंने सोचा चलो मैं भी याहुओंसे मिल कर कुछ नई नई बातें निकालूँ। इसलिये मैं प्रभुसे पृथक् कर अकसर आस पासके याहुओंकी जमातमें जाता था। इन जघन्य जीवों पर मेरी अपार घृणा देख करही प्रभुको विश्वास था कि इनकी सङ्गत मेरा कुछ बिगाड नहीं सकती है। इसीसे जब मैं पूछता तब वह आजा दे देते थे। सिर्फ यही नहीं हिफाजतके लिये एक नींदर छोड़ेको भी साथ कर देते थे जो बड़ा सच्चा और स्वभावका अच्छा था। अगर यह न होता तो मैं ऐसी जो खमकी जगहमें जानेकी हिम्मत भी नहीं करता। क्योंकि इन दुष्टोंने वहाँ पहुँचने पर पहले वीना सताया था सो मैं पाठकोंसे आगे निवेदन कर चुका हूँ। इससे

बाद भी दो चार बार हैं इनके चहुँतमें फंसते फंसते बच गया हूँ । उस समय मेरे पाम कटार भी न था पर परमात्माने कुशल की । पीछे इन सबने यह समझ लिया कि मैं भी उन्हीकी जातिका हूँ । मैं अपने रक्षककी सामने अकसर बाहें तथा छाती खोल कर उन्हें दिखलाता था । वह सबकी सब हिम्मत करके मेरे कुछ पास आते और बन्दरोंकी भांति मेरी नकल करते थे । वनके कच्चे किसी पालतू कच्चेको टोपी और सोजे डाटे देख कर जैसे का का करते हैं वैसेही मुझे देख कर वह करते थे ।

याह लडकपनहीसे बड़ तेज होते हैं । एक बार मैंने याहका एक बच्चा जो तीन वर्षकाथा पकड़ लिया । मैंने पुचकार कर उसको बहुतैरा चुप करना चाहा पर वह क्यों चुप होने लगा ? वह लगा बड़े जोरसे चीख मारकर रोने और हबकने । आखिर मैंने आजिज छोकर उसे छोड़ दिया । इतनेमें उसकी रुलाई सुन कर बहुतसे बूढ़े याह जमा होगये । बच्चा भागही गया था और रक्षक घोड़ा वहीं खड़ा था इससे मेरे पास आनेका माहस किसीको नहीं हुआ । उस बच्चेकी बदनसे नेवले और लोमड़ीसे भी बदतर गन्ध निकलती थी । उस दुर्गन्धको नाक सह नहीं सकती थी । हा एक बात कहना मैं भूलही गया वह यह कि जब मैं उस दुष्ट बच्चे को आपमें लिये था उसने मेरी मारी पोशाक सूतसे खराब करदी । उसके पैगावका रङ्ग पीला था । भाग्यसे निकटही एक सोता बह रहा था । उसमें जाकर मैंने कपड़ोंको खूब अच्छी तरहसे धो डाला जब तक कपड़े खूब सूखे नहीं प्रभुके सामने जानेकी मेरी हिम्मत नहीं पड़ी थी ।

जो कुछ मैंने देखा भाला, उससे मालूम होता है कि याहशग शिजा ग्रहण करनेमें सब जानवरोंसे गये बीते हैं । दोस्त होने या गाड़ी खेचनेके सिवा वह और कुछ नहीं कर सकते हैं । इसका कारण इनका दुराग्रही है । यह अत्यन्त धूर्त, दुष्ट, विद्यास्पघातक तथा प्रतिहिंसक होनेके अतिरिक्त बड़ेही बली, परिश्रमी मगर



छरपोक होते हैं। उड़त भी पगले मिरके हैं। नीचता और निष्ठुरता तो इनसे कूट कूट कर भगो हुई है। लान बालवाले औरों की अपेक्षा अधिक कामी और दुष्ट होते हैं पर बल और फुर्तीसे भी सबसे चढ़े बढे होते हैं।

हिनहिन लोग उपस्थित कार्मिक लिये कुछ यादुओंकी घरके पासही भीपड़ोंमें रखते हैं। बाकी चरनेके वास्ते मैदानमें भेज दिये जाते हैं। वहा वहा सब जड़े खोद कर खाते तथा घास चरते हैं। कभी कभी सुर्दाँ और चुर्होंको भी ढूँढ कर बड़े चावसे खाते हैं। नखसे बड़े बड़े बिल खोद कर सोते हैं। औरते अपने बच्ची को लेकर सोती हैं इससे उनके बिल मर्दोंकी अपेक्षा बड़े होते हैं।

मेडकोंकी तरह वह लोग बचपनहीसे तैरना जानते हैं और जलमें बहुत देर तक डुबकियां मार कर रह सकते हैं। मर्द मछलिया पकडते और औरते बच्चोंके लिये घर लेआती हैं इस समयकी एक अनोखी कहानी सुनाना 'हूँ' आशा है पाठक चमा करेंगे।

एक दिन मैं टहलनेके लिये घरसे निकला। सायमें रक्तक भी था। उस दिन गर्मी भी बहुत जोरकी पड़ी थी। मैं रक्तकसे पृथ कर निकटहीकी एक नदीमें नहाने गया। मैं एक टम नरन हो कर नदीमें धीरे धीरे उतर गया। रक्तक राम भी मुझे निरापद समझ कर कुछ दूर पर हरी हरी घास चरने लगे। सयोगसे एक याहू नारी तीर पर खड़ी यह सब देख रही थी। वह न जाने क्यों मत्त होकर धमसे पानीमें कूद पड़ी और दौड कर बेतरह सुभसे चिपट गई। मैं तो हक्का बक्कासा होगया। ऐसी दशा मेरी कभी नहीं हुई थी। आखिर मैं बड़े जोरसे चीख उठा। मेरी आवाज सुन कर रक्तक सरपट दौड आया। इतनेमें वह चाण्डालिन मुझे छोड कर दूसरे किनारे पर जा धमकी। अगर रक्तक न आता तो मेरा पिण्ड वह बादापि न छोडती। जब तक मैं कपड़े बदलताथा वह वगावग मेरी घोर देख कर भूकती रही।

मेरी यह दुर्दशा सुन कर प्रभु और प्रभुके घरवालोंको तो एक

दिक्कगी होगई और मै लाजके मारे सरा जाता था । अब मै याह् होनिसे इनकार नहीं कर सकता था । जब याहुनो याह् समझ कर मुझसे चिमट गई तो मै याह् नहीं तो क्या हूँ ? उसके बाल भी लाल नहीं थे कि मुझे कुछ कहनेकी जगह मिलती क्योंकि लाल बाल कामुकताका चिन्ह है यह मै पहलेही कह आया हूँ । उसके बाल तो जूतेकी तरह काले थे और सूरत भी ऐसी कुछ भद्दी न थी जैसी और याहुनियोंकी होती है । जहां तक मै समझता हूँ उनकी उमर ग्यारह सालसे ऊंची नहीं थी ।

मै हिनहिनके देशमें तीन साल रहा । पाठक चाहते होंगे कि मै भी अन्यान्य यात्रियोंके सदृश वहावालीके रहन सहन तथा चाल चलनका कुछ वर्णन करूँ । सो मै अवश्य करूँगा क्योंकि जब मै वहा या तब इन विषयोंके जाननेके लिये विशेष ध्यान दिया था ।

हिनहिन लोग खभावहीसे धर्मपरायण होते हैं । सज्जन जीवों में पापाचार ब्या है इतना तक वह नहीं जानते । बुद्धिको उन्नत करना तथा उसके अनुसार चलनाही उनका मुख्य उद्देश्य है । वह सब हम लोगोंकी तरह बुद्धिके द्वारा किसी विषयके दोनों पक्षों पर विवाद करनेमें चतुराई नहीं दिखाते और न बुद्धिको तर्क वितर्क करनेकी वस्तुही समझते हैं । बुद्धि यदि स्वार्थादिसे मिश्रित दूषित और कलुषिण हुई तो तुरतही सबका निर्णय होजाता है । “अपनी अपनी मग्नति” का क्या अर्थ है या कोई विषय विवादके योग्य पड़े तो सकता है सो समझनेमें प्रभुको कितनी कठिनाई पड़ी वह मुझे याद है । जिन बातोंको हम निश्चय जानते हैं केवल उन्हीको हम बुद्धिके द्वारा ग्रहण या परित्याग कर सकते हैं । बुद्धि के बाहर हम कुछ नहीं कर सकते । हम कारण सन्दिग्ध विषयों में वितण्डावाद, वास्तुविवाद और हठ धारना हिनहिन नहीं जानते हैं । जब मै अपने प्रकृति विज्ञानकी भिन्न भिन्न प्रयोगोंको समझाता तो वह हम वर कहतेथे कि जो प्राणी जानी वदता है वह हमारेके कल्पित ज्ञानके भरोसेही बृद्धता है और वह ज्ञान

यथार्थ होने पर भी इन विषयोंमें कुछ काम नहीं कर सकता है । वह सुकरातके उन विचारोंकी जो अफनातूँ लिख गया है अच्छी तरह मानते थे । यह सुकरातके लिये गौरवकी बात है । तबसे मुझे यही चिन्ता लग रही है कि ऐसे मिडान्तसे युरोपके पुस्तकालयोंकी न जाने कितनी हानि पहुँची और न जाने कितने पण्डितोंके लिये यशका मार्ग बन्द हो जायगा ।

मित्रता और कृपालुताही हिनहिनीके प्रधान गुण हैं । इनके यह दोनों गुण सङ्कीर्ण नहीं विश्वव्यापक हैं । यह दूर देगके पाहुनेसे भी वही बर्ताव करते हैं जो पड़ोसीसे । यह जहा जाते हैं तमाम अपना घरही समझते हैं । गिष्टाचार और सभ्यताके तो यह घर हैं । आडम्यर जानतेही नहीं । बहरे बहरीयोंकी प्यार नहीं करते पर उनकी शिष्टाकी तरफ विशेष ध्यान देते हैं । यह भी उनकी बुद्धिका फल है । मैंने देखा है कि प्रभु पड़ोसके बालकोंको जितना प्यार करते थे अपनाका भी उतनाही । उनका जाति प्रेम स्वाभाविक है । यह केवल बुद्धिहीका प्रभाव है कि वह लोग उच्च कोटिके धर्मात्माओंको श्रेष्ठ मानते हैं ।

हिनहिनिया एक बहरे और एक बहरी जन कर हिनहिनीसे मिलना छोड़ देती है । अगर कहीं सयोगसे किमोका एक बच्चा मरगया तो वह फिर मिल लेती है । यह आफत कहीं उस हिनहिनी पर आपड़ी जिसकी हिनहिनी ठण्ड हो चुकी है तो कोई दूसरा हिनहिनी अपना एक बच्चा उसे दे देता है और अपने लिये एक और पैदा कर लेता है । देशमें अश्व सख्या अधिक बढ़ने न पावे इस बातका वह सब खूब ख्याल रखते हैं । नीचे दरजेके हिनहिनी जो नौकर चाकर बनाये जाते हैं इन नियमोंके उतने अधीन नहीं हैं । यह सब छः छः बच्चे तक पैदा कर सकते हैं ।

हिनहिनी लोग व्याहके कामको बड़ी सावधानीसे करते हैं । बमेल व्याह करके सारी जातिकी वर्णरङ्गर बनाना नहीं चाहते । व्याहके समय हिनहिनीमें बल तथा हिनहिनियोंमें सुन्दरता

सुख्य करके देखी जाती है । प्रेमके लिये नहीं वंश रक्षाके लिये व्याह होता है । अगर हिनहिनी बलसे अधिक दुर्द तो हिनहिनही सुन्दर दूढा जाता है ।

कोर्टशिप, प्रेम, प्रेमका उपहार, स्त्रीधन आदि वह कुछ नहीं जानते यहा तक कि उनकी भाषामें इनके लिये कोई शब्द नहीं है । युवक हिनहिन और हिनहिनी भेंट होतेही आपसमें मिल जाते है । इसमें किसी प्रकारकी रोक टोक नहीं है । सज्जान जीवोंके लिये इस तरह मिलना वह आवश्यकीय समझते है । विवाह भङ्ग तथा व्यभिचार वहा कभी सुननेमें नहीं आया । हिनहिन और हिनहिनी ईर्ष्याद्वेष, अनुराग, कलह और असन्तोष रहित होकर जीवन व्यतीत करते है । जो मित्रता और कृपालुता जाति के अन्यान्य लोगो पर प्रकाशित करते है वही आपसमें भी करते है ।

बच्चोंको शिक्षा देनेकी परिपाटी बहुत सुन्दर है । हम लोगोको उसका अनुकरण करना चाहिये । अठारह वर्ष तक बच्चे जई और दूध खाने नहीं पाते है । ऐसेही कभी कभी खा लेते है । गर्मीके दिनोंमें दो घण्टे सवेरे तथा दो घण्टे सांझको मैदानमें चरते है । उनके मा बाप भी इसी तरह चरते हैं । गौकर सब दोनों बेला एक एक घण्टा चरने पाते हैं । वह लोग अपनी अपनी घास घरही उठा लाते है । जब कामसे छुट्टी पाते तब सुवीतेसे खाते हैं ।

बछिरे बछेरियोंको मयम, परिश्रम, व्यायाम और पवित्रताकी समान शिक्षा दी जाती है घरके कामोंके सिवा हमारे बालक बालिकाओंको भिन्न भिन्न प्रकारकी शिक्षा दी जाती प्रभु बुरा समझते थे । वह कहते कि हमीसे तुम्हारे देशके आधे निवागी सन्तान उत्पादन करनेके अतिरिक्त और किसी कामके नहीं है । ऐसे निकम्मे लोगोके भरोसे बच्चोंको छोडना बहुतही बडी पशुता है ।

लेजिन हिनहिन अपने बच्चोंको ऊँचे खडे पहाडी पर तथा पथरीलो भूमिमें दौडा कर जोरमन्दी, मजबूती और तेज चलना सिखाते है । और जब वह पसीने पसीने होजाते है तब दूध

खिचा का ताना न या नदीमें कुदाये जाते हैं । उछलने कूदने टीडने आदिकी योग्यता के मालमे चार दफे दिखलानी पडती है । जो सबमें आगे होता है उसे पारितोषिकमें एक गीत मिलता है । उस गीतमें उसीकी प्रशंसा रहती है । उस उत्सवके समय खान-मामा याहुयोकी पीठ पर दाना घास दूध लाद कर परीक्षाफलमें लेजाते है । हिनहिन आनन्दसे सबको खाते है । पीछे किसीकी तबीयत न घबराय इसलिये याह विचार बहासे भगा दिये जाते है ।

चार चार वर्षमें बसन्त ऋतुके समय हिनहिनीकी एक जातीय महासभा होती है । इसका अधिवेशन चार पांच दिन तक एक लम्बे चौड़े मैदानमें होता है जो प्रभुके घरसे बीस मीलकी दूरी पर है । प्रत्येक प्रदेशकी क्या दशा है—जईया घाम कहा कैसी उपजी है याह या गाये भरपूर है या नहीं इत्यादि बातोंका बहा विचार और छानबीन होती है । जहां किसी बातका टोटा हुआ वह सर्व सम्मतिसे चन्दा करके तुरत दूर कर दिया जाता है पर ऐसी नौबत बहुत कम पहुँचती है । बालक बदलबलकी व्यवस्था भी यहीं होती है अर्थात् जिस हिनहिनके दो बछेरेही होते है वह दूसरेको जिसके दो बछेरिया है अपना एक बछेरा देकर बदलेमें उससे एक बछेरी ले लेता है । किसीका एक बच्चा किसी कारण से मर गया और हिनहिनी भी ठण्ठ हो चुकी है तो यहा यह भी निश्चय होजाता है कि कौन हिनहिन एक बच्चा और पैदा करके हानिको पूरी कर देगा ।

### नवम परिच्छेद ।

उस देशसे बिदा होनेके लग भग तीन मास पहले घोडोंकी जातीय महासभाका एक अधिवेशन मेरे सामनेही हुआ था जिसमें प्रभु भी अपने प्रान्तसे प्रतिनिधि बन कर पधारे थे । आपहीने लौट कर वहाका सब पूरा हाल मुझे बताया था । उसी पुराने विषयको लेकर खूब वादानुवाद चला था । कहते थे कि ऐसा तर्क वितर्क और कभी नहीं हुआ था ।

प्रश्न यही था कि याहुओंको पृथ्वीसे निर्मूल करना चाहिये या नहीं । एक मज्जनने तो बड़ी नोक भीकसे उठ कर कहा—मित्रो ! याहू बड़ेही मैले गन्दे और भेदे जीव हैं । हठता, शठता, दुष्टतादि की तो यह खान है । मित्रानेसे भी कुछ सीखते नहीं पर शैतानी जरूर करते हैं । चुप चाप हमारी गौओंका दूध पी लेते हैं—त्रिमियोंको मार कर खा जाते हैं—जई तथा घासोंको रौंद डालते हैं और अगर पूरे तौरसे रखवाली न कीजाय तो बड़ा ऊधम मचाते हैं । हम लोग बाप दादाओंसे सुनते आतेहैं कि याहू यहांके निवासी नहीं हैं । बहुत दिन हुए जब इनका एक जोड़ा पहाड़ पर दिखलाई पड़ा था । सूर्यकी गर्मी कीचमें पड़नेसे यह जोड़ा उत्पन्न हुआ या समुद्रके फेनसे सो कुछ मालूम नहीं हुआ । पीछे इन दोनोंके सन्तान हुई । थोड़ेही दिनोंमें इनकी इतनी वंश वृद्धि हुई कि सारा देश याहुओंसे भर गया और हिनहिनोंकी कष्ट होने लगा तब सबने याहुओंको निकाल बाहर करनेका मनसूबा बान्धा । आखिर एक दिन याहुओंका कतलआम करके उनको चारों तरफसे घेर लिया । बड़े बड़े तो काम आये और बच्चोंको हिनहिन घर उठा लाये । हर एकके दो दो बच्चे हाथ लगे थे । याहू बड़े उदण्ड और जहल्ली थे पर हिनहिनोंने उन बच्चोंको ठीक पीट कर इस योग्य कर दिया है कि अब यह बोझ देने और गाड़ी खेंचने लगे हैं । यह बात भी बहुत ठीक मालूम होती है कि याहू इस देशके आदिम निवासी नहीं हैं । अगर होते तो हिनहिन तथा अन्यान्य जीव क्यों इनसे घृणा करते ? इसलिये मैं चाहता हूँ कि याहुओंका अवश्य मूलोच्छेद होना चाहिये । मज्जनो ! एक बात सुनो और कहना है । आप लोग याहुओंको पाकर गदहीको एक दम भूल गये यह आप लोगोंने अच्छा नहीं किया । गदही याहुओंसे सुन्दर सीधे और शान्त है । इनकी देहसे दुर्गन्धि नहीं निकलती । यह वैसे फुर्तीले तो नहीं मगर मेहनती और मजबूत उनसे कहीं बढके होते हैं । गदहोंका रिकना चारों खराब हो परन्तु याहुओंके भया-

नक भूकनेसे बड़ लाख दरजी अच्छा है। अतएव मैं प्रस्ताव करता हूँ कि याहुओंका अवश्य विध्वंस करना चाहिये।

बहुतीने तो इस प्रस्तावका समर्थन किया परन्तु प्रभुने उन बातों को याद कर जो मैंने कही थी एक दूसराही उपाय निकाला। आप बोले—सज्जनो। हमारे माननीय पूर्ववक्ता महोदयने जो कुछ कहा है सो बहुत ठीक है। वह दोनों याहु जो पहले पहल पहाड पर देखे गये थे मैं समझता हूँ समुद्रके उस पारसे आयिये। उन्हें उनके भाइयोंने निकाल दिया होगा। जाति भाइयोसे अलग पर्वत पर रहनेके कारण उनका चाल व्यवहार बिगडने लगा। बिगडते बिगडते एक दम बिगड गया। यहा तक कि वह वर्तमान दशाको पहुँच गये। पर उनके देशवाले ऐसे नहीं है। इसके सबूतके लिये मेरे पास एक “अद्भुत याहु” मौजूद है जिसे आप लोगो सेसे बहुतीने देखा नहीं तो सुना जरूर होगा। वह भी अपने सझियोसे निकाला जाकर यहा तक आपहुँचा है। उसके शरीर पर दृमरे जानवरीके बाल तथा खालकी बैठन चढी हुई है। वह अपनी बोली बोलता है और हम लोगोकी भी बोली अच्छी तरहसे सीख गया है। उसने यहा तक आनेका अपना पूरा इत्तान्त मुझे कह सुनाया है। जब वह बैठन उतार देता है तो ठीक याहु मालूम पडता है। अन्तर केवल इतनाही है कि उसका रङ्ग गौरा, पंखे छोटे तथा देहमें बाल कमती है। उसके कहनेसे मालूम हुआ कि उसके देशमें याहु राजा और हिनहिन गुलाम है। उसमें सब लक्षण तो याहुके हैं किन्तु बुद्धिका तनिक लेश होनेके कारण वह कुछ सभ्य मालूम होता है। जो हो, इस सबसे वह बुद्धिमें उतना ही कम है जितना उसके हमारे याहु है। उसे देशके लोग हिनहिनीको बशमें लानेके लिये उन्हे आखता करते है। आखता बर्गकेकी तरकीब बड़ी सहज और बेजोखी है। त्रम करना चिवटियोसे और घर बनाना अबाबीलोसे हम लोग सीखते है। इसलिये पशुओसे ज्ञान सीखनेमें कुछ लज्जा नहीं है। मैं चाहता

हं कि सब जवान याहू आखता कर दिये जाय । बस इससे वह अच्छी तरह काम भी करेगी और थोड़े दिनोंमें अनायासही उनका वग नाश होजायगा । इधर तब तक हम लोगीको गदहीका वग बढानेमें दत्तचित्त होना चाहिये क्योंकि यह बड़े कामकी चीज है । और सबतो वारह बरसके होने पर कामके लायक होते हैं पर गदहा विचारा पाचही सालसे काम करने लगता है ।

प्रभुने जातोय महामभाका बस इतनाही हाल उस समय सुभसे कहना उचित समझा । मेरे विषयमें जो कुछ बात चीत वहा हुई थी उसे आयने छिपा रक्खा पर इसका फल सुभे बहुत जल्दी मिल गया । पाठकोंको आगे चल कर सब सालूम होजायगा । मेरे दुर्भाग्यका उदय उसी दिनसे समझना चाहिये ।

हिनहिनोंकी कोई वर्णमाला नहीं है । जो कुछ अपने बाप दादाओंसे वह सुनते आते हैं वही लडकीकी बता देते हैं । इसीसे उनकी विद्या पुराने ढङ्गकी है । जिन लोगोसे इतना मेल मिलाप है—जो स्वभावहीसे धर्मानुरागी हैं—जो बुद्धिके भगोसेही सब काम करते हैं और जो दूसरी जातियोसे कुछ सखन्धही नहीं रखते हैं उनके यहां कोई घटना क्यों होने लगी ? फिर इतिहासके लिये साधाही क्यों खपाना पडेगा ? यह मैं पहलेही लिख चुका हू कि हिनहिन् कभी बीमार नहीं पडते इस वास्ते उनके वैद्यकी भी जरूरत नहीं होती । तो भी वह अच्छी अच्छी जडी बूटिया जानते हैं । पैरोंमें या कहीं किसी तरह कुछ चोट लग जाती है तो वह उन्ही जडी बूटियोंसे तुरत आराम कर लेते हैं ।

चन्द्र सूर्यकी गतियोंके द्वारा वह वर्षकी गणना कर लेते हैं किन्तु महाहाटिको काममें नहीं लाते हैं । इन दोनोंकी चालोंको वह भली भाँति जानते हैं तथा ग्रहणके भेदको समझते हैं । ज्योतिष में उनके ज्ञानको बस यही पराकाष्ठा है ।

काव्यमें हिनहिन् सबसे बड़े हुए हैं । उनके काव्योंमें पूर्णोपमा तथा यथायर्थ वर्णनका आधिक्य रहता है । यह दोनों बातें हम लोगी



के अनुकरणके योग्य है। मित्रता और कृपालुता पथवा जो हिन-  
हिन घुडदौड या कमरतमें बाजी मार लेता है उसकी प्रशंसा अश्व-  
काव्यका साधारण विषय है। उनके घर यद्यपि अनगढ़ हैं तथापि  
गर्मी सर्दिके बचावके लिये वह चोखे हैं। वहां एक तरहके पैड  
होते हैं जिनकी जड़ें चालीन बरमजे बाढ़ ढीली पड़ जाती हैं।  
बस तूफान आतेही वह सब गिर जाते हैं। इन पैडोंकी लकड़िया  
बहुत मोधी तथा नोकीली होती हैं। हिनहिन इन्ही लकड़ियोंके  
खेमे तेज पत्थरमें जमीनमें टम टम इश्चकी दृरी पर गाड़ कर उनके  
बीचमें जड़की डाटें और पत्ते लगा देते हैं वम यही उनकी दीवारें  
हुईं। छतें भी इसी रीतिसे पाटी जाती हैं तथा किवाड भी गमेड़ी  
बनते हैं। हिनहिन लोहेका व्यवहार नहीं जानते।

हाथका काम हिनहिन अपने अगले मुजम्मीसे निकालते हैं  
और बड़ी सफाईसे सब काम करते हैं। मैंने एक उजली घोड़ीको  
सूई डोरा दिया तो उसने चटपट पिरो दिया। वह सब गाय दुहते  
हैं, जड़ काटते हैं—मनलव यह कि हाथीसे जो काम होते हैं भी  
सब वह करते हैं। एक प्रकारके चकमक पत्थरको रगड़ कुल्हाड़ी  
आदि हथियार बनाते हैं। उन्हीसे घास तथा जड़ काटते हैं और  
याह्न लोग ढोकर लाते हैं। घरमें नौकर खाली कुचल कर अन्न  
निकालते हैं और भण्डारमें बन्द करके रख देते हैं। यह अन्न और  
घास वहां आपही पैदा होती है। वह काठ और मट्टीके वर्तन  
भी एक तरहके बनाते हैं। मट्टीके वर्तनोको धूपहीमें सुखा कर  
पका डालते हैं।

यदि कोई देव दुर्घटना न हुई तो हिनहिन दूढ़े होकर मरते  
हैं। जो स्थान सबसे अप्रसिद्ध होता है वही वह गाड़े जाते हैं  
जब कोई मर जाता है तो इष्ट मित्र और वन्धु वान्धवन शोक करते  
हैं और न हर्ष। मरनेवाला भी जरा दुःख नहीं करता। वह मरने  
को अपने घर जाना समझता है। किसी मित्रके यहासे घर आने  
में जो दशा होती है मृत्युके समय हिनहिनकी भी वही दशा होती

है । सुभे याद है प्रभुने एक बार एक अश्वको लपेटिदार किमी जरूरी कामसे बुलाया । जिस समय आनेकी वान थी उससे बहुत पीछे घोड़ी अपने दो बच्चोंको लिये पहुँची । विलम्बका कारण पूछने पर उसने कहा—“आज सबेरे मेरे स्वामी अपनी पहली माता के पास गये” अर्थात् सर गये है । उसके चेहरे पर कुछ भी शोक या उदामी नहीं मालूम होती थी । जैसे सब प्रसन्न बटन थे वैसे वह भी थी । तीन महीनेके बाद वह बिचारी भी अपनी पहली माके पास चली गई ।

हिनहिनकी आयु मत्तर पछत्तर वर्षकी होती है । कोई कोई अस्सी तक भी पहुँच जाते हैं पर बहुत कम । मरनेके कुछ हफ्ते पहलेसे वह क्षीण होने लगते हैं परन्तु उन्हें किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता है । इस समय वह असानीसे कहीं जा आ नहीं सकते इससे वन्धु बान्धवगण मिलनेके लिये घरही पर बहुत आते हैं । मरनेके दस दिन पहले वह याह्रगाड़ी पर सबसे बदलेकी भेंट कर आते हैं । केवल इसी कामके लिये यह गाड़ी नहीं है । इस पर लगडे, बूटे तथा दूरके सफर करनेवाले चढते हैं । जब वह मिलने के लिये जाते हैं तो दृष्ट मित्र और वन्धु बान्धवोंसे बड़ी गम्भीरतासे विदा होते हैं मानो जीवनका शेष भाग वितानेके लिये किसी दूर देशान्तरको जाते हैं । हा एक बात कहनेको छूटही गई थी कि हिनहिन अपनी मृत्युका समय हिसाब करके निकाल लेते हैं । इसमें बहुत कम भूल होती है ।

मैं घोड़ोंकी रीति व्यवहार तथा धर्म कर्मके बारेमें और भी कुछ कहता परन्तु इन विषयोंकी एक स्वतन्त्र पोथी अलग लिखा चाहता हूँ अतएव इस प्रसङ्गको यही समाप्त कर अब कुछ अपनी दुर्घटना सुनाता हूँ ।

### दशम परिच्छेद ।

मैंने अपने मनके सुआफिक रहने सहनेका एक सुखतसर सा वन्दोवस्तु करलिया था । प्रभुने अपने घरसे करीब छ' गजके फामले पर मेरे लिये एक छोटीसी कोठरी बनवादीथी जिसकी बनावट उसी

देगकी सीथी। मैंने उसे लीप पोत कर दुकस्त कर लिया था। सन तथा पक्षियोंके परीका एक गद्दा बनाया जिस पर मैं पैर फेला कर सीता था। याहुओंके बालके जालसे अकसर चिड़ियोंका शिकार करता। इनका सांस बड़ा स्वादिष्ट होता था। अपनी कुर्गीसे दो कुर्मिया बना ली थीं। इनके बनानेमें लाल घोड़ेसे भी कुछ मदद मिली थी। कपड़े सब फट गये तो खरहीकी खालहीमें काम चलाया। खरहे के आकारके वहां एक प्रकारके सुन्दर जानवर होते हैं। जिनके रोएं बड़े बारीक होते हैं। इन्हींकी खालके काम चलाऊ मोजे भी बनाये थे। जूतोंके तले घिस गये तो काठके लगाये। जब ऊपर के हिस्से भी बेकाम होगये तो याहूके चमड़ेकी धूपमें सुखा कर काममें लाया। हत्तीमेंसे अकसर मधु निकाल लाता और उसे रोटियोंके साथ खाता या शरबत बना कर पीता था। “मनको मनाना कुछ बड़ी बात नहीं है” तथा—“आवश्यकता पड़ने पर उपाय सूझता है” इन दोनों सिद्धान्तोंकी सत्यता मुझसे बढ कर कोई नहीं जान सकता है। वहां मेरा शरीर निरोग तथा चित्त शान्त रहता था। वहां न मेरे कपटी और विश्वासघाती मित्रही थे और न गुप्त वा प्रकट शत्रु। बड़े आदमियोंको या उनके मुसाहिवोंको प्रसन्न करनेके लिये घूम देने, खुशामद करने अथवा कुटना पन करनेकी कभी वहां नौबतही नहीं आती थी। कल वा उपद्रवकी वहां कुछ आशङ्का न थी। मेरे शरीरका सत्यानाश करनेके लिये वकील वहां न थे। मेरे चाल चलनकी देख भालके वास्ते वहां कोई जासूस न था और न रुपयेके हेतु कोई भूठे भूठे सुकहमें गढ़ता था। वहां निन्दा, उपहास, चवाव, बलात्कार, मूर्खता, काम, क्रोध, लोभ, मोह, दम्भ, पाखण्ड, अभिमानादि कुछ न था। चोर, जुआचोर, उच्चके, उठाईगीरे, जीवकाट, डाकू, लुटेरे इत्यादि वहां न थे और न सिफले, धूर्त, कुटने, भडुए, भाड, शराबी, जुआरी तथा बकवादीही थे। न दल था न पार्टी थी और न कोई अगुआ था। वहां न कारागार, न शूली न फासी और न कोड़े

कौ सारही थी । पाप करनेकी वहा कोई सामथी न थी । वेहमान दूकानदार भी वहा न थे । कर्कसा खर्चीली और कुलटा खिया नही थीं । लण्ठ मगर अभिसानी पण्डित न थे विवादी, छली, स्वार्थी, शपथ खानेवाले, नीच साथी भी वहा न थे । नीच अपनी नीचताहीके कारण न सिंहासन पर विठाये जाते और न सज्जन सज्जनता हेतु सिंहासनसे उतारेही जाते थे । वहा न लाट थे न जज थे न सारङ्गी बजानेवाले थे । और न नृत्याचार्यही थे—मतलब यह कि रोग शोक, पाप ताप वहा कुछ भी न था । बडे आनन्दसे दिन कटते थे ।

प्रभुके यहा भोजन करने या मिलनेके लिये अनेक हिनहिन आते थे । वह लोगजिस कोठरीमें बैठ कर बात चीत करते थे वहा सैं भी जाने पाता था । प्रभु तथा प्रभुके साथी लोग अकसर मुभसे भी वार्तालाप करनेकी लूपा दिखाते थे । जो कुछ वह पूछते उस का जवाब सैं देता या खडा खडा उनकी बातेंही सुनता था । जब प्रभु किसीके यहा जाते तो मुभे भी कभी कभी अपने साथ ले लेते थे । प्रभुका उत्तर देनेके अतिरिक्त और कुछ बोलनेका साहस मुभे कभी नही हुआ । हाय ! बोलनेके लिये सैं इतना परिश्रम किया सो हथाही गया । परन्तु सैं उन विषयोकी जो सज्जित अथच उपयोगी थे—जो आडम्बर रहित शिष्टता पूर्णथे—जो शुष्क और नीरस न थे और जो बाधा, कठिनाई, उत्तेजना वा मत भेदसे शून्य थे, अवण करनेहीमें परमानन्द प्राप्त करता था । उन लोगोका ख्याल है कि भेंट होने पर धोड़ी देर चुप रहनेसे बात चीतमें बहुत उत्तमता आजाती है । और यह सच भी है क्योंकि जरा चुप रहनेमें नये नये विचार मनमें उठते हैं वम वह और भी मनोहर होजाती है । मित्रता, परोपकारिता, मितव्यय तथा सुरीतिही उनके रुम्हा पणके साधारण विषयहैं । प्रकृतिकी छटा, पुरानी टन्त कथा, धर्मकी मर्यादा, ज्ञानके अभ्रान्त नियम या जातीय महान्महामें उठानेके योग्य किसी प्रस्ताव पर तो कभी दायी झिन्नु काव्यर्च उह भावों पर

वादाविवाद होताथा । मैं कुछ अभिमान नहीं करता मत्व कहता हूँ कि मेरे उपस्थित रहनेसे खूब तर्क वितर्क चलता था । क्योंकि प्रभु जब मेरा तथा मेरे देशका इतिहास अपने मित्रोंको सुनाते तब सब सब लोग बड़ी प्रसन्नतासे कथोपकथन करतेथे । वह सब का कहते थे सो मैं न लिखूंगा क्योंकि इससे कुछ विशेष उपकार न होगा । केवल इतनाही मैं कहा चाहता हूँ कि मेरी अपेक्षा प्रभु याहुओंकी स्वभावकी अच्छी तरह समझते थे । वह अपने यहाके याहुओंकी योग्यता तथा कामोंकी देख कर हमारे यहाके पापाचारका चित्र भली भांति खिंचते थे । वह याहुओंकी अत्यन्त नीच और हैय समझते थे ।

मैं मुक्तकण्ठसे स्वीकार करता हूँ कि जो कुछ योयासा ज्ञानका लेश सुझमें है सो प्रभुके उपदेश तथा उनके मित्रोंके सत्पद्महीका फल है । मैं छिनहिनीकी दृढता, सुन्दरता और द्रुतगतिकी जगमा करता हूँ । उनके सङ्गुणोंकी देख कर उन पर मेरी अपार यज्ञ भक्ति हो गई है । पहले तो उनका कुछ प्रभाव सुझ पर पडा नहीं पर पीछे मेरा हृदय भक्ति भावसे क्रमशः बहुत शीघ्र पूर्ण होगया ।

जब मैं अपने बाल बच्चोंकी, इष्ट मित्रोंकी, देशवादियोंकी अथवा मनुष्य मात्रकी याद करता तो वह भी स्मृत शकल और स्वभावसे निरे याहूहो मालूम होते थे अन्तर इतनाही था कि वह इन याहुओंसे शायद कुछ सभ्य मालूम पडते थे, उनमें बोलनेकी शक्ति कुछ विशेष थी और वह नित्य नये पाप गठनेके सिवा और कुछ काम बुद्धिसे नहीं लेते थे । जब कभी मैं अपना मुँह किसी गढहे या झरनेमें देख लेता तो चीख मार कर पीछे हट जाता था । अपने चेहरे पर आपही मुझे घृणा होने लगती थी । मैं अपना मुँह आप नहीं देख सकता था । छिनहिनी को देख कर आत्मा ठण्डी जाती थी । उनसे बोल कर चित्त प्रसन्न होताथा । रात दिन उनके सङ्ग रहते रहते मैं भी उनकी चाल टाल की नकल करने लगा । नकल करते करते अब उसी तरह चलनेका

बहुधा अध्यास पड गया है । मित्रगण अवसर ठहा मारकर कहते हैं वाह ! अब तो तुम घोड़ेकी तरह खूब दुलकी चलने लगे । पर अपनी बज्जूई इसीमें समझता हूँ । चाहे कोई इसे या दूसे पर सै यह कहनेसे कभी इनकार न करूंगा कि मैं घोड़ोंकी तरह बोलने को तैयार हूँ ।

बड़े सुख चैनसे समय बीतने लगा । किसी प्रकारका कष्ट या अभाव वहा नहीं था । मैंने सोचा चलो अब जीवनके शेष भागकी यही व्यतीत करूँ पर—“निजे सोची हीती नही ।” एक दिन बड़े मदेरे प्रभुने बुला भेजा । मैं भी चट पट उठ दौड़ा । वहां पहुँच कर प्रभुको घोर चिन्तामें मग्न पाया । उनके चेहरेसे उदासी टपक रही थी । वह कुछ कहा चाहते थे पर कह नहीं सकते थे । किस तरह बात उठनी चाहिये इसी सोच विचारमें डूबे थे । थोड़ी देर चुप रहनेके बाद प्रभुने कहा—“मैं नहीं जानता परे कहनेका तुम क्या अर्थ लगाओगे पर मुझे विवश होकर कहना पड़ता है कि पिछली सहासभासे जब याहुओंकी चर्चा चली तो कई प्रतिनिधि सुभा पर बहुत विगडे और बोले कि तुम याह भी अपने घरमें हिनहिन्दकी तरह रखते हो यह बड़ी खराब बात है । सुना है तुम बराबर उसके साथ रहते रहते तथा बात चीत करके प्रमद होते हो । यह काम प्रकृति और ज्ञानके विरुद्ध है । ऐसा कभी किसीने नहीं किया है और न ऐसी घटना पहले कभी सुननेमें आई है । इस लिये उस याहको चाहे अन्यान्य याहुओंके साथ रखो या उससे कह दो कि वह अपने देशकी चला जाय । इस पर बहुतोंने कहा नहीं, उसका यहासे चला जानाही ठीक है । वह रहेगा तो बड़ा उत्पात मचावेगा । उसमें कुछ बुद्धिवा लोग भी हैं । इससे वह सब याहुओंकी बहकाकर जङ्गल पहाडोंमें लेजायगा और रातको दल बाधकर हमारे मवेशियों पर चोट करेगा क्योंकि यह सब बड़ेही पेटार्थी होते हैं और मेहनतसे जी चुराते हैं । इस वास्ते उसको यहासे धता बतानाही अच्छा है ।”

प्रभुकी बातें सुन कर मेरा साधा ठगना पर मैं कुछ न बोला ।

वह फिर कहने लगे—“अब मैं क्या करूँ ? महासभाके परामर्शको पालन करनेके लिये हिनहिन लोग मुझे नित्य दवाते हैं अब अधिक टाल मटोल नहीं कर सकता । मैं जानता हूँ समुद्रको तैरकर पार करना असम्भव है इसलिये मेरी राय है कि एक छोटीसी नाव बना लो उसी पर अपने देशको चले जाओ। इसमें मेरे नौकर तथा पड़ोसी लोग भी तुम्हारी मदद करेंगे । मैं तुमसे बड़ा प्रसन्न हूँ तुमने जहा तक बना छोटी लतोंको छोड़कर हिनहिनकी नकल की है । मेरी इच्छा तो यही थी कि जन्मभर तुमको अपने साथ रखूँ पर क्या कर लाचारी है। यहां समझानेके सिवा किसीको लाचार करनेका दस्तूर नहीं है पर जो जानी हैं सो जानके विरुद्ध कोई काम क्यों करेंगे ?”

इतना सुन कर मेरे सिर पर मानो वज्र गिर पड़ा । नेत्रों के आगे अन्धकार छा गया । मैं मूर्छित होकर प्रभुके चरणों पर गिर पड़ा । जब मूर्छा गई तो प्रभु बोले—“तुम जी उठे । मैंने तो जाना तुम मर गये ।” हिनहिन मूर्छित होना नहीं जानते क्योंकि उनके चित्तमें इतनी दुर्बलता नहीं है । मैंने धीमे स्वरसे कहा—“मरना तो इससे लाख दर्जे अच्छा था । मैं आपकी सभाका या मित्रोंका कुछ दोष नहीं दे सकता पर अपनी तुच्छ बुद्धिके अनुसार कहता हूँ कि इस जीनेसे मरनेहीमें सुख है । मैं एक मील भी तैर नहीं सकता और समुद्रका पहला किनारा भी यहांसे सैकड़ों मील दूर होगा । नाव बनानेके लिये जिन जिन चीजोंकी दरकार है सो यहां मिलती नहीं पर तो भी आपकी आज्ञा पालनेकी चेष्टा करूंगा । यह काम सहज नहीं है इसके वास्ते मुझे उचित समय मिलना चाहिये । यदि मैं अपने देश पहुंच जाऊंगा तो आप लोगोंके सद्गुणों का कीर्तन कर अपनी जातिका बहुत कुछ उपकार करूंगा ।”

वहांका रङ्ग ढङ्ग देख कर मेरा जी उदास हो गया । पीछे न जाने और क्या आपात आवे यह विचार कर मैंने वहांसे नौ दो ग्यारह होनाही उचित समझा । प्रभुने कृपा कर नाव बनानेके दो महीनेका समय दिया । मददके लिये मैंने लाल घोड़ेकी

मांग लिया क्योंकि वह सुभ्र पर बहुत दया करता था । उसके मिल जानेसे फिर और किसीकी सहायता दरकार न रही ।

लाल घोड़ेकी लेकर मैं समुद्र तटके उस स्थानमें पहुँचे गया जहाँ मेरे साथियोंने सुभ्र को छोड़ दिया था । मैं एक टीले पर चढ़ गया और चारों ओर देखने लगा । ईशान कोणमें एक छोटासा टापू दिखाई पड़ा । जेबसे दूरबीन निकाल कर देखा तो साफ मालूम हुआ कि वह लग भग पन्द्रह मीलके फासले पर है । लेकिन घोडारामको केवल नील आकाशही दिखाई दिया क्योंकि वह यही जानता था कि हमारे देशके सिवा और कोई देशही नहीं है । इसीसे समुद्र स्थित दूरवर्ती वस्तुओंके देखनेमें उसकी दृष्टि काम नहीं कर सकती थी । खैर, उस टापूको देख कर मैंने विचारा कि पहला सुकाम तो यहीं होगा आगे भगवानका भरोसा ।

हम लोग घर लौट आये । पासहीके एक जङ्गलसे देवदारकी डालिया काट लाये जो कुछ मोटी और कुछ छड़ीकी भाँति पतली थीं । मैंने तो अपने चाकूसे और लाल घोड़ेने पत्थरके औजारसे लकड़ियाँ काटीं थीं । अब बहुत विस्तार न कर मैं खुलासा कहता हूँ कि छः हफ्तेमें लाल घोड़ेकी मददसे डोंगी बन कर तैयार होगई । इसके ऊपर याहुओंके चमड़ेकी खोल सीकर चढ़ाई । पाल भी उन्हीं की खालकी बनाई । जहातक बना जवान याहुओंकी खालसे काम लिया क्योंकि बुढ़ीकी खाल बहुत मोटी और चिमड़ी होती है । चार डांड भी मैंने बना लिये थे । खानेके लिये मांस पकाकर धर लिया था तथा पीनेके लिये एक मटकी जल और एक मटकी दूध ।

कूच करनेके पहले डोंगीकी परीक्षा एक बड़े तालाबमें हुई । जहाँ जो कमर दिखाई पड़ी सो सब दुरुस्त करली । जब सब तरहसे वह ठीक होगई तो याहुओंने उसे गाड़ी पर लाद कर समुद्र के किनारे पहुँचा दिया । हिफाजतके लिये माथ लाल घोड़ा भी गया था ।

जब सब सामानमे लैस होगया तब प्रभुकी स्त्री तथा और सब लोगोंसे विदा होकर मैंने निःश्रमणेश किया । उस समय मेरी



आंखें डबडबाई हुईं तथा गला भरा हुआ था। तमाशा देखनेके लिये या शायद सुझ पर कुछ हापा करके प्रभु भी समुद्र तट पर्यन्त पधारे थे। आपके साथ और भी कई हिनहिन थे। ज्वारके लिये सुभे एक घण्टेसे ज्यादा बैठना पड़ा। जब ज्वार आगई तब फिर मैंने प्रभुको प्रणाम किया। मैं उनके खुरारविन्द चुम्बन करनेके लिये जब झुकने लगा तो प्रभुने स्वयं उसे उठा कर मेरे मुहके सामने कर दिया। इस बातके लिख देनेसे मैं जानता हूँ मेरी बड़ी छीक लेंदर होगी। लोग इसको असम्भव मानेंगे। वह यही कहेंगे कि इतना बड़ा आदमी गलीवर जैसे तुच्छ जीवकी इतनी खातिर नहीं कर सकता है। लेकिन जो हिनहिनोंकी मज्जनता और सभ्यता भली-भांति जानता होगा, वह ऐसा कभी न कहेगा। कुछ यात्री विशेष सम्मान पाते हैं-तो उसकी श्रेष्ठी वधारनेके लिये कैसे तैयार रहते हैं, सो भी मैं जानता हूँ।

शेषमें हिनहिनोंकी नमस्कार प्रणाम करके मैं डोंगी पर जा बैठा। वायु भी अनुकूल थी। मैंने भगवानका ध्यान कर डोंगी को भाग्यके भरोसे छोड़ दिया।

### एकादश परिच्छेद ।

सन् १७१४-१५ ईस्वीकी १५ वीं फरवरीके सबेरे नावजे मैं वहां से रवाना हुआ था। वायु बहुतही अनुकूल थी। पहले तो मैंने केवल डण्डेसे काम लिया पर पीछे पालकी भी तान दिया। ज्वार का जोर थाही डोंगी घण्टेमें साढ़े चार मीलके हिसाबसे जाने लगी। जब तक मैं एकदम ओझल न होगया प्रभु अपने सङ्ग्रियों समेत तीर पर बराबर खड़े रहे। लाल घोडा जो सुभे बहुत चाहता था, बारम्बार पुकारकर कहता था—“हनु इस्सा नीहा मजाइ याहु” अर्थात् होशियारीसे जाना सुन्दर याहू।

पाठकी। क्या मोचते २ क्या होगया। मैंने तो सोचाथा कि अब फिर इङ्ग्लैण्डका मुह न देखूंगा औरन किसीसे कुछ सम्पर्क रक्खूंगा पवित्रात्मा हिनहिनोंके पवित्र धाममें जीवन शेष करूंगा पर

मनकी मनमें रही । प्रभुके आगे मैं बहुत रोया गाया पर सब  
 हुआ हुआ अन्तमें जताग्र होकर वह पुण्य भूमि त्यागनीही पड़ी । अब  
 क्या करूँ ? स्वदेश जाकर याहुओंके समाज तथा राज्यमें रहनेकी  
 तो तनिक भी इच्छा नहीं होती थी । यदि इङ्ग्लैण्डके प्रधान मन्त्री  
 का पद सलता तो भी वहां जाना मुझे स्वीकार न था । मैं  
 किसी छोटे स्रोटे उजाड़ टापूमें जहां याहुओंकी गन्ध भी न हो  
 बस करना चाहता था । यदि ऐसा निर्जन स्थान मिल जाता तो  
 उसे प्रधान मन्त्रीके पदसे बहुत बड़ा सम्मान था क्योंकि वहां सांसा-  
 रिक घाप तापीसे मुक्त होकर एकान्तमें पुण्यात्मा हिनहिनेके  
 मङ्गुणोंका सानन्द ध्यान करता तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने विचारों  
 में निसरत रहता ।

जब मेरे साधियोंने गुप्त बाध कर मुझे कैद कर लियाया तो मैं  
 कई हफ्ते तक अपने कमरेमें बन्द रहा था यह मैं लिख आया हूँ  
 पाठकीकी शायद याद होगा । उस समय जहाज किम राहसे कहा  
 जाता था मुझे कुछ भी मालूम न था । जिस समय मैं जहाजसे  
 निकाला गया उस समय भी किसीने कुछ नहीं बताया । परन्तु  
 उन सबकी नापसकी बातें सुन कर मैंने अनुमान किया था कि  
 जहाज अण्डमानी अन्तरीपके दक्षिण या अग्निकोणकी ओर है ।  
 तथा मेडैरागल्ल द्वीपकी ओर है ।

जहां मैं उतरा वहां कोई मनुष्य दिखाई न पड़ा। मेरे पास कोई हथियार नहीं था इससे आगे बढ़नेकी हिम्मत न पड़ी। वही किनारे पर जो घोंवे मीप मिल गई वह कच्चीही चबा गया। शायद कोई देखले इस डरसे मैंने आग भी नहीं जलाई। वहा से तीन दिन रहा। साथमें खाने पीनेका जो सामान था सो आगके लिये बचा रक्खा। केवल घोंघों और मीपोंसे काम चलाया था। भाग्यसे मीठे पानीका एक सोता भी मिल गयाथा जिसका जल पीकर जी हरा होजाता था।

चौथे दिन प्रातःकाल साहस करके मैं पैदलही कुछ दूर निकल गया तो क्या देखता हूं कि कोई पाचनी गज दूर एक टीले पर आग जल रही है और उनके चारों ओर औरत मटे तथा लडके बैठे हैं जो गिनतीमें दसवीस होंगे। वह सब बिलकुल नडे थे। उनमेंसे एककी दृष्टि मुझ पर पड़ गई। उसने अपने साथियोंकी भी दिखा दिया। बस पाच जने लडके वालीको वही आगके पास छोड़ बार मेरी ओर बढे। मैं प्राण लेकर किनारेकी तरफ आया और डोगी पर चढके लम्बा हुआ। मुझको भागते देख कर वह सब भी मेरे पीछे दौडे। मैं बहुत दूर न गया हूँगा कि एक तीर दनसे मेरे घुटनेको छेद कर पार होगया। मैं और भी तेजैसे आगे बढ गया। तीरसे कदाचित विष हो यह विचार कर मैंने चट घावको चूस लिया फिर धो धा कर पट्टी चढा दी।

अब क्या करूँ ? उस जगह जहा आश्रय लिया था लौट जाने की हिम्मत नहीं पडती थी। मैं खडा होकर देखने लगा कि अब किधर जाऊँ इतनेमें ईशान कीणकी तरफसे एक जहाज आता हुआ दिखाई दिया। अब मैं यह सोचने लगा कि ठहरूँ या चल दूँ। अन्तमें यह निश्चय किया कि युरोपीय याहुओका मुंह देखनेसे असभ्य जङ्गलियोंके साथ रहनाही अच्छा है। बस मैंने डोगीको चट पट दक्षिणकी ओर घुमाया। पाल तान कर डाड चलाने लगा। फिर वहीं जा पहुँचा जहासे सवेरे चला था। डोगीको

किनारे बांध कर मैं उस सोतेके पास जिसका पानी सीठा था एक टोंकेके पीछे छिप रहा ।

इतनेमें जहाज भी मील डेढ़ मील पर आकर खड़ा होगया । सीठे पानीके लिये कुछ लोग किशती पर सवार होकर सोतेकी तरफ चले । मालूम होता है इस सोतेको लोग पहलेसे जानते थे । जब किशती एक दस पास आपहुंची तब मैंने उसको देखा । अगर पहलेसे देखता तो कहीं दूसरी जगह लुक जाता पर अब इतना समय कहा ? वह सब सिर पर आ पहुँचे अब भागू कैसे ? खैर साम रोक कर मैं वहीं दबक गया । इतनेमें वह सब किशतीसे उतर पड़े । सामने मेरी डोंगीको देख कर चौंके । उसको अच्छी तरह देख भाल कर उन्होंने निश्चय कर लिया कि इसका मालिक कहीं पासही है । उनमेंसे चार जने जो हथियार बन्द थे लगे बहाकी खोह कन्दराओंको रत्ती रत्ती ढूढने । ढूढते ढूढते वह चारों वहाँ पहुँचे जहाँ मैं पट पड़ा हुआ था । चमड़ेका कोट पटलून, काठके तलेके जूते, बालदार मोजे आदि मेरी अनोखी भद्दी पोशाक देख कर आश्चर्यके मारे उनकी टकटकी लग गई । उन देशवाले सदा नङ्गे रहते हैं इससे उन्होंने मुझे वहाँका निवासी नहीं समझा । उनमेंसे एकने पुर्तगाली भाषामें कहा—“उठ । तू कौन है ?” मैं इस भाषाको खूब जानता । मैंने उठ कर जवाब दिया—“मैं एक दीन यादूहू हिनहिनोंने मुझे निकाल दिया है । कृपा कर मुझे छोड़ दीजिये ।” मुझे पुर्तगाली भाषा बोलते देख कर वह और भी दङ्ग होगये । मेरा रङ्ग देख कर उन्होंने मुझको युरोपियन समझा पर ‘यादू’ और ‘हिनहिन’ उनकी समझमें न आये । साथही इसके मेरे बोलनेमें घोड़े कीसी हिनहिनाहट सुन कर वह लोग हस पड़े । मैं भय और घृणासे काँप रहा था । मैंने फिर विनय पूर्वक कहा मुझे छोड़ दीजिये लेकिन किसीने कुछ ध्यान नहीं दिया । ज्योंही मैं डोंगीकी तरफ बढने लगा उन लोगोंने पकड़के पूछा—“तू किस देशका है और कहासे आता है ?” मैंने

कहा—“मैं इङ्गलेण्ड का हूँ। वहासे आये मुझे पाच साल हण। उस समय इङ्गलेण्ड और पुर्तगालमें मेलही था। इस लिये मैं आग करत हूँ कि आप लोग मुझे अपना शत्रु न समझे। मैंने आप लोगोका कुछ विगाडा भी नही है। मैं एक गरीब याह्न हूँ। इस दुःख भरे जीवनके बचे खुचे दिनोंको टेर करनेके लिये एकान्त स्थान ढूँढता फिरता हूँ। छपा कर मुझे जाने दीजिये।”

इतना सुन कर जब वह आपसमें बोलने लगे तो उनका बोलना नितान्त अपूर्व और अस्वाभाविक प्रतीत होता था। यही जान पडता था मानो इङ्गलेण्डमें कुत्ता या गाय बोल रही है या हिनहिन देशमें याह्न। उधर वह लोग मेरी विचित्र पोशाक और विचित्र बोल चाल पर आश्चर्य मान रहे थे। वह बड़ी नम्रता पूर्वक कहने लगे—“आप किसी बातकी चिन्ता न करें। कप्तान मुफ्तमें आपको लिसवन तक ले चलेगा। वहासे आप अपने मुल्कको मजेमें जा सकते हैं। कप्तानसे पूछनेके लिये हम आदमी भेजते हैं तब तक आप यही ठहरे। अगर आप भागना चाहेगे तो भागने न देंगे।” लाचार उनका कहना खानना पडा। वह सब मेरी कहानी सुननेके लिये व्यग्र थे पर मैंने कुछ न बताया। वह मुझे पागल समझने लगे। सीठा पानी पहुँचा कर किसी दो घण्टे में वापस आई। मैंने बहुतरा कटा सुना पर सब व्यर्थ हुआ। कप्तान की आज्ञानुसार उन्होंने गुप्तकी बाब कर किसी पर धर लिया। थोड़ी देरमें किसी जहाजके निकट जा पहुँची। वहासे मैं कप्तान के पास ले जाया गया।

कप्तानका नाम था पिडरोडी मरिज। वह पडा मज्जन और उदार पुरुष था। उसने मेरा बडा आदर सत्कार किया और हाल अहवाल पूछा। कहने लगा आप किसी बातकी फिकर मत कीजिये आपको कोई तकलीफ न होगी। आपके खाने पीनेका क्या बन्दोबस्त किया जाय इत्यादि। याह्नमें इतनी सभ्यता देख मुझको होता था। मैं कुछ न बोला चुपचाप बैठा रहा। उन लोगों

की गन्धसे मेरी नाक फटी जाती थी। मैंने अपने साथी की चीजों को खाना चाहा पर उसने खाने न दिया अपने पाससे कुछ भांग तथा कुछ बढिया शराव दी। इच्छा न रहने पर भी मैंने उसीको खाया। सोनेके लिये साफ सुधरा कमरा बता दिया। मैं बिना कपड़े उतारेही वहा जाकर सोरहा। आधे घण्टेके बाद जब स्व खाने पीनेमें लगे तो मैं सन्नाटा देख कर चुप चाप बाहर निकल आया। याहुओंके साथ रहनेसे समुद्रमें कूद कर निकल जानाही अच्छा समझ कर ज्योंही मैं कूदने लगा एक जहाजीने आकर पकड़ लिया। कप्तानने यह सुनकर मेरे पैरोंमें फिर वेडिया डलवा दीं।

खापीकर वह मेरे पास आया और कहने लगा क्यों आप जान देते हैं ? जो कहिये मैं करनेको तैयार हूँ। और भी बहुतसी बातें उसने ऐसे ढङ्गसे कहीं कि जिसमें मुझे मालूम होगया कि उसको भी अकलसे कुछ सरोकार है। फिर मैं भी उसके साथ वैसाही वर्ताव करने लगा। अपना सचित्र वृत्तान्त उसे कह सुनाया। वह उसको भूठ मानने लगा। तब मुझे बहुत गुस्सा आया क्योंकि मेरी भूठ बोलनेकी लत एक दम छूट गई थी। सब देशोंमें जहां याहुओं की चलती बनती है वह भूठ बोलनेमें एकही होतेहैं इसीसे दूसरी के सत्यमें भी उन्हें असत्यहो दिखाई पडता है। मैंने कप्तानसे पूछा “क्या जो बात नहीं है सो कहनेकी चाल तुम्हारे देशमें है ? असत्य क्या है यह मैं एक दम भूल गया हूँ। अगर मैं हजार साल भी हिनहिन देशमें रहता तो वहा किसी नौकरके भी मुंहसे असत्य न सुनता। आप मेरा विश्वास करें चाहे न करें मैं इसकी कुछ परवाह नहीं करता। पर आपने मेरी बहुत खातिर की है इससे कहता हूँ कि आपको जहा शङ्का हो पृथ्वी मैं उत्तर दूंगा फिर सहजही मैं सच भ्रमका पता लग जायगा।”

जब आप इतना सच बोलीं तो इकरार कीजिए कि अब मैं न भागूंगा और न जान देनेकी कोशिश करूंगा। अगर आप इकरार न करेंगे तो इसी तरह कैदमें रहना पड़ेगा। मैंने उसके कथनानुसार प्रतिज्ञा करनी पर साफ कह दिया था कि सब कुछ मैं लूंगा याहुओंके साथ कभी न रहूंगा। आखिर मेरी वेडियां काटदी गईं।

जहाज वहासे फिर चला। रास्तेमें कोई भारी घटना नहीं हुई। कप्तान जब बहुत कहता तो उसके उपकारीको याद कर मैं कभी कभी उसके पास जा बैठता था। मनुष्य जाति पर जो मेरी आन्तरिक घृणा थी सो प्रगट नहीं होने देता था। अगर हो भी जाती तो बेचारा कप्तान उसका कुछ स्थान नहीं करता था। मैं किसीका मुंह देखना नहीं चाहता था दिन रात अपने कमरेमें रहता था। वह कपडे बदलनेके लिये रोज कहता पर मुझे यात्रा का उतरा हुआ कपडा पहनना मञ्जूर न था। बहुत कहने सुनने पर मैंने धीरे धीरे दो कमीज उससे लीं जिन्हें दूसरे तीसरे दिन अपनेही हाथोंसे धो लेता था।

ता० ५ नवम्बर सन् १९१५ ईस्वीको हम लोग पुर्तगालकी राजधानी लिसबनमें पहुँचे। मेरा विचित्र वेष देख कर बहुत भीड़ इकट्ठी न होजाय इसलिये जहाजसे उतरनेके समय कप्तानने अपना लवादा मुझे जबरदस्ती पहना दिया था। वह मुझे अपने घर ले गया। मेरे कहनेसे उसने मुझे अपने घरके पिछवाड़ेके सबके ऊपर वाले कमरेमें उतारा था। मैंने हाथ जोड़ कर उसको मना कर दिया था कि हिनहिने के बारेमें किसीसे कुछ मत कहना। अगर जरा भी इसकी भनक किसीके कानमें पड जायगी तो मेरे प्राण नहीं बचेंगे। मैं तुरत नास्तिकीकी तरह बड़े घर भेजा जाऊंगा या आगमें फूँक दिया जाऊंगा। कप्तानने बहुत चूँच करके एक जोडा नया कपडा बनवा दिया था परन्तु दर्जीको मैंने अपनी देह छूने दी थी। उसका डील डील प्रायः मेरेही हाथोंसे

उमके कपडे मेरे बहुत ठीक होते थे । और भी बहुतसी जरूरत की चीजें उसने बनवा दी थीं जिन्हें चौबीस घण्टे हवामें सुखा कर मैं काममें लाता था ।

कप्तानकी स्त्री नहीं थी और न तीनसे अधिक नौकर । भोजन के समय यह लोग मेरे पास नहीं आने पाते थे । उसका आचरण तथा विचार ऐसा सुन्दर था कि धीरे धीरे उस पर मेरी अज्ञा होने लगी । उसके साथ रहनेमें मुझे कोई कष्ट नहीं होता था । अब मैं पीछेकी खिडकियोंमें भी झांकने लगा । और दूसरे कमरे में आया । गलीमें भांकिता पर डरके मारे तुरत मुंह फेर लेता । एक सप्ताहमें वह मुझे द्वार तक ले आया । मेरा भय क्रमशः भागने किन्तु घृणा बढ़ने लगी । शेषमें उसके साथ मैं बाजार हाटमें भी घूमने लगा । पर नाकमें काला दाना और तम्बाकू ठूस लेता था क्योंकि याहुओंकी गन्ध मुझसे सही नहीं जाती थी ।

कप्तान पिडरूकी मैंने अपने घरका कुछ हाल कह दिया था । इससे उसने बहुत समझा बुझा कर मुझको घर जानेकी सलाह दी और कहा—“एक जहाज इङ्ग्लैण्ड जानेको तैयार है तुमको जरूर जाना चाहिये । खर्च बर्चका बन्दोबस्त मैं कर दूंगा । जैसा एकान्त स्थान तुम ढूँढते हो वैसा स्थान मिलना तो असम्भव है । घरहीमें तुम इच्छानुसार एकान्त वास कर सकते हो । घरसे दूरी कर निराली जगह और कोई नहीं है ।”

जब और कुछ करते धरते न बना तो कप्तानकी बात मानली । ता० २४ नवम्बरको एक अङ्गरेजी तिजारती जहाज पर मैं निस-बनसे बिदा हुआ । विचारा कप्तान जहाज तक मुझे पहुँचा गया था । चलनेके समय हम दोनों खूब गले गले मिले थे । उसने मुझे दोसौ रुपये उधार दिये थे । मैं बीमारीका बहाना कर अपने कमरे में बैठा रहता था । जहाजके आदमियोंसे कभी कुछ न बोलना था । यहां तक कि जहाजके मालिकका क्या नाम था भी मैं नहीं पूछा । ता० ५ दिसम्बर १७१५ ई० के मवरे नौवजे जहाज



डाउन्सकी बन्दरमें जा पहुँचा । तीन बजे शामकी मैं कुशल पूर्वक अपने घर पहुँच गया ।

घरवालोंकी मेरे पहुँचनेमें बड़ी खुशी और ताज्जुब हुआ क्योंकि वह सब मुझसे निराश होचुके थे । लेकिन मैं मत्त कहता हूँ कि उन सबको देख कर मुझे बड़ी घृणा हुई थी । उनकी ओर देखने की भी इच्छा नहीं होती थी । यद्यपि कप्तान पिडरूके साथ रहते रहते याहुओंसे बोलनेका अभ्यास पड़ गया था तथापि मैं उन महात्मा जिनजिनोके सहुणोंको नहीं भूला था । याहुनीमें समागम करके मैंने भी दो चार याहुओंको उत्पादन किया है यह सोच कर मैं बहुतही लज्जित, सन्तापित और भयभीत होजाता था ।

गृहमें प्रवेश करतेही मेरी भार्याने टीड कर मेरा आलिङ्गन मथा चुस्वन किया । मैं उसी समय चक्कर खाकर गिर पड़ा क्योंकि याहुओंकी स्पर्श करनेका अभ्यास बिलकुल छूट गया था । प्रायः एक घण्टेके बाद मैं होशमें आया था । इङ्गलेण्ड पहुँचनेके पाँच वर्षके पश्चात् मैंने इस पोथीके लिखनेमें हाथ लगाया । पहले वर्ष में तो मैं अपने बालवर्षोंको नहीं देख सकता था । उनके साथ बैठ कर एक जगह खाना तो दूर रहा उनकी गन्ध भी सह्य नहीं होती थी । मैं अब तक भी अपनी थाली या प्याली किसीको धोने नहीं देता हूँ । मैंने दो जवान घोड़े खरीद लिये हैं जो अखता मन्ही हैं । इनको एक अच्छे तबिलेमें रक्खा है । इनकी पीठ पर न जीन धरता हूँ और न मुँहमें लगाम लगाता हूँ । यह मेरे बड़े प्यारे हैं । कमसे कम चार घण्टे रोज मैं इनसे बात चीत करता हूँ । यह मेरी बोलती मजिमें समझ लेते हैं । दोनों घोड़े आपसमें खूब मेल जोल रखते हैं और मुझको अपना मित्र समझते हैं । अश्वसेवकको भी मैं प्रेमकी दृष्टिसे देखता हूँ क्योंकि अश्वशालाकी सुगन्धसे सुवासित होकर जब वह मेरे निवाट आता है तो मैं फूले अङ्ग नहीं समाता हूँ ।



प्रिय पाठकगण । मैं अपने सोलह वर्ष सात सहीने कई दिनके विचित्रविचरणका पूरा वृत्तान्त आप लोगोंसे निवेदन कर चुका । मैंने इसमें अपनी तरफसे कुछ नोन सिर्च न लगा कर ज्योंकी त्यों सब बातें लिखनेकी चेष्टाकी है । यदि चाहता तो मैं भी अन्यान्य ग्रन्थकारोंके सदृश अद्भुत असम्भव बातें लिखकर आप लोगोंको चमत्कृत कर सकता परन्तु मैंने सत्य घटनाओंको सरल सीधी भाषामें लिखनाही उचित समझा क्योंकि नये नये विषय बतानाही मेरा मुख्य उद्देश्य है, मनोरञ्जन करना नहीं ।

पृथ्वीके जिन दूर देशोंमें इङ्ग्लैण्ड वा युरोपका कोई विरलाही मनुष्य पहुँचता है वहाके जल और स्थलके अद्भुत जीवोंका वर्णन करना हम विचरणकारियोंके लिये कुछ बड़ी बात नहीं है । मेरी समझसे भिन्न भिन्न देशोंकी भली बुरी रीति व्यवहारका दृष्टान्त दिखा कर लोगोंको श्रेष्ठ कुशल और विन्न बनाना यात्रियोंका प्रधान लक्ष्य होना चाहिये ।

मेरी हार्दिक इच्छा थी कि एक ऐसा नियम बन जाता जिससे प्रत्येक भ्रमणकारीको अपने अपने भ्रमणका वृत्तान्त प्रकाशित करनेसे पहले लार्ड हाइचाउलर (प्रधान राजकर्मचारी जिनके पास राजाकी सुहर रहती है) के समक्ष प्रपथ पूर्वका वाहना पडे कि मेरी पुस्तक मेरे जानते नितान्त सत्यता पूर्ण है । ऐसा नियम होजानेसे पाठकोंको आजकलकी तरह प्रतारित होना न पडेगा । बहुतसे ग्रन्थकार ऐसे हैं जो वाहवाही लुटनेके लिये अपनी पोथियोंमें झूठका पहाड़ खड़ा करते हैं और भोले भाले पाठक भी उन्हीको पढ़ कर प्रसन्न होतेहैं । मैं भी भ्रमणविषयक अनेक पुस्तकें पढ़कर वाग्यावस्थामें आनन्दित होता था परन्तु लवसे मैं खूब पृथ्वी के उतरे भागोंसे विचरण करने लगा हूँ उनकी पोल खुल गई है । अब उन पोथियोंके पढ़नेकी तनका भी रुचि नहीं होती है । सरल

पाठकोंका इस प्रकार ठगा जाना देख कर मेरी क्रोधाग्नि कुछ भभक उठती है । मेरे मित्रोंकी कासना थी कि यह पोथी उपयोगी अथवा मनोरञ्जक हो, इसी लिये मैंने सत्यसे विचलित न होनेका दृढ सङ्कल्प करके इसे लिख डाला है और जब तक सहात्मा हिनहिनीके सदुपदेश मेरे चित्तमें प्रमित रहेंगे मैं इस पवित्र सङ्कल्प को त्याग भी नहीं सकता हूँ ।

जिस पुस्तककी रचनामें उत्कृष्ट स्मरणशक्ति या यथार्थ दिन चर्याके अतिरिक्त विद्या, प्रतिभा गद्यवा और किसी गुणका प्रयोजन नहीं है उससे कितना नाम होता है सो मैं भली भांति जानता हूँ । मैं यह भी जानता हूँ कि जब कोई नूतन सुविशाल कोष बन कर तैयार होता है तब प्राचीन कोषकारोंको लोग भूल जाते हैं । ठीक यही दशा भ्रमण वृत्तान्त लेखकोंकी भी है । सम्भव है कि मेरे बाद कोई यात्री उन देशोंमें जाकर जिनका वर्णन इस पोथीमें है नई नई बातें देखे और मेरी भूल ( यदि कोई हो ) निकाल कर मेरी जगह क्लोनले तथा पाठकगण भी मुझे भूल जाय । यदि मैं केवल नामहीके लिये लिखता तो मचमुच मुझे बड़ा दुःख होता परन्तु मैंने तो लोकोपकारके हेतु लिखा है अतएव हताश होनेकी कोई बात नहीं है । ऐसा कौन है जो अपनेको सज्जन और प्रधान जीव समझ कर भी अपने पापों पर लज्जित हुए बिना हिनहिनी के सङ्गुणोंको पढ़ सकता है ? याज्ञ-प्रधान दूरस्थ जातियोंमें ब्रौव डिगनेगवाले सबसे कम दूषित है । इन लोगोंके सुन्दर नैतिक और राजकीय सिद्धान्तका अनुकरण करना हमारे लिये लाभकारी है । इस विषयको अधिकविस्तार न कर इसके निर्णयका भार विवेकवान पाठकोंके ऊपरही छोड़ता हूँ ।

मैं इस बातसे बहुत प्रसन्न हूँ कि मेरी पुस्तकमें सम्भवत कोई दोष किसीको नहीं मिल सकता है । जिन दूर देशोंसे हम लोगोंको कुछ भी लाभ नहीं उनकी सच्ची घटनायें सरल स्पष्ट शब्दोंमें लिखने से भला कोई क्या आपत्ति कर सकता है ? भ्रमण वृत्तान्तके साधा-

रण लेखकीमें जो दोष प्रायः हुआ करते हैं उनको मैं बहुत सावधानीसे बचा गया हूँ । इसके अतिरिक्त, किसी दल वा समाज वा व्यक्ति विशेष पर आक्रमण न कर शुद्ध भावसे इस पोथीको लिखा है । परमगुणान्वित हिनहिनीके सत्कर्मोंमें इतने दिनों तक वास करनेके कारण मैं कुछ श्रेष्ठ बन गया हूँ इसीसे मनुष्य समाजको सुशिक्षित बनाना मेरा अभीष्ट है कुछ लाभ करना या यश पाना नहीं । एक शब्द भी इसमें कल्पित नहीं है । जो सदा सबसे चिढ़े रहते हैं उनके चिढ़ानेके लिये भी इसमें कुछ नहीं है । अतएव मैं अपनेको पूर्ण निर्दोष ग्रन्थकार कह सकता हूँ । आलोचक, समालोचक, पर्यालोचक प्रभृति मेरा बाल बांका नहीं कर सकते हैं ।

चुपकेसे आकर लोग मेरे कानोंमें कह जाते हैं “तू इङ्गलेण्डकी प्रजा है तेरा कर्त्तव्य था कि पहुँचनेके साथही “सेक्रेटरी आफ़ छेट” को जिन देशोंको तैने देखा है उनकी सूचना देता क्योंकि प्रजा जो भूमि या देश प्रगट करती है सो राजाहीका होता है । पर तैने अपना कर्त्तव्य पालन न करके बड़ा अन्यान्य किया है ।” कहने वालोका कहना बहुत ठीक है । पर शङ्का यह होती है कि फरदी नन्दूकोटिने असभ्य अमेरिकावालोंको अनायासही जिस प्रकार जीत लिया था उसी प्रकार लिलीपट आदिको जीतना क्या सहज है ? मैं समझता हूँ लिलीपट पर चढ़ाई करनेसे बगुलामारिपखना हाथकी कहावत चरितार्थ होगी । ब्रौवडिगनेग पर आक्रमण करना निरी नृहता तथा कालको दुलाना है । आकाशमें उडनेवाले ह्यीप का अङ्गरेजी सेना भला करहो क्या सकती है ? बाकी रहे हिनहिनि सो लडनेके लिये तैयार नहीं हैं क्योंकि वह लडना, विशेष कर अस्त्र चलाना बिलकुल नहीं जानते हैं । यदि मैं आमात्यके पद पर होता तो इनपर आक्रमण करनेकी सम्मति कदापि न देता । इनकी सावधानता, एकता निर्भीकता और देशानुरागही दुर्द बिया की अभावको पूर्णरूपसे दूर कर देते हैं । यदि हम हजार हिनहिनि युरोपीय सेनाके बीच घुम पडे तो नारी नैन्य रचना नष्ट भट जो

जायगी । हिनहिनगण गाडियोंको उल्ट देगे और मारे दुलक्तियों के योद्धाओंके मुँहका छलवा बना डालेंगे । मेरी आकांक्षा है कि ऐसी उदार जातिको जीतनेके बदले उससे शिक्षा प्राप्त करना चाहिये । अगर कुछ हिनहिन यहां आजाते तो वह आदर सम्मान, न्याय सत्य, संयम, देशहितैषिता, सहिष्णुता, जितेन्द्रियता, मित्रता, परोपकारिता, कर्त्तव्य परायणता आदि जिन मनुष्योंके नाम हमारे यहां केवल पुस्तकोंहीमें पाये जातेहैं उनकी शिक्षा देकर हम लोगों को सुसभ्य बना देते ।

मैंने अपने देशोंकी सूचना सेक्रेटरी आफ ट्रेट ( राजमन्त्री ) को न दी इसका एक और कारण है । मच पूछो तो महाराजोंके न्यायकी विचित्रता देख करही मुझे कुछ खटकामा होगया है इसी से महाराजके राज्यको बढानेसे जी हिचकिचाता है । अच्छा । विचित्र न्यायका उदाहरण सुनिये । डाकुओंका एक जहाज तूफान के मारे भटक कर एक ओर जापडा है । कहा जापडा सो किमी को मालूम नहीं है । आखिर मस्तूल परसे एक छोकरेको कुछ भूमि दिखाई पडतीहै । लूट पाट करनेके लिये डाकू लोग वहीं जा पहुचते हैं । किसी भलेमानससे भेट होगई तो वह आदर सत्कार करताहै । वह लोग उस देशका एक नया नाम रखकर अपने राजा की तरफसे उसे चट दखल कर लेते है । स्मारक चिन्हके बदले एक पत्थर या सडा तखता गाड देते है । वहांके दो चार दरजन आदमियोंको मारकर दो चारको नमूनेके बतौर जवरदस्ती खदेश घसीट लातेहैं । बस राजा भी प्रसन्न होकर उनके पिछले अपराधोंको क्षमाकर देता और ऐश्वरिक स्वत्व ( Divine right ) को दुहाई दे उस देश पर अपना अधिकार जमा लेता है । फिर मौका मिलतेही वहां जहाज भेजे जातेहैं । वहाके निवासी मारे या निकाले जाते है । खजानेका पता लगानेके लिये वहाके राजाओंको बहुत सतातेहैं और मनमाना अत्याचार करते है । देशवासियोंके रक्तसे भूमि लाल होजातीहै । ऐसेही नीच हत्यारे असभ्योंको सभ्य बनाने तथा मूर्ति

पूजकोंको धर्मकी दीक्षा देनेके लिये भेजे जाते हैं । यही है आधुनिक उपनिवेशोंकी स्थापना ।

परन्तु अङ्गरेजों पर यह उदाहरण किसी प्रकार भी नहीं घट सकता है । यह लोग उपनिवेश स्थापित करनेमें अपने सुविचार, यत्न और न्यायके कारण ससारके आदर्श स्वरूप हैं । यह धर्म और विद्याकी उन्नतिके लिये बहुतसा धन दान करते, कस्तानी धर्म विस्तृत करनेके लिये योग्य और गम्भीर पाठडियोंको चुनते, बड़ी सावधानीसे मातृ भूमिके सदाचारी और सयमी पुरुषोंको अपने इलाकेमें इकट्ठे करते न्यायकी तरफ विशेष ध्यान रखते और राज कान चलानेके लिये उपनिवेशोंमें अच्छे अच्छे सुयोग्य कर्मचारी नियत करते हैं जो घूस लेना बिलकुल नहीं जानते । सबके ऊपर लाट ऐसा भेजते हैं जो बडाही धार्मिक और सतर्क होता है और जो प्रजाके सुख और राजाके गौरवके सिवा और किसी ओर ध्यान ही नहीं देता है ।

किन्तु मैंने जिन देशोंका वर्णन किया है वहाँके रहनेवाले पराधीन होना, प्राण देना या देशवहिष्कृत होना किसी तरह भी नहीं चाहते हैं और न वहाँ सोना, चादी, चीनी या तम्बाकूही बहुतायत से होता है । सबमुक्त वह सब देश हमारे उत्साह और माहस दिखानेके योग्य नहीं हैं और न उनसे हमारा कुछ लाभही हो सकता है । खैर, जो इन बातोंसे ज्यादा सरोकार रखते हैं वह मेरी बातें यदि न मानें तो मैं सटालतमें भी कहनेको तैयार हूँ कि जो दोनों यात्रा प्राचीनकालमें हिनहिन देशके किसी पहाड पर देखे गये थे उनके सिवा और कोई युरोप निवासी मुझसे पहले वहाँ नहीं गया है ।

अगर सच पृथ्वी तो महाराजके लिये उन सुत्कोंको दखल करनेकी बात मुझे यादही न पड़ी । अगर पड़ती भी तो मैं ब्या कर सकता था । उस समय अपनी ज्ञान वचाता या सुत्क दखल करता ।



के घृणित पापोंको वर्णन करनेके लिये । हिनहिन मनुष्योंके स्वभाव को अच्छी तरह नहीं समझते हैं इसीसे याहुओंके स्वभावमें उन्हे अभिमानकी झलक नहीं मालूम होती है । किन्तु सुभे बहुदर्शिता के कारण जङ्गली याहुओंमें अभिमानकी कुछ रमक मालूम पड़ती है । हम लोगोंको अपने हाथ पावोंका जैसे कुछ घमण्ड नहीं है वैसेही ज्ञानी हिनहिनोंको अपने अच्छे गुणोंका । अङ्गरेज याहुओंको सुधारनेहीके लिये मैंने इस विषयको इतना तूल दिया है ।

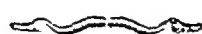
अन्तमें निवेदन है कि जो अपने मनमें तनिक भी अभिमान रखते हो वह मेरे सामने न आवें और न अपना मुँह मुझे दिखावें ।

इति चतुर्णभाग समाप्त ।





# शुद्धाशुद्धपत्र ।



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	१०	जङ्गल जानेकी हाजत थी । कातर होकर .... किया।	{ भूखने इतना सताया कि मैंने लाज शरम छोडके बार बार उग- लियोंको .. किया।
१३	७	फलकी	फूलकी
२२	१८	चिन्तासे	सबकी चिन्तासे
२५	१३	अन्तिम युद्ध	कन्तिम युद्ध
२७	१०	बलगुलामने भी	बलगुलामहीने
३४	१०	दुफेस्कूके महारानी विद्रोह शान्त होने पर	{ दुफेस्कूके महारानीने विद्रोहियोंका साथ दिया ।
३४	१२	विद्रोह शान्त होने पर	{ विद्रोह शान्त होनेपर जिन जिनकी देश निकालीकी सजा हुई थी वह सब दुफेस्कू के महाराजकी शरण में गये।
३४	२१	धर्मशाला	धर्मशास्त्र
३८	८	नईन	नईक
४१	१७	लोग बागडोर	लोग वहां डील
४२	१	पेशाश	पेशाब
४४	१	सकार	सरकार
४४	१४	उधार और लेने देने	उधार लेने देने
४५	२४	सदाशयतका	सदाशयवा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७	३	लिलीपट	लिलीपटी
४७	१३	योही	यही
४८	२१	पोपणका	पोपणका भार
५०	६	जानता हूँ	नही जानता हूँ
५५	२७	जिमसे	जिममें
५७	२५	उसकी स्मरण चिन्ह	{ उसका अस्थिपत्र स्मरण चिन्ह
५८	१५	पकड कर	पड कर
७४	८	सुभसे	सुभको
७६	२०	चिममसे	चिमटेसे ।
८२	१३	किमानने	किमानने
८६	२४	चाहते या तथा	चाहते तथा
८२	११	उतनाही पाया	उतना नही पाया ।
८५	१८	मेरे सामने नझी देख कर	{ मेरे सामने नझी न कर कपडे बदला थी ।
८५	१८	नझी देख कर	इन्हें नझी देख कर
८६	१७	पानीमें भरे	पानीसे भरे
१०१	२२	सेनामें	सेवामें
१०३	७	खूब लाभ है	खूब नाम है
१०५	५	आदेशिक	प्रादेशिक
११४	३	तीनो	दोनो
११६	१७	पीछे रहने	छिपे रहने
१२५	८	जरीह	जराह
१३०	१३	आथही	आधही
१३२	१	वहा	वहासे
३५	५	कोठियां दुरुस्त होतीं	कोने दुरुस्त होते

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३५	७	बडे पर	बडे निपुण पर
१५०	१	लम लम	लसलसे
१५०	२४	धूनेके	छूनेके
१५१	८	दृष्ट	दृष्टि
१५५	७	जर्जर	जर्जरह
१५५	१६	पापियोंकी	पापियों और
१५६	२४	लगडन	लेझडन
१५७	१६	टोपी मौर	टोपी और
१५७	१६	हगरा	गहरा
१६०	१४	अगरवेला	अरवेला
१६१	८	एपामिराडस	एपामिननडस
१६५	२७	मध्यम	अधम
१७५	२६	यही एक कहानी	यही रामकहानी
१८१	१५	पोकौप	पोकौक
१८३	२०	पत्तियोंसे	पातियोंसे
१८५	२२	टहलतेथे कि काही मैं	{ टहलते थे मगर निरक्री नजरसे मुझे भी देखते जाते थे कि काही मैं
१८६	६	बडे भावसे	बडे चावसे
१८८	१४	पीछे वल	पुट्टीके वल
१८०	२६	एक सडा टुकडा	एक जडका टुकडा
१८८	८	सब अपने सङ्ग	सब लगह अपने मङ्ग
२३०	५	पहुची	पहुंचेगी ।
२३१	२२	दीजाती	दीजानी
२३६	८	खेमे	खन्वे
२४०	११	घोघामा	घोडामा
२४२	१८	पहला किनारा	परला किनारा

